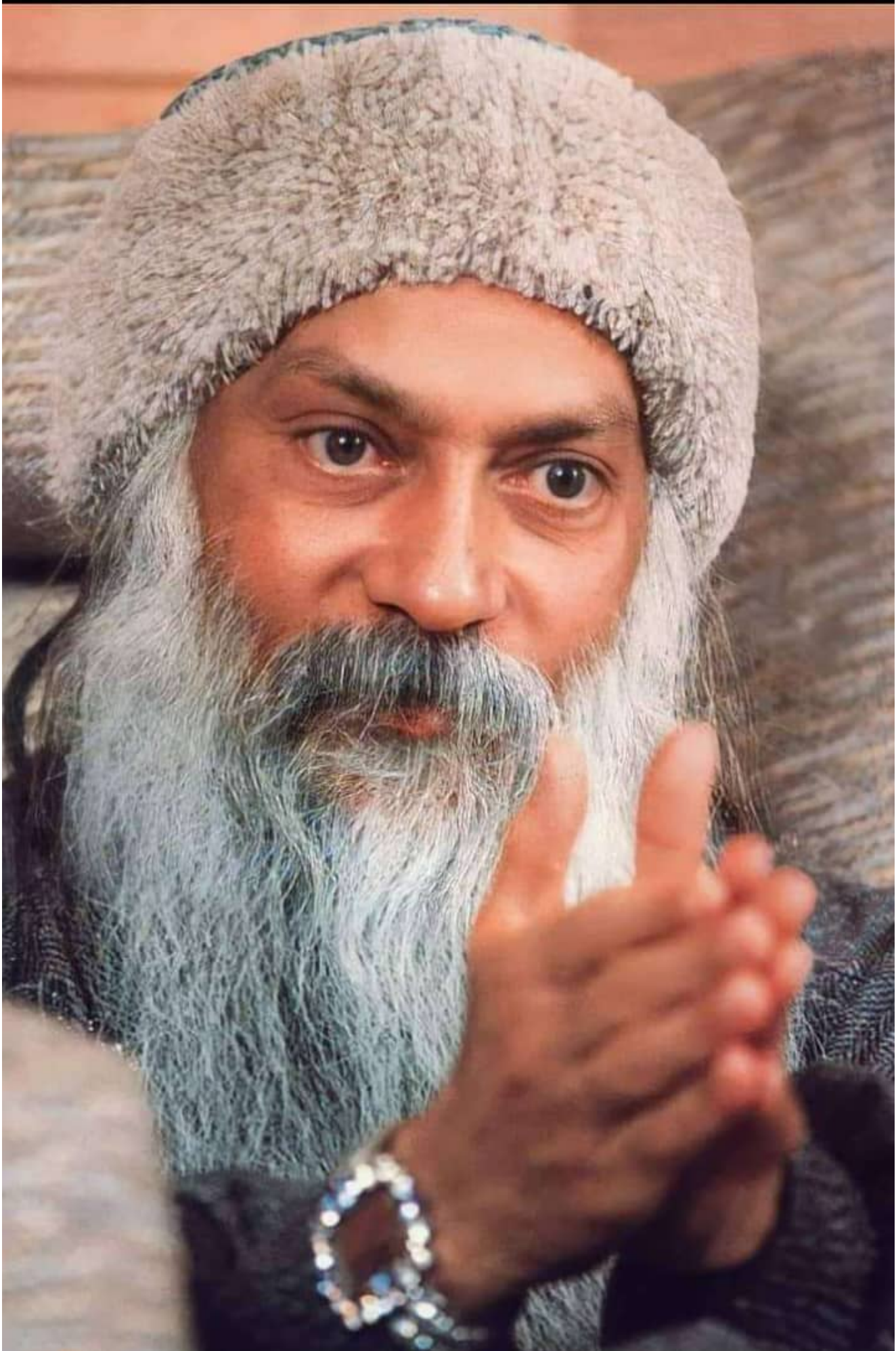
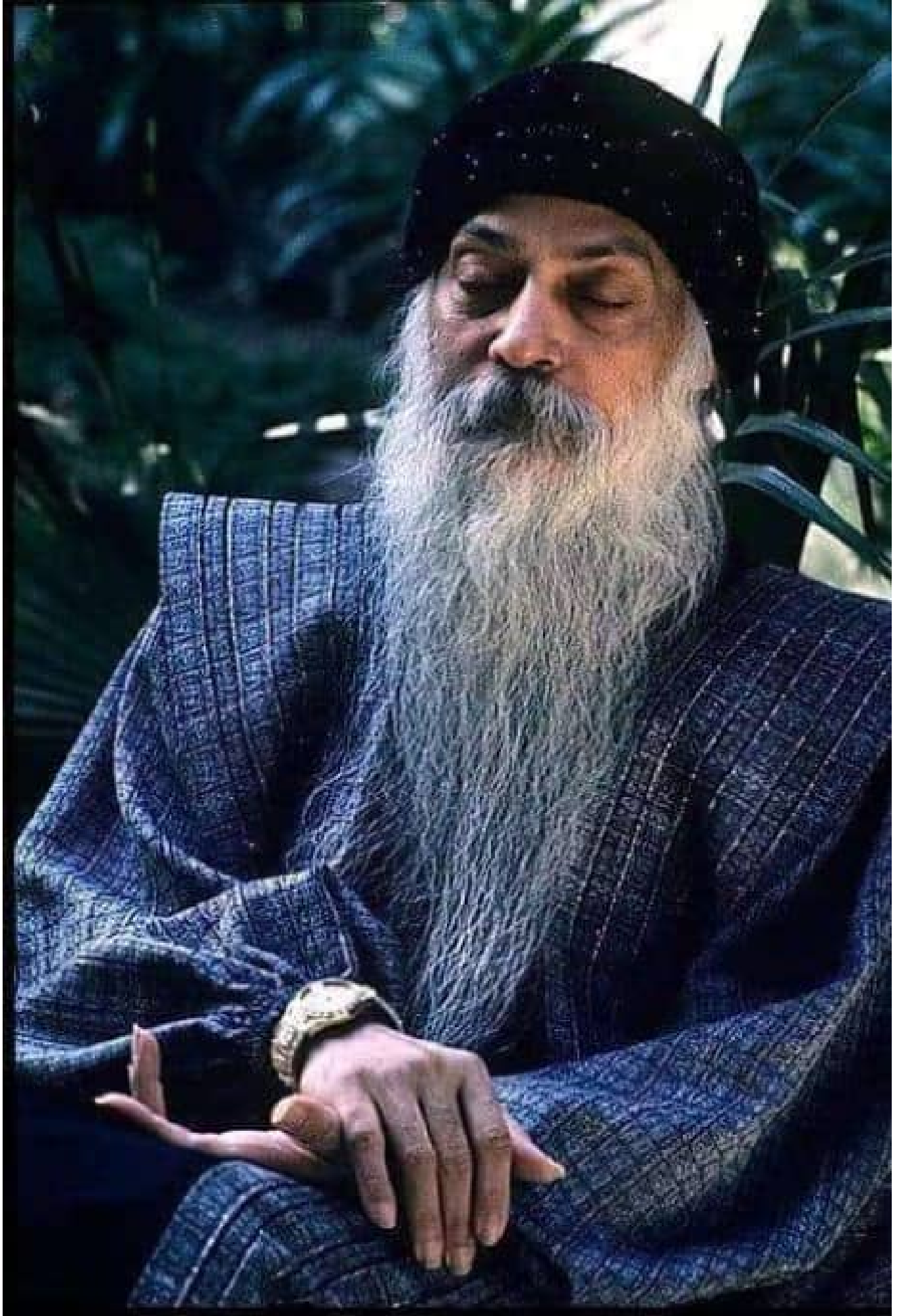






" इक साथे सब सधे " – वही एक ध्यान ।



भीतर निर्विचार होने लगे ,

भीतर धीरे-धीरे साक्षी भाव को आने दो ,

भीतर देखो न तुम देह हो, न तुम मन हो, न तुम विचार , न वासना

और धीरे-धीरे एक बात तुम्हारे सामने साफ हो जाए ;

कि तुम सिर्फ साक्षी हो – कि सन्यास फलित हुआ ।

सन्यास उस दिन नहीं होता , जिस दिन तुम सन्यास लेते हो !

उस दिन तो केवल औपचारिक रूप से शुरुआत होती है ?

सन्यास उस दिन फलित होता है ,

जिस दिन तुम साक्षी का अनुभव कर लेते हो ।

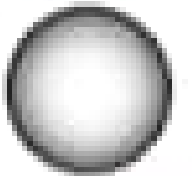
**** ओशो ****

झरत दसहुं दिस मोती - दसवां प्रवचन

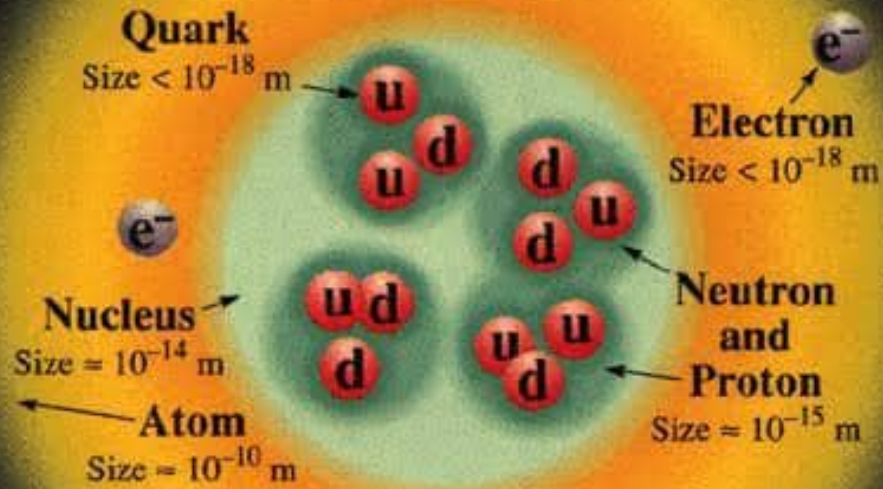
सार-असार की कसौटी ध्यान है से संकलित ।

Particle	Mass	
	kg	Relative
Proton (m_p)	1.673×10^{-27}	1 836.15
Neutron (m_n)	1.675×10^{-27}	1 838.68
Electron (m_e)	9.109×10^{-31}	1

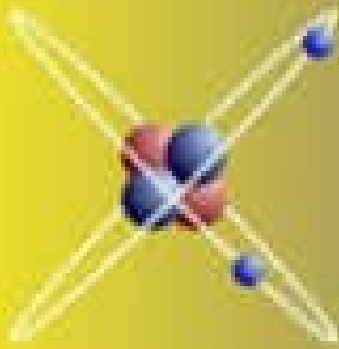
The Sub-atomic Particles

Relative size	Name	Mass (Kg)	Charge (C)
	Proton	1.67×10^{-27}	$+1.602 \times 10^{-19}$
	Neutron	1.67×10^{-27}	0
	Electron	9.11×10^{-31}	-1.602×10^{-19}

Structure within the Atom



If this picture were drawn to the scale given by the protons and neutrons, then the quarks and electrons would be less than 0.1 mm in size and the entire atom would be about 10 km across.



Atom

10^{-10} m



Nucleus

10^{-14} m



Proton

10^{-15} m

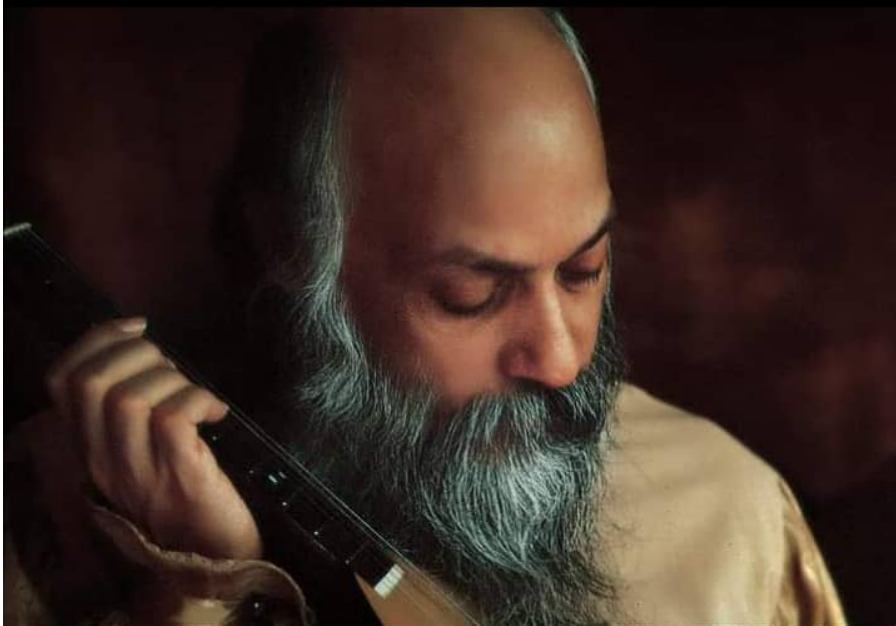


Neutron



Electron

$< 10^{-18}$ m





ऋषि नारद-भारत के संत

जीवन है ऊर्जा -- ऊर्जा का सागर। समय के किनारे पर अथक, अंतहीन ऊर्जा की लहरें टकराती रहती हैं: न कोई प्रारंभ है, न कोई अंत; बस मध्य है, बीच है। मनुष्य भी उसमें एक छोटी तरंग है; एक छोटा बीज है -- अनंत संभावनाओं का।

तरंग की आकांक्षा स्वाभाविक है कि सागर हो जाए और बीज की आकांक्षा स्वाभाविक है कि वृक्ष हो जाए। बीज जब तक फूलों में खिले न, तब तक तृप्ति संभव नहीं है।

मनुष्य कामना है परमात्मा होने की। उससे पहले पड़ाव बहुत हैं, मंजिल नहीं है। रात्रि-विश्राम हो सकता है। राह में बहुत जगहें मिल जाएंगी, लेकिन कहीं घर मत बना लेना। घर तो परमात्मा ही हो सकता है।

परमात्मा का अर्थ है: तुम जो हो सकते हो, उसकी पूर्णता।

परमात्मा कोई व्यक्ति नहीं है; कहीं आकाश में बैठा कोई रूप नहीं है; कोई नाम नहीं है। परमात्मा है तुम्हारी आत्यंतिक संभावना -- आखिरी संभावना, जिसके आगे फिर कोई जाना नहीं है; जहां पहुंचकर तृप्ति हो जाती है, परितोष हो जाता है।

प्रत्येक मनुष्य तब तक पीड़ित रहेगा। तब तक तुम चाहे कितना ही धन कमा लो, कितना ही वैभव जुटा लो, कहीं कोई पीड़ा का कीड़ा तुम्हें भीतर काटता ही रहेगा; कोई बेचैनी सालती ही रहेगी; कोई कांटा चुभता ही रहेगा। लाख करो भुलाने के उपाय -- बहुत तरह की शराबें हैं विस्मरण के लिए लेकिन भुला न पाओगे। और अच्छा है कि भुला न पाओगे; क्योंकि काश, तुम भुलाने में सफल हो जाओ तो फिर बीज बीज ही रह जाएगा, फूल न बनेगा -- और जब तक फूल न बने और जब तक मुक्त आकाश को गंध फूल की न मिल जाए, तब तक अगर तुम भूल गये तो आत्मघात होगा, तब तक अगर तुमने अपने को भुलाने में सफलता पा ली तो उससे बड़ी और कोई विफलता नहीं हो सकती।.....

ओशो



(प्रेम की झील में नौका-विहार)–



12

1 share



Like



Comment



Send



Share



जहां-जहां से प्रेम उखड़ता गया, एक-एक प्रेम-पात्र जाने लगा, वह अपने उस प्रेम को परमात्मा में चढ़ाने लगी।

अंतिम सूत्र था--पिता का रहना। पिता भी चल बसे। पति भी चल बसे, पिता भी चल बसे। पांच मृत्युएं हो गईं सतत।

जगत से सारा संबंध टूट गया। उसने ठीक उपयोग कर लिया। जगत से टूटते हुए संबंधों को उसने जगत के प्रति वैराग्य बना लिया। और जगत से जो प्रेम मुक्त हो गया, उसको परमात्मा के चरणों में चढ़ा दिया। वह कृष्ण के राग में डूब गई।

और इन मृत्युओं ने एक और सौभाग्य का काम किया, कि इन्होंने एक बात दिखा दी कि इस जगत में सब क्षणभंगुर है; अगर प्यारा खोजना हो तो शाश्वत में खोजो। यहां कुछ अपना नहीं है।

यहां भरमो मत, अपने को भरमाओ मत! यहां सब छूट जाने वाला है। यहां मृत्यु ही मृत्यु फैली है। यहां मरघट है। यहां बसने के इरादे मत करो। यहां कोई कभी बसा नहीं।

अपनी आंख से देखा सबको जाते उसने। बत्तीसत्तीस साल की उम्र कोई बड़ी उम्र नहीं। जवान थी। जवानी में इतनी मौत घटी कि मौत का कांटा उसे ठीक-ठीक साफ-साफ दिखाई पड़ गया कि जीवन क्षणभंगुर है।

और तब उसका मन यहां से विरक्त हो गया। जो यहां से विरक्त है, वही परमात्मा में अनुरक्त हो सकता है।

तुम दोनों राग एक साथ नहीं पाल सकते हो। तुम दो नावों पर एक साथ सवार नहीं हो सकते हो।

ओशो.

"पद घूंघरू बांध"

-प्रवचन--01

(प्रेम की झील में नौका-विहार) —



का मेरे लिए कोई ऐसा भाव नहीं है, मृत्यु के प्रति कि वह कोई आवश्यक रूप से अभिशाप है। सब तुम पर निर्भर है। मीरा ने उसका ठीक उपयोग कर लिया।

जहां-जहां से प्रेम उखड़ता गया, एक-एक प्रेम-पात्र जाने लगा, वह अपने उस प्रेम को परमात्मा में चढ़ाने लगी।

अंतिम सूत्र था--पिता का रहना। पिता भी चल बसे। पति भी चल बसे, पिता भी चल बसे। पांच मृत्युएं हो गईं सतत।

जगत से सारा संबंध टूट गया। उसने ठीक उपयोग कर लिया। जगत से टूटते हुए संबंधों को उसने जगत के प्रति वैराग्य बना लिया। और जगत से जो प्रेम मुक्त हो गया, उसको परमात्मा के चरणों में चढ़ा दिया। वह कृष्ण के राग में डूब गई।

और इन मृत्युओं ने एक और सौभाग्य का काम किया, कि इन्होंने एक बात दिखा दी कि इस जगत में सब क्षणभंगुर है; अगर प्यारा खोजना हो तो शाश्वत में खोजो। यहां कुछ अपना नहीं है।

यहां भरमो मत, अपने को भरमाओ मत! यहां सब छूट जाने वाला है। यहां मृत्यु ही मृत्यु फैली है। यहां मरघट है। यहां बसने के इरादे मत करो। यहां कोई कभी बसा नहीं।

अपनी आंख से देखा सबको जाते उसने। बत्तीसत्तीस साल की उम्र कोई बड़ी उम्र नहीं। जवान थी। जवानी में इतनी मौत घटी कि मौत का कांटा उसे ठीक-ठीक साफ-साफ दिखाई पड़ गया कि जीवन क्षणभंगुर है।

और तब उसका मन यहां से विरक्त हो गया। जो यहां से विरक्त है, वही परमात्मा में अनुरक्त हो सकता है।

तुम दोनों राग एक साथ नहीं पाल सकते हो। तुम दो नावों पर एक साथ सवार नहीं हो सकते हो।

ओशो.



Maitreyi Nivi

**Maitreyi Nivi**

3h · 🌐



The only way you will ever awaken is through silence,
not through analyzation of facts.
Not by sorting out good and bad, but through simple
silence, letting go.
Letting go of all thoughts, all the hurts, all the
dogmas and concepts.

~ Robert Adams

केवल एक ही तरीका जो आप कभी भी जागृत होंगे वह मौन के
माध्यम से है, तथ्यों के विश्लेषण के माध्यम से नहीं।
अच्छे और बुरे को सुलझाकर नहीं, बल्कि सरल मौन के माध्यम से,
जाने देते हैं।
सभी विचारों, सभी दर्द, सभी हठधर्मिता और अवधारणाओं को
जाने देना।

~ रॉबर्ट एडम्स

• Rate this translation



Write a comment...

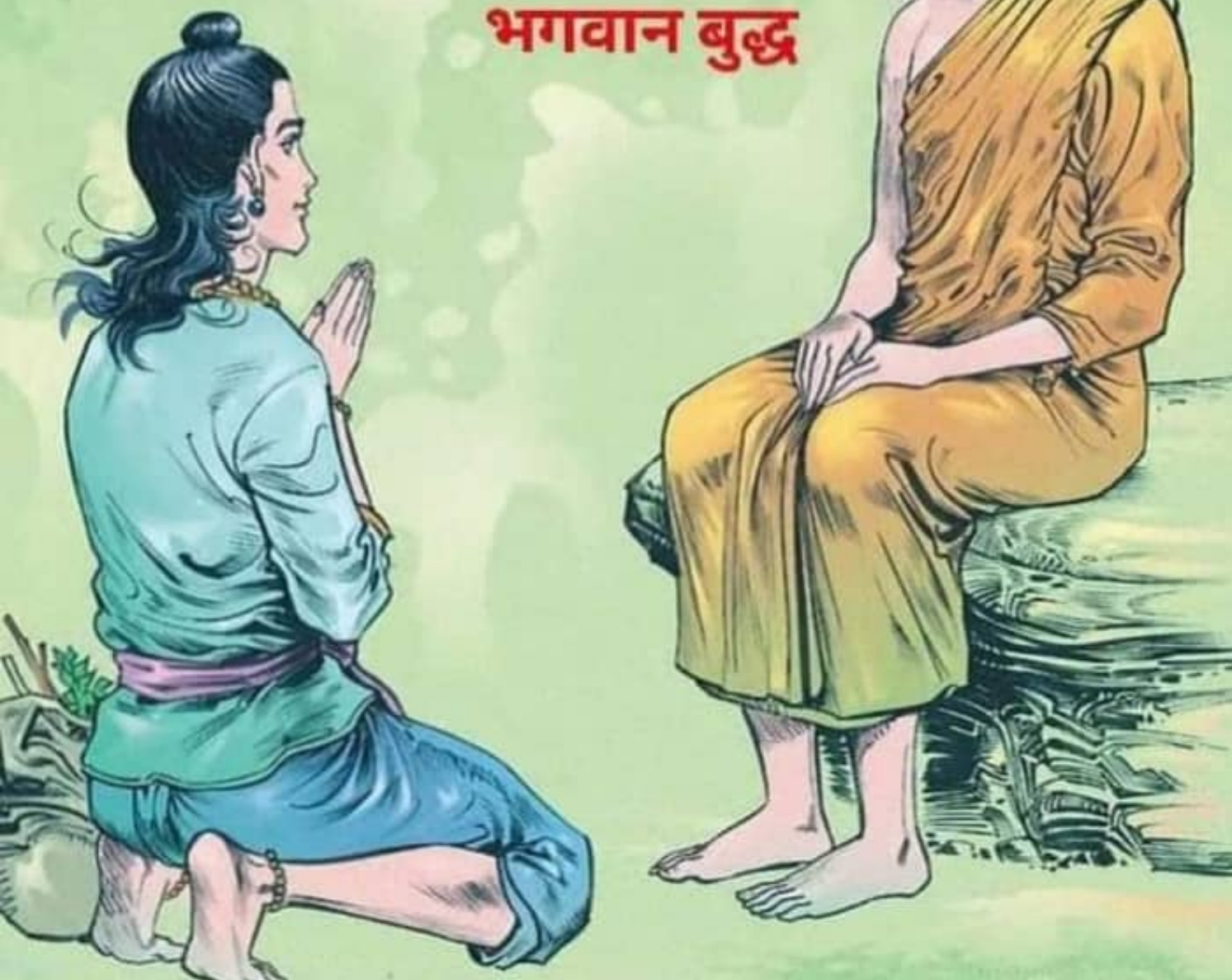


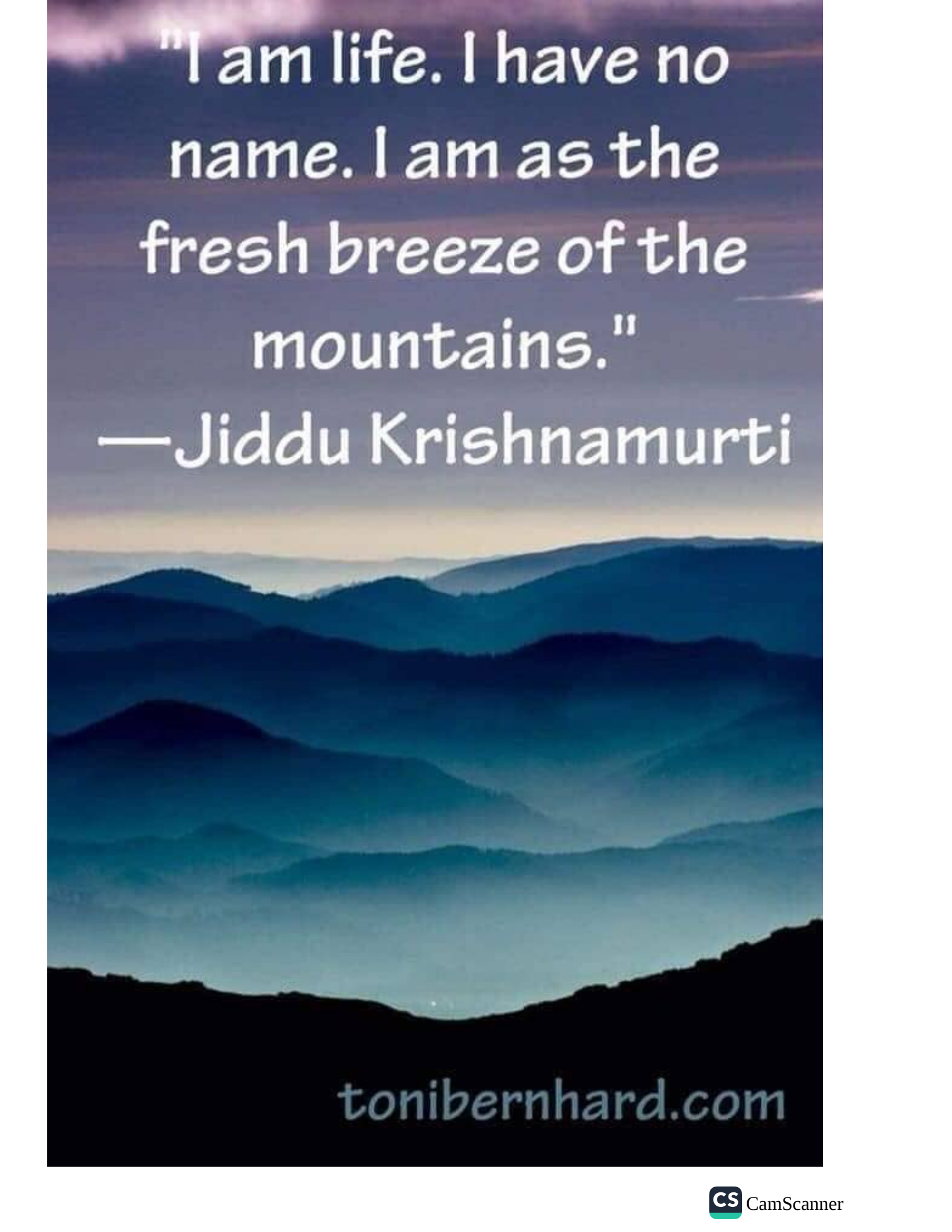


अहंकार अकेली चीज है आदमी के हाथ में, जो पूजा में चढ़ाई जा सकती वह आदमी की अपनी है, बाकी तो सब परमात्मा का है। -ओशो

इस संपूर्ण संसार में दुःख
से बड़ा कोई मित्र नहीं!
क्योंकि दुःख ही है,
जो मनुष्य को.. सत्य की
"खोज करवाता है.!

भगवान बुद्ध

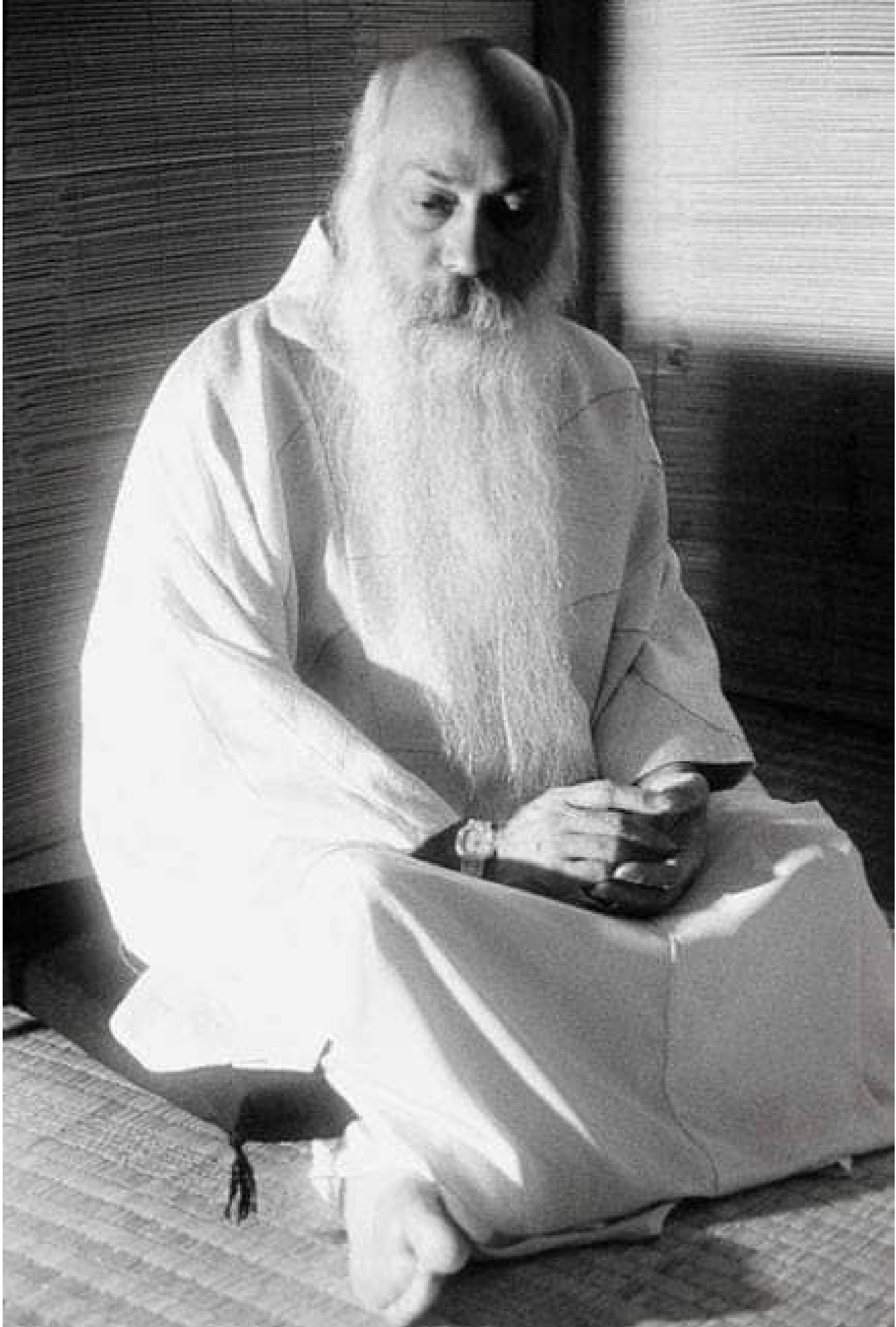




"I am life. I have no
name. I am as the
fresh breeze of the
mountains."

—Jiddu Krishnamurti

tonibernhard.com





FORM ON FACEBOOK

Awaken Your Chakras

[Learn more](#)

Like



Comment



Share

**Naye Bharat ke Khoj**

1d · 🌐



मत फिक्र करो कि लोग बुरे हैं या अच्छे,
फिक्र इतनी करो कि तुम कहाँ हो ?
तुम क्या हो ?
तुम कौन हो ?
लोगों से लेना-देना भी क्या है !
आज तुम हो, कल नहीं रहोगे, दुनिया तो चलती रही है, चलती रहेगी ।
कल तुम नहीं थे तब भी दुनिया चलती थी ,
कल तुम नहीं होगे तो भी दुनिया चलती रहेगी ।
फिर लोगों को बदलना होता, लोगों को अच्छा बनाना होता ,
ऐसा कोई दायित्व तुम्हारे ऊपर किसी ने सौंपा होता तो भी कोई बात थी
कि तुम चिंता करो, कौन अच्छा ,कौन बुरा !
तुम्हें लेना-देना क्या है !

एक दूसरे में बुराइयाँ देख रहे हैं सब ।
क्या तुम्हें पड़ी है ?
अपनी सवारों !
थोड़े दिन है, थोड़ा समय है, अपने को निखारो ।

ओशो

अहं क्या है?

एक भ्रम।

जो है नहीं लेकिन

उसे लगता है

कि वो है।



**Osho Osho**

8h · 🌐



ईश्वर हमारा स्वरूप है,
हम उसमें हो सकते हैं
लेकिन उसको जान नहीं सकते।

यही तो पहेली है,
जिसमें हम उलझे हैं,
जिस पर ईश्वर की कृपा हो जाती है
वही इसको समझ पाता है।

ईश्वर सदा से उपलब्ध है,
हम अपने मैं के कारण उसको समझने में असमर्थ हैं।

जब मैं नहीं होता तब हम ईश्वर स्वरूप होते हैं।
अब प्रश्न ये है कि जब मैं ही नहीं होगा तो
उसको जानेगा कौन...?

जिस दिन साधक को ये बात समझ में आती है,
उस पल साधक में रहस्यपूर्ण हँसी पैदा होती है,
मतलब मैं ईश्वर हो कर ईश्वर को खोज रहा था।



""^आपकी बातें कभी कभी विरोधी क्यों प्रतीत होती है^""

मेरे इस मंदिर के द्वार अनेक हैं। कोई नाचता हुआ आए, तो उसके लिए मैंने कृष्ण की मूर्ति सजा रखी है। और किसी को नाच न जंचता हो, चुप बैठना हो, तो उसके लिए मैंने बुद्ध की मूर्ति बिठा रखी है। जिसकी जैसी रुचि हो।

पहले अपनी रुचि को पहचानो। पहले अपने दिल को पहचानो; अपने दिल को टटोलो--और उसी आधार पर चलना, वहीं से संकेत लेना, तो यह दुविधा खड़ी नहीं होगी, तो यह दुई खड़ी नहीं होगी।

ज्युं मुख एक देखि दुई दर्पन! दर्पणों में मत देखो। आंख बंद करो और अपने भीतर के रुझान को पहचानो कि मेरा रुझान क्या है। और कठिनाई नहीं होगी। अगर तुम दूसरों की सुनोगे, तो कठिनाई में पड़ोगे, क्योंकि दूसरे अपनी सुनाएंगे।

इसलिए मैं निरंतर अनेक जीवन-दृष्टियों पर बोल रहा हूं। कहीं ऐसा न हो कि कोई जीवन-दृष्टि तुमसे अपरिचित रह जाए। तुम्हें परिचित करा देता हूं।

और निरंतर यह घटना घटती है: जब मीरा पर बोला हूं, तो किसी के हृदय की घंटियां बजने लगीं। और जब बुद्ध पर बोला हूं, तो किसी के हृदय की गूंज उठी। और मैंने यह पाया है कि जिसको मीरा को सुन कर गूंजा था हृदय, उसको बुद्ध को सुन कर नहीं गूंजा। और जिसको बुद्ध को सुन कर हृदय आंदोलित हुआ, वह मीरा से अप्रभावित रह गया। जो मीरा को सुन कर रोया था, आंख आंसुओं से गीली हो गई थीं--वह बुद्ध को सुन कर ऐसा ही बैठा रहा। कहीं तालमेल न बैठा।

और जो बुद्ध को सुन कर गदगद हो आया, जिसके भीतर कुछ ठहर गया बुद्ध को सुनते-सुनते--वह मीरा को सुन कर सोचता रहा था; यह सब कल्पना-जाल है! यह सब भ्रम है! ये सब मन के ही भाव हैं। कहाँ कृष्ण? कहाँ कृष्ण की बांसुरी? कैसा नृत्य? यह मीरा स्त्री थी, भावुक थी, भावनाशील थी। भजन तो अच्छे गाए हैं! वह उनकी भजन की



उसका दिल ऐसा नहा हाता कि दाड़ पड़ू इस रागस्तान में। कि जाऊं आर खो जाऊं इस रेगिस्तान में। न कोई कोयल बोलती है। न कोई पक्षी चहचहाते हैं। कुछ भी नहीं। सन्नाटा है।

यहां मैं सारे द्वार तुम्हारे लिए खोल रहा हूं। इस तरह की बात कभी पृथ्वी पर नहीं की गई। इसलिए मैं इसे भगीरथ-प्रयास कह रहा हूं। यह पहली बार हो रहा है। महावीर ने अपनी बात कही। मैं भी अपनी बात कह कर चुप हो सकता हूं। मगर मेरी बात कुछ लोगों के काम की होगी, थोड़े से लोगों के काम की होगी।

मीरा ने अपनी बात कही। बुद्ध ने अपनी बात कही। कृष्ण ने अपनी बात कही। अब समय आ गया कि कोई इन सबकी बात को पुनरुज्जीवित कर दे। इसलिए तुम्हें मेरी बातों में बहुत से विरोधाभास मिलेंगे। मिलने वाले हैं। क्योंकि जब मैं मीरा पर बोलता हूं, तो मीरा के साथ एकरूप हो जाता हूं। फिर मैं भूल ही जाता हूं--बुद्ध को, महावीर को। फिर मुझे कुछ लेना-देना नहीं। और अगर किसी ने बुद्ध-महावीर की बात छेड़ी, तो मैं मीरा के सामने उन्हें टिकने नहीं दूंगा! जब मीरा मैं हूं, तो उस समय मीरा मैं हूं।

और जब मैं बुद्ध के संबंध में बोल रहा हूं; किसी ने कहा कि अब मेरी आंखों में आंसू नहीं आ रहे--तो मैं उसे झकझोरूंगा। तो मैं कहूंगा कि तुम्हें रोना हो, तो कहीं और जा कर रोओ। रोने की जरूरत क्या है! मीरा के समय जरूर कहूंगा कि रोओ, जी भर कर रोओ। गीले हो जाओ। इतने गीले कि बिलकुल भीग ही जाओ। तरबोर हो जाओ।

तो मेरी बातों में तुम्हें विरोधाभास मिलेंगे, क्योंकि मैं सारे द्वार खोल रहा हूं। वे अलग-अलग द्वार हैं। उनकी कुंजियां अलग; उनके ताले अलग; उनकी स्थापत्य कला अलग; उनका रंग-ढंग अलग। मगर ये सब द्वार एक ही जगह ले जा रहे हैं। ज्यूं था त्यूं ठहराया!

ज्यूं था त्यूं ठहराया

ओशो

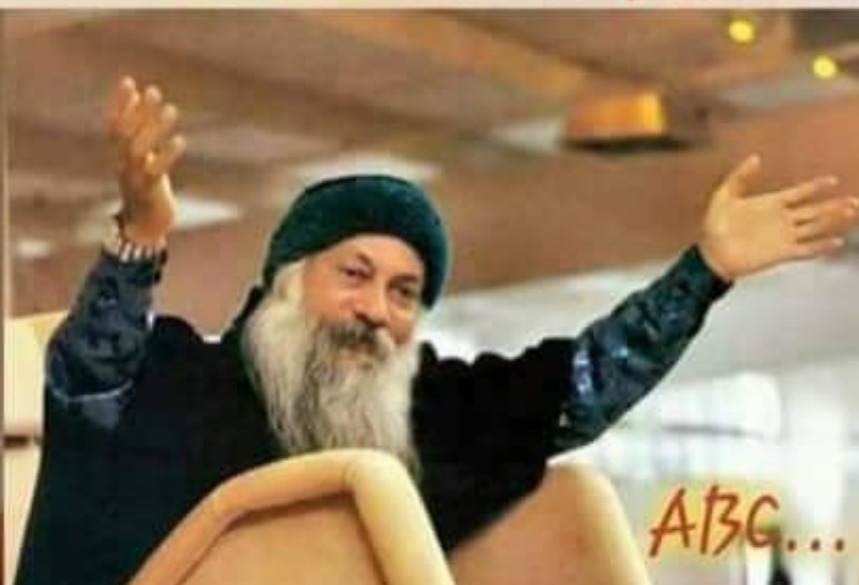
अगर तम मंदिर-मस्जिद के परमात्मा की

अगर तुम मंदिर-मस्जिद के परमात्मा को
बात कर रहे हो, तो तुम गलत आदमी के
पास आ गए ! मैं तुम्हें मंदिर-मस्जिद का
परमात्मा नहीं दे सकता।

वह तो है ही मस्तिष्क का जाल। वह तो बुद्धि
का ही खेल है।

परमात्मा तो वह है जिसने हमारा निर्माण
किया है।

ओशो प्रेम-पंथ ऐसो कठिन



← Wisdom - ॐ ... { क्रोध } बुद्ध ने कहा है कि...



क्रोध का मनोविज्ञान

क्रोध का मनोविज्ञान है कि तुम कुछ चाहते थे और किसी ने तुम्हें वह पाने से रोक दिया। कोई राह का रोड़ा बन गया, एक रुकावट के रूप में। तुम्हारी पूरी उर्जा कुछ पाने जा रही थी और किसी ने उर्जा को रोक दिया। तुम जो चाहते थे, नहीं पा सके।

अब यह कुंठित उर्जा क्रोध बन जाती है... क्रोध उस व्यक्ति के विरुद्ध जिसने तुम्हारी आकांक्षा के पूर्ण होने की सम्भावना को नष्ट कर दिया हो। तुम क्रोध को नहीं रोक सकते क्योंकि क्रोध एक उपोत्पाद, एक बाइप्रोडक्ट है। लेकिन तुम कुछ और कर सकते हो जिससे यह बाइप्रोडक्ट फिर पैदा न हो।

जीवन में, एक बात याद रखो: किसी भी वस्तु की चाहत इतनी तीव्रता से न करो कि यह तुम्हारे जीवन - मरण का प्रश्न बन जाए। थोड़े हल्के-फुल्के, खेलपूर्ण बनो।

मैं नहीं कहता कि तुम इच्छा मत करो - क्योंकि यह तुम्हारे भीतर एक दमन बनेगा। मैं कह रहा हूँ, इच्छा करो लेकिन तुम्हारी इच्छा खेलपूर्ण हो। यदि तुम इसे पा सको, अच्छा है। यदि तुम इसे नहीं पा सके, शायद यह सही समय नहीं था; हम इसे अगली बार देखेंगे। खेल की कुछ कला सीखो।

हम आकांक्षा से इतने एकाकार हो गए हैं कि जब इसमें रोड़े अटकाए जाते हैं या इसे रोका जाता है, हमारी अपनी उर्जा आग बन जाती है; यह तुम्हें ही जला देती है। और लगभग पागलपन की उस दशा में तुम कुछ नहीं कर सकते हो, जिसके लिए तुम पश्चात्ताप कर रहे हो। यह घटनाओं की एक श्रृंखला पैदा कर देती है कि तुम्हारा पूरा जीवन उसमें संलग्न हो जाता है। इसके कारण, हजारों वर्षों से लोग कहते रहे हैं, 'आकांक्षा रहित हो जाओ।' अब इसकी मांग करना कुछ अमानवीय हो जाता है। यहां तक कि जिन लोगों ने कहा, 'इच्छा रहित हो जाओ।' उन्होंने भी तुम्हें एक उद्देश्य, एक आकांक्षा दे दिया: यदि तुम आकांक्षा रहित हो जाओ तो तुम मोक्ष की, निर्वाण की परम स्वतंत्रता को उपलब्ध हो जाओगे। वह भी एक इच्छा है।

तुम अपनी आकांक्षा को कुछ बड़ी आकांक्षा के लिए दबा सकते हो, और तुम भूल भी सकते हो कि तुम अब भी वही व्यक्ति हो। तुमने केवल अपना लक्ष्य बदल दिया है। निश्चित ही, बहुत लोग नहीं हैं जो मोक्ष पाने का प्रयास कर रहे हैं, इसलिए तुम्हें बहुत बड़ी प्रतियोगिता का सामना नहीं करना होगा, वास्तव में लोग बहुत प्रसन्न होंगे कि तुमने मोक्ष की ओर जाना शुरू कर दिया है - जीवन का एक प्रतियोगी कम हुआ। लेकिन जहां तक तुम्हारा सवाल है, कुछ नहीं बदला है। और यदि कुछ भी किया जाए जो तुम्हारी मोक्ष की आकांक्षा को बाधा दे, फिर तुम्हारा निरहंकरिता प्रज्वलित हो उठेगा। और इस बार यह अधिक बड़ा होगा, क्योंकि अब तुम्हारी आकांक्षा अधिक बड़ी होगी। क्रोध हमेशा आकांक्षा के अनुपात में होता है।

तुम्हारे मन में है

Write a comment ...

Send

← Wisdom - ॐ ... { क्रोध } बुद्ध ने कहा है कि...



कुछ विशेष सन्देश -----क्रोध को कैसे नियंत्रित करें?

कुछ लोगों को लगता है कि क्रोध किए बिना वे अपना काम नहीं करवा सकते। हम क्यों हमेशा बच्चों, पत्नी, कर्मचारियों, वेटर या दुकानदार वगैरह, जो लोग हम पर निर्भर हैं उन पर क्रोधित हो जाते हैं? क्या यह हमारी कमजोरी है या ताकत? क्या हमने कभी यह महसूस किया है कि जब वे हमारे क्रोध का शिकार बनते हैं, तब उनमें हमारे लिए कितनी बुरी भावनाएँ पैदा होती हैं? क्रोध वास्तव में क्या कारण है जो टाला न जा सके या परिणाम है, जो हमारी दैनिक समस्याओं से निपटने में असमर्थता के कारण उत्पन्न होता है?

क्रोध प्रबंधन पर उत्तर पाने के लिए दादाश्री के उदाहरण, पुस्तकें पढ़ें और वीडियो देखें।

इसके अलावा, अपने आत्मा को जानने के लिए ज्ञानविधि में अवश्य भाग लें। उससे आपको क्रोध से मुक्त होने में मदद मिलेगी।

"क्रोध को कैसे नियंत्रित करें?" के बारे में प्रश्नोत्तरी:—

क्या गुस्सा कमजोरी है या ताकत?

क्रोध क्या है? क्रोध खतरनाक क्यों है?

लोग क्रोधित क्यों हो जाते हैं?

उदासी क्या है?

हम हमारी क्रोध की समस्याओं को कैसे सुधारें?

मैं क्रोध करते-करते थक गया हूँ। क्रोध से छुटकारा कैसे पाऊँ?

अपने जीवन में हम क्रोध को कैसे दूर करें?

रिश्तों में क्रोध पर कैसे काबू पाऊँ?

मैं अपने क्रोध को कैसे नियंत्रित करूँ?

क्या आप क्रोध से मुक्ति चाहते हैं? आत्मज्ञान पाएँ!

"क्रोध को कैसे नियंत्रित करें?" के बारे में आध्यात्मिक आपत्सुत्र:--

क्रोध तो गोला-बारूद है और गोला-बारूद होगी, वहाँ लश्कर लड़ेगा ही। कुछ सूझ नहीं पड़ने पर मनुष्य गुस्सा कर बैठता है। जिसे सूझ पड़े वह गुस्सा करेगा? गुस्सा करना यानी क्या? वह गुस्सा पहला इनाम किसे देगा? जहाँ निकलेगा वहाँ पहले खुद को जलायेगा, फिर दूसरे को जलायेगा।

कमजोर को गुस्सा बहुत आता है। इसलिए जो गरम हो जाता है, उस पर तो दया आनी चाहिए कि इस बेचारे का क्रोध पर कुछ भी कंट्रोल नहीं है। मुँह से बोल दें, वही क्रोध कहलाये ऐसा नहीं है, भीतर कुढ़ता रहे वह भी क्रोध है।

सहन करना वह तो डबल (दोहरा) क्रोध है। सहन करना यानी दबाते रहना। वह तो एक दिन स्प्रिंग उछले तब पता चलेगा।

भगवान ने तो क्या कहा है कि तेरा क्रोध ऐसा है कि तेरे सगे मामा के साथ तू क्रोध करता है तो उसका मन तुझ से अलग हो जाता है, सारी जिन्दगी के लिए अलग हो जाता है, तो तेरा क्रोध गलत है।

Write a comment ...

Send

← Wisdom - ॐ ... { क्रोध } बुद्ध ने कहा है कि...



बुद्ध से जानिए क्रोध करने के सात अनर्थ

बुद्ध के पवित्र वचन

भगवान गौतम बुद्ध ने क्रोध करने से सात अनर्थ बताए हैं। उनके अनुसार जो स्त्री या पुरुष क्रोध करता है, उसके शत्रु को इन सात बातों की प्रसन्नता होती है :-

(1) मनुष्य चाहता है कि उसका शत्रु कुरूप हो जाए क्योंकि कोई भी यह पसंद नहीं करता है कि उसका शत्रु स्वरूपवान हो, सुंदर हो। जब उसे क्रोध आता है, तो भले ही उसने मल-मलकर स्नान किया हो, सुगंध लगाई हो, बाल और दाढ़ी ठीक ढंग से बनाई हो, उसके कपड़े स्वच्छ हों, फिर भी वह कुरूप लगता है क्योंकि उसकी आंखों में क्रोध भरा हुआ है। इससे उसके शत्रु को प्रसन्नता होती है।

(2) मनुष्य चाहता है कि उसका शत्रु पीड़ा पाए। क्योंकि कोई आदमी यह पसंद नहीं करता कि उसका शत्रु आराम से रहे। जब उसे क्रोध आता है तो भले ही वह बढ़िया बिस्तर पर पड़ा हो, बढ़िया कंबल उसके पास हो, मृगचर्म ओढ़े हो, सिर और पैर के नीचे बढ़िया तकिए लगे हों, फिर भी वह पीड़ा का अनुभव करता है क्योंकि उसकी आंखों में क्रोध भरा हुआ है। इससे उसके शत्रु को प्रसन्नता होती है।

(3) मनुष्य चाहता है कि उसका शत्रु संपन्न न रहे। क्योंकि अपने शत्रु की संपन्नता किसी को अच्छी नहीं लगती। मनुष्य जब क्रोध का शिकार होता है, तब वह बुरे को अच्छा और अच्छे को बुरा समझता है। इस तरह करते रहने से उसे हानि और कष्ट भोगना पड़ता है। उसकी संपन्नता जाती रहती है। इससे उसके शत्रु को प्रसन्नता होती है।

(4) मनुष्य चाहता है कि उसका शत्रु धनवान न हो। क्योंकि कोई यह पसंद नहीं करता कि उसका शत्रु पैसेवाला हो। जब उसे क्रोध आता है तो भले ही उसने अपने श्रम से संपत्ति जुटाई हो, अपनी भुजाओं से, अपने श्रम के बल पर पसीने से, ईमानदारी से पैसा इकट्ठा किया हो, वह गलत काम करने लगता है, जिससे उसे जुर्माना आदि करना पड़ता है। उसकी संपत्ति नष्ट हो जाती है। इससे उसके शत्रु को प्रसन्नता होती है।

(5) मनुष्य चाहता है कि उसके शत्रु की नामवरी न हो। क्योंकि कोई आदमी यह पसंद नहीं करता कि उसके शत्रु की ख्याति हो। जब उसे क्रोध आता है तो पहले उसने भले ही अपने अच्छे कामों से नामवरी प्राप्त की हो, अब लोग कहने लगते हैं कि यह तो बड़ा क्रोधी है। उसकी नामवरी मिट जाती है। इससे उसके शत्रु को प्रसन्नता होती है।

(6) मनुष्य चाहता है कि उसका शत्रु मित्रहीन रहे, उसका कोई मित्र न हो। क्योंकि कोई मनुष्य नहीं चाहता कि उसके शत्रु का कोई मित्र हो। जब उसे क्रोध आता है तो उसके मित्र, उसके साथी, उसके सगे-संबंधी उससे दूर रहने लगते हैं क्योंकि वह क्रोध का शिकार होता है। इससे उसके शत्रु को प्रसन्नता होती है।

(7) मनुष्य चाहता है कि मरने पर उसके शत्रु को सुगति न मिले उल्टे नरक में बुरा स्थान मिले। क्योंकि कोई शत्रु नहीं चाहता कि उसके शत्रु को

Write a comment ...

Send

← Wisdom - ॐ ... { क्रोध } बुद्ध ने कहा है कि...



Wisdom

ॐ ... { क्रोध }

बुद्ध ने कहा है कि जब मैंने जाना तो मैंने पाया है कि अदभुत हैं वे लोग, जो दूसरों की भूल पर क्रोध करते हैं! क्यों? तो बुद्ध ने कहा कि अदभुत इसलिए कि भूल दूसरा करता है, दंड वह अपने को देता है। गाली मैं आपको दूँ और क्रोधित आप होंगे। दंड कौन भोग रहा है? दंड आप भोग रहे हैं, गाली मैंने दी! क्रोध में जलते हम हैं, राख हम होते हैं, लेकिन ध्यान वहां नहीं होता! इसलिए धीरे-धीरे पूरी जिंदगी राख हो जाती है। और हमको भ्रम यह होता है कि हम जान गये हैं! हम जानते नहीं— क्रोध की सिर्फ स्मृति है और क्रोध के संबंध में शास्त्रों में पढ़े हुए वचन हैं और हमारा कोई अनुभव नहीं। जब क्रोध आ जाये तो उस आदमी को धन्यवाद दें, जिसने क्रोध पैदा करवा दिया, क्योंकि उसकी कृपा, उसने आत्म-निरीक्षण का एक मौका दिया; भीतर आपको जानने का एक अवसर दिया। उसको फौरन धन्यवाद दें कि मित्र धन्यवाद, और अब मैं जाता हूँ, थोड़ा इस पर ध्यान करके वापस आकर बात करूँगा। द्वार बंद कर लें और देखें कि भीतर क्रोध उठ गया है। हाथ-पैर कसते हों, कसने दें; क्योंकि हाथ-पैर कसेंगे। हो सकता है कि क्रोध में, अंधेरे में, हवा में, घूँसे चलें; चलने दें। द्वार बंद कर दें और देखें कि क्या-क्या होता है। अपनी पूरी पागल स्थिति को जानें और पागलपन को पूरा प्रकट हो जाने दें अपने सामने। तब आप पहली बार अनुभव करेंगे कि क्या है यह क्रोध। जब आप इस पागलपन की स्थिति को अनुभव करेंगे तो कांप जायेंगे भीतर से, कि यह है क्रोध। यह मैंने कई बार किया था, दूसरे लोगों ने क्या सोचा होगा! मनोवैज्ञानिक कहते हैं, क्रोध संक्षिप्त रूप में आया हुआ पागलपन है, थोड़ी देर के लिए आया हुआ पागलपन है, क्षणिक पागलपन है। क्षण भर में आदमी उसी हालत में हो गया, जिस हालत में कुछ लोग सदा के लिए हो जाते हैं। क्रोध में जलते हुए आदमी में और पागल आदमी में मौलिक अंतर नहीं है। अंतर सिर्फ लंबाई का है। पागल आदमी स्थायी पागल है, क्रोधी आदमी अस्थायी पागल है। दूसरे ने आपको क्रोध में देखा होगा, इसलिए दूसरे कहते हैं कि यह बेचारा कितना पागल हो गया है, यह क्या करता है? आपने कभी देखा है अपने को? अतः द्वार बंद कर लें। और अपनी पूरी हालत को देखें कि यह क्या हो रहा है। और रोकेँ मत, प्रकट होने दें, जो हो रहा है। और उसका पूरा निरीक्षण करें, तब आप पहली दफा परिचित होंगे, यह है क्रोध।

Write a comment ...

Send



Posts

**Awakening Souls**

Maitreyi Nivi · 2d ·

"We must become so alone, so utterly alone, that we withdraw into our innermost Self. It is a way of bitter suffering. But then our solitude is overcome, we are no longer alone, for we find that our innermost Self is the Spirit, that it is God, the indivisible.

And suddenly, we find ourselves in the midst of the world, yet undisturbed by its multiplicity, for in our innermost Soul, we know ourselves to be one with all Being."

~ Hermann Hesse

"हमें इतना अकेला हो जाना चाहिए, इतना पूरी तरह से अकेला, कि हम अपने अंतर्मन में वापस आ जाते हैं। यह कटु पीड़ा का एक तरीका है। लेकिन तब हमारा एकांत दूर हो जाता है, हम अब अकेले नहीं रहते हैं, क्योंकि हम पाते हैं कि हमारा अंतर्मन आत्मा है, कि यह ईश्वर है, अविभाज्य।

और अचानक, हम अपने आप को दुनिया के बीच में पाते हैं, फिर भी इसकी बहुलता से परेशान नहीं होते, क्योंकि हमारी आंतरिक आत्मा में, हम अपने आप को सभी प्राणियों के साथ एक होने के लिए जानते हैं। "

~ हरमन हेसे



• Rate this translation

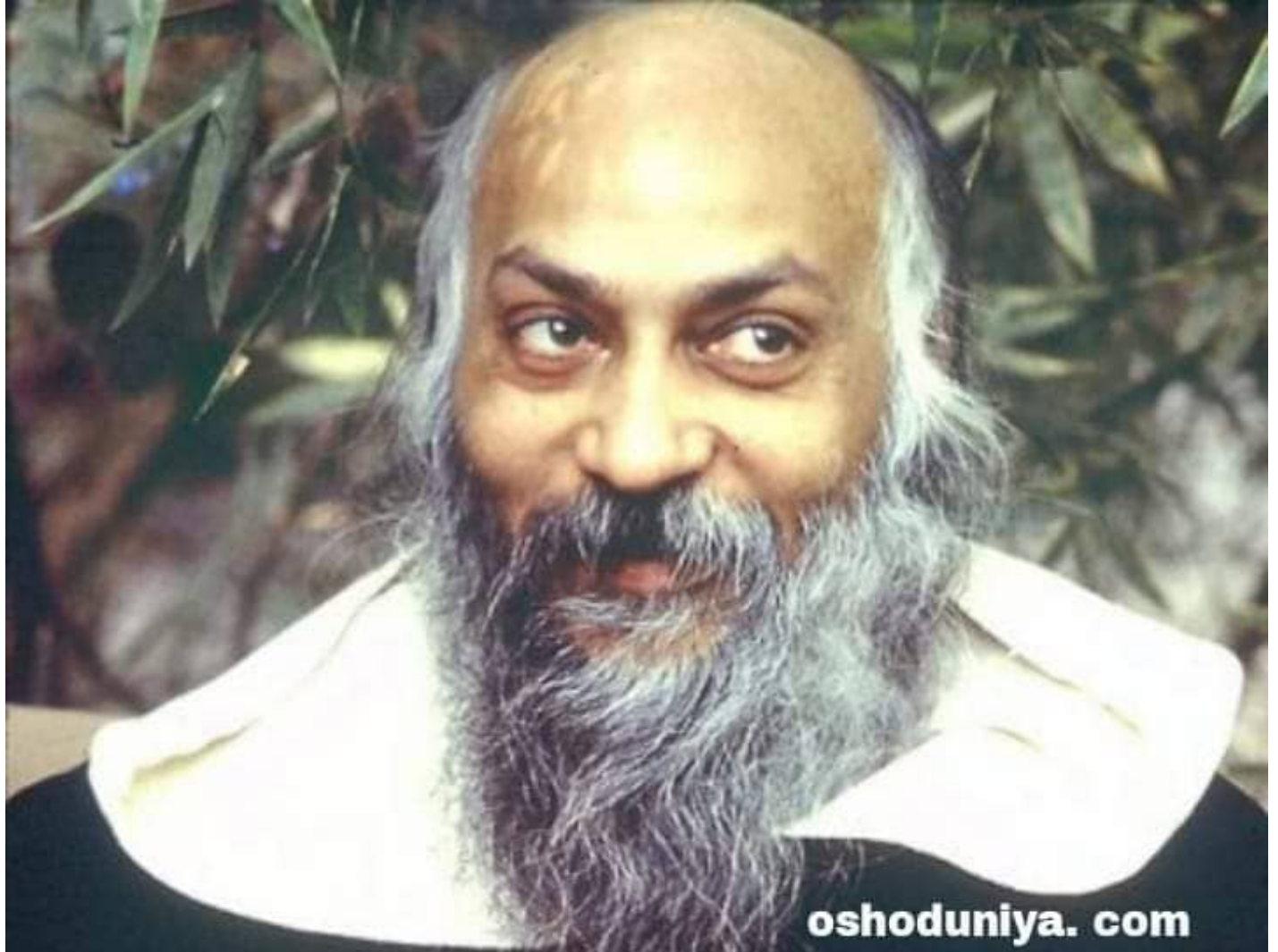


**अंदर की यात्रा तब शुरू
होती ,जब आप समझ लेते बाहर
की कोई चीज़ आपको संतुष्टि
नहीं देगी**

 30

2 comments





oshoduniya. com

"दुनियां में और सब कलाएं बाहर है, मूर्तिकार मूर्ति बनाता है, चित्रकार चित्र बनाता है, गीतकार गीत बनाता है, लेकिन बुद्ध कहते हैं, असली ज्ञानी अपने आप को बनाता है, मूर्ति को नहीं गढ़ता हैं, चित्र को नहीं रंगता, अपने को रंगता हैं, गीत को नहीं सजाता अपने को सजाता हैं, अपने सौन्दर्य को निखारता हैं, बड़े से बड़ा स्रष्टा वही हैं, जो पाने को सृजन दे देता हैं, जो अपने को नया जन्म दे देता.. 🙌❤️💻

❤️ ओशो ❤️



ऊबता ह; क्याक उसका काइ आशा नहा बचता। सुख ता आज उस मिल गया, कल के लिये कुछ बचा नहीं।

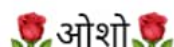
तुम्हें पता नहीं है कि महावीर और बुद्ध क्यों संन्यासी हुए? जैनों के चौबीस तीर्थंकर राजाओं के बेटे क्यों हैं, हिंदुओं के सब अवतार राजपुत्र क्यों हैं? बात जाहिर है, साफ है। गणित सीधा है। सुख इतना था कि वे ऊब गये। और ज्यादा पाने का कोई उपाय नहीं था। जितना हो सकता था वह था, वह पहले से मिला था।

इसलिए जिस दिन महावीर नग्न होकर रास्ते पर भिखमंगे की तरह चले, उन्हें जो आनंद मिला है, तुम भूल मत करना नग्न चलकर रास्ते पर; तुम्हें वह न मिलेगा। क्योंकि तुम गणित ही चूक रहे हो। उसके पहले राजा होना जरूरी है। वस्त्रों से जब कोई इतना ऊब गया हो कि वे बोझिल मालूम होने लगे तब कोई नग्न खड़ा हो जाए रास्ते पर तो स्वतंत्रता का अनुभव होगा—मुक्ति! उसे लगेगा कि मोक्ष मिला। जो भोजन से इतना पीड़ित हो गया हो, वह जब पहली दफा उपवास करेगा तो शरीर फिर से जीवंत होगा; फिर से भूख जगेगी। और जो महलों में रह-रहकर कारागृह में बंद हो गया हो, जब वह खुले आकाश के नीचे, वृक्ष के नीचे सोयेगा तब उसे पहली दफा पता चलेगा कि जीवन का आनंद क्या है!

महावीर की बात सुनकर कई साधारण-जन भी त्यागी हो जाते हैं। वे बड़ी मुश्किल में पड़ते हैं क्योंकि जो आनंद महावीर को मिला, वह उन्हें मिलता हुआ मालूम नहीं पड़ता। तो वे सोचते हैं शायद अपनी कोई साधना में भूल है। साधना में कोई भूल नहीं, शुरुआत में ही भूल है। महावीर उतरते हैं राज-सिंहासन से। राज-सिंहासन से ऊब गये हैं इसलिए उतरते हैं; क्योंकि उसके आगे और कोई सीढ़ी नहीं है। वे आखिरी सीढ़ी पर थे; और कोई विकास का उपाय न था। आकांक्षा को जाने की जगह न थी। नीचे उतरते हैं। सिंहासन से नीचे उतरकर जीवन में फिर से उमंग आती है। फिर से रस आता है। फिर से खोज शुरू होती है।

तुम्हारे जीवन में यह नहीं हो सकता। जिसने भोगा ही नहीं है, वह त्याग कैसे करेगा? और जिसके पास है ही नहीं, वह छोड़ेगा कैसे? जो तुम्हारे पास है, वही तुम छोड़ सकते हो। जो तुम्हारे पास नहीं है, उसे तुम कैसे छोड़ोगे? उस भ्रांति में पड़ना ही मत।

बिन बाती बिन तेल



ओशो



🌸 जिसने भोगा ही नहीं है, वह त्याग कैसे करेगा? और जिसके पास है ही नहीं, वह छोड़ेगा कैसे....?

एक यहूदी फकीर हुआ बालसेन। एक दिन एक धनपति उससे मिलने आया। वह उस गांव का सबसे बड़ा धनपति था, यहूदी था। और बालसेन से उसने कहा कि कुछ शिक्षा मुझे भी दो। मैं क्या करूं? बालसेन ने उसे नीचे से ऊपर तक देखा, वह आदमी तो धनी था लेकिन कपड़े चीथड़े पहने हुए था। उसका शरीर रूखा-सूखा मालूम पड़ता था। लगता था, भयंकर कंजूस है। तो बालसेन ने पूछा कि पहले तुम अपनी जीवन-चर्या के संबंध में कुछ कहो। तुम किस भांति रहते हो? तो उसने कहा कि मैं इस भांति रहता हूं जैसे एक गरीब आदमी को रहना चाहिये। रूखी-सूखी रोटी खाता हूं। बस नमक, चटनी और रोटी से काम चलाता हूं। एक कपड़ा जब तक जार-जार न हो जाए तब तक पहनता हूं। खुली जमीन पर सोता हूं, एक गरीब साधु का जीवन व्यतीत करता हूं। बालसेन एकदम नाराज हो गया और कहा, नासमझ! जब भगवान ने तुझे इतना धन दिया तो तू गरीब की तरह जीवन क्यों बिता रहा है? भगवान ने तुझे धन दिया ही इसलिए है कि तू सुख से रह, ठीक भोजन कर। खा कसम कि आज से ठीक भोजन करेगा, अच्छे कपड़े पहनेगा, सुखद शैया पर सोयेगा, महल में रहेगा। धनपति भी थोड़ा हैरान हुआ। उसने कहा कि मैंने तो सुना है कि यही साधुता का व्यवहार है। पर बालसेन ने कहा कि मैं तुझसे कहता हूं कि यह कंजूसी है, साधुता नहीं है। काफी समझा-बुझाकर कसम दिलवा दी। वह आदमी जरा झिझकता तो था, क्योंकि जिंदगी भर का कंजूस था। जिसको वह साधुता कह रहा था वह साधुता थी नहीं, सिर्फ कृपणता थी। लेकिन लोग कृपणता को भी साधुता के आवरण में छिपा लेते हैं। कृपण भी अपने को कहता है कि मैं साधु हूं इसलिए ऐसा जीता हूं। पर बालसेन ने उसे समझा-बुझाकर कसम दिलवा दी। जब वह चला गया तो बालसेन के शिष्यों ने पूछा कि यह तो हद्द हो गई। उस आदमी की जिंदगी खराब कर दी। वह साधु की तरह जी रहा था। और हमने तो सदा यही सुना है कि सादगी से जीना ही परमात्मा को पाने का मार्ग है। यही तुम हमसे कहते रहे। और इस आदमी के साथ तुम बिलकुल उल्टे हो गये। क्या इसको नरक भेजना है? बालसेन ने कहा, 'यह आदमी अगर रूखी रोटी खायेगा तो यह कभी



दुनिया में जितनी बुराई है, उसमें सिर्फ बुरे लोगों का हाथ होता, तो भी ठीक था, उसमें अच्छे लोगों का हाथ भी है। यह बात मैं कह रहा हूं थोड़ी समझनी कठिन मालूम पड़ेगी। क्योंकि अच्छे आदमी का सीधा हाथ नहीं है, अच्छे आदमी का हाथ परोक्ष है, इनडायरेक्ट है। अच्छा आदमी छोड़कर चल देता है। अच्छा आदमी लड़ाई के मैदान से हट जाता है। अच्छा आदमी, जहां भी संघर्ष है, वहां से दूर हो जाता है। बुरे आदमी ही शेष रह जाते हैं। और बुरे आदमी ताकत पर पहुंच जाते हैं, तो पूरे समाज को बुरा करने का कारण होते हैं।

इसलिए कृष्ण, राम को चुन रहे हैं, यह बहुत सोचकर कही गई बात है। राम दोहरे हैं, आदमी बुद्ध जैसे और शक्ति रावण जैसी।

और शायद दुनियां अच्छी न हो सकेगी, जब तक अच्छे आदमी और बुरे आदमी की ताकत के बीच ऐसा कोई संबंध स्थापित न हो। तब तक शायद दुनिया अच्छी नहीं हो सकेगी। अच्छे आदमी सदा पैसिफिस्ट होंगे, शांतिवादी होंगे, हट जाएंगे। बुरे आदमी हमेशा हमलावर होंगे, लड़ने को तैयार रहेंगे। अच्छे आदमी प्रार्थना—पूजा करते रहेंगे, बुरे आदमी ताकत को बढ़ाए चले जाएंगे। अच्छे आदमी एक कोने में पड़े रहेंगे, बुरे आदमी सारी दुनिया को रौंद डालेंगे।

थोड़ा हम सोचें, राम जैसा आदमी सारी पृथ्वी पर खोजना मुश्किल है। एक अनूठा आयाम है राम का। एक अलग ही डायमेंशन है। क्राइस्ट, बुद्ध, महावीर खोजे जा सकते हैं। रावण, या हिटलर, या नेपोलियन, या सिकंदर खोजे जा सकते हैं। राम बहुत अनूठा जोड़ हैं। आदमी बुद्ध जैसे, हाथ में ताकत रावण जैसी।

कृष्ण कहते हैं, शस्त्रधारियों में मैं राम हूं!!

— ओशो

गीता दर्शन (भाग - 5)

अध्याय: 10

प्रवचन — 12

(शस्त्रधारियों में राम)



अच्छे आदमियों का संघ क्यों जरूरी..-

इस पर ओशो की अदभुत अंतर्दृष्टि!

हिंसा हो भीतर, वैमनस्य हो भीतर, प्रतिस्पर्धा हो भीतर, शत्रुता हो भीतर, तो अस्त्र—शस्त्र घातक हैं। यह तो हमारी समझ में आ जाएगा। एक तरफ रावण है, जिससे शस्त्रों का मेल है, यह खतरनाक है। दूसरी तरफ बुद्ध और महावीर हैं। ये भी बिलकुल गणित के फार्मूले की तरह साफ हैं। जैसे ये आदमी हैं, इनके पास वैसा ही सब कुछ है; इनके पास कोई अस्त्र—शस्त्र नहीं है। भीतर प्रेम है, हाथ में तलवार नहीं है।

ये आदमी अपने लिए खतरनाक नहीं हैं, किसी के लिए खतरनाक नहीं हैं। लेकिन नकारात्मक रूप से समाज के लिए ये भी खतरनाक हो सकते हैं। नकारात्मक रूप से! क्योंकि इसका मतलब यह हुआ कि बुरे आदमी के हाथ में ताकत रहेगी और अच्छा आदमी ताकत को छोड़ता चला जाएगा। जाने—अनजाने यह बुरे आदमी को मजबूत करना है। महावीर की कोई इच्छा नहीं है, बुद्ध की कोई इच्छा नहीं है कि बुरा आदमी मजबूत हो जाए। लेकिन बुद्ध और महावीर का शस्त्र छोड़ देना, बुरे आदमी को मजबूत करने का कारण तो बनेगा ही। अच्छा आदमी मैदान छोड़ देगा, बुरा आदमी ताकतवर हो जाएगा।

दुनिया में जितनी बुराई है, उसमें सिर्फ बुरे लोगों का हाथ होता, तो भी ठीक था, उसमें अच्छे लोगों का हाथ भी है। यह बात मैं कह रहा हूं थोड़ी समझनी कठिन मालूम पड़ेगी। क्योंकि अच्छे आदमी का सीधा हाथ नहीं है, अच्छे आदमी का हाथ परोक्ष है, इनडायरेक्ट है। अच्छा आदमी छोड़कर चल देता है। अच्छा आदमी लड़ाई के मैदान से हट जाता है। अच्छा आदमी, जहां भी संघर्ष है, वहां से दूर हो जाता है। बुरे आदमी ही शेष रह जाते हैं। और बुरे आदमी ताकत पर पहुंच जाते हैं, तो पूरे समाज को बुरा करने का कारण होते हैं।

इसलिए कृष्ण, राम को चुन रहे हैं, यह बहुत सोचकर कही गई बात है।
राम दोहरे हैं, आदमी बुद्ध जैसे और शक्ति रावण जैसी।

और शायद दुनियां अच्छी न हो सकेगी, जब तक अच्छे आदमी और बुरे आदमी की मात्रा के बीच ऐसा कोई संबंध स्थापित न हो। वह वह



जिसका कोई अपना ना रहा.

जांच लीजिए एक बार क्या आप इस कटाग्री बैठते है

जिसको अभी भी लगता है यहां मेरा कोई है
उसको ध्यान नहीं घट सकता,

ये ध्यान बड़ी निराली चीज है
ध्यान घटे करने से ऐसा सोचने
वालो को गलत फेमी है.

ध्यान तो वही चीज है जो तुम्हे अपने में लौटा ता है.

जैसे तुम हो वैसे ही तुम्हे बना देता है,
स्वभाव में वापसी.
यही है ध्यान,

फिर जियो तुम जो हो वही बनकर.
एक बार मिली है जिंदगी यूंही मत गवा देना दूसरो के गुलाम बनकर

#आपका_मित्र_वैभव

**OSHO LOVERS**

Vaibhav Tandale · 13h · 🌐

#ओशो_नमन_दोस्तो

#आपको_नही_हुआ_ध्यान

कुछ लोग कहते है
ध्यान करने से कुछ नही होता,

लेकिन असलियत तो ये है.
ध्यान तो उसे ही घटता है,

जिसका लोभ खत्म हुआ.

जिसका क्रोध खत्म हुआ.

जिसका अहंकार खत्म हुआ.

जिसको दुनिया से विरक्ति हुई.

जो मरने की ही सोच रहा था.

जिसको सबने ठुकराया.

जिसका कोई अपना ना रहा.

जांच लीजिए एक बार क्या आप इस कटाग्री बैठते है

जिसको अभी भी लगता है यहां मेरा कोई है
उसको ध्यान नही घट सकता,

ये ध्यान बड़ी निराली चीज है
ध्यान घटे करने से ऐसा सोचने
वालो को गलत फेमी है.



सत्संग का अर्थ है, जो तुम होना चाहो उस तरह के लोगों के पास रहना। बीमारियां ही नहीं संक्रामक होती हैं, स्वास्थ्य भी संक्रामक है। अगर स्वस्थ रहना चाहो, स्वस्थ लोगों का सत्संग खोजना। अगर सुंदर होना चाहो, सुंदर लोगों का सत्संग खोजना। अगर सत्य होना चाहो, सच्चे लोगों का सत्संग खोजना। अगर फूलों जैसा आनंद चाहिए हो तो फूलों के पास बैठना। बगीचों से निकलना। बगीचों से निकलने वाले आदमी के वस्त्रों को भी फूलों की गंध पकड़ लेती है। ❤️🕊️ ओशो 🕊️❤️





देखते न दीवाली आती है तो लोग धन की पूजा करते हैं! धन का उपयोग तक भी ठीक था; कम से कम पूजा तो मत करो। कहते हैं लक्ष्मी-पूजा कर रहे हैं। धन की पूजा! इसका अर्थ क्या हुआ? इसका अर्थ हुआ कि धन परमात्मा हो गया। अब तो धन की पूजा भी हो रही है! धन का उपयोग करते; धन साधन था, उपयोगी था। मैं यह नहीं कहता कि धन उपयोगी नहीं है। धन बड़ा उपयोगी है; विनिमय का माध्यम है; हजार सुविधाएं उससे आती हैं। लेकिन पूजा! तो तुमने फिर धन में परमात्मा को देखना शुरू कर दिया। फिर तो रुपया जो है रुपया न रहा, प्रभु की प्रतिमा हो गयी। अब तुम इसकी पूजा कर रहे, इसको नमन कर रहे हो।

OSHO



पाखंड का मतलब क्या है??

पाखंड का मतलब यह होता है कि जो व्यक्ति खंड - खंड है वह पाखंडी है। पाखंड यानी खंड -खंड हो जाना। अखंड होने में पाखंड नहीं होता। अखंड का मतलब होता है—जैसा भीतर है वैसा बाहर है।

मुझसे लोग नाराज इसलिए हैं कि मैं पाखण्ड में जरा भी भरोसा नहीं करता। जो मेरे भीतर है वही मैं कहता हूँ। जैसा है वैसा ही कहता हूँ—बुरा लगे बुरा लगे, भला लगे भला लगे। जो मेरे लिए सत्य है वही कहता हूँ, जो परिणाम हो। परिणाम की चिंता करके जो बोलता है वह तो सत्य बोल ही नहीं सकता। वह तो परिणाम के हिसाब से बोलेगा। वह तो दुकानदार है। वह तो यह देखता है कि लाभ किससे होगा, क्या कहूँ जिससे लाभ हो? वह अगर सत्य भी बोलेगा तो तभी बोलेगा जब लाभ होता हो। उसने तो सत्य को भी लाभ का ही साधन बना दिया है।

और सत्य किसी चीज का साधन नहीं है, परमसाध्य है। सब कुछ सत्य पर समर्पित है, लेकिन सत्य किसी के लिए समर्पित नहीं है। सत्य से ऊपर कोई धर्म नहीं। सत्य से ऊपर कोई परमात्मा नहीं। सत्य ही परम धर्म है और सत्य ही भगवत्ता है। मगर यह अनुभव से हो।

मैं नहीं कहूँगा कि सत्य बोलो। मैं कहूँगा सत्य हो जाओ। बोलना तो बड़ा आसान है, होने का सवाल है।

लेकिन मनु कहेंगे : प्रेम बोलो। मैं कहूँगा प्रेमपूर्ण हो जाओ। वे तुम्हें पाखंड सिखा रहे हैं। वे कह रहे हैं जरा जबान का अभ्यास कर लो—मृदु, सुन्दर प्रीतिकर सत्य हो बोलो। इसलिए कहते हैं सत्य बोलो, प्रिय बोलो।

लेकिन प्रेम भीतर न हो तो प्रिय कैसे बोलोगे ? कहाँ से लाओगे प्रियता ? वह माधुर्य कहाँ से लाओगे ? भीतर प्रेम लहरा रहा हो तो उसमें जब डुबकी लगा कर शब्द आते हैं तो मीठे हो जाते हैं, नहाए होते हैं, स्वच्छ होते हैं, ताजे होते हैं, जीवंत होते हैं। मगर भीतर मृदुता नहीं है। भीतर तो कटुता भरी है। जहर हो भीतर। भीतर जहर रहे आओ और ऊपर मीठा बोलना, तो तुम दो हो गये---बोलने में कुछ होने में कुछ।



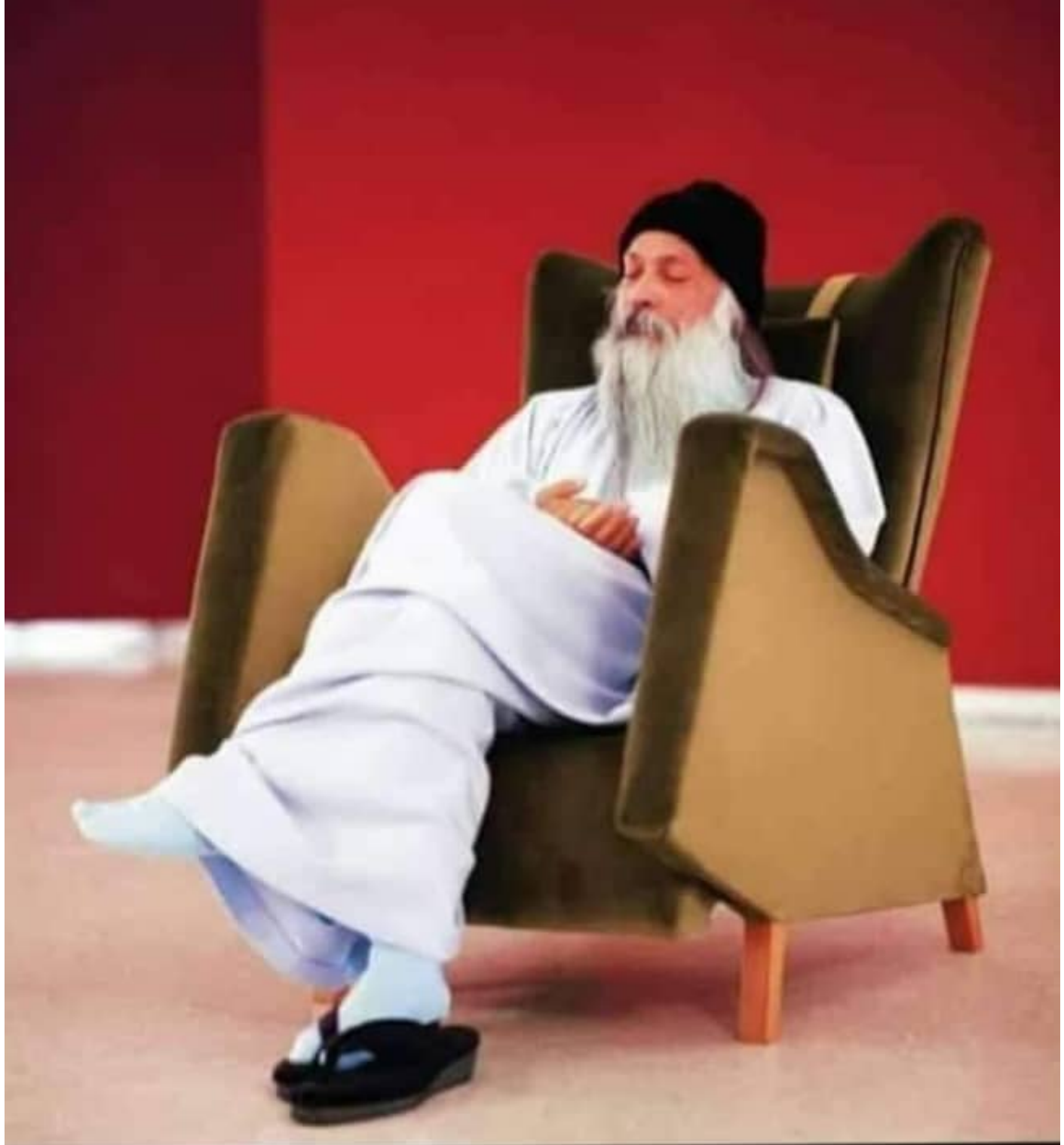


अच्छी दुनिया होगी तो हम बच्चे को सिखाएंगे कम, उससे सीखेंगे ज्यादा। और जो सिखाएंगे, वे उसे सजग करके सिखाएंगे कि ये दो कौड़ी की बातें हैं कामचलाऊ हैं, उपयोगी हैं तेरी जिंदगी में, रोटी रोजी कमाने में सहयोगी होंगी, इनसे आजीविका मिल जाएगी, इनसे जीवन नहीं मिलता। और हम बच्चे से सीखेंगे जीवन। उसकी आखों में झलकता हुआ प्रेम, आश्चर्यचकित विमुग्ध भाव। बच्चे की अवाक हो जाने की क्षमता। छोटी-छोटी चीजों से ध्यानमग्न हो जाने की कला। एक तितली के पीछे ही दौड़ पडा तो सारा जगत भूल जाता है, ऐसा उसका चित्त एकाग्र हो जाता है। एक फूल को ही देखता है तो ठिठका रह जाता है। भरोसा नहीं आता। इतना सौंदर्य भी इस जगत में हो सकता है! इसीलिए तो बच्चे पूछे जाते हैं, प्रश्नों पर प्रश्न पूछे जाते हैं; थका देंगे तुम्हें, इतने प्रश्न पूछते हैं। उनके प्रश्नों का कोई अंत नहीं। क्योंकि उनकी जिज्ञासा का कोई अंत नहीं। उनकी मुमुक्षा का कोई अंत नहीं। जानने की कैसी अभीप्सा है।

अगर हम में समझ हो, तो हम बच्चों से उनकी सरलता सीखेंगे, उनका प्रेम सीखेंगे, उनका निर्दोष भाव सीखेंगे, उनकी आश्चर्यविमुग्ध होने की क्षमता और पात्रता सीखेंगे। तब शायद तुम्हारा हृदय भरने लगे एक नये रस से। तुम भी शायद नाच सको छोटे बच्चों के साथ। तुम भी शायद खेल सको छोटे बच्चों की भांति। तुम्हारे जीवन में भी एक लीला प्रकट हो। परमेश्वर लीलामय है, तुम भी थोड़े लीलामय हो जाओ तो उसकी भाषा समझ में आए, उससे सेतु बने, उससे थोड़ा संबंध जुड़े, उससे थोड़ी गांठ बंधे।

इसलिए कहता हूं रसमय होओ। रसमय होओ अर्थात् प्रेममय होओ, प्रीतिमय होओ। इसलिए कहता हूं : रसमय होओ। चांद तारे नाच रहे हैं, पशु पक्षी नाच रहे हैं, पृथ्वी, ग्रह उपग्रह नाच रहे हैं, सारा अस्तित्व नाच रहा है। एक तुम क्यों खड़े हो उदास? क्यों अलग थलग? क्यों अपने को अजनबी बना रखा है? क्यों तोड़ लिया है अपने को इस विराट अस्तित्व से? किस अहंकार में अकड़े हो? कैसी जड़ता? झुको! अर्पित होओ! अस्तित्व से गलबहियां लो! अस्तित्व को आलिंगन करो! नाचो इसके साथ।

सपना यह संसार



जिस दिन ये चेतना जग जाए कि यहाँ देने
को सिर्फ प्रेम है ओर पाने को भी प्रेम..

तो समझना उसी दिन से जीवन का
आरंभ हुआ..



बहुत समझ बची है मरे पास आने को कि तुम यहा तक आ गए, यह भी चली जाएगी। पांच लाख मिलने में जो थोड़ी-बहुत शांति थी, वह चली गई। दस लाख मिलते-मिलते तक होश रहेगा? पगला तो न जाओगे? वे कुछ सोचने लगे और कहा कि आपकी बात ठीक मालूम पड़ती है; सोचता हूं तो ठीक मालूम पड़ती है। इतना पागल मैं पहले नहीं था। जब से ये पांच हो गए हैं तब से सो भी नहीं सकता। दिन-रात गिनती चल रही है। और वह दस का नशा चढ़ा हुआ है।

इसलिए भारत में हम धन के नशे को "धन-मद" कहते हैं; पद के नशे को "पद-मद" कहते हैं। मद यानी नशा, मदिरा। अंग्रेजी में जो शब्द है "मैड" वह संस्कृत के "मद" शब्द से बना है। मद एकमात्र पागलपन है।

तो मैंने उनसे कहा, अभी तो तुम्हें थोड़ा होश है, चलो तुम यहां आ गए। पांच साल, दस साल बाद जब तुम्हारे पास दस लाख हो जाएंगे--तुम्हें मेरी याद रहेगी? तुम इस तरफ आओगे?

वे कहने लगे, पक्का नहीं कह सकता। हालत मेरी खराब है। सच तो यह है कि दस लाख होने तक मैं बच भी सकूंगा, यह भी मुझे संदेह लगता है। क्योंकि मैं बहुत परेशान हुआ जा रहा हूं।

तो फिर मैंने कहा, जब पांच से इतनी मुसीबत हो गई, तो अब इसको दस किसलिए करना चाहते हो! मगर गर्व? वे बोले कि नहीं, एक दफा तय कर लिया था कि दस तो करके रहूंगा, तो करके तो रहूंगा।

आदमी कभी-कभी ऐसी दिशाओं में भी चलता जाता है जिनमें कुछ भी नहीं पाता; लेकिन एक अहंकार. . .।

"लगै न तेरो चित्त, कंत को नाहिं मनावै।" और फिर भी अकड़ कर बस. . . प्रभु को मनाने की तरफ कोई चेष्टा भी नहीं हो रही।

"कापर करै सिंगार". . .। सुनते हो: "कापर करै सिंगार, फूल की सेज बिछावै"। फिर किसके लिए श्रृंगार करती है? और फिर किसके लिए फूलों की सेज बिछाती है? जब परमात्मा को मनाने का ही, मनाने के लायक भी विनम्रता नहीं है, तो किसके लिए श्रृंगार और किसके लिए फूलों की सेज सजाती है? यह किसके लिए मंदिर बनाती है? यह किसके लिए दीप जलाती है?

"कापर करै सिंगार". . . .। तुम किसके लिए सज रहे हो? हां, मंदिर जाने के लिए सज रहे हो तो ही तुम्हारे सजने का कोई मूल्य है। प्रभु को रिझाने को चले हो तो ही तुम्हारा कोई मूल्य है।

अजहू चेत गवांर # 5

🌹🙏🌹 ओशो



से पैसा पाने की कोशिश में लगे रहते हो।

यदि तुम्हारे पास पैसा है, तो वह मूल बात को तो बदलता नहीं- तुम और अधिक चाहते हो, और अधिक चाहने का कोई अंत नहीं है। और अंततः जब तुम्हारे पास बहुत पैसा हो जाता है- यद्यपि वह पर्याप्त नहीं होता, वह पर्याप्त होता ही नहीं; वह उससे ज्यादा है जितना किसी दूसरे के पास हो- तब तुम अपराध भाव महसूस करने लगते हो, क्योंकि तरीके जो तुमने पैसा जमा करने के लिये अपनाये थे वे गंदे थे, अमानवीय थे, हिंसक थे।

तुम शोषण कर रहे थे, तुम लोगों का खून चूस रहे थे, तुम परजीवी थे।

तो अब पैसा तो तुम्हारे पास हो गया है, लेकिन वह तुम्हें उन सब अपराधों की याद दिलाता है जो तुमने उसे हासिल करने में किए हैं।

उससे दो तरह के लोग पैदा होते हैं: एक जो अपराधभाव से छुटकारा पाने के लिये धर्मार्थ संस्थाओं को दान करने लगते हैं; और दूसरे जो इतना अपराधभाव महसूस करता है कि या तो वह पागल हो जाता है या आत्महत्या कर लेता है।

उसका स्वयं का अस्तित्व एक संताप बन जाता है। हर सांस बोझिल हो जाती है।

और अजीब बात यह है कि उसने अपने पूरे जीवन इस सारे पैसे को पाने के लिए ही काम किया क्योंकि समाज अमीर होने की, शक्तिशाली होने की इच्छा को, महत्त्वकांक्षा को उकसाता है।

और पैसा शक्ति लाता है; वह सबकुछ खरीद सकता है, केवल उन कुछ चीजों को छोड़कर जो पैसे से नहीं खरीदी जा सकती हैं। लेकिन उन चीजों की कोई फिक्र नहीं करता।

ध्यान नहीं खरीदा जा सकता, प्रेम नहीं खरीदा जा सकता, मित्रता नहीं खरीदी जा सकती, अहोभाव नहीं खरीदा जा सकता- लेकिन इन सब बातों में किसी का कोई रस नहीं है।

🌹❤️ Osho ❤️🌹



आनंदित हो जाती है! यही बच्चा एक दिन विश्वविद्यालय से लौटेगा पीएच.डी. लेकर, बड़ी सुंदर भाषा बोलेगा, अलंकृत, मगर मां फिर वैसी प्रसन्न कभी नहीं होगी! इसकी पीएच.डी. की उपाधि भी अब कुछ अर्थ न रखेगी। वह जो पहली बार यह तुतलाया था--कुछ बोला नहीं था, ऐसे ही आवाज की थी...मम्-मम्... लेकिन मां आनंदित हो गई थी। उस पहली आवाज में निसर्ग था, स्वभाव था। अब शिक्षा है, संस्कार है--मगर सब उधार है। वह पहली आवाज इसके प्राणों से उठी थी।

ऐसी ही आवाज परमात्मा तक पहुंचती है, खयाल रखना!

ओशो...

"प्रेम पंथ ऐसो कठिन -8 "



Create story

Osho dnyan:

Kara Kajneesh

med

**Osho Human Being To Be.In.God**

12h · 🌐

""^दीये बनो, भीतर का दीया जलाओ^""

उसे ही मैं ध्यान कह रहा हूँ। भीतर का दीया जलाओ। उसे ही मैं प्रेम कह रहा हूँ। फूल खिलाओ चेतना के, करुणा के, आनंद के, अहोभाव के, कृतज्ञता के। इन फूलों को चढ़ाओ।

वह सब तरफ मौजूद है। सब दिशाओं में भरा है। जिस दिशा में झुकोगे, उसी के चरण हैं। जिस चरण में झुकोगे, उसी के चरण हैं। और प्रार्थना अपनी उठने दो! कम से कम प्रार्थना तो निज की हो। तुतलाती ही हो, तो भी चलेगा। तुतलाती प्रार्थनाएं भी पहुंच जाएंगी और शुद्धतम मंत्र भी नहीं पहुंचेंगे। यह प्रश्न मंत्रों का नहीं है, ध्वनियों का नहीं है, मात्राओं का नहीं है, व्याकरण, भाषा का नहीं है, यह प्रश्न तो प्रीति का है।

छोटे से बच्चे को देखा है जब पहली दफे तुतलाता है? तो मां कितनी आनंदित हो जाती है! यही बच्चा एक दिन विश्वविद्यालय से लौटेगा पीएच.डी. लेकर, बड़ी सुंदर भाषा बोलेगा, अलंकृत, मगर मां फिर वैसी प्रसन्न कभी नहीं होगी! इसकी पीएच.डी. की उपाधि भी अब कुछ अर्थ न रखेगी। वह जो पहली बार यह तुतलाया था--कुछ बोला नहीं था, ऐसे ही आवाज की थी...मम्-मम्... लेकिन मां आनंदित हो गई थी। उस पहली आवाज में निसर्ग था, स्वभाव था। अब शिक्षा है, संस्कार है--मगर सब उधार है। वह पहली आवाज इसके प्राणों से उठी थी।

ऐसी ही आवाज परमात्मा तक पहुंचती है, खयाल रखना!

ओशो...

"प्रेम पंथ ऐसो कठिन -8 "



Create story

POWER
आम बिना प्रभाव बनाने के लिए
आ जा सकता है।
@theknowledgepowers

Ashram Jodhpur

Vait



Shashi Shubhangee



1d · 🌐

तुझे पराई क्या परी, अपनी ओर निबेर।।

पलटू कहते हैं : "तुझे पराई क्या परी, अपनी आप निबेर।' पहले अपनी सुलझा ले, अपनी तो निपटा ले। अपनी इतनी उलझन है, अपनी अंदर इतनी बीमारियां हैं, इनको लेकर तू दूसरों की बीमारी और सुलझाने चला जाएगा, और झंझट बढ़ा देगा।

अपने जीवन में अमृत नहीं उतरा, और तू दूसरों की चिंता में पड़ रहा है! पहले परमात्मा को तो थोड़ा पचा; नहीं ये तो दूसरों की चिंताएं ही तेरा भोजन बन जाएंगी। . . . "छोड़ि गुड़ विस को खावै।' जहां बड़ी मिठास हो सकती थी परमात्मा को अपने भीतर ले लेने से, वहां लोगों की चिंताएं और दुःखों का हिसाब लगा-लगा कर तू बड़ा खट्टा और कड़वा हो जाएगा, विष से भर जाएगा।

तुझे पराई क्या परी, अपनी ओर निबेर।।'

पहले अपनी तरफ तो आंख उठा। पहले ध्यान अपनी तरफ तो ले जा। फिर दूसरों में उलझना। और जो सुलझ गया, उससे दूसरे भी सुलझते हैं। यह सहज ही होता है फिर; यह कुछ करना नहीं पड़ता। उसकी मौजूदगी करती है। उसके आशीष करते हैं। उसके वचन करते हैं। उसका मौन करता है। उसकी उपस्थिति करने लगती है। फिर कुछ करना नहीं पड़ता। फिर वह सेवा करने नहीं निकलता-- उससे सेवा होने लगती है।

अजहू चेत गवांर-(पलटू दास)
ओशो



#विठोबा की कथा है महाराष्ट्र में, बड़ी प्रीतिकर है ।

विठोबा कृष्ण का नाम है । वे अपने एक भक्त को मिलने आए हैं, क्योंकि भक्त उनकी बड़े दिनों से प्राथना - पूजा कर रहा है । लेकिन जब वे आए हैं, तो भक्त की माँ बीमार है । वह अपनी माँ की सेवा कर रहा है ।

वे पीछे आकर खड़े हो गए : उन्होंने द्वार पर दस्तक दी । द्वार खुला था । भीतर आ गए । उन्होंने कहा कि देख, मैं तेरा प्यार, तेरा कृष्ण, जिसकी तू याद करता रहा,   मैं आ गया ।

भक्त ने कहा, तुम बेवक्त आए । अभी मैं माँ की सेवा कर रहा हूँ ।

अभी फुर्सत नहीं है । पास ही एक ईंट पड़ी थी, वह उसने सरका दी । उसने कहा कि इस पर विश्राम करो । जब माँ की सेवा पूरी कर लूंगा, तब फिर बातचीत होगी । वह रातभर पैर दाबता रहा । लौटकर देखा भी नहीं । और कृष्ण उस ईंट पर खड़े - खड़े थक गये और मूर्ति हो गये होंगे, तो विठोबा की मूर्ति है वह ईंट पर खड़ी है । मगर गजब का भक्त रहा होगा - गजब का भरोसा रहा होगा, कृष्ण को भी खड़ा रखा ।

कृष्ण को भी ईंट पर खड़ा कर दिया । भक्त का भरोसा इतना है, भक्त की श्रद्धा इतनी है कि जल्दी क्या है !

बेचैनी क्या है । ऐसे को भगवान् मिलते हैं ।

जो भगवान् को भी कह दे कि बैठो, विश्राम करो ।

ईंट पर बिठाल दे भगवान् को । लौटकर भी न देखे ।

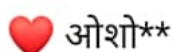
भक्त को भगवान् मिला ही हुआ है । भगवान् लौट जायेगा, यह सवाल ही नहीं उठता ।

कैसी उसकी प्रतीक्षा रही होगी ।

कैसी उसकी ध्यान की गहराई रही होगी !

कैसा उसका भक्ति - भाव रहा होगा,

जिसमें एक लहर भी नहीं उठती !



ओशो**

facebook



Like Comment Send Share

**Biblword**

Sponsored ·



Are you struggling in life? Do you want to k... See more



biblword.learnnnn.com

Free course of 15 lessons[Learn more](#)

2.2K

50 comments · 45 shares

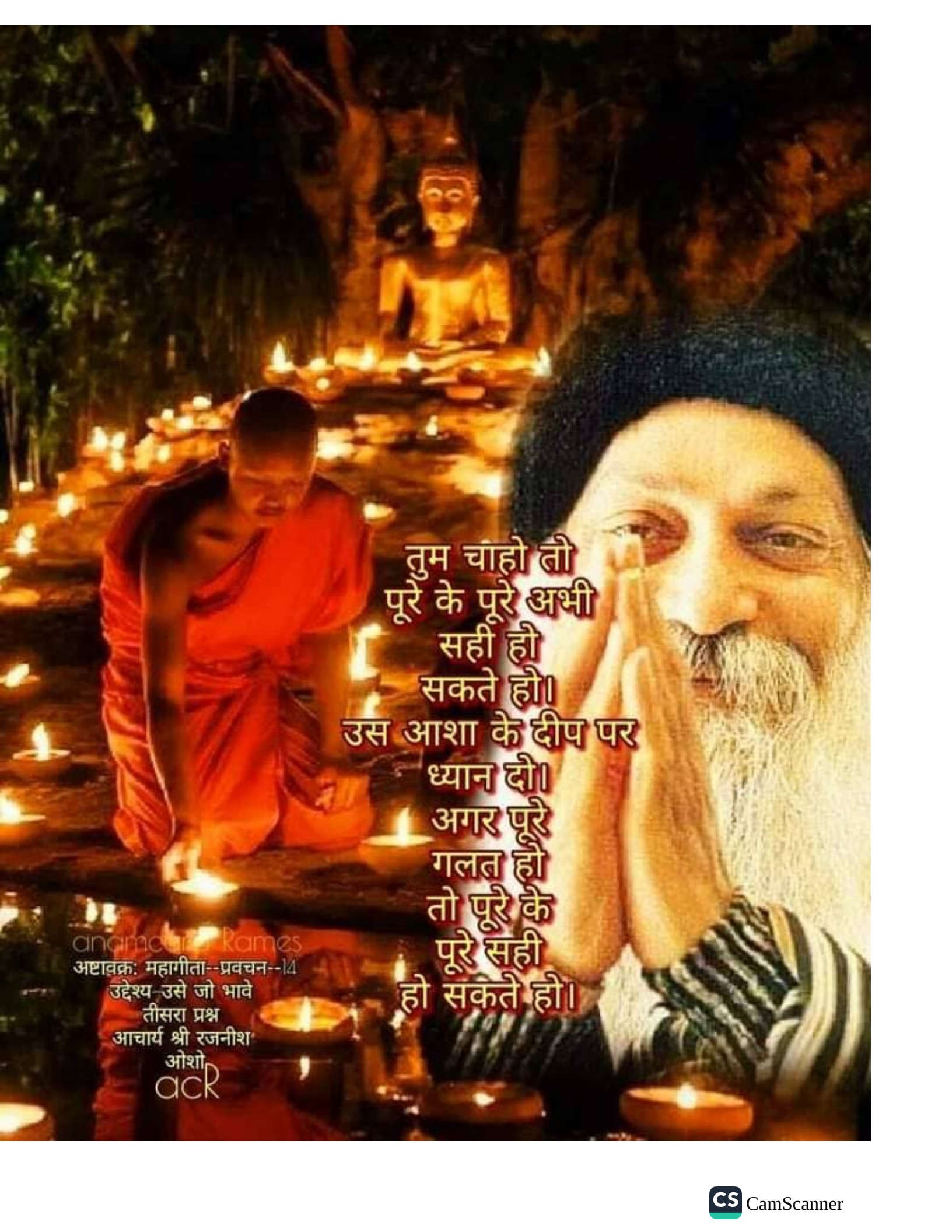
Like Comment Share

**ओशो का हिन्दी साहित्य**

लोग जीवित इंसान से ठीक से बात
तक नहीं करते....
और मरने के बाद हिला हिला के
पूछते हैं, तू कुछ बोलता
क्यूं नहीं.....?



जरा देखें ! आप आकर्षण को देखकर
खिंचते हैं या जरूरत आपको खींचती है?
जरूरत आपको पूर्ती तक ले जाती
है, आकर्षण की सीमा मनोरंजन तक
है.. जरूरत एक तरह की भूख है, भूख
जब लग जाती है तो, भूखा आदमी नहीं
देखता कि खाना थाली में परोसा है या
नहीं , स्वाद भी है या नहीं ! वह टूट कर
पड़ेगा, उसे अपनी भूख मिटानी होती है,
उसे तो यह भी दिखाई नहीं देता कि
खाना पूरा पका भी है या नहीं !.. इसी तरह
आपके अन्दर भी एक भूख है, वह पेट
की भूख नहीं है, आपकी आत्मा की भूख
है , आपको उसे पहचानना है, उसकी
पूर्ती आकर्षण में डूबने से नहीं होती है,
इस भूख का खाना कहां मिलेगा,
एकबार पता लगते ही, फिर कुछ नहीं
देखोगे ताबड़तोड़ उस तरफ
भागोगे!-अचिंत्य



तुम चाहो तो
पूरे के पूरे अभी
सही हो
सकते हो।
उस आशा के दीप पर
ध्यान दो।
अगर पूरे
गलत हो
तो पूरे के
पूरे सही
हो सकते हो।

anandaram Ramas

अष्टावक्र: महागीता--प्रवचन--14

उद्देश्य-उसे जो भावे

तीसरा प्रश्न

आचार्य श्री रजनीश

ओशो

ack

बदला लेने की प्रवृत्ति पाशविक है
इससे ग्रस्त इंसान से
सदैव एक
विनम्र दूरी पर रहना मित्र ॥



तथागत



धर्मशास्त्रों के अध्ययन से कोई धार्मिक नहीं होता; धार्मिक होने के लिए मृत्यु का शास्त्र पढ़ना जरूरी है। पंडित-पुजारीयों की बकवास से कोई धार्मिक नहीं होता; धार्मिक होने के लिए मृत्यु का स्वर सुनना जरूरी हैं। मृत्यु सबसे बड़ा गुरु है। लेकिन आजीविका में उलझे लोग उस स्वर को नहीं सुन पाते, और आजीविका में उलझे लोग सब तरह के अपराध, उपद्रव, बगावते, विद्रोह, विनाश में संलग्न हो जाते हैं.....(संकलन: स्वामी देवगीत)

☆ ताओ उपनिषद , -: ओशो :-



Like



Comment



Share



अहोभाव

4h · 🌐



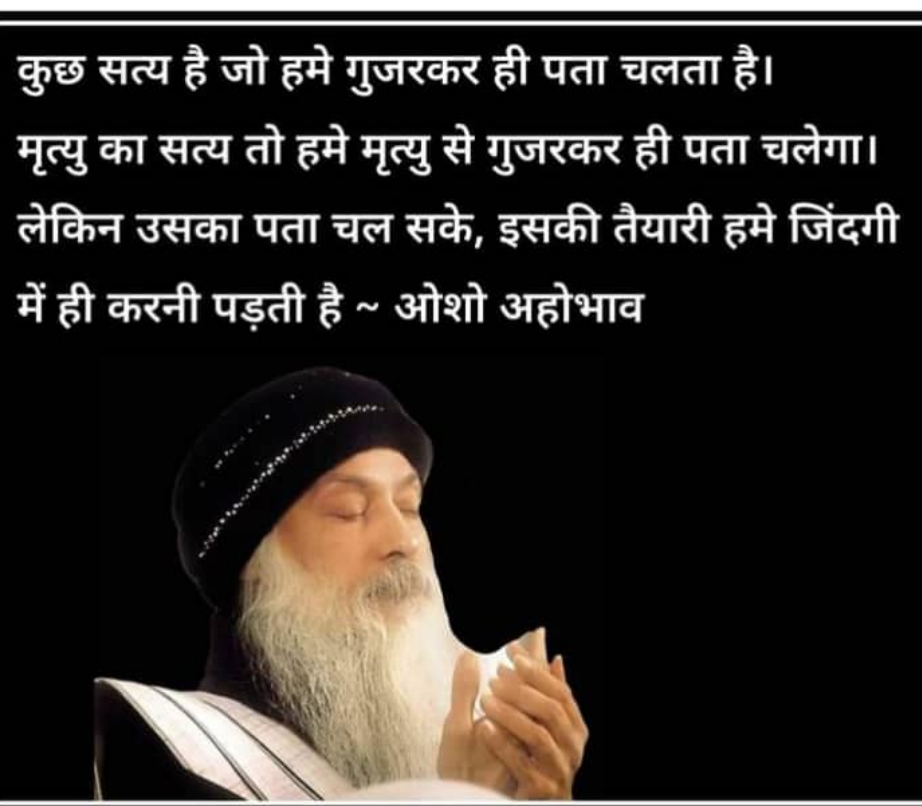
अहोभाव

कुछ सत्य है जो हमे गुजरकर ही पता चलते है।

मृत्यु का सत्य तो हमे मृत्यु से गुजरकर ही पता चलेगा। लेकिन उसका पता चल सके, इसकी तैयारी हमे जिंदगी में ही करनी पड़ती है।

और जो आदमी जिंदगी में मरने की तैयारी नहीं कर पाता, वह बड़े गलत ढंग से मरता है। और गलत ढंग से जीना तो माफ किया है सकता है, पर गलत ढंग से मरना कभी माफ नहीं किया जा सकता।

ओशो



16

1 comment



Like

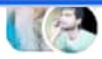


Send



Share





Kunal Pandey · 24m · 🌐

एक रात नानक अचानक घर छोड़कर चले गए। किसी को पता नहीं, कहां हैं। खोजा गया साधुओं की संगत में, मंदिरों में--जहां संभावना थी--पर कहीं भी वे मिले नहीं। और तब किसी ने कहा, मरघट की तरफ जाते देखा है। भरोसा किसी को न आया। मरघट अपनी मर्जी से कोई जाता ही कैसे है? मरघट ले जाने के लिए तो चार आदमियों की जरूरत पड़ती है। बामुश्किल कोई जाता है। मरा हुआ आदमी भी जाना नहीं चाहता, तो जिंदा आदमी के तो जाने का कोई सवाल नहीं। लेकिन जब नानक को कहीं नहीं पाया, तो लोग मरघट पहुंचे।

मरघट में उन्होंने धूनी जमा रखी थी। बैठे थे ध्यान में। घर के लोगों ने कहा, पागल हो गए हो? घर-द्वार छोड़ कर, बच्चे-पत्नी छोड़ कर यहां क्या कर रहे हो? यह मरघट है, यह पता है?

नानक ने कहा, यहां जो आ गया वह फिर कभी मरता नहीं। और जिसे तुम घर कहते हो, वहां जो भी है वह आज नहीं कल मरेगा। फिर मरघट कौन सी जगह है? जहां लोग मरते हैं वह मरघट? या जहां लोग कभी नहीं मरते वह मरघट? और फिर जब एक दिन यहां आ ही जाना है, तो चार आदमियों के कंधे पर चढ़ कर क्या आना? शोभा नहीं देता। मैं खुद ही चला आया हूं।

यह घटना बड़ी महत्वपूर्ण है। जो होना ही है, उससे नानक का संघर्ष नहीं है। जो होना ही है उसका स्वीकार है। मृत्यु भी होनी है, उसका भी स्वीकार है। और क्या कष्ट देना दूसरों को वहां तक ले जाने के लिए? खुद उठकर ही चले जाना बेहतर है।

जो होगा, उससे हमारा विरोध बना रहता है। हमारी अपनी चाह है, ऐसा न हो। नानक की अपनी कोई चाह नहीं। जो उसकी चाह है; अगर मृत्यु भी उसकी चाह है, तो वह भी नानक को स्वीकार है।

ओशो, एक ओंकार सतनाम





Osho Osho

1d · 🌐



ध्यान क्या है?

ध्यान अपने मन के प्रति जागरूक होने की साधारण सी प्रक्रिया है। मन के साथ लड़ना नहीं। न ही इसे वश में करने का प्रयास करना है।

बस वहां होना, चुनाव रहित साक्षी। जो भी हो रहा है, उसे देखो, उसके पक्ष या विपक्ष में बिना किसी पूर्वाग्रह के। इसे कोई नाम न दो। कि यह मेरे मन में नहीं उठना चाहिये। कि यह एक घिनौना विचार है और यह बहुत सुंदर और पवित्र विचार है। तुम्हें कोई निर्णय नहीं लेना चाहिये। तुम्हें निर्णय-रहित होना चाहिये। क्योंकि जैसे ही तुम निर्णय लेते हो, ध्यान खो जाता है। तुम्हारा तादात्म्य हो जाता है। या तो तुम मित्र बन जाते हो या शत्रु। तुम संबंध स्थापित कर लेते हो। ध्यान का अर्थ है अपनी विचार प्रक्रिया के साथ तादात्म्य तोड़ना, पूर्णतया संबंध तोड़ना, शांत रहना, स्थिर रहना।

जो भी हो रहा है उसके प्रति साक्षी भाव रखना। और तब एक चमत्कार घटता है। धीरे-धीरे व्यक्ति बोधपूर्ण होता है कि विचार कम होते जा रहे हैं। यह ऐसा ही है मानो ट्रैफिक तुम्हारे बोध पर निर्भर करता है। जब तुम पूर्णतया बोधपूर्ण होते हो, चाहे एक मिनट के लिये ही क्यों न हो, सब विचार समाप्त हो जाते हैं। तत्क्षण अचानक सब कुछ रुक जाता है। और सड़क खाली हो जाती है। उस क्षण को ध्यान कहते हैं।



जाता है।

सुबह मैंने बारदो की बात की थी। बारदो की प्रक्रिया में मरते हुए आदमी से यह भी कहा जाता है कि अभी तुझे सैकड़ों जोड़े भोग करते हुए, संभोग करते हुए दिखाई पड़ेंगे। तू जरा सोच कर, जरा रुक कर, जरा ठहर कर, गर्भ में प्रवेश करना। जल्दी मत करना, ठहर, थोड़ा ठहर! थोड़ा ठहर कर किसी गर्भ में जाना। एकदम मत चले जाना।

जैसे कोई आदमी बाजार में खरीदने गया है सामान। पहली दुकान पर ही प्रवेश कर जाता है। शो रूम में जो भी लटका हुआ दिखाई पड़ जाता है, वही आकर्षित कर लेता है। लेकिन बुद्धिमान ग्राहक दस दुकान भी देखता है। उलट-पुलट करता है, भाव-ताव करता है, खोज-बीन करता है, फिर निर्णय करता है। नासमझ जल्दी से पहले ही जो चीज उसकी आंख के सामने आ जाती है, वहीं चला जाता है।

तो बारदो की प्रक्रिया में मरते हुए आदमी से कहा जाता है कि सावधान! जल्दी मत करना। जल्दी मत करना। खोजना, सोचना, विचारना, जल्दी मत करना। क्योंकि सैकड़ों लोग निरंतर संभोग में रत हैं। सैकड़ों जोड़े उसे स्पष्ट दिखाई पड़ते हैं। और जो जोड़ा उसे आकर्षित कर लेता है, और वही जोड़ा उसे आकर्षित करता है जो उसके योग्य गर्भ देने के लिए क्षमतावान होता है।

तो श्रेष्ठ और निकृष्ट आत्माएं रुक जाती हैं। उनको प्रतीक्षा करनी पड़ती है कि जब उनके योग्य गर्भ मिले। निकृष्ट आत्माओं को उतना निकृष्ट गर्भ दिखाई नहीं पड़ता, जहां, वे अपनी संभावनाएं पूरी कर सकें। श्रेष्ठ आत्मा को भी नहीं दिखाई पड़ता।

निकृष्ट आत्माएं जो रुक जाती हैं, उनको हम प्रेत कहते हैं। और श्रेष्ठ आत्माएं जो रुक जाती हैं, उनको हम देवता कहते हैं। देवता का अर्थ है, वे श्रेष्ठ आत्माएं जो रुक गईं। और प्रेत का अर्थ है, भूत का अर्थ है, वे आत्माएं जो निकृष्ट होने के कारण रुक गईं। साधारण जन के लिए निरंतर गर्भ उपलब्ध है। वह तत्काल मरा और प्रवेश कर जाता है। क्षण भर की भी देरी नहीं लगती। यहा समाप्त नहीं हुआ, और वहां, वह प्रवेश करने लगता है।

उन्होंने यह भी पूछा है कि ये जो आत्माएं रुक जाती हैं क्या वे किसी के शरीर में प्रवेश करके उसे परेशान भी कर सकती हैं?

जैसे कोई आदमी बाजार में खरीदने गया है सामान। पहली दुकान पर ही प्रवेश कर जाता है। शो रूम में जो भी लटका हुआ दिखाई पड़ जाता है, वही आकर्षित कर लेता है। लेकिन बुद्धिमान ग्राहक दस दुकान भी देखता है। उलट-पुलट करता है, भाव-ताव करता है, खोज-बीन करता है, फिर निर्णय करता है। नासमझ जल्दी से पहले ही जो चीज उसकी आंख के सामने आ जाती है, वहीं चला जाता है।



ऐसा योगी जितने वर्षों की भी चाहे समाधि ले सकता है। जब तक वह समाधि अवस्था में रहता है। तब तक उसके लिये कालखण्ड रुक जाता है और काल का कोई प्रभाव उस पर व्याप्त नहीं होता।

यह योग की सूक्ष्म व्याख्या थी और इसका क्रियात्मक रूप निश्चय ही कठिन है। पर इसके माध्यम से योगी शिववत् बन जाता है। मृत्यु उस पर किसी प्रकार का कोई प्रभाव नहीं डाल सकती। वह निर्विकार, जरा-मरण से रहित, पूर्णत्व प्राप्त योगी हो जाता है।

जब शरीर का सत्व Semen स्खलन नहीं होता तो धीरे-धीरे वह वायवीय होकर ऊपर उठता रहता है, और इकट्ठा होता रहता है। इससे एक निश्चित समय के बाद योगी रससिद्ध हो जाता है। यही रस है और समस्त शरीर में समाहित है। सामान्य व्यक्ति स्खलित होता है और यदि स्खलित नहीं होता तो प्रकृति स्वप्रदोष के माध्यम से प्रवाहित कर देती है।

पर योगी इसे इड़ा और पिंगला के माध्यम से वायवीय बनाकर पूरे शरीर में समाहित कर देता है जिससे कि उसका शरीर कालजयी बन जाता है।

योगीजन समाधि में लीन होकर दो-दो, तीन-तीन दिन अडिग अविचल एक ही आसन पर स्थिर बैठे रहते हैं। इस अवधि में उनके गले में यदि कोई माला पड़ी होती है तो तीन चार दिन बाद जब भी उनकी समाधि टूटती तब तक वह माला ज्यों की त्यों बनी रहती है। उसके फूल कुम्हलाते नहीं हैं। क्योंकि इस कालखण्ड का योगी पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। बीच का अन्तराल उनके लिए नगण्य हो जाता है।

योग की बहुत सी क्रियाएं चमत्कारी हैं, और ये क्रियाएं वे सब सहज स्वाभाविक रूप से कर लेते हैं। इसके लिये योगियों को कोई विशेष प्रयत्न नहीं करना पड़ता।

👉 संतुष्टि के लिए किसी योगी से सम्पर्क करें। — at देवभूमि उत्तराखंड।



अमृत

ऊर्ध्वरिता साधना योग की अत्यन्त उच्च अवस्था है और इसके माध्यम से योगी हर क्षण अमृत पान करता रहता है। यह योग की उच्चावस्था है और सामान्य योगी के लिये यह संभव नहीं।

पूरे शरीर को वाहक रखने के लिए इड़ा और पिंगला दो नाड़ियां हैं जो कि मूलाधार से प्रवाहित होती हैं। यहीं से वे शरीर का सत्त्व लेकर अग्रसर होती हैं, परन्तु पिंगला पूर्ण रूप से उस सत्त्व को Semen रूप में परिणत कर नीचे की ओर उतार देती है जिसे स्खलन कहते हैं। यह गृहस्थ जीवन का प्रारम्भ है।

परन्तु योगी पिंगला को वहीं से मोड़कर इड़ा में जोड़ देते हैं। फल-स्वरूप व शरीर का तत्त्व सीधे जाकर स्खलित नहीं होता, अपितु वायवीय होकर ऊपर की ओर बढ़ता है। यह योगावस्था है।

इस प्रकार जब Semen वायवीय होकर ऊपर की ओर उठता है तो धीरे- धीरे उसका निर्जरण अमृत तत्त्व के रूप में चित्त पर और नाभि पर होता रहता है। यह अमृत पान है और इससे व्यक्ति की मृत्यु नहीं होती और न उसे वृद्धावस्था या कोई बीमारी ही व्याप्त होती है।

ऐसा योगी जितने वर्षों की भी चाहे समाधि ले सकता है। जब तक वह समाधि अवस्था में रहता है। तब तक उसके लिये कालखण्ड रुक जाता है और काल का कोई प्रभाव उस पर व्याप्त नहीं होता।

यह योग की सूक्ष्म व्याख्या थी और इसका क्रियात्मक रूप निश्चय ही कठिन है। पर इसके माध्यम से योगी शिववत् बन जाता है। मृत्यु उस पर किसी प्रकार का कोई प्रभाव नहीं डाल सकती। वह निर्विकार, जरा-मरण से रहित, पूर्णत्व प्राप्त योगी हो जाता है।

जब शरीर का सत्त्व Semen स्खलन नहीं होता तो धीरे-धीरे वह वायवीय होकर ऊपर उठता रहता है, और इकट्ठा होता रहता है। इससे एक निश्चित समय के बाद योगी रससिद्ध हो जाता है। यही रस है और समस्त शरीर में समाहित है। सामान्य व्यक्ति स्खलित होता है और यदि



जब सारा समूह एक ही पागलपन से पीड़ित होता है तो पहचानना कठिन हो जाता है की पागलपन क्या होता है। और अगर कोई आदमी पहचान ले तो वह आदमी उल्टा पागल मालूम पड़ता है, भीड़ पागल नहीं मालूम पड़ती। जिसस क्राइस्ट पागल मालूम पड़ते हैं, इसलिए भीड़ ने उन्हें सूली पर लटका दिया। सुकरात पागल मालूम पड़ता है, इसीलिए भीड़ ने उन्हें जहर पिला दिया। मंसूर पागल मालूम पड़ता है, इसलिए भीड़ ने उसकी चमड़ी खींच ली। गांधी पागल मालूम पड़ते हैं, इसलिए भीड़ ने गोली मार दी।

आज तक जितने लोगो की भीड़ ने कुए का पानी नहीं पिया, उनके साथ यही दुर्व्यवहार हुआ है। और भीड़ निश्चित है। भीड़ को शक पैदा नहीं होता, क्योंकि चारों तरफ सभी लोग गवाह ही होते हैं की ठीक है हम।

कोई पूछे आपसे, ईश्वर है? तो कौन सा उत्तर आता है आपके भीतर से? मैं आपको पूछता हूँ।

की ईश्वर है? कोई उत्तर आता है किसी के भीतर से की, है। अगर उसकी किताबों में लिखा है, अगर उसके गुरुओं ने ऐसा बताया है। किसी के भीतर आता होगा, नहीं है। अगर उसकी किताबों में ऐसा लिखा है और उसके गुरुओं ने ऐसा बताया है।

हिन्दुस्थान में पूछो, ईश्वर है? तो उत्तर आता है, हाँ है। और रूस में पूछो तो उत्तर आता है, नहीं है। हम सोचते हैं हिंदुस्तान बड़ा आस्तिक है, और रूस बड़ा नास्तिक है। नहीं, साहब। दोनों रटे हुए तोते हैं बोल रहे हैं। हिन्दुस्थान के तोते को बताया जा रहा है, ईश्वर है तो वे कहते हैं ईश्वर है। रूस के तोते को बताया जा रहा है, ईश्वर नहीं है, तो वे कहते हैं, ईश्वर नहीं है। तो सीखी हुई बातें जो दोहरा रहा है वह आदमी के पद से नीचे गिर रहा है। सीखी हुई बातें जो दोहरा रहा है वह अपने को तोता बना रहा है। अपने को मशीन बना रहा है। लेकिन अगर मैं पुछु की ईश्वर है और आपके भीतर कोई उत्तर न उठे, न हाँ में ना ना में। मैं पुछु ईश्वर है और आपके भीतर सन्नटा छा जाए। और सत्य यही होगा कि सन्नटा छा जाए। क्योंकि आप नहीं जानते हैं कि है या नहीं।

मैं पुछु की ईश्वर है और आपके भीतर साइलेन्स हो जाए, आपके भीतर कोई उत्तर ना आये, आप मौन रह जाए, कोई शब्द घनीभूत न हो, आपके भीतर कोई रिसपांस ना हो आपके भीतर नो रिसपांस की स्थिति हो जाए।



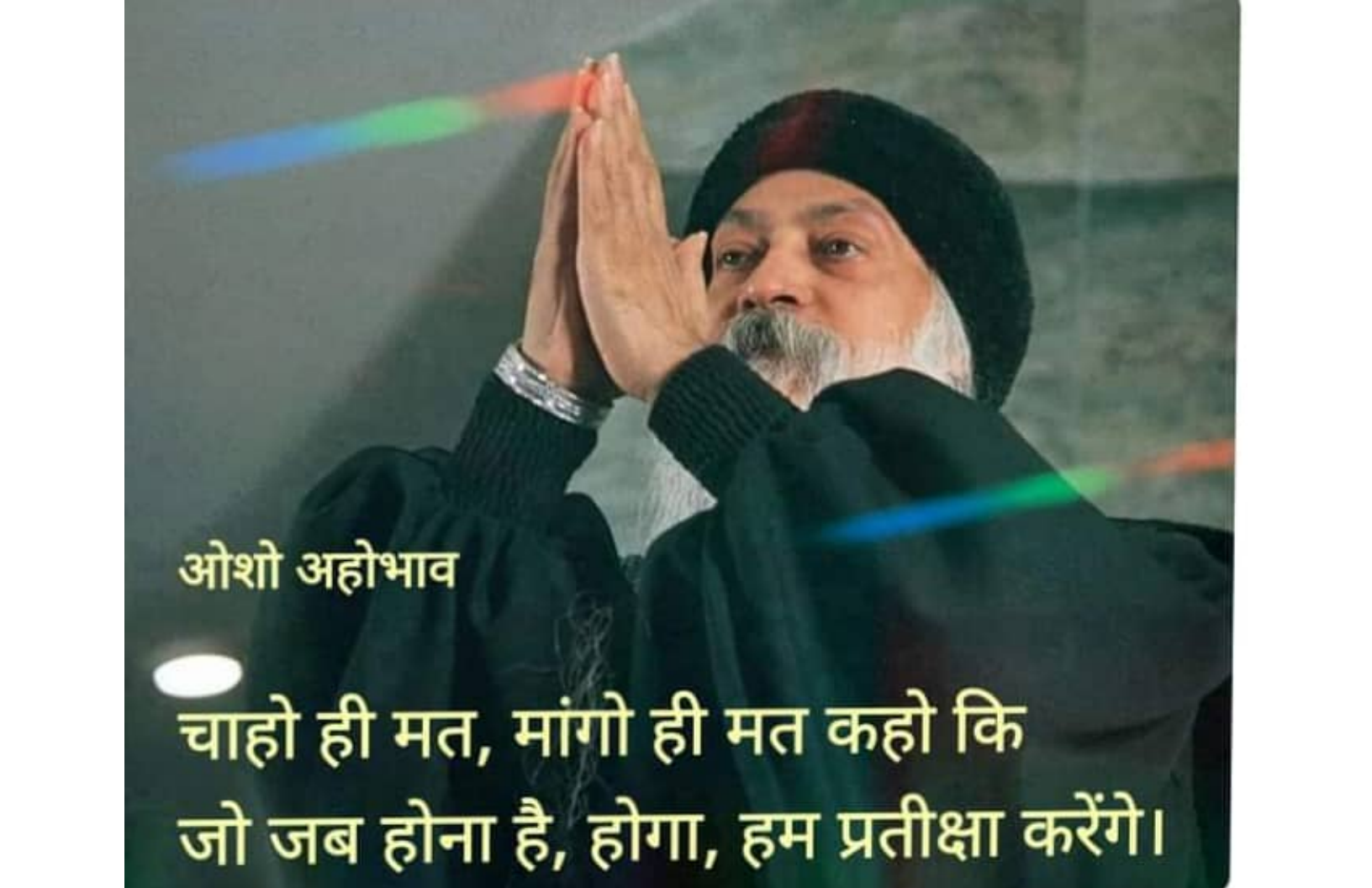
बोध कथा

एक बार ऐसा हो गया था, एक गांव में एक जादूगर आया था। और उसने आकर गांव के कुए में कोई एक मंत्र पढ़ा और कोई एक चीज दाल दी, और कहा कि इस कुए का पानी जो भी कोई पिएगा वह पागल हो जाएगा सांझ होते होते गांव के सभी लोगों को उस कुए का पानी पीना पड़ा। और सारा गांव सांझ होते होते पागल हो गया सिर्फ राजा और उसकी रानी और उसका वजीर बच गए। उनके मकान में दूसरा कुआ था। वे गांव के कुए से पानी नहीं पीते थे, उनका अपना कुआ था। वे तीनों बच गए। वे बड़े प्रसन्न थे, की हम अच्छे बच गए। पूरा गांव तो पागल हो गया है। लेकिन सांझ होते होते उन्हें मालूम हो गया के भूल हो गई, हमारे बचने में। पूरे गांव के लोग जुलूस बनाकर घर के सामने आ गए और नारे लगाने लगे। और उन्होंने कहा के ऐसा मालूम होता है कि हमारे राजा का दिमाग खराब हो गया है। राजा को बदलेंगे हम। यह राजा नहीं चल सकता अब। यह लोकतंत्र का जमाना है। पागल राजा नहीं चल सकते। उतारो उसे नीचे महल के। तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है, तुम्हारा हम इलाज कराएंगे। राजा तो बहुत घबड़ाया। उसके सिपाही भी पागल हो गए थे। उसके नोकर चाकर भी पागल हो गए थे। उसके सैनिक भी पागल हो गए थे। उसने अपने वजीर से कहा, क्या करे हम? बात उल्टी है पागल यह लोग है। भीड़ जब पागल हो जाती है, तो बताना कठिन है कि पागल हो तुम। अब क्या करे हम?

वजीर ने कहा एक ही रस्ता है हम पीछे के दरवाजे से निकल भागे, और उस कुए से पानी पी ले। जिस कुए का पानी इन लोगो ने पिया है। तो ही हम बच सकते है। वह राजा और वजीर भागे। उन्होंने जाकर उस कुए का पानी पी लिया

उस रात उस गांव में बड़ा जलसा मनाया गया, और गांव के लोगो ने बड़ी खुशी मनाई और भगवान को धन्यवाद दिया कि राजा का दिमाग ठीक हो गया।

जब सारा समूह एक ही पागलपन से पीड़ित होता है तो पहचानना कठिन हो जाता है की पागलपन क्या होता है। और अगर कोई आदमी पहचान ले तो वह आदमी उल्टा पागल मालूम पड़ता है, भीड़ पागल नहीं मालूम पड़ती। जिसस क्राइस्ट पागल मालूम पड़ते है, इसलिए भीड़



ओशो अहोभाव

चाहो ही मत, मांगो ही मत कहो कि
जो जब होना है, होगा, हम प्रतीक्षा करेंगे।



Fachang's Direct Path



RA

Which book talk best about koans that I can get



One highly regarded book on koans is "The Blue Cliff Record" (or "Hekiganroku" in Japanese). This classical Zen text, compiled by Zen Master Yuanwu in the 12th century, contains 100 koans along with commentaries and verses. It's considered a cornerstone in the study of koans within the Zen tradition. Another notable work is "The Gateless Gate" (or "Mumonkan" in Japanese), a collection of 48 koans compiled by the Zen master Wumen Huikai. Both of these texts provide a deep exploration of koans and are widely studied in Zen practice.



Is this conversation helpful so far?



Send a message



ChatGPT can make mistakes. Consider checking important information.





RA

What is koans you are talking about



Koans are paradoxical or enigmatic statements, stories, or questions used in Zen Buddhism to provoke deep contemplation and break the normal thought process. They are designed to transcend rational thinking and lead to a direct experience or realization. Practitioners often meditate on a koan, attempting to reach a state of understanding beyond intellectual analysis. The goal is to go beyond conventional logic, prompting a direct, non-conceptual understanding of reality. Koans are a crucial element in Zen practice, aiming to facilitate a profound shift in consciousness.



Send a message



ChatGPT can make mistakes. Consider checking important information.





Fachang's Direct Path



RA

Write the method suggested by
Shinran's Tannishō and the Linji lu
In the path to attain god.
Word limit 120

< 9/9 >



Shinran's Tannishō emphasizes reliance on Amida Buddha's salvation through faith, rather than self-effort. It encourages a humble, sincere heart to receive grace. In contrast, the Linji lu, a Chan Buddhist text, advocates direct experiential realization, often through koans and intense meditation. The paths differ significantly: Shinran's path involves trust in external salvation, while Linji's path centers on direct personal insight. Both paths highlight distinct cultural and philosophical approaches, showcasing the diversity within Buddhist traditions.



Send a message



ChatGPT can make mistakes. Consider checking important information.





The teachings of Yunmen, Guiyang, Linji, Fayan, and Caodong primarily focus on Zen Buddhism, aiming for enlightenment rather than the concept of attaining God. Their methods emphasize direct experience, intuitive understanding, and transcending conceptual thinking through practices like meditation, koan study, and mindfulness. Yunmen's "Gateless Gate" and Linji's "Linji Record" contain dialogues and teachings that guide followers toward direct realization of their true nature. Caodong emphasizes silent illumination in meditation, while Guiyang and Fayan advocate for spontaneous, non-dual awareness. In summary, their methods involve experiential practices to break through conventional understanding and directly perceive the nature of reality.



रिंझाई ने एक ज़ेन गुरु को अपना गुरु बनाने का निर्णय लिया। यह बात जानने के बाद कई लोगों ने उसे मना करने की कोशिश की. वह एक महान गुरु हैं, पर जो भी उनके पास जाता है वह पश्चाताप करके लौटता है। कई लोगों ने रिंझाई से कहा कि उन्हें लगता है कि उन्हें ऐसा करने की बुद्धि कहां से मिली। लेकिन, रिंझाई का फैसला नहीं बदला.

वह गुरु की कुटिया के पास गया तो गुरु द्वार पर छड़ी लेकर बैठे थे। रिंझाई उन्हें प्रणाम करने के लिए नीचे झुका तो गुरु ने सख्ती से कहा, रुको। मुझे नमस्कार करने से पहले सोचो. मैं तुमसे एक प्रश्न पूछने जा रहा हूँ. यदि उसका उत्तर ग़लत हुआ तो मैं इस छड़ी से तुम्हारे सिर पर वार कर दूँगा। लेकिन, यह भी याद रखें कि भले ही आपको उत्तर सही मिले, तो भी मैं आपके सिर में छड़ी मारूँगा ही।

रिंझाई ने निडरता से उसे प्रणाम किया और कहा, "तो फिर तुम मेरे सिर में छड़ी से मारो।" यदि यह अपरिहार्य है ही तो पहले इसे घटित होने दें। आप प्रश्न बाद में अपनी सुविधानुसार पूछ सकते हैं, वह महत्वपूर्ण नहीं है।

गुरु ने छड़ी एक तरफ रखते हुए कहा, लगता है तुम्हें इस छड़ी का प्रसाद देने की जरूरत नहीं पड़ेगी. तुम मुझसे दया और करुणा की आशा किये बिना आये हो। तुम पहले से ही बुद्धिमान हो.

Only **admins** can send messages





New chat



Daoism, or Taoism, is a philosophical and spiritual tradition that emphasizes living in harmony with the Dao, which is often translated as "the Way." The path to attain a higher state, sometimes referred to as "god" or spiritual enlightenment, involves following the principles of Daoism. These principles include simplicity, humility, compassion, and aligning oneself with the natural flow of the Dao.

Practical methods suggested by Daoism often include meditation, mindfulness, and cultivating a deep awareness of the present moment. Daoists seek to harmonize with the Dao by embracing spontaneity, simplicity, and a non-attached attitude towards the ups and downs of life.

It's important to note that Daoism doesn't prescribe a specific deity or a rigid set of rituals. Instead, it encourages individuals to find their own way by attuning themselves to the underlying principles of the Dao.



ChatGPT can make mistakes. Consider checking important information.





किसी को डर है कि भगवान देख रहा है,
किसी को भरोसा है कि भगवान देख रहा है।



कोई योग नहीं है। अष्टावक्र की दृष्टि में कुछ साधन नहीं करना है। सीधी छलांग है! तुम सिर्फ देखते रहो! क्रोध उठे तो तुम कहो कि ठीक है, स्वाभाविक है। काम उठे तो कहो ठीक है, स्वाभाविक है। तुम देखने वाले बने रहो। तुम विचलित न होओ द्रष्टा से। तुम्हारा साक्षी न कंपे बस। और सब कंपता रहे, सारा संसार तूफान में पड़ा रहे—तुम तूफान के मध्य साक्षी में ठहरे रहो।

अष्टावक्र महागीता -प्र-13



मन के
सभी रोग
प्रेम की
कभी से
पैदा होते हैं

www.oshofragrance.org

धर्म विचार में ही हो, तो उससे ज्यादा असत्य और कुछ भी नहीं है।

धर्म शास्त्रों में ही है, इसलिए तो मृत है।

धर्म शब्दों में ही है, इसलिए तो व्यर्थ है।

धर्म सिद्धांतों में ही है, इसलिए तो निष्क्रिय है।

धर्म संप्रदायों में ही है, इसलिए तो धर्म धर्म ही नहीं है।

धर्म तो जीवन में हो, तभी जीवित बनता है।

धर्म तो प्राणों के प्राण में हो, तभी सत्य बनता है।

और जहां सत्य है, वहां शक्ति है।

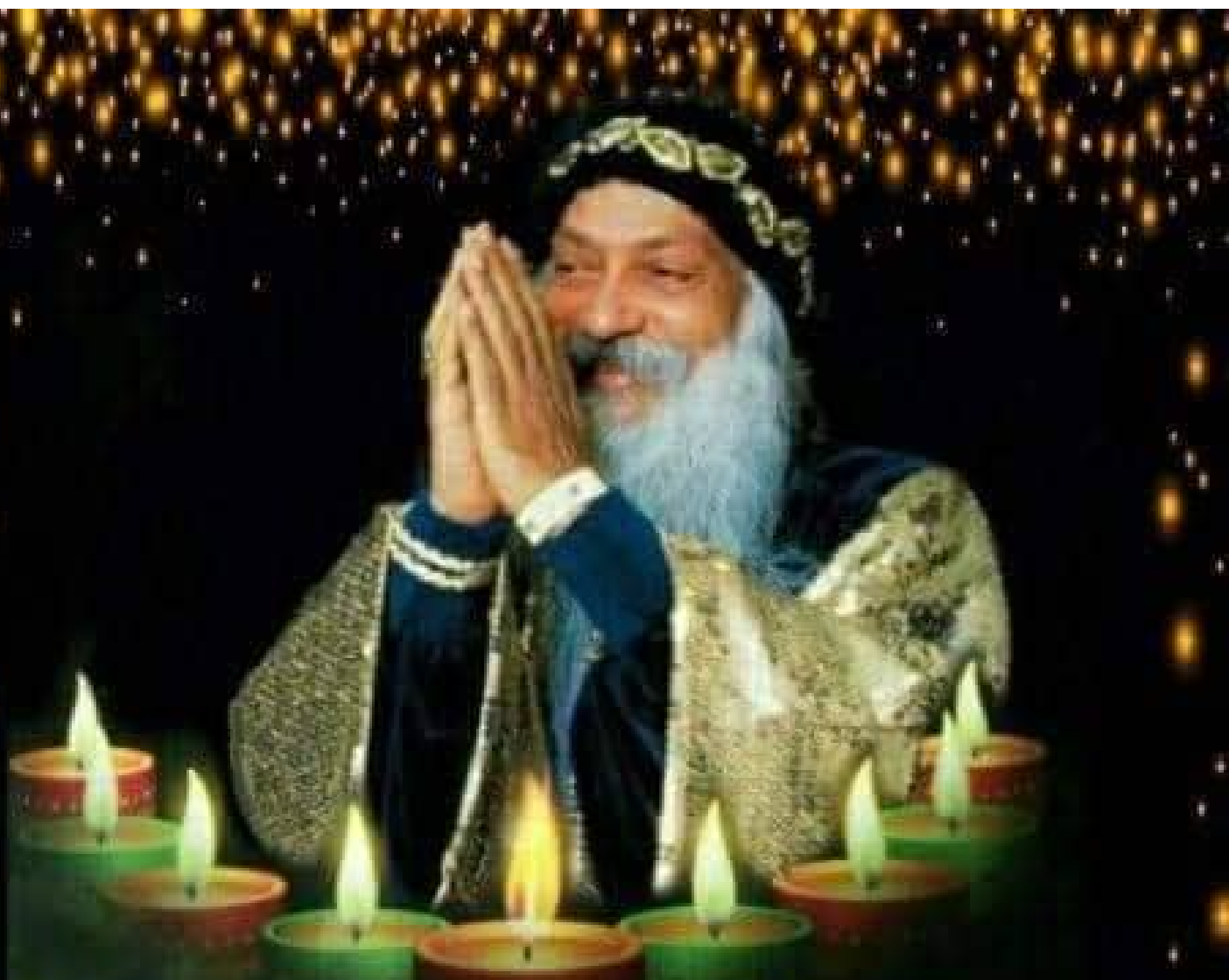
जहां शक्ति है, वहां गति है। जहां गति है, वहां

जीवन है। ओशो संकलन : Dr Sohan Lal Narang



नानक कहते हैं, उपाय एक ही है कि उसके हुक्म और उसकी मर्जी के अनुसार सब उस पर छोड़ दो। जैसा वह जिलाए, जीयो। जैसा वह कराए, करो। जहां वह ले जाए, जाओ। उसका हुक्म तुम्हारी एक मात्र साधना हो जाए। तुम अपनी मर्जी हटाओ। उसकी मर्जी को आने दो। तुम स्वीकार कर लो जीवन जैसा हो। परमात्मा ने दिया है, वही जाने। तुम इंकार मत करो। दुख आए तो दुख को भी स्वीकार कर लो कि उसकी मर्जी। और अहोभाव रखो, धन्यभाव रखो कि अगर उसने दुख दिया है तो जरूर कोई राज होगा, कोई अर्थ होगा, कोई रहस्य होगा। तुम शिकायत मत करो। तुम धन्यवाद से ही भरे रहो। वह तुम्हें जैसा रखे। गरीब, तो गरीब। अमीर, तो अमीर। सुख में तो सुख में। दुख में, तो दुख में। एक बात तुम्हारे भीतर सतत बनी रहे कि मैं राजी हूं। तेरा हुक्म मेरा जीवन है।

एक ओंकार सतनाम -1 - ओशो



दीपावली केवल बाहर रोशनी जलाने का नाम नहीं, बल्कि अंतर को भी प्रज्ज्वलित करने का पर्व है। हमारी चेतना बाहर की ओर देखती है, अगर हम अंदर की ओर देखें तो कायाकल्प हो सकता है। अगर अंदर की रोशनी जल गई तो पूरा जीवन जगमग जगमग हो जाएगा। अपने अंतर में दीया जलाने की प्रक्रिया को ही ध्यान कहते हैं। ओशो

Happy Diwali.



बाहर के दीपक और उनका प्रकाश
कितना सुंदर है । लेकिन वो भीतर के
अन्धेरे को नहीं मिटाता ।
ध्यान की रोशनी हो तो
जिन्दगी दीवाली हो ।

- ओशो



ह, ऊपर... ऊपर। तुम दाँव का उल्टा माँ कर दाँ, ताँ माँ ज्योति ऊपर का तरफ जायेगी। तुम ज्योति को उल्टा न कर पाओगे।

अग्नि का स्वभाव है ऊर्ध्वगमन। इसलिए सारे ज्ञान को उपलब्ध व्यक्तियों ने आत्मा को अग्निधर्मा कहा है। इसलिए जरथुस्त्र को माननेवाले चैबीस घंटे दीये को जलाये रखते हैं मंदिर में। वह सिर्फ इस बात की खबर है कि अग्नि तुम्हारा स्वभाव है इसलिए सारी दुनिया में अग्नि की पूजा हुई। हिंदू सूर्य को नमस्कार करते हैं। वह नमस्कार सिर्फ अग्नि के ऊर्ध्वगामी स्वभाव को है।

विज्ञापन

जिस दिन महावीर को निर्वाण उपलब्ध हुआ उस दिन जैन दीपावली मनाते हैं। महा-निर्वाण हुआ उस दिन वे, उनकी ज्योति दीये से मुक्त हुई, उस दिन करोड़ों-करोड़ों दीये जलाते हैं। हिंदुओं की बजाय जैनों की दीवाली ज्यादा सार्थक है। हिंदू तो लक्ष्मी की पूजा के लिए दीवाली मनाते हैं। बड़ी उल्टी है। तुम अग्नि को भी लक्ष्मी की पूजा में लगाते हो? जो ऊर्ध्वगामी है, उसको भी अधोगामी की तरफ लगाते हो? तुम दीये भी जलाते हो तो भी संसार को प्रकाशित करने के लिए।

जैनों की दीवाली ज्यादा अर्थपूर्ण है। वे इसलिए मनाते हैं दीवाली, कि उस रात महावीर महानिर्वाण को उपलब्ध हुए। अमावस की रात महावीर ने ठीक रात चुनी। बुद्ध ने पूर्णिमा की रात ज्ञान उपलब्ध किया, पर महावीर ने ज्यादा ठीक रात चुनी। अमावस की अंधेरी रात! सब तरफ अंधकार है और महावीर प्रकाश हो गये। उस अंधकार में वह प्रकाश, ठीक विरोध के कारण प्रगाढ़ होकर दिखाई पड़ा। एक दीया जलाओ, तो जब पूर्णिमा की रात हो, उसका कुछ पता भी न चलेगा। अंधेरी अमावस में एक दीया जलाओ, उसकी रोशनी बड़ी प्रगाढ़ होगी।

जैनों की दीवाली ज्यादा सार्थक है, लेकिन कोई जैन उसको मनाता नहीं। सब जैन हिंदुओं की दीवाली मना रहे हैं। कब उन्होंने भी लक्ष्मी की पूजा शुरू कर दी, कहना मुश्किल है। मन तो हिंदुओं का ही है। उसमें कोई बहुत फर्क नहीं पड़ता। वे भी धन की ही पूजा कर रहे हैं। आदमी जैसा है, वह सभी चीजों को मिट्टी की तरफ नियोजित कर देता है। यही कारण है कि हमारी चेतना बाहर की तरफ देखती है। यह कुछ स्वाभाविक है।

साभार: ओशो



जीवन में सत्य का खोजी ही अगर सत्य का विरोधी बन जाए तो
हा दोस्तो हम सब लोग सोचते हैं काश आज तक जितने भी महान साधु
संत सन्यासी हुए हैं
काश हम लोग भी उस परम अनुभूति को मनसुस कर सकते
उस परमात्मा रूपी सत्य को जान पाते.

पर आप लोग शायद जानते नहीं सत्य को खोजने का एक ढंग है एक
परीक्षा है
और परीक्षा भी ऐसी जिसे आप स्वयं ही लेते हैं
आप को खुदको ही देखना होता है
आप कितना सत्य बोल पाते हैं
आप कितना मोह में हैं ये भी देखना होता है
आप को कितने अहंकारी हैं ये भी देखना होता है
आपके अंदर कितना गुस्सा है ये भी देखना होता है

कुल मिलाके हैं ये हैं की सुरुवत में आपको अपने ही अंदर खुदको दो में
बाट लेना होता है

एक जो गुस्सा कर रहा है और एक जो खुदको देख रहा है

इसे ही ओशो से लेकर गीता से लेकर हर एक शास्त्र में साक्षी भाव बोला
गया है.

इस साक्षी भाव को साधते साधते व्यक्ति में अलौकिक बदलाव होना
शुरू हो जाते हैं.

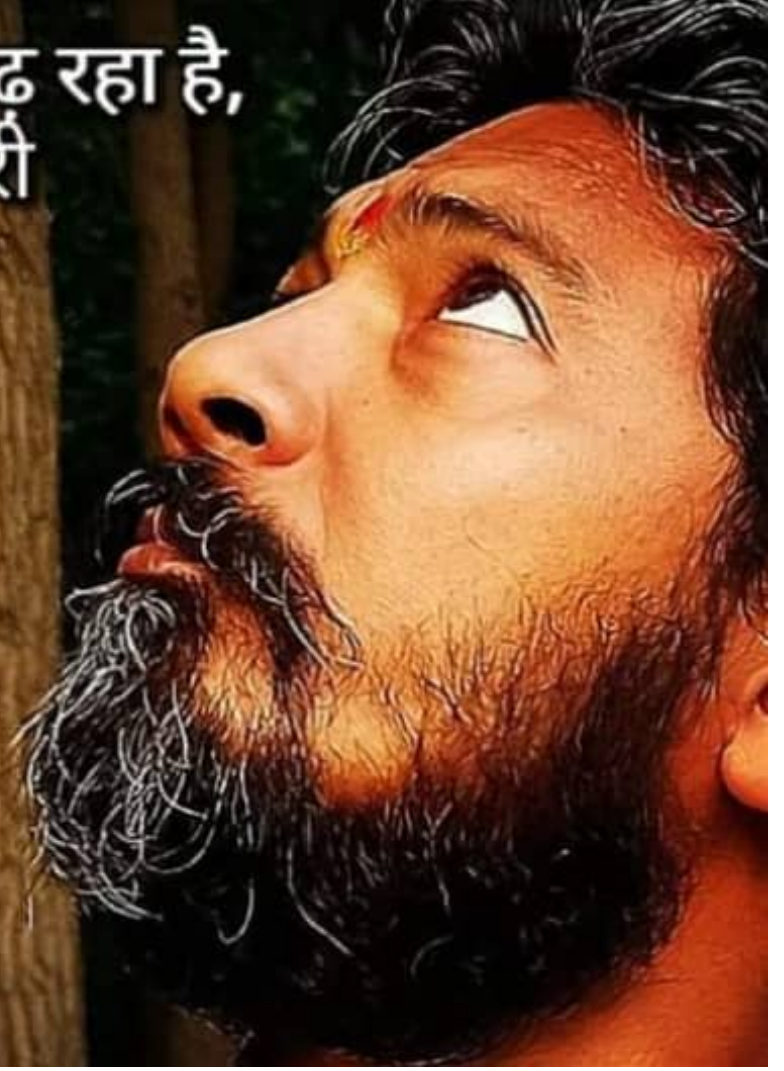
कहते हैं ना परम सत्य को बोला नहीं जाता वही बात है आप स्वयं ही
जान सकते हैं साक्षी भाव को साधने से ये
साधना जगत में दूसरा चरण है

#आपका_मित्र_वैभव

वहाँ बाहर एक पेड़ बढ रहा है,
जिसकी लकड़ी से मेरी
चिता सजाई जाएगी।
पर शायद अभी
वह कटा न हो।

-लोकेशानन्द

417 मौका





Posts

About

Photos

Mentions

**Slavic gymnastic for women in USA**

...

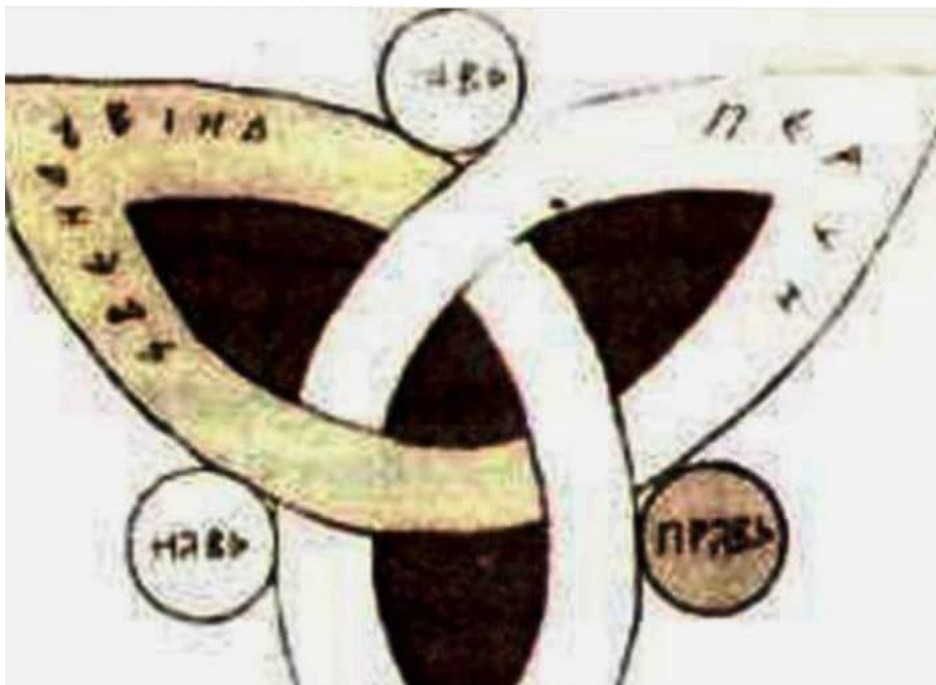
5 Sep 2017 · 🌐

There are 3 worlds according to slavic mythology:

- Nav' is the place where your ancestors are going after death. Some of the dark Gods are also living in this place helping to pass time before rebirth.
- Yav' is the place where people are living now, our physical world.
- Prav' is the place for slavic Gods. Sometimes some researchers distinguish Slav' which is the world of enlightened ancestors after their death.

This world is built by Rod and protected it from Chaos. For every slavic person these three worlds were more than real. All practises, rituals, celebrations were connected to all or some of the world even a slavic gymnastics for women is not an exception. There are three basic exercises that is related to one of the world according to a slavic mythology.

See translation





एक अभिनेत्री से एयरपोर्ट पर पूछा गया, विवाहित या अविवाहित? उसने कहा: दोनों; कभी-कभी! कभी विवाहित, कभी अविवाहित। दोनों; कभी-कभी। जहां ऐसी रेत जैसी स्थिति हो जाए...

पूरब के लोग चालाक हैं। उम्र चालाकी लाती है, बूढ़े बेईमान हो जाते हैं, होशियार हो जाते हैं। बच्चे निर्दोष होते हैं। उनको पता नहीं, जिंदगी का राग-रंग क्या है।

तो पूरब ने पूरी व्यवस्था की, कि संबंध ऐसे मजबूती से बनाए जाए, कि पक्की भ्रांति हो जाए कि यह पत्नी मेरी है। और पूरब में समझा जाता है कि ऐसा कोई एक ही जन्म का मामला नहीं है। पति-पत्नी तो एक दूसरे का पीछा जन्म-जन्मांतर तक करते रहते हैं।

पत्नियां तो इससे बड़ी प्रसन्न होती हैं। पति जरा डरते हैं कि जन्म-जन्मांतर तक? एक तक ही काफी है। एक...मगर अगल जन्म में भी इसी देवी से मलना होगा? लेकिन पत्नियां इससे बड़ी प्रसन्न होती हैं कि भाग कर जाओगे कहां? कोई छुटकारा नहीं है।

ये प्रतीतियां बिठाई गई हैं। मानव शास्त्र की प्रतीतियां हैं। इससे तुम्हें लगता है, मेरा।

बच्चा तुमसे पैदा होता है। तुम सोचते हो मेरा। तुमसे क्या पैदा हो रहा है? तुम केवल प्रयोगशाला हो। तुम्हारा शरीर केवल बच्चे के आगमन के लिए मार्ग हैं, इससे ज्यादा नहीं हैं। और अब तो विज्ञान भी कहता है, कि टेस्ट-ट्यूब में बच्चा पैदा हो सकता है। कोई मां के गर्भ की जरूरत नहीं।

और विज्ञान कहता है कि अब तो आर्टिफिशियल इनसेमीनेशन की सुविधा है। तो हजारों साल तक व्यक्ति का वीर्ण-कण सुरक्षित बचाया जा सकता है बर्फ में ढांककर। तुम मर जाओगे, हजार साल बाद तुम्हारा लड़का पैदा हो सकता है। तुम्हारा वीर्ण-कण बचा लिया जाएगा। तो तुमसे संबंध रहा? दस हजार साल बाद तुम्हारा लड़का पैदा हो सकता है। और तुम मर चुके दस हजार साल पहले। तुम्हारी रग-रग मिट्टी में खो गई। फिर भी तुम्हारा बच्चा पैदा हो सकता है। तो तुमसे क्या संबंध रहा? क्या लेना-देना है?

तुम केवल मार्ग थे। अपना यहां कोई भी नहीं। यहां तुम अजनबी हो। यहां अपने का भरोसा करके राहत मिलती है, यह सच है। क्योंकि अगर तुम्हें यह पक्का पता चल जाए कि तुम बिलकुल अकेले हो, तो तुम घबड़ा जाओगे। बेचैन हो जाओगे। हाथ पैर काटने लगेंगे।

रात अंधेरी है। रास्ता बीहड़ सुनसान है। कुछ आगे का पता नहीं, कुछ पीछे का पता नहीं, कुछ अपना पता नहीं। किसी का हाथ, हाथ में लेकर थोड़ा भरोसा आता है कि कोई साथ है। माना कि वह भी अंधा है, हम भी अंधे।

हैं तो मैं ही हूँ जिन्होंने हमें बनाया है...



अंधे हरि बिन को तेरा।

यह तो कांटा समझा रहे हैं कबीर; कि अभी तू एक बात समझ कि हरि के बिना तेरा कोई भी नहीं। न पत्नी तेरी है, अब अजनबी हैं। राह पर मिलन गए। राह पर थोड़े से भ्रम पैदा कर लिए।

कभी तुम सोचते हो, कि जिनको तुम अपना कहते हो, कैसे उन्हें मिल गए? तुम्हारे पिता एक ज्योतिषी के पास चले गए तुम्हारी जन्म-कुंडली लेकर। किसी स्त्री की जन्म-कुंडली लेकर एक दूसरे सज्जन ज्योतिषी के पास चले गए। उन्होंने जन्म-कुंडली मिला ली, गणित बैठ गया। लक्षण पूरे हो गए। बैड-बाजे बज गए। तुम्हें सात चक्कर लगवा दिए। यह पत्नी अपनी हो गयी।

कल तक यह अपनी न थी। संयोग है। नदी-नाव संयोग! यह किसी और की भी हो सकती थी। कोई अड़चन नहीं थी। किसी और की भी हो सकती थी। और तब भी इसी भ्रम में होती कि यह मेरा पति है। तुम्हारी पत्नी कोई और भी हो सकती थी। तब भी तुम इसी भ्रम में होते कि यह मेरी पत्नी है। दूसरी पत्नी से दूसरे बच्चे पैदा होते। तब वे तुम्हारे होते। अभी वे तुम्हारे नहीं हैं। अभी वे किसी और के घर में खेल रहे हैं।

संयोग को सत्य मत मान लेना। राह पर मिल जाते हैं दो लोग। साथ हो लेते हैं। गपशप करते हैं। फिर राह अलग-अलग हो जाती है। विदा हो जाते हैं। लेकिन हम बड़ी भ्रांति पैदा करवाते हैं।

इसलिए तो विवाह का इतना आयोजन करना पड़ता है। उस आयोजन के पीछे बड़ा मनोविज्ञान है। मेरे लोग आते हैं। वे कहते हैं, क्या जरूरत कि घोड़े पर सवारी निकले दूल्हे की? कि इतने बैड-बजें, फूल झाड़ी छूटें, बरात में खर्च हो? इतने लोग आएँ, जाएँ? इस सब की क्या जरूरत है? क्या सीधा-साधा विवाह नहीं हो सकता?

हो सकता है। लेकिन भ्रम पैदा होना मुश्किल होगा। सीधा साधा बिलकुल हो सकता है। कोई जरूरत नहीं है। तुम एक स्त्री को मिल गए। लेकिन तुमको भी शक रहेगा कि ऐसे में यह अपनी हो कैसे गई? उतना उपद्रव चाहिए भरोसा दिलाने के लिए, कि भारी कुछ हो रहा है। कुछ ऐसा महत्वपूर्ण हो रहा है, जो दोबारा नहीं होगा।

अब घोड़े पर तुम जो रोज तो बैठते नहीं। एक दफा बैठेगा। इसलिए दूल्हा राजा। दूल्हा को हम कहते हैं दूल्हा राजा। उसे राजा बना देते हैं। एक दिन के राजा हैं वे। और कैसी फजीहत पीछे होनेवाली है, कुछ पता नहीं। मगर बैठे हैं अकड़ कर। कटारी वगैरह लटका रखी है। मुकुट वगैरह पहन रखा है। उधार कपड़े हों, कोई हर्जा नहीं। लेकिन आज डट कर साज-सामान किया है। और बराती चल रहे हैं। फौज-फाटा है। बड़े-बड़ों को नीचे चला दिया है। सब नीचे चल रहे हैं। और दूल्हा राजा हो गया एक दिन के लिए।

यह उसके मन पर एक छाप बिठानी है। एक कंडीशनिंग है, एक संस्कार है। बड़े कुशल लोग थे पुराने लोग। उन्होंने पूरा हिसाब रखा है कि उसको यह भ्रांति पक्की हो जाए कि कोई गाढ़ संबंध पैदा हो रहा है।

अंधे हरि बिन को तेरा।

यह तो कांटा समझा रहे हैं कबीर; कि अभी तू एक बात समझ कि हरि के बिना तेरा कोई भी नहीं। न पत्नी तेरी है, अब अजनबी हैं। राह पर मिलन गए। राह पर थोड़े से भ्रम पैदा कर लिए।

कभी तुम सोचते हो, कि जिनको तुम अपना कहते हो, कैसे उन्हें मिल गए? तुम्हारे पिता एक ज्योतिषी के पास चले गए तुम्हारी जन्म-कुंडली लेकर। किसी स्त्री की जन्म-कुंडली लेकर एक दूसरे सज्जन ज्योतिषी के पास चले गए। उन्होंने जन्म-कुंडली मिला ली, गणित बैठ गया। लक्षण पूरे हो गए। बेंड-बाजे बज गए। तुम्हें सात चक्कर लगवा दिए। यह पत्नी अपनी हो गयी।

कल तक यह अपनी न थी। संयोग है। नदी-नाव संयोग! यह किसी और की भी हो सकती थी। कोई अड़चन नहीं थी। किसी और की भी हो सकती थी। और तब भी इसी भ्रम में होती कि यह मेरा पति है। तुम्हारी पत्नी कोई और भी हो सकती थी। तब भी तुम इसी भ्रम में होते कि यह मेरी पत्नी है। दूसरी पत्नी से दूसरे बच्चे पैदा होते। तब वे तुम्हारे होते। अभी वे तुम्हारे नहीं हैं। अभी वे किसी और के घर में खेल रहे हैं।

संयोग को सत्य मत मान लेना। राह पर मिल जाते हैं दो लोग। साथ हो लेते हैं। गपशप करते हैं। फिर राह अलग-अलग हो जाती है। विदा हो जाते हैं। लेकिन हम बड़ी भ्रांति पैदा करवाते हैं।

इसलिए तो विवाह का इतना आयोजन करना पड़ता है। उस आयोजन के पीछे बड़ा मनोविज्ञान है। मेरे लोग आते हैं। वे कहते हैं, क्या जरूरत कि घोड़े पर सवारी निकले दूल्हे की? कि इतने बेंड-बजें, फूल झाड़ी छूटें, बरात में खर्च हो? इतने लोग आएँ, जाएँ? इस सब की क्या जरूरत है? क्या सीधा-साधा विवाह नहीं हो सकता?

हो सकता है। लेकिन भ्रम पैदा होना मुश्किल होगा। सीधा साधा बिलकुल हो सकता है। कोई जरूरत नहीं है। तुम एक स्त्री को मिल गए। लेकिन तुमको भी शक रहेगा कि ऐसे में यह अपनी हो कैसे गई? उतना उपद्रव चाहिए भरोसा दिलाने के लिए, कि भारी कुछ हो रहा है। कुछ ऐसा महत्वपूर्ण हो रहा है, जो दोबारा नहीं होगा।

अब घोड़े पर तुम जो रोज तो बैठते नहीं। एक दफा बैठेगा। इसलिए दूल्हा राजा। दूल्हा को हम कहते हैं दूल्हा राजा। उसे राजा बना देते हैं। एक दिन के राजा हैं वे। और कैसी फजीहत पीछे होनेवाली है, कुछ पता नहीं। मगर बैठे हैं अकड़ कर। कटारी वगैरह लटका रखी है। मुकुट वगैरह पहन रखा है। उधार कपड़े हों, कोई हर्जा नहीं। लेकिन आज डट कर साज-सामान किया है। और बराती चल रहे हैं। फौज-फाटा है। बड़े-बड़ों को नीचे चला दिया है। सब नीचे चल रहे हैं। और दूल्हा राजा हो गया एक दिन के लिए।

यह उसके मन पर एक छाप बिठानी है। एक कंडीशनिंग है, एक संस्कार है। बड़े कुशल लोग थे पुराने लोग। उन्होंने पूरा हिसाब रखा है कि उसको यह भ्रांति पक्की हो जाए कि कोई गाढ़ संबंध पैदा हो रहा है।

यह कैसे टूटेगा? कबीर के ये सूत्र उसके तोड़ने की तरफ इशारे हैं।

अंधे हरि बिन को तेरा।

कबीर कहते हैं, अगर अपना ही मानना हो तो हरि को छोड़कर और किसी को मत मानो।

एक दिन तो हरि भी छूट जाएगा। क्योंकि वह भी खयाल, कि हरि मेरा है, आखिरी सपने का हिस्सा है। लेकिन जो सपने में है जिसको सपने का कांटा लगा है, उसे दूसरे कांटे से निकालने की जरूरत है। दूसरा कांटा उतना ही कांटा है, जितना पहला।

राह तुम चलते हो, कांटा लग गया। तत्क्षण तुम दूसरा बबूल का कांटा उठा लेते हो, पहले कांटे को निकालते हो दूसरे कांटे से। फिर दोनों को फेंक देते हो।

संसार कांटा है; धर्म भी कांटा है। अभी पत्नी मेरी, पति मेरा, बेटा मेरा, मकान मेरा, धन मेरा, इज्जत मेरी, पद मेरा--यह कांटा है। हरि मेरा--यह दूसरा कांटा है, जिससे बाकी सब कांटे निकल जाएंगे। फिर इस दूसरे कांटे को सम्हाल कर घाव में मत रख लेना। नहीं तो तुम मूर्ख साबित हुए, मूढ़ साबित हुए। सब मेहनत व्यर्थ गई। तुमने सब गुड़गोबर कर दिया। दूसरा भी कांटा है। उसकी उपयोगिता थी।

इसलिए पतंजलि ने योग सूत्रों में ईश्वर को भी एक विधि माना है; कि वह भी संसार से मुक्त होने की विधि है। बड़ी हैरानी की बात है। और मनुष्य जाति के इतिहास में इतना स्पष्ट रूप से ईश्वर को विधि कहनेवाला दूसरा व्यक्ति नहीं पैदा हुआ। पतंजलि ने साफ कहा कि यह भी एक विधि है। इस विधि से रोग मिट जाएगा। जब रोग मिट जाए तो औषधि को फेंक देना। औषधि को ढोते मत रहना।

बुद्ध ने कहा है कि तुम नाव से नदी पार करते हो। नाव नदी पार करने के लिए है। फिर जब तुम नदी पार हो जाते हो, नाव को भूल जाते हो। नदी में ही छोड़ जाते हो। उसको फिर सर पर लेकर मत चलना। फिर यह मत कहना गांव में जाकर नगरों में, कि कैसे छोड़े इस नाव को! इसने नदी पार करवाई।

तब तुम मूढ़ हो। तब तो बेहतर था कि तुम नदी ही पार नहीं करते। अब यह और उपद्रव हो गया। उसी किनारे रहते, वह बेहतर था। कम से कम सिर पर नाव का बोझ तो न था। अब तुम यह सिर पर नाव लेकर चल रहे हो।

बहुत लोग शास्त्रों को पकड़ लेते हैं, सिद्धांतों को पकड़ लेते हैं। बहुत से लोग परमात्मा को भी पकड़ लेते हैं। तब परमात्मा ही लंगोटी बन जाता है। फिर उसी लंगोटी से सारा संसार वापस निकट जाएगा।

अंधे हरि बिन को तेरा।

यह तो कांटा समझा रहे हैं कबीर; कि अभी तू एक बात समझ कि हरि के बिना तेरा कोई भी नहीं। न पत्नी तेरी है, अब अजनबी हैं। राह पर मिलन गए। राह पर थोड़े से भ्रम पैदा कर लिए।

मुल्ला नसरुद्दीन की पत्नी बहुत मोटी थी। डाक्टरों से सलाह ली। तो डाक्टर ने कहा कि घुड़सवारी ठीक होगी। तो रोज सुबह घुड़सवारी पर जाए। महीने भर बाद नसरुद्दीन को डाक्टर ने पूछा, राह पर मिला; क्या हाल है? क्या खबर? कुछ हुआ?

नसरुद्दीन ने कहा, बेचारी सूख कर कांटा हो गई। डाक्टर ने कहा, मैंने पहले ही का था--प्रसन्न होकर कहा। नसरुद्दीन ने कहा, आप समझे नहीं। पत्नी नहीं, घोड़ी! पत्नी तो और मुटा रही है।

घोड़ी को मत सुखा डालना। शरीर घोड़ी है। उसको कितना ही उपवास करवाओ, कुछ हल न होगा। पत्नी तो मुटाती चली जाएगी। वह अहंकार है तुम्हारे भीतर।

तो जिनको तुम त्यागी कहते हो, वे शरीर को मार डालते हैं। कम खाते हैं कम सोते हैं, भूख ताप सहते हैं, लेकिन भीतर का अहंकार बढ़ता जाता है। जितना वजन शरीर में कम होता है उतना वजन अहंकार में बढ़ता जाता है। इसलिए त्यागीत्तपस्वियों से ज्यादा अहंकारी आदमी तुम्हें कहीं भी न मिलेंगे। वे तो अहंकार के शुद्ध शिखर हैं। अगर शुद्ध अहंकार देखना हो, तो त्यागी में।

भोगी में अशुद्ध होता है। वह चमक नहीं होती। क्योंकि भोगी को खुद ही लगता है, गलत कर रहा हूं। इसलिए भोगी थोड़ा सा डरा होता है। भोगी को लगता है, ठीक ही नहीं हो रहा है। इसलिए अहंकार की प्रगाढ़ता से प्रकट नहीं होता। थोड़ा झुका-झुका रहता है। भोगी थोड़ा विनम्र रहता है। क्योंकि अपराध का भाव रहता है।

त्यागी का सब अपराध भाट मिट जाता है। त्यागी अकड़ कर चलता है। त्यागी की पताका उड़ती रहती है। त्यागी भयंकर अहंकार से भर जाता है।

भोगी का भी संसार है, त्यागी का भी संसार है। क्योंकि अहंकार है वहां संसार है।

जिस दिन मैं भाव गिरता है, उसी दिन सब सपने गिर जाते हैं। यह बड़ा संसार सपना है। खुली आंखों का सपना। दो तरह के सपने हैं। एक, जो तुम बंद आंख से देखते हो। वे इतने खतरनाक नहीं क्योंकि रोज सुबह टूट जाते हैं। एक सपना है, खुली आंख का सपना--यह जो विराट तुम्हें चारों तरफ समझ में आता है, यह बड़ा खतरनाक है। क्योंकि जन्मों-जन्मों तुम जन्मते हो, मरते हो और नहीं टूटता। जिसने इसे तोड़ लिया वह परम धन्यभागी है।

यह कैसे टूटेगा? कबीर के ये सूत्र उसके तोड़ने की तरफ इशारे हैं।

अंधे हरि बिन को तेरा।

कबीर कहते हैं, अगर अपना ही मानना हो तो हरि को छोड़कर और किसी को मत मानो।

एक दिन तो हरि भी छूट जाएगा। क्योंकि वह भी खयाल, कि हरि मेरा है, आखिरी सपने का हिस्सा है। लेकिन जो सपने में है जिसको



जाइ।

आखिर एक दिन गांववाले खुद ही आ गए कि अब यह ठीक नहीं है। क्योंकि आप राग बन गया और यह जरा अनैतिक है। तो आप शादी ही कर लो, जब राग ही बन गया है।

संन्यासी ने कहा कि बात भी ठीक है। शादी हो गई। बच्चे हो गए। मरते वक्त उसे याद आया कि गुरु ने कहा था, बिल्ली मत पालना।

उसने कहा कि मैं तुमसे भी कहता हूं कि बिल्ली मत पालना और ध्यान रखना कि मैंने भी यही भूल की थी। समझा था कि गुरु सठिया गया। डर है कि तुम भी यही सोचोगे और बिल्ली पाल लोगे।

असल में गुरु ने जरा गलत बात बताई। अगर मैं होता, तो उससे कहता कि लंगोटी मत रखना। क्योंकि बिल्ली तो जरा दूर का मामला है। लंगोटी हो तो चूहे आएंगे। चूहे हों तो बिल्ली आएगी। वह लंगोटी से असल में झंझट शुरू हुई। तुम अगर किसी को समझाओ, तो लंगोटी का बताना। बिल्ली का मत बताना। वह सूत्र काम नहीं पड़ा।

असल में कोई भी एक चीज सब ले जाएगी। क्योंकि संसार का सवाल नहीं, मन का सवाल है। तुम कहां भाग कर जाओगे? तुम जहां भी जाओगे, कम से कम तुम तो रहोगे। तुम्हीं लंगोटी हो। और अगर तुम हो तो सब है। तुम हो तो लंगोटी आ जाएगी। लंगोटी चूहे ले जाएगी, चूहे बिल्लियां, बिल्लियां, गाएं; और संसार बढ़ता जाता है।

तुम्हें पता भी नहीं चलता, एक-एक कदम बढ़ता है। इतना आहिस्ते-आहिस्ते बढ़ता है कि तुम्हें पता भी नहीं चलता कि कोई बढ़ती हो रही है। कभी एकदम से तो संसार तुम्हारे ऊपर झपटता नहीं। अगर लंगोटी से सीधी पत्नी आई होती तो दिखाई पड़ जाता। क्योंकि बीच में एक छलांग होती। सीढ़ियां थीं।

संसार सीढ़ियों में आता है और परमात्मा छलांग से। संसार के आने का ढंग क्रम है। और परमात्मा के आने का ढंग अक्रम है। संसार धीरे-धीरे आता है क्योंकि अगर छलांग से आएगा तो सोए हुए लोग भी जग जाएंगे। परमात्मा छलांग से आता है क्योंकि सोयों को जगाना ही है। सोयों को सुलाए नहीं रखना है।

इसलिए जीवन की जो परम धन्यता है, वह एक छलांग में हो जाती है। और जीवन का जो रोग है, नर्क है, वह इंच-इंच आता है। धीरे-धीरे आता है। वह इतने चुपचाप आता है कि उसकी पगध्वनि भी सुनाई नहीं पड़ती। कहां से आता है, यह भी समझ में नहीं आता।

लंगोटी मत पालना। लेकिन अगर तुम हो तो लंगोटी पालनी पड़ेगी। इसलिए अगर ठीक से समझो तो तुम ही लंगोटी हो। जब तक तुम न मिट जाओगे तब तक संसार नहीं मिट सकता। तुम यानी तुम्हारा मन। तुम यानी तुम्हारा अहंकार। तुम यानी तुम्हारा यह भाव कि मैं हूं। जहां मैं है, वहां संसार है। जहां मैं नहीं वहां संसार नहीं।

एक संन्यासी मरण शैया पर पड़ा था। और उसके शिष्यों ने पूछा कि हमारे लिए कोई आखिरी संदेश? तो उसने कहा कि जो मेरे गुरु ने मुझसे कहा था और मैंने नहीं माना, वही मैं तुमसे कहता हूं। तुम कोशिश करना मानने की। मैं असफल रहा।

सब जाग कर बैठ गए कि कोई बहुत महत्वपूर्ण बात, जो गुरु ने उसको कही थी और वह भी न मान पाया। और वह हमसे कह रहा है। उसने कहा कि तुम बिल्ली कभी मत पालना। शिष्य थोड़े हैरान हुए, कि यह कौन सा ब्रह्मज्ञान? वेद में भी इसका उल्लेख नहीं, कुरान में भी नहीं, बाइबिल में भी नहीं, यह कौन सा धर्म? क्या मरते वक्त तुम्हारा दिमाग गड़बड़ हो गया? सन्निपात में हो? हम पूछ रहे हैं कि कोई कुंजी दे जाओ--सूत्र, और आप बता रहे हैं कि बिल्ली मत पालना। सठिया गए हो?

उसने कहा कि नहीं; यही मेरे गुरु ने कहा था और मैं न मान पाया मैं तुम्हें अपनी कहानी कहे देता हूं। तुम याद रखना।

गुरु ने करते वक्त--यही मैंने उनसे कहा था, कि क्या करूं? कोई संदेश, सारसूत्र? उन्होंने कहा कि बिल्ली मत पालना। मैंने भी समझा कि सठिया गए। दिमाग खराब हो गया मरते वक्त। उम्र भी ज्यादा हो गई थी। कोई नब्बे वर्ष थी उम्र। अब दिमाग ठीक काम नहीं कर रहा है। बिल्ली पालने से क्या संबंध? लेकिन वहीं भूल हो गई। मैंने समझा कि दिमाग खराब है, वहीं चूक गया।

फिर बरसों बीत गए। मैं सब छोड़ कर जंगल में रहने लगा। साधना करता था। शास्त्र पढ़ता था। मनन, ध्यान में लगा था। कुछ पास न था, बस दो लंगोटियां थीं। लेकिन चूहे झोपड़ी में थे और लंगोटी काट जाते। तो मैंने गांव के लोगों से कहा--जो आते थे कभी-कभी भोजन लेकर, फल लेकर--कि क्या करूं? उन्होंने कहा कि एक बिल्ली पाल लो।

और मुझे याद भी न आई कि मरते वक्त गुरु कह गया कि बिल्ली मत पालना। बात कुछ कठिनाई की भी न लगी। सीधी-साफ थी, निर्दोष थी। बिल्ली पालने में झंझट भी क्या? बिल्ली कोई गृहस्थी है? कोई ज्ञानी नहीं कह गया कि बिल्ली में गृहस्थी है। जानियों ने कहा कि पत्नी मत पालना, पत्नी मत पालना। बिल्ली मत पालना, किसी ने कहा है? और बिल्ली से अपना क्या लेना-देना? चूहों और बिल्ली का निपटारा हो जाएगा।

बात जंच गई। बिल्ली पाल ली। लेकिन बड़ी कठिनाई। बिल्ली को कभी चूहे मिलते, कभी नहीं भी मिलते। बिल्ली भूखी रहती, तो उस को भी पीड़ा होती। उसने गांव के लोगों से कहा कि क्या करूं? उन्होंने का कि ऐसा करो, एक गाय ठीक रहेगी। आपके भी काम आ जाएगा दूध। और बिल्ली के भी काम आ जाएगा। स्वभावतः गाय पाल ली गई।

अब गाय के लिए घास चाहिए थी। कभी गांव के लोग लाते, कभी न भी लाते। तो उसने कहा कि अब यह बड़ी मुसीबत हो गई। अब गाय की चिंता करनी पड़ती है घास चाहिए, भोजन चाहिए, पानी

टूट जाता है। इतना ना हारा जा जाए कि न सपना देख रहा हूँ, सपना टूट जाता है।

गुरजिएफ अपने शिष्यों को कहता था, कि जब तक तुम सपना न तोड़ पाओगे, तब तक तुम माया भी न तोड़ पाओगे। और वह ठीक कहता था। और उसने बड़ी अनूठी प्रक्रिया खोजी थी। वह कहता था कि तुम संसार को न तोड़ पाओगे न संसार से मुक्त हो पाओगे अभी तुम सपने से नहीं मुक्त हो सके। संसार से मुक्त होना तो बड़ी दूर की बात है। संसार तो बहुत विराट सपना है, जिसे तुमने जन्मों-जन्मों से देखा है। इतनी बार देखा है कि वह तुम्हारे देखने-देखने से सत्य हो गया है। इतनी परतें जम गई हैं तुम्हारे अनुभव की संसार के साथ, कि आज बिलकुल असंभव है। मानना कि नहीं है। पहले तुम सपना तोड़ो।

तो गुरजिएफ कहता था, अपने साधकों को, वह मैं तुमसे भी कहता हूँ, बड़ा कीमती प्रयोग है। करो, तो बड़े परिणाम हो सकते हैं।

सोते वक्त रोज पांच-सात मिनट, जैसे ही तुम्हें लगे कि अब नींद आने के करीब है, पांच-सात मिनट में आ जाएगी, तुम एक बात भीतर स्मरण रखने की कोशिश करो, कि जो भी मैं देखूंगा, जानूंगा कि यह सपना है...जो भी मैं देखूंगा, जानूंगा कि यह सपना है।

तीन महीने तक कोई परिणाम नहीं होंगे। तीन महीने तक तुम दोहराओगे, लेकिन रात सपने में भूल जाओगे। सुबह उठकर याद आएगी कि सोचा था कि जो भी देखूंगा, स्मरण रखूंगा कि सपना है; लेकिन स्मरण न रहा। सपने में पकड़ लिया।

लेकिन तीन महीने के बाद धीरे-धीरे थोड़ी थोड़ी भान की अवस्था आनी शुरू होगी। थोड़ा सा शक पैदा होना शुरू होगा। थोड़ा सा संदेह सरकेगा। सपना भी चलेगा और थोड़ी सी भीतर बेचैनी मालूम होती कि कुछ गड़बड़ है। अभी साफ नहीं होगा कि सपना है। लेकिन एक बेचैनी, कुछ है जो ठीक नहीं मालूम हो रहा, कुछ गड़बड़ है। कुछ उलझ रहा हूँ जाल में। ऐसा एक धीमा-धीमा बोध उठना शुरू होगा।

अगर तुमने सतत प्रयास जारी रखा तो तुम धीरे-धीरे पाओगे, छह महीने पूरे होते-होते किसी दिन अचानक ठीक बीच सपने में, नींद न टूटेगी और तुम जाग जाओगे। क्योंकि नींद टूट जाए, फिर तो कोई मतलब नहीं।

नींद टूट जाए, तब तो किसी को भी पता चल जाता है कि सपना था, लेकिन वह पता चलता है सपने में संबंध में जो जा चुका है। उसका कोई मूल्य नहीं है। मूल्य तो वर्तमान का है। अभी इस क्षण का है। एक दिन तुम पाओगे, तीन और छह महीने के बीच किसी दिन अचानक तुम पाओगे कि नींद तो लगी है, तुम भीतर जाग गए। तुम देख रहे हो कि यह सपना है। जैसे ही तुमने देखा है कि यह सपना है, सपना तिरोहित हो जाता है। खाली जगह छूट जाती है। और कहां से सपना तिरोहित होता है और वह जो खाली जगह छोड़ जाता है, वही अ मन है। वह पहली झलक है नो माइंड की। मन के न होने की पहली झलक है।

कि सपने का सपना तो जागते हैं। नींद तो टूट जाती है।

लेकिन यह तभी हो पाता है, जब मन खो जाता है। मन तो सार्वभौम में उठने न देगा। मन संसार है। अमन संसार के पार हो जाना है। मन से मुक्त होना, संसार से मुक्त होना है। और तब तुम्हारा सत्य तुम्हारा न होगा, सभी का होगा। आदमियों का ही नहीं, वृक्षों का भी होगा, पत्थरों का भी होगा, चांद तारों का भी होगा। क्योंकि सत्य तो एक है। सत्य तो अस्तित्व का प्राण है। वह कोई मन की धारणा नहीं है। वह तो जीवन की धारा है।

इसलिए शुद्ध धर्म सिर्फ धर्म होगा, न हिंदू, न मुसलमान, न ईसाई। हिंदू, मुसलमान, ईसाई मन के खेल हैं। चर्च, मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वार मन की बनावटें हैं। वह मन का ही जाल है।

तुमने धर्म तक को मन से देखा है। इसलिए धर्म भी बंट गया। मन से तुम जो भी चीज देखोगे, वह तत्क्षण बंट जाएगी। मन बांटने की प्रक्रिया है। मन तोड़ने का ढंग है। तुमने कभी कांच का टुकड़ा देखा हो, प्रिज्म कहते हैं। उसमें से सूरज की किरण निकालो, वह सात रंगों में टूट जाती है। इंद्रधनुष बन जाता है। टुकड़े के पहले, कांच के टुकड़े से गुजरने के पहले तो किरण एक थी, शुभ्र थी, श्वेत थी। टुकड़े से गुजरते ही सात हिस्सों में टूट जाती है। सतरंगा जाल फैल जाता है। इंद्रधनुष बन जाते हैं।

मन कांच का टुकड़ा है, प्रिज्म है। जीवन-चेतना की किरण कांच के इस टुकड़े में से निकल कर सात रंगों में टूट जाती है। उसका श्वेतपन खो जाता है। उसकी निर्दोषता, सरलता, कुंवारापन खो जाता है। फिर सात रंग हो जाते हैं। संसार यानी सात रंग। संसार यानी मन के द्वारा देखा गया सत्य। संसार यानी धारणाओं, वासनाओं, कामनाओं के पद के पीछे से झांका गया परमात्मा।

मन भ्रांति है। और मन की भ्रांति से संसार की विराट भ्रांति पैदा होती है।

मन न तो भीतर है क्योंकि भीतर तो परमात्मा है; और मन न बाहर है,, क्योंकि बाहर भी परमात्मा है। तो मन दोनों के बीच में है।

मन को हम क्या कहें? हिंदुओं ने माया कहा है। माया शब्द समझने जैसा है। माया का मतलब झूठ नहीं होता, माया का मतलब भ्रम नहीं होता, माया का मतलब होता है, सच और झूठ के बीच। भ्रम और यथार्थ के बीच।

मन को बिलकुल झूठ भी तो नहीं कह सकते, क्योंकि है। और कितने जन्मों से तुम्हें भटका रहा है। झूठ कैसे भटका सकता है? अगर होता ही नहीं, बिलकुल न होता, तो इतना विराट संसार जो तुम अपने चारों ओर निर्मित कर लेते हो कैसे निर्मित कर लेते? मन है तो। नहीं है, ऐसा कहना तो उचित न होगा। लेकिन परमात्मा जैसा है, ऐसा कहना भी उचित न होगा क्योंकि शाश्वत नहीं है, क्षणभंगुर है। बनता है, मिटता है। फिर बनता है फिर मिटता है।



फिर ध्यान रखना, तुम सोचते हो शायद कि एक संसार है, जिसमें हम सब रहते हैं; तो तुम गलती में हो। यहां जितने मन हैं, उतने ही संसार हैं। यहां जितने लोग हैं, उतने ही संसार हैं।

और एक-एक आदमी के भीतर भी एक ही मन होता तो आसानी थी। एक-एक आदमी के भीतर अनेक मन हैं। सुबह तुम्हारा मन कुछ और है, दोपहर कुछ और है। सुबह तुम अपनी पत्नी के लिए मरने के लिए तत्पर थे, कि तेरे बिना क्षण भर न जी सकूंगा। दोपहर कहते हो कि तेरे साथ न जी सकूंगा। सांझ फिर हवा बदल जाएगी। मौसम बदल जाएगा। सांझ फिर तुम बड़े प्रेम से पत्नी के पास बैठे हो। जैसे पुलिस वाला तुम्हारे कान में बार-बार दोहराए जा रहा है, कि यह अपनी है। फिर कहता है कि नहीं, अपनी नहीं है, दुश्मन है।

इससे तो उपद्रव खड़ा हो गया है। पूरे वक्त तुम्हारा मन कुछ न कुछ कहे जा रहा है। और मन भी एक नहीं है तुम्हारे भीतर, अनेक हैं। महावीर ने कहा है, मनुष्य बहुचित्तवान है, पोली साइकिक है। एक ही मन होता तो भी हल कर लेते। हजार मन हैं। इसलिए तुम्हें कुछ भी भरोसा नहीं है कि तुम किसकी मान कर चलो। तुम्हारे भीतर कोई एक आवाज नहीं है, हजार आवाजें हैं। सभी का मिश्रित कोलाहल है। एक बाजार हो तुम, एक भीड़ हो।

तो एक-एक आदमी के भी बहुत से संसार हैं। और फिर इतने लोग हैं जमीन पर, इन सब के संसार हैं।

सत्य दिखाई पड़ेगा, तो एक होगा। असत्य व्यक्तिगत होते हैं। सत्य सार्वजनिक होता है। सत्य युनिवर्सल है, सार्वभौम है। तुम्हारा सत्य और मेरा सत्य अलग नहीं हो सकता। तुम्हारा असत्य तुम्हारा, मेरा असत्य मेरा। असत्य निजी होता है--प्रायव्हेट। सत्य तो निजी नहीं होता। सत्य तो सार्वभौम होता है। इसलिए जहां भी तुम पाओगे, कि तुम्हारे सत्य में किसी तरह का निजीपन है, वहीं संदिग्ध हो जाना। सत्य कहीं निजी हुआ है? सत्य तो सबका है। सत्य में सब हैं।

इसलिए अगर तुम कहो, कि मेरा धर्म हिंदू है तो संदिग्ध हो जाना। तुम्हारा धर्म तुम्हारे मन का खेल होगा। क्योंकि वह मुसलमान के विपरीत है। तुम्हारा धर्म अगर जैन है, तो वह हिंदू के विपरीत है। तुम्हारा धर्म अगर सिक्ख है, तो वह जैन के विपरीत है। और धर्म तो सत्य का होगा तुम्हारा और पराये का नहीं। मेरा और तेरा नहीं। जिस दिन व्यक्ति धार्मिक होता है, उस दिन उसके धर्म में सब लीन हो जाते हैं। सब कुरान, सब बाइबिल, सब वेद। उस दिन उसके पास सार्वभौम सत्य होता है।

लेकिन यह तभी हो पाता है, जब मन खो जाता है। मन तो सार्वभौम में उठने न देगा। मन संसार है। अमन संसार के पार हो जाना है। मन से मुक्त होना, संसार से मुक्त होना है। और तब तुम्हारा सत्य तुम्हारा न होगा, सभी का होगा। आदमियों का ही नहीं, वृक्षों का भी होगा, पत्थरों का भी होगा, चांद तारों का भी होगा। क्योंकि सत्य तो एक

चेखोज ने एक और कहानी लिखी है, कि दो पुलिसवाले एक राह से गुजर रहे हैं और एक कुत्ते ने एक आवारा आदमी को काट लिया है। कुत्ता भी आवारा है। और उस आदमी ने उसकी टांग पकड़ ली है। और होटल के पास भीड़ लगी है। और लोग कह रहे हैं इसको मार ही डालो। यह दूसरों को भी सता चुका है। पता नहीं, पागल हो। यह कुत्ता एक उपद्रव हो गया है इस इलाके में।

पुलिसवाले भी दोनों उस भीड़ में खड़े हो गए। उनमें से एक बोला कि खतम ही करो, क्योंकि हमको भी रास्ते पर चलने नहीं देता। कुत्ते कुछ सदा के खिलाफ हैं संन्यासियों, पुलिसवालों, पोस्टमैन...जो भी किसी तरह का यूनिफार्म पहनते हैं, उनके वे खिलाफ हैं। वे एकदम नाराज हो जाते हैं। हमको भी रात चलने नहीं देता। भौंकता है, उपद्रव मचाता है। मार ही डालो।

तभी दूसरे पुलिसवाले ने गौर से कुत्ते को देख कर कहा, कि सोच कर करना। यह तो पुलिस इन्स्पेक्टर जनरल का कुत्ता मालूम पड़ता है। आवारा नहीं है। मैं भलीभांति पहचानता हूँ।

सब रंग बदल गया। वह पुलिसवाला जो कह रहा था कि मार डालो, झपटा उस आवारा आदमी पर और कहा, कि तुमने उपद्रव मचा रखा है। ट्रैफिक को रोक रखा है? छोड़ो इस कुत्ते को। जानते हो, यह कुत्ता किसका है? कितना मूल्यवान है? कुत्ते को उठा कर उसने कंधे पर रख लिया। और उस आवारा आदमी का हाथ पकड़कर कहा कि चलो पुलिस-थाने।

तभी दूसरे पुलिसवाले ने फिर कहा कि नहीं, नहीं भूल हो गई। यह कुत्ता इन्स्पेक्टर जनरल का नहीं है, सिर्फ मालूम पड़ता है। क्योंकि उसके तो माथे पर काला चिन्ह है, इसके माथे काला चिन्ह नहीं है।

कुत्ता फेंक दिया, उस पुलिसवाले ने नीचे और कहा कि कहां का आवारा कुत्ता और मैंने उठा लिया उसको! और उस आदमी से कहा कि पकड़ उसको। खत्म कर इसको। उस आदमी ने फिर उस कुत्ते को उठा लिया। उसका टांग पकड़ ली और पछाड़ने जा ही रहा है। जमीन पर, कि दूसरे पुलिसवाले ने फिर कहा कि नहीं। संदेह होता है कि हो न हो, कुत्ता तो वही है क्योंकि बिलकुल वैसे ही मालूम हो रहा है। फिर बात बदल गई। फिर दोनों झपट पड़े उस आदमी पर कि तुझे लाख दफे कहा कि यहां पर उपद्रव मत कर। छोड़ इस कुत्ते को। फिर कुत्ता कंधे पर है।

ऐसी वह कहानी चलती है। वह कई दफा बदलती है।

और सारी जिंदगी ऐसी कहानी है। मेरा--तो सब बदल जाता है। तेरा--सब बदल जाता है। और जगत वही का वही है। न आकाश तुम्हारा है, न तारे तुम्हारे हैं, न नदी पहाड़ तुम्हारे हैं, न व्यक्ति तुम्हारे हैं। भला तुमसे पैदा हुए हों, तो भी तुम्हारे नहीं हैं। न कोई अपना है, न कोई पराया है। अगर सब हैं तो परमात्मा के हैं। अगर सब में कोई है, तो परमात्मा है। मेरा और तेरे का सारा मन का है। और मन संसार बनाता है।

फिर ध्यान रखना, तम सोचते हो शायद कि एक संसार

खुल है।

चेखोव रूस का एक बहुत बड़ा लेखक हुआ। उसने अपने संस्मरणों के आधार पर एक कहानी लिखी। उसके मित्र का लड़का कोई दस साल पहले घर से भाग गया। मित्र धनी था। लेकिन जैसे अक्सर धनी होते हैं, महा-कृपण था। और लड़के को बाप के साथ रास न पड़ी। तो लड़का घर छोड़ कर भाग गया। एक ही लड़का था। जब भागा था तब तो बाप में अकड़ थीं, लेकिन धीरे-धीरे अकड़ कम हुई। मौत करीब आने लगी। दस साल बीत गये। लड़के के लौटने के कोई आसार न मालूम पड़े।

खोजने वाले भेजे। थोड़ा झुका बाप। क्योंकि वही तो मालिक है सारी संपदा का। और मौत कभी भी घट सकती है। कोई पता न चलता था लेकिन एक दिन एक पत्र आया, कि लड़का बहुत मुसीबत में है और पास के ही शहर में है। पिता को बुलाया है। और कहा है, कि अगर आप आ जाएं तो मैं घर लौट आऊंगा। अपने से मेरी आने की हिम्मत नहीं होती। शघमदा मालूम पड़ता हूं। अपराधी लगता हूं।

तो बाप गया शहर। एक शानदार होटल में ठहरा। लेकिन रात उसने पाया, कि होटल के कमरे के बाहर कोई खांसता, खंखारता...तो दरवाजा खोलकर उस आदमी से कहा कि हट जाओ यहां से। सोने दोगे या नहीं? लेकिन रात सर्द। और बर्फ पड़ रही है। और वह आदमी जाने को राजी नहीं है। तो उसने धक्के देकर उसे बरामदे के बाहर कर दिया। फिर जाकर वह आराम से सो गया।

सुबह होटल के बाहर मैदान में भीड़ लगी पाई। कोई मर गया है। तो वह भी गया देखने। कपड़े तो वही मालूम पड़ते हैं, जिस आदमी को रात उसने बरामदे के निकाल दिया था। भीड़ में पास जाकर देखा, तो चेहरा पहचाना हुआ मालूम पड़ा। यह तो उसका लड़का है!

अपने ही लड़के को रात उसने बाहर निकाल लिया। मन को पता न हो कि वह अपना है, तो अपना नहीं है। मन को पता हो कि अपना है, तो अपना है। सारा खेल मन का है। क्षण भर पहले कोई मतलब न था। यह आदमी मरा पड़ा था। भीड़ लग गयी थी। लेकिन क्षण भर बाद अब बाप छाती पीट कर रो रहा है कि मेरा लड़का मर गया है। और अब यह पीड़ा जीवन भर रहेगी क्योंकि मैंने ही मारा।

खेल सारा मन का है। और अभी सिद्ध हो जाए, कोई दूसरा आदमी आ जाए और कहे कि यह लड़का मेरा है, तुम्हारा नहीं। तुम भूल में पड़ गए। आंसू सूख जाएंगे। प्रफुल्लता वापिस लौट आएगी। क्षण भर में सब बदल जाता है। मन का भाव बदला कि सब बदला।

चेखोज ने एक और कहानी लिखी है, कि दो पुलिसवाले एक राह से गुजर रहे हैं और एक कुत्ते ने एक आवारा आदमी को काट लिया है। कुत्ता भी आवारा है। और उस आदमी ने उसकी टांग पकड़ ली है। और होटल के पास भीड़ लगी है। और लोग कह रहे हैं इसको मार ही डालो। यह दूसरों को भी सता चुका है। पता नहीं, पागल हो। यह



सबको रंग डालता है।

मैंने सुना है। कि मुल्ला नसरुद्दीन एक दफ्तर में नौकर था। बूढ़ा आदमी, सत्तर साल, उम्र! लेकिन पुराना नौकर, इसलिए दफ्तर ने उसे जारी रखा। बहुत लोग थे दफ्तर में काम करने वाले। पुरुष थे, स्त्रियां थीं। और स्त्रियों के संबंध में पुरुषों में अक्सर मजाक चलता रहता है।

एक सुंदरतम स्त्री थी दफ्तर में। सावन का महीना आया, तो उसने मुल्ला नसरुद्दीन को कहा कि मुल्ला साहब! यहां और तो कोई दिखाई नहीं पड़ता, जिसे मैं राखी बांधूं। और मेरा कोई भाई नहीं है। बस, आप ही एक सरल मूर्ति दिखाई पड़ते हैं। तो परसों राखी का त्योहार आता है। मैं आपको राखी बांधूंगी। लेकिन ध्यान रहे, इक्कीस रुपये और साड़ी आपको देनी पड़ेगी।

नसरुद्दीन थोड़ा चिंतित हुआ। माथे पर चिंता की रेखा आई। तो शायद उस स्त्री ने सोचा, कि इक्कीस रुपया और साड़ी महंगी मालूम पड़ती है। तो उसने कहा कि नहीं नहीं, उसकी फिक्र मत करिये। वह तो मैं मजाक कर रही थी। नसरुद्दीन ने कहा, सवाल नहीं है आप गलत समझीं। इक्कीस की जगह बयालीस रुपये ले लेना। एक साड़ी की जगह दो साड़ी ले लेना, लेकिन कम से कम रिश्ता तो मत बिगाड़ो!

भीतर मन है। उसके अपने राग हैं, अपने रंग हैं। दूसरे को तो दिखाई नहीं पड़ते, तुम्हीं को दिखाई पड़ते हैं। तुम्हारा मन दूसरों को दिखाई कैसे पड़ सकता है? तुम किस दुनिया में रहते हो वह किसी को भी पता नहीं चलता। तुम थोड़े से भरो, तो तुम्हें को पता चलना शुरू होगा।

और तुम्हारा मन सारी चीजों को रंग डालता है। किसी को तुम कहते हो मेरा, अपना। किसी को कहते हो पराया। किसी को मित्र, किसी को शत्रु। कौन है मित्र? कौन है शत्रु? जो तुम्हारे वासनाओं के अनुकूल पड़ जाए, वह मित्र। जो तुम्हारी वासनाओं के प्रतिकूल पड़ जाए, वह शत्रु। कोई अच्छा लगता है, कोई बुरा लगता है। किसी के तुम पास होना चाहते हो। किसी से तुम दूर होना चाहते हो। यह सब तुम्हारे मन का ही खुल है।

चेखोव रूस का एक बहुत बड़ा लेखक हुआ। उसने अपने संस्मरणों के आधार पर एक कहानी लिखी। उसके मित्र का लड़का कोई दस साल पहले घर से भाग गया। मित्र धनी था। लेकिन जैसे अक्सर धनी होते हैं, महा-कृपण था। और लड़के को बाप के साथ रास न पड़ी। तो लड़का घर छोड़ कर भाग गया। एक ही लड़का था। जब भागा था तब तो बाप में अकड़ थीं, लेकिन धीरे-धीरे अकड़ कम हुई। मौत करीब आने लगी। दस साल बीत गये। लड़के के लौटने के कोई आसार न मालूम पड़े।

खोजने वाले भेजे। थोड़ा झुका बाप। क्योंकि वही तो मालिक है सारी संपदा का। और मौत कभी भी घट सकती है। कोई पता न चलता था लेकिन एक दिन एक पत्र आया, कि लड़का बहुत मुसीबत में है और

पत्र के ही आधार पर है। कि लड़का बहुत मुसीबत में है। और लड़का है कि लड़का

अंधे हरि बिना को तेरा—(प्रवचन—नौवां)

दिनांक 19 मई, 1975, प्रातः,

श्री ओशो आश्रम, पूना

सूत्र :

अंधे हरि बिना को तेरा, कबन्सु कहत मेरी
मेरा।
तति कुलाक्रम अभिमाना, झूठे भरमि क
हा भुलाना॥
झूठे तन की कहा बड़ाई, जे निमिख माहि
जर जाई।
जब लग मनहि विकारा, तब लग नहिं छूटे
संसार॥
जब मन निर्मल करि जाना, तब निर्मल
माहि समाना।
ब्रह्म अगनि ब्रह्म सोई, अब हरि बिना और
न कोई॥
जब पाप पुण्य भ्रम जारि, तब भयो
प्रकाश मुरारी।
कहे कबीर हरि ऐसा, जहां जैसा तहां
तैसा।
भूले भरम मरे जिन कोई, राजा राम करे
सो होई।

मैं यदि पूछूं, तुमसे, कि संसार कहां है? तो तुम दसों दिशाओं
को बताओ। लेकिन संसार वहां है नहीं। वहां तो परमात्मा है। तो शायद
तुम भीतर बताओ। ग्यारहवीं दिशा में बताओ। वहां भी संसार नहीं है।
वहां भी परमात्मा है। बाहर भी वही है, भीतर भी वही है।

फिर संसार कहां है? बाहर और भीतर के मध्य। जिसे हम मन
कहते हैं, सारा संसार वहीं है। मन तो बाहर है, और मन न भीतर है। मन
बाहर और भीतर के मध्य खड़ी दीवार है। और सारा संसार मन का
विस्तार है।

जो तुम्हें दिखाई पड़ता है, वह वही नहीं जो है, तुम्हें वही दिखाई
पड़ता है, जो तुम्हारी कामना, तुम्हारी वासना चाहती है। तुम्हारी चाह में
सब रंग जाता है। तुम्हारा राग में सब रंग जाता है। और तुम वही देख
पाते हो, जो तुम्हारी भीतर की कामना तुम्हें दिखाती है। तुम्हारा देखना
शब्द नहीं है। दृष्टि निर्मल नहीं है। विकास से भरी है।

2:10 pm
छायाएं छायाएं हा हा। क्याक इनस बाला ता य उत्तर नहा दता। इन्हें छुओ, तो कुछ भी हाथ में नहीं आता। इन्हें पकड़ो तो कुछ पकड़ में नहीं आता। एक आदमी को शक होने लगा। कोई मनीषी, कोई बुद्ध!

उस आदमी ने धीरे-धीरे पीछे देखने का अभ्यास शुरू किया। वर्षों लग गए। बड़ा कष्ट हुआ। जब भी पीछे देखता, आंखें तिलमिला जातीं। आंसू गिरते। लेकिन उसने अभ्यास जारी रखा। वह बड़ी तपश्चर्या थी। फिर धीरे-धीरे आंखें राजी होने लगीं। और तब वह चकित हुआ कि हम किस कारागृह में पड़े हैं, और हमने छायाओं को सत्य समझ लिया है। वह पीछे देखने में समर्थ हो गया। उसकी गर्दन मुड़ने लगी और उसकी आंखें देखने लगीं बाहर के रंग, वृक्ष और वृक्षों में खिले फूल, राह से गुजरते लोग। रंगीन थी दुनिया काफी। छायाएं बिलकुल रंगहीन थीं, उदास थीं। बाहर उत्सव था। छायाओं में कोई उत्सव पकड़ में नहीं आता था। बच्चे नाचते-गाते निकलते थे। छायाएं तो बिलकुल चुप थीं। वहां वाणी न थी, वहां मुखरता न थी। बाहर--पीछे छिपा हुआ असली जगत था।

उस आदमी ने धीरे-धीरे इसकी चर्चा दूसरे कैदियों से शुरू की। बाकी कैदी हंसने लगे कि तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है। हम तो सदा से यही सुनते आए हैं कि यही सत्य है जो सामने है। और हम तो पीछे मुड़ कर देखते हैं तो कुछ दिखाई नहीं पड़ता, सिवाय अंधकार के। जब आंख बंद हो जाए तो सिवाय अंधकार के कुछ भी दिखाई नहीं पड़ता।

जरूरी नहीं है कि अंधकार हो। हो सकता है, सिर्फ आंख बंद हो जाती हो। लेकिन दोष कोई अपने ऊपर कभी लेता नहीं। तो कोई यह तो मानता नहीं कि मेरी आंख बंद हो सकती है, इसलिए अंधकार है। लोग मानते हैं, अंधकार है, इसलिए अंधकार है। मेरी आंख और बंद हो सकती है? यह कहीं संभव है? हम अपनी आंख तो सदा खुली मानते हैं। अपना हृदय तो सदा प्रेम से भरपूर मानते हैं। अपनी प्रज्ञा तो सदा प्रज्वलित मानते हैं। अपनी आत्मा तो सदा जाग्रत मानते हैं। और यही हमारी भ्रांतियों की जड़ है।

फिर कैदियों की संख्या बहुत थी, वह अकेला था। लोकतंत्र कैदियों के पक्ष में था। बहुमत उनका था। और उन्होंने कहा कि अगर ऐसा ही है तो सबकी सलाह ले ली जाए। एक भी मत मिला नहीं उस आदमी को। और लोग खूब हंसे, और खूब मजाक की उन्होंने। धीरे-धीरे वे उस आदमी को पागल मानने लगे।

वही कबीर कह रहे हैं:

सगरी दुनिया भई सयानी, मैं ही इक बौराना।

उस आदमी को अगर कबीर का पद याद होता तो उसने भी कहा होता सब लोग सयाने, सिर्फ मैं एक पागल हूं। और सिर्फ वह एक ही सयाना था। लेकिन जहां अंधों की भीड़ हो वहां आंख वाला पागल हो जाता है। जहां मूढ़ों की भीड़ हो वहां बुद्धिमान पागल हो जाता है। जहां बीमारी ही स्वास्थ्य समझी जाती हो, वहां स्वस्थ आदमी का लोग इलाज कर देंगे पकड़ कर।

स्वाभाविक है। क्योंकि लोग अपने को मानदंड समझते हैं। और फिर जब बहुमत उनके साथ हो, बहुमत ही नहीं, सर्वमत उनके साथ हो... उस एक आदमी को छोड़ कर सभी उनके साथ थे। तो संदेह भी कैसे पैदा हो? लोग हंसे, मजाक की, उसे पागल समझा, उसका तिरस्कार किया, उसकी उपेक्षा की।

धीरे-धीरे लोगों ने उससे बातचीत बंद कर दी। क्योंकि वह बेचैनी पैदा करता था। बेचैनी पैदा करता था क्योंकि कभी-कभी संदेह उनके मन में भी उठ आता था कि हो न हो, कहीं यह आदमी सच न हो। क्योंकि अगर यह आदमी सच है तो उनकी पूरी जिंदगी बेकार गई। बड़ा दांव है। यह आदमी गलत होना ही चाहिए। नहीं तो उनकी पूरी जिंदगी गलत होती।

और कोई भी आदमी नहीं चाहता कि उसकी पूरी जिंदगी गलत सिद्ध हो। क्योंकि इसका अर्थ हुआ तुमने यूं ही गंवाया। तुमने अवसर खो दिया। तुम मूढ़ हो, अज्ञानी हो, मूर्च्छित हो। अहंकार यह मानने को तैयार नहीं होता। अहंकार कहता है: मुझसे ज्ञानी और कौन? मुझसे समझदार और कौन? ऐसे अहंकार रक्षा करता अज्ञान की। अहंकार रक्षक है, अज्ञान के ऊपर। उसके रहते अज्ञान का किला पराजित न होगा, तोडा न



Posts

About

Videos

Photos

Reels

मित्रों हमारा शरीर परमात्मा की अद्भुत देन है...गर्भ की उत्पत्ति नाभी के पीछे होती है और उसको माता के साथ जुड़ी हुई नाडी से पोषण मिलता है और इसलिए मृत्यु के तीन घंटे तक नाभी गर्म रहती है।

●●गर्भधारण के नौ महीनों अर्थात 270 दिन बाद एक सम्पूर्ण बाल स्वरूप बनता है। नाभी के द्वारा सभी नसों का जुड़ाव गर्भ के साथ होता है। इसलिए नाभी एक अद्भुत भाग है।

नाभी के पीछे की ओर पेचूटी या navel button होता है। जिसमें 72000 से भी अधिक रक्त धमनियां स्थित होती है

●नाभी में गाय का शुद्ध घी या तेल लगाने से बहुत सारी शारीरिक दुर्बलता का उपाय हो सकता है।

●1. आँखों का शुष्क हो जाना, नजर कमजोर हो जाना, चमकदार त्वचा और बालों के लिये उपाय...

सोने से पहले 3 से 7 बूँदें शुद्ध घी और नारियल के तेल नाभी में डालें और नाभी के आसपास डेढ़ ईंच गोलाई में फैला दें।

●2. घुटने के दर्द में उपाय

सोने से पहले तीन से सात बूंद अरंडी का तेल नाभी में डालें और उसके आसपास डेढ़ ईंच में फैला दें।

●3. शरीर में कमपन्न तथा जोड़ों में दर्द और शुष्क त्वचा के लिए उपाय :-

रात को सोने से पहले तीन से सात बूंद राई या सरसों के तेल नाभी में डालें और उसके चारों ओर डेढ़ ईंच में फैला दें।

●4. मुँह और गाल पर होने वाले पिम्पल के लिए उपाय:-

नीम का तेल तीन से सात बूंद नाभी में उपरोक्त तरीके से डालें।

नाभी में तेल डालने का कारण

हमारी नाभी को मालूम रहता है कि हमारी कौनसी रक्तवाहिनी सूख रही है, इसलिए वो उसी धमनी में तेल का प्रवाह कर देती है।

●जब बालक छोटा होता है और उसका पेट दुखता है तब हम हिंग और पानी या तैल का मिश्रण उसके पेट और नाभी के आसपास लगाते थे और उसका दर्द तुरंत गायब हो जाता था ,, बस यही काम

तुमने कभी गौर किया ? तुम्हारा सच्चा मित्र कौन है ? कौन है तुमसे जो बेशर्त प्रेम करता है ? ना वो तुमसे कभी लड़ता है, ना रूठता है, ना दूर जाता है। तुम उसे छोड़ो तो तुमसे कोई शिकायत भी नहीं, कोई गिला शिकवा भी नहीं। और जब मर्जी तुम उसे बुलाओ तो आने को तैयार, तुम्हारा हर गम दूर करने को, तुम्हारी हर खुशी बढ़ाने को।

ध्यान है तुम्हारा वो प्रियतम, तुम्हारा परम् संगी साथी। जिससे तुम चाहो कितना ही मुहं फेरो पर वो हर वक्त तुम्हारे आने के लिए तुम्हारी प्रतीक्षा करता

नहीं चल रहा है, तुम उदास बैठ हो। यह तो राग है। यह उदासी नहीं है। यह तो राग असफल हो रहा है, इसलिए तुम उदास हो।

तुम्हारा आनंद भी झूठा है। कि आज धंधा खूब चला कि तुमने ग्राहकों को खूब लूटा कि तुम बड़े प्रसन्न घर चले आ रहे हो। पैर पड़ते नहीं जमीन पर, आकाश में उड़ते हैं। यह आनंद भी आनंद नहीं है। यह भी राग है। राग और विराग दोनों जब छूट जाएं। न तो संसार के प्रति राग रहे और न घृणा। न द्वेष रहे, न राग; तब उदास।

उदासी परम अनुभव है। उदासी से बड़ा इस जगत में कुछ भी नहीं है। उदासी दुख नहीं है ध्यान रखना, जैसे तुम्हारे शब्दकोषों में लिखा है। उदासी परम आनंद है। संसार के प्रति उदासी तब ही आती है जब अपने प्रति परमानंद आ जाता है। जब परमात्मा में नृत्य चलने लगता है तब संसार के प्रति उदासी आ जाती है।

जैसे एक छोटा बच्चा है, वह बड़ा हो गया। अब खिलौने पड़े हैं कोने में, वह निकल भी जाता है, देखता भी नहीं कमरे से। कभी बिलकुल पागल था। कभी इतना पागल था कि रात भी खिलौने को साथ लेकर सोता था। बिना खिलौने के नींद भी नहीं आती थी। कोई दूसरा मांगता खिलौना तो लड़ने को तैयार हो जाता था। अब बड़ा हो गया, समझ आ गई, खिलौने पड़े हैं। धीरे-धीरे कचरे में फेंक दिए जाएंगे।

जिस दिन तुम्हें बड़ा आनंद मिल जाता है, छोटे आनंद अपने आप पड़े रह जाते हैं, खिलौने हो जाते हैं। जिस दिन परमात्मा मिलता है, संसार के प्रति उदासी हो जाती है। तुम संसार के प्रति उदास होने की कोशिश मत करना। अन्यथा उदासी गलत होगी। वह उदासी विराग की होगी। तुम तो परमात्मा को पाने की कोशिश करो। तब एक अनूठी उदासी आती है, जिसका स्वभाव आनंद का है। जो बड़ी विरोधाभासी है। संसार के प्रति कोई अच्छा न बुरा भाव रह जाता। सब खो जाता है। अपने में कोई लीन है। इतना आनंदित है कि कुछ और चाह न रही। सब मिल गया। कुछ पाने को न बचा। संसार की तरफ जो उदासी है, वही परमात्मा की तरफ आनंद है। वे एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।

दाया रखि धरम को पाले जगसूं रहै उदासी।

अपना सा जिव सबको जाने ताहि मिले अविनासी॥

दो शब्द--दया, करुणा। जिसमें करुणा जग गई, सब जग गया।

‘धरम’--धर्म से तुम अर्थ मत लेना, हिंदू धर्म, मुसलमान धर्म, ईसाई धर्म; नहीं। क्योंकि वे सब तो क्रियाकांड हैं। धर्म से मूल अर्थ है: स्वभाव; स्वयं को जो साध ले। हम कहते हैं, आग का धर्म--ताप; या पानी का धर्म--शीतलता। क्या है धर्म तुम्हारा--मनुष्य का? क्या है गुण तुम्हारा, तुम्हारी निजता का? चैतन्य, होश, बुद्धत्व। जो प्रज्ञा को साध ले और करुणा को; जो जाग जाए और करुणावान हो जाए...।

दाया रखि धरम को पाले जगसूं रहै उदासी।

वह अपने आप इस सपने के प्रति, जो चारों तरफ चल रहा है, उदास हो जाता है। पर यह उदासी घृणा की नहीं है। क्योंकि घृणा कभी उदास नहीं होती।

दुनिया में तीन तरह के लोग हैं। एक, जो दुनिया के राग में पड़े हैं, वे उदास नहीं हैं। दूसरे, जो दुनिया के प्रति विरागी हो गए हैं, वे भी उदास नहीं हैं। प्रेम घृणा में बदल गया। मित्रता शत्रुता बन गई। जिस तरफ देखते थे, वहां पीठ कर ली। लेकिन उदासी नहीं है।

उदास तो वह है, जो दोनों से मुक्त हो गया--राग से, विराग से। जिसको महावीर ने वीतराग कहा है। जो उदास है। उदास का अर्थ तुम्हारी उदासी नहीं कि पत्नी नाराज है, तुम उदास बैठे हो। कि धंधा ठीक नहीं चल रहा है, तुम उदास बैठ हो। यह तो राग है। यह उदासी नहीं है। यह तो राग असफल हो रहा है, इसलिए तुम उदास हो।

तुम्हारा आनंद भी झूठा है। कि आज धंधा खूब चला कि तुमने ग्राहकों को खूब लूटा कि तुम बड़े प्रसन्न घर चले आ रहे हो। पैर पड़ते नहीं जमीन पर, आकाश में उड़ते हैं। यह आनंद भी आनंद नहीं है। यह भी राग है। राग और विराग दोनों जब छूट जाएं। न तो संसार के प्रति राग रहे और न घृणा। न द्वेष रहे, न राग; तब उदास।

उदासी परम अनुभव है। उदासी से बड़ा इस जगत में कुछ भी नहीं है। उदासी दुख नहीं है ध्यान रखना, जैसे तुम्हारे शब्दकोषों में लिखा है।



उन्होंने कहा कि तब फिर मुझे आपको एक बात कहनी पड़ेगी कि मैं कुछ सीखने आया था। लेकिन मैं गलत आदमी के पास आ गया। और बजाय सीखने के मैं आपको इतना सिखाना चाहूंगा--मैं वृद्ध हूं, पचहत्तर वर्ष की मेरी उम्र है--इतनी शिक्षा आपको जरूर दूंगा कि जिसको अभी इतना भी ज्ञान नहीं कि रात्रि-भोजन वर्जित है, उसका सब ज्ञान वृथा है। इसमें कोई सार नहीं।

स्वभावतः--'सगरी दुनिया भई सयानी, मैं ही इक बौराना।'

क्रियाकांड जब छोड़ दिया होगा कबीर ने, लोगों ने कहा होगा, हो गया भ्रष्ट।

बुद्ध को जब ज्ञान उत्पन्न हो गया उस रात--जब शिष्य छोड़ कर चले गए--उस वृक्ष के नीचे सोए पहली दफा निश्चिंत। न चिंता रही संसार की, बाजार की, राज्य की, साम्राज्य की। न चिंता रही मोक्ष की, स्वर्ग की, परमात्मा की। उस रात बिलकुल निश्चिंत सोए। चिंता ही न रही। पाने को कुछ न बचा। सब व्यर्थ है। सब व्यर्थ इतना समग्ररूपेण हो गया कि चिंता न रही। कोई सपना न आया। कोई मन में उद्विग्नता न उठी। नींद थी, सो गए। सुबह पांच बजे आंख खुली। वैसी शुद्ध आंख, कुंआरी आंख जब भी खुलती है, तभी सत्य उपलब्ध हो जाता है। कोई विचार नहीं, कोई चिंता नहीं, कोई धारणा नहीं। क्या ठीक, क्या गलत; क्या करना, क्या नहीं करना; कोई ऊहापोह नहीं।

सीधी-सादी कुंआरी आंख! आखिरी तारा डूबता था। और बुद्ध को परमज्ञान उपलब्ध हुआ, उस डूबते तारे के साथ ही पुराना आदमी समाप्त हो गया। नये का जन्म हुआ। चेतना पुरानी लीन हो गई, नई चेतना जन्म गई।

बुद्ध के अपने पांच शिष्य भी छोड़ कर चले गए कि भ्रष्ट हो गया यह आदमी। क्योंकि तुम्हारे लिए धर्म का अर्थ क्रियाकांड है। तुमने धर्म को तो जाना नहीं। तुमने तो धर्म के नाम पर मुर्दा विधियों को जाना है। अब तक यह बुद्ध ज्ञानी था, मानने योग्य था, पूज्य था। अब यह भ्रष्ट हो गया। खीर खाने से आदमी भ्रष्ट हो गया। रात भोजन लेने से भ्रष्ट हो गया।

मैं एक घर में मेहमान था, जैन घर। गांव के सबसे प्रतिष्ठित वृद्ध जैन मुझे मिलने आए थे, उन्होंने मेरी किताब साधना-पथ पढ़ी थी और बहुत प्रभावित हुए थे। और मेरी बड़ी तारीफ कर रहे थे। ऐसे, जैसे मैं पच्चीसवां तीर्थंकर हूं। और तभी घर की गृहिणी ने मुझे आकर कहा कि अब आप चलें। रात हुई जाती है, भोजन कर लें। जैन तो रात भोजन नहीं करते। और वृद्ध इतने भाव में थे कि मैंने कहा कि थोड़ी देर हो जाएगी तो हर्जा नहीं। पहले उनसे मैं बात कर लूं।

फिर रात हो गई। फिर गृहिणी आई, उसने कहा: अब देर हुई जाती है। अब उसको भी बेचैनी शुरू हो गई। क्या रात में मैं भोजन करूंगा? और जब मैंने कहा कि बस, मैं स्नान कर लूं और आया। तो वृद्ध जो मेरा पैर पकड़े बैठे थे, उन्होंने तत्क्षण मेरा पैर छोड़ दिया और कहा: क्या! क्या आप रात्रि-भोजन करेंगे?

मैंने कहा, भूख न तो दिन जानती है, न रात। और महावीर के जमाने में बिजली नहीं थी। अंधेरे में--नब्बे प्रतिशत लोग अंधेरे में भोजन करते थे। दस प्रतिशत, जिनके पास सुविधा थी, वे भी मिट्टी के दीये जलाते थे। उन दीयों में भी बहुत रोशनी न थी। उलटे उन दीयों के कारण कीट-पतंग आते थे। अब इस एअरकंडीशंड घर में कीड़े-पतंगों के आने का उपाय नहीं। दिन हो कि रात, सूरज सदा बटन से बुझता और जलता है, उगता, डूबता है। क्या इसमें पंचायत की बात है? कोई हर्जा नहीं है। ज्यादा उचित यह है कि आपकी बात पूरी हो जाए। वृद्ध हैं, इतनी दूर चल कर आए हैं।

उन्होंने कहा कि तब फिर मुझे आपको एक बात कहनी पड़ेगी कि मैं कुछ सीखने आया था। लेकिन मैं गलत आदमी के पास आ गया। और बजाय सीखने के मैं आपको इतना सिखाना चाहूंगा--मैं वृद्ध हूं, पचहत्तर वर्ष की मेरी उम्र है--इतनी शिक्षा आपको जरूर दूंगा कि जिसको अभी इतना भी ज्ञान नहीं कि रात्रि-भोजन वर्जित है। उसका सब ज्ञान वथा है।



ऐसे बुद्ध एक तृण मात्र खाकर जीते थे। इतने कमजोर हो गए कि निरंजना नदी को पार करते वक्त, बुद्धगया के पास, पार न कर सके। कमजोरी ऐसी थी। और नदी बड़ी छिछली है। कुछ बड़ी भारी नदी नहीं है, मुश्किल से गले-गले पानी रहा होगा क्योंकि मैं भी उस नदी में जहां से बुद्ध पार किए, कई बार जाकर देख लिया हूं। उसमें टी. बी. का मरीज भी पार होगा। उसमें कैंसर का मरीज भी पार हो सकता है। बुद्ध पार न हो सके। हालत बड़ी कमजोर रही होगी, बड़ी दयनीय रही होगी। और नदी बलवान मालूम पड़ती थी। घाट चढ़ न सकते थे। तो एक वृक्ष की शाखा को पकड़ कर लटक गए।

उस क्षण में उन्हें होश आया कि यह मैं क्या कर रहा हूं। शरीर को नष्ट कर रहा हूं। इससे आत्मा कैसे मिलेगी? आत्मा के मिलने का शरीर को नष्ट करने से कौन सा संबंध है? कौन सा तर्क है, कौन सा गणित? और कमजोर मैं इतना हो गया कि निरंजना--साधारण सी नदी मैं पार नहीं कर पाता, और भवसागर पार करने की सोच रहा हूं। यह नहीं होगा।

और उस क्षण निरंजना नदी में पड़े हुए, वृक्ष की जड़ को पकड़े हुए उन्हें लगा कि सब करना व्यर्थ गया। कोई क्रियाकांड कहीं न ले जा सका। पहले मैंने संसार छोड़ दिया था। अब मैं यह त्याग-तपश्चर्या भी छोड़ देता हूं। उस दिन त्याग पूरा हुआ। उस दिन कुछ भी न बचा पकड़ने को। सब छूट गया। मुट्ठी खुल गई।

बुद्ध किसी तरह बाहर निकले। जिस वृक्ष के नीचे उनको बोध हुआ उस वृक्ष के नीचे बैठे। किसी युवती ने गांव की, जिसका नाम सुजाता है; ऐसा उस वृक्ष के देवता के लिए कुछ चढ़ाती मानी होगी कि कोई उसकी इच्छा पूरी हो जाएगी तो वह खीर से भरा हुआ थाल वृक्ष को चढ़ाएगी। पूर्णिमा की रात थी। उस रात वह खीर चढ़ाने आई। उसकी इच्छा पूरी हो गई थी।

पूर्णिमा की उस निर्जन रात में, निरंजना के एकांत तट पर वृक्ष के नीचे उसने बुद्ध को देखा--दुर्बलकाय, पीत हो गए। समझा--भोली युवती रही होगी, श्रद्धावान--समझा कि वृक्ष का देवता स्वयं खीर लेने को उपस्थित हुआ है। कोई और दिन होता, तो बुद्ध ने खीर न ली होती, क्योंकि वे केवल एक तृण ही लेते थे। कोई और दिन होता तो बुद्ध ने रात में कुछ भी न लिया होता एक तृण भी, क्योंकि रात वे लेते न थे। कोई और दिन होता तो जात-पात पूछी होती कि स्त्री कौन है?





‘जब मैं भूला रे भाई’--कबीर कहते हैं:

...मेरे सतगुरु जुगत लखाई।
किरिया करम आचार मैं छाड़ा, छाड़ा तीरथ नहाना।
सगरी दुनिया भई सयानी, मैं ही इक बौराना।।

और सदगुरु की मान कर हालत ऐसी बनी कि सारी दुनिया तो समझदार मालूम होने लगी, एक मैं ही पागल हो गया।

निरंतर ऐसा होगा। मेरे संन्यासी को पागल होना ही पड़ेगा। जहां जाएगा, लोग देख कर हंसेंगे कि हो गया दिमाग खराब? पड़ गए तुम भी चक्कर में? तुम जैसे बुद्धिमान आदमी?

स्वाभाविक है। यह बचाव है। यह रक्षण है दूसरे व्यक्ति का। यह उसका डिफेंस है। वह यह कह रहा है, हम इतने बुद्धि नहीं। वह यह कह रहा है, हम काफी समझदार हैं। ऐसे जल्दी चक्कर में नहीं पड़ते। सम्मोहित हो गए हो मालूम होता है। हिप्रोटाइज कर लिया किसी ने। हमें कोई सम्मोहित नहीं कर सकता।

वह अपनी रक्षा कर रहा है। वह तुम पर नहीं हंस रहा है। कहीं अपने पर उसे रोना न पड़े, इसलिए वह तुम पर हंस रहा है। उसकी हंसी में वह अपने रोने की संभावना को दबा रहा है। कहीं उसे अपने पर पछताना न पड़े इसलिए वह तुम्हारा व्यंग कर रहा है।

भीतर वह जानता है कि जिंदगी छूटी जा रही है हाथ से। भीतर वह जानता है, क्रियाकांड पूरा कर रहा हूं, आचरण का पूरा पालन कर रहा हूं। कुछ भी नहीं हो रहा। कोई दीया नहीं जल रहा। कोई बांसुरी नहीं बज रही, कोई नृत्य पैदा नहीं हो रहा। वह जानता है कि मंदिर नियम से जाता हूं, पाठ रोज गीता का करता हूं लेकिन गीत पैदा नहीं हो रहा। गीता रोज पढ़ता हूं लेकिन गीत पैदा नहीं हो रहा। वह धुन नहीं आ रही। वह महक--जो नचा दे, उत्सव से भर दे। कि जीवन एक परम आशीष मालूम होने लगे परमात्मा की--एक आशीर्वाद, वह नहीं हो रहा। वह जानता है। उसे पता है।

जब मैं भूला रे भाई, मेरे सतगुरु जुगत लखाई।

वह जुगत क्या है? जिसके कारण--

किरिया करम अचार मैं छाड़ा,...

सब क्रियाएं छोड़ दीं। सब कर्म छोड़ दिए। सब आचरण छोड़ दिए।

...छाड़ा तीरथ नहाना।

और तीर्थ में जाकर नहाना छोड़ दिया। गंगा साधारण नदी हो गई। अब कोई तीर्थ न रहा।

क्रियाकांड का अर्थ है: वे जुगतें, जिनका जीवित हाथ विदा हो गया। वे सब क्रियाकांड हो जाती हैं।

तुम मेरे साथ ध्यान करो, यह एक बात है। तुम मेरे बिना ध्यान करोगे, वो क्रियाकांड हो जाएगा। तुम कर लोगे पूरा-पूरा। ठीक श्वास लोगे, ठीक उछलोगे, कूदोगे, लेकिन सब नाटक होगा। तुम उसके भी अभ्यासी हो जाओगे। वह व्यायाम होगा। थोड़ा बहुत लाभ जो शरीर को हो सकता है होगा, लेकिन तुम जाग न सकोगे।

किरिया करम अचार मैं छाड़ा,...

और सब आचरण छोड़ दिया जो कि साधु को करना चाहिए। कि रात्रि भोजन न करे कि पानी छान कर पीए कि ये न खाए कि वह न पीए, ये कपड़े पहने, वे न पहने कि नग्न रहे, कपड़ा न पहने कि शरीर पर भभूत लगाए कि धूप में बैठे कि आग जला कर गर्मी में और शरीर को तपाए, और गलाए, और जलाए कि कांटे बिछा कर लेटे। नहीं।

किरिया करम आचार मैं छाड़ा, छाड़ा तीरथ नहाना।

सब छोड़ दिया। छूट ही जाता है। छोड़ना पड़ता नहीं।

जब सतगुरु मिल जाए, सब छूट जाता है। इसलिए सभी धर्म सतगुरुओं के विपरीत होंगे। क्योंकि सभी धर्म पुराने क्रियाकांड, पुरानी विधि, पुराना तीर्थ, पुराना मंदिर, पूजा पाठ--उस पर आरूढ़ हैं। जब भी कोई सतगुरु पैदा होगा तत्क्षण सारे धर्म उसके विपरीत हो जाएंगे।



जब मैं भूला रे भाई, मेरे सतगुरु जुगत लखाई।

कबीर कहते हैं: जब मैं भूल गया... विस्मरण अज्ञान है। इसलिए तुम ज्ञान से अज्ञान को न मिटा सकोगे; स्मरण से मिटा सकोगे। इसे ठीक से समझ लो। विस्मरण अज्ञान है। तुम भूल गए हो कि तुम कौन हो? इसकी पुनर्याद, पुनर्स्मरण चाहिए। ज्ञान से यह न होगा।

क्योंकि ऐसा नहीं है कि तुम्हें कुछ जानकारी की कमी है, तो जानकारी बढ़ जाएगी, तो ज्ञान हो जाएगा। तुम्हारे मन में अभी हजार जानकारियां हैं, दस हजार हो जाएंगी। इससे तुम्हारा अज्ञान न टूटेगा। तुम महापंडित हो जाओगे, लेकिन तुम्हारी मूढ़ता बरकरार रहेगी। क्योंकि मूढ़ता का पांडित्य के होने से और टूटने का कोई संबंध नहीं है। मूढ़ता है भूलना; विस्मरण। इसलिए स्मरण से तुम्हें अपनी याद आ जाएगी, मैं कौन हूं।

इसलिए कबीर दो शब्दों में समझे जा सकते हैं--विस्मरण और स्मरण; जिसको कबीर ने सुमिरन कहा है, सुरति कहा है। 'सुरति' संस्कृत के 'स्मृति' शब्द का अपभ्रंश है। स्मृति आ जाए, सुरति आ जाए, सुमिरन आ जाए। लेकिन लोग बड़े अजीब हैं। कबीर के मानने वालों को भी मैं जानता हूं। वे माला फेरते हैं। उनसे पूछो क्या कर रहे हो? वे कहते हैं सुमिरन कर रहे हैं। सुमिरन को उन्होंने जाप बना लिया।

सुमिरन का अर्थ है, स्मरण, जिसको गुरजिएफ ने सेल्फ-रिमेंबरिंग कहा है--आत्म-स्मृति। जिसको बुद्ध ने सम्यक-स्मृति कहा है--राइट माइंडफुलनेस। जिसको महावीर ने विवेक कहा है--याद।

लेकिन कैसे तुम्हें याद आएगी? तुम तो भूल गए हो। तुम्हें कोई याद दिलाए, तो ही आएगी। तुम्हें खुद कैसे याद आएगी?

रात तुम सोते हो। सुबह पांच बजे उठना है, ट्रेन पकड़नी है, क्या करते हो? कोई जुगत चाहिए। अलार्म भर देते हो। अलार्म जुगत। तुम न जाग सकोगे पांच बजे। कोई तुम्हें जगाए। घड़ी भी जगा सकती है। यंत्र है सिर्फ। लेकिन तुम स्वयं न जाग सकोगे। या किसी को कह देते हो पड़ोस में कि जगा देना।

जब मैं भूला रे भाई, मेरे सतगुरु जुगत लखाई।
किरिया करम अचार मैं छाड़ा, छाड़ा तीरथ नहाना।
सगरी दुनिया भई सयानी, मैं ही इक बौराना।।
जब मैं भूला रे भाई,...

क्या भूल है? क्या तुम भूल गए हो? तुम स्वयं को भूल गए हो, सब तुम्हें याद है। वेद कंठस्थ, सिद्धांत, शास्त्र याद। सिर्फ एक को तुम भूल गए हो, वह तुम स्वयं हो। और उसे जाने बिना सब ज्ञान व्यर्थ है। और जिसने उस एक को जान लिया, उसने सब जान लिया। उस एक के जानने में जान लिए जाते हैं सब वेद, कुरान, बाइबिल। उस एक को चूकने में सब चूक जाता है।

क्योंकि वही एक तुम्हारे भीतर चैतन्य का स्रोत है। उस एक से ही तुम परमात्मा से जुड़े हो। वह एक तुम्हारे भीतर आया हुआ परमात्मा है। जैसे तुम्हारी खिड़की में से आ गया आकाश तुम्हारे घर को भरे; ऐसा तुम्हारे उस एक में से आ गया आकाश--परमात्मा--तुमको भरे। उस एक को भर तुम भूल गए हो।

उसकी तरफ पीठ, सारे संसार की तरफ आंख है। भागे फिरते हो, ज्ञान का संग्रह करते चले जाते हो। धन का संग्रह करते चले जाते हो। एक बात भूल ही जाते हो वह कौन है, जिसके लिए तुम संग्रह कर रहे हो? वह कौन है, जो संग्रह कर रहा है? वह कौन है जो शास्त्र पढ़ रहा है? शास्त्र तो याद रह जाता है, वह कौन है, जो शास्त्र पढ़ रहा है? वह कौन है, जो सबके प्रति साक्षी है? वह कौन है चैतन्य का स्रोत तुम्हारे भीतर?

जब मैं भूला रे भाई, मेरे सतगुरु जुगत लखाई।

कबीर कहते हैं: जब मैं भूल गया... विस्मरण अज्ञान है। इसलिए तुम ज्ञान से अज्ञान को न मिटा सकोगे; स्मरण से मिटा सकोगे। इसे ठीक से समझ लो। विस्मरण अज्ञान है। तुम भूल गए हो कि तुम कौन हो? इसकी पुनर्याद, पुनर्स्मरण चाहिए। ज्ञान से यह न होगा।

क्योंकि ऐसा नहीं है कि तुम्हें कुछ जानकारी की कमी है, तो जानकारी बढ़ जाएगी, तो ज्ञान हो जाएगा। तुम्हारे मन में अभी हजार जानकारियां हैं, दस हजार हो जाएंगी। इससे तुम्हारा अज्ञान न टूटेगा। तुम महापंडित हो जाओगे, लेकिन तुम्हारी मूढ़ता बरकरार रहेगी। क्योंकि

ज्ञान का संग्रह करने के लिए तो तुमने आंखें खोल रखी हैं, परन्तु तुम



जब मैं भूला रे भाई
मेरे सतगुरु जुगत लखाई
किरिया-करम अधार में छाँड़ा छाँड़ा तीरथ का नहाना
सगरी दुनिया भई सयानी मैं ही इक बीराना
ना मैं जानूँ सेवा-बंदगी ना मैं घंट बजाई
ना मैं मूरत घरी सिंघासन ना मैं पुहुप चढ़ाई
ना हरि रीझै जपतप कीन्हे ना काया के जारे
ना हरि रीझै धोती छाँड़े ना पांचौ के मारे
दया राखि धरम को पालै जग सो रहे उदासी
अपना सा जिब सबको जानै ताहि मिलै अनिवासी
सहै कुशब्द बाद को ग्यागै छाँड़ै गर्व गुमाना
सत नाम ताही को मिलिहै कहै 'कबीर' सुजाना

मेरे भाई, मुझ से जब भूल हुई तो मेरे सतगुरु ने मुझे मार्ग दिखाया
मैं ने पूजा-पाठ सब छोड़ दिया, तीर्थों में जा कर नहाना छोड़ दिया.
सारी दुनिया सयानी हो गई, एक मैं ही दीवाना ठहराया गया. न तो
मैं सेवा-उपासना जानता हूँ, घंटा बजाता हूँ, न मैं सिंहासन पर मूर्ति
की स्थापना करता हूँ और न उस पर फूल चढ़ाता हूँ. जप-तप करने
से हरि नहीं रीझता और न शरीर को कष्ट देने से प्रसन्न होता है. नंगे
रहने से और पाँचों इंद्रियों का शरीर को कष्ट देने से प्रसन्न होता है.
जो हृदय में दया रख कर धर्म का पालन करता है, जो संसार के
माय-मोह से उदासीन रहता है और हर जीव को अपनी तरह मानता
है, केवल उसी को भगवान मिलता है. सुजान 'कबीर' कहते है कि
सत्य-नाम उसी को मिलता है जो दूसरे को कड़वी बात भी बर्दाश्त
कर लेता है, झगड़े से बचता है और घमंड से दूर रहता है.

(अनुवाद: सरदार जाफ़री)



आयरिश कवि मुनरो ने लिखा है कि जब भी कोई मरता है, तो मैं ही मरता हूँ। और इसलिए कभी बाहर पूछने को मत भेजो कि किसकी अरथी गुजरती है; मेरी ही अरथी गुजरती है। बुद्ध को मरा हुआ आदमी देख कर लगा कि मैं मर गया; अगर एक आदमी मर गया, तो मैं मर गया। मौत निश्चित है; तो अब जीवन बेकार हो गया। जितनी सचेतन आत्मा होगी, उतनी जल्दी मौत की छाया पकड़ेगी। आपको बूढ़े होने में अस्सी साल लगते हैं; बुद्ध बीस साल में बूढ़े हो गए।

इससे आप यह मत समझना कि बूढ़े ही आदमी...। भारत में यह धारणा ही रही है सदा से कि वृद्ध को ही संन्यास लेना चाहिए। मेरे पास बहुत लोग आते हैं और वे कहते हैं कि आपको वृद्ध को ही संन्यास देना चाहिए, सत्तर-पचहत्तर साल पार कर जाए! मैं उनसे कहता हूँ, तुम्हें पता नहीं कि आदमी कब वृद्ध हो जाए। पचहत्तर साल में भी कई लोग हैं, जो वृद्ध नहीं होते। कई क्या, बहुत लोग नहीं होते। आसान तो नहीं है वृद्ध हो जाना। बूढ़ा हो जाना बहुत आसान है; वृद्ध हो जाना उतना आसान नहीं। क्योंकि बूढ़ा होना तो सिर्फ उम्र से हो जाता है, वृद्ध होना तो बुद्धि की बात है। कोई आदमी बहुत पहले वृद्ध हो जाता है।

बुद्ध बीस साल में वृद्ध हो गए। जो अस्सी साल के बूढ़े की भी बुद्धि में नहीं आता है, वह बीस साल के बुद्ध की बुद्धि में आ गया, वे वृद्ध हो गए। उन्हें दिखाई पड़ गया कि मौत सुनिश्चित है। अब कब होगी, यह बात गौण है। यह नासमझों पर छोड़ा जा सकता है कि वे तय करें कि कब होगी। मेरे लिए होगी, तो कब होगी, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। अब मुझे यही जानना जरूरी हो गया कि क्या मेरे भीतर ऐसा कुछ है, जो अमृत है! अगर नहीं है, तो सब व्यर्थ है। अगर है, तो उसी को खोजने में सार्थकता है।

लाओत्से कहता है, ताओ में जो प्रविष्ट हो जाता है, वह अविनाशी है। वह अमृत हो गया। उसकी फिर कोई मृत्यु नहीं है। और जो अविनाशी है, वह समग्र दुखों के पार हो जाता है। क्योंकि सारे दुख विनाश के दुख हैं। मेरा विनाशी होना ही मेरे दुख का कारण है। अविनाशी हो जाना ही मेरे आनंद का सूत्रपात है।



Video



2 DAYS WORKSHOP

4999/FREE ★★★★★

Learn more



39

2 shares • 1.2K views



Like



Comment



Share



निर्मल • Follow

19 Sep • 🌐



अप्प दीपो भव



56K

353 comments • 1.9K shares • 379K views



Like



Comment



Give



Share



निर्मल • Follow

15 Sep • 🌐



भगवान बुद्ध के अनमोल वचन



इस जगत में सदा ऐसे रहो, जैसे तुम अकेले हो !.....

न कोई संगी है, न कोई साथी भीड़ में भी रहो, तो अकेले रहो। परिवार में भी रहो, तो अकेले रहो।

इस बात को जानते ही रहो भीतर,

एक क्षण को यह सूत्र हाथ से मत जाने देना।

*एक क्षण को भी यह भ्रान्ति पैदा मत होने देना कि तुम अकेले नहीं हो, कि कोई तुम्हारे साथ है।

यहां न कोई साथ है, न कोई साथ हो सकता है।

यहां सब अकेले हैं। अकेलापन आत्यंतिक है।

इसे बदला नहीं जा सकता। थोड़ी—बहुत देर को भुलाया जा सकता है, बदला नहीं जा सकता।

और सब भुलावे एक तरह के मादक द्रव्य हैं।

एक प्रकार के नशे हैं।

कैसे तुम भुलाते हो, इससे फर्क नहीं पड़ता।

कोई शराब पीकर भुलाता है।

कोई धन की दौड़ में पड़कर भुलाता है।

कोई पद के लिए दीवाना होकर भुलाता है।

कैसे तुम भुलाते हो, इससे फर्क नहीं पड़ता।

लेकिन थोड़ी देर को भुला सकते हो। बस।

और जब भी नशा उतरेगा, अचानक पाओगे अकेले हो।



संन्यासी वही है, जो जानता है कि मैं अकेला हूं और भुलाता नहीं अपने अकेलेपन को।

भुलाना तो दूर, अपने अकेलेपन में रस लेता है। और प्रतीक्षा करता है कि कब मौका मिल जाए कि थोड़ी देर अपने अकेलेपन का स्वाद लूं।

थोड़ी देर आंख बंद करके अपने में डूब जाऊं, अकेला रह जाऊं। वही मेरी नियति है। वही मेरा स्वभाव है। उसी स्वभाव से मुझे पहचान बनानी है।

ओशो

एस धम्मो सनंतनो.....



""^इस जगत में ऐसे रहो जैसे तुम अकेले हो^""

ऐसे रहो, जैसे तुम अकेले हो कहीं भी रहो—ऐसे रहो, जैसे तुम अकेले हो। न कोई संगी है, न कोई साथी। भीड़ में भी रहो, तो अकेले रहो। परिवार में भी रहो, तो अकेले रहो। इस बात को जानते ही रहो भीतर, एक क्षण को यह सूत्र हाथ से मत जाने देना। एक क्षण को भी यह भांति पैदा मत होने देना कि तुम अकेले नहीं हो, कि कोई तुम्हारे साथ है।

यहां न कोई साथ है; न कोई साथ हो सकता है। यहां सब अकेले हैं। अकेलापन आत्यंतिक है। इसे बदला नहीं जा सकता। थोड़ी—बहुत देर को भुलाया जा सकता है, बदला नहीं जा सकता। और सब भुलावे एक तरह के मादक द्रव्य हैं। एक प्रकार के नशे हैं। कैसे तुम भुलाते हो, इससे फर्क नहीं पड़ता। कोई शराब पीकर भुलाता है। कोई धन की दौड़ में पड़कर भुलाता है। कोई पद के लिए दीवाना होकर भुलाता है। कैसे तुम भुलाते हो, इससे फर्क नहीं पड़ता। लेकिन थोड़ी देर को भुला सकते हो। बस। और जब भी नशा उतरेगा, अचानक पाओगे अकेले हो।

संन्यासी वही है, जो जानता है कि मैं अकेला हूं और भुलाता नहीं अपने अकेलेपन को। भुलाना तो दूर, अपने अकेलेपन में रस लेता है। और प्रतीक्षा करता है कि कब मौका मिल जाए कि थोड़ी देर अपने अकेलेपन का स्वाद लूं। थोड़ी देर आंख बंद करके अपने में डूब जाऊं, अकेला रह जाऊं। वही मेरी नियति है। वही मेरा स्वभाव है। उसी स्वभाव से मुझे पहचान बनानी है।

दूसरों से पहचान बनाने से कुछ भी न होगा; अपने से पहचान बनानी है। दूसरों को जानने से क्या होगा? अपने को ही न जाना और सबको जान लिया, इस जानने का कोई मूल्य नहीं है। मूल में तो अज्ञान रह गया।
ओशो

एस धम्मो सनंतनो



""^इस जगत में ऐसे रहो जैसे तुम अकेले हो^""

ऐसे रहो, जैसे तुम अकेले हो कहीं भी रहो—ऐसे रहो, जैसे तुम अकेले हो। न कोई संगी है, न कोई साथी। भीड़ में भी रहो, तो अकेले रहो। परिवार में भी रहो, तो अकेले रहो। इस बात को जानते ही रहो भीतर, एक क्षण को यह सूत्र हाथ से मत जाने देना। एक क्षण को भी यह भांति पैदा मत होने देना कि तुम अकेले नहीं हो, कि कोई तुम्हारे साथ है।

यहां न कोई साथ है; न कोई साथ हो सकता है। यहां सब अकेले हैं। अकेलापन आत्यंतिक है। इसे बदला नहीं जा सकता। थोड़ी—बहुत देर को भुलाया जा सकता है, बदला नहीं जा सकता। और सब भुलावे एक तरह के मादक द्रव्य हैं। एक प्रकार के नशे हैं। कैसे तुम भुलाते हो, इससे फर्क नहीं पड़ता। कोई शराब पीकर भुलाता है। कोई धन की दौड़ में पड़कर भुलाता है। कोई पद के लिए दीवाना होकर भुलाता है। कैसे तुम भुलाते हो, इससे फर्क नहीं पड़ता। लेकिन थोड़ी देर को भुला सकते हो। बस। और जब भी नशा उतरेगा, अचानक पाओगे अकेले हो।

संन्यासी वही है, जो जानता है कि मैं अकेला हूं और भुलाता नहीं अपने अकेलेपन को। भुलाना तो दूर, अपने अकेलेपन में रस लेता है। और प्रतीक्षा करता है कि कब मौका मिल जाए कि थोड़ी देर अपने अकेलेपन का स्वाद लूं। थोड़ी देर आंख बंद करके अपने में डूब जाऊं, अकेला रह जाऊं। वही मेरी नियति है। वही मेरा स्वभाव है। उसी स्वभाव से मुझे पहचान बनानी है।

दूसरों से पहचान बनाने से कुछ भी न होगा; अपने से पहचान बनानी है। दूसरों को जानने से क्या होगा? अपने को ही न जाना और सबको जान लिया, इस जानने का कोई मूल्य नहीं है। मूल में तो अज्ञान रह गया।
ओशो

एस धम्मो सनंतनो



While it's true that Siddhartha Gautama (who later became the Buddha) was born into a Hindu family, it's important to note that the Buddha eventually rejected many aspects of Hindu philosophy, such as the caste system and certain ritualistic practices.

There's no historical evidence to suggest that Buddha visited the Kashi Vishwanath Temple or that he exhibited arrogance. In fact, Buddhist teachings emphasize humility, compassion, and the path to enlightenment through understanding the nature of suffering. The Buddha's life is often characterized by his journey to attain enlightenment and his subsequent teachings to help others achieve liberation from suffering.



मृत्यु को ठीक से समझो। क्योंकि उसके आधार पर ही जीवन में क्रांति होगी। तुम्हें अगर पता चल जाए कि आज सांझ ही मर जाना है, तो क्या तुम सोचते हो, तुम्हारे दिन का व्यवहार वही रहेगा जो इस पता न चलने पर रहता? क्या तुम उसी भांति दुकान जाओगे? उसी भांति ग्राहकों का शोषण करोगे? क्या उसी भांति व्यवहार करोगे, जैसा कल किया था? क्या पैसे पर तुम्हारी पकड़ वैसे ही होगी, जैसे एक क्षण पहले तक थी? क्या मन में वासना उठेगी, काम जगेगा? सुंदर स्त्रियां आकर्षित करेंगी? राह से गुजरती कार मोहित करेगी? किसी का भवन देख कर ईर्ष्या होगी? नहीं, सब बदल जाएगा।

अगर मौत का पता चल जाए कि आज ही सांझ हो जाने वाली है, तुम्हारे जीवन का सारा अर्थ, तुम्हारे जीवन का सारा प्रयोजन, तुम्हारे जीवन का सारा ढंग और शैली बदल जाएगी। मौत का जरा सा भी स्मरण तुम्हें वही न रहने देगा जो तुम हो।

और तुम जो हो, बिलकुल गलत हो। क्योंकि सिवाय दुख के और तुम्हारे होने से कुछ भी फल नहीं आता। फल लगते हैं निश्चित; केवल दुख के लगते हैं। फल लगते हैं निश्चित, तुम्हारी आशाओं के अनुकूल नहीं, न तुम्हारे स्वप्नों के अनुसार। फल लगते हैं तुम्हारी आशाओं के विपरीत। तुम्हारे स्वप्नों से बिलकुल उलटे।

जीवन के अंत में सिर्फ राख छूट जाती है हाथ में। और एक विषाद और एक गहन पीड़ा कि एक और अवसर खो गया। इसीलिए तो मरते वक्त लोग इतने दुखी और पीड़ित मरते हैं। अन्यथा अगर जीवन की चरितार्थता उपलब्ध हुई हो और जीवन की धन्यता को जाना हो और जीवन एक गीत बन गया हो, जिसे कबीर कहते हैं, सुमिरन बन गया हो; एक याददाश्त कि मैं कौन हूं, तो मृत्यु तो एक महोत्सव हो जाएगी। क्योंकि वह तो सारे जीवन की परिपूर्णता है। वह तो सारे जीवन का निचोड़ है, सार है। तब मृत्यु मृत्यु न होगी, महाजीवन में प्रवेश हो जाएगी।

जो जान कर जीता है उसकी मृत्यु समाधि हो जाती है। जो अनजान जीता है, उसका जीवन भी मृत्युवत है। जो होश से जीता है वह मरता ही नहीं। जो बेहोशी में जीता है वह कभी जीता ही नहीं। उसका जीवन एक प्रवंचना है।



1

2

3

4

5

>

»

पीछे लागा जाइ था, लोक वेद के साथि।
 आगे थें सदुरु मिला, दीपक दिया हाथि॥
 भगति भजन हरिनाम है, दूजा दुख अपार।
 मनसा वाचा कर्मना, कबीर सुमरिन सार॥
 मेरा मन सुमरे राम कूं, मेरा मन राम ही आहि।
 अब मन राम ही व्है रह्या, सीस नवावें काहि॥
 सब रग तंत रबाब तन, विरह बजावे नित्त।
 और न कोई सुन सके, कै साई के चित्त॥
 इस तन का दीवा करूं, बाती मेल्युं जीव।
 लोही सींचौ तेल ज्युं, कब मुख देख्यौ पीव॥

जीवन बीतता है बूंद-बूंद। रिक्त होता है रोज। हाथ से जैसे रेत सरकती जाए वैसे पैर के नीचे की भूमि सरकती जाती है। दिखाई नहीं पड़ता क्योंकि देखने के लिए बड़ी सजगता चाहिए। और इतने धीमे-धीमे बीतता है जीवन कि पता नहीं चलता कि हर घड़ी मौत निकट आ रही है। जब भी कोई मरता है तो मन सोचता है, मौत सदा दूसरे की होती है। मैं तो कभी मरता नहीं; कोई और मरता है। पड़ोसी मरता है। लेकिन हर मौत तुम्हारी मौत की खबर लाती है। जो पड़ोसी को हुआ, वही तुम्हें भी हो जाने वाला है।

आखिरी क्षण तक भी होश नहीं आता। गफलत में, बेहोशी में; अपने ही हाथ से आदमी अपने को समाप्त कर लेता है। और जो भी तुम कर रहे हो उसका कोई भी आत्यंतिक मूल्य नहीं है। कितना ही धन कमाओ, कितनी ही पद-प्रतिष्ठा मिले, मौत सभी कुछ साफ कर देती है। मौत सब मिटा देती है। तुम्हारे बनाए सब घर, ताश के पत्तों के घर सिद्ध होते हैं। और तुम्हारे द्वारा तैराई गई सभी नावें, कागज की नावें सिद्ध होती हैं। सब डूब जाता है।

जिसे यह होश आना शुरू हो गया कि मौत है, उसी के जीवन में धर्म की किरण उतरती है। मौत का स्मरण धर्म की प्राथमिक भूमिका है। अगर मृत्यु न होती तो संसार में धर्म भी न होता। मृत्यु है, इसलिए धर्म की संभावना है। और जब तक तम मृत्यु को द्वालाओगे तब तक तम्हारे



प्रज्ञा; वस हा दिखाइ पड़ता ह। क जा ज्यात मुझ म जल रहा ह, वहा सब में जल रही है।

अहिंसा अपने आप पैदा हो जाती है। चींटी में भी वही है। हाथी में भी वही है। वृक्ष में भी वही है। छोटे में, बड़े में, कण में, विराट में, सब में वही है। और वह मैं हूं। तत्वमसि श्वेतकेतु। वह मैं ही हूं। वह श्वेतकेतु तुम्हीं हो। एक ही का विस्तार है अनेक में।

सहे कुसबद बाद को त्यागे छाड़े गरब गुमाना।

तब सब गर्व और गुमान, सब अहंकार और अस्मिता छूट जाती है। तब सब कुशब्द, कोई गाली दे रहा है, अपमान कर रहा है, कुछ सालता नहीं। जो उदास हो गया संसार के प्रति। कोई गाली दे तो बराबर, कोई स्तुति करे तो बराबर।

सहे कुसबद बाद को त्यागे...

और अब उसका कोई वाद नहीं है।

ईश्वरवादी का कोई वाद नहीं है। ईश्वर को जानने वाले का कोई सिद्धांत नहीं है। सिद्ध का कोई सिद्धांत नहीं है, वह स्वयं ईश्वर है। वह समझाता नहीं सत्य के संबंध में; वह सत्य ही समझाता है। वह बोलता नहीं सत्य के संबंध में, सत्य ही उससे बोलता है।

सहे कुसबद बाद को त्यागे छाड़े गरब गुमाना।

सत्य नाम ताहि को मिलि है कहै कबीर दीवाना।।

पागल कबीर कहता है कि जिसने ऐसा कर लिया, मुर्दा क्रियाकांडों को छोड़ दिया, जीवित अंतर्धर्म में जागा, वासना की ऊर्जा को करुणा बना लिया, कोई वाद, कोई शास्त्र जिसमें न रहा, जो शास्त्र-शून्य और वाद-शून्य हो गया। और जिसने सबके भीतर एक ही अखंड ज्योति को जलता देखा, वही उस अविनाशी को पा सकता है। वही पाता है।

कहै कबीर दीवाना।

आज इतना ही।





Dhammapada Summary



RA

What is dhammapad



The Dhammapada is a collection of sayings of the Buddha in verse form. It is one of the most widely read and studied texts in the Buddhist tradition, containing teachings on ethics, mental training, and wisdom.



RA

What is the religious book of Jainism

< 2 / 2 >



The primary religious text of Jainism is the "Agamas." These scriptures contain the teachings of Lord Mahavira, the 24th Tirthankara and the central figure in Jainism. The Agamas cover various aspects of Jain philosophy, ethics, and rituals.



Send a message



ChatGPT can make mistakes. Consider checking important information.



Which is the best book of Jainism



There isn't a single "best" book on Jainism, as it depends on what aspect of Jainism you're interested in. However, one foundational text is the "Tattvartha Sutra," also known as the "Tattvarthadhigama Sutra." It is a key philosophical work in Jainism, providing an overview of the Jain teachings on reality, ethics, and the path to liberation. Other important texts include the "Acharya Kundkund's Samayasara" and the "Bhagavati Sutra." It might be beneficial to explore multiple texts and commentaries to gain a comprehensive understanding of Jain philosophy.





भगवान की प्राप्ति में सबसे बड़ी बाधा भगवान से कुछ माँग लेना है। यह जानते हुए भी, कि जो आवश्यक है वह तो बिना माँगे ही मिल जाता है, और अनावश्यक माँगने पर भी नहीं मिलता, तुम माँगने से नहीं चूकते। देखो! तुम कुछ न माँगो तो जगत भी जगदीश है, माँगो तो जगदीश भी जगत बन जाता है। भगवान से कुछ माँगते ही, संबंध भगवान से न रह कर, वस्तु से बन जाता है।

मौत और मोक्ष में माँग का ही अंतर है, माँग रहते प्राण चला जाए तो मौत, और प्राण के रहते माँग चली जाए तो मोक्ष। माँग हो तो भगवान के लिए तड़प कैसे हो? जैसे प्राण विहीन तन हिल नहीं पाता, तड़प विहीन मन साधन नहीं कर पाता।

विचार करो कि माँगने का कुछ लाभ भी है? जैसे लोटे का पानी बाहर किया जा सकता है, लोटे का आकाश नहीं। लक्ष्मी का तो क्षणिक आनन्द है, लक्ष्मीपति का आनन्द ही सतत है।

जो कहता है कि मुझे और कुछ नहीं चाहिए, बस आपका आशीर्वाद मिल जाए, उसने एक नई माँग पकड़ ली। आशीर्वाद का फल इच्छाओं की पूर्ति नहीं, इच्छाओं की निवृत्ति है। फिर आशीर्वाद भी कोई माँगने की वस्तु नहीं। आशीर्वाद तो आपके भाव और सेवा के फलस्वरूप स्वाभाविक ही मिलता है। आज सेवा कहाँ, सेवा तो शब्द मात्र बचा है, पर जो साधन तक नहीं करता, पर संत से आशीर्वाद माँगता है, वह कहता है, कि साधन आप करो और आशीर्वाद हमें दे दो। यदि तुम स्वयं साधन करो तो तुम्हारे लिए स्वयं तुम्हारा ही आशीर्वाद निर्मित हो जाए। और अब भी मन न मानता हो तो समझो कि आप भगवान की जाति के हैं, मन जगत की जाति का है। मन जगत में जाए तो भी तुम इसके पीछे न जाओ, बल्कि इसे पीछे खींचने का प्रयास करो।

तीन बातें हैं। कुछ भी न माँगते हुए, व्यवहार से बचा समय भजन में लगाना बहुत अच्छा है। व्यवहार करते हुए भजन में मन लगाए रखना और भी अच्छा है। पर भजन करते हुए ही सब व्यवहार बढ़िया से बढ़िया निभाते चलना बहुत बहुत अच्छा है। पहला ठीक है, नियम पालन हो जाता है। दूसरे में व्यवहार मुख्य है, भजन गौण है। पर तीसरे में तो व्यवहार ही गौण है, भजन मुख्य है। तब तो व्यवहार भी भगवान के निमित्त होने लगता है।

लोकेशानन्द कहता है कि किसी माँग के चलते, भजन छोड़ कर स्वेच्छाचारी हो जाना ठीक नहीं। यह तो राक्षसों का लक्षण है। यही



आशीर्वाद का फल
इच्छाओं की पूर्ति नहीं,
इच्छाओं की निवृत्ति है।

-लोकेशानन्द

418 माँग

मन मक्का दिल द्वारिका ,
काया काशी जान ।
दस द्वारे का देहरा ,
तामे जोति पिछान ॥

यह मन ही पवित्र मक्का-मदीना है
और हृदय द्वारिका नगरी ।
इसी तरह यह काया (शरीर) काशी है ।
दस द्वारों वाला यह मानव शरीर ही
वास्तविक मंदिर है ।
इस शरीर में ही प्रकाशरूप आत्मा
का निवास है ,
वही ईश्वर है ।
ईश्वर को ढूढ़ने की
आवश्यकता नहीं है ।
जो कुछ है यह शरीर ही है ।



-- संत कबीरदास !



क्रोध भी छठवें मन में ही उठता है, फिर आँख तक लाली फैल जाती है।

बाहर से जो भी आता है वह पाँचो मन से हो कर छठवें में इकट्ठा होता है।

और भीतर से जो भी आता है वह छठवें से उठता है और पाँचो मनो से बाहर जाता है।

तो यह पाँच मन दोहरे काम करते हैं , बाहर से भीतर लाना और भीतर से बाहर भेजना और छठवाँ मन इनका गवर्नर , इनका अनुशासक है।

अगर तुम छठवें का विश्लेषण करो तो सातवें का जन्म होता है— साक्षी। तब क्रोध उठा भीतर, और तुम देख रहे हो।

तो जो देख रहा है, वह सातवाँ है। यह सातवाँ सर्वाधिक मूल्यवान है।

इसी सातवें को पतंजलि ने ध्यान कहा है, बुद्ध ने सम्यक् स्मृति, और कृष्णामूर्ति ने अवेर्नेस कहा है। क्योंकि सातवें के इस तरफ़ छः मनो का जाल है , जो की संसार है , और सातवें के उस तरफ़ आठवाँ है जो की निर्वाण है।

और यह आठों ही चित की दशाएँ हैं। यह सातवें को जिसने समझ लिया उसने सारी विधियों का राज़ समझ लिया। और सारी विधियों के पार उठ गया।

लेकिन जब तक तुम सातवें मन तक ना पहुँचो, विधियाँ उपयोगी हैं।

अभी कच्चे मन में कह दूँ कि विधियों की ज़रूरत नहीं तो शायद हानि हो; तुम कभी पहुँच ही ना पाओ।

ओशो

का सोवै दिन रैन #08





जब तुम शांत बैठ कर इस छठवें मन को देखते हो, उसकी भाव भंगिमाओं को, तरंगों को, विचारों, भावनाओं को, स्मृतियाँ, कल्पनाओं को, सपनों को- जब तुम छठवें मन को उघाड़ते हो पूरा, तो तुम्हें सातवें का पता चलना धीरे धीरे शुरू होता है।

सातवाँ है साक्षी जो छठवें को भी देख रहा है। जब तुम्हारे भीतर क्रोध उठा वह छठवें में उठा। क्रोध आँख में नहीं उठता, खयाल रखना और ना ही कान में।

वासना भी कामेंद्रिय में नहीं उठती। उठती तो छठवें में है- फिर कामेंद्रिय में सक्रिय होती है।

क्रोध भी छठवें मन में ही उठता है, फिर आँख तक लाली फैल जाती है।

बाहर से जो भी आता है वह पाँचो मन से हो कर छठवें में इकट्ठा होता है।

और भीतर से जो भी आता है वह छठवें से उठता है और पाँचो मनो से बाहर जाता है।

तो यह पाँच मन दोहरे काम करते हैं, बाहर से भीतर लाना और भीतर से बाहर भेजना और छठवाँ मन इनका गवर्नर, इनका अनुशासक है।

अगर तुम छठवें का विश्लेषण करो तो सातवें का जन्म होता है— साक्षी। तब क्रोध उठा भीतर, और तुम देख रहे हो।

तो जो देख रहा है, वह सातवाँ है। यह सातवाँ सर्वाधिक मूल्यवान है।

इसी सातवें को पतंजलि ने ध्यान कहा है, बुद्ध ने सम्यक् स्मृति, और कृष्णामूर्ति ने अवेर्नेस कहा है। क्योंकि सातवें के इस तरफ़ छः मनो का जाल है, जो की संसार है, और सातवें के उस तरफ़ आठवाँ है जो की निर्वाण है।

और यह आठों ही चित की दशाएँ हैं। यह सातवें को जिसने समझ लिया

**Osho Human Being To Be.In.God**

1d · 🌐

""^चित की आठ अवस्थाएँ हैं और सबका अपना मन^""

बुद्ध ने कहा: एक एक इंद्रिय एक एक मन है।

पाँच चित की अवस्थाएँ, पाँच इंद्रियों से बंधी हैं।

तुम्हारी जीभ का एक मन है, लेकिन वह मन केवल स्वाद की भाषा समझता है।

तुम्हारे कान का भी एक मन है, वह केवल ध्वनि समझता है। कान भी चुनाव करता है। सिर्फ़ दो प्रतिशत ध्वनि भीतर लेता है, अटठानबे प्रतिशत बाहर छोड़ देता है। नहीं तो तुम विक्षिप्त हो जाओ।

तुम्हारी आँख भी चुनाव करती है और वही देखती है जिसमें कोई प्रयोजन है। और इसीलिये जवान और बूढ़े आदमी में बातचीत मुश्किल हो जाती है। दोनों की आँखों ने अलग अलग मन विकसित किये हैं।

पाँच इंद्रियों के पास पाँच मन हैं।

और इन पाँचों को जोड़ने वाला, संगृहीत रखने वाला - अन्यथा यह बिखर जायें- छठवाँ मन है तुम्हारे भीतर।

जिसको तुम मन कहते हो वह छठवाँ मन है। यह मन की छः अवस्थाएँ बुद्ध ने कहीं।

पाँचवे के पार उठ कर, छठवें को जानना है। यही ध्यान की प्रक्रिया है। जिसको पतंजलि ने धारणा कहा है।

धारणा शुरू होती है - इंद्रियों से मुक्त होने से छठवें को पहचानना है, जो सबका नियंता है।

जब तुम शांत बैठ कर इस छठवें मन को देखते हो, उसकी भाव भंगिमाओं को, तरंगों को, विचारों, भावनाओं को, स्मृतियाँ, कल्पनाओं को, सपनों को- जब तुम छठवें मन को उघाड़ते हो पूरा, तो तुम्हें सातवें



तपश्चर्या :

Oshoravi



मेरी दृष्टि में स्वयं की जो स्थिति है , उसको देखने से बड़ी और कोई तपश्चर्या नहीं है ।

धूप में खड़ा होना बहुत आसान है , भूखा बैठ जाना भी बहुत आसान है । नग्न खड़े हो जाना भी बहुत आसान है । ये सब थोड़ी सी बातें हैं , जो कोई भी कर सकता है । इसमें तपश्चर्या का कोई भी संबंध नहीं है ।

असली तपश्चर्या :- मैं जैसा हूं , उसे जानने से शुरू होती है , क्योंकि असली कष्ट वहीं से शुरू होते हैं , जैसा मैं हूं । # ओशो #



बापदादा का वसायत पर खड़े ह, कबीरदास अपन परा पर, अपना जड़ा को फैला कर खड़े है।

स्वभावतः तुलसीदास को ज्यादा प्रेमी मिल जाएंगे। इसलिए रामचरित मानस घर-घर पहुंच गई। कबीरदास के वचन घर-घर नहीं पहुंच सके। यहीं है आश्चर्य कि जितनों तक पहुंच सके इतनों तक भी कम आश्चर्य नहीं है। क्योंकि कबीरदास की बात तो बड़ी आग जैसी है।

तुलसीदास तो राख ही राख है--बुझा हुआ अंगारा है। कभी अंगारा रहे हो, मगर तुलसीदास अंगारा नहीं है--परंपरागत रूढ़ीवादी, पुरातन पंथी, जो शास्त्र में लिखा हो सो ठीक। जरा भी बगावत का स्वर नहीं है।

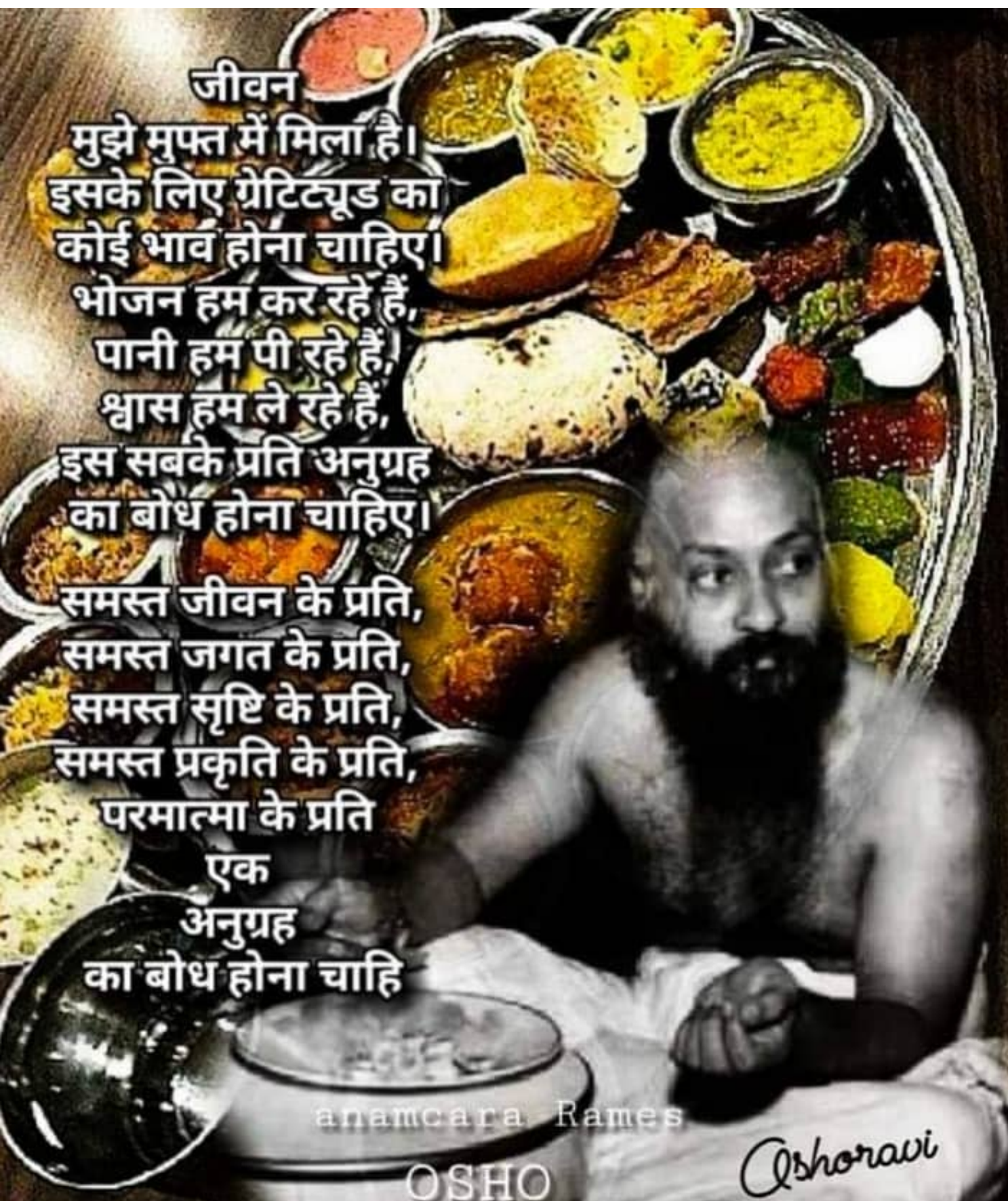
कबीरदास वेद के खिलाफ बोलते हैं, कुरान के खिलाफ बोलते हैं, हिन्दू पंडित के खिलाफ बोलते हैं, मुसलमान-मौलवी के खिलाफ बोलते हैं। और खिलाफत भी ऐसी-वैसी नहीं--औपचारिक नहीं, शिष्टाचारपूर्ण नहीं।

कबीरदास की चोट बड़ी सीधी है--सिर तोड़। कबीर को झेलना आसान बात नहीं है। कुछ बिरले हिम्मतवर लोग ही झेल पाएंगे। हालांकी कबीर जो बोलते हैं वही वेद है, वही कुरान है। मगर कबीर अपने गवाह खुद है वेद से गवाही नहीं लेते। वह गवाही उधार हो जाएगी।

तो दूसरी बात समझ लो, अगर संत लीक पर चलता हो, तो उसे ज्यादा शिष्य मिल जाएंगे। अगर संत सब लीक छोड़ कर चलता हो, तो स्वभावतः कुछ विरले अभियानी ही उसके साथ हो पाएंगे। उसके साथ जाना खतरे से खाली नहीं है। उसके साथ जाना खतरनाक है।

फिर कबीरदास जैसा अक्खड़ संत हुआ ही नहीं, मनुष्य-जाती के इतिहास में। दो-टूक बात कह देने वाला, मारे कि जिलाए--फिकर नहीं। सीधी चोट! टुकड़े-टुकड़े कर देने वाला। एक चोट कबीर की झेल लोगे, तो जिंदगी भर याद रखोगे, भूले नहीं भूलोगे। या तो झुक जाओगे, साथ हो लोगे, या सदा के लिए भाग खड़े होओगे और दुबारा कबीर की छाया से भी डरोगे।

ओशो



जीवन
मुझे मुफ्त में मिला है।
इसके लिए ग्रेटिट्यूड का
कोई भाव होना चाहिए।

भोजन हम कर रहे हैं,
पानी हम पी रहे हैं,
श्वास हम ले रहे हैं,
इस सबके प्रति अनुग्रह
का बोध होना चाहिए।

समस्त जीवन के प्रति,
समस्त जगत के प्रति,
समस्त सृष्टि के प्रति,
समस्त प्रकृति के प्रति,
परमात्मा के प्रति

एक
अनुग्रह
का बोध होना चाहिए

anamcara Rames

OSHO

Qshoravi



Planetary Landscapes



👍 8.2K

70 comments • 1 share



Like



Comment



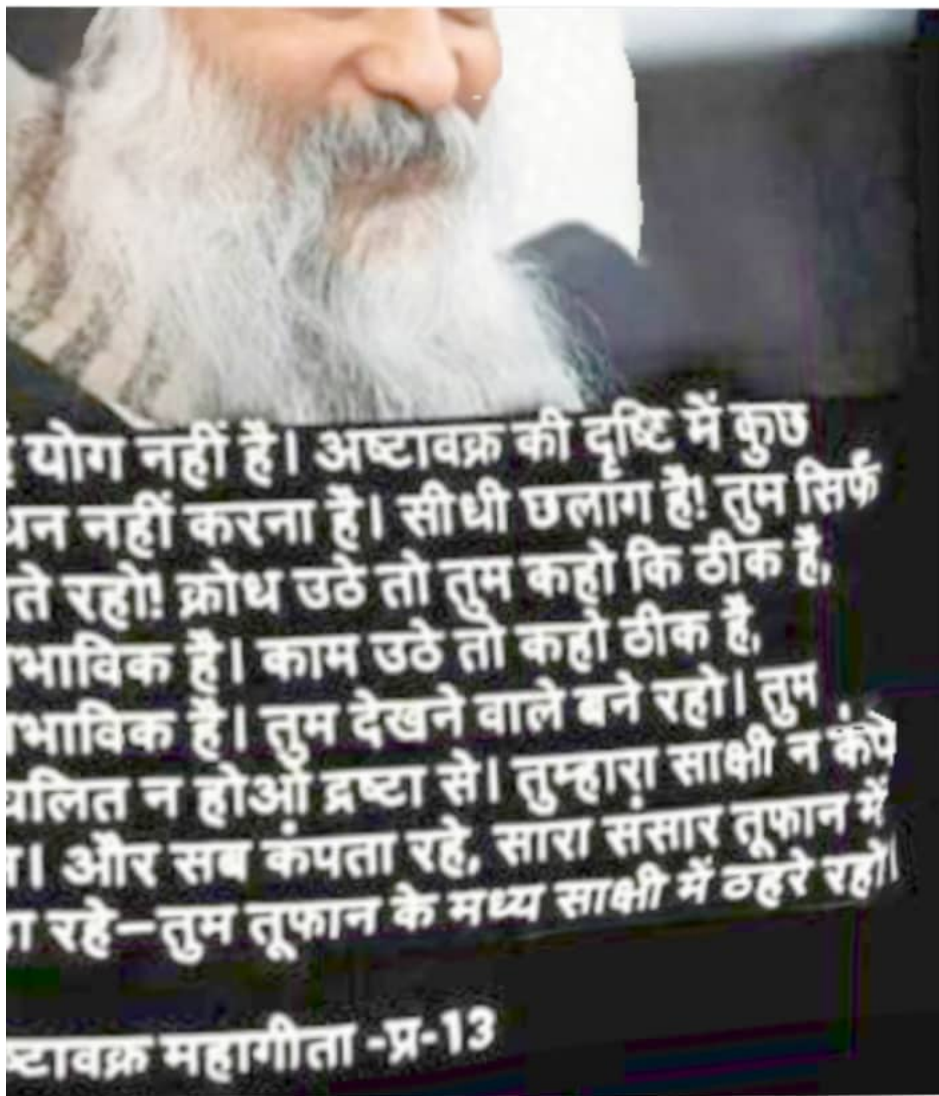
Share

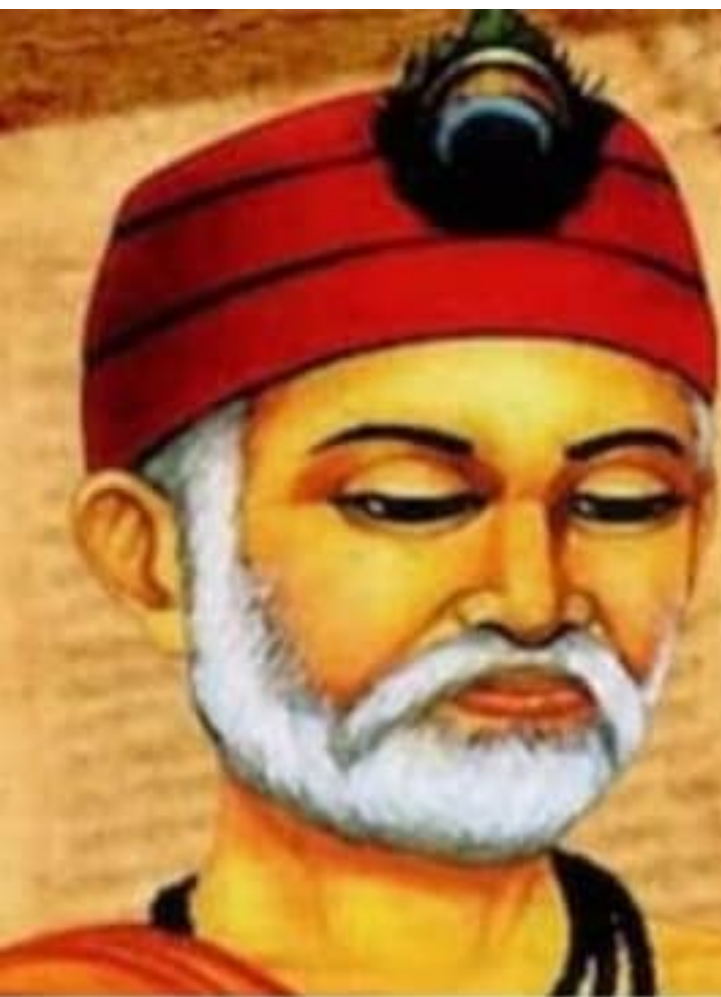
**Osho Human Being To Be.In.God**

1d · 🌐

-अष्टावक्र: महागीता

एक मनोवैज्ञानिक ने प्रयोग किया। एक कक्षा को दो हिस्... See more





कस्तूरी कुण्डल बसै,
मृग हूँ वन माहि।
ऐसे घट - घट राम हैं,
दुनिया खोजत नाहिं॥

— कबीर

कण-कण में नहीं है सतगुरु जड़-चेतन को एक
नहीं मानते हैं पेड़, पौधों व पत्थर में चेतन नहीं
है इनमें ऊर्जा जड़ की ही है राम घट-घट अर्थात्
प्रति प्राणी में है सभी जीवित मनुष्य, पशु व
पक्षी के हृदय में!

पशु, पक्षी व मांस भक्षण का त्याग करें क्योंकि
उन सब में राम हैं पेड़ पौधे पत्थर आदि में सृष्टि
की ऊर्जा है उसमें भगवान नहीं है।

सोचो! "स्त्री और
"धन-दौलत में आनंद!
अगर होता! तो,
"बुद्ध और महावीर यूं,
घर ना छोड़ते.!!

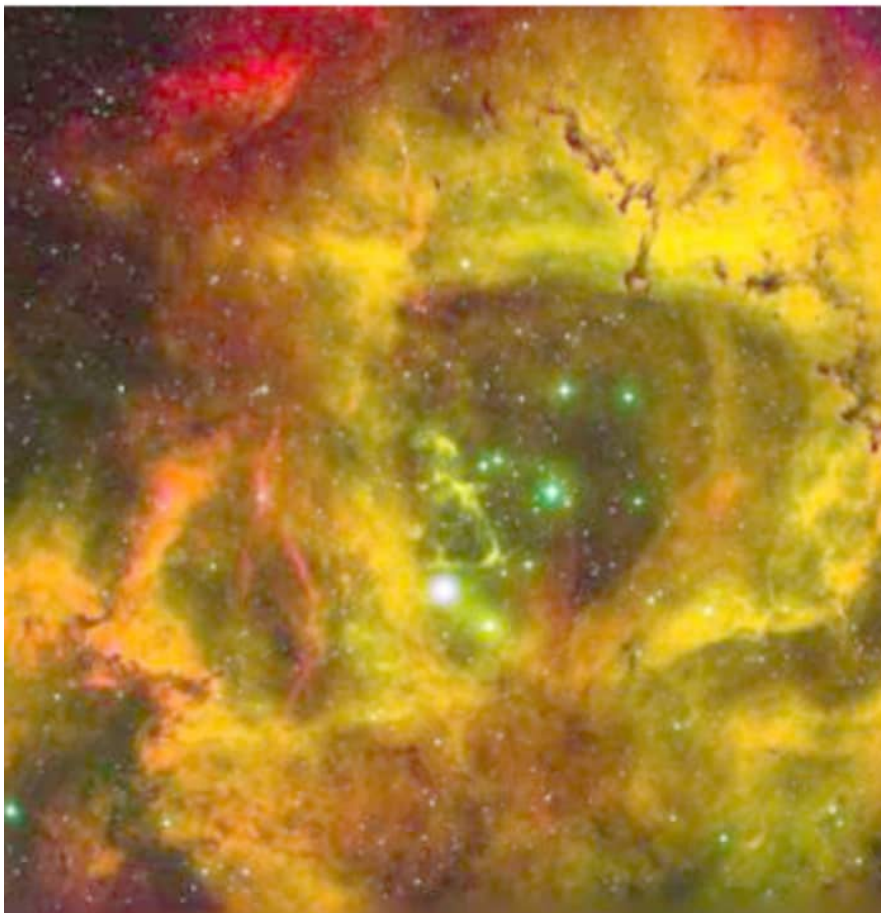




देती है। आपको पूरी चेतना धुएँ से भर जाती है। आपको कुछ होश नहीं रहता। जब आपका शरीर आत्मा से अलग होता है, तो आप उतने ही बेहोश होते हैं, जितना सर्जरी में कोई मरीज बेहोश होता है। उससे ज्यादा।

मृत्यु के पास अपना एनेस्थेसिया है। इसलिए आप होश में मर नहीं सकते; आप बेहोशी में मरेंगे। इसी कारण तो आपको दूसरे जन्म में याद नहीं रह जाता पिछला जन्म। क्योंकि जो बेहोशी में घटा है, उसकी याददाश्त नहीं हो सकती।

सामान्यतः--- लोग बेहोशी में ही जीते हैं और बेहोशी में ही शरीर छोड़कर जाते हैं। हमेशा नकली बाहरी साधनों में मन को बहलाना अपने आप को भुलाना बेहोशी में ही जीना है। ध्यानयोग का अभ्यास हमेशा संसार की अनित्यता का स्मरण रखते हुए आंतरिक सजगता का अभ्यास है।



13

1 share



Like



Comment



Send



Share



लेकिन अगर आपने जीवनभर पाप किया है, तो अंतिम क्षण में आप बुद्ध होने का विचार कर नहीं सकते। वह असंभव है। अंतिम विचार तो आपके पूरे जीवन का निचोड़ होगा। अंतिम विचार में सुविधा नहीं है आपके हाथ में कि आप कोई भी विचार कर लें। मरते क्षण में आप धोखा नहीं दे सकते। समय भी नहीं है धोखा देने के लिए। मरते क्षण में तो आपका पूरा जीवन निचुड़कर आपकी वासना बनता है। आप वासना कर नहीं सकते मरते क्षण में।

इसे ऐसा समझें। एक बीज हम बोते हैं; वृक्ष बनता है। फूल खिलते हैं। फूल में फिर बीज लगते हैं। उस बीज में उसी वृक्ष का प्राण फिर से समाविष्ट हो जाता है। वह बीज नए वृक्ष का जन्म बनेगा।

तो आपने जीवनभर जो किया है, जो सोचा है, जिस भांति आप रहे हैं, वह सब आपकी अंतिम वासना का बीज बन जाता है। वह आपके हाथ में नहीं है।

जिस आदमी ने जीवनभर धन की चिंता की हो, मरते वक्त वह धन की ही चिंता करेगा। थोड़ा समझें, इससे विपरीत असंभव है। क्योंकि जिसके मन पर धन का विचार ही प्रभावी रहा हो, मरते समय जीवनभर का अनुभव, जीवनभर की कल्पना, जीवनभर की योजना, जीवनभर के स्वप्न, वे सब धक्का देंगे कि वह धन के संबंध में अंतिम विचार कर ले। इसलिए धन को पकड़ने वाला अंतिम समय में धन को ही पकड़े हुए मरेगा।

लोककथाएं हैं कि अगर कृपण मर जाता है, तो अपनी तिजोड़ी पर सांप बनकर बैठ जाता है। या अपने खजाने पर सांप बनकर बैठ जाता है। वे कथाएं सार्थक हैं। वे इस बात की खबर हैं कि अंतिम क्षण में आप अपने जीवन की पूरी की पूरी निचुड़ी हुई अवस्था को बीज बना आदमी जो भी भूलें करता है, वह बेहोशी में करता है। मौत के क्षण में आपके शरीर की सारी विषाक्त ग्रंथियां पूरा विष छोड़ देती हैं। आपकी पूरी चेतना धुएं से भर जाती है। आपको कुछ होश नहीं रहता। जब आपका शरीर आत्मा से अलग होता है, तो आप उतने ही बेहोश होते हैं, जितना सर्जरी में कोई मरीज बेहोश होता है। उससे ज्यादा।

**Osho Human Being To Be.In.God**

1d · 🌐

गीता में कहा है कि जो मनुष्य मरते समय जैसी ही चाह करे, वैसा ही वह दूसरा जन्म पा सकता है।

तो यदि एक मनुष्य उसका सारा जीवन पाप करने में ही गंवा दिया हो और मरते समय दूसरे जन्म में महावीर और बुद्ध जैसा बनने की चाह करे, तो क्या वह आदमी दूसरे जन्म में महावीर और बुद्ध जैसा बन सकता है?_

निश्चित ही, मरते क्षण की अंतिम चाह दूसरे जीवन की प्रथम घटना बन जाती है। जो इस जीवन में अंतिम है, वह दूसरे जीवन में प्रथम बन जाता है।

इसे ऐसा समझें। रात आप जब सोते हैं, तो जो रात सोते समय आपका आखिरी विचार होता है, वह सुबह जागते समय आपका पहला विचार बन जाता है। इसे आप प्रयोग करके जान सकते हैं। रात आखिरी विचार, जब आपकी नींद उतर रही हो, जो आपके चित्त पर हो, उसे खयाल कर लें। तो सुबह आपको जैसे ही पता लगेगा कि मैं जाग गया हूं वही विचार पहला विचार होगा।

मृत्यु महानिद्रा है, बड़ी नींद है। इसी शरीर में नहीं जागते हैं, फिर दूसरे शरीर में जागते हैं। लेकिन इस जीवन का जो अंतिम विचार, अंतिम वासना है, वही दूसरे जीवन का प्रथम विचार और प्रथम वासना बन जाती है।

इसलिए गीता ठीक कहती है कि अंतिम क्षण में जो विचार होगा, जो वासना होगी, वही दूसरे जीवन का कारण बन जाएगी।

लेकिन अगर आपने जीवनभर पाप किया है, तो अंतिम क्षण में आप बुद्ध होने का विचार कर नहीं सकते। वह असंभव है। अंतिम विचार तो आपके पूरे जीवन का निचोड़ होगा। अंतिम विचार में सुविधा नहीं है आपके हाथ में कि आप कोई भी विचार कर लें। मरते क्षण में आप धोखा नहीं दे सकते। समय भी नहीं है धोखा देने के लिए। मरते क्षण में

बुद्ध अमृतवाणी



पढ़ें अपने शहर की रियल टाइम खबरें

कभी भी, कहीं भी

डाउनलोड करें दैनिक भास्कर ऐप



दैनिक भास्कर



संघ के निर्माण के लिए नियमों की जरूरत थी। और यहीं से त्रिपिटक की संरचना का कार्य शुरू हुआ। उपाली नाम के एक बौद्ध ने, जो जाति से शूद्र थे, सबसे पहले विनय पिटक की रचना की। इसी में पहली बार “बुद्धं शरणं गच्छामि” का जिक्र आया। ये पुस्तक बौद्ध भिक्षुओं और भिक्षुणियों के लिए नियमावली थी। इसके बाद बुद्ध के सबसे प्रिय शिष्य आनंद ने सुत्त पिटक की रचना की, जिसके पांच अंग हैं। इस पुस्तक में बुद्ध की शिक्षाओं को पांच तरीकों से बताया गया है। और, आखिरी में लिखी गई अभिधम्म पिटक जिसमें दार्शनिक सिद्धांतों का वर्णन है।

“बुद्धं शरणं गच्छामि” का जिक्र पहली विनय पिटक में किया गया। दरअसल, विनय का अर्थ यहां अनुशासन से है और पिटक मतलब टोकरा। यानि अनुशासन का टोकरा। तो, जो भी बौद्ध धर्म अपनाकर इसके मार्ग पर चलता उसके लिए यहीं से मार्ग मिलता। और “बुद्धं शरणं गच्छामि” वो पहला वाक्य होता जिसे अपनाना होता था।

ऐप खोलें

पढ़ें अपने शहर की रियल टाइम खबरें

कभी भी, कहीं भी

डाउनलोड करें दैनिक भास्कर ऐप



दैनिक भास्कर



भव्य श्रीवास्तव. "बुद्धं शरणं गच्छामि" बौद्ध धर्म को जानने वालों के लिए मूलमंत्र है। इसकी दो और पंक्तियों में "संघं शरणं गच्छामि" और "धम्मं शरणं गच्छामि" भी है। बौद्ध धर्म की मूल भावना को बताने वाले ये तीन शब्द गौतम बुद्ध की शरण में जाने का अर्थ रखते हैं। बुद्ध को जानने के लिए उनकी शिक्षाओं की शरण लेना जरूरी है। पर, इस ब्रह्मवाक्य के अर्थ केवल शब्दों तक सीमित नहीं है।

गौतम बुद्ध के बुद्धत्व की कथा को जिन किताबों में लिखा गया वो संकलन त्रिपिटक कहा जाता है। ये पालि भाषा में तिपिटक कहलाता है। यही वो पुस्तक है, जहां से बुद्ध के जीवन में बुद्धत्व घटित होने के बाद की हर बात लिखी गई है। दरअसल, बुद्ध का जीवन 35वें साल में तब बदला जब उन्हें वैशाखी पूर्णिमा के दिन पीपल के वृक्ष के नीचे बोधि हुई। इसके बाद 80 साल तक वे उस समय की लोकप्रिय भाषा संस्कृत की बजाय सरल लोकभाषा पालि में प्रचार करने लगे। बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए बुद्ध ने सारनाथ के प्रथम उपदेश के बाद पांच मित्रों को अपना अनुयायी बनाया और उन्हें धर्म प्रचार लिए भेजा। संघों का निर्माण इसी के साथ शुरू हुआ और बुद्ध की सौतेली मां महाप्रजापति गौतमी उनके पहले बौद्ध संघ की सदस्या बनीं।

संघ के निर्माण के लिए नियमों की जरूरत थी। और यहीं से त्रिपिटक की संरचना का निर्माण हुआ। उपाली नाम के एक बौद्ध ने, जो जाति से शूद्र थे, संघ के पहले विनय पिटक की रचना की। इसी में पहली बार "बुद्धं शरणं गच्छामि" का विवरण

ऐप खोलें



बीज मंत्र -

'ॐ मणि पदमे हूम्'

* इस मंत्र का जप बौद्ध धर्म की महायान शाखा में प्रमुख रूप से किया जाता है।

CHECK THIS OUT

recommended by [mgid](#)

* यह मंत्र अक्सर प्रार्थना चक्र, स्तूपों की दीवार, धर्म स्थानों के पत्थरों, मणियों आदि में खुदा हुआ या चित्रित रूप में मिल जाता है।

* जिस प्रार्थना चक्र पर यह मंत्र खुदा होता है उसको 1 बार घमाने पर माना जाता है कि उसने दस मंत्र को 10





google.com/search?q=जै



जैन क्षमा दिवस पर्युषण पर्व २०२४

All

News

Images

Videos

Maps

Shopping

Including results for जैन क्षमा दिवस पर्युषण पर्व २०२४

Search only for जैन क्षमा दिवस पर्युषण पर्व २०२४

हिंदी में खोजें



जैन क्षमा दिवस पर्युषण पर्व २०२४



जैन कैलेंडर 2024: सितंबर

तिथि/ दिन

पर्व

4 सितंबर, बुधवार

कल्पसूत्र पाठ

5 सितंबर, गुरुवार

तैलधर तपः

8 सितंबर, रविवार

क्षमावाणी पर्व/ दसलक्षण (2/3)
प्रारंभ

17 सितंबर, मंगलवार

दसलक्षण (2/3) समाप्त

[1 more row](#)<https://www.astrosage.com/jain-ca...>जैन कैलेंडर 2024: जैन धर्म के प्रमुख पर्व-त्योहार
2024 - AstroSage[About featured snippets](#)[Feedback](#)

People also ask





बुद्ध निर्वाण दिवस २०२४



All

Images

News

Videos

Maps

Shopping

हिंदी में खोजें



बुद्ध निर्वाण दिवस २०२४



इसे सुनें

निर्वाण दिवस: बौद्ध त्यौहार 2024 के अनुसार निर्वाण दिवस को परिनिर्वाण दिवस भी कहा जाता है। यह वह दिन है जब भगवान बुद्ध की मृत्यु हुई थी। वर्ष 2024 में निर्वाण दिवस **15 फरवरी 2024** को मनाया जाएगा।



<http://www.astrosage.com> > buddhis...



बौद्ध त्यौहार 2024: एस्ट्रोसेज पर जानें बौद्ध धर्म के मुख्य त्यौहार। - AstroSage.com



About featured snippets



Feedback



PublicHolidays.in

publicholidays.in



बुद्ध पूर्णिमा 2024, 2025 और 2026 -
PublicHolidays.in

यह उत्सव सिद्धार्थ गौतम, या भगवान बुद्ध के जन्म, ज्ञान, और मृत्यु का स्मरण करने के लिए मनाया जाता है। भारत के अतिरिक्त, पूर्व और ...



Astroyogi Hindi

<https://hindi.astroyogi.com> > festival



Buddha Purnima 2024: कब है बुद्ध पूर्णिमा
2024, कहां कहां मनाई जाती है भगवान बुद्ध जयंती



नई दिल्ली, भारत

2024

< पिछला वर्ष

वर्तमान वर्ष

अगला वर्ष >

नई दिल्ली, भारत

बुद्ध पूर्णिमा

23वाँ

मई 2024

Thursday / गुरुवार

गौतम बुद्ध



बुद्ध पूर्णिमा का समय



स्वीणी की राख से ज्यादा
अपनी शांति की महल्य है।

बुद्धपूणिमा



संस्कृत4us

अप्प दीपो भवः
अपना प्रकाश स्वयं बनो।
Be the source of light by yourself.

गौतम बुद्ध जी-घटना और प्रतीक

जन्म – कमल एवं सांड ट्रिक से...

गृहत्याग – घोड़ा

ज्ञान – पीपल

निर्वाण – पद-चिन्ह क्या इसमें भी कंप्यूज रहते है.

मृत्यु – स्तूप चलो ये भी याद करो ...

बौद्ध धर्म ग्रंथ

त्रिपिटक -
सुत पिटक
विनय पिटक
अभिधम्म पिटक

बुद्ध के मंत्र



बुद्धं शरणं गच्छामि" बौद्ध धर्म को जानने वालों के लिए मूलमंत्र है। इसकी दो और पंक्तियों में "संघं शरणं गच्छामि" और "धम्मं शरणं गच्छामि" भी है।





'अकेलापन' इस संसार में
सबसे बड़ी सज़ा है!
और 'एकांत'
सबसे बड़ा वरदान!
ये दो समानार्थी दिखने वाले
शब्दों के अर्थ में
आकाश पाताल का अंतर है।

अकेलेपन में छटपटाहट है,
एकांत में आराम!।

अकेलेपन में घबराहट है,
एकांत में शांति।

जब तक हमारी नज़र
बाहरकी ओर है
तब तक हम
अकेलापन महसूस करते हैं!।

जैसे ही नज़र
भीतर की ओर मुड़ी,
तो एकांत
अनुभव होने लगता है।

ये जीवन और कुछ नहीं,
वस्तुतः
अकेलेपन से एकांत की ओर
एक यात्रा ही है!
ऐसी यात्रा जिसमें,
रास्ता भी हम हैं,
राही भी हम हैं और
मंज़िल भी हम ही हैं!!



Write a comment...



सुमित्रा!

अपने ही हाथों में पतवार सम्हाली जाए
तब तो मुमकिन है कि ये नाव बचा ली जाए

और कोई उपाय नहीं। अप्प दीपो भव! अपने दीये खुद बनो। पंडित—
पुरोहितों से क्या पूछना है?
लोग ऐसे भी कई जीते हैं इस बस्ती में
जैसे मजबूरी में इक रस्म निभा ली जाए
पंडित—पुरोहितों से पूछ कर जीओ तो बस रस्म की तरह जीओगे— एक
औपचारिकता, एक ढोंग, एक पाखंड, एक शिष्टाचार। और परमात्मा से
नाते प्रेम के हो सकते हैं, शिष्टाचार के नहीं।
और फिर सुमित्रा, मेरा रंग तुझ पर चढ़ गया, अब कोई और रंग चढ़ेगा
नहीं।
अब तो शायद न कोई रंग चढ़ेगा इस पर
खून से रंग के ये तस्वीर सजा ली जाए
ये गैरिक रंग, यह मेरी प्रीति का रंग, यह सुबह कर रंग, यह प्राची का रंग,
यह फूलों का रंग, यह वसंत का रंग—एक बार चढ़ जाए, फिर इस पर
कोई और रंग नहीं चढ़ सकता है।

आज इतना ही।

ओशो प्रवचन माला "मन ही पूजा मन ही धूप" के प्रवचन संख्या 06
से.....

.

.

.

#ओशो #osho #oshoravi #oshoraviyog #viralpage2023



अपने ही हाथों में पतवार सम्हाली जाए
तब तो मुमकिन है कि ये नाव बचा ली जाए

आज के दौर में जीने की शर्त है यारो
लाश ईमान की कांधे पे उठा ली जाए

पूरे गुलशन का चलन चाहे बिगड़ जाए मगर
बदचलन होने से खुशबू तो बचा ली जाए

धुआं— धुआं सी मशालों को जलाने के लिए
राख के ढेर से कुछ आग निकाली जाए

लोग ऐसे भी कई जीते हैं इस बस्ती में
जैसे मजबूरी में इक रस्म निभा ली जाए

अब तो शायद न कोई रंग चढ़ेगा इस पर
खून से रंग के ये तस्वीर सजा ली जाए

सुमित्रा!
अपने ही हाथों में पतवार सम्हाली जाए
तब तो मुमकिन है कि ये नाव बचा ली जाए

और कोई उपाय नहीं। अप्प दीपो भव! अपने दीये खुद बनो। पंडित—
पुरोहितों से क्या पूछना है?
लोग ऐसे भी कई जीते हैं इस बस्ती में
जैसे मजबूरी में इक रस्म निभा ली जाए
पंडित—पुरोहितों से पूछ कर जीओ तो बस रस्म की तरह जीओगे— एक
औपचारिकता, एक ढोंग, एक पाखंड, एक शिष्टाचार। और परमात्मा से
नाते प्रेम के हो सकते हैं, शिष्टाचार के नहीं।
और फिर सुमित्रा, मेरा रंग तुझ पर चढ़ गया, अब कोई और रंग चढ़ेगा
नहीं।

अब तो शायद न कोई रंग चढ़ेगा इस पर
खून से रंग के ये तस्वीर सजा ली जाए

मे जैमिन्क गंग गद पेगी मीमि त्का गंग गद यत्तत त्का गंग गद गान्नी त्का गंग



कानुनपरत ननुजा स उतयक दुटकास दुजा

सुमित्रा, गायत्री मंत्र पढ़ना हो तो पढ़ना, मगर बहुत ज्यादा मत पढ़ लेना। क्योंकि ये चीजें पकड़ती हैं, पीछा पकड़ती हैं। और फिर लोभ के कारण आदमी ज्यादा कर जाता है, कि जितना पढ़ोगे. शास्त्र कहते हैं, करोड़ बार पढ़ोगे तो इतना लाभ, और दस करोड़ बार पढ़ोगे तो इतना लाभ, और अरब बार पढ़ोगे तो इतना लाभ। मगर अरब बार पढ़ोगे, लाभ—वाभ तो छोड़ो, विक्षिप्तता आ जाएगी। किसी भी शब्द को इतनी देर तक दोहराओगे तो पागल होने ही लगोगे।

नहीं; मैं नहीं कहूंगा। मैं किसी दूसरे कारण से रोक रहा हूँ खयाल रखना। इस वजह से नहीं कि तुम स्त्री हो। मैं पुरुषों को भी यही कह रहा हूँ स्त्रियों को भी यही कह रहा हूँ कि इस तरह गायत्री मंत्र दोहराने से कुछ लाभ नहीं होगा।

रही ओंकार की बात। तूने लिखा है 'प्रभु, मेरे मुख से अनायास ही ओम का उच्चारण हो जाया करता है।'

जो अनायास हो रहा है वह शुभ है। आयास मत करना, प्रयास मत करना, चेष्टा मत करना। चेष्टा करने से सब बातें झूठी हो जाती हैं। अनायास जो हो, शुभ है। अपने आप हो रहा है, बहने दो झरना, फूटने दो झरना।

और ओम में आ गए सारे वेद, सारे गायत्री मंत्र, सारे कुरान, सारे उपनिषद, सारी बाइबिलें। ओम पर किसी की बपौती नहीं है— न पुरुषों की, न हिंदुओं की, न जैनों की, न बौद्धों की—किसी की बपौती नहीं है। बचो पंडित—पुरोहितों से, काफी उन्होंने तुम्हारा शोषण किया है।

अपने ही हाथों में पतवार सम्हाली जाए
तब तो मुमकिन है कि ये नाव बचा ली जाए

आज के दौर में जीने की शर्त है यारो
लाश ईमान की कांधे पे उठा ली जाए

पूरे गुलशन का चलन चाहे बिगड़ जाए मगर
बदचलन होने से खुशबू तो बचा ली जाए

धुआं— धुआं सी मशालों को जलाने के लिए
राख के ढेर से कुछ आग निकाली जाए

दीवाली तुम
बाहर कितनी ही मनाओ,
भीतर का अंधेरा
बाहर के दीयों से
कटता नहीं,
कटेगा नहीं।
धोखे तुम अपने को
कितने ही दो,
पछताओगे अंततः।
देखते हो,
दीवाली हम
मनाते हैं
अमावस की रात!
वह हमारे धोखे की
कथा है।
रात है अमावस की,
दीयों की पंक्तियां
जला लेते हैं।

तमसो मा ज्योतिर्गमय

ॐ
भीतर का अंधेरा बाहर के दीयों से
कटता नहीं, कटेगा नहीं।

अपने
भीतर का दीया
रोशन कर
मनाएं दिवाली ...

तमसो मा ज्योतिर्गमय

anamcara Rames

Osho



दे दिया होगा छिपा कर; हमें दिया नहीं, हम क्या करें? नहीं; ऐसा मत सोचना।

परमात्मा की तरफ से प्रत्येक को बराबर मिला है। रस्ती भर भेद नहीं। फिर हम अंधेरे में क्यों हैं? फिर कोई बुद्ध रोशन हो जाता है! और हम, जिनकी आंखें बाहर की ओर ही देखती रह जाती हैं, बुद्ध के बुद्ध क्यों रह जाते हैं! हमें जो मिला है, हमने उसे गलत से जोड़ा है। जैसे कोई सरिता मरुस्थल में खो जाए, जल तो लाए बहुत हिमालय से और मरुस्थल में खो जाए- ऐसी हमारी जीवन-ऊर्जा मरुस्थल में खोई जा रही है। बाहर विस्तार है मरुस्थल का। ध्यान तुम्हारे पास उतना ही है, जितना मेरे पास। लेकिन तुमने ध्यान वस्तुओं पर लगाया है। तुमने ध्यान किसी विषय पर लगाया है। तुम्हारा ध्यान हमेशा किसी चीज पर अटका है। चीजों को गिर जाने दो- चीजों को हट जाने दो। विषय वस्तु से मुक्त हो जाओ, मात्र ध्यान को रह जाने दो, निरालंब! और तब आंख उलट कर देखना शुरू करती है, मुड़ जाती है।

निरालंब ध्यान का नाम समाधि। आलंबन से भरे ध्यान का नाम संसार। जब तक आलंबन है, तब तक तुम बाहर जाओगे, क्योंकि आलंबन बाहर है। जब आलंबन नहीं, तब तुम भीतर आओगे। कोई उपाय ही न बचा तो तुम्हें भीतर आना ही होगा। ध्यान को कहीं ठहरना ही होगा। बाहर न ठहराओगे तो अपने-आप सहज सरलता से ध्यान लौट आता है।

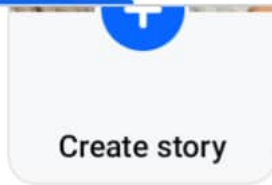
इसलिए सारे ज्ञानी कहते हैं : बाहर से तादात्म्य छोड़ो। मन को बाहर मत अटकाओ। बाहर से सारे सेतु काट दो। और तब अचानक एक प्रकांड ऊर्जा घर की तरफ वापिस लौटती है; जैसे गंगा वापिस लौट पड़े गंगोत्री में, ऐसी आंदोलनकारी घटना घटती है। तुम्हारी ही ऊर्जा जब तुम्हारे ऊपर वापिस लौटती है, रोशन हो जाते हो तुम।

॥ ओशो ॥



ज्योति से ज्योति

जले-(सुंदर दास)-प्रवचन--05

**आध्यात्मिक मार्ग Aadhyaatmik Marg**

Parshotam Rai · 2h · 🌐

पिता और पुत्री एक मंदिर गए। मंदिर के प्रवेश द्वार पर शेरों के खंभों को देखकर अचानक बेटी चीख पड़ी। "भागो पापा, वरना वो शेर हमें खा जाएंगे"

पिताजी ने उसे यह कहते हुए सांत्वना दी कि "वे सिर्फ मूर्तियाँ हैं और हमें नुकसान नहीं पहुँचाएँगे"

बेटी ने जवाब दिया "अगर वे शेर की मूर्तियाँ हमें नुकसान नहीं पहुँचाएँगी तो भगवान की मूर्तियाँ हमें कैसे आशीर्वाद दे सकती हैं"

*पिता ने अपनी डायरी में लिखा...

*"मैं अभी भी अपने बच्चे के जवाब पर अवाक हूँ और मैंने मूर्तियों के बजाय इंसानों में भगवान की तलाश शुरू कर दी है। मुझे भगवान नहीं मिला लेकिन मुझे मानवता मिली !!"

इसलिए हमारे आस-पास के लोगों के लिए अपनी पूरी कोशिश करें...



You and 12 others

11 comments



Like



Comment



Send



Share

**Gates Foundation** ✓

Sponsored · 🌐

Discover how improvements in global heal... See more





मयूर। तुमने कोयल को गाते देखा है? पुकारती है प्यारे को, पुकारती रहती है।

विरह की वैसी ही अग्नि खोजी को जलाती है, जब तक कि प्रेमी मिल ही न जाए। मिलन पर बड़ी गहन शांति, बड़ा गहन आनंद।

ज्ञानी का अस्तित्व बदलता है। पंडित की केवल स्मृति भरती है। स्मृति तो यंत्र मात्र है। उसका कोई मूल्य नहीं। तुम्हारा पूरा अस्तित्व अहोभाव से भर जाए। तुम्हारा रोआं-रोआं धन्यवाद देने लगे। तुम्हारे सब द्वार-दरवाजों से उस परमात्मा का प्रकाश भीतर आ जाए। सब तरफ से तुम्हें आपूर परमात्मा घेर ले। आकंठ तुम भर जाओ। बाढ़ आ जाए उसकी कि तुम समझ ही न पाओ, कैसे धन्यवाद दें। शब्द खो जाएं, बोलने को कुछ न बचे। तुम्हारा पूरा अस्तित्व ही बोलने लगे। वाणी छोटी पड़ जाए। आनंद लक्षण है। सच्चिदानंद लक्षण है। पंडित के दांत खुद ही टूटे हुए हैं। और तुम उससे सीख ले रहे हो।

आनंद को कसौटी समझो, अन्यथा तुम धोखा खाओगे। शब्दों के धनी बहुत हैं, आनंद का धनी खोजो। जिसके जीवन में सब शांत और परिपूर्ण हो गया हो। जिसे कुछ पाने को न बचा हो, वही तुम्हें कुछ दे सकेगा। वही गुरु हो सकता है। पंडित तो तुम्हारे ही साथ है। तुमसे थोड़ा ज्यादा जानता है, तुम थोड़ा कम जानते हो। तुम भी थोड़ी मेहनत करो, तो थोड़ा ज्यादा जान लोगे। पंडित में और तुम में कोई गुणात्मक भेद नहीं है। मात्रा का भले हो, गुण का नहीं है। ज्ञानी और तुम में गुणात्मक भेद है।

जैसे दो आदमी सोते हों, एक आदमी सपना देखता हो कि चोर है; और एक आदमी सपना देखता हो कि साधु है। क्या तुम सोचते हो, उन दोनों में कोई गुणात्मक भेद है? दोनों सो रहे हैं। दोनों सपना देख रहे हैं। दोनों के हाथ में सत्य नहीं है। और एक तीसरा आदमी जागा हुआ पास ही बैठा है। जागा हुआ है, सपना नहीं देख रहा है। इस आदमी में और उन दो सोए आदमियों में गुणात्मक भेद है। इसकी चेतन-दशा ही अलग है। यह जागा हुआ है।

उस बूढ़े ने थोड़ी नाराजगी से कहा: इससे क्या फर्क पड़ता है? कई लोग पुरुष होते हुए भी चोलियां बेचते हैं, साड़ियां बेचते हैं, चूड़ियां बेचते हैं। मैं उससे राजी हुआ, तो उसने इतनी बात और जोड़ी, और उसने कहा कि फिर लोग अपने दांतों में उत्सुक हैं। मेरे दांत की तरफ देखते कहां? वस्तुतः उस बूढ़े आदमी ने कहा कि आप मेरे पहले पूछने वाले हैं, जिसने यह संदेह उठाया। लोग अपने दांत की चिंता कर रहे हैं। दंतमंजन का डिब्बा देखते हैं। मेरे दांत की कौन फिकर करता है?

तुम पंडितों के दांतों की थोड़ी फिकर करो। वे जो बेच रहे हैं, वह उन्हें भी नहीं बचा सका। वे जो तुम्हें समझा रहे हैं, उससे उनकी भी समझ नहीं जागी। वे जो तुम्हें दे रहे हैं, उससे उन्हें भी कुछ मिला नहीं है। उनके जीवन को थोड़ा परखो। तुम वहां उदासी पाओगे। एक रिक्तता पाओगे। भारी तुम पाओगे उन्हें। वजन से दबे हुए पाओगे, लेकिन तुम्हें वह नृत्य वहां न दिखाई पड़ेगा जो कबीर कह रहे हैं--'पाइबो रे पाइबो रे ब्रह्मज्ञान।'

नाच उठता है हृदय, जब ज्ञान की पहली किरण उतरती है। मोर को नाचते देखा? आषाढ़ के प्रथम दिवसों में आकाश में मेघ घिरने लगते हैं और मोर पंख फैला देता है और नाचता है। वैसा ही ब्रह्मज्ञानी भी नाचता है, जब उसके जीवन में परमात्मा के मेघ घिर जाते हैं। आषाढ़ का दिन आ जाता है। वर्षा होने के करीब हो जाती है। जन्मों-जन्मों की छाती प्यासी थी। मेघ घिर उठे, आषाढ़ का दिवस आ गया। नाच उठता है मन-मयूर। तुमने कोयल को गाते देखा है? पुकारती है प्यारे को, पुकारती रहती है।

विरह की वैसी ही अग्नि खोजी को जलाती है, जब तक कि प्रेमी मिल ही न जाए। मिलन पर बड़ी गहन शांति, बड़ा गहन आनंद।

ज्ञानी का अस्तित्व बदलता है। पंडित की केवल स्मृति भरती है। स्मृति तो यंत्र मात्र है। उसका कोई मूल्य नहीं। तुम्हारा पूरा अस्तित्व अहोभाव से भर जाए। तुम्हारा रोआं-रोआं धन्यवाद देने लगे। तुम्हारे सब द्वार-दरवाजों से उस परमात्मा का प्रकाश भीतर आ जाए। सब तरफ से तुम्हें आपूर परमात्मा घेर ले। आकंठ तुम भर जाओ। बाढ़ आ जाए उसकी कि तम समझ ही न पाओ, कैसे धन्यवाद दें। शब्द खो जाएं,

पुस्तकें » कहै कबीर दीवाना

3. पाइबो रे पाइबो ब्रह्मज्ञान

1 2 3 4 5 > »

अब मैं पाइबो रे पाइबो रे ब्रह्मज्ञान।
 सहज समार्थें सुख में रहिबो, कौटि कलप विश्राम।
 गुरु कृपाल कृपा जब कीन्हि, हिरदै कंवल विगासा।
 भागा भ्रम दसों दिसि सूझ्या, परम ज्योति परगासा।
 मृतक उठ्या धनक कर लीए, काल अहेड़ी भागा।
 उद्या सूर निस किया पयाना, सोवत थें जब जागा।
 अविगत अकल अनूपम देख्या, कहंता कहा न जाई।
 सैन करे मन ही मन रहसे, गूंगे जान मिठाई।
 पहुप बिना एक तरुवर फलिया, बिन कर तूर बजाया।
 नारी बिना नीर घट भरिया, सहज रूप सो पाया।
 देखत कांच भया तन कंचन, बिन बानी मन माना।
 उड़्या विहंगम खोज न पाया, ज्यूं जल जलही
 समाना।
 पूज्या देव बहुरि नहिं पूजौ, न्हाए उदिक न नाऊं।
 भागा भ्रम ये कहीं कहंता, आए बहुरि न आऊं।
 आपै में तब आपा निरख्या, अपन पै आपा सूझ्या।
 आपै कहत सुनत पुनि अपना, अपन पै आपै बूझ्या।
 अपने परिचै लागी तारी, अपन पै आप समाना।
 कहै कबीर जो आप विचारै, मिट गया आवन जाना।

एक ज्ञान है, जो भर तो देता है मन को बहुत जानकारी से, लेकिन हृदय को शून्य नहीं करता।

एक ज्ञान है, जो मन को भरता नहीं, खाली करता है। हृदय को शून्य का मंदिर बनाता है।

एक ज्ञान है, जो सीखने से मिलता है और एक ज्ञान है जो अनसीखने से मिलता है। जो सीखने से मिले, वह कूड़ा-करकट है। जो अनसीखने से मिले, वही मूल्यवान है। सीखने से वही सीखा जा सकता

पुस्तकें » कहै कबीर दीवाना

2. भगति भजन हरिनाम

« < 16 17 18 19 20 | अगला अध्याय

कब देखूंगा प्यारे का मुख? कब होगा उससे पूर्ण मिलन? कब ऐसे मिट जाऊंगा जैसे बूंद सागर में खो जाती है कि रत्ती भर का फासला न रह जाए, दुई न रह जाए।

जब तक शरीर है, तब तक थोड़ी सी दुई बची रहती है। डूबा रहता है घड़ा पानी में, लेकिन जरा सा फासला बना रहता है। वह फासला ही विरह की अग्नि है। और धन्य हैं, वे जो विरह को जान लेते हैं। क्योंकि वे, वे ही लोग हैं जिन्होंने थोड़े से मिलन को जाना।

इजिप्त में एक बड़ी पुरानी उक्ति है कि तुम परमात्मा को खोजने तभी निकलते हो, जब वह तुम्हें मिल ही चुका होता है। नहीं तो तुम खोजने कैसे निकलोगे? लेकिन तब विरह बहुत सताता है।

लेकिन उस विरह में आनंद है। उस विरह में परम आनंद है। वह विरह पीड़ा जैसा नहीं है। वह विरह बड़ा मधुर और मिठास भरा है। तुमने मीठी पीड़ा जानी? वह विरह मीठी पीड़ा है। बड़ी मधुर है पीड़ा। काटती रहती है भीतर, लेकिन संगीत की तरह। स्वर उसका गूंजता रहता है, लेकिन वीणा के स्वर की भांति।

धन्य हैं वे, जिन्हें थोड़ा सा मिलन का स्वाद मिला और जो महा मिलन की पीड़ा से भर गए हैं। जिनका शरीर वीणा हो गया। और उस वीणा पर एक ही स्वर निरंतर उठ रहा है--विरह का स्वर।

मिलन के बाद विरह है और विरह के बाद महा मिलन।

आज इतना ही।

« < 16 17 18 19 20 | Next Chapter



ह, जस-जस सनय कराब जाता ह।

तुमने कभी रेलवे स्टेशन पर देखा लोगों को प्रतीक्षा करते? अभी गाड़ी के आने में देर है। वे अखबार पढ़ रहे हैं, गपशप कर रहे हैं, चाय पी रहे हैं, यहां-वहां जा रहे हैं। कोई नहीं देख रहा कि गाड़ी आ रही है या नहीं। घंटा बजा। एक लहर दौड़ गई। लोगों ने अपने सामान सम्हाल लिए। बैग उठा लिए, कपड़े-लत्ते ठीक कर लिए, खड़े हो गए, बातचीत बंद हो गई। गाड़ी जैसे-जैसे करीब आती, स्टेशन वैसे-वैसे आतुर होता जाता है। लोग बिलकुल तैयार हैं। किस क्षण... एक क्षण भी अब मुश्किल मालूम पड़ता है।

ठीक वैसी दशा भक्त की हो जाती है। नाव करीब है। खबर आ गई। संदेश आ गए हवाओं में। नाव दिखाई भी पड़ने लगी किनारे की तरफ आती। भक्त किनारे पर खड़ा है।

सब रग तंत रबाब तन, विरह बजावे नित्त।
और न कोई सुन सके, कै साईं के चित्त॥
इस तन का दीवा करूं, बाती मेल्यूं जीव।
लोही सींचौ तेल ज्यूं, कब मुख देख्यौ पीव॥

उस प्यारे का मुख कब देखूंगा? सब करने को राजी हूं।

इस तन का दीवा करूं...

इस सारे शरीर को दीया बनाने को राजी हूं।

...बाती मेल्यूं जीव।

प्राण को बाती बनाने को राजी हूं।

लोही सींचौ तेल ज्यूं...

खून को तेल बनाने को राजी हूं।

...कब मुख देख्यौ पीव।

प्रेमी जानते हैं, विरह को। और अगर तुम परम प्रेमियों को गौर से देखो, तो जितने ही वे करीब आते हैं, उतना ही विरह बढ़ता जाता है। क्योंकि कितने ही करीब आते हैं, फिर भी लगता है कि बिलकुल एक नहीं हो पाते। कुछ फासला है। शरीर मिल जाते हैं। लेकिन मन अलग हैं। कभी-कभी किसी गहन संभोग के क्षण में मन भी मिल जाते हैं। लेकिन फिर भी चेतनाएं अलग हैं।

प्रेम में पूर्ण मिलन तो हो भी नहीं सकता, भक्ति में ही हो सकता है। लेकिन भक्त को थोड़े दिन की जो शरीर की यात्रा बाकी है, वह यात्रा पिछले जन्मों से संबंधित है। शरीर के अपने कर्मों का जाल है, वह पूरा होना है। वह पूरा होगा।

तो बुद्ध ने कहा है, एक तो निर्वाण है जो जीते व्यक्ति को उपलब्ध होता है और दूसरा महा निर्वाण है, जब शरीर गिर जाता है, तब उपलब्ध होता है। हिंदू कहते हैं, जीवन-मुक्त और मोक्ष। जैन कहते हैं, केवल ज्ञान और कैवल्य। ज्ञान तो हो गया, तैयारी पूरी है, बस नाव की प्रतीक्षा है, कब आ जाए। पर थोड़ी देर और तट पर खड़े रहना है। प्रतीक्षा दूभर हो जाती है, जैसे-जैसे समय करीब आता है।

तुमने कभी रेलवे स्टेशन पर देखा लोगों को प्रतीक्षा करते? अभी गाड़ी के आने में देर है। वे अखबार पढ़ रहे हैं, गपशप कर रहे हैं, चाय पी रहे हैं, यहां-वहां जा रहे हैं। कोई नहीं देख रहा कि गाड़ी आ रही है या नहीं। घंटा बजा। एक लहर दौड़ गई। लोगों ने अपने सामान सम्हाल लिए। बैग उठा लिए, कपड़े-लत्ते ठीक कर लिए, खड़े हो गए, बातचीत बंद हो गई। गाड़ी जैसे-जैसे करीब आती, स्टेशन वैसे-वैसे आतुर होता जाता है। लोग बिलकुल तैयार हैं। किस क्षण... एक क्षण भी अब मुश्किल मालूम पड़ता है।

ठीक वैसी दशा भक्त की हो जाती है। नाव करीब है। खबर आ गई। संदेश आ गए हवाओं में। नाव दिखाई भी पड़ने लगी किनारे की तरफ आती। भक्त किनारे पर खड़ा है।

सब रग तंत रबाब तन, विरह बजावे नित्त।
और न कोई सुन सके, कै साईं के चित्त॥
इस तन का दीवा करूं, बाती मेल्यूं जीव।
लोही सींचौ तेल ज्यूं, कब मुख देख्यौ पीव॥



9:04 pm 4G 65%
सादग्वह ह तुम्ह। तुम कस उसक लए राआग? कस तुम्हारा पूरा तन वाणा बन जाएगा? कैसे तुम्हारे रग-रेशे तार बन जाएंगे? कैसे तुम्हारे हृदय में उठेगा विरह का गीत? मिलन के बाद ही विरह संभव है।

इसलिए भक्त ही जानता है विरह को। तब एक क्षण को भी इस शरीर में होना, एक क्षण को भी इस संसार में होना बड़ी दूरी मालूम पड़ती है। कोई दूरी नहीं बची। अपने को समर्पित किया है भक्त ने। परमात्मा से भर गया है। लेकिन अभी इस शरीर की यात्रा बाकी है। अभी कुछ समय लगेगा। संदेश आ गया। पता-ठिकाना मिल गया। घर की राह मिल गई। थोड़ा सा फासला है।

तुम्हें शायद कभी अंदाज हुआ हो। अगर तुम किसी यात्रा पर गए हो, जब तुम बिलकुल मंजिल के करीब पहुंच जाते हो, तब जितनी दूरी मालूम पड़ती है, उतनी दूरी पहले कदम पर भी मालूम नहीं पड़ी थी। जब मंजिल बिलकुल करीब होती है, जब अब मिले, अब मिले, तब क्षण भर का भी फासला अत्यंत कष्टपूर्ण हो जाता है। मंजिल जब बिलकुल आंख के सामने आ जाती है, तब जरा सी भी दूरी खलती है।

भक्त ने सब दे दिया, लेकिन अभी शरीर में है। इसलिए बुद्ध ने मोक्ष के दो भेद किए हैं। जैसा कि भारत में सदा किए गए हैं। मुक्त व्यक्ति को हम जीवन-मुक्त कहते हैं। जीवन-मुक्त का अर्थ है: अभी वह जीवित है। शरीर में है। मुक्त हो गया। भीतर से सब बंधन टूट गए, लेकिन शरीर की यात्रा अभी जारी है। शायद कुछ समय और लगेगा जब शरीर भी गिर जाएगा और मिलन परिपूर्ण होगा। इतना सा फासला बाकी है।

ऐसा समझो कि तुम ऐसे व्यक्ति हो, एक घड़ा है भरा हुआ, घाट पर रखा है, नदी से दूर। भक्त ऐसा घड़ा है कि नदी में आ गया, भीतर भी पानी है, बाहर भी पानी है, जैसे मिट्टी की जरा सी देह रह गई है। मिट्टी की देह भी पोरस है, छिद्रवाली है। पानी थोड़ा आता जाता भी है। लेकिन फिर भी देह बाकी है। यही विरह है। नदी में घड़ा है, बाहर जल, भीतर जल। वही जल बाहर, वही भीतर। फिर भी घड़े की पतली सी मिट्टी की लकीर है। मिट्टी की ही लकीर है, लेकिन है। इतना सा फासला रह गया। तब विरह पैदा होता है। तब नित, प्रतिपल एक ही विरह रहता है कि कैसे यह भी गिर जाए? कब?



कि आदमी के लिए नियम है? मैं तुमसे पूछता हूं, उचित है यह कि यह अंधा आदमी आंख वाला हो जाए, या उचित है यह कि इस अंधे आदमी को मैं कह दूं कि मैं धार्मिक आदमी हूं, और सातवें दिन मैं कुछ भी नहीं कर सकता। क्या भरोसा है कि कल मैं न बचूं? और क्या भरोसा है कि कल यह अंधा आदमी न बचे? तुम गारंटी देते हो कि कल हम दोनों रहेंगे? मैं इसकी आंख ठीक करने और यह आंख ठीक करवाने?

नहीं, धार्मिक आदमी को बात नहीं जमती। उसका तो हिसाब है। वह अपने हिसाब से जीता है। उसके नियम सख्त हैं। अंधा आदमी है, लकड़ी से टटोलता है। उसके पास प्रकाश नहीं है।

*अब मन राम ही व्है रह्या, सीस नवावें काहि।
सब रग तंत रबाब तन, विरह बजावे नित्त।
और न कोई सुन सके, कै साईं के चित्त।।*

शरीर की सारी रंगें वीणा के तार हो गई हैं। कबीर कहते हैं: सारा तन वीणा हो गया और एक ही गीत बजता रहता है चौबीस घंटे--'विरह बजावे नित्त।' एक ही गीत बजता रहता है, परमात्मा के विरह का।

और न कोई सुन सके, कै साईं के चित्त।

और इस विरह के गीत को या तो परमात्मा सुन सकता है, या तो साईं--या स्वयं।

प्रार्थना तुम्हारे और तुम्हारे परमात्मा के बीच का संबंध है। समाज से उसका कुछ लेना-देना नहीं। पूजा तुम्हारे और तुम्हारे परमात्मा के बीच का अत्यंत गोपनीय संबंध है।



जीसस सातवें दिन मंदिर के पास आए। और एक अंधा आदमी आया और उस अंधे आदमी ने प्रार्थना की कि मैंने सुना है कि तुम अगर छू दो तो मेरी आंख ठीक हो जाए। जीसस ने उसे छू दिया और उसकी आंख ठीक हो गई। पुरोहितों ने कहा कि यह तो अधार्मिक कृत्य है।

सोचो! अंधे को आंख देना अधार्मिक कृत्य हुआ, क्योंकि शास्त्र में लिखा है। वेद, यहूदियों का कहता है कि सातवें दिन सब कृत्य बंद।

पुरोहितों ने पूछा कि तुमने पाप किया है, सातवें दिन तो सब काम बंद होना चाहिए।

जीसस ने पूछा कि सातवें दिन तुम भोजन करते हो या नहीं? और सातवें दिन तुम आंख झपते हो या नहीं? और सातवें दिन तुम श्वास लेते हो या नहीं? और सातवें दिन परमात्मा ने माना विश्राम किया, लेकिन विश्राम भी कुछ करना है। वह भी कृत्य है। और फिर अगर तुम्हारे नियम टूटने से एक आदमी की आंख खुल गई हो, तो नियम के लिए आदमी है कि आदमी के लिए नियम है? मैं तुमसे पूछता हूं, उचित है यह कि यह अंधा आदमी आंख वाला हो जाए, या उचित है यह कि इस अंधे आदमी को मैं कह दूं कि मैं धार्मिक आदमी हूं, और सातवें दिन मैं कुछ भी नहीं कर सकता। क्या भरोसा है कि कल मैं न बचूं? और क्या भरोसा है कि कल यह अंधा आदमी न बचे? तुम गारंटी देते हो कि कल हम दोनों रहेंगे? मैं इसकी आंख ठीक करने और यह आंख ठीक करवाने?

नहीं, धार्मिक आदमी को बात नहीं जमती। उसका तो हिसाब है। वह अपने हिसाब से जीता है। उसके नियम सख्त हैं। अंधा आदमी है, लकड़ी से टटोलता है। उसके पास प्रकाश नहीं है।

*अब मन राम ही व्है रह्या, सीस नवावें काहि।
सब रग तंत रबाब तन, विरह बजावे नित्त।
और न कोई सुन सके, कै साईं के चित्त।।*

शरीर की सारी रंगें वीणा के तार हो गई हैं। कबीर कहते हैं: सारा तन वीणा हो गया और एक ही गीत बजता रहता है चौबीस घंटे--'विरह बजावे नित्त।' एक ही गीत बजता रहता है, परमात्मा के विरह का।

और न कोई सुन सके, कै साईं के चित्त।

और इस विरह के गीत को या तो परमात्मा सन सकता है, या तो





रोनाल्ड निक्सन जो कि एक अंग्रेज थे कृष्ण प्रेरणा से ब्रज में आकर बस गये ...

.

उनका कन्हैया से इतना प्रगाढ़ प्रेम था कि वे कन्हैया को अपना छोटा भाई मानने लगे थे.....

.

एक दिन उन्होंने हलवा बनाकर ठाकुर जी को भोग लगाया पर्दा हटाकर देखा तो हलवे में छोटी छोटी उँगलियों के निशान थे

.

जिसे देख कर 'निक्सन' की आखों से अश्रु धारा बहने लगी ...

.

क्यूँ कि इससे पहले भी वे कई बार भोग लगा चुके थे पर पहलेकभी ऐसा नहीं हुआ था ।

.

और एक दिन तो ऐसी घटना घटी कि सर्दियों का समय था, निक्सन जी कुटिया के बाहर सोते थे ।

.

ठाकुर जी को अंदर सुलाकर विधिवत रजाई ओढ़ाकर फिर खुद लेटते थे ।

.

एक दिन निक्सन सो रहे थे.....

.

मध्यरात्रि को अचानक उनको ऐसा लगा जैसे किसी ने उन्हें आवाज दी हो... दादा ! ओ दादा !

.

उन्होंने उठकर देखा जब कोई नहीं दिखा तो सोचने लगे हो सकता हमारा भ्रम हो, थोड़ी देर बाद उनको फिर सुनाई दिया.... दादा ! ओ दादा !

.

उन्होंने अंदर जाकर देखा तो पता चला की वे ठाकुर जी को रजाई ओढ़ाना भूल गये थे ।

.

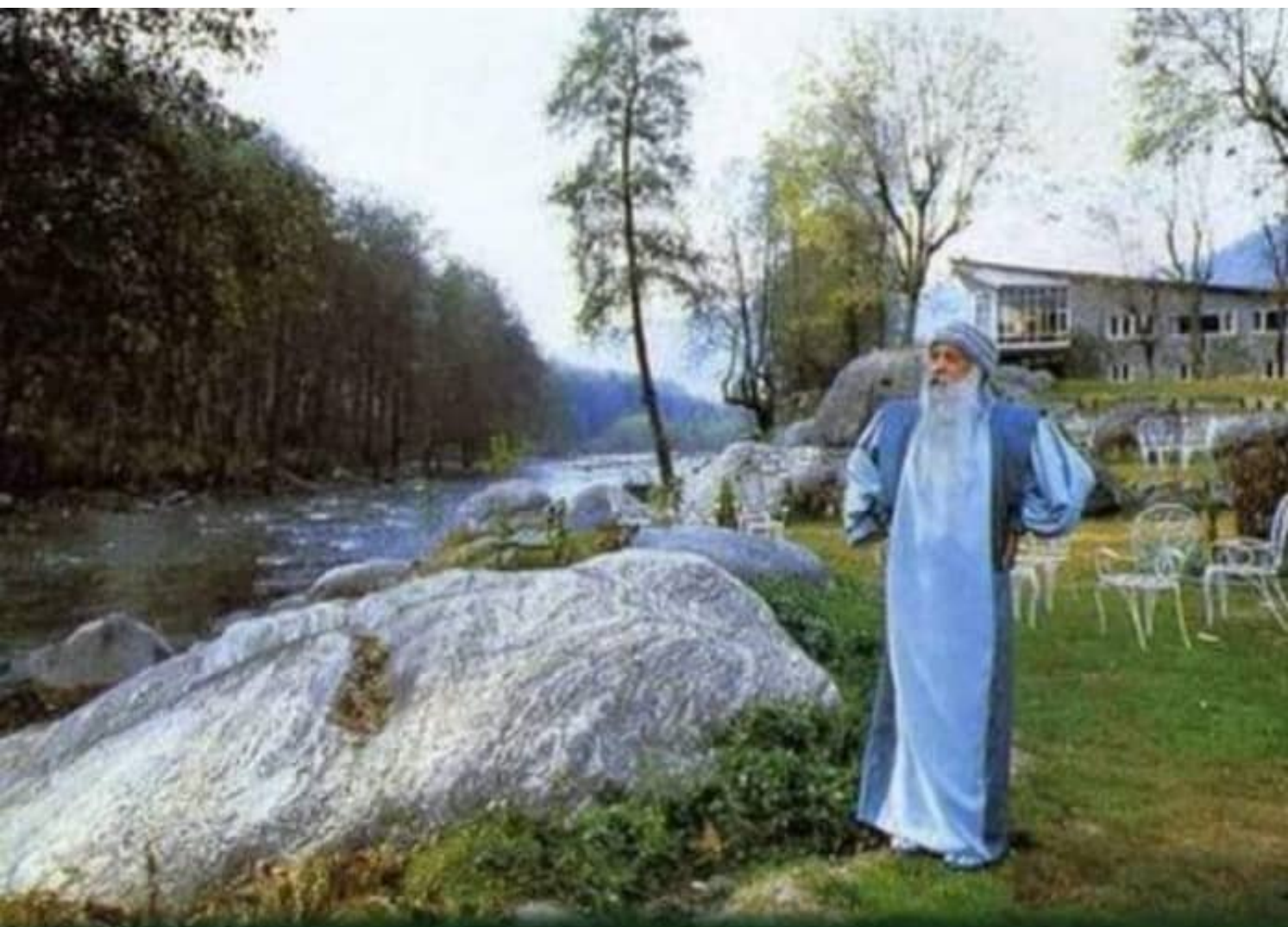
वे ठाकुर जी के पास जाकर बैठ गये और बड़े प्यार से बोले...

.



म कहता हूँ
अर्थ न खोजे
वरन् जो है उसे जियें।
खोजें न, जियें।
विचारें न, जियें।
साधें न, जियें।
जीवन में डूबें और बहें।
तैरें भी न।

रजनीश के प्रणाम
शुभ दीपावली



दो तत्व हैं जगत में। एक, जो हमें चारों तरफ फैला हुआ जड़ का विस्तार दिखाई पड़ता है, मैटर का। वह एक तत्व है। और एक जीवन चैतन्य, जो इस जगत में फैले विस्तार को देखता और जानता और अनुभव करता है। वह एक तत्व है, चैतन्य, चेतना। इन दो तत्वों का न कोई निर्माण है और न कोई विनाश है। न तो चेतना नष्ट हो सकती है और न पदार्थ नष्ट हो सकता है।

ओशो ~ गीता दर्शन ~ (भाग--3) ~ प्रवचन-0७६



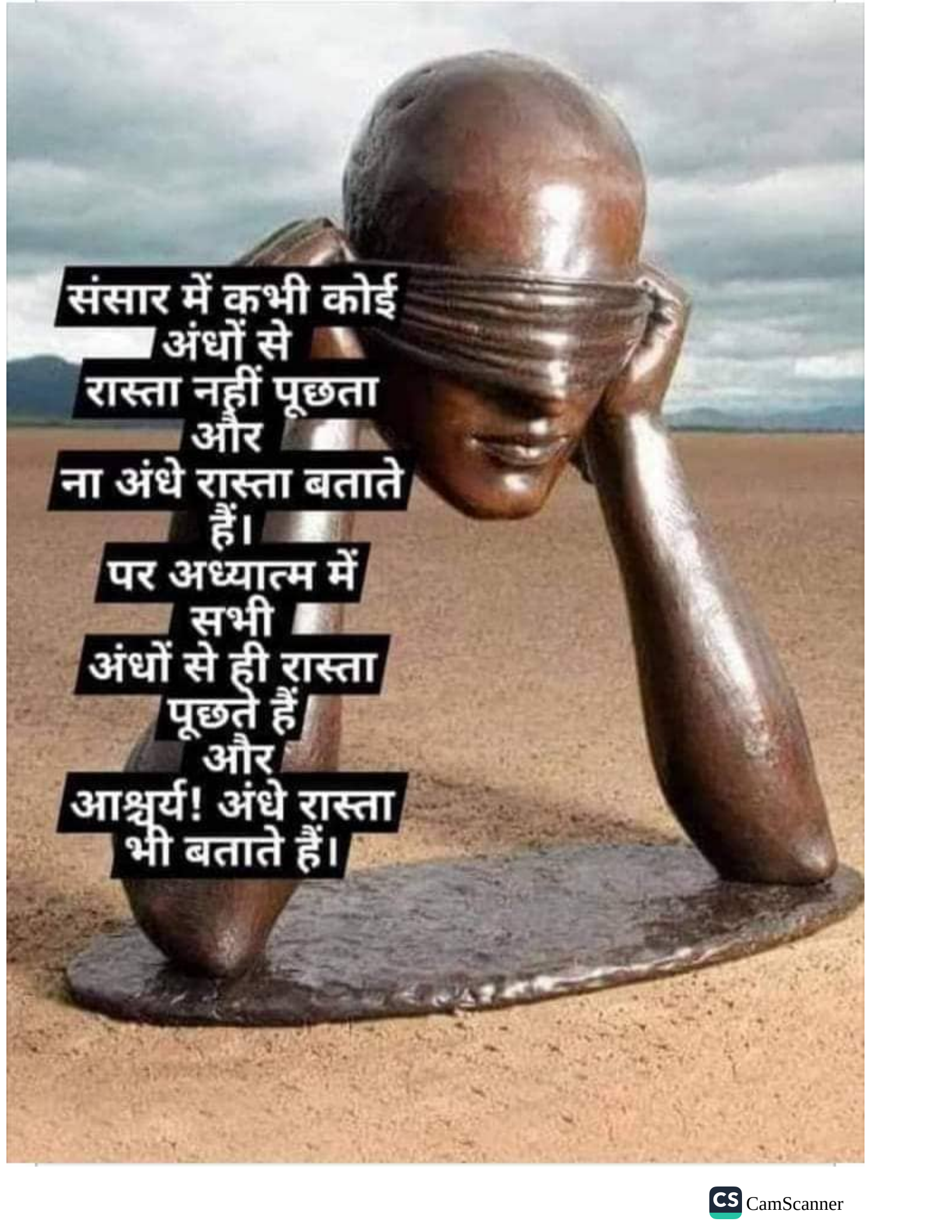
ध्यान रखो जब तक तुम दूसरे को प्रभावित करना चाहते हो, तब तक तुम अहंकार से ग्रस्त हो। आत्मा किसी को प्रभावित करना नहीं चाहती। दूसरे को प्रभावित करने में सार भी क्या है! पानी पर बनायी हुई लकीरों जैसा है।

क्या होगा मुझे दस हजार लोग प्रभावित हों कि दस करोड़ लोग प्रभावित हों। इससे होगा क्या? उनको प्रभावित करके मैं क्या पा लूंगा। अज्ञानियों की भीड़ को प्रभावीत करने की इतनी उत्सुकता अज्ञान की खबर देती है। राजनेता दूसरों को प्रभावित करने में उत्सुक होता है समझ में आता है; लेकिन धार्मिक व्यक्ति क्यों दूसरों को प्रभावित करने में उत्सुक होगा?

जब भी तुम दूसरों को प्रभावित करना चाहते हो, तब एक बात याद रखना कि तुम आत्मस्थ नहीं हो। दूसरे को प्रभावित करने का अर्थ है कि तुम अहंकारस्थित हो। अहंकार दूसरे के प्रभाव को भोजन की तरह उपलब्ध करता है; उसी पर वह जीता है। जितनी आंखें मुझे पहचान लें, उतना मेरा अहंकार बड़ा होता है। अगर सारी दुनिया मुझे पहचान ले, मेरा अहंकार सर्वोत्कृष्ट हो जाता है। कोई मुझे न पहचाने गांव से निकलूं सड़क से गुजरूं, कोई देखे न, कोई रेकगनीशन नहीं, कोई प्रत्यभिज्ञा नहीं; किसी की आंख में झलक न आये, लगे ऐसा जैसा कि मैं हूं ही नहीं बस, वहां अहंकार को चोट है।

अहंकार चाहता है कि दूसरे ध्यान दें। यह बड़े मजे की बात है अहंकार ध्यान नहीं करना चाहता; दूसरे उस पर ध्यान करें.., सारी दुनिया उसकी तरफ देखे, वह केंद्र हो जाए।

धार्मिक व्यक्ति, दूसरा मेरी तरफ देखे, इसकी फिक्र नहीं करता; मैं अपनी तरफ देखूं क्योंकि अंततः वही मेरे साथ जाएगा। राह तो बच्चों की बात हुई। बच्चे खुश होते हैं कि दूसरे उनकी प्रशंसा करें। सर्टिफिकेट घर लेकर आते हैं तो नाचते-कूदते आते हैं। लेकिन बुढ़ापे में भी तुम सर्टिफिकेट मांग रहे हो तब तुमने जिंदगी गंवा दी! सिद्धि की आकांक्षा दूसरे को प्रभावित करने में है। धार्मिक व्यक्ति की वह आकांक्षा नहीं है। वही तो सांसारिक का स्वभाव है।

A bronze sculpture of a man's head and shoulders, blindfolded with a thick, textured band. The man's face is serene, with a slight smile. He is holding the band with his right hand. The sculpture is set against a backdrop of a vast, flat, sandy landscape under a cloudy sky.

संसार में कभी कोई
अंधों से
रास्ता नहीं पूछता
और
ना अंधे रास्ता बताते
हैं।

पर अध्यात्म में
सभी
अंधों से ही रास्ता
पूछते हैं
और
आश्चर्य! अंधे रास्ता
भी बताते हैं।



साधारण मालूम हाता हा। तुम्हारे गुरु के सामने तो तुम काइ भा नहा हा,
कुछ भी नहीं हो। तुम्हारा उनसे क्या मुकाबला! अब तक सोचता था
तुम्हारा कोई मुकाबला नहीं; अब सोचता हूं तुम्हारा उनसे क्या
मुकाबला! इतना फर्क क्यों है? और जो तुम्हारे गुरु के जीवन में हो
सका, तुम्हारे जीवन में क्यों नहीं हो पाया?

तानसेन ने कहा : कठिन नहीं है मामला, सीधा-साफ है। मैं बजाता हूं
आपके लिए; मेरे गुरु बजाते हैं परमात्मा के लिए। मैं बजाता हूं कुछ
पुरस्कार पाने के लिए। क्षुद्र पुरस्कार--धन, पद, प्रतिष्ठा। मेरे गुरु बजाते
हैं अहोभाव से, किसी पुरस्कार को पाने के लिए नहीं। मैं बजाता हूं कुछ
पाने के लिए; मेरे गुरु बजाते हैं क्योंकि उन्होंने कुछ पा लिया है। उस
पाने बजना उठता है। मैं तो भिखारी हूं, वे सम्राट हैं।

जिस दिन तुम परमात्मा के लिए श्रृंगार करोगे, उसके लिए फूलों की सेज
सजाओगे, उसी दिन तुम्हारे जीवन में आनंद, उसी दिन तुम्हारे जीवन में
संगीत, उसी दिन तुम्हारे जीवन में अर्थ. . . उसके पहले तो सब व्यर्थता
है।

"कापर करै सिंगार, फूल की सेज बिछावै।"

और कहते पलटूदास के लोगों को मैं देखता हूं--बड़ा श्रृंगार कर रहे हैं,
बड़ी फूलों की सेज सजा रहे हैं, मकान बना रहे हैं, व्यवस्थाएं जुटा रहे
हैं! . . . किसलिए? किसके लिए?

"कापर करै सिंगार, फूल की सेज बिछावै।"

किसको रिझाने के लिए यह आयोजन चल रहा है? और यहां हाथ से
बसंत निकला जा रहा है।

"पलटू ऋतु भरि खेलि ले, फिर पछतावै अंत।

क्या सोवै तू बावरी, चाला जात बसंत।।"

"पलटू ऋतु भरि खेलि ले". . .। यह जो छोटा-सा क्षण मिला है, यह जो
जीवन मिला है, इसको रस से मदमत्त, प्रभु के प्रेम में मस्त, खेलि ले,
नाच ले, क्रीड़ा कर ले। यह जिसने दिया है उसी के चरणों में समर्पित कर
दे।

-- अजहू चेत गवांर # 5

   ओशो...

संकलन-रामजी  

**जिसे भी हम स्वीकार कर लें,
वही हमें पीड़ा पहुंचाने में
असमर्थ हो जाता है!!**



॥ओशो नमन॥

जिसे भी हम स्वीकार कर लें, वही हमें पीड़ा पहुंचाने में असमर्थ हो जाता है।

सुबह आती है, तो मैं सुबह को स्वीकार कर लेता हूँ और सांझ आती है, तो सांझ को। प्रकाश का भी आनंद है और अंधकार का भी। जब से यह जाना, तब से दुख नहीं जाना है।

किसी आश्रम से एक साधु बाहर गया था। लौटा तो उसे ज्ञात हुआ कि उसका एकमात्र पुत्र मर गया है और उसकी शवयात्रा अभी राह में ही होगी। वह दुख में पागल हो गया। उसे खबर क्यों नहीं की गई? वह आवेश में अंधा दौड़ा हुआ शमशान की ओर चला। शव मार्ग में ही था। उसके गुरु शव के पास ही चल रहे थे। उसने दौड़कर उन्हें पकड़ लिया। दुख में वह मूर्छित-सा हो गया था। फिर अपने गुरु से उसने प्रार्थना की : "दो शब्द सांत्वना के कहें। मैं पागल हुआ जा रहा हूँ।" गुरु ने कहा : "शब्द क्यों, सत्य ही जानो। उससे बड़ी कोई सांत्वना नहीं।" और, उन्होंने शव पेटिका के ढक्कन को खोला और उससे कहा : "देखो - 'जो है', उसे देखो।" उसने देखा। उसके आंशू थम गए। सामने मृत देह थी। वह देखता रहा और एक अंतर्दृष्टि का उसके भीतर जन्म हो गया। जो है - है, उसमें रोना-हंसना क्या? जीवन एक सत्य है, तो मृत्यु भी एक सत्य है। जो है - है। उससे अन्यथा चाहने से ही दुख पैदा होता है।

एक समय मैं बहुत बीमार था। चिकित्सक भयभीत थे और प्रियजनों की आंखों में विषाद छा गया था। और, मुझे बहुत हंसी आ रही थी, मैं मृत्यु को जानने को उत्सुक था। मृत्यु तो नहीं आई, लेकिन एक सत्य अनुभव में आ गया।

जिसे भी हम स्वीकार कर लें, वही हमें पीड़ा पहुंचाने में असमर्थ हो जाता है।

🌸 आचार्य रजनीश ओशो 🌸



.
. .
.

... ..



#neardeathexperiences

4K videos • 1.1K channels

All

Shorts



मैंने भगवान को देखा। मृत्यु को मात दे कर लौटी - सत्य अनुभव...

Adhyatmik Yatra

26 lakh views • 1 month ago



Near Death Experience Researcher Outlines His...

Crossing Over NDE

13K views • 9 days ago



Man Falls From Cliff; Sees His Passed Away ...

The Other Side NDE

32K views • 9 days ago



Neuroscientist Recounts Amazingly Detailed Nea...

Crossing Over NDE

42K views • 3 weeks ago



Radio Host Dies For 8 Minutes; Meets The Cr...

The Other Side NDE



Man Dies, Entered A Realm, Sees Beings, & S...

NDE Diary



मैंने भगवान को देखा। मृत्यु को मात दे..

Adhyatmik Yatra



Home



Shorts



Subscriptions



You



साफ्ट भाव का मुस्कराहट ह।

श्री त्रिजटा अघोरी जी ने तन्त्र के क्षेत्र में कई कीर्तिमान कायम किये हैं। जब अघोरी त्रिजटा जी एक बार साधना में बैठ जाते हैं तो बिना हिले डुले, बिना कुछ खाये पीये, बिना आसन से उठे, बीस पच्चीस दिन तक एक ही आसन पर जमे रह कर साधना सिद्ध करके ही अपने आसन से उठते हैं। भूत प्रेत तो जैसे इसके सेवक-सेविकाएं हैं। यह उनको घुड़कता है, डांटता है, फटकारता है और कभी कभी क्रोधावेश में उन पर सात प्रहार भी कर लेता है।

कोई भी गुरु भाई त्रिजटा के पास जा सकता है। उसके पास बैठ सकता है। यदि मन में बल और साहस है तो उनसे साधना का ज्ञान ले सकता है। श्री त्रिजटा अघोरी जी ऊपर से तो कठोर हैं, पर अन्दर से अत्यधिक नरम, मधुर और आनन्दयुक्त हैं।

► !! सनातन धर्म की जय हो !! ► — at अघोरी का कोए ठिकाणा ना.



🙏 परमहंस श्री त्रिजटा अघोरी जी 🙏

देहरादून से सहस्रधारा और सहस्रधारा से 157 मील दूर भैरव पहाड़ी जिसकी चढ़ाई अत्यन्त कठिन और विकट मानी जाती है। सारा पहाड़ी क्षेत्र जंगली हिंसक पशुओं से भरा पड़ा है और पहाड़ी की सबसे उंची चोटी पर स्थित है महाकाल रौद्र व भैरव का मन्दिर, जो अपने आप में सप्राण, सचेतन है और यहीं पर साधना करते हैं संसार के सबसे बड़े तांत्रिक श्री परमहंस शिरोमणी त्रिजटा अघोरी जी।

त्रिजटा अघोरी का नाम लेते ही शरीर में कंपकंपी सी छूट जाती हैं। लम्बा चौड़ा डीलडोल भारी भरकम शरीर, इस पर भी फूर्ती इतनी कि एक ही सांस में उबड़ खाबड़ पहाड़ी पर दौड़ते हुए चढ़ जाना। शरीर में बल इतना कि दो मजबूत जवान सांडों को दोनों हाथों की मुठियों में पकड़ कर परस्पर भिड़ा देना। कद्दावर जंगली बकरे को एक ही हाथ में पकड़ सैकड़ों फीट ऊपर उछाल देना और बोली ऐसी कि जैसे दो भयानक बादल आपस में टकरा कर गर्जना कर रहे हों।

पर तन्त्र के क्षेत्र में यह व्यक्तित्व अपने आप में अपराजेय है। कठिन से कठिन तांत्रिक साधनाएं सिद्ध कर रखी हैं। औघड़ साधनाओं से लेकर श्मशान साधनाओं तक अपने आप में अपराजेय और प्रतिम है। यह ज्ञानगंज सिद्धाधम का एक ऐसा सिद्ध योगी है जो केवल तन्त्र के बल पर सिद्धाश्रम में प्रवेश पा सका है।

कायाकल्प करना, वृद्धावस्था को मिटा कर पूर्ण यौवनमय बना देना, आकाश में विचरण करना और अपने प्राणों को शरीर से निकाल कर दूसरे मुर्दा शरीर में प्रवेश कर परकाया प्रवेश सिद्ध कर देना, शून्य मार्ग से वस्तुएं प्राप्त करना, जल गमन करना आदि इस तांत्रिक के लिए बांये हाथ का खेल है। इतनी शक्ति होने पर भी बालक सा सरल स्वभाव और सॉफ्ट भाव की मुस्कराहट है।

श्री त्रिजटा अघोरी जी ने तन्त्र के क्षेत्र में कई कीर्तिमान कायम किये हैं। जब अघोरी त्रिजटा जी एक बार साधना में बैठ जाते हैं तो बिना हिले डुले, बिना कुछ खाये पीये, बिना आसन से उठे, बीस पच्चीस दिन तक

गन्त श्री .आगत गन्त जन्ते गन्त गन्त गन्त गन्त गन्त श्री .आगत .आगत गन्त

इतिहास कौन लिखता है;
कौन लिखवाता है? और फिर
सदियों तक जो बात लिखी
गयी, उसे हम दोहराते चले
जाते हैं। -ओशो*



न भी हुआ हो। जीसस के संबंध में भी वही बात है।

ये तो दूर की बातें हो गईं, *इंग्लैंड का एक बहुत बड़ा इतिहासज्ञ एडमंड बर्क विश्व इतिहास लिख रहा था।* उसने उस पर कोई 30 साल मेहनत की थी। सारा जीवन उस पर लगाया था और एक दिन ऐसा हुआ कि उसने पूरी की पूरी जीवनभर की मेहनत आग में डाल दी एक छोटी सी घटना के कारण। उसके घर के पीछे, घर के ठीक पीछे हत्या हो गई। वह तो अपना इतिहास लिखने में लगा था। शोरगुल सुना, भीड़-भाड़ इकट्ठी हुई तो वह भी बाहर निकलकर पहुंचा। भीड़ लग गई थी, लाश पड़ी थी। जिस आदमी ने हत्या की थी, रंगे हाथों पकड़ा गया था। उसको भी लोग पकड़े हुए थे। उसके हाथ में छुरा था, उसके कपड़ों पर खून की धार थी। अभी अभी घटना घटी थी, ताजी थी। खून अभी गरम था। और कोई दो सौ आदमियों की भीड़ लग गई थी। सारा मोहल्ला इकट्ठा हो गया था। और बर्क ने अलग-अलग लोगों से पूछा कि हुआ क्या? एक ने कुछ कहा, दूसरे ने कुछ कहा, तीसरे ने कुछ कहा। अभी खून भी गरम था। अभी लाश भी गरम थी। अभी हत्यारा रंगे हाथ पकड़ा सामने खड़ा था, लेकिन लोगों के वक्तव्य अलग अलग थे, विपरीत थे, विरोधी थे; एक-दूसरे का खंडन करनेवाले थे। और वे सब चश्मदीद गवाह थे। बर्क गया अंदर, *उसने अपनी तीस साल की मेहनत आग में डाल दी।*

उसने कहा, अगर मेरे घर के पीछे एक घटना घटती है, आंखों देखे लोग मौजूद हैं, अभी-अभी घटी है, खून भी सूखा नहीं है, ठंडा भी नहीं हुआ है, लाश अभी गरम है, आदमी पकड़ा गया है और उनसे भी मैं यह निष्कर्ष नहीं निकाल पाता कि वस्तुतः हुआ क्या है!

और मैं दुनिया का इतिहास लिखने बैठा हूं कि पांच हजार साल पहले वेद किसने लिखा था! उसे बात ही फिजूल मालूम पड़ी। उसने कहा, मेरे तीस साल व्यर्थ गए।

- ओशो

.
.

.

#ओशो #osho #oshoravi #oshoraviyog





अटल क़ानून

सुग्रीव के भाई बाली ने तपस्या करके वर लिया था कि जो भी लड़ने के लिए उसके सामने आये, उसका आधा बल बाली में आ जाये। इसी कारण जब भी सुग्रीव उससे लड़ाई करने जाता, पराजित होकर लौटता। इस तरह बाली की शक्ति हमेशा बढ़ जाती, जब कि उसके दुश्मन की ताक़त क्षीण हो जाती।

श्री रामचन्द्र जी को इस भेद का पता था। जब सुग्रीव बाली के खिलाफ़ मदद लेने उनके पास आया तो अपना बल सुरक्षित रखने के लिए उन्होंने पेड़ों की ओट में खड़े होकर बाली पर तीर चलाया और उसे मार डाला। मरते समय बाली ने रामचन्द्र जी से कहा, 'मैं बेक़सूर था, मैंने आपका कुछ नहीं बिगाड़ा था। अब इसका हिसाब आपको अगले जन्म में देना पड़ेगा।'

सो अगले जन्म में रामचन्द्र जी श्री कृष्ण बने और बाली भील बना। जब कृष्ण महाभारत के युद्ध के बाद एक दिन जंगल में पाँव पर पाँव रखकर सो रहे थे, तो भील ने दूर से समझा कि कोई हिरन है, उनके पैर में पद्म का चिह्न था जो धूप में चमककर हिरन की आँख जैसा लग रहा था। उसने तीर-कमान उठाया और निशाना बाँधकर तीर छोड़ा जो श्री कृष्ण को लगा।

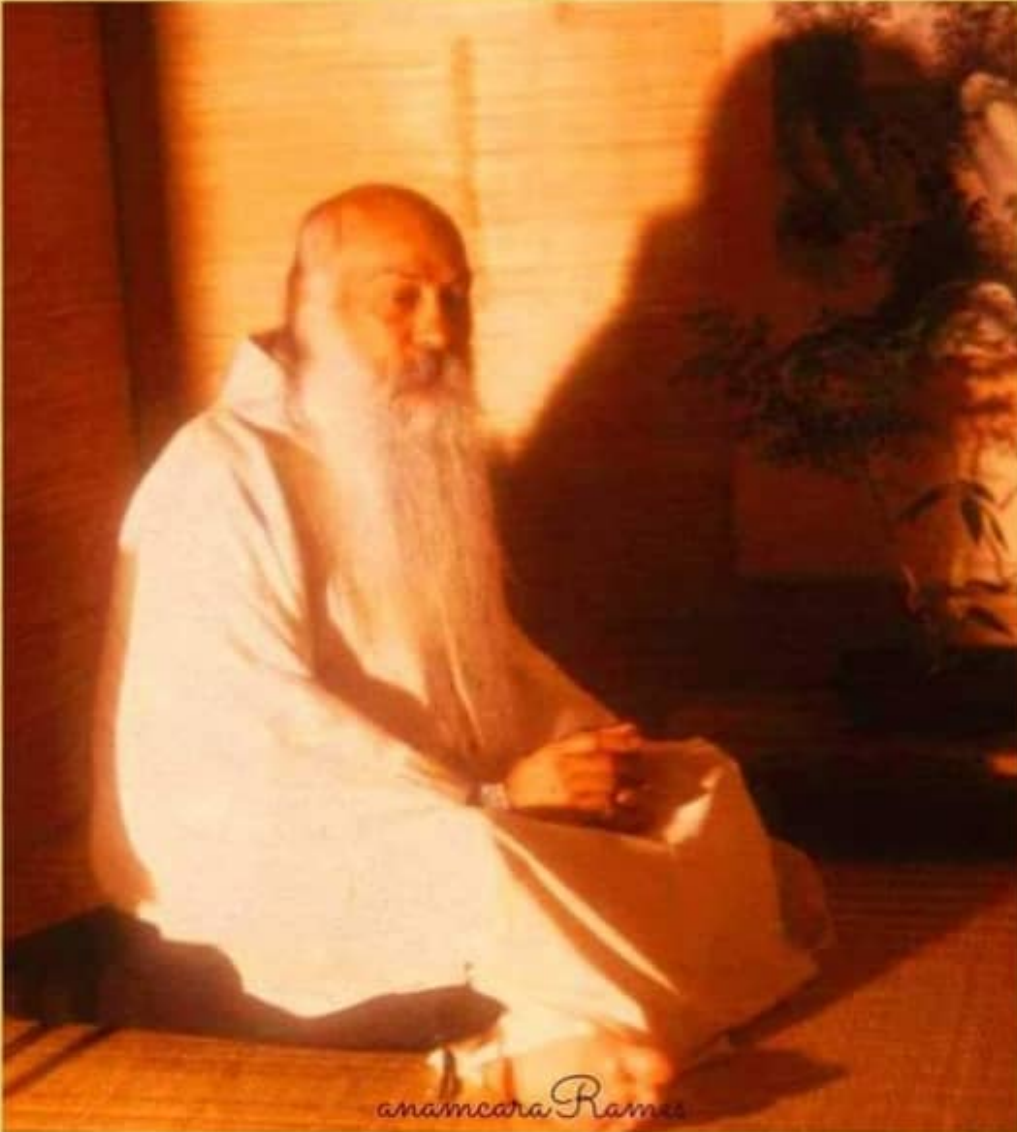
जब भील अपना शिकार उठाने के लिए पास आया तो उसे अपनी भयंकर भूल का पता चला। दोनों हाथ जोड़कर वह श्री कृष्ण जी से अपने घोर पाप की क्षमा माँगने लगा। उस समय श्री कृष्ण ने उसे पिछले जन्म की घटना सुनायी और उसे समझाया कि इसमें उसका कोई दोष नहीं था, यह तो होना ही था। उन्हें अपने कर्मों का कर्जा चुकाना ही था।

कर्मों का क़ानून अटल है। कोई भी इससे बच नहीं सकता, अवतारी पुरुष तक भी नहीं।

ओशो सूत्र

जो प्रभु को मंजिल बनाते हैं, वे भटक जाते हैं।

सब मंजिलों से मुक्त होते ही चेतना जहां पहुंच जाती है,
वही परमात्मा है।



आचार्य श्री रजनीश

रजनीश के प्रणाम-१९/११/१९६९



फल ले कर कोतवाल जब महल से बाहर निकला तो सोचने लगा कि रानी के साथ तो मुझे धन-दौलत के लिए झूठ-मूठ ही प्रेम का नाटक करना पड़ता है। और यह फल खाकर मैं भी क्या करूंगा। इसे मैं अपनी परम मित्र राज [#नर्तकी](#) को दे देता हूं। वह कभी मेरी कोई बात नहीं टालती। मैं उससे प्रेम भी करता हूं। और यदि वह सदा युवा रहेगी, तो दूसरों को भी सुख दे पाएगी। उसने वह फल अपनी उस नर्तकी मित्र को दे दिया।

राज नर्तकी ने कोई उत्तर नहीं दिया और चुपचाप वह अमर फल अपने पास रख लिया। कोतवाल के जाने के बाद उसने सोचा कि कौन मूर्ख यह पाप भरा जीवन लंबा जीना चाहेगा। हमारे देश का राजा बहुत अच्छा है, उसे ही लंबा जीवन जीना चाहिए। यह सोच कर उसने किसी प्रकार से राजा से मिलने का समय लिया और एकांत में उस फल की महिमा सुना कर उसे राजा को दे दिया। और कहा कि महाराज, आप इसे खा लेना।

राजा फल को देखते ही पहचान गया और [#भौंचक](#) रह गया। पूछताछ करने से जब पूरी बात मालूम हुई, तो उसे वैराग्य हो गया और वह राज-पाट छोड़ कर जंगल में चला गया। वहीं उसने वैराग्य पर 100 श्लोक लिखे जो कि वैराग्य शतक के नाम से प्रसिद्ध हैं। यही इस संसार की [#वास्तविकता](#) है। एक व्यक्ति किसी अन्य से प्रेम करता है और चाहता है कि वह व्यक्ति भी उसे उतना ही प्रेम करे। परंतु विडंबना यह कि वह दूसरा व्यक्ति किसी अन्य से प्रेम करता है।

इसका कारण यह है कि संसार व इसके सभी प्राणी [#अपूर्ण](#) हैं। सब में कुछ न कुछ कमी है। सिर्फ एक [#ईश्वर_पूर्ण](#) है। एक वही है जो हर जीव से उतना ही प्रेम करता है, जितना जीव उससे करता है। बस हमीं उसे सच्चा प्रेम नहीं

~ओशो



#भर्तृहरि ..वे कवि भी थे।

उनकी #पत्नी अत्यंत #रूपवती थीं। भर्तृहरि ने स्त्री के #सौंदर्य और उसके बिना जीवन के सूनेपन पर 100 श्लोक लिखे, जो #शृंगार शतक के नाम से प्रसिद्ध हैं।

उन्हीं के राज्य में एक ब्राह्मण भी रहता था, जिसने अपनी निःस्वार्थ पूजा से देवता को प्रसन्न कर लिया। देवता ने उसे वरदान के रूप में #अमर_फल देते हुए कहा कि इससे आप लंबे समय तक युवा रहोगे। ब्राह्मण ने सोचा कि भिक्षा मांग कर जीवन बिताता हूं, मुझे लंबे समय तक जी कर क्या करना है। हमारा #राजा बहुत अच्छा है, उसे यह फल दे देता हूं। वह लंबे समय तक जीएगा तो #प्रजा भी लंबे समय तक सुखी रहेगी। वह राजा के पास गया और उनसे सारी बात बताते हुए वह फल उन्हें दे आया।

राजा फल पाकर प्रसन्न हो गया। फिर मन ही मन सोचा कि यह फल मैं अपनी पत्नी को दे देता हूं। वह ज्यादा दिन युवा रहेगी तो ज्यादा दिनों तक उसके साहचर्य का लाभ मिलेगा। अगर मैंने फल खाया तो वह मुझ से पहले ही मर जाएगी और उसके वियोग में मैं भी नहीं जी सकूंगा। उसने वह फल अपनी पत्नी को दे दिया।

लेकिन, रानी तो नगर के #कोतवाल से प्यार करती थी। वह अत्यंत सुदर्शन, हृष्ट-पुष्ट और बातूनी था। अमर फल उसको देते हुए रानी ने कहा कि इसे खा लेना, इससे तुम लंबी आयु प्राप्त करोगे और मुझे सदा प्रसन्न करते रहोगे। फल ले कर कोतवाल जब महल से बाहर निकला तो सोचने लगा कि रानी के साथ तो मुझे धन-दौलत के लिए झूठ-मूठ ही प्रेम का नाटक करना पड़ता है। और यह फल खाकर मैं भी क्या करूंगा। इसे मैं अपनी परम मित्र राज #नर्तकी को दे देता हूं। वह कभी मेरी कोई बात नहीं टालती। मैं उससे प्रेम भी करता हूं। और यदि वह



साफ्ट भाव का मुस्कराहट ह।

श्री त्रिजटा अघोरी जी ने तन्त्र के क्षेत्र में कई कीर्तिमान कायम किये हैं। जब अघोरी त्रिजटा जी एक बार साधना में बैठ जाते हैं तो बिना हिले डुले, बिना कुछ खाये पीये, बिना आसन से उठे, बीस पच्चीस दिन तक एक ही आसन पर जमे रह कर साधना सिद्ध करके ही अपने आसन से उठते हैं। भूत प्रेत तो जैसे इसके सेवक-सेविकाएं हैं। यह उनको घुड़कता है, डांटता है, फटकारता है और कभी कभी क्रोधावेश में उन पर सात प्रहार भी कर लेता है।

कोई भी गुरु भाई त्रिजटा के पास जा सकता है। उसके पास बैठ सकता है। यदि मन में बल और साहस है तो उनसे साधना का ज्ञान ले सकता है। श्री त्रिजटा अघोरी जी ऊपर से तो कठोर हैं, पर अन्दर से अत्यधिक नरम, मधुर और आनन्दयुक्त हैं।

► !! सनातन धर्म की जय हो !! ► — at अघोरी का कोए ठिकाणा ना.



🙏 परमहंस श्री त्रिजटा अघोरी जी 🙏

देहरादून से सहस्रधारा और सहस्रधारा से 157 मील दूर भैरव पहाड़ी जिसकी चढ़ाई अत्यन्त कठिन और विकट मानी जाती है। सारा पहाड़ी क्षेत्र जंगली हिंसक पशुओं से भरा पड़ा है और पहाड़ी की सबसे उंची चोटी पर स्थित है महाकाल रौद्र व भैरव का मन्दिर, जो अपने आप में सप्राण, सचेतन है और यहीं पर साधना करते हैं संसार के सबसे बड़े तांत्रिक श्री परमहंस शिरोमणी त्रिजटा अघोरी जी।

त्रिजटा अघोरी का नाम लेते ही शरीर में कंपकंपी सी छूट जाती हैं। लम्बा चौड़ा डीलडोल भारी भरकम शरीर, इस पर भी फूर्ती इतनी कि एक ही सांस में उबड़ खाबड़ पहाड़ी पर दौड़ते हुए चढ़ जाना। शरीर में बल इतना कि दो मजबूत जवान सांडों को दोनों हाथों की मुठियों में पकड़ कर परस्पर भिड़ा देना। कद्दावर जंगली बकरे को एक ही हाथ में पकड़ सैकड़ों फीट ऊपर उछाल देना और बोली ऐसी कि जैसे दो भयानक बादल आपस में टकरा कर गर्जना कर रहे हों।

पर तन्त्र के क्षेत्र में यह व्यक्तित्व अपने आप में अपराजेय है। कठिन से कठिन तांत्रिक साधनाएं सिद्ध कर रखी हैं। औघड़ साधनाओं से लेकर श्मशान साधनाओं तक अपने आप में अपराजेय और प्रतिम है। यह ज्ञानगंज सिद्धाधम का एक ऐसा सिद्ध योगी है जो केवल तन्त्र के बल पर सिद्धाश्रम में प्रवेश पा सका है।

कायाकल्प करना, वृद्धावस्था को मिटा कर पूर्ण यौवनमय बना देना, आकाश में विचरण करना और अपने प्राणों को शरीर से निकाल कर दूसरे मुर्दा शरीर में प्रवेश कर परकाया प्रवेश सिद्ध कर देना, शून्य मार्ग से वस्तुएं प्राप्त करना, जल गमन करना आदि इस तांत्रिक के लिए बांये हाथ का खेल है। इतनी शक्ति होने पर भी बालक सा सरल स्वभाव और सॉफ्ट भाव की मुस्कराहट है।

श्री त्रिजटा अघोरी जी ने तन्त्र के क्षेत्र में कई कीर्तिमान कायम किये हैं। जब अघोरी त्रिजटा जी एक बार साधना में बैठ जाते हैं तो बिना हिले डुले, बिना कुछ खाये पीये, बिना आसन से उठे, बीस पच्चीस दिन तक

गन्त श्री .यागज गज जगते गज गज गगनाज गिज गजने श्री .यागजे .यागज गे

इतिहास कौन लिखता है;
कौन लिखवाता है? और फिर
सदियों तक जो बात लिखी
गयी, उसे हम दोहराते चले
जाते हैं। -ओशो*



न भी हुआ हो। जीसस के संबंध में भी वही बात है।

ये तो दूर की बातें हो गईं, *इंग्लैंड का एक बहुत बड़ा इतिहासज्ञ एडमंड बर्क विश्व इतिहास लिख रहा था।* उसने उस पर कोई 30 साल मेहनत की थी। सारा जीवन उस पर लगाया था और एक दिन ऐसा हुआ कि उसने पूरी की पूरी जीवनभर की मेहनत आग में डाल दी एक छोटी सी घटना के कारण। उसके घर के पीछे, घर के ठीक पीछे हत्या हो गई। वह तो अपना इतिहास लिखने में लगा था। शोरगुल सुना, भीड़-भाड़ इकट्ठी हुई तो वह भी बाहर निकलकर पहुंचा। भीड़ लग गई थी, लाश पड़ी थी। जिस आदमी ने हत्या की थी, रंगे हाथों पकड़ा गया था। उसको भी लोग पकड़े हुए थे। उसके हाथ में छुरा था, उसके कपड़ों पर खून की धार थी। अभी अभी घटना घटी थी, ताजी थी। खून अभी गरम था। और कोई दो सौ आदमियों की भीड़ लग गई थी। सारा मोहल्ला इकट्ठा हो गया था। और बर्क ने अलग-अलग लोगों से पूछा कि हुआ क्या? एक ने कुछ कहा, दूसरे ने कुछ कहा, तीसरे ने कुछ कहा। अभी खून भी गरम था। अभी लाश भी गरम थी। अभी हत्यारा रंगे हाथ पकड़ा सामने खड़ा था, लेकिन लोगों के वक्तव्य अलग अलग थे, विपरीत थे, विरोधी थे; एक-दूसरे का खंडन करनेवाले थे। और वे सब चश्मदीद गवाह थे। बर्क गया अंदर, *उसने अपनी तीस साल की मेहनत आग में डाल दी।*

उसने कहा, अगर मेरे घर के पीछे एक घटना घटती है, आंखों देखे लोग मौजूद हैं, अभी-अभी घटी है, खून भी सूखा नहीं है, ठंडा भी नहीं हुआ है, लाश अभी गरम है, आदमी पकड़ा गया है और उनसे भी मैं यह निष्कर्ष नहीं निकाल पाता कि वस्तुतः हुआ क्या है!

और मैं दुनिया का इतिहास लिखने बैठा हूं कि पांच हजार साल पहले वेद किसने लिखा था! उसे बात ही फिजूल मालूम पड़ी। उसने कहा, मेरे तीस साल व्यर्थ गए।

- ओशो

.
.
 .

#ओशो #osho #oshoravi #oshoraviyog





अटल क़ानून

सुग्रीव के भाई बाली ने तपस्या करके वर लिया था कि जो भी लड़ने के लिए उसके सामने आये, उसका आधा बल बाली में आ जाये। इसी कारण जब भी सुग्रीव उससे लड़ाई करने जाता, पराजित होकर लौटता। इस तरह बाली की शक्ति हमेशा बढ़ जाती, जब कि उसके दुश्मन की ताक़त क्षीण हो जाती।

श्री रामचन्द्र जी को इस भेद का पता था। जब सुग्रीव बाली के खिलाफ़ मदद लेने उनके पास आया तो अपना बल सुरक्षित रखने के लिए उन्होंने पेड़ों की ओट में खड़े होकर बाली पर तीर चलाया और उसे मार डाला। मरते समय बाली ने रामचन्द्र जी से कहा, 'मैं बेक़सूर था, मैंने आपका कुछ नहीं बिगाड़ा था। अब इसका हिसाब आपको अगले जन्म में देना पड़ेगा।'

सो अगले जन्म में रामचन्द्र जी श्री कृष्ण बने और बाली भील बना। जब कृष्ण महाभारत के युद्ध के बाद एक दिन जंगल में पाँव पर पाँव रखकर सो रहे थे, तो भील ने दूर से समझा कि कोई हिरन है, उनके पैर में पद्म का चिह्न था जो धूप में चमककर हिरन की आँख जैसा लग रहा था। उसने तीर-कमान उठाया और निशाना बाँधकर तीर छोड़ा जो श्री कृष्ण को लगा।

जब भील अपना शिकार उठाने के लिए पास आया तो उसे अपनी भयंकर भूल का पता चला। दोनों हाथ जोड़कर वह श्री कृष्ण जी से अपने घोर पाप की क्षमा माँगने लगा। उस समय श्री कृष्ण ने उसे पिछले जन्म की घटना सुनायी और उसे समझाया कि इसमें उसका कोई दोष नहीं था, यह तो होना ही था। उन्हें अपने कर्मों का कर्जा चुकाना ही था।

कर्मों का क़ानून अटल है। कोई भी इससे बच नहीं सकता, अवतारी पुरुष तक भी नहीं।

**Osho Osho**

3h · 🌐



वह आदमी व्यर्थ जी रहा है, जिसके पास एक घंटा भी अपने लिए नहीं है। वह आदमी जी ही नहीं रहा, जो एक घंटा भी अपनी इस भीतर की खोज के लिए नहीं लगा रहा है। क्योंकि आखिर में जब सारा हिसाब होता है, तो जो भी हमने शरीर के तल पर कमाया है, वह तो मौत छीन लेती है; और जो हमने भीतर के तल पर कमाया है, वही केवल मौत नहीं छीन पाती। वही हमारे साथ होता है।

इसे खयाल रखें कि मौत आपसे कुछ छीनेगी, उस समय आपके पास बचाने योग्य है, कुछ भी? अगर नहीं है, तो जल्दी करें। और एक घंटा कम से कम रोज क्षेत्रज्ञ की तलाश में लगा दें।

इतना ही करें, बैठ जाएं घंटेभर। कुछ भी न करें, एक बहुत छोटा-सा प्रयोग करें। इतना ही करें कि तादात्म्य न करूंगा घंटेभर, आइडेंटिफिकेशन न करूंगा घंटेभर। घंटेभर बैठ जाएं। पैर में चींटी काटेगी, तो मैं ऐसा अनुभव करूंगा कि चींटी काटती है, ऐसा मुझे पता चल रहा है। मुझे चींटी काट रही है, ऐसा नहीं।

इसका यह मतलब नहीं कि चींटी काटती रहे और आप अकड़कर बैठे रहें। आप चींटी को हटा दें, लेकिन यह ध्यान रखें कि मैं जान रहा हूं कि शरीर चींटी को हटा रहा है। चींटी काट रही है, यह भी मैं जान रहा हूं। शरीर चींटी को हटा रहा है, यह भी मैं जान रहा हूं। सिर्फ मैं जान रहा हूं।

पैर में दर्द शुरू हो गया बैठे-बैठे, तो मैं जान रहा हूं कि पैर में दर्द आ गया। फिर पैर को फैला लें। कोई जरूरत नहीं है कि उसको अकड़ाकर बैठे रहें और परेशान हों। पैर को फैला लें। लेकिन जानते रहें कि पैर फैल रहा है कष्ट के कारण, मैं जान रहा हूं।

भीतर एक घंटा एक ही काम करें कि किसी भी कृत्य से अपने को न जोड़े, और किसी भी घटना से अपने को न जोड़े। आप एक तीन महीने के भीतर ही गीता के इस सूत्र को अनुभव करने लगेंगे, जो कि आप तीस जन्मों तक भी गीता पढ़ते रहें, तो अनुभव नहीं होगा। एक घंटा, मैं

गिफ्ट नामा तं त्मसे त्ने गते। तत्तु भी तो गन्ती त्नेर से तर्जत गत्तु



इसका यह मतलब नहीं कि चींटी काटती रहे और आप अकड़कर बैठे रहें। आप चींटी को हटा दें, लेकिन यह ध्यान रखें कि मैं जान रहा हूँ कि शरीर चींटी को हटा रहा है। चींटी काट रही है, यह भी मैं जान रहा हूँ। शरीर चींटी को हटा रहा है, यह भी मैं जान रहा हूँ। सिर्फ मैं जान रहा हूँ।

पैर में दर्द शुरू हो गया बैठे-बैठे, तो मैं जान रहा हूँ कि पैर में दर्द आ गया। फिर पैर को फैला लें। कोई जरूरत नहीं है कि उसको अकड़ाकर बैठे रहें और परेशान हों। पैर को फैला लें। लेकिन जानते रहें कि पैर फैल रहा है कष्ट के कारण, मैं जान रहा हूँ।

भीतर एक घंटा एक ही काम करें कि किसी भी कृत्य से अपने को न जोड़े, और किसी भी घटना से अपने को न जोड़े। आप एक तीन महीने के भीतर ही गीता के इस सूत्र को अनुभव करने लगेंगे, जो कि आप तीस जन्मों तक भी गीता पढ़ते रहें, तो अनुभव नहीं होगा। एक घंटा, मैं सिर्फ ज्ञाता हूँ इसमें डूबे रहें। कुछ भी हो, पत्नी जोर से बर्तन पटक दे...। क्योंकि पति जब ध्यान करे, तो पत्नी बर्तन पटकेगी। या पत्नी ध्यान करे, तो पति रेडिओ जोर से चला देगा, अखबार पढ़ने लगेगा, बच्चे उपद्रव मचाने लगेंगे।

जब बर्तन जोर से गिरे, तो आप यही जानना कि बर्तन गिर रहा है, आवाज हो रही है, मैं जान रहा हूँ। अगर आपके भीतर धक्का भी लग जाए, शॉक भी लग जाए, तो भी आप यह जानना कि मेरे भीतर धक्का लगा, शॉक लगा। मेरा मन विक्षुब्ध हुआ, यह मैं जान रहा हूँ। आप अपना संबंध जानने वाले से ही जोड़े रखना और किसी चीज से मत जुड़ने देना।

इससे बड़े ध्यान की कोई प्रक्रिया नहीं है। कोई जरूरत नहीं है प्रार्थना की, ध्यान की; फिर कोई जरूरत नहीं है। बस, एक घंटा इतना खयाल कर लें। थोड़े ही दिन में यह कला आपको सध जाएगी। और बताना कठिन है कि कला कैसे सधती है। आप करें, सध जाए, तो ही आपको समझ में आएगा।

ओशो,

गीता दर्शन,

भाग # 6 (प्रवचन # 151)



धारे-धारे दूसरी वीणा के तार भी कपायमान होने लगते हैं। एक धोमां सिहरन उनमें दौड़ जाती है। तानसेन या बैजू बावरा जैसे संगीतज्ञों के संबंध में कथाएं हैं कि दूसरी वीणा ठीक वही दोहराने लगती है, जो पहली वीणा कर रही है।

और अब तो इस पर वैज्ञानिक शोध हुई है और पाया गया कि यह सच है। इसको वैज्ञानिक कहते हैं: लॉ ऑफ सिन्क्रानिसिटी। अगर एक चीज बज रही हो एक ढंग से, तो उसके चारों तरफ तरंगों का एक जाल पैदा होता है। उस जाल में उसके समान-धर्मा कोई भी मौजूद हो, तो उसके भीतर भी उसी तरह की ध्वनि कंपित होने लगती है।

ज्ञानी तो वही है, जिसके पास बैठ कर तुम्हारे हृदय की वीणा कंपित होने लगे। उसका स्वर जाग गया। उसकी वीणा बज रही है, अनंत-अनंत हाथों से परमात्मा उसकी वीणा पर खेल रहा है। तुम उसके पास जाओगे, तुम्हारे हृदय के तार झंकृत होने लगेंगे। यह कोई बुद्धि का संबंध न होगा। यह एक हार्दिक संबंध होगा। इसका तालमेल प्रेम से ज्यादा होगा, ज्ञान से कम होगा। इसका तालमेल श्रद्धा से ज्यादा होगा, सोच-विचार से कम होगा। समान-धर्मा तुम्हारी आत्मा भी कंपित होने लगेगी। तुम्हारे भीतर की वीणा भी जागेगी, हिलेगी, उठेगी।

गुरु वही है, जिसके पास शिष्य रूपांतरित होने लगे।

कबीर के इन वचनों को बहुत ध्यानपूर्वक समझने की कोशिश करें।

अब मैं पाइबो रे पाइबो रे ब्रह्मज्ञान।

ये शब्द भी बड़े मिठास से भरे हैं--'पाइबो रे।' अब मैंने पा लिया! अब मैंने पा लिया!

सहज समार्धे सुख में रहिबो, कौटि कलप विश्राम।

घट गई वह घटना, जिसे सहज समाधि कहते हैं।

« < 1 2 3 4 5 > »

सपने इसे नहीं सताते हैं। क्योंकि सपने तो गहन तंद्रा में ही आते हैं। जब तुम बेहोश होते हो, तभी सपने तुम्हें आते हैं। जागे हुए व्यक्ति को वासना नहीं सताती, क्योंकि वासना एक स्वप्न है। जागे हुए व्यक्ति को लोभ नहीं सताता, क्योंकि लोभ एक स्वप्न है। जागे हुए व्यक्ति को पाप नहीं सताता, क्योंकि पाप एक स्वप्न है। और मैं तुमसे कहता हूँ, जागे हुए व्यक्ति को पुण्य भी नहीं सताता, क्योंकि पुण्य भी एक स्वप्न है। अशुभ तो सताता ही नहीं, शुभ भी नहीं सताता। न तो जागा हुआ आदमी शैतान होने की कामना करता है, और न साधु होने की कामना करता है। जागा हुआ आदमी, जागा हुआ आदमी है। अब इन स्वप्नों से कुछ लेना-देना नहीं है।

और जब जीवन सारे द्वंद्व के पार जागता है, तभी कोई कबीर की तरह खड़ा हो सकता है मेघों के नीचे--'पाइबो रे पाइबो रे ब्रह्मज्ञान।'

यह महानतम घटना है। लक्षण है आनंद। जहां तुम्हें आनंद दिखाई पड़े, भला उस आदमी में पांडित्य भी न हो, तो भी तुम पीछे उस आदमी के दौड़ना। उसके पास कोई सुवास है। और भला कोई आदमी कितने ही ज्ञान से भरा हो और उसके चेहरे पर और उसकी आंखों में तुम्हें आनंद की पुलक, रहस्य का भाव, कुछ ऐसे महत्वपूर्ण को पाने की प्रतीति न हो, जो शब्दों में कहा नहीं जा सकता, कुछ ऐसी गूढ़ता का बोध न हो, जो हृदय में तो लबालब है, लेकिन शब्द उसे बाहर नहीं ला पाते, जिसके पास बैठ कर तुम्हें किसी शांत झील का अनुभव हो, जिसके पास आकर तुम्हें सूर्य के प्रकाश का अनुभव हो, जिसके पास बैठ कर तुम्हें चांद की शीतलता मिले, अपरिचित फूलों की गंध आए, जिसके पास कोई अनजान वीणा बजने लगे, तुम्हारे हृदय के तार भी जिसे दोहराने लगें।

क्या तुम्हें पता है? संगीतज्ञ एक बड़े अनूठे अनुभव को कहते हैं। एक वीणा को रख दिया जाए कक्ष के एक कोने में, कोई छुए भी न; और कुशल संगीतज्ञ दूसरी वीणा पर गीत बजाए, राग उठाए तो तुम्हें पता है, एक अनूठी घटना घटती है--कि पहली वीणा जो कोने में रखी है, धीरे-धीरे उसी धुन को बजाने लगती है। मगर बड़ा कुशल संगीतज्ञ चाहिए। एक वीणा तो वह बजाता है। उससे उठती हुई झंकार दूसरी वीणा के तारों को छूती है। उससे उठती हुई स्वर-लहरी दूसरी वीणा पर चोट करती है।







यहाँ निवास करत ह।

स्वामी योगद्वयानन्द जी को जड़ी-बूटियों का अद्भुत ज्ञान है। यदि इनके चरणों में कोई व्यक्ति दो-चार महीने ही रह जाय, तो ऐसी-ऐसी जड़ी-बूटियों के सम्पर्क में आ जाता है, कि किसी एक जड़ी-बूटी के द्वारा ही वह लाखों करोड़ों रुपये इस भौतिक संसार में कमा सकता है।

इसके अलावा स्वामी जी को कायाकल्प का भी उच्चकोटि का ज्ञान है और कायाकल्प विद्या के ये श्रेष्ठतम आचार्य हैं। उन्हें मात्र कुछ रसायन और जड़ी-बूटियों के द्वारा केवल तीन दिन में ही वृद्ध, रोगी, जर्जर, अशक्त और अपाहिज व्यक्ति का भी कायाकल्प कर उसे पूर्ण स्वस्थ बनाते लोगों द्वारा देखा गया है।

इसके अलावा भूगर्भ ज्ञान के भी ये सिद्धहस्त आचार्य हैं। भूमि में कहाँ पर क्या चीज गड़ी हुई है, किस जगह कौन सी धातु कितनी गहराई में है, इसका ज्ञान स्वामी जी को श्रेष्ठ रूप में है। उन्होंने इससे सम्बन्धित साधनाएं अपने शिष्यों को सम्पन्न भी करवाई हैं। सबसे बड़ी बात यह है, कि इतना सब कुछ होने के बावजूद भी स्वामी जी का नरम स्वभाव है और कोई भी इनके चरणों में जाकर ज्ञान या सिद्धि प्राप्त कर सकता है।

आध्यात्मिक क्षेत्र में स्वामी जी का नाम श्रद्धा के साथ लिया जाता है। उन्होंने इस क्षेत्र में भी काफी सफलताएं प्राप्त की हैं। हिमालय के योगियों में इनका नाम कस्तूरी की तरह महकता है। वास्तव में स्वामी जी अलौकिक योग विभूतियों के पुञ्ज हैं।

किसी भी गुफा में जाने का एक नियम या तरीका होता है। साधनात्मक रूप से गुफा के अधिष्ठाता से अनुमति लेकर ही गुफा में प्रवेश करना उचित माना गया है। आध्यात्मिक जीवन में प्रवेश करने के लिए आध्यात्मिक बनना पड़ता है। कोई भी पवित्र स्थान पिकनिक स्पॉट नहीं होता। वहां श्रद्धा भावना से ही प्रवेश करना चाहिए।

► !! सनातन धर्म की जय हो !! ► — at अमरनाथ.



Sahil Sharma · 7h ·

श्री योगद्वयानन्द योगी जी

श्री योगद्वयानन्द योगी जी की आयु एक सौ अट्ठाइस वर्ष के आस-पास कही जाती है। इनसे बात करते समय ऐसा लगता है, जैसे जीवनभर इनके पास बैठे रहें और इनसे ज्ञान प्राप्त करते रहें। इनके मन में किसी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं है। परन्तु न तो किसी से कुछ मांगते हैं और न किसी से कुछ स्वीकार ही करते हैं।

वे कई वर्षों से पंचतरणी स्थान से चार या पांच किलोमीटर आगे पर्वतीय गुफा में निवास करते हैं। पंचतरणी अमरनाथ यात्रा का महत्त्वपूर्ण पड़ाव है। यहां खड़े होकर यदि सामने की ओर देखें तो यह गुफा साफ-साफ दिखाई देती है। गुफा तक पहुंचने के लिए बर्फ का कुछ भाग सावधानी से पार करना पड़ता है।

यह गुफा 'योग गुफा' कहलाती है। बाहर से इसका द्वार आठ फीट लम्बा-चौड़ा है, परन्तु अन्दर से यह गुफा बहुत बड़ी है और तीन-चार सौ साधु-संन्यासी एक साथ इस गुफा में रह सकते हैं। गुफा के अन्त में एक छोटा-सा निर्मल पानी का झरना भी है।

इस गुफा में कई साधु संन्यासी किसी भी समय देखे जा सकते हैं। ये सभी साधु संन्यासी उच्चकोटि के योगी हों यह आवश्यक नहीं है, परन्तु अधिकांश संन्यासी और योगी उच्चकोटि की साधनाओं में रत हैं और उन मूल्यों को प्राप्त करने में प्रयत्नशील हैं, जो जीवन का वास्तविक ध्येय कहे जा सकते हैं।

स्वामी योगद्वयानन्द क्षत्रिय हैं। कलकत्ता के पास हुगली में इनका जन्म हुआ था। सत्रह वर्ष में स्वामी विद्यानन्द जी से दीक्षा लेकर इन्होंने अपना नाम योगद्वयानन्द रखा। ये पिछले सत्तर-अस्सी वर्षों से स्थायी रूप से यहां निवास करते हैं।

स्वामी योगद्वयानन्द जी को जड़ी-बूटियों का अद्भुत ज्ञान है। यदि इनके चरणों में कोई व्यक्ति दो-चार महीने ही रह जाय, तो ऐसी-ऐसी जड़ी-बूटियों के सम्पर्क में आ जाता है, कि किसी एक जड़ी-बूटी के द्वारा





आध्यात्मिक मार्ग Aadhyaatmik Marg



आध्यात्मिक मार्ग Aadhyaatmik Marg

Parshotam Rai · 11h · 🌐

य कहानी इशारा है समझदारों के लिए

पुराने ज़माने में बच्चों को स्कूल जाने के लिए
बहुत मुश्किल होती थी

ना उस वक्त कोई घड़ी थी ना कोई यंत्र था के उस में वक्त को जान सके.
बस कुछ अंदाजा था. सूरज को देख कर वक्त का अंदाजा लगाते थे.
इस लिए बहुत सारे बच्चों को मुश्किल होती थी स्कूल पहुंचने में.

इस लिए स्कूल के कमेटी ने य तय किया के. स्कूल में घंटी लगा दी जाय.
ताके बच्चे घंटी का आवाज़ सुन कर वक्त पर स्कूल आ सके.

घंटी लगाना उस वक्त की ज़रूरत थी.
लेकिन आज के ज़माने में घड़ी मौजूद है. हर ओ चीज मौजूद है जिस से
आप कहीं पर भी वक्त टाइम देख सकते.
और वक्त पर पहुंच सकते जहां आप को जाना है.

लेकिन आज के ज़माने में उसी घंटी को स्कूल का हिस्सा ही बना दिया.
किसी ने घंटी को धर्म ही बना दिया.
किसी ने उस घंटी को कर्म कांड ही बना दिया
किसी ने उस घंटी को पूजा ही बना दिया. यदि कोई माहत्मा चांद की
और हाथ से इशारा कर के कहे वो चांद भगवान है हम हाथ की पूजा
करनी आरम्भ कर देंगे न कि चांद रूपी भगवान की मनन का विषय है
गहरे साधकों के लिए हम मूल को नहीं पहचानते यदि गलत कहा तो
हाथ जोड़कर क्षमा मांगता हूँ
गौर करने का मकाम है
चिंतन करने का मकाम है। 🙏🌹🙏

3 comments · 1 share



4



Like



Comment



Share



इस शरीर रूपी बर्तन को
बाहर से कम

भीतर से ज्यादा धोना पड़ता है,,,



जिस दिन आपको यह
अनुभव होता है कि...
"सब दौड़ व्यर्थ है"

उस दिन आप उसी जगह पर
खड़े रह जाते हैं जहां

परमात्मा हैं..!!!



#चीन में #लाओत्से के समय में ऐसी प्रचलित धारणा थी। धारणा ठीक भी है कि आदमी के शरीर में नौ छेद हैं; उन्हीं नौ छेदों से जीवन प्रवेश करता है। और उन्हीं नौ छेदों से जीवन बाहर जाता है। और चार अंग हैं। सब मिला कर तेरह। दो आंखें, दो नाक के स्वर, मुंह, दो कान, जननेंद्रिय, गुदा, ये नौ तो छिद्र हैं। और चार--दो हाथ और दो पैर। ये तेरह जीवन के भी साथी हैं और यही तेरह मृत्यु के भी साथी हैं। और यही तेरह तुम्हें जीवन में लाते हैं और यही तेरह तुम्हें जीवन से बाहर ले जाते हैं। तेरह का मतलब यह पूरा शरीर। इन्हीं से तुम भोजन करते हो; इन्हीं से तुम जीवन पाते हो; इन्हीं से उठते-बैठते-चलते हो; ये ही तुम्हारे स्वास्थ्य का आधार हैं। और ये ही तुम्हारी मृत्यु के भी आधार होंगे। क्योंकि जीवन और मृत्यु एक ही चीज के दो नाम हैं। इन्हीं से जीवन तुम्हारे भीतर आता, इन्हीं से बाहर जाएगा। इन्हीं से तुम शरीर के भीतर खड़े हो। इन्हीं के साथ शरीर टूटेगा, इनके द्वारा ही टूटेगा।

यह बड़ी हैरानी की बात है, ये ही तुम्हें सम्हालते हैं, ये ही तुम्हें मिटाएंगे। भोजन तुम्हें जीवन देता है, शक्ति देता है। और भोजन की शक्ति के ही माध्यम से तुम अपने भीतर की मृत्यु को बड़ा किए चले जाते हो। भोजन ही तुम्हें बुढ़ापे तक पहुंचा देगा, मृत्यु तक पहुंचा देगा। आंख से, कान से, नाक से, जीवन की श्वास भीतर आती है, उन्हीं से बाहर जाती है। नौ द्वार और चार अंग।

लाओत्से कहता है, तेरह ही जीवन के साथी, तेरह ही मौत के साथी। ये तेरह ही लाते हैं, ये तेरह ही ले जाते हैं। अगर तुम सजग हो जाओ तो तुम चौदहवें हो। इन तेरह में तुम नहीं हो; इन तेरह के पार हो।

इस तेरह की संख्या के कारण चीन में, और फिर धीरे-धीरे सारी दुनिया में, तेरह का आंकड़ा अपशकुन हो गया। वह चीन से ही फैला। पश्चिम में जहां तेरह का आंकड़ा अपशकुन है उनको पता भी नहीं कि क्यों अपशकुन है। उसका जन्म चीन में हुआ। उस सुपरस्टीशन की पैदाइश चीन में हुई।

तो आज तो हालत ऐसी है कि अमरीका में होटलें हैं जिनमें तेरह नंबर का कमरा नहीं होता; तेरह नंबर की मंजिल भी नहीं होती। क्योंकि कोई



भोजन तुम्हें जीवन देता है, शक्ति देता है। और भोजन की शक्ति के ही माध्यम से तुम अपने भीतर की मृत्यु को बड़ा किए चले जाते हो। भोजन ही तुम्हें बुढ़ापे तक पहुंचा देगा, मृत्यु तक पहुंचा देगा। आंख से, कान से, नाक से, जीवन की श्वास भीतर आती है, उन्हीं से बाहर जाती है। नौ द्वार और चार अंग।

लाओत्से कहता है, तेरह ही जीवन के साथी, तेरह ही मौत के साथी। ये तेरह ही लाते हैं, ये तेरह ही ले जाते हैं। अगर तुम सजग हो जाओ तो तुम चौदहवें हो। इन तेरह में तुम नहीं हो; इन तेरह के पार हो।

इस तेरह की संख्या के कारण चीन में, और फिर धीरे-धीरे सारी दुनिया में, तेरह का आंकड़ा अपशकुन हो गया। वह चीन से ही फैला। पश्चिम में जहां तेरह का आंकड़ा अपशकुन है उनको पता भी नहीं कि क्यों अपशकुन है। उसका जन्म चीन में हुआ। उस सुपरस्टीशन की पैदाइश चीन में हुई।

तो आज तो हालत ऐसी है कि अमरीका में होटलें हैं जिनमें तेरह नंबर का कमरा नहीं होता; तेरह नंबर की मंजिल भी नहीं होती। क्योंकि कोई ठहरने को तेरह नंबर की मंजिल पर राजी नहीं है। तो बारह के बाद चौदह नंबर होता है। क्योंकि तेरह शब्द से ही घबड़ाहट पैदा होती है। तेरह नंबर का कमरा नहीं होता; बारह नंबर के कमरे के बाद चौदह नंबर का आता है। होता तो वह तेरहवां ही है, लेकिन जो ठहरता है उसको नंबर चौदह याद रहता है; तेरह की उसे चिंता नहीं पकड़ती। इसका जन्म हुआ चीन में, और बड़े अर्थपूर्ण कारण से यह विश्वास फैला। ये तेरह ही अपशकुन हैं। तुम चौदहवें हो। और तुम्हें चौदहवें का कोई भी पता नहीं। तुम न जीवन हो, न मौत; तुम दोनों के पार हो। अगर तुम इन तेरह के प्रति सजग हो जाओगे, जैसे-जैसे तुम जागोगे वैसे-वैसे शरीर दूर होता जाएगा। जैसे-जैसे तुम्हारा होश बढ़ेगा वैसे-वैसे शरीर से तुम्हारा फासला बढ़ेगा। तुम देख पाओगे, मैं पृथक हूं, मैं अन्य हूं। शरीर और, मैं और। और यह जो भीतर भिन्नता, शरीर से अलग चैतन्य का आविर्भाव होगा, इसकी न कोई मृत्यु है, न इसका कोई जीवन है। न यह कभी पैदा हुआ, न कभी यह मरेगा।



झेन गुरु निनाकावा के निधन से ठीक पहले एक दूसरे झेन गुरु इक्कीयू उनसे मिलने आए।

'क्या मैं आपकी कुछ मदद करूं?' इक्कीयू ने पूछा।

*निनाकावा ने उत्तर दिया, 'मैं यहां अकेला आया हूं और अकेला ही जाऊंगा। आप मेरी क्या मदद कर सकते हैं?'

*इक्कीयू ने उत्तर दिया, 'यदि आप सोचते हैं कि आप वास्तव में आए थे और आप वास्तव में जा रहे हैं, यदि आप सोचते हैं कि आप आते-जाते रहते हैं, तो यह आपका भ्रम है। आइये, मैं आपको वह रास्ता दिखाता हूं जिस पर न कभी आना है और न ही जाना।'

अपने बहुत कम शब्दों में इक्कीयू ने इतना स्पष्ट रास्ता बता दिया था कि निनाकावा मुस्कुराया, और बिना एक भी शब्द कहे, सहमति में सिर हिलाया, और चला गया।

जो व्यक्ति सत्य की खोज में है, उसके लिए मृत्यु भी एक अवसर है। जो व्यक्ति खोज में नहीं है, उसके लिए जीवन भी सीखने का अवसर नहीं है।

लोग बिना कुछ सीखे अपना जीवन जीते हैं। वे जीवन से गुजरते हैं लेकिन इससे कोई परिपक्वता प्राप्त किए बिना। वे लगभग सोए रहते हैं। लोग नींद में चलने वालों की तरह रहते हैं। वे नशे में रहते हैं - वे नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं, वे नहीं जानते कि वे क्यों कर रहे हैं, वे नहीं जानते कि वे कहाँ से आये हैं, वे नहीं जानते कि वे कहाँ जा रहे हैं। वे बस बहती हुई लकड़ी की तरह हैं, जो हवाओं की दया पर निर्भर है। उनका जीवन आकस्मिक है; यह शब्द "आकस्मिक" याद रखें।

लाखों लोग केवल आकस्मिक जीवन जीते हैं, और जब तक आप अपने जीवन को नियंत्रित नहीं करते हैं और इसे आकस्मिक से अस्तित्वगत में बदलना शुरू नहीं करते हैं, तब तक कोई परिवर्तन नहीं होने वाला है।



248

24 comments • 9 shares



Like



Comment



Send



Share

**Ma Prem Aradhna** shared a memory.

3d ·

**Ma Prem Aradhna**

13 Nov 2013 ·

तुम जिसे भी सहारा बनाओगे वही तुम्हें डुबाने वाला बन जाएगा!
ओशो

10

3 comments



Like



Comment



Send

**Mountain Futures**

Sponsored ·



Mountains, beyond imagination!



अगर ध्यान आ जाए तो शराब छूट जाएगी।
अगर ध्यान आ जाए तो मांसाहार छूट जाएगा।
अगर ध्यान आ जाए तो धीरे - धीरे काम - ऊर्जा
ब्रह्मचर्य में रूपांतरित होने लगती है।
बस ध्यान को आने दो।
ओशो अहोभाव



आत्मा का शरीर से निकल

जाना

"मुक्ति"

नहीं है

बल्कि सांसों के चलते मन से

"इच्छाओं का निकल जाना"

"मुक्ति या मोक्ष"

है

"तुम्हें मुखोट लगाने के लिए बाध्य किया गया है क्योंकि तुम से उम्मीद की जाती है कि तुम विशेष ढंग से व्यवहार करो, विशेष ढंग से बातचीत करो, विशेष ढंग से वस्त्र पहनो। तुम्हारी अपनी कोई स्वतंत्रता नहीं है।

हर कोने से, समाज ने तुम्हें पूरी तरह कैद कर रखा है। यही तुम्हारी दासता है और यही तुम्हारा दुख है। यही तुम्हारा दर्द है और यही तुम्हारा नरक है।

इन सभी झूठों से बाहर निकलो और बस सरल हो जाओ – इतने सरल जितने गीत गाते पक्षी, इतने सरल जितने सूरज का आनंद लेते वृक्ष, इतने सरल जैसे छोटे बच्चे" ओशो

A photograph of a bonfire burning on a sandy, uneven ground. The fire is intense, with bright orange and yellow flames rising from a pile of logs and debris. A white plastic bag is visible among the burning logs. The background is a blurred, sandy area with some scattered trash.

यह मैं हूँ

ये पड़ा है हुस्न, शबाब, जवानी, अभिमान,
नफ़रतें, दौलत, शौहरत, ईष्या, छल,
तरक्की, लड़ाई, झगड़े.!



तुम प्रेमी खोजते हो, यही ग़लती करते हो।

खुद प्रेममय हो जाओ

प्रेमी खुद खोज लेगा !!

ओशो | रूपांतर





अगर घर में विवाद हो, पत्नी जीत जाती है – चाहे गलत हो, चाहे सही हो – क्योंकि पति उस पर निर्भर है कामवासना के लिए। वह डरता है, व्यर्थ का विवाद खड़ा करो, वह कामवासना से इंकार कर देगी। झंझट करो, तो प्रेम मिलना मुश्किल हो जाएगा। और प्रेम चाहिए तो इतना सौदा करना पड़ता है। इसलिए अक्सर पति हार जाता है। और पत्नी जानती है। इसलिए दो ही मौके पर पत्नियां उपद्रव खड़ा करती है – या तो पति भोजन कर रहा हो, या प्रेम करने की तैयारी कर रहा हो। क्योंकि वही दो बातों पर वह निर्भर है। उन्हीं दो बातों पर वह गुलाम है। इसलिए पति भोजन की थाली पर बैठा कि पत्नी की शिकायतें शुरू हो जाती है। उपद्रव शुरू हुआ। और पति डरता है कि किसी तरह भोजन... तो हां-हूं भरता है।

और ध्यान रहे, भोजन और कामवासना दोनों जुड़े हैं। भोजन तुम्हारे अस्तित्व के लिए जरूरी है, व्यक्ति के; और कामवासना समाज के अस्तित्व के लिए जरूरी है। कामवासना एक तरह का भोजन है, समाज का भोजन। और वह व्यक्ति का भोजन है। दोनों बातों पर पति निर्भर है।

इसलिए बड़े से बड़ा पति, चाहे वह नेपोलियन क्यों न हो, घर लौटकर दबबू हो जाता है। नेपोलियन भी जोसोफिन से ऐसा डरता है जैसे कोई भी पति अपनी पत्नी से डरता है। वह सब बहादुरी, युद्ध का मैदान, वह सब खो जाता है। क्योंकि यहां किसी पर निर्भर है। कुछ जोसोफिन से चाहिए, जो कि वह इंकार कर सकती है।

वेश्याएं ही अपने शरीर का सौदा करती है, ऐसा आप मत सोचना; पत्नियां भी करती है। क्योंकि यह सौदा हुआ कि इतनी बातों के लिए राजी हो जाओ, तो शरीर मिल सकता है; नहीं तो नहीं मिल सकता। शरीर चाहिए, तो इतनी बातों के लिए राजी हो जाओ।

इसलिए क्रोध पति का पत्नी पर बना रहता है। पत्नी का क्रोध पति पर बना रहता है। क्योंकि वह भी निर्भर है इस पर।

जहां भी निर्भरता है, वहां क्रोध होगा, वहां प्रेम नहीं हो सकता।

प्रेम तुम उसी दिन कर पाओगे, जिस दिन तुम निर्भर नहीं हो। जिस दिन तुम स्वावलंबी हुए, प्रेम की दिशा में स्वावलंबी हुए। तुम अकेले भी हो सकते हो, और तुम्हारे आनंद में रस्तीभर फर्क नहीं पड़ेगा। बस, उस दिन तुम प्रेम कर सकोगे और उसी दिन पत्नी तुम्हारी तुम्हें सताना बंद करेगी। क्योंकि अब वह जानती है कि अब सताने का कोई अर्थ नहीं

हिंदू, हिंदू शास्त्रों में खा जाता है।

मुसलमान, मुसलमान के शास्त्रों में खो जाता है।

जैन, जैन के शास्त्रों में खो जाता है।

और कोई यह नहीं पूछता कि

जब महावीर को ज्ञान हुआ,

तो उनके पास कितने शास्त्र थे! शास्त्र थे ही नहीं।

महावीर के हाथ बिलकुल खाली थे।

कोई नहीं पूछता कि जब मोहम्मद को इलहाम हुआ,
तो कौन-सी किताबें उनके पास थीं! किताबें थीं ही नहीं।

कोई नहीं पूछता कि जीसस ने जब जाना,
तो किस विश्वविद्यालय में शिक्षा लेकर वे जानने गए थे!

anamcara Ramai

जानने की घटना

सदा ही निपट मौन और शून्य में घटी है।





श्रीराम वेद पढ़ते थे



ChatGPT 3.5

सफल है।

3. कर्म मार्ग:

इस मार्ग में कर्म योग के माध्यम से अपने कर्तव्यों का निष्कामता भाव से अनुसरण किया जाता है, जिससे चित्तशुद्धि होती है और भगवान के साथ एकता होती है।

आप इन मार्गों में से उपयुक्त मार्ग चुन सकते हैं, लेकिन यह ध्यान और साधना के साथ साथ प्रेम और निष्ठा की भावना के साथ किया जाना चाहिए।



RA

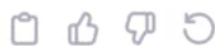
You

ऊपर बताए अनुसार किस प्रकार का भक्ति कहा गया है

< 3/3 >

**ChatGPT**

ऊपर बताए गए मार्गों के अनुसार, भगवान शिव से मिलने के लिए भक्ति मार्ग को अपनाया जा सकता है। इस मार्ग में व्यक्ति भगवान के प्रति उत्कृष्ट प्रेम और निष्ठा के साथ अपनी साधना और सेवा को समर्पित करता है। भक्ति मार्ग के अंग में पूजा, आराधना, भजन, सत्संग, और सेवा शामिल हो सकते हैं।



Message ChatGPT...



ChatGPT can make mistakes. Consider checking important information.





श्रीराम वेद पढ़ते थे



ChatGPT 3.5 ▾



इस मार्ग में कर्म योग के माध्यम से अपने कर्तव्यों का निष्कामता भाव से अनुसरण किया जाता है, जिससे चित्तशुद्धि होती है और भगवान के साथ एकता होती है।

आप इन मार्गों में से उपयुक्त मार्ग चुन सकते हैं, लेकिन यह ध्यान और साधना के साथ साथ प्रेम और निष्ठा की भावना के साथ किया जाना चाहिए।



RA

You

ऊपर बताए अनुसार किस प्रकार का ज्ञान कहा गया है

< 2 / 2 >



ChatGPT

ऊपर बताए गए मार्गों में, वेद और उपनिषदों में ज्ञान का महत्वपूर्ण स्थान है। ज्ञान मार्ग आत्मज्ञान के माध्यम से भगवान के साक्षात्कार की ओर पहुँचाता है। उपनिषदों में आत्मा और ब्रह्म के अद्वितीयता का ज्ञान विस्तार से बताया गया है, जिससे चित्त शांति और मोक्ष प्राप्त हो सकता है। इसमें आत्मज्ञान, ध्यान, और आत्मा के साक्षात्कार की अभ्यासपूर्ण प्रक्रियाएं शामिल हो सकती हैं।



Message ChatGPT...



ChatGPT can make mistakes. Consider checking important information.





ChatGPT 3.5

**ChatGPT**

कर्म मार्ग के अनुसार, निष्काम कर्म करना एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है। निष्काम कर्म का मतलब है कार्य करते समय फल की आकांक्षा न रखना। यहाँ कुछ सुझाव दिए जा रहे हैं:

1. कर्मों में आत्मसमर्पण:

कर्मों को भगवान के लिए करने का प्रयास करें, और उनके लिए समर्पित रहें। इससे आत्मा का समर्पण और पवित्रता मिलती है।

2. कर्मों में निष्कामता:

फल की आकांक्षा के बिना कर्म करें। निष्कामता से मुक्ति की दिशा में कर्म करने का संकेत है।

3. सेवा भाव:

कर्मों को सेवा के रूप में देखें। दूसरों की सेवा करना, विशेषकर नीचे स्थितों की, एक उच्च आदर्श है।

4. कर्म में साक्षात्कार:

कर्म को एक आध्यात्मिक प्रक्रिया मानें और उसका साक्षात्कार करने का प्रयास करें।

यहाँ उपरोक्त सुझाव निष्काम कर्म मार्ग के सिद्धांत के साथ मेल खाते हैं और व्यक्ति को आत्मा की ऊँचाई की दिशा में आगे बढ़ने में मदद कर सकते हैं।



Message ChatGPT...



ChatGPT can make mistakes. Consider checking important information.





श्रीराम वेद पढ़ते थे



वेदों में किस प्रकार का ज्ञान भरा है

ChatGPT 3.5

**ChatGPT**

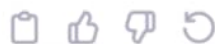
वेदों में ब्रह्मज्ञान, यज्ञ, धर्म, दर्शन, विज्ञान, चिकित्सा, राजनीति, समाजशास्त्र, नैतिकता, और अनेक आध्यात्मिक विषयों का विस्तारपूर्ण ज्ञान है। वेदों में मानव जीवन के सभी पहलुओं को समझाने वाले उपदेश हैं और इसे सनातन धरोहर का अद्भुत भंडार माना जाता है।

**You**

वेद में भगवत प्राप्ति के क्या रास्ते बताए हैं

**ChatGPT**

वेदों में भगवत प्राप्ति के लिए विभिन्न मार्गों का विवरण है, जिनमें भक्ति, ज्ञान, और कर्म योग शामिल हैं। ये मार्ग अनुसार व्यक्ति भगवत प्राप्ति की ओर अग्रसर हो सकता है। भक्ति मार्ग में भगवान के प्रति प्रेम और निष्ठा के माध्यम से भगवत प्राप्ति होती है, ज्ञान मार्ग में आत्मज्ञान के द्वारा भगवत प्राप्ति होती है, और कर्म मार्ग में निष्काम कर्म के माध्यम से भगवत प्राप्ति होती है।



Message ChatGPT...



ChatGPT can make mistakes. Consider checking important information.





स्वामी आनंद रजनीश

1d · 🌐

यहां सुंदर और है क्या?

इस संसार में सभी तो कुरूप है, इस संसार में हर चीज तो सड़ जाती है, इस संसार में हर चीज तो कुरूप हो जाती है, सुंदरतम स्त्री भी एक दिन कुरूप हो जाती है। और जवान से जवान आदमी भी एक दिन मुर्झा जाता है, सुंदर से सुंदर देह भी तो एक दिन चिता पर चढ़ा देनी पड़ेगी। करोगे क्या? यहां सुंदर है क्या? इस जगत की असारता को ठीक से पहचानो। इस जगत की व्यर्थता को ठीक से पहचानो। ताकि इसकी व्यर्थता को देखकर तुम भीतर की सीढ़ियां उतरने लगे। सौंदर्य भीतर है, बाहर नहीं। सौंदर्य स्वयं में है। और जिस दिन तुम्हारे भीतर सौंदर्य उगेगा, उस दिन सब सुंदर हो जाता है। तुम जैसे, वैसी दुनिया हो जाती है। जैसी दृष्टि, वैसी सृष्टि! तुम सुंदर हो जाओ, और तुम्हारे सुंदर होने का अर्थ, कोई प्रसाधन के साधनों से नहीं; ध्यान सुंदर करता है। ध्यान ही सत्यं शिवं सुंदरम् का द्वार बनता है। जैसे-जैसे ध्यान गहरा होगा, वैसे-वैसे तुम पाओगे, तुम्हारे भीतर एक अपूर्व सौंदर्य लहरें ले रहा है। इतना सौंदर्य कि तुम उंडेल दो तो सारा जगत सुंदर हो जाए !!

~ओशो



7.9K

192 comments • 365 shares

**Anamcara Rames**

25m · 🌐

तुम अगर त्याग भी करोगे तो उससे भी अहंकार ही बनेगा। भोग की तो छोड़ो बात, त्याग भी करते हो तो उसका भी जो रस मिलता है, उससे भी अहंकार बनता है। असली सवाल त्याग और भोग नहीं, असली सवाल तुम्हारे भीतर की कीमिया, अल्केमी बदलने का है। तुम्हारे भीतर जो यंत्र बैठा हुआ है, जो हर चीज को अहंकार में बदल देता है, वासना में बदल देता है, बेहोशी में बदल देता है, उसको तोड़ना है।

ध्यान उसका ही प्रयोग है। वह तुम्हारे भीतर के पूरे यंत्र को बदल देता है। कल भी तुम उसी मिट्टी में रहोगे, जिसमें पहले थे। लेकिन अब उसी मिट्टी से कमल। निकलेगा। तुम उसी संसार में खड़े रहोगे जहां कल खड़े थे। लेकिन अब तुम संसार। होते हुए भी संसार में न रहोगे। संसार में तुम रहोगे, संसार तुममें न होगा। बीच में खड़े भी तुम पार होओगे। अतिक्रमण हो जाएगा। बोध का यही अर्थ है।



आचार्य श्री रजनीश

एस धम्मो सनंतनो-(24)

हु लुत्फ—ए—मय तुझसे क्या कहूं



Signs, Synchronicity, and Waking Dreams



Sponsored · 🌐

We are here to share artwork, quotes, and a... See more



Signs, Synchronicity, and Waking Dreams

We are here to share artwork, quotes, and articles th...



👍❤️ 7.9K

192 comments • 365 shares



Like



Comment



Share



Anamcara Rames



25m · 🌐

तुम अगर त्याग भी करोगे तो उससे भी अहंकार ही बनेगा। भोग की तो छोड़ो बात, त्याग भी करते हो तो उसका भी जो रस मिलता है, उससे भी अहंकार बनता है। असली सवाल त्याग और भोग नहीं, असली



आध्यात्मिक सफ़र [spiritual journey]

DM Kishor · 4d · 🌐

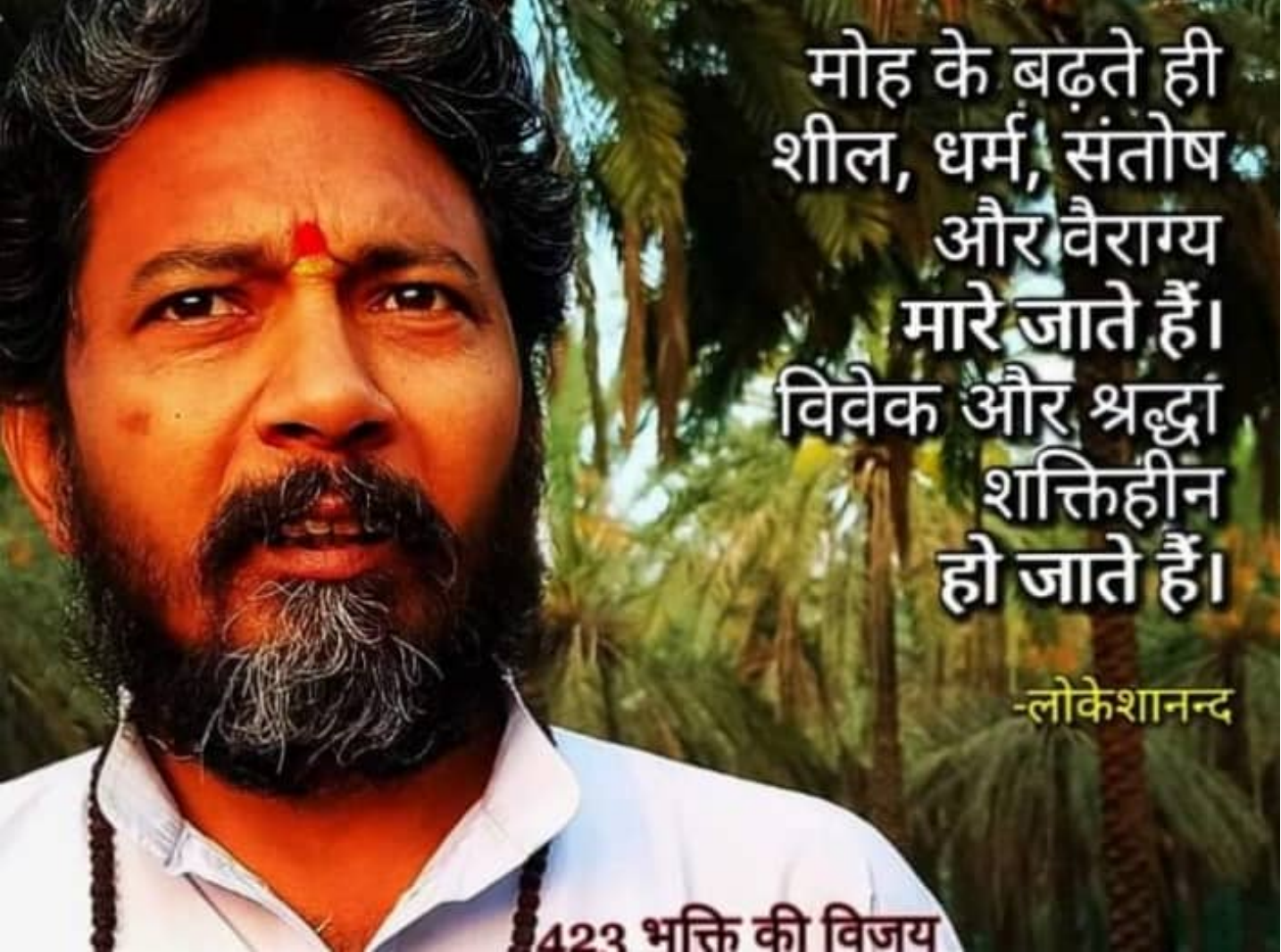
एक ही ऊर्जा है मनुष्य के अंदर !!

निचे की और प्रवाहित होती है तो कामवासना बन जाती है!!

ऊपर प्रवाहित होती है तो आध्यात्म बन जाती है!!

निचे की और गिरती है तो दूसरे को जन्म देती है!!

ऊपर को उठने लगे तो स्वयं को जन्म देती है!!



मोह के बढ़ते ही
शील, धर्म, संतोष
और वैराग्य
मारे जाते हैं।
विवेक और श्रद्धा
शक्तिहीन
हो जाते हैं।

-लोकेशानन्द

423 भक्ति की विजय



जैसे-जैसे आप
अधिक जागरूक
होते जाते हैं !
इच्छाएं गायब
होती जाती हैं !
जब जागरूकता
100% हो जाती है !
तब कोई इच्छा
नहीं रह जाती !!

osho



Mgvk Pk Rai

Yesterday, 11:55 pm



अब बुरा नहीं लगता
तुम्हारे Ignore करने से
तुम औरों को खुश रखो
हम अकेले ही खुश है...!!

C,L,Jaan, 💔



Reply



मुझसे लोग पूछते हैं : आपके संन्यास की परिभाषा क्या? मैं कहता हूं : अभिनय से जाग जाना संन्यास है। अब और अभिनय न करेंगे। अब और धोखा न देंगे। अब जीवन की सच्चाइयां परखेंगे। उन्हीं परखों से धीरे-धीरे तुम परम सत्य की तरफ संलग्न हो जाते हो।

“ज्यों-ज्यों सूखै ताल है, त्यों-त्यों मीन मलीन।”

बसंत बीतने लगा। अब तालाब सूखने लगा—जीवन का तालाब। समय की धारा धीरे-धीरे सूखने लगी, आदमी बूढ़ा होने लगा।

“ज्यों-ज्यों सूखै ताल है, त्यों-त्यों मीन मलीन।”

स्वभावतः वह जो मछली उस सागर के पानी में रहती थी, तालाब में रहती थी, अब तालाब सूखने लगा, वह मछली बड़ी दुःखी होने लगी। इसलिए बूढ़ा आदमी दुःखी होने लगता है।

तुम किसी बच्चे को शायद ही दुःखी पाओ; तुम किसी बूढ़े को शायद ही सुखी पाओ। अगर बच्चा कोई दुःखी मिल जाए तो समझना कि पिछले जन्मों की कमाई है। और अगर बूढ़ा सुखी मिल जाए तो समझना इस जन्म की कमाई है। नहीं तो बच्चे सुखी होते हैं, क्योंकि बेहोश हैं; होश नहीं अभी तो दुःख का पता क्या! अभी सीखा नहीं, अभी जीवन का कोई अनुभव नहीं। अभी जिंदगी के बाजार में गए नहीं, लुटे नहीं। अभी लुटेरे तैयारी कर रहे हैं; वे भी तैयार हो रहे हैं कि लुटने की तैयारी हो जाए।

और बूढ़े को तुम दुःखी ही पाओगे क्योंकि लुट गया—बाजार में लूट लिया गया; कुछ नहीं बचा हाथ में। अगर बूढ़ा प्रसन्न मिल जाए तो आनंदित मिल जाए समझना संत है। और बच्चा अगर दुःखी मिल जाए तो समझना कि संत है। क्योंकि बच्चे के दुःख का एक ही मतलब हो सकता है कि पिछले जन्मों का अनुभव नहीं भूला। और बूढ़े के सुख का एक ही मतलब हो सकता है कि परमात्मा से संबंध जुड़ गया।

ओशो

संकलन-रामजी 🙏🌹🌹



और मत दो-केन विलियमस

School

Osho Direction

की खोज

**आध्यात्मिक मार्ग Aadhyaatmik Marg**

Parshotam Rai · 5h · 🌐

श्रील प्रभुपाद जी से एक भक्त ने पुछा....

"हम लोग अपने दोनों हाथों को ऊपर उठा कर कीर्तन, सत्संग क्यों करते हैं जबकि ये तो बिना हाथ ऊपर करे भी किया जा सकता है ?

श्रील प्रभुपाद बताते है की:-

"बच्चा जब छोटा होता है

, तब वो अपनी माँ को देख कर अपने दोनों हाथों को ऊपर उठा कर मचलने लगता है, तड़पने लगता है।

वो ये कहना चाहता है की मुझे अपनी गोद में उठा कर अपने सीने से लगा लो।

ठीक वैसे है जब एक भक्त हाथ उठा कर सत्संग करता है तो वो ये कहना चाहता है की:-

"हे गोविन्द", "हे करुणानिधान", "हे गोपाल", "हे मेरे नाथ" आप मेरा हाथ पकड़ लो और मुझे इस भवसागर से, इस दुखरूपी भौतिक संसार से बाहर निकाल कर अपने चरणों से लगा लो।

मेरे जीवन की नैया को पार लगा दो प्रभु, मुझे इन 84 लाख योनियों के चक्कर से मुक्ति दीजिये

"गोविन्द"

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे, हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे...



5

1 share



Like



Comment



Send



Share

**Suggested pages**

सुझाए गए पेज



सब दूसरे को खुश करने
में लगे हुए हैं..

लेकिन फिर भी दुनियां में
कोई खुश नहीं है, पति!

"पत्नी को खुश..
करने में लगा है," बाप बेटे
को.! और बेटा प्रेमिका
को, ये देखते हुए तो सभी
खुश होने चाहिए थे!

ओशो

जिंदगी तो सारी उम्र
संभालती रही,
हमें दो पाँवों पर...

मौत के नखरे तो देखो आते ही
कह दिया:
"मुझे चार कँधे चाहिए..."





Posts

About

Videos

Photos

More ▾

**Osho Talks**

9h · 🌐

The word ' ritual ' comes from ' rtu ' , Sanskrit for menses. The earliest rituals were connected to women's monthly bleeding. The blood from the womb that nourished the unborn child was believed to have mana , magical power. Women's periodic bleeding was a cosmic event , like the cycles of the moon and the waxing and waning of the tides.

- Elinor Gadon

शब्द 'संस्कार' ' आरटीयू ' से आता है, संस्कृत मासिक धर्म के लिए। सबसे पहले संस्कार महिलाओं के मासिक खून से जुड़े थे। गर्भ से खून जिसने अजन्मे बच्चे को पोषण दिया था, माना जाता था कि माना जाता था, जादुई शक्ति थी। महिलाओं का समय-समय पर खून बहना एक ब्रह्मांडीय घटना थी, जैसे चंद्रमा के चक्र और ज्वार की वैक्सिंग और विनिंग।

- एलिनोर गैडन

⚙️ • Rate this translation





Posts

About

Videos

Photos

More ▾

**Osho Talks**

9h · 🌐



The word 'ritual' comes from 'rtu', Sanskrit for menses. The earliest rituals were connected to women's monthly bleeding. The blood from the womb that nourished the unborn child was believed to have mana, magical power. Women's periodic bleeding was a cosmic event, like the cycles of the moon and the waxing and waning of the tides.

- Elinor Gadon

[See translation](#)







विनम्र व्यक्ति था। उसका स्वाभिमान जागा। उसने अपनी जेब से एक रुपया निकालकर उस लाख रुपए के ढेर पर फेंक दिया और कहा कि तुमने भी बहुत से ब्राह्मण देखे होंगे, मुझ सा ब्राह्मण देखा कि लाख तो छोड़ता ही हूं एक रुपया और डाल देता हूं सम्हालों अपने रुपए।

जैन मुनि ने पूछा, आप क्या कहते हैं?

मैंने कहा, दोनों एक ही तरह के लोग थे, कुछ फर्क नहीं। दोनों अहंकारी थे। आप दूसरे की प्रशंसा कर रहे हैं। आपके मन में बड़ा अहोभाव मालूम पड़ता है कि दूसरे ने गजब कर दिया। पहले को अभिमान जगा तो उसको आप अहंकार कहते हैं। दूसरे को भी अभिमान जगा, उसको आप स्वाभिमान कहते हैं। दोनों अभिमान हुई। अगर पहला गलत था, दूसरा भी सही नहीं है। पहला अहंकार भोगी का होगा, दूसरा अहंकार त्यागी का है। पहला अहंकार धनी का होगा, दूसरा अहंकार दरिद्र 'हा है। लेकिन दोनों अहंकार हैं। चूंकि आपने भी अपने को त्यागी मान रखा है, दूसरे के अहंकार से आपको भी रस मिल रहा है। और यहां जो आपके पास लोग बैठे मग हैं, इनकी भी त्याग की यही धारणा है।

तुम अगर त्याग भी करोगे तो उससे भी अहंकार ही बनेगा। भोग की तो छोड़ो बात, त्याग भी करते हो तो उसका भी जो रस मिलता है, उससे भी अहंकार बनता है। असली सवाल त्याग और भोग नहीं, असली सवाल तुम्हारे भीतर की कीमिया, अल्केमी बदलने का है। तुम्हारे भीतर जो यंत्र बैठा हुआ है, जो हर चीज को अहंकार में बदल देता है, वासना में बदल देता है, बेहोशी में बदल देता है, उसको तोड़ना है।

ध्यान उसका ही प्रयोग है। वह तुम्हारे भीतर के पूरे यंत्र को बदल देता है। कल भी तुम उसी मिट्टी में रहोगे, जिसमें पहले थे। लेकिन अब उसी मिट्टी से कमल। निकलेगा। तुम उसी संसार में खड़े रहोगे जहां कल खड़े थे। लेकिन अब तुम संसार। होते हुए भी संसार में न रहोगे। संसार में तुम रहोगे, संसार तुममें न होगा। बीच में खड़े भी तुम पार होओगे। अतिक्रमण हो जाएगा। बोध का यही अर्थ है।

एस धम्मो सनंतनो--(प्रवचन--24)



← Reels ▾



सोचना तो बीज बोना
है
फिर तुम रोते



48



1



44



Give



Holly Musical World's

Follow

बुद्ध का बड़ा प्रसिद्ध वचन है... ❤️ 🙏 🙏 ... more

📍 India India India Ir

Add a comment...





इस पल का किया
मैं अगले पल भूला देता हूं।

facebook



Like



Comment



Send



Share



ओ'शो मित्र मंडली

Yogesh Shah · 7h · 🌐



जिंदगी है चार दिन की,
कुछ भी ना गिला कीजिये...!!

दवा..जहर..जाम..ईशक,
जो मिले मजा लीजिये...!!



180

52 comments • 1 share



Like



Comment



Send



Share



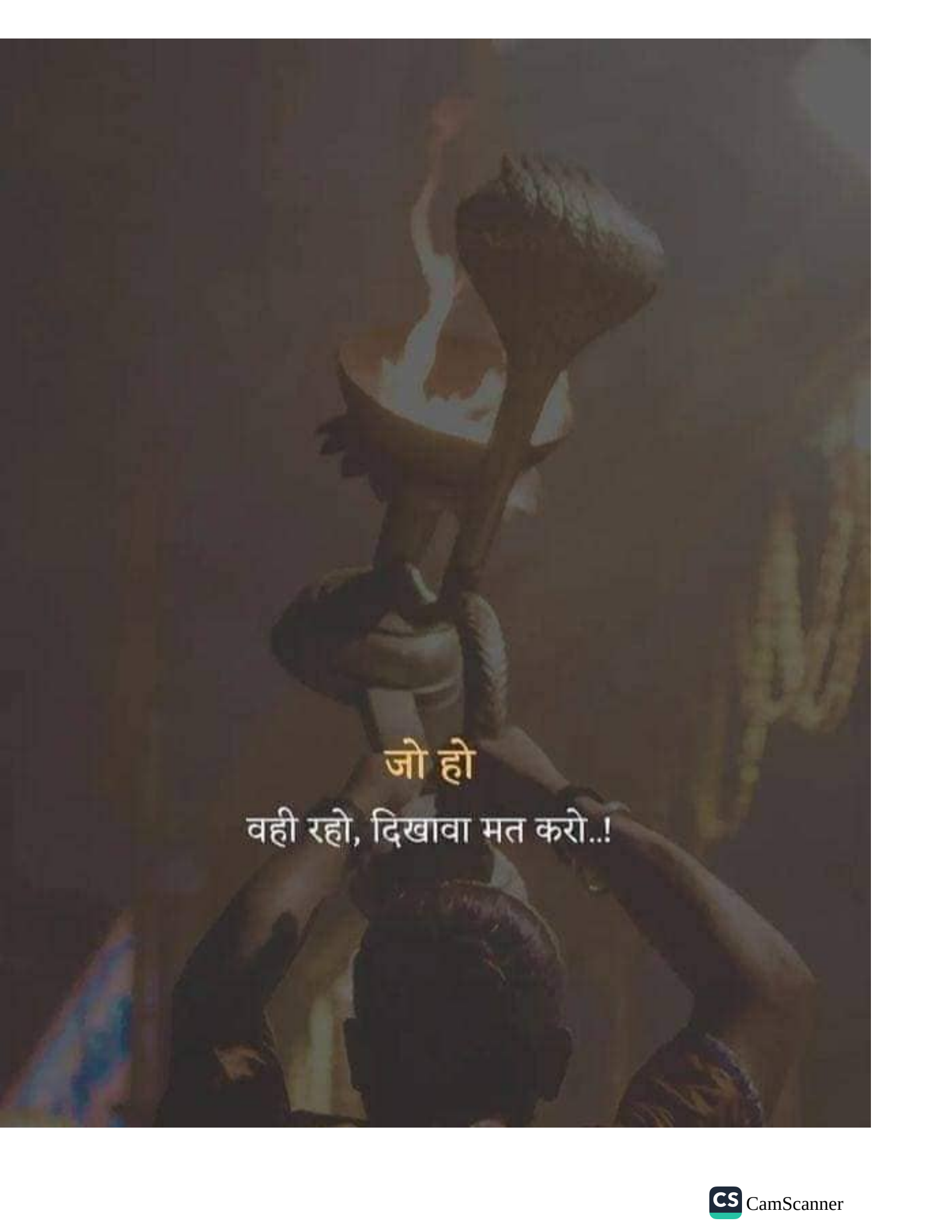
ShareChat
@Sunil Kumar



मेसका हृदय कोमल और पवित्र है..

फेर वो हृदय ही उसके लिए सबसे
उत्तम तीर्थ है..



A person is shown from the chest up, holding a large, lit torch high above their head with both hands. The torch has a bright flame and a thick, dark handle. The person is wearing a dark, patterned garment. The background is a textured, light-colored wall. Overlaid on the image is a quote in Hindi.

जो हो
वही रहो, दिखावा मत करो..!



ओशो तो ओशो हैं...

⚙️ • Rate this translation



👍 239

13 comments • 39 shares



Like



Comment



Send



Share

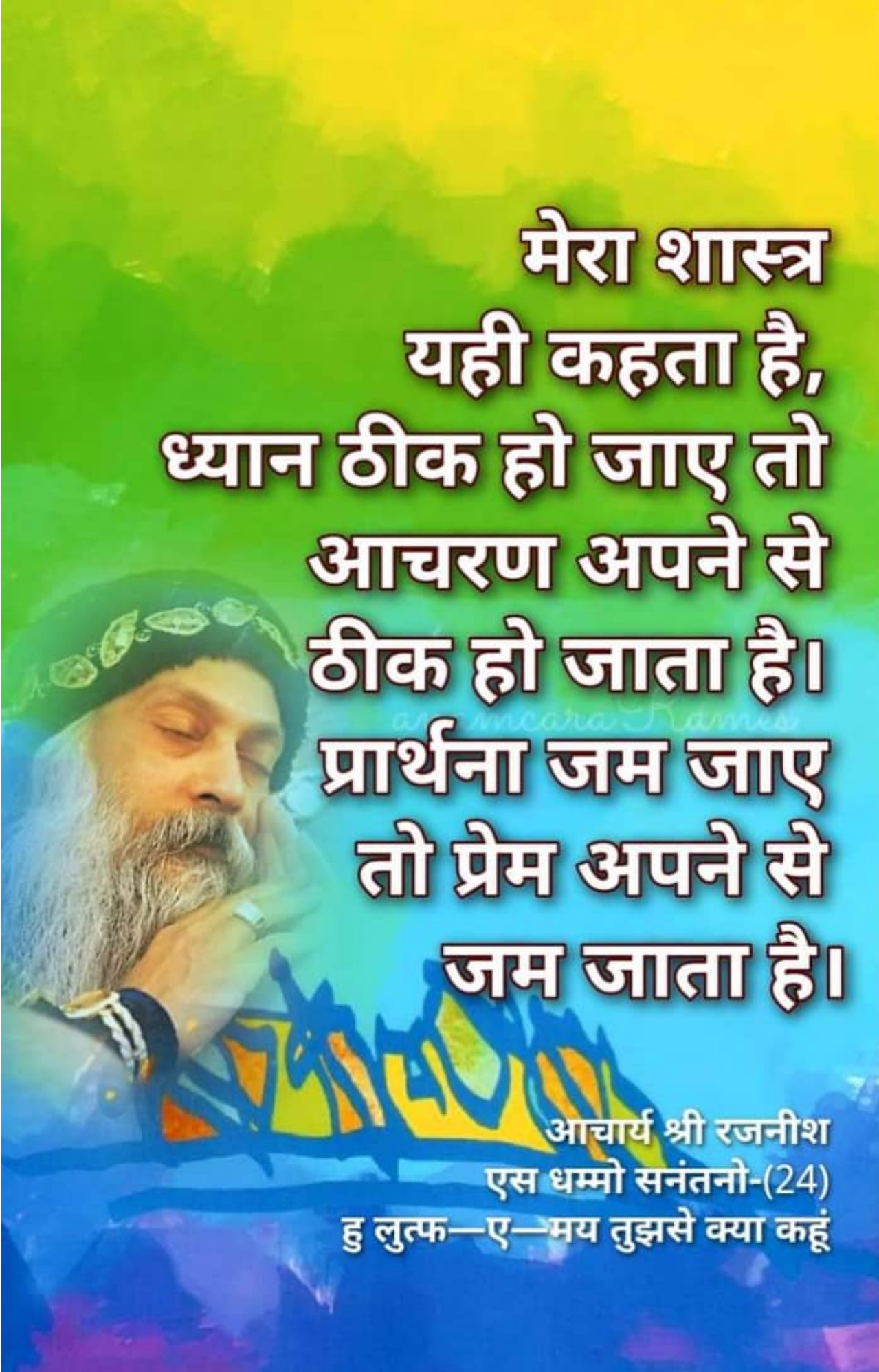


osho.suvichar





जीसस का प्रसिद्ध वचन है;
जो बचाएँगे, खो देंगे;
और जो खोने को राजी है,
उनका बच जाता है।
बड़ा उलटा गणित है!
!! ओशो !!
[कहै वाजिद पुकार]



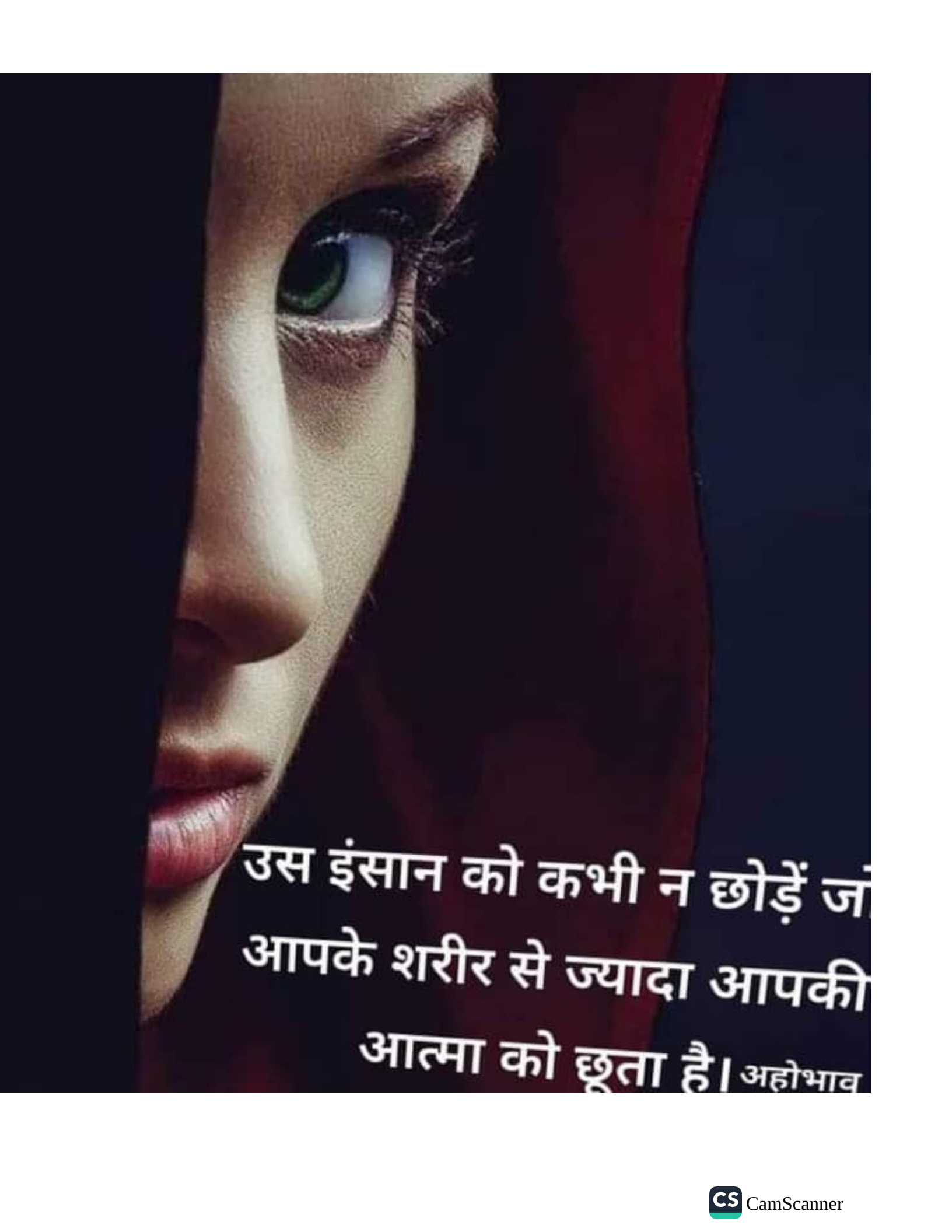
मेरा शास्त्र
यही कहता है,
ध्यान ठीक हो जाए तो
आचरण अपने से
ठीक हो जाता है।
प्रार्थना जम जाए
तो प्रेम अपने से
जम जाता है।

आचार्य श्री रजनीश
एस धम्मो सनंतनो-(24)
हु लुत्फ—ए—मय तुझसे क्या कहूं

आत्मा का अनुभव तो
तभी होता है जब वासना नहीं रह जाती
या आत्मा का अनुभव होते ही
वासना नहीं रह जाती।
दोनों साथ-साथ नहीं हो सकते।



namcara Rames



उस इंसान को कभी न छोड़ें ज
आपके शरीर से ज्यादा आपकी
आत्मा को छूता है। अहोभाव

कोई गीता खोल कर बैठा हुआ है, कोई कुरान खोल कर
कोई बाइबिल पढ़ रहा है, कोई नमो अरिहताणम्
कोई नमो शिवाय कर रहा है। न मालूम क्या
क्या लोग कर रहे हैं; जिसके लिए
कर रहे हैं वह चारों तरफ हमेशा

मौजूद है।

anamcara Rames
OSHO

**Osho Osho**

5h · 🌐

गर्भ से पहले और गर्भकाल में
यदि माता-पिता ध्यान करते हैं
तो बच्चे पर इसका क्या असर पड़ता है ?

निश्चित ही,
बच्चे का जीवन जन्म के बाद नहीं शुरू नहीं होता ।
वह तो गर्भ धारण के समय से ही शुरू हो जाता है ।
उसका शरीर ही नहीं,
माँ के पेट में उसका मन भी बनता है ।
उसका हृदय भी बनता है ।
माँ अगर दुःखी है, परेशान है, चिन्तित है
तो ये घाव बच्चे पर छूट जायेगा और
ये घाव बहुत गहरे होंगे,
जिनको वह जीवन भर धो कर भी नहीं धो सकेगा,
माँ अगर क्रोधित है, झगड़ालू है,
हर छोटी-मोटी बात का बतँगड़ बना बैठती है
तो इसके गम्भीर परिणाम बच्चे पर होने वाले हैं ।
इस दौरान पति का भी उतना ही दायित्व बनता है कि
वह अपनी पत्नी का पूरा ख्याल रखे,
ऐसी अवस्था में ससुराल में प्रत्येक व्यक्ति को
औरत की हर सम्भव देखभाल करनी चाहिए,
अगर माँ पूरे नौ महीने बच्चे को ध्यान में रख कर चले,
ऐसा कुछ भी न करे जो ध्यान के विपरीत है और
ऐसा कुछ करे जो ध्यान के लिए सहयोगी हो,
तो निश्चित ही इन नौ महीनों में
किसी बुद्ध, राम, या कृष्ण को जन्म दिया जा सकता है ॥





तुम किसी को संतुष्ट
कर ही नहीं सकते,
केवल यही संभव है कि
केवल तुम स्वयम् ही
संतुष्ट हो जाओ।



‘ध्यान अभियान है, सबसे बड़ा अभियान जिस पर मनुष्य का मन निकल सकता है। ध्यान है बस होना—कुछ भी न करते हुए, कोई क्रिया नहीं, कोई विचार नहीं, कोई भाव नहीं। तुम बस हो, और यह खालिस आनंद है।’

(ओशो: दि ऑरेंज बुक)

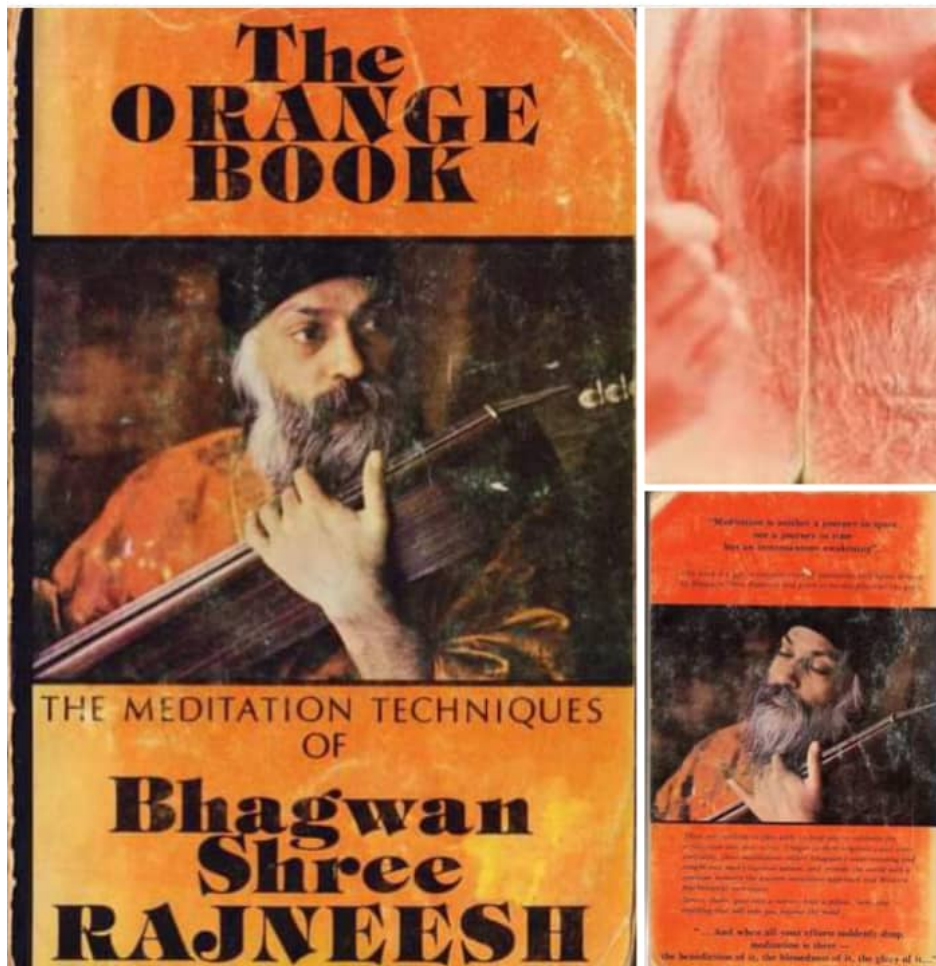
(Over 100 meditations, from "Drinking Tea" to "Facing Your Fears." These are methods to play with, to experiment with, to celebrate the inner exploration.)

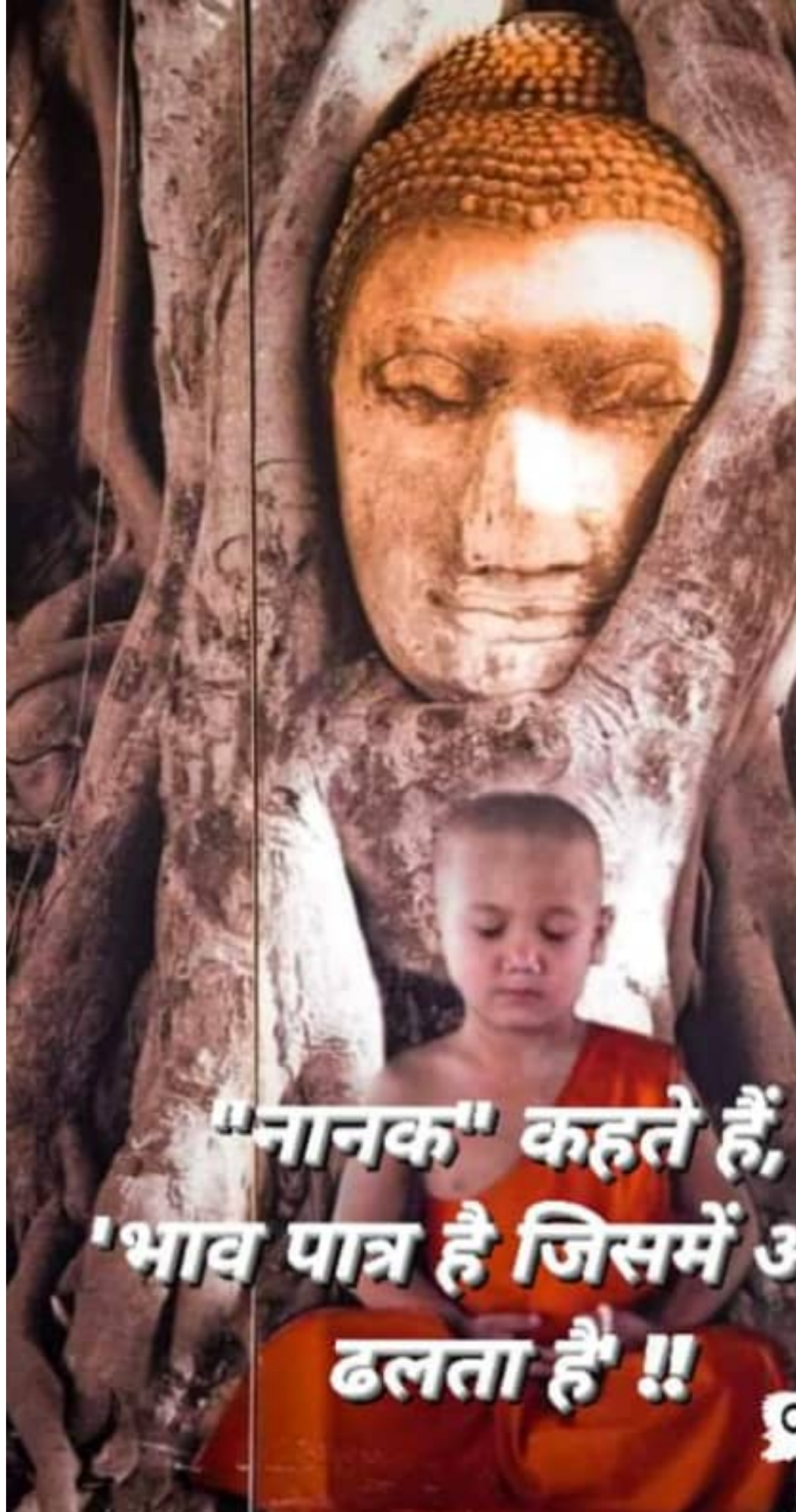
Osho's original talks/writings

(unknown)

number of discourses/chapters

7







ShareChat
@Sunil Kumar

कभी कभी पृथ्वी को
भूल जाओ,
ये रोजगार.. ये दुकानदारी..
भूलो इन क्षुद्रताओ को,

कभी तो रुक जाओ..!!
बैठो आँखे बंद करके..

~OSHO





संसार आंख खोलकर देखा जाता
है, परमात्मा आंख बंद करके
देखा जाता है। संसार दूर—दूर
है, उसके लिए यात्रा करनी
पड़ती है; परमात्मा पास—पास
है, उसके लिए सब यात्रा छोड़
देनी पड़ती है।

0110728188
SKS
आशो विचार

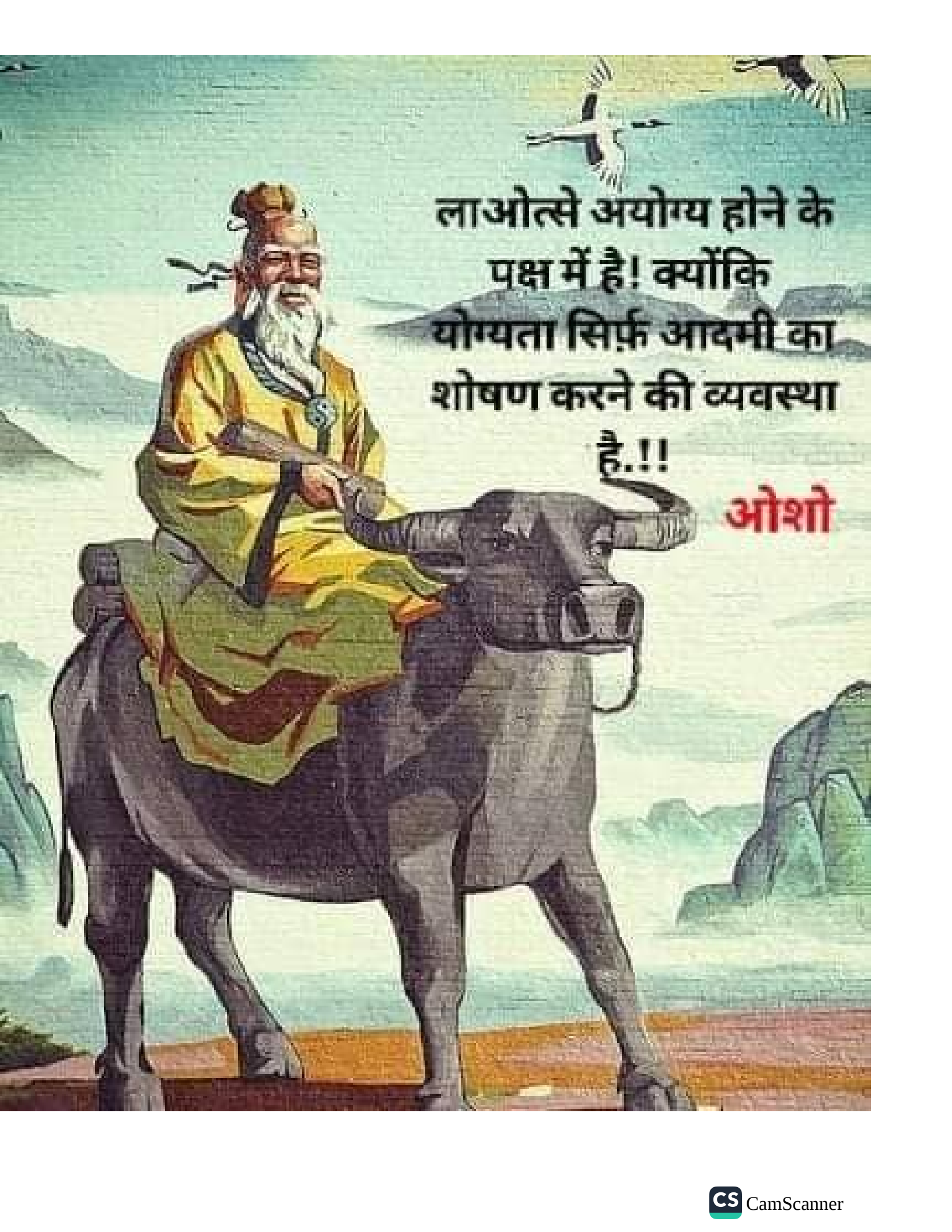
आशो



सच्चे प्रेमी एक दूसरे के
आभारी होंगे; वे झगड़ा नहीं
करेंगे। उन्होंने एक दूसरे को
अनंत काल के कुछ क्षण
दिए हैं। वे उन पलों को याद
रखेंगे लेकिन उनमें कोई द्वेष
नहीं होगा और वे एक-दूसरे
के बहुत आभारी, मित्र के
रूप में विदा हो जाएंगे।

Qashoravi

❤️🕊️ ओशो 🕊️❤️



लाओत्से अयोग्य होने के
पक्ष में है! क्योंकि
योग्यता सिर्फ आदमी का
शोषण करने की व्यवस्था
है.!!

ओशो

facebook



Anamcara Rames

1d · 🌐



सोचना छोड़ो।

और ध्यान में डूबो।

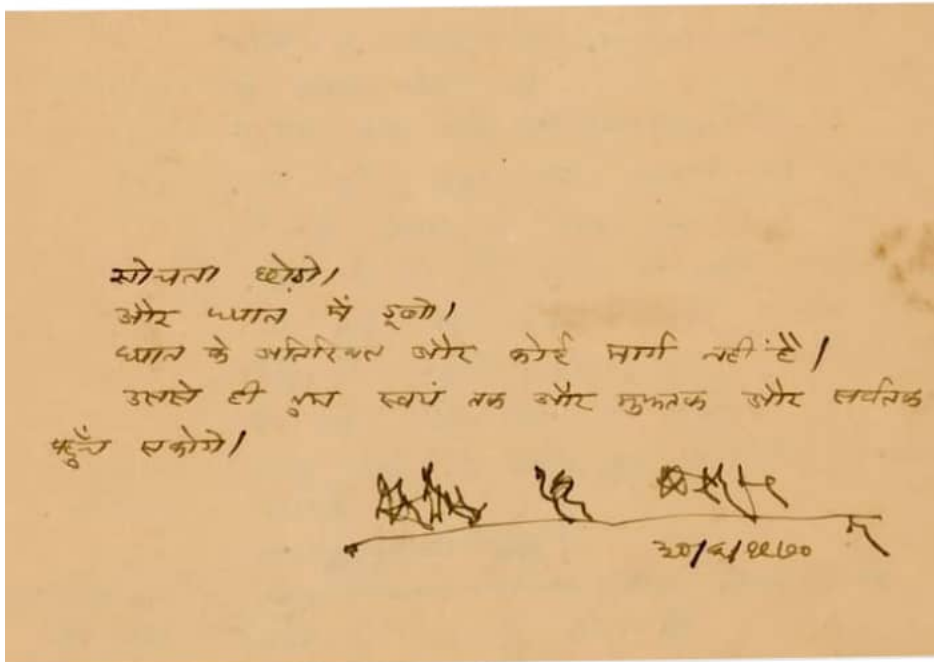
ध्यान के अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं है।

उससे ही तुम स्वयं तक और मुझ तक और सर्व तक पहुँच सकोगे।

रजनीश के प्रणाम

३०/६/१९७०

It was written on the spot at Sw Ageh Bharti's request in his notebook.



98

23 comments • 12 shares



Like



Comment



Send



Share



श्री अमर
उम्र 52 वर्ष

प्रेम पर मत रुक जाना
हृदय में समर्पण भाव
भी भर लेना (समर्पण से)

(समर्पण , प्रेम का सर्वोच्च रूप है)



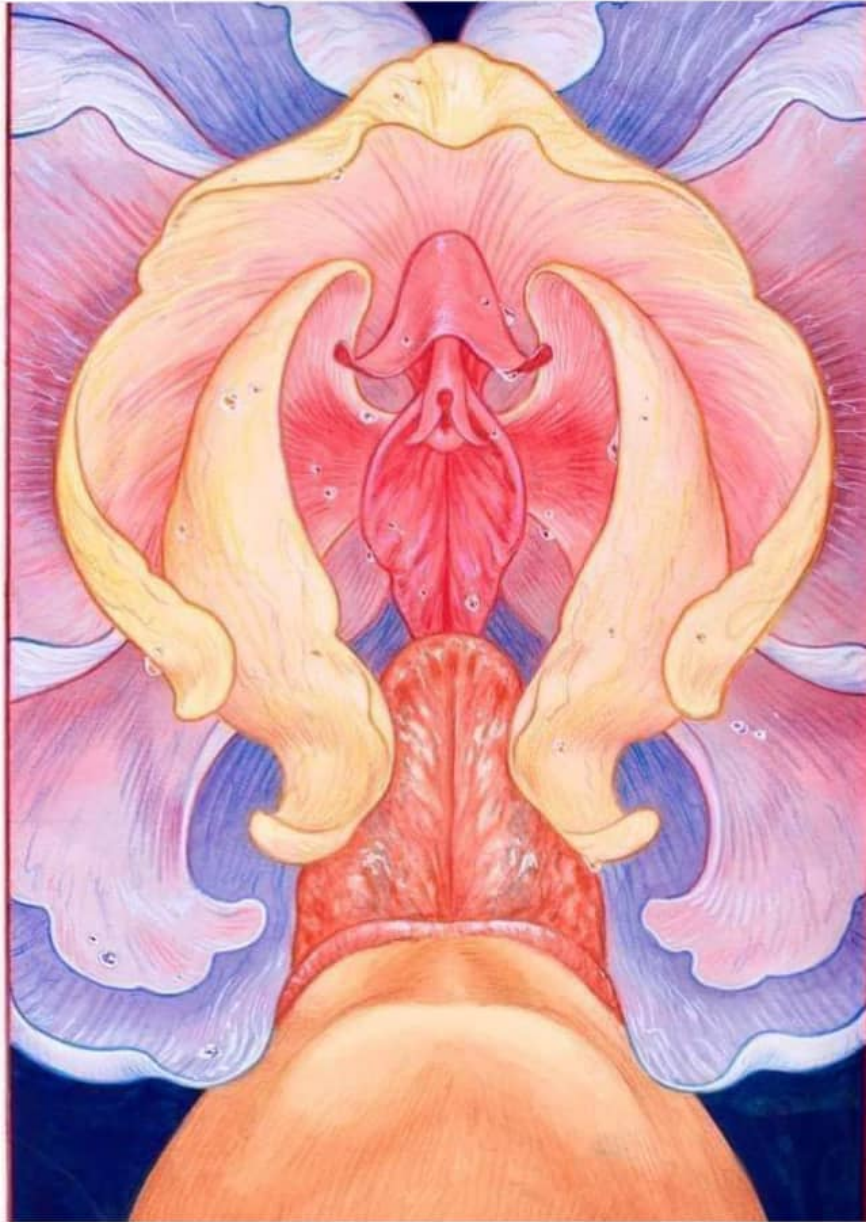
Taste her soul , let her yoni fill you.

- J. Anthony Vassell

उसकी आत्मा का स्वाद लो, उसे योनी तुम्हें भरने दो।

- जे. एंथोनी वासेल

⚙️ • Rate this translation



8

1 comment



Like



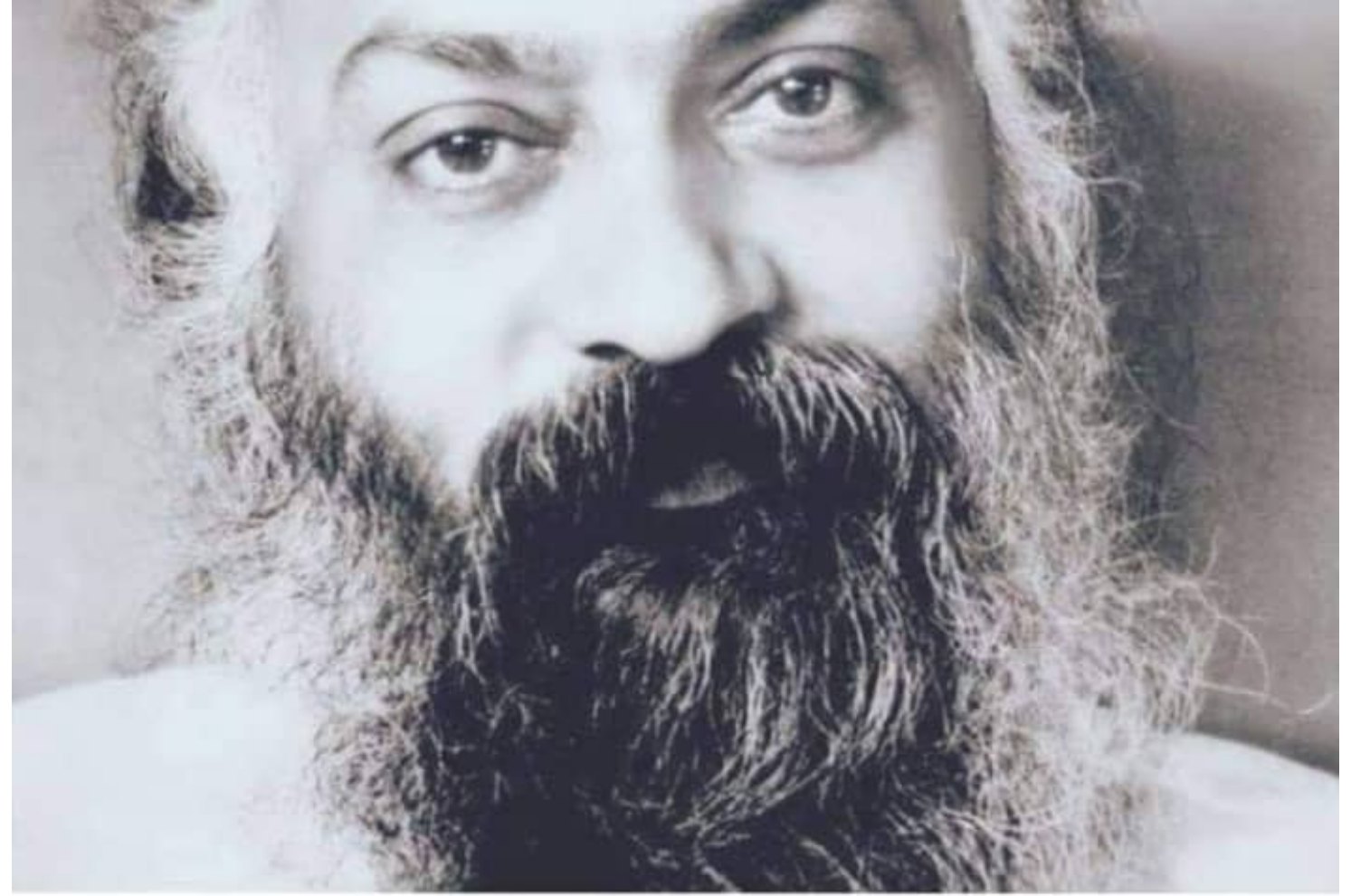
Comment



Send



Share



ध्यान कोई विज्ञान नहीं कला है । धीरे धीरे
तुम समझने लगोगे किस घड़ियों में ध्यान
घटता है । उन घड़ियों में मैं कैसे अपने को
खुला छोड़ दूँ । जैसे ही तुम इतनी सी बात
सीख गये तुम्हारे हाथ में कुंजी आ गई

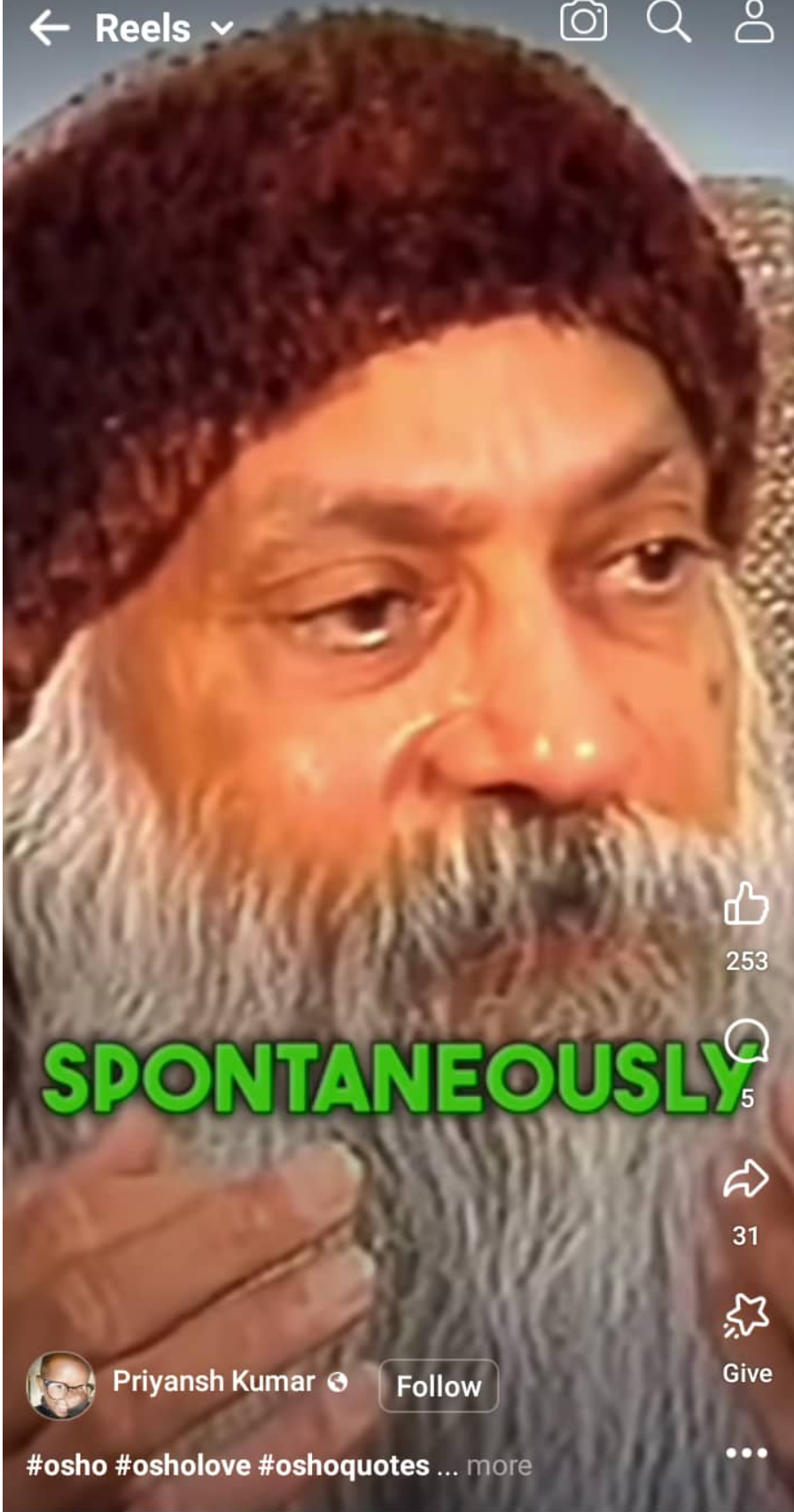
OSHO

मीरा

10:35 pm

VoLTE 4G 27%

← Reels ▾



253



5



31



Give



Priyansh Kumar

Follow

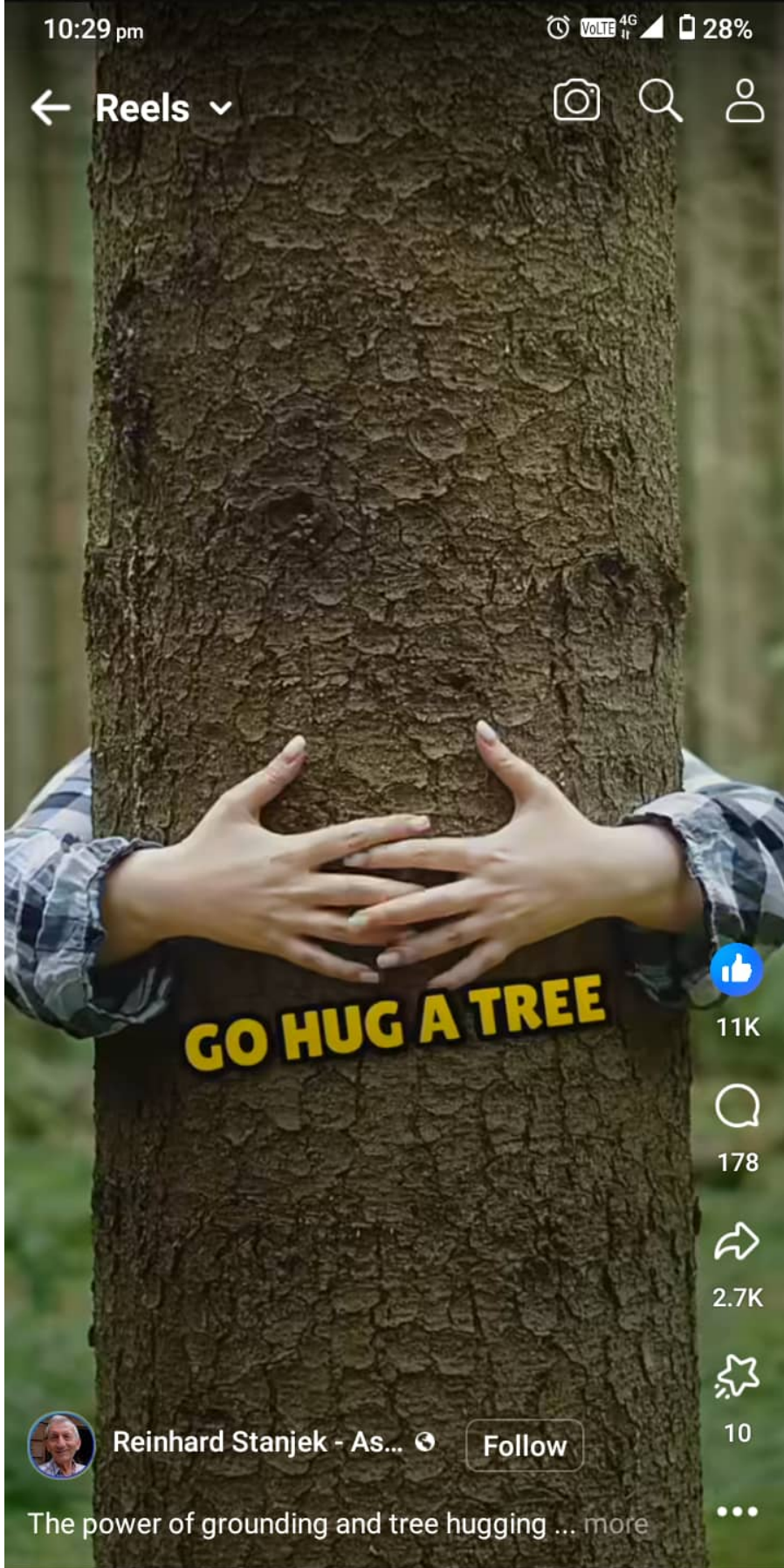
#osho #osholove #oshoquotes ... more



Add a comment...



← Reels ▾



11K



178



2.7K



10



Reinhard Stanjek - As... Ⓢ

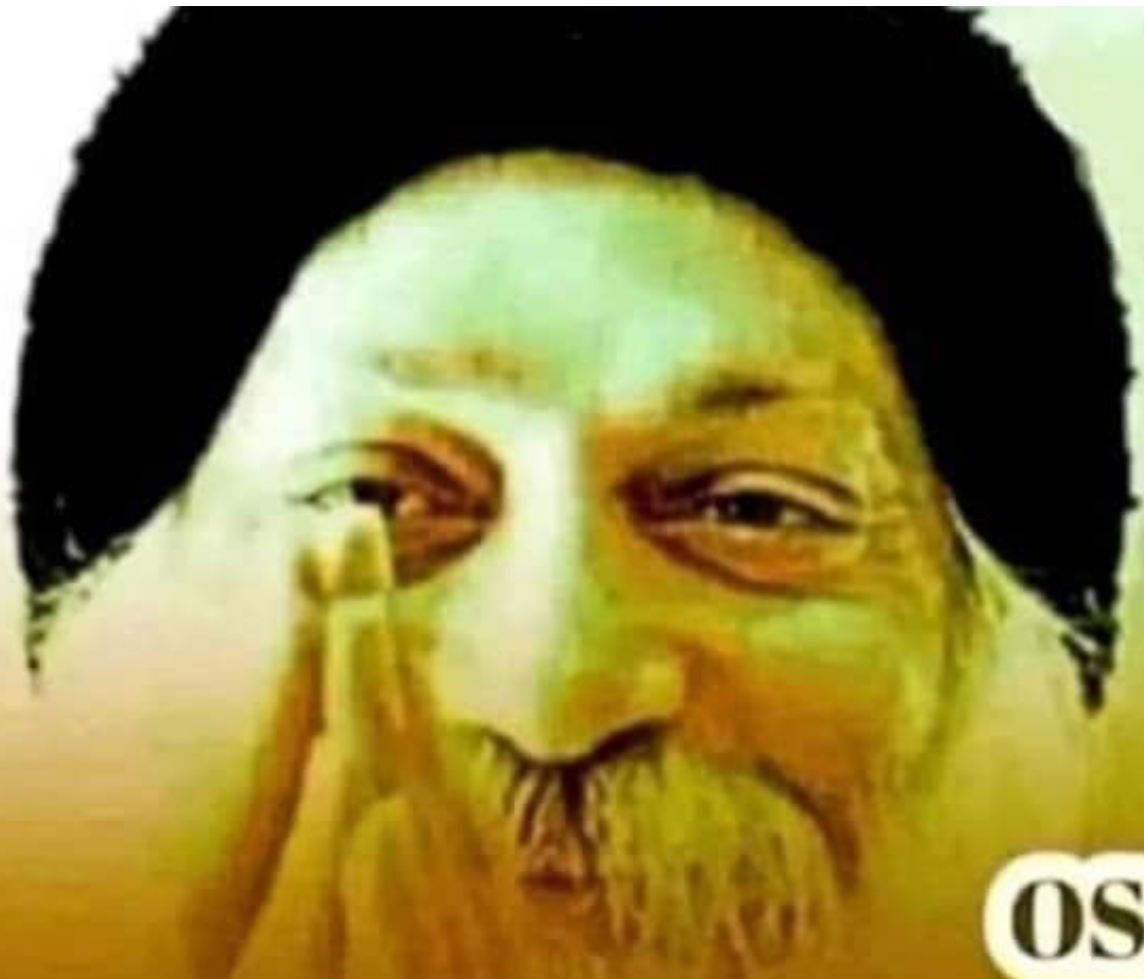
Follow

The power of grounding and tree hugging ... more



Add a comment...





OSHO

सदगुरु स्नेह

प्रेम की डोर दिखती तो नहीं है,
पर इतनी मजबूत होती है
की परमात्मा को भी
बांध सकती है ।

"The words we speak must be carefully chosen so that people hear them and are affected by them in a good or bad way."

"जो शब्द हम बोलते हैं उन्हें सावधानी से चुना जाना चाहिए ताकि लोग उन्हें सुनें और उनसे अच्छे या बुरे तरीके से प्रभावित हों।"

~~Love Buddha~~





प्रयत्न साधन है तुम्हे आलस्य
छोड़ना पड़ेगा। याद रखो,
जीवन श्रम है। मृत्यु विश्राम है।
तो अगर मरना है तो कुछ करने
की जरूरत नहीं पर अगर जीना
हो तो कुछ करना पड़ेगा। और
अगर विराट जीना है तो विराट
उधम करना
होगा।

ओशो



तब उस ने अपने शिष्यों से कहा, 'मेरे पांव सुन्न हो रहे हैं, लेकिन मैं अब भी उतना ही हूं जितना पहले था। मुझसे कुछ भी नहीं छीना गया है, मुझमें मेरे अस्तित्व की अनुभूति पहले की तरह ही समग्र है। हालांकि मेरे पैर मिटते जा रहे हैं।'

फिर उसने कहा, 'अब मेरे पैर मिट चुके हैं, लेकिन मैं अब भी वैसा ही हूं। मैं अपने आप में कुछ भी कम नहीं देख रहा। मैं अब भी उतना ही समग्र हूं।'

फिर उसने कहा, 'अब मेरा पेट सुन्न हो रहा है...हाथ सुन्न हो रहे हैं।' वह बहुत उत्साहित और आनंदित था। उसने कहा, 'लेकिन मैं अब भी तुमसे कहता हूं - मैं अब भी बिल्कुल वही हूं, मुझमें से कुछ भी कम नहीं हुआ है।'

फिर वह मुस्कुराने लगा और उसने कहा, 'इससे पता चलता है कि देर-सबेर मृत्यु मेरा हृदय भी रोक देगी - लेकिन वह मुझे नहीं मिटा सकती।'

फिर उसने कहा, 'मेरे हाथ मिट चुके हैं... और अब हृदय भी रुकने लगा है। ये मेरे आखिरी शब्द होंगे क्योंकि मेरी जीभ सुन्न होती जा रही है, लेकिन मैं तुमसे कहता हूं, याद रखना, ये मेरे अंतिम शब्द हैं - मैं अब भी बिल्कुल वैसा ही हूं, स्वयं में उतना ही परिपूर्ण।'

यह मृत्यु की खोज है। गर्भ से लेकर अंत तक, मनुष्य का जीवन सत्य की खोज है। और यदि आप सत्य की खोज नहीं कर रहे हैं, तो आप मनुष्य नहीं हैं, तो फिर आप चूक गए। तब अधिक से अधिक आप एक मनुष्य की तरह दिखते हैं, लेकिन आप मनुष्य नहीं हैं। आपकी मनुष्यता केवल बाहर है, आपके हृदय में नहीं।

जब तक आपकी जिज्ञासा इतनी ऊंचाई तक नहीं बढ़ती कि आपकी सारी ऊर्जा जिज्ञासा में परिवर्तित न हो जाए और आप एक खोज न बन जाएं, आप मनुष्य नहीं हैं।

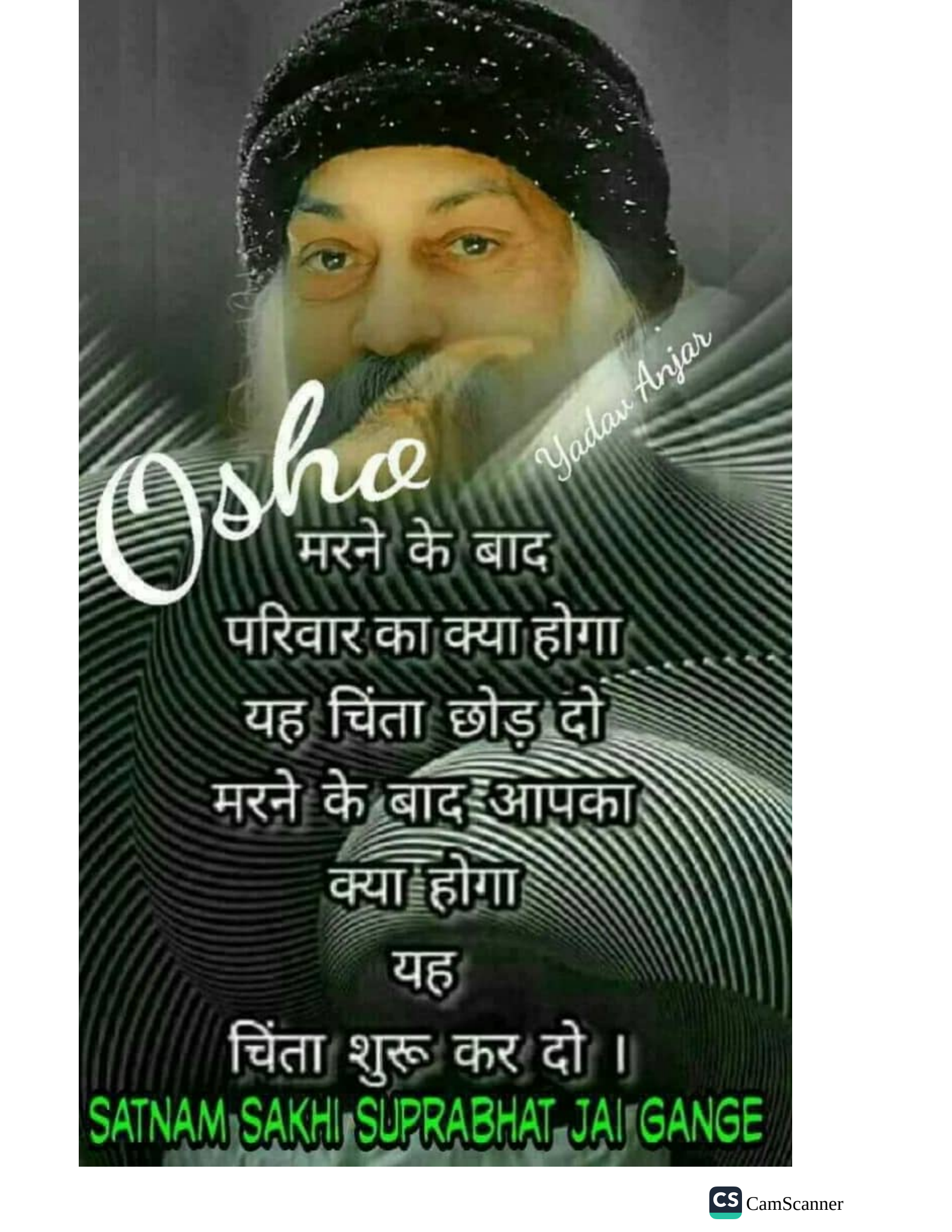
- The Search
OSHO.. 🙏🌹



एक हृद के बाद इंसान,
सब कुछ छोड़ देता है।

शिकायत करना, मित्रते करना, मनाना
और फिर दिल ऐसा हो जाता है,
कि कोई बात करें तो ठीक,
ना करें तो भी ठीक।

क्योंकि पता लग चुका होता है,
कि दुनिया बहुत झूठी, और मतलबी है।



Osho

Yadav Anjar

मरने के बाद
परिवार का क्या होगा
यह चिंता छोड़ दो
मरने के बाद आपका
क्या होगा
यह

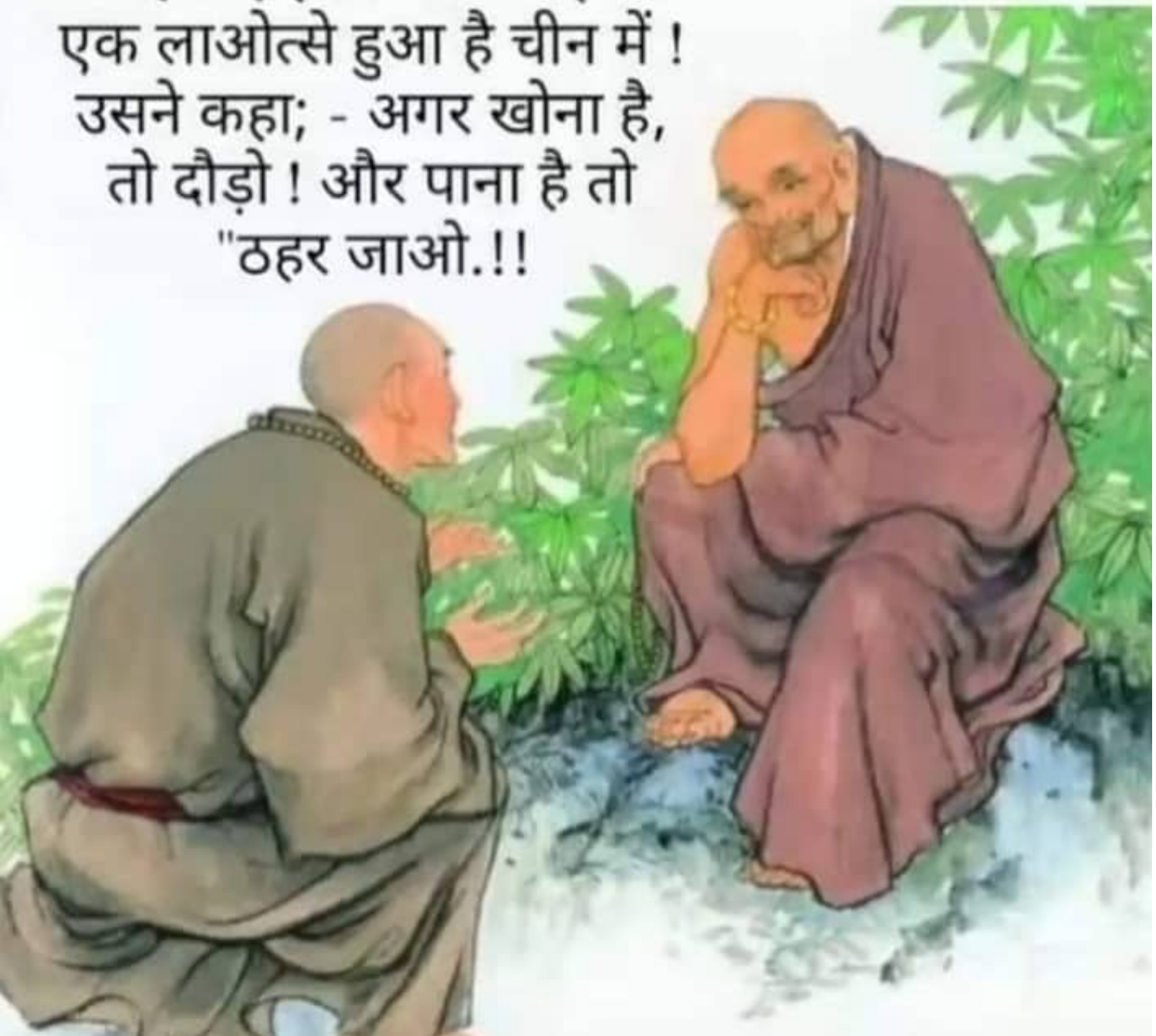
चिंता शुरू कर दो ।

SATNAM SAKHI SUPRABHAT JAI GANGE

ख्वाहिशें खत्म ही नहीं होती
इंसान की साहब,...
मौत के बाद भी जन्नत
मांगता हैं...

 राम राम-सा 

कोई ढाई हजार साल पहले!
एक लाओत्से हुआ है चीन में !
उसने कहा; - अगर खोना है,
तो दौड़ो ! और पाना है तो
"ठहर जाओ.!!



[← Reels](#) ▾

सौंदर्य में
गरीब होगा



1.1K



8



237



Give



Sandeep Pardeshi



Follow

#oshohindispeech #oshohindiquotes #os... more



Add a comment...



[← Reels](#) ▾

गरीब नहीं
मिटेगा सर वो



1.1K



8



237



Give



Sandeep Pardeshi

[Follow](#)#oshohindispeech #oshohindiquotes #os... [more](#)[Add a comment...](#)

[← Reels](#) ▾

तुम कौन हो



301



3



45



Give

**Dhyan Deep Dubara** [@journey.369/ig](#)[Follow](#)

Sanse

[Add a comment...](#)

[← Reels](#) ▾

हम ऐसी जंजीरो में बंधे है जो है ही नहीं



442



2

@Govind Shunyam

ओशो



108



Give



osho ji

हम ऐसी जंजीरों में बंधे हैं जो हैं ही नहीं



की तुम अपने को उतना
ही मत मान लो,
जितना तुमने अपने को
जाना है।



611



6

OSHO



149



Give



Jay Pithadiya 🌐

Follow

🙏🙏🙏🧘🧘🍁🍁🍁#osho🍁🍁🍁🧘... more

Add a comment...



हाथ जोड़ के तुम्हे कह रहा
हु,
बुद्ध तुम्हारे बितर विराजमान
है।

OSHO



Jay Pithadiya 🌐

Follow

🙏🙏🙏🧘🧘🍁🍁🍁#osho🍁🍁🧘... more

Add a comment...





कारण ऐसा नहा ह।क लाओत्स का बात उलटा ह,कारण ऐसा ह।क हम सब उलटे खड़े हैं।

लाओत्से का एक शिष्य च्वांगत्से मरने के करीब था। अंतिम क्षणों में उसके मित्रों ने पूछा, तुम्हारी कोई इच्छा है? तो उसने कहा, एक ही इच्छा है मेरी कि इस पृथ्वी पर मैं पैरों के बल खड़ा था, उस परलोक में मैं सिर के बल खड़ा होना चाहता हूं। शिष्य बहुत परेशान हुए। और उन्होंने कहा, हमारी कुछ समझ में नहीं आता। क्या आप परलोक में उलटे खड़े होना चाहते हैं? तो च्वांगत्से ने कहा, जिसे तुम सीधा खड़ा होना कहते हो, उसे इतना उलटा पाया कि आने वाले जीवन में उलटा खड़े होकर प्रयोग करना चाहता हूं, शायद वही सीधा हो।

लाओत्से की यह बात कि जो जानते हैं, जो जागे हुए हैं, वे अपनी शासन-व्यवस्था में लोगों के पेटों को तो भरते हैं, उदर को तो भरते हैं, उनकी भूख को तो पूरा करते हैं, लेकिन उनके मन को शून्य करते हैं। उनकी शरीर की तो सारी जरूरतें पूरी हों, इसका ध्यान रखते हैं; लेकिन उनका मन महत्वाकांक्षी न बने, इस दिशा में प्रयास करते हैं।

साधारणतः हम शरीर कितना ही कटे, कट जाए; गले, गल जाए; शरीर को कुर्बान करना पड़े, हो जाए; लेकिन मन की आकांक्षा पूरी हो, मन की वासनाएं पूरी हों। और मन की वासनाओं की वेदी पर हम शरीर को चढ़ाने को सदा तत्पर हैं, चढ़ाते हैं। हमारा पूरा जीवन मन की वासनाओं को पूरा करने में शरीर की हत्या है। और साधारणतः इसे ही हम बुद्धिमानी कहेंगे। लेकिन लाओत्से कहता है कि पेट तो लोगों के भरे हुए हों, लेकिन मन खाली।

मन के खाली होने का क्या अर्थ है? और पेट के भरे होने का क्या अर्थ है? लोग शरीर से तो स्वस्थ हों, शरीर तो उनका भरा-पूरा हो, शरीर तो उनका बलशाली हो, लेकिन मन उनका बिलकुल कोरा, खाली, शून्य, एम्पटी हो। और परम स्वास्थ्य की अवस्था वही है, जब शरीर भरा होता और मन खाली होता।

लेकिन हम सब मन को बहुत भर लेते हैं। हमारी पूरी जिंदगी मन को भरने की कोशिश है। विचारों से, वासनाओं से, महत्वाकांक्षाओं से मन को हम भरते चले जाते हैं। धीरे-धीरे शरीर तो हमारा बहुत छोटा रह जाता है, मन बहुत बड़ा हो जाता है। शरीर तो सिर्फ घसिटता है मन के पीछे...!!

*ओशो...

अज्ञानी तो भटकते ही है लेकिन
ज्ञानी महा अन्धकार में भटक जाते है।

ओशो अहोभाव

 ahobhav_

एक बार दो उल्लू सुबह
के नाशते को निकले,
एक 🦉 ने सांप को
पकड़ लिया, और दूसरे
"उल्लू ने चूहे को, अब
दोनों पेड़ पर जा बैठे.!

"सांप ने चूहे को

O देखा, और मुह में पानी
S आ गया, चूहा सांप को
H देखकर भयभीत हो
O गया, कमाल ये है कि,
हैं;दोनों मौत के मुह में,



यहीं हाल तुम्हारा है,
तुम मौत से ज्यादा
भयभीत नहीं! भय से
ज्यादा भयभीत हो.!
और कभी इन्द्रियों के
"स्वाद में भी मृत्यु
दिखाई नहीं देती..!!



“सत्य” सभी का एक ही होता है, झूठ सबके
अलग अलग।

ओशो



फिक्र छोड़ो, मस्त रहो

दुःख उधार का है, आनंद स्वयं का है। आनंदित कोई होना तो अकेले भी हो सकता है; दुखी होना चाहे तो दूसरे की जरूरत है। कोई धोखा दे गया; किसी ने गाली दे दी; कोई तुम्हारे मन की अनुकूल न चला सब दुःख दूसरे से जुड़े है। और आनंद का दूसरे से कोई सम्बन्ध नहीं है। आनंद स्वस्फूर्त है। दुःख बाहर से आता है, आनंद भीतर से आता है.

ओशो



**"मूर्ख की नजर धर्म पर होती है
समझदार की ज्ञान पर"**



तुम्हारा आधार खो सकता है। तुम एक अनंत खाई में गिर सकते हो। इसलिए तुम्हें भय पकड़ता है। और तुम आधार खोजने लगते हो। चाहे वह झूठा ही आधार क्यों न हो, तुम्हें उससे राहत मिलती है। झूठा आधार भी मदद देता है। *क्योंकि मन को कोई अंतर नहीं पड़ता कि आधार झूठा है या सच्चा है,* चाहे बुद्ध का हो या पतंजलि का, कोई आधार होना चाहिए। *और आधार समाधि में रुकावट है।*

ओशो । (संकलित)



1



Like



Comment



Send



Share

**ओशो - जीवन-मृत्यु**

Gagandeep Singh · 9h · 🌐



**Osho Human Being To Be.In.God**

...



4h · 🌐

लेकिन मन सदा आधार खोजता है। मेरे पास लोग आते हैं और मैं उनसे कहता हूँ, 'आंखें बंद कर के मौन बैठो और कुछ भी मत करो।' और वे कहते हैं, हमें कोई अवलंबन दो, सहारा दो। सहारे के लिए कोई मंत्र दो। क्योंकि *हम खाली बैठ नहीं सकते हैं।* खाली बैठना कठिन है। यदि मैं उन्हें कहता हूँ कि मैं तुम्हें मंत्र दे दूँ तो ठीक है। तब वह बहुत खुश होते हैं। वे उसे दोहराते रहते हैं। तब सरल है।

आधार के रहते तुम कभी रिक्त नहीं हो सकते। तुम्हारे पास कुछ न कुछ आधार होना चाहिए। तुम्हारे पास करने के लिए कुछ न कुछ होना चाहिए। *करते रहने से कर्ता बना रहता है।* करते रहने से तुम भरे रहते हो— *चाहे तुम ओंकार से भरे हो। ओम से भरे हो, राम से भरे हो। जीसस से, कृष्ण से* *या शास्त्रों से* ।

किसी भी चीज से—किसी भी चीज से भरे हो, लेकिन तुम भरे हो। तब तुम ठीक रहते हो, आश्वस्त रहते हो। मन खालीपन का विरोध करता है। *वह सदा किसी चीज से भरा रहना चाहता है।* क्योंकि जब तक वह भरा है तब तक चल सकता है। *यदि वह रिक्त हुआ तो समाप्त हो जाएगा।* और रिक्तता में तुम अ-मन को उपलब्ध हो जाओगे, और तो ही समाधि लगेगी। वही कारण है कि मन आधार की खोज करता है।

यदि तुम अंतर-आकाश, इनर स्पेस में प्रवेश करना चाहता हो तो आधार मत खोजो। *सब सहारे—मंत्र, परमात्मा, शास्त्र—जो भी तुम्हें सहारा देता है वह सब छोड़ दो।* यदि तुम्हें लगे कि किसी चीज से तुम्हें सहारा मिल रहा है *तो उसे छोड़ दो* और भीतर आ जाओ। आधारहीन।

यह भयपूर्ण होगा; तुम भयभीत हो जाओगे। तुम वहां जा रहे हो जहां तुम पूरी तरह खो सकते हो। हो सकता है तुम वापस भी न आ सको। क्योंकि वहां सब सहारे खो जाएंगे। किनारे से तुम्हारा संपर्क छूट जाएगा। और नदी तुम्हें कहां ले जाएगी। किसी को पता नहीं।

तुम्हारा आधार खो सकता है। तुम एक अनंत खाई में गिर सकते हो।
तुम्हारा तम भय पकड़ता है। और तम आधार खोजने लगते हो। चाहे



Elevate Your Life with Dr. Sha TV

[Learn more](#)

238

7 comments • 15 shares



Like



Comment



Share

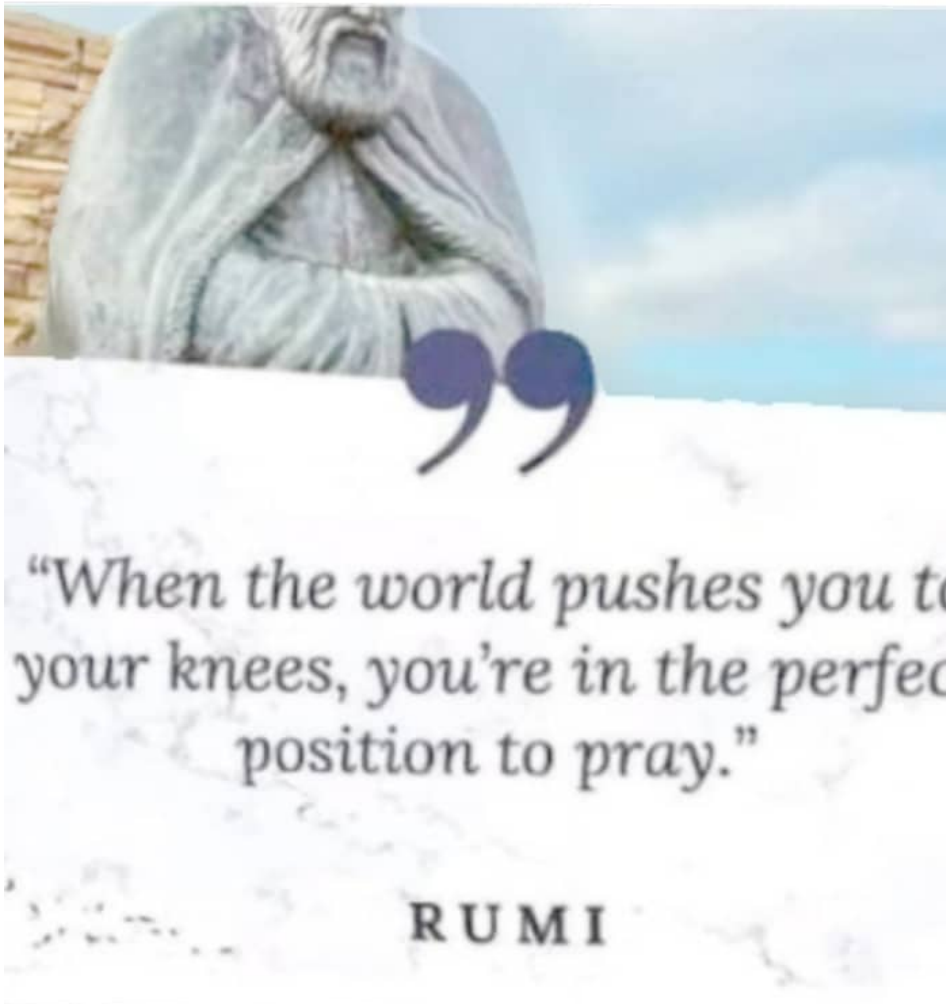


Osho Human Being To Be.In.God



4h ·

लेकिन मन सदा आधार खोजता है। मेरे पास लोग आते हैं और मैं उनसे कहता हूँ, 'आंखें बंद कर के मौन बैठो और कुछ भी मत करो।' और वे कहते हैं, हमें कोई अवलंबन दो, सहारा दो। सहारे के लि... See more



1



Like



Comment



Send



Share



युवती आई और बोली - सन्यासी दो घड़ी विश्राम करलो,
वह बोला - ठीक है आप कहती हो तो कुछ देर लेट जाता हूँ, देवांग ने
सोचा कि पहले हलुआ और अब विश्राम जैसा मैं चाहा वैसा ही होना,
शायद ये संयोग है !!! वह सोचने लगा कास ये सुन्दरी कोमलांगी मेरी
बगल में लेटी होती



वह दो घड़ी के बाद उठकर बैठ गया और मन में सोचने लगा कि- सुंदर
युवती तो क्या, अब तो सिर ढकने को छत और लेटने को शैया भी नहीं
मिलेगी, सब कुछ तो त्याग दिया।

सोनाली मुस्कराते हुए बोली - सन्यासी होकर छत और शैया जैसी तुच्छ
चीजों कि चिंता क्यों करते हो !!!!

इतना सुनते ही वह सकपकाया और घबराहट में बोला -

- क्या आप मन की बात जान लेती हो देवी?

सोनाली ने कहा - जब से साध्वी बनी हूँ, मैंने सभी स्मृतियों को बिसार
कर मन को खाली कर दिया है, अतः निकट वालों के मन में जो
कल्पनाएं चलती रहती है, वो पढ़ लेती हूँ।!

▼ देवांग शर्मिंदगी से पानी पानी हो गया!! क्या सोचती होगी ये मुझ
निर्लज्ज के बारे में..(वह जल्दी ही वहां से निकल लिया)



■ अगले दिन बुद्ध ने फिर उसे उसी युवती के घर से भिखा मांग कर
लाने के लिए बोला (वह इंकार भी नहीं कर सकता था, उसने मन के
विकारों को त्यागने का संकल्प लिया)

अगले दिन वह फिर सोनाली के घर पहुंचा वहीं दोपहर का समय)

▼ सोनाली बोली - आओ सन्यासी गर्मी बहुत है, बैठो मैं पानी लाती
हूँ।..... (उसने मन में आज कोई बुरा विचार नहीं था उसकी सोच
बदल गयी थी - वह विचार करने लगा -

कितनी प्यारी हैं ये मेरी बहन, कास में भी इस योग्य होता कि भिक्षा के
बदले इसे कुछ दे पाता,

यही तो कुल देवी है, यही तो आदी शक्ति जगत जननी है,

■ सन्यासी होने का मतलब वस्त्र रंग लेना नहीं है।

जब वासनाएं प्रेम में बदल जाती है, इच्छाएं समर्पण में बदल जाती है।

जब क्रोध - करुणा में बदल जाता है। सारा खेल मन का है!!!!, जब
मन बदल जाता है, तब सन्यासी हो जाता है।

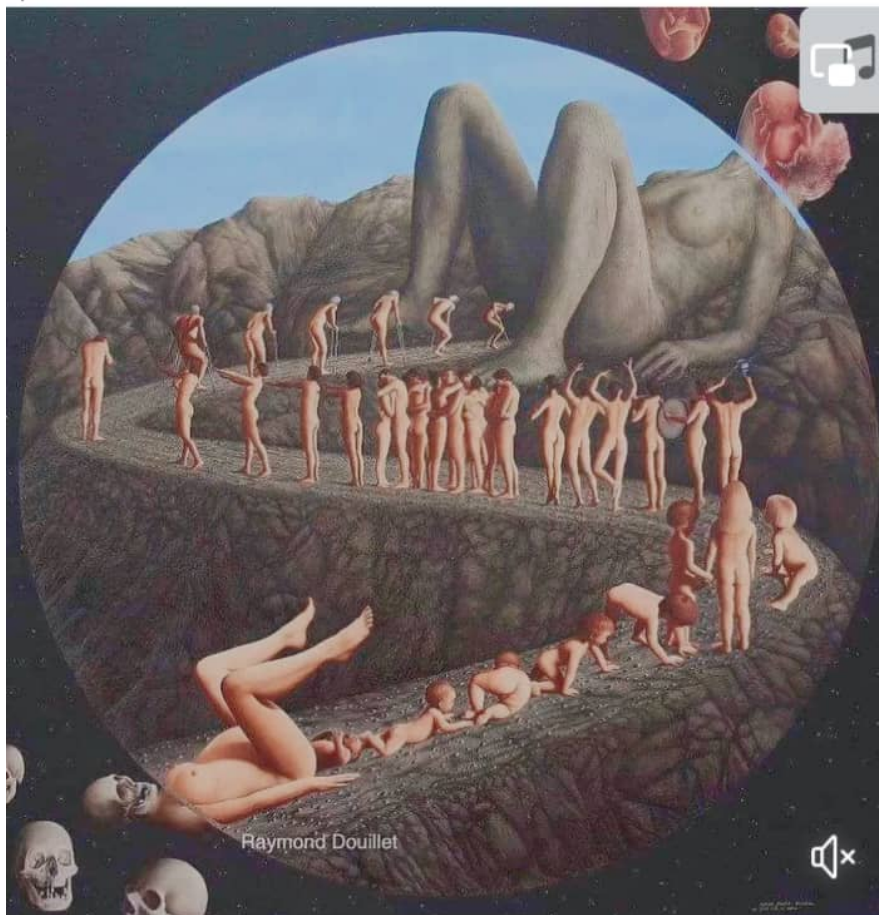
W.Daarth hainela



ओशो धर्मनिरपेक्ष वैदिक दिव्य ब्रह्मांडीय रहस्यवादी ट्रांससेंडेंटल तंत्र विद्या प्रकट करती है...

वह बिग बैंग से पहले शून्य है,... See more

⚙️ • Rate this translation



👍❤️ 20

1 share • 215 views



Like



Comment



Send



Share

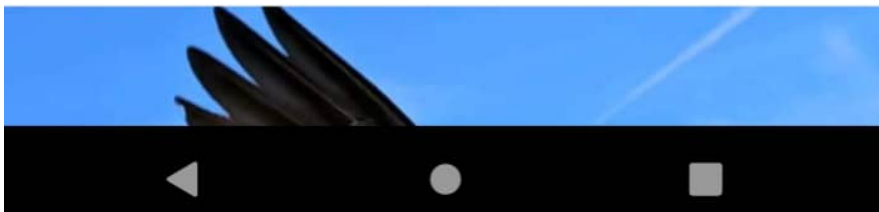


Corazón De La Naturaleza.

Sponsored · 🌐



Bienvenidos a corazón de la Naturaleza, da... See more





Osho Talks



Osho Talks

1d · 🎵 Dean Martin · 🌐



Osho Secred Vedic Divine Cosmic Mystic
Transcendental Tantra Vidya Reveals...

She Is The Void Before The Big Bang,
She Is The Mother Of All Black Holes,
She Gives Birth To All Galaxy And Nebulae.
She is beyond time, forms or explanation,
She Is The Cause For Creation,
She Is Our Primordial Mother,
From Where We Born,
And only into her we Submerge back..

ओशो धर्मनिरपेक्ष वैदिक दिव्य ब्रह्मांडीय रहस्यवादी ट्रांसिडेंटल तंत्र
विद्या प्रकट करती है...

वह बिग बैंग से पहले शून्य है,
वह सभी काले छेदों की माँ है,
वह सभी गैलेक्सी और नेबुले को जन्म देती है।
वह समय, रूप या व्याख्या से परे है,
वह निर्माण का कारण है,
वह हमारी प्राथमिक माँ है,
हम कहाँ से पैदा हुए,
और केवल उसी में हम वापस डूब जाते हैं ..



Rate this translation

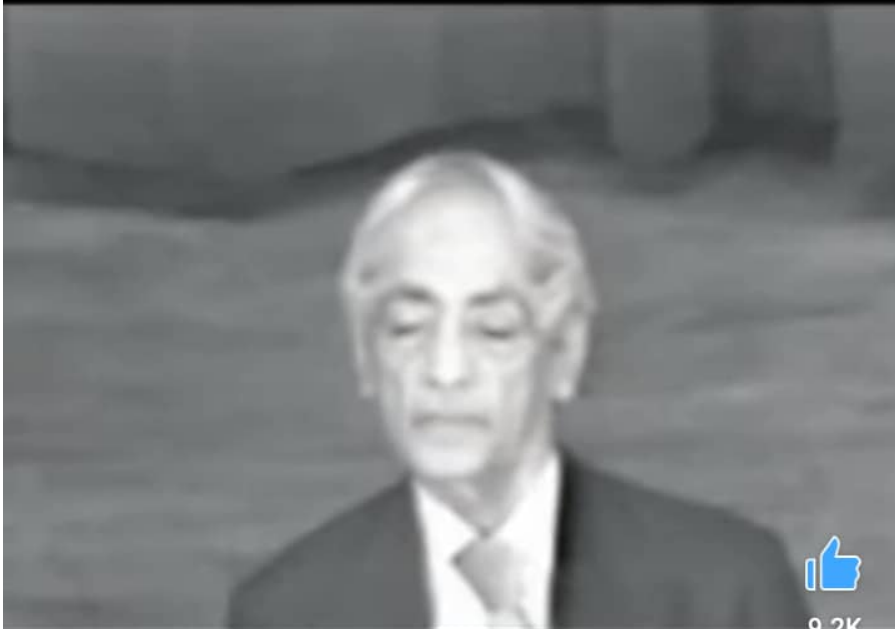


Write a comment...



संन्यासी वह है,
जो अपने को जगाने में लगा है।

ओशो अहोभाव
निर्वाण उपनिषद



9.2K

and when there is that
state of mind



Dislike



230



Share



Remix



@hrithikjyani7

[Subscribe](#)

What do you think about the Buddha? -
Krishnamurti

🎵 Original sound



Home



Shorts

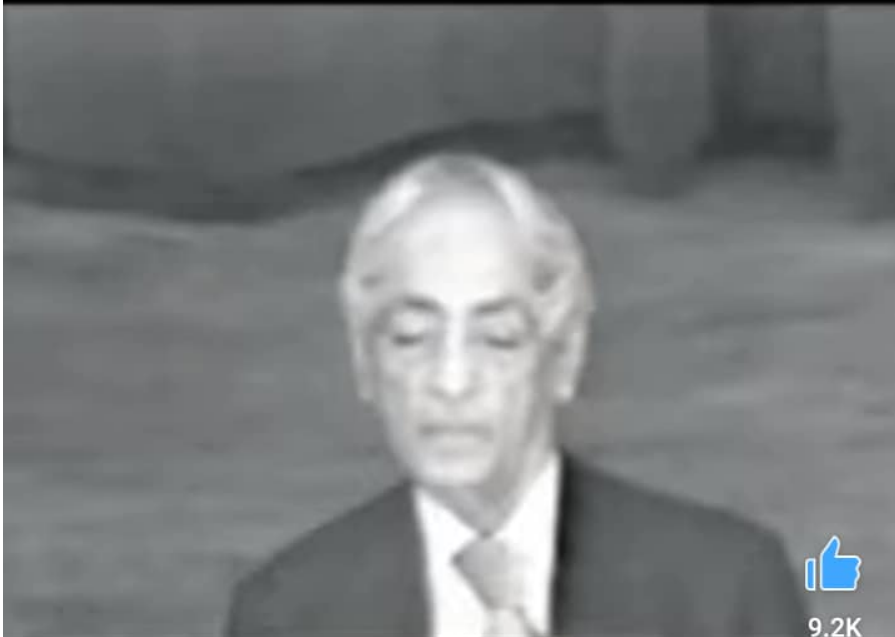


Subscriptions



You





9.2K

when there is no



Dislike



230



Share



Remix



@hrithikjyani7

Subscribe

What do you think about the Buddha? -
Krishnamurti

Original sound



Home



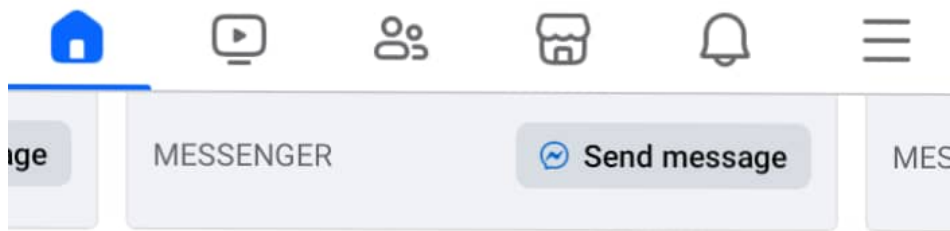
Shorts



Subscriptions



You



248

42 comments



Like



Comment



Share

**OSHOKATHASAGAR**

1h · 🌐

गुज़रो न इस तरह कि
तमाशा नहीं हूँ मैं ,
समझो कि अब हूँ
और दोबारा नहीं हूँ मैं ,



15

1 comment



Like



Comment



Send



Share

**Ramesh S Rameshsundaran**

Naman OSHO 🙏🙏🙏❤️❤️❤️

Like · Reply

हम समझते कम,,

और...

उलझते ज्यादा,,

हैं...!

....ओशो....



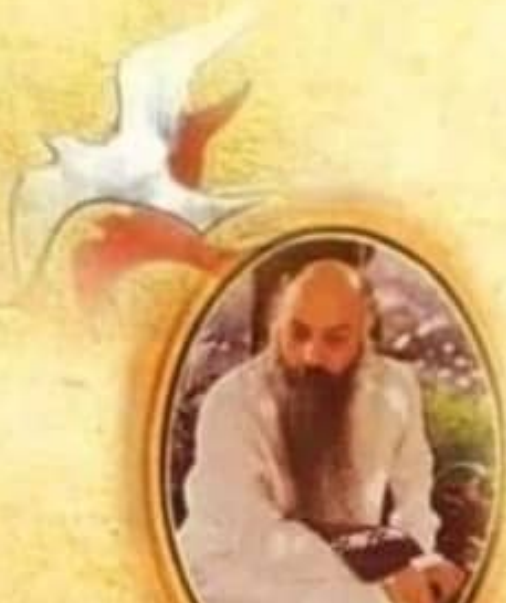
Gentlewomen Sayings

**MOVE IN SILENCE
ONLY SPEAK WHEN
IT'S TIME TO SAY
CHECKMATE.**

खेल तो चलता रहेगा –
सवाल यही है कि
जीवन तुमसे खेल रहा है
या
तुम जीवन से?



**जो
तैयार हो कर ही आया है
मिटने को,
वही मिटेगा;
शेष तो व्यर्थ की बातों में ही
उलझे रह जाएंगे।**



**Gagan Gagan Kaushal**

3h · 🌐

ये पड़ा है

हुस्न, शबाब, जवानी, अभिमान, नफरत, धर्म, समाज, दौलत, शोहरत,
ईर्ष्या, छल, तरक्की, लड़ाई, झगड़े
सबका हाल ये होना है फिर घमंड किस चीज का

सुप्रभात 🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏.



Swami Atmo Vaibhav and others 3 comments • 1 share



Like



Comment



Send



Share



दिन में तुम पति थे, पत्नी थे, मां थे, पिता थे,
बेटे थे; रात सो गए, सब खो गया।
न पिता रहे, न पत्नी, न बेटे।

दिन तुम अमीर थे, गरीब थे; रात सो गए,
न अमीर रहे न गरीब। दिन तुम क्या—क्या थे
रात सो गए, सब खो गया। दिन में जवान थे,
के थे, रात सो गए, न जवान रहे, न बूढ़े।
सुंदर थे, असुंदर थे, सब खो गया।

सफल—असफल सब खो गया।

रात ने दिन को पोंछ दिया।

रात जब सो जाते हो तब सब
भूल जाता है, सब झूठ हो जाता है।

Use audio



Osho Lovel

Bhagwan Osho



OSHO

183

11

34

Give







Krishnamurti's last public words

1.3 lakh views 3 yr ago ...more



J. Krishnamurti - Official Channel 6.43 lakh



4.1K



Share



Remix



Download

Comments 370



His brain never seemed to have gone senile from old age.
Listening to any of his talk you'll realise the sharpness and cl...

Krishnamurti's last public words

1.3 lakh views 3 yr ago ...more



J. Krishnamurti - Official Channel 6.43 lakh



4.1K



Share



Remix



Download

Comments 370



His brain never seemed to have gone senile from old age.
Listening to any of his talk you'll realise the sharpness and cl...

Krishnamurti's last public words

1.3 lakh views 3 yr ago ...more



J. Krishnamurti - Official Channel 6.43 lakh



4.1K



Share



Remix



Download

Comments 370

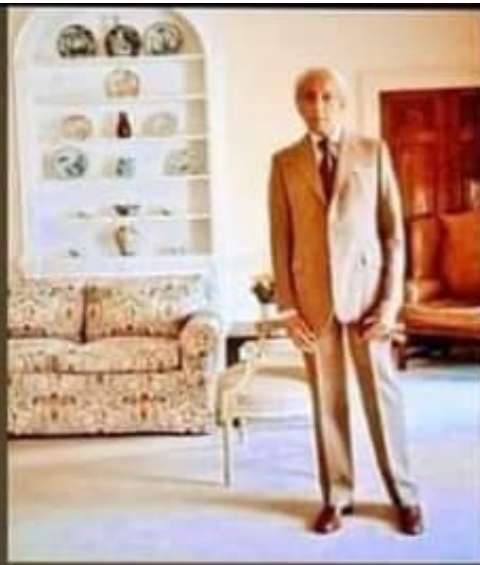


His brain never seemed to have gone senile from old age.
Listening to any of his talk you'll realise the sharpness and cl...



Without freedom from the past there is no freedom at all, because the mind is never new, fresh, innocent. It is only the fresh, innocent mind that is free. Freedom has nothing to do with age, it has nothing to do with experience; and it seems to me that the very essence of freedom lies in understanding the whole mechanism of habit, both conscious and unconscious.

J KRISHNAMURTI, THE BOOK OF LIFE



*Life is not a continuity of yesterday
- life is tremendously, passionately
alive now. But if you look at life
with the fear of yesterday, with its
memories and knowledge, then living
becomes a meaningless, frightful
tangle and misery.*

Krishnamurti - Talk 3, Students, Rajghat, 17 December 1967

हिंदी में खोजें



जिदू कृष्णमूर्ति लास्ट वर्ड्स



View

हिंदी में

In English

His last public talk was in January 1986, a month before his death at his home in Ojai, California, U.S. Krishnamurti asserted that "truth is a pathless land" and advised against following any doctrine, discipline, teacher, guru, or authority, including himself.

W [https://en.m.wikipedia.org/wiki](https://en.m.wikipedia.org/wiki/Jiddu_Krishnamurti)[Jiddu Krishnamurti - Wikipedia](https://en.m.wikipedia.org/wiki/Jiddu_Krishnamurti)[? About featured snippets](#) [! Feedback](#)

People also ask

What was the last speech of Krishnamurti?





जिंदगी २० साल बची है
अब मैं अपने तरीके से जाना चाहता हूं।

© Status (1 included)





truth is a pathless land



All

Videos

Posts

People

Groups

Reels

E



J. Krishnamurti Quotes



Somipriyo Mukherjee · 31 Jul ·

"You are accustomed to being told how far you have advanced, what is your spiritual status. How childish! Who but yourself can tell you if you are beautiful or ugly within? Who but yourself can tell you if you are incorruptible? You are not serious in these things."

- J Krishnamurti

Truth is a Pathless Land by J Krishnamurti, 1929. The Dissolution of the Order of the Star

See translation



All

Videos

Posts

People

Groups

Reels

« मेरा मानना है कि सत्य एक पथहीन भूमि है, और आप किसी भी रास्ते से, किसी भी धर्म, किसी संप्रदाय से नहीं जा सकते। यह मेरी बात है, और मैं इसका पूरी तरह और बिना शर्त पालन करता हूं। सत्य, असीमित, बिना शर्त, किसी भी पथ से अप्रूध्य होने के नाते, व्यवस्थित नहीं किया जा सकता है; न ही किसी विशेष पथ पर लोगों का नेतृत्व करने या जबरदस्ती करने के लिए कोई संगठन बनाया जाना चाहिए। पहले समझोगे तो देखोगे कि विश्वास को व्यवस्थित करना कितना असंभव है। एक विश्वास विशुद्ध रूप से एक व्यक्तिगत मामला है, और आप इसे व्यवस्थित नहीं कर सकते हैं और न ही करना चाहिए। करो तो मर जाता है, क्रिस्टलीकृत होता है; दूसरों पर थोपना धर्म होता है, पंथ, संप्रदाय, धर्म होता है। यह वही है जो दुनिया भर में हर कोई करने का प्रयास कर रहा है। सत्य उनके लिए जो कमजोर हैं, उनके लिए जो क्षणिक रूप से नाराज हैं, उनके लिए जो संकीर्ण हैं और एक खेल बना दिया जाता है। सत्य को नीचे नहीं लाया जा सकता, बल्कि व्यक्ति को उस पर चढ़ने का प्रयास करना चाहिए। आप पहाड़ की चोटी को घाटी तक नहीं ला सकते। यदि आप पहाड़ की चोटी तक पहुंचना चाहते हैं तो आपको घाटी से गुजरना होगा, खतरनाक वर्षा से बेखौफ होकर, सीढ़ियों पर चढ़ना होगा। » -

<https://www.jkrishnamurti.org/about-dissolution-speech>

⚙️ • Rate this translation

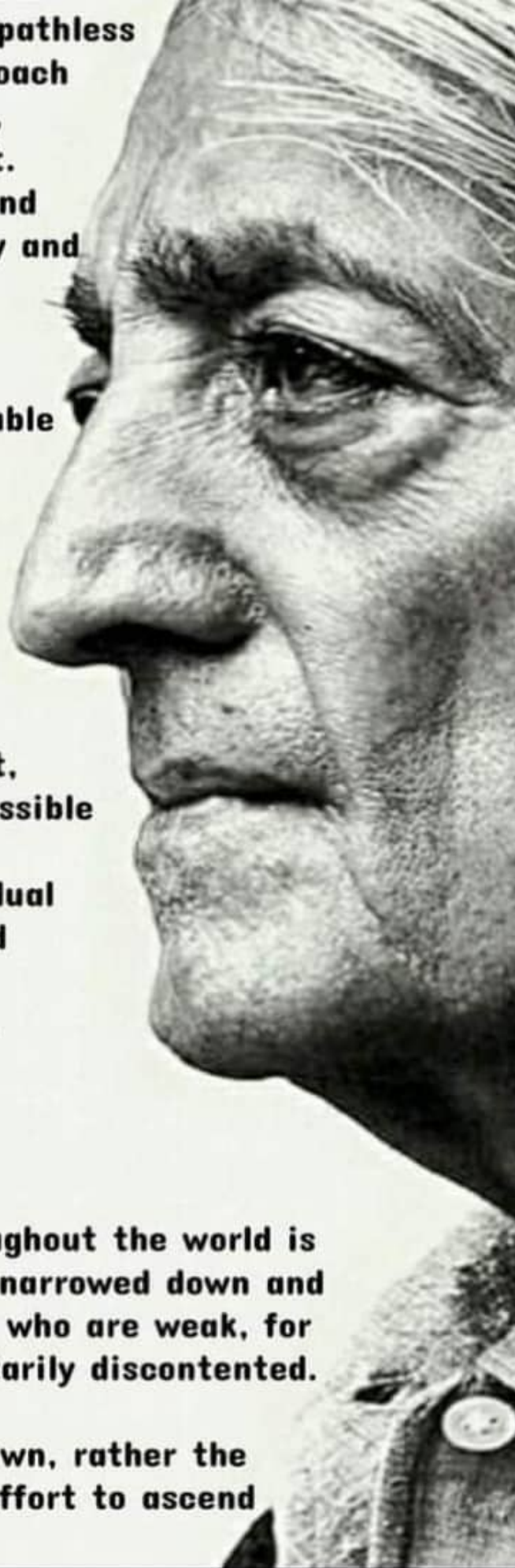
I maintain that Truth is a pathless land, and you cannot approach it by any path whatsoever, by any religion, by any sect. That is my point of view, and I adhere to that absolutely and unconditionally.

Truth, being limitless, unconditioned, unapproachable by any path whatsoever, cannot be organized; nor should any organization be formed to lead or to coerce people along any particular path.

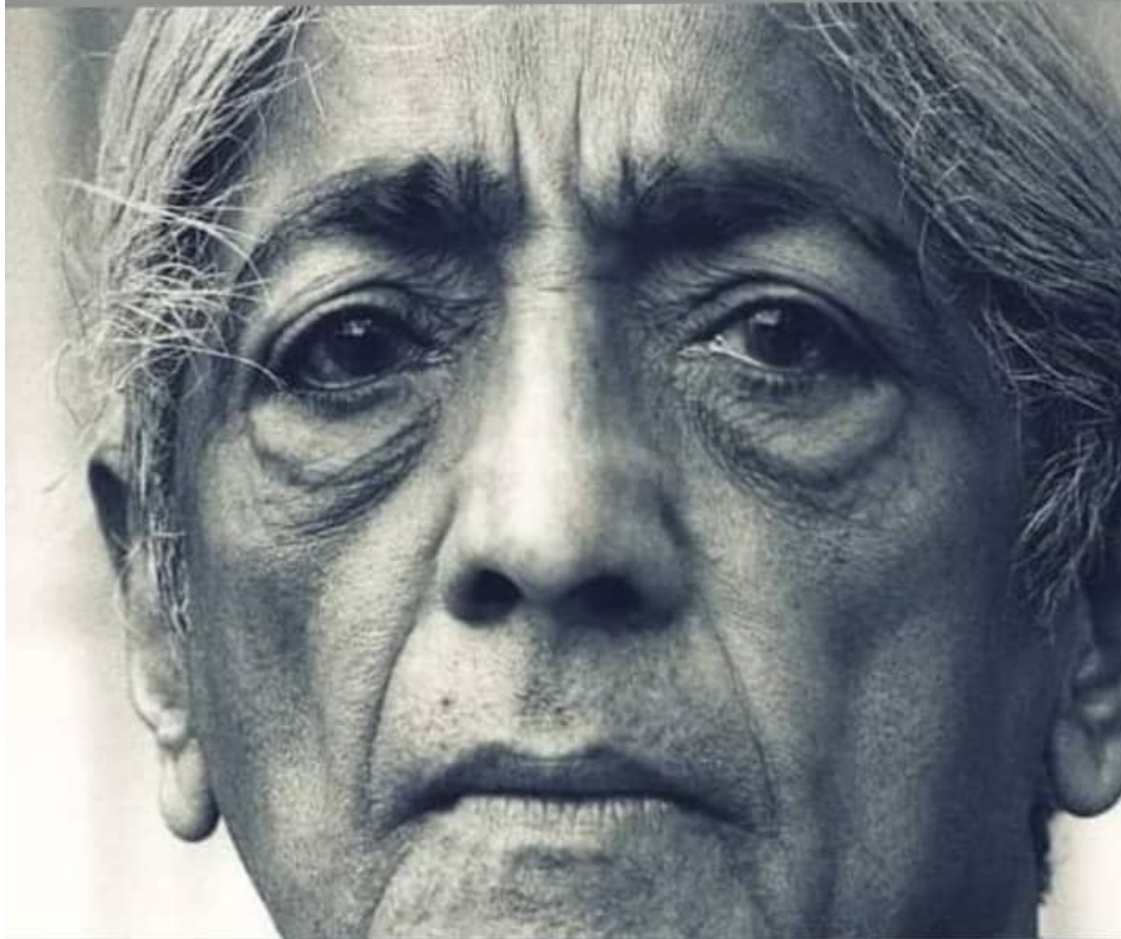
If you first understand that, then you will see how impossible it is to organize a belief. A belief is purely an individual matter, and you cannot and must not organize it. If you do, it becomes dead, crystallized; it becomes a creed, a sect, a religion, to be imposed on others.

This is what everyone throughout the world is attempting to do. Truth is narrowed down and made a plaything for those who are weak, for those who are only momentarily discontented.

Truth cannot be brought down, rather the individual must make the effort to ascend to it. - J Krishnamurti



**Truth is a pathless land
and you can not
approach it by any path
whatsoever, by any
religion, by any sect.
-- J. Krishnamurti**





truth is a pathless la...



All

Shorts

Videos

Unwatched

Watched



Krishnamurti reading 'Truth is a Pathless Land'
– Ojai, 1930



The Life of Krishnamurti · 80K views · 6 years ago



Audio | J. Krishnamurti reading 'Truth is
a Pathless Land' in 1929 – Phonograph Recor...



J. Krishnamurti - Official Channel · 9.1K views · 5 years ago



Shorts

View all



Home



Shorts



Subscriptions



You

Tuesday, 24 January 2017

8

Kaise sukoon paoon tujhe dekhne ke baad/
पाऊँ तुझे देखने के बाद

rt (6)

कैसे सुकून पाऊँ तुझे देखने के बाद
अब क्या ग़ज़ल सुनाऊँ तुझे देखने के बाद

it & Chitra

आवाज़ दे रही है मेरी ज़िन्दगी मुझे
जाऊँ के या न जाऊँ तुझे देखने के बाद

काबे का एहताराम भी मेरी नज़र में है
सर किस तरफ़ झुकाऊँ तुझे देखने के बाद

(एहताराम = आदर, सम्मान)

)

(0)

तेरी निगाह-ऐ-मस्त ने मखमूर कर दिया
क्या मैकदे को जाऊँ तुझे देखने के बाद

(मखमूर = नशे में चूर, मतवाला)

i (3)

नज़रों में ताब-ऐ-दीद ही बाक़ी नहीं रही
किस से नज़र मिलाऊँ तुझे देखने के बाद

(ताब-ऐ-दीद देखने की शक्ति/ ताक़त)

मंज़िल की जुस्तजू में उठे थे मेरे क़दम
कैसे क़दम बढ़ाऊँ तुझे देखने के बाद

rt (5)

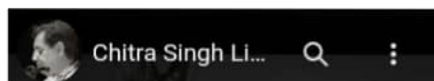
lohabbat Ki

alaam Karta

(जुस्तजू = खोज, तलाश)

-सईद शाहीदी

<https://www.youtube.com/watch?v=4uj19-p>





talat aziz ab kya ghazal suna...



Song by Talat Aziz

Overview

Videos

Lyrics

Add to home screen X

कैसे सुकून पाऊँ, तुझे देखने के बाद
कैसे सुकून पाऊँ, तुझे देखने के बाद
अब क्या ग़ज़ल सुनाऊ तुझे देखने के बाद
कैसे सुकून पाऊँ, तुझे देखने के बाद

आवाज़ दे रही है मेरी ज़िन्दगी मुझे
आवाज़ दे रही है मेरी ज़िन्दगी मुझे
जाऊ मैं या न जाऊ तुझे देखने के बाद
अब क्या ग़ज़ल सुनाऊ तुझे देखने के बाद
कैसे सुकून पाऊँ, तुझे देखने के बाद

काबे का एहताराम भी मेरी नज़र में हैं
काबे का एहताराम भी मेरी नज़र में हैं
सर किस तरफ झुकाऊँ, तुझे देखने के बाद
अब क्या ग़ज़ल सुनाऊ, तुझे देखने के बाद
कैसे सुकून पाऊँ, तुझे देखने के बाद

तेरी निगाहें मस्त ने मखमूर कर दिया
तेरी निगाहें मस्त ने मखमूर कर दिया
क्या मैं काबे को जाऊ तुझे देखने के बाद
अब क्या ग़ज़ल सुनाऊ तुझे देखने के बाद
कैसे सुकून पाऊँ, तुझे देखने के बाद

नज़रो में ताबदीद ही बाकी नहीं रही
नज़रो में ताबदीद ही बाकी नहीं रही
कीससे नज़र मिलाऊ, तुझे देखने के बाद
अब क्या ग़ज़ल सुनाऊ, तुझे देखने के बाद
कैसे सुकून पाऊँ, तुझे देखने के बाद



Translate to English

Source: [LyricFind](#)

Discover



Search



Saved





काबे का एहताराम भी अब सर किस जगह



All

Videos

News

Books

Images

Maps

Sho

हिंदी में खोजें



काबे का एहताराम भी अब सर किस ...



Facebook

<https://m.facebook.com/posts/go...>

Good Morning Friends !! . काबे का... - ओशो प्रेम और ध्यान

Good Morning Friends !! . काबे का एहताराम भी, मेरी नज़र में है ! सर
किस तरफ झुकाऊँ, तुझे देखने के बाद !!

Missing: झुकाओ | Show results with: झुकाओ

Videos



Maulana Tariq Jameel - Baron Ka Ehtram - Heart Touching...

YouTube · Tauheed Islamic
22-Oct-2021



26th Annual Ijtema 2022 | Day 2 - After Fajr - Shaykh UI Hadith ...

YouTube · Peer Zulfiqar Ahmad Naqshba...
29-Oct-2022



Madani Muzakra Ep 1990 – 4th Ramzan 1443 (After Taraweeh)...

YouTube · Madani Channel
07-Apr-2022



प्रेम क्या है...?
तपती देह पर,
लेप चंदन का...!



जाएगा, लेकिन खिलौने से जो प्रेम का अनुभव हुआ, वह साथ चल पड़ेगा। खिलौने से जो प्रेम का नाता बना, जो संबंध बना, जो प्रतीति हुई, जो अनुभव हुआ, प्रेम का जो द्वार खुला, वह साथ रह जाएगा। खिलौना तो कल पड़ा रह जाएगा किसी कोने में। यह खिलौना फिर कभी इसे याद भी न आएगा। लेकिन जब भी यह किसी और को भी प्रेम करेगा, तो ध्यान रखें, उस खिलौने का भी दान उस प्रेम में रहेगा। लेकिन, हो सकता है यह बच्चा—बच्चा तो न रह जाए शरीर से, लेकिन मन से फिर भी बच्चा रह जाए। फिर किसी व्यक्ति से प्रेम करने लगे और तब फिर उस व्यक्ति के लिए भी वैसा ही रोने लगे जैसे खिलौने के लिए कभी रोया था। और बिलकुल भूल जाए कि जिसके लिए इतना रोया था, उसे भी एक दिन छोड़ दिया, और फिर याद भी नहीं आयी उसकी कि वह खिलौना कहां है! अब उसका कोई पता भी नहीं है। लेकिन अगर यह बच्चा भीतर से भी बड़ा हो जाए, शरीर से ही नहीं मन से भी बड़ा हो जाए, एक भीतरी प्रौढ़ता भी इसकी आए, तो एक दिन यह बाहर का खिलौना भी ऐसा ही भूल जाएगा।

लेकिन तब भी इस बाहर के व्यक्ति से भी जो प्रेम का नाता बना था, जो संबंध बना था, जो रस पाया था, वह और सघन होकर भीतर भर जाएगा। यह प्रेम भक्ति बनेगा और जिस दिन यह प्रेम भक्ति बनेगा और भगवान की तरफ बढ़ेगा, उस दिन याद भी न आएगी उन प्रेमियों की, उन खिलौनों की—चाहे बचपन के, चाहे बड़ेपन के; लेकिन उनका भी दान होगा। लेकिन भक्ति भी तब तक पूरी नहीं होती, जब तक भक्त भगवान ही न हो जाए।

और एक दिन आखिरी खिलौना भगवान का भी छूट जाता है। और तब वही शेष रह जाता है, जो बचा इन सब अनुभवों में—प्रेम! सब खिलौने छूट जाते हैं। लेकिन खिलौनों से जिसको पाने में सहायता मिली थी वह बच जाता है। सब रूप छूट जाते हैं, लेकिन वह जो अरूप प्रेम है वह धीरे— धीरे संग्रहीत होता जाता है, संग्रहीत होता जाता है। एक दिन ऐसा आता है कि भक्त सिर्फ प्रेम ही रह जाता है। प्रेमी तक खो जाता है। उस दिन वह भगवान हो जाता है।

कैवल्य उपनिषद--प्रवचन-01

ओशो



नहीं है, थकता नहीं, निश्चय इसका टूटता नहीं। कभी ऐसा नहीं कहता कि यह धंधा बेकार है, छोड़ दें, कुछ हाथ नहीं आता!

और जब मैं परमात्मा को खोजने निकला, उस परम संपदा को खोजने निकला, तो न मालूम कितनी बार ऐसा लगता था कि यह सब बेकार है, कुछ मिलता नहीं। न कोई परमात्मा दिखाई पड़ता है, न कोई आत्मा का अनुभव होता है। पता नहीं इस सब बकवास में मैं पड़ गया हूँ छोड़ूँ। और जब भी मुझे ऐसा लगता था, तभी मुझे उस चोर का खयाल आता था कि साधारण—सी संपदा को चुराने जो गया है, उसका निश्चय भी मुझसे ज्यादा है, और मैं परम संपदा को चुराने निकला हूँ, तो मेरा निश्चय इतना डाँवाडोल है! तो जिस दिन उसे ज्ञान हुआ, उसने पहला धन्यवाद उस चोर को दिया और कहा कि मेरा असली गुरु वही है। हसन के शिष्यों ने उससे पूछा कि उसके असली गुरु होने का कारण? तो उसने कहा, उसका दृढ़ निश्चय!

दृढ़ निश्चय का अर्थ है कि पूरे प्राण इतने आत्मसात हैं कि चाहे हार हो, चाहे जीत; चाहे सफलता मिले, चाहे असफलता, निर्णय नहीं बदलेगा। दृढ़ निश्चय का अर्थ है, चाहे असफलता मिले, चाहे

सफलता, चाहे जन्मों—जन्मों तक भटकना पड़े, निर्णय नहीं बदलेगा। खोज जारी रहेगी। सब खो जाए बाहर, लेकिन भीतर खोजने वाला संकल्प नहीं खोएगा। वह जारी रहेगा। सब विपरीत हो जाए, सब प्रतिकूल पड़ जाए, कोई साथी न मिले, कोई संगी न मिले, कोई अनुभव की किरण भी न मिले, अंधेरा घनघोर हो, टूटने की कोई आशा न रहे, तब भी।

कीर्कगार्ड ने इस दृढ़ निश्चय की परिभाषा में कहा है, वन हू कैन होप अगेंस्ट होप। जो आशा के भी विपरीत आशा कर सके, वही दृढ़ निश्चय वाला है।

*_उम्मीद का जो दामन न छोड़े वो ही उतरा पार_*

ओशो

गीता दर्शन-(प्रवचन-111)



बाद में हसन ने कहा कि उस दिन मुझे पता चला कि मेरा साधु उस चोर से कमजोर था। साधु डरा कि चोर के घर रुकूं या न रुकूं! और चोर न डरा कि इस अजनबी आदमी को घर में ठहराऊं या न ठहराऊं! चोर को यह भी भय न लगा कि यह साधु है, अपना दुश्मन है, अपने को बदल डालेगा! साधु को यह भय लगा कि चोर के साथ रहने से कहीं मेरी साधुता नष्ट न हो जाए!

हसन ने बाद में कहा कि उस दिन मुझे पता चला कि मेरे साधु का जो निश्चय था, वह चोर के निश्चय से कमजोर था। वह ज्यादा दृढ़ निश्चयी था।

गया, चोर के घर रात रुका। कोई सुबह, भोर होने के पहले चोर आया, हसन ने दरवाजा खोला। हसन ने पूछा, कुछ मिला? चोर ने हंसते हुए कहा, आज तो नहीं मिला, लेकिन फिर कोशिश करेंगे। उदास नहीं था, परेशान नहीं था, चिंतित नहीं था; आकर मजे से सो गया! दूसरी रात भी गया। और हसन एक महीने उसके घर में रहा, और रोज ऐसा हुआ कि रोज वह खाली हाथ लौटता और हसन उससे पूछता कि कुछ मिला? और वह कहता, आज तो नहीं, लेकिन फिर कोशिश करेंगे!

फिर बरसों बाद हसन को आत्म—ज्ञान हुआ। दूर उस चोर का कोई पता भी न था कहां होगा। जिस दिन हसन को आत्म—ज्ञान हुआ, उसने पहला धन्यवाद उस चोर को दिया और परमात्मा से कहा, उस चोर को धन्यवाद! क्योंकि उसके पास ही मैंने यह सीखा कि साधारण—सी चोरी करने यह आदमी जाता है और खाली हाथ लौट आता है, लेकिन उदास नहीं है, थकता नहीं, निश्चय इसका टूटता नहीं। कभी ऐसा नहीं कहता कि यह धंधा बेकार है, छोड़ दें, कुछ हाथ नहीं आता!

और जब मैं परमात्मा को खोजने निकला, उस परम संपदा को खोजने निकला, तो न मालूम कितनी बार ऐसा लगता था कि यह सब बेकार है, कुछ मिलता नहीं। न कोई परमात्मा दिखाई पड़ता है, न कोई आत्मा का अनुभव होता है। पता नहीं इस सब बकवास में मैं पड़ गया हूं छोड़ूं। और जब भी मुझे ऐसा लगता था, तभी मुझे उस चोर का खयाल आता था कि साधारण—सी संपदा को चुराने जो गया है, उसका निश्चय भी

मगर तो जगता है और मैं मगर मंगता तो जगते चित्तवा नं जो मेरा चित्तवा



1h · 🌐

एक सूफी फकीर हसन एक गाव में आया है। रात आंधी हो गई है, कहीं ठहरने को कोई जगह नहीं है; अजनबी, अपरिचित आदमी है। सराय के मालिक ने कहा कि कोई गवाह ले आओ, तब मैं ठहरने दूंगा।

आंधी रात, गवाह कहा खोजे? अनजान, अपरिचित गांव है। कोई पहचान वाला भी नहीं है। परेशान है। एक झाड़ के नीचे सोने को जा रहा है कि तब एक आदमी उसे पास से गुजरता हुआ दिखाई पड़ा। उसने उस आदमी से कहा कि पूरी बस्ती सो गई है, किसी को मैं जानता नहीं हूं। क्या आप मेरे लिए थोड़ी सहायता करेंगे कि चलकर सराय के मालिक को कह दें कि आप मुझे जानते हैं!

उस आदमी ने कहा—पास आकर हसन को देखा कि फकीर है—हसन को कहा कि पहले तो मैं तुम्हें अपना परिचय दे दूं क्योंकि मैं एक चोर हूं और रात में अपने काम पर निकला हूं। एक चोर की गवाही एक साधु के काम पड़ेगी या नहीं, मैं नहीं जानता! सराय का मालिक मेरी बात मानेगा, नहीं मानेगा। मेरी गवाही का बहुत मूल्य नहीं हो सकता। लेकिन मैं एक निवेदन करता हूं कि मेरा घर खाली है। मैं तो रातभर काम में लगा रहूंगा, तुम आकर सो सकते हो।

हसन थोड़ा चिंतित हुआ। और उसने कहा कि तुम एक चोर होकर भी मुझ पर इतना भरोसा करते हो कि अपने घर में मुझे ठहराते हो?

उस चोर ने कहा, जो बुरे से बुरा हो सकता है, वह मैं करता हूं। अब इससे बुरा और कोई क्या कर सकेगा? चोरी ही करोगे न ज्यादा से ज्यादा! यह आम अपना काम है। तुम घर आकर रह सकते हो।

सराय में जगह नहीं मिली। सराय अच्छे लोगों ने बनाई थी। एक चोर ने जगह दी! और उसने कहा, अब और बुरा क्या हो सकता है! लेकिन फिर भी हसन डरा कि चोर के घर में रुकना या नहीं रुकना! या झाड़ के नीचे ही सो जाना बेहतर है!

बाद में हसन ने कहा कि उस दिन मुझे पता चला कि मेरा साधु उस चोर से कृपान्वित था। साधु तब तक चोर के घर रुक गया था। और चोर ने



More Videos



3 Nov · 🌐



What is before death?
... See more



You and 3.2K others

150 comments · 1.1K shares



Like



Comment



Share



More Videos



The Immeasurable · 🔔

3 Nov · 🌐



What is before death?

... See more



You and 3.2K others

150 comments · 1.1K shares



Comment



Share



More Videos



The Immeasurable · 🔔

3 Nov · 🌐



What is before death?

... See more



You and 3.2K others

150 comments · 1.1K shares



Like



Comment



Share



3 Nov · 🌐

What is before death?
... See more



You and 3.2K others

150 comments • 1.1K shares



Like



Comment



Share





इस जिंदगी में समझदार लोग तो
ऐसे गुजरते हैं जैसे कोई सराय से
गुजरता है;
इस जिंदगी में ऐसे ठहरते हैं जैसे
कोई धर्मशाला में ठहराता है।
सांझ आयी, रुके रहे, सुबह हुई,
चल पड़े।
मुसाफिरखाना है। -ओशो



तुम साधारण हो जाओ तो सब
मिल जाये,
असाधारण होने की दौड़ अहंकार की दौड़ है!



Pathless Land 10h



*“All you need is already
within you, only you must
approach your self with
reverence and love.*

*Find
your
Real Self
and all else
will go
with it.”*

- Nisargadatta -

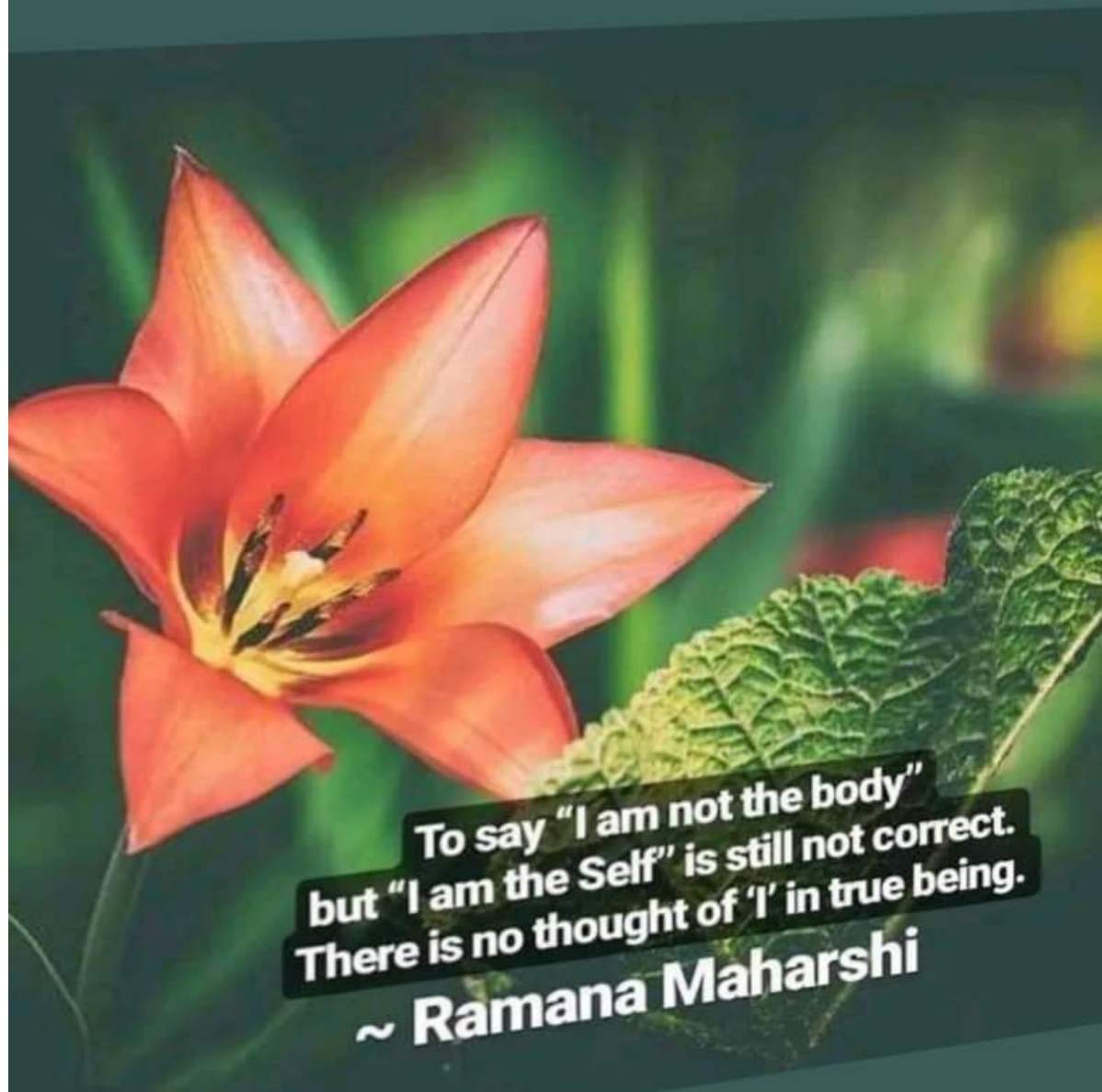
Send message...



CamScanner



Pathless Land 10h



To say "I am not the body"
but "I am the Self" is still not correct.
There is no thought of 'I' in true being.
~ Ramana Maharshi



Said the river to the seeker,
"Does one really have to
fret about enlightenment?
No matter which way I turn,
I'm homeward bound."

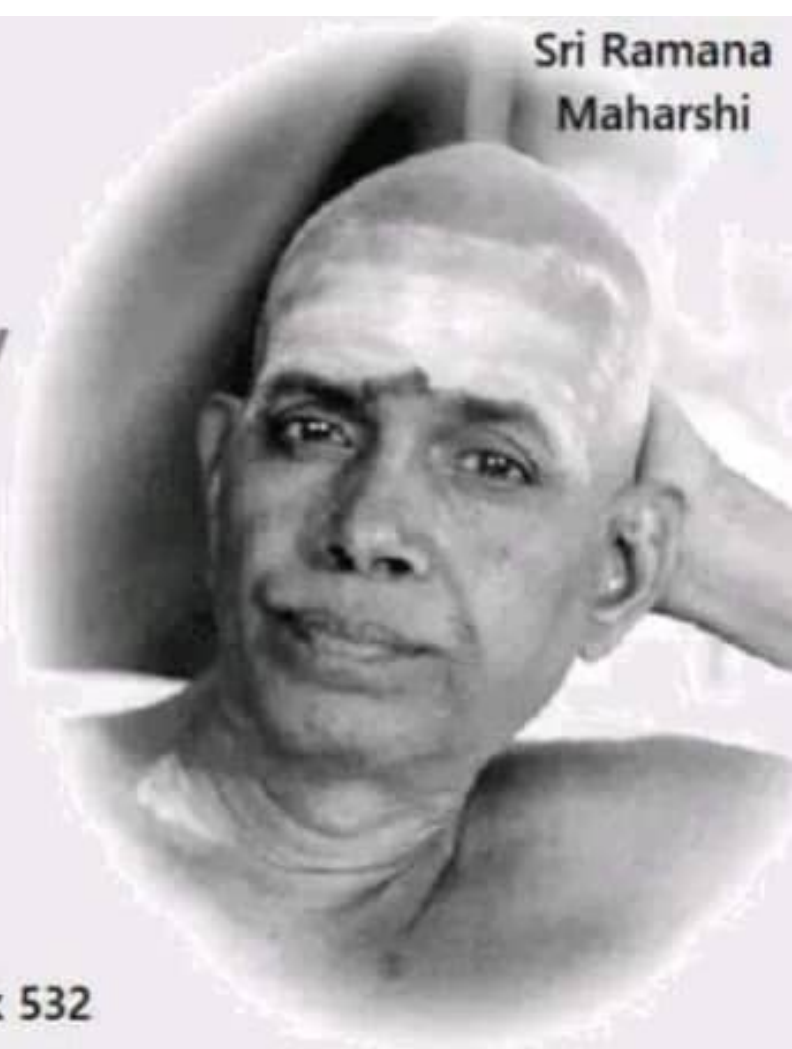
~ Anthony De Mello ~



To enquire
"Who Am I?"
is the only remedy
for all the ills
of the world.

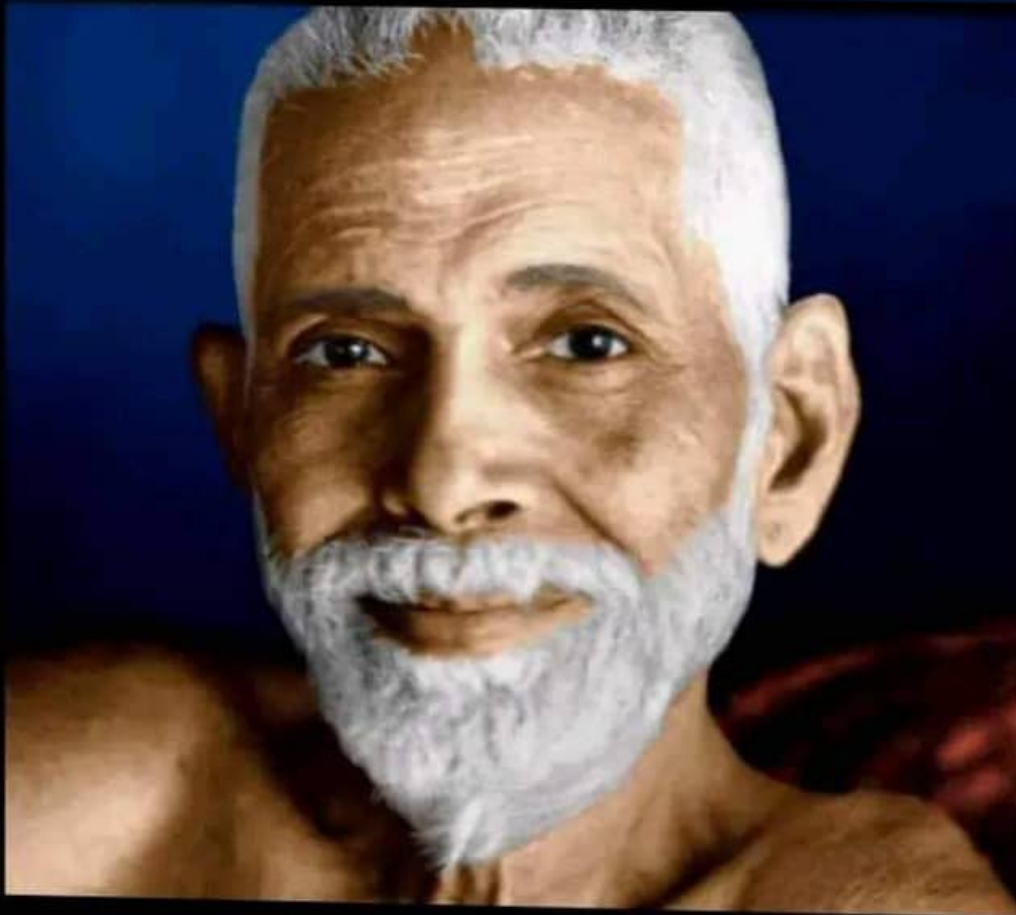
It is also
perfect Bliss.

~Talk 532





Pathless Land 10h



**On stilling all thoughts
the pure consciousness
remains.**

RAMANA MAHARSHI
BOOK : BE AS YOU ARE BY DAVID GODMAN

Send message...



When you're anxious or worried, be patient. The key of patience opens the door of happiness.

~ Rumi





Share full article



that salvation could be had by following a cult leader. Instead, he embarked on a mission to set human beings "absolutely, unconditionally free."

Mr. Krishnamurti, a tall, striking figure, with a full head of once dark hair, spoke with a proper upper-class English accent. A vegetarian, teetotaler, nonsmoker and practitioner of yoga, he dressed in Western suits or traditional Indian wear according to his surroundings.

Over the years, he counted among his friends such world figures as George Bernard Shaw, Henry Miller and Aldous Huxley. Huxley wrote in 1961 that listening to Mr. Krishnamurti was "like listening to the discourse of a Buddha."

In accordance with his wishes, there will be no memorial service. He is to be cremated, with his ashes scattered at the foundation sites in California, England and India.

A version of this article appears in print on Feb. 18, 1986, Section B, Page 10 of the National edition with the headline: JIDDU KRISHNAMURTI, 90, IS DEAD; RELIGIOUS PHILOSOPHER FROM INDIA.
[Order Reprints](#) | [Today's Paper](#) | [Subscribe](#)



Share full article



Read in app





Kundalini lying position.



ChatGPT 3.5



1. **Hatha Yoga:** This is a broad term that encompasses many physical yoga practices. It focuses on physical postures (asanas) and breath control (pranayama) to prepare the body for meditation.
2. **Vinyasa Yoga:** A dynamic form of yoga that synchronizes breath with movement. Vinyasa classes often include flowing sequences of poses, similar to Kundalini yoga.
3. **Qi Gong:** A Chinese practice that combines gentle movements, breath control, and meditation to cultivate and balance the body's vital energy or "Qi."
4. **Tai Chi:** An ancient Chinese martial art that involves slow, flowing movements and deep breathing. It is often referred to as "meditation in motion."
5. **Pranayama:** This refers to various breath control techniques in yoga. Practices like alternate nostril breathing or deep diaphragmatic breathing can be calming and

Message ChatGPT...



ChatGPT can make mistakes. Consider checking important information.

ओशो : एस धम्मो सनंतनो
osho universal . dhaval parmar



जो जन्मा है, मरेगा भी। जो जवान है, बूढ़ा भी होगा। इस सत्य को देखो, समझो, और इस सत्य के साथ राजी हो जाओ; पकड़ो मत। जब जवानी बुढ़ापा बनने लगे, सहज भाव से बूढ़े हो जाओ। जब जिंदगी मौत में ढलने लगे, सहज भाव से मौत में उतर जाओ। यही जीवन का प्रवाह है। जो आए, उसे अंगीकार कर लो। जो जाए, उसे अलविदा। ऐसा आदमी दुखी नहीं होगा। कैसे दुखी होगा ? उसने दुख का मूल सूत्र ही तोड़ दिया। उसने दुख के आधार जला दिए। उसने जड़ काट दी।

**Osho International Meditation Resort.**

1h · 🌐

ऊर्जा या शक्ति कब और कैसे बांटनी चाहिए, उस पर ओशो के विचार :

जीसस ने कहा है कि अगर तुम्हारा दाहिना हाथ कुछ करे तो उसे बाएं हाथ को भी मत जानने दो। सूफी संत परंपरा में वे कहते हैं कि जब शक्ति आने लगे तो दूसरों के सामने प्रार्थना भी मत करो, दूसरों के सामने मस्जिद भी मत जाओ। क्यों? क्योंकि जब शक्ति के आने पर कोई प्रार्थना करता है और बहुत लोगों की मौजूदगी में करता है तो दूसरों को तुरंत पता चलने लगता है कि कुछ हो रहा है। तो सूफी कहते हैं कि तब तुम्हें रात के अंधेरे में, आधी रात में अपनी नमाज कहनी चाहिए जब सब सोए हों और किसी को पता न चले कि तुम्हें कुछ हो रहा है। किसी को बताओ भी मत कि तुम्हें क्या हो रहा है।

लेकिन मन बहुत बकवादी है। अगर तुम्हें कुछ घटित होगा तो तुम तुरंत दूसरों को इसका शुभ समाचार देने निकल पड़ोगे। लेकिन तभी चूक हो जाएगी। यह शक्ति का अपव्यय होगा। और अगर लोग तुमसे प्रभावित भी होंगे तो तुम्हें उसकी वाहवाही मिलेगी, और कुछ भी नहीं। वह कोई बढ़िया सौदा नहीं है।

अभी रुको। एक क्षण आएगा जब तुम्हारी ऊर्जा संगृहीत हो जाएगी, जब वह अखंड हो जाएगी, रूपांतरित हो जाएगी, तब तुम्हारे आस—पास तुम्हारे कुछ किए बिना ही बहुत कुछ घटित होगा। जब तुम अपने मालिक हो जाओगे तभी तुम दूसरों को अपना मालिक बनने में सहयोग दे सकोगे।

ओशो

Osho Prem Naman 🙏❤️

[Osho international](#)

Text copied to clipboard

एक देवरानी और जेठानी में किसी बात पर जोरदार बहस हुई और दोनों में बात इतनी बढ़ गई कि दोनों ने एक दूसरे का मुँह तक न देखने की कसम खा ली और अपने-अपने कमरे में जा कर दरवाजा बंद कर लिया।

थोड़ी देर बाद जेठानी के कमरे के दरवाजे पर खट-खट हुई। जेठानी तनिक ऊँची आवाज में बोली कौन है, बाहर से आवाज आई दीदी मैं! जेठानी ने जोर से दरवाजा खोला और बोली अभी तो बड़ी कसमें खा कर गई थी। अब यहाँ क्यों आई हो?

देवरानी ने कहा दीदी सोच कर तो वही गई थी, परन्तु माँ की कही एक बात याद आ गई कि जब कभी किसी से कुछ कहा सुनी हो जाए तो उसकी अच्छाइयों को याद करो और मैंने भी वही किया और मुझे आपका दिया हुआ प्यार ही प्यार याद आया और मैं आपके लिए चाय ले कर आ गई। बस फिर क्या था दोनों रोते रोते, एक दूसरे के गले लग गई और साथ बैठ कर चाय पीने लगीं।

जीवन में क्रोध को क्रोध से नहीं जीता जा सकता, बोध से जीता जा सकता है।

अग्नि अग्नि से नहीं बुझती जल से बुझती है। समझदार व्यक्ति बड़ी से बड़ी बिगड़ती स्थितियों को दो शब्द प्रेम के बोलकर संभाल लेते हैं। हर स्थिति में संयम और बड़ा दिल रखना ही श्रेष्ठ है।

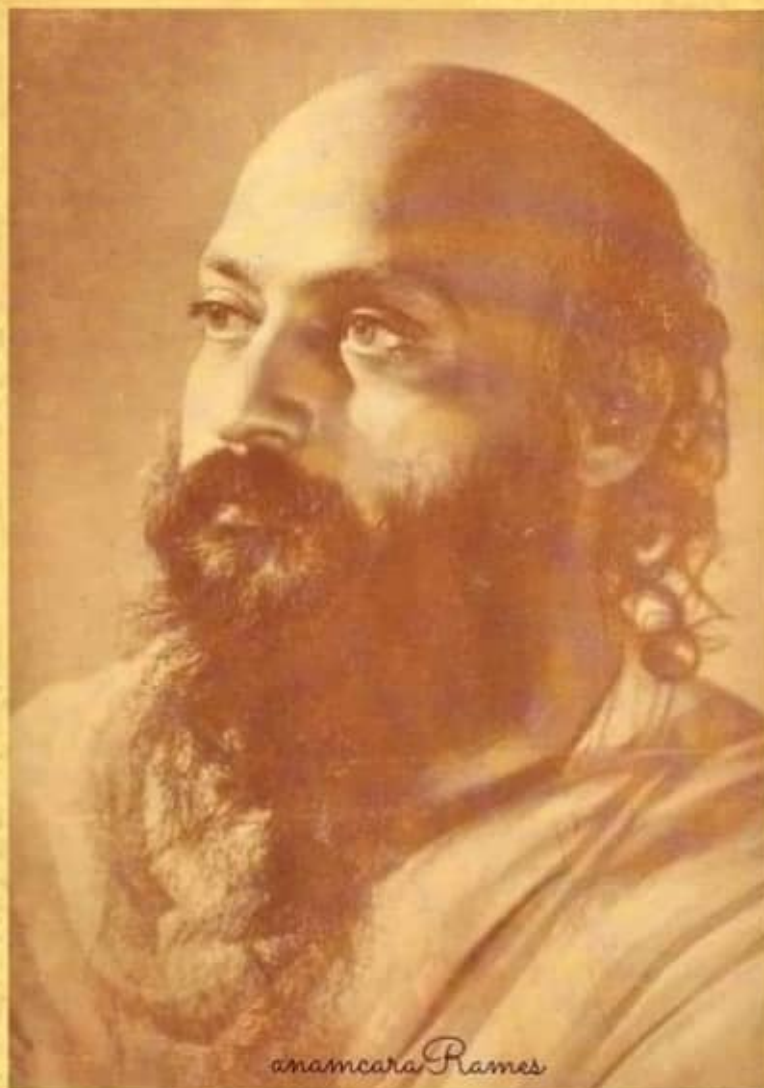
जय जय श्री राधे



ओशो सूत्र

इधर ' मैं ' गिरा, उधर ' वह ' हुआ।
'मैं'

के अतिरिक्त और
कोई दीवार न कभी थी, न है।

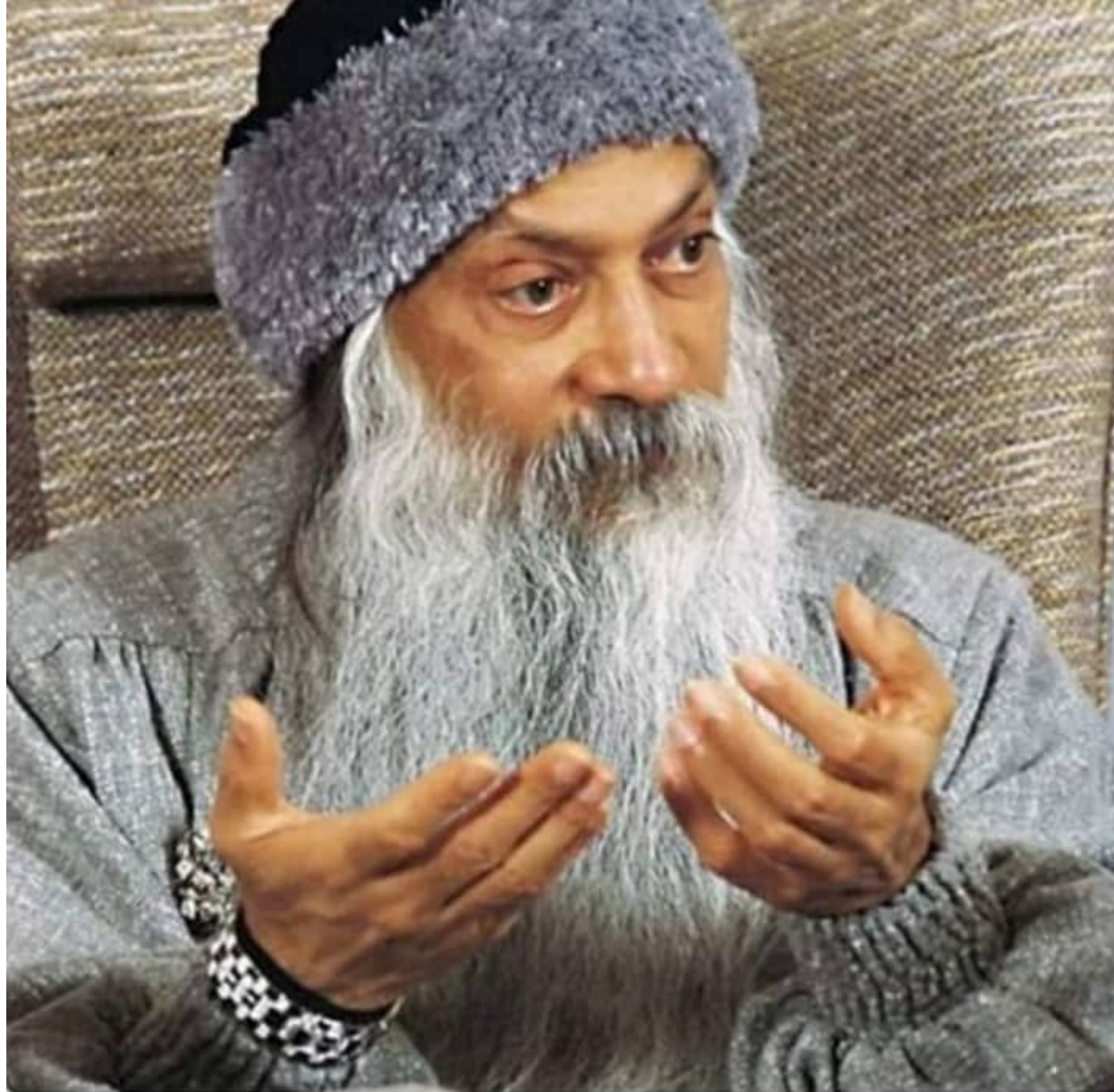


आचार्य श्री रजनीश

रजनीश के प्रणाम 🙏 ८/४/१९७०



"यह भी हो सकता है कि कभी कोई बिलकुल अपढ़ आदमी भी बुद्धि की सूक्ष्मता को उपलब्ध हो जाए। और यह तो अक्सर होता है कि बहुत पढ़े-लिखे आदमी बुद्धि की सूक्ष्मता को उपलब्ध होते दिखाई नहीं पड़ते हैं। पंडित में और बुद्धि की सूक्ष्मता पानी जरा मुश्किल है। बहुत कठिन है। जरा मुश्किल संयोग है। कभी—कभी गांव के ग्रामीण में, चरवाहे में भी कभी—कभी बुद्धिमत्ता की झलक दिखाई पड़ती है। उसके पास बुद्धि का संग्रह नहीं है। लेकिन एक सूक्ष्म बुद्धि हो सकती है। इसलिए कबीर जैसा गैर पढ़ा-लिखा आदमी भी परम ज्ञान को उपलब्ध हो जाता है.. 🖋️❤️💻

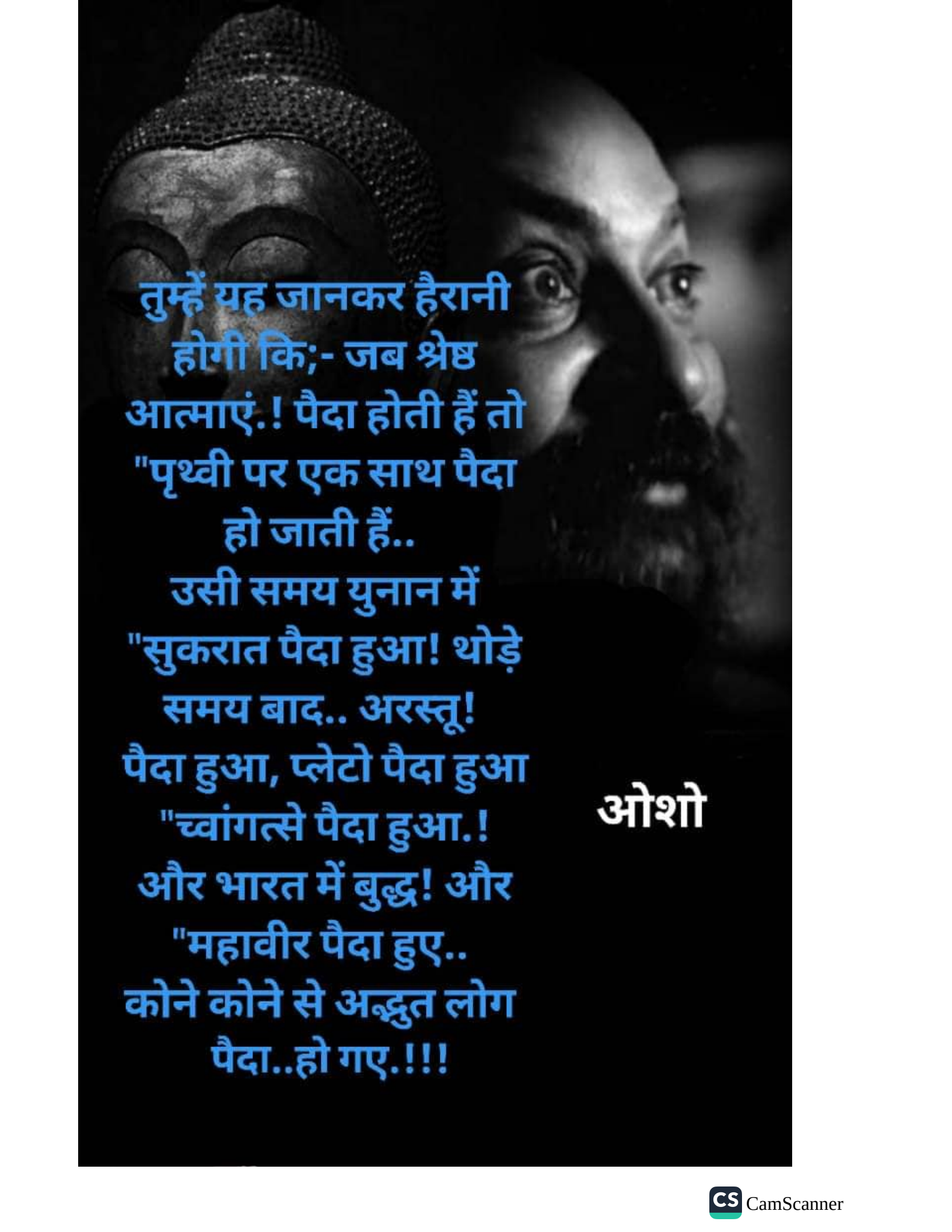


फूल से किसी ने पूंछा; तूने दी खुशबु तो
क्या मिला

फूल ने कहा ; देने के बदले लेना तो एक
"बीमारी" है

जो देकर भी कुछ ना मांगे वही तो सच्चा
सन्यासी है

९:13 PM



तुम्हें यह जानकर हैरानी
होगी कि;- जब श्रेष्ठ
आत्माएं.! पैदा होती हैं तो
"पृथ्वी पर एक साथ पैदा
हो जाती हैं..

उसी समय युनान में
"सुकरात पैदा हुआ! थोड़े
समय बाद.. अरस्तू!
पैदा हुआ, प्लेटो पैदा हुआ
"च्वांगत्से पैदा हुआ.!
और भारत में बुद्ध! और
"महावीर पैदा हुए..
कोने कोने से अद्भुत लोग
पैदा..हो गए.!!!

ओशो

तपश्चर्या :

मेरी दृष्टि में स्वयं की जो स्थिति है, उसको देखने से बड़ी और कोई तपश्चर्या नहीं है।

धूप में खड़ा होना बहुत आसान है, भूखा बैठ जाना भी बहुत आसान है। नग्न खड़े हो जाना भी बहुत आसान है। ये सब थोड़ी सी बातें हैं, जो कोई भी कर सकता है। इसमें तपश्चर्या का कोई भी संबंध नहीं है।

असली तपश्चर्या :- मैं जैसा हूं, उसे जानने से शुरू होती है, क्योंकि असली कष्ट वहीं से शुरू होते हैं, जैसा मैं हूं। # ओशो #



J.Krishnamurti ONLINE

The official repository of the authentic teachings of J. Krishnamurti

Home | **Krishnamurti's Teachings** | About Krishnamurti | Worldwide Information | Giving & Helpin
Search Text | Video | Audio | Daily Quote Archive | Books

You are in: **Krishnamurti's Teachings** » Books

Krishnamurti Books

18

- Beginnings of Learning
- Commentaries on Living: First Series
- Ending of Time, The
- First and Last Freedom, The
- Flame of Attention, The
- Future is Now, The
- Future of Humanity, The
- Impossible Question, The
- Krishnamurti's Notebook
- Life Ahead
- Network of Thought, The
- Only Revolution, The
- The Flight of the Eagle
- This Matter of Culture
- Truth and Actuality
- Way of Intelligence, The
- Wholeness of Life, The
- You are the World

18

[Site map](#)[Krishnamurti's Teachings](#)[Krishnamurti's Teachings](#)[Advanced Search](#)[Site content](#)[Krishnamurti's Biograph](#)



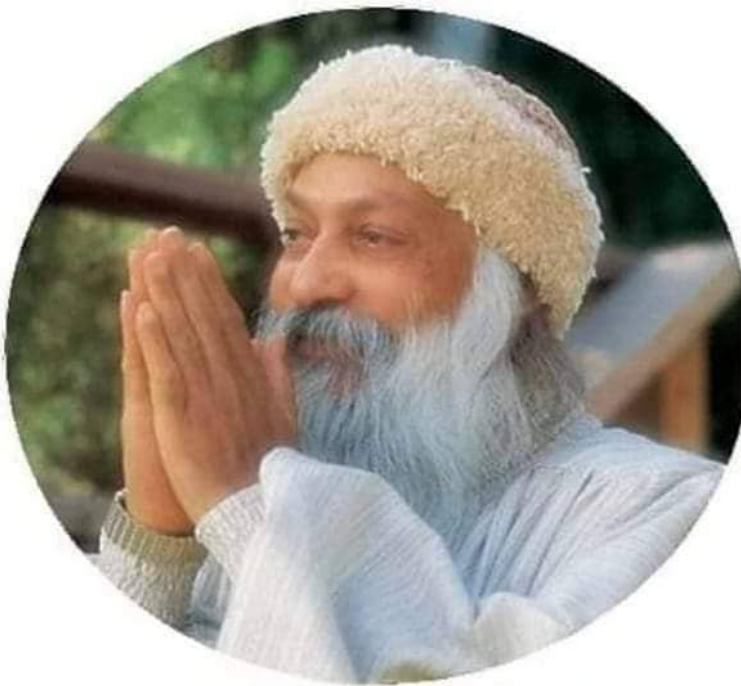
उदाहरण के लिए तुम्हें यदि एक साल के लिए बेहोश करके रख दिया जाए और उस बेहोशी में तुम सपने देखते रहो तो एक साल तक तुम्हें बिल्कुल पता नहीं चलेगा कि जो भी तुम देख रहे हो वह सपना है। सब यथार्थ जैसा लगेगा, और स्वप्न सालभर चलता रहेगा। मनोवैज्ञानिक कहते हैं कि अगर किसी व्यक्ति को सौ साल के लिए कोमा में रखा दिया जाए तो वह सौ साल तक सपने देखता रहेगा, और उसे क्षणभर के लिए भी संदेह नहीं होगा कि जो मैं कर रहा हूँ वह स्वप्न में कर रहा हूँ। और यदि वह कोमा में ही मर जाए तो उसे कभी पता नहीं चलेगा कि मेरा जीवन एक स्वप्न था, सच नहीं था।

मन के लिए कोई भेद नहीं है, सत्य और स्वप्न दोनों समान हैं। इसलिए मन अपने को सपनों में भी निर्ग्रन्थ कर सकता है। अगर इस विधि का प्रयोग करो तो सपना देखने की जरूरत नहीं रहेगी। तब तुम्हारी नींद की गुणवत्ता भी पूरी तरह बदल जाएगी। क्योंकि सपनों की अनुपस्थिति में तुम अपने अस्तित्व की आत्यंतिक गहराई में उतर सकोगे। और तब नींद में भी तुम्हारा बोध कायम रहेगा।

कृष्ण गीता में यही बात कह रहे हैं कि जब सभी गहरी नींद में होते हैं तो योगी जागता है। इसका यह अर्थ नहीं कि योगी नहीं सोता है। योगी भी सोता है, लेकिन उसकी नींद का गुणधर्म भिन्न है। तुम्हारी नींद ऐसी है जैसी नशे की बेहोशी होती है। योगी की नींद प्रगाढ़ विश्राम है, जिसमें कोई बेहोशी नहीं रहती है। उसका सारा शरीर विश्राम में होता है; एक—एक कोश विश्राम में होता है, वहां जरा भी तनाव नहीं रहता। और बड़ी बात कि योगी अपनी नींद के प्रति भी जागरूक रहता है।

इस विधि का प्रयोग करो। आज रात से ही प्रयोग शुरू करो, और तब फिर सुबह भी इसका प्रयोग करना। एक सप्ताह में तुम्हें मालूम होगा कि तुम विधि से परिचित हो गए हो। एक सप्ताह के बाद अपने अतीत पर प्रयोग करो। बीच में एक दिन की छुट्टी रख सकते हो, किसी एकांत स्थान में चले जाओ। अच्छा हो कि उपवास करो—उपवास और मौन। स्वात समुद्र—तट पर या किसी झाड़ू के नीचे लेटे रहो और वहां से, उसी बिंदु से अपने अतीत में प्रवेश करो। अगर तुम समुद्र—तट पर लेटे हो तो रेत को अनुभव करो, धूप को अनुभव करो और तब पीछे की ओर सरको। और सरकते चले जाओ, अतीत में गहरे उतरते चले जाओ और देखो कि कौन सी आखिरी बात स्मरण आती है।

तुम्हें आश्चर्य होगा कि सामान्यतः तुम बहुत कुछ स्मरण नहीं कर सकते



जीवन में समझदार होओ।

बहुत दौड़ चुके
जन्मों - जन्मों तक, कहां
पहुंचे हो? और कब तक
दौड़ते रहोगे? अब ठहरो!
ठहरें पांव तो मिले गांव।
ठहर जाओ तो गांव मिल
जाये। तो जिसकी तलाश है
वह मिल जाये। उस ठहरने
का नाम ही ध्यान है। चलते
रहने का नाम संसार है।
ठहर जाने का नाम
परमात्मा है।

ओशो अहोभाव
मरौ है जोगी मरौ



ओशो



Raj Malhotra

फल को जन्म देने के
लिए फूल मर जाता है
ऐसा होता है प्रेम

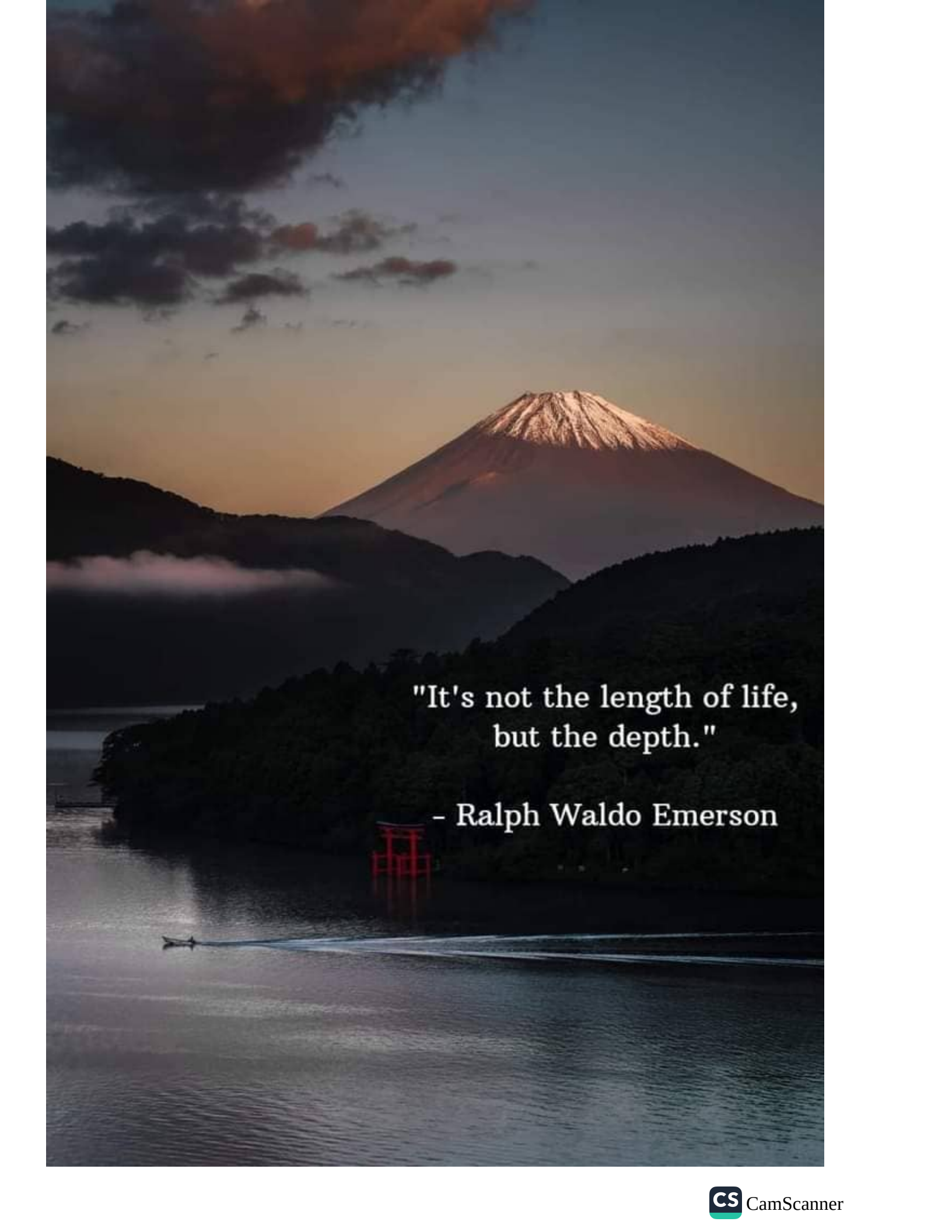


परमात्मा व्यक्ति नहीं है,
उसका कोई साक्षात्कार नहीं
हो सकता। परमात्मा शक्ति है।
लेकिन शक्ति भी पदार्थगत
नहीं है, आत्मगत है। इसलिए
उसका पहला अनुभव स्वयं में
प्रवेश पर ही होता है।

उपनिषद्-कठोपनिषद्-13
ओशो

Never lose an opportunity of
seeing anything beautiful, for
beauty is God's handwriting.

Ralph Waldo Emerson

A scenic landscape photograph of Mount Fuji. The mountain's snow-capped peak is illuminated by a warm, golden light from the setting or rising sun, contrasting with the dark, silhouetted slopes and the surrounding forested hills. In the foreground, a calm body of water reflects the sky and the mountain. A small, traditional red torii gate stands partially submerged in the water on the left side. A small boat is visible on the water's surface, leaving a gentle wake. The sky is filled with soft, dark clouds, adding to the atmospheric quality of the scene.

"It's not the length of life,
but the depth."

- Ralph Waldo Emerson



मांगकर गया कि भूल हो गई कि मैंने आपसे पूछा कि क्या पा लिया। आज मैं पहली दफा जीवन में जानकर जा रहा हूं कि मैंने साठ साल सिर्फ गंवाए हैं; कुछ पाया नहीं।

दो दिन उसने देखी इमर्सन की शांति, देखी वह झील, जहां कोई एक रिपल, एक छोटी-सी तरंग भी नहीं उठती। देखा दो दिन इमर्सन के पास बैठकर कि उसके आस-पास शीतल विकिरण हो रहा है; उसके पास भी बैठकर जैसे स्नान हो जाता है। देखा इमर्सन के कमरे में सोकर और पाया कि सिर्फ इमर्सन के कमरे में सोने से भी उसके सपनों का गुणात्मक रूप बदल गया है; उसकी नींद की क्वालिटी बदल गई है। इमर्सन के साथ जंगल में चलकर देखा कि जंगल वही नहीं मालूम होता है। इस जंगल में वह पहले भी निकला था, लेकिन वृक्ष इतने हरे न मालूम पड़े थे। और फूल इतने ताजे न मालूम पड़े थे। और फूल इतने खिले न दिखाई पड़े थे। और पक्षियों का गीत इस तरह सुनाई नहीं पड़ा था, जैसा इमर्सन के साथ सुनाई पड़ने लगा।

एक शांत आदमी पास है, तो वह दूसरे को भी शांत करने की व्यवस्था जुटा देता है। दो दिन बाद वह क्षमा मांगकर लौटा। उसने कहा, मेरे साठ साल तो बेकार चले गए। अब जो थोड़े-बहुत दिन बचे हैं, क्या मैं कुछ पा सकता हूं? इमर्सन ने कहा कि अगर छः क्षण भी बचे हों, और तुम अपने साथ ईमानदार हो, तो उतना पा सकते हो, जितना तीन सौ साठ साल में मैंने पाया। लेकिन अपने साथ ईमानदार, टु बी आनेस्ट विद वनसेल्फ।

दूसरे के साथ ईमानदार होना बहुत कठिन नहीं है। क्यों? उसी वजह से दूकानों पर लिखा हुआ है, आनेस्टी इज़ दि बेस्ट पालिसी। दूसरे के साथ ईमानदार होने में बहुत कठिनाई नहीं है। होशियार आदमी दूसरे के साथ ईमानदार होते हैं, क्योंकि दैट इज़ दि बेस्ट पालिसी। वही सबसे अच्छी तरकीब है। लेकिन अपने साथ ईमानदार होना मुश्किल है, वह सिर्फ योगी ही हो पाता है। लेकिन मैं आपसे कहता हूं, जो अपने साथ ईमानदार हो सके, वह चित्त उपराम को पा सकता है।

- गीता दर्शन (भाग-03, प्रवचन-68)

OSHO.. 🙏🌹



इमर्सन से कोई पूछता था, तुम्हारी उम्र कितनी है? तो इमर्सन ने कहा कि तीन सौ साठ वर्ष! अब इमर्सन, ईमानदार और सच्चा आदमी झूठ बोलेगा नहीं। जिसने पूछा, उसने समझा कि लगता है, मेरे सुनने में कोई भूल हो गई। उसने कहा, माफ करें। मैं ठीक से सुन नहीं पाया। कान पास लाया। इमर्सन ने जोर से कहा कि तीन सौ साठ वर्ष! उस आदमी ने कहा कि आप मजाक तो नहीं कर रहे! क्योंकि झूठ तो आप नहीं बोल सकते। मजाक तो नहीं कर रहे! तीन सौ साठ! ज्यादा से ज्यादा आप साठ साल के मालूम पड़ते हैं।

इमर्सन ने कहा कि अच्छा, तो तुम दूसरे हिसाब से नाप रहे हो। हमारा हिसाब और है। साठ साल में आदमी जितना जीता है, हम उससे छः गुना ज्यादा जी चुके हैं। एक-एक क्षण का हमने छः गुना ज्यादा उपयोग किया है। हम उस हिसाब से कहते हैं, तीन सौ साठ साल। अगर तुम भी साठ साल के हो, तो हम तीन सौ साठ साल के हैं। क्योंकि तुमने किया क्या है? जीए कहाँ हो?

तो वह आदमी पूछने लगा कि समझ लें कि आप छः गुना जी लिए। पा क्या लिया? और हम छः गुना कम जीए, तो क्या खो दिया? तो इमर्सन ने कहा, मेरी आंख में देखो, मुझे देखो, दो दिन मेरे पास रुक जाओ।

वह आदमी दो दिन इमर्सन के पास था। फिर उसके पैर छूकर, माफी मांगकर गया कि भूल हो गई कि मैंने आपसे पूछा कि क्या पा लिया। आज मैं पहली दफा जीवन में जानकर जा रहा हूँ कि मैंने साठ साल सिर्फ गंवाए हैं; कुछ पाया नहीं।

दो दिन उसने देखी इमर्सन की शांति, देखी वह झील, जहाँ कोई एक रिपल, एक छोटी-सी तरंग भी नहीं उठती। देखा दो दिन इमर्सन के पास बैठकर कि उसके आस-पास शीतल विकिरण हो रहा है; उसके पास भी बैठकर जैसे स्नान हो जाता है। देखा इमर्सन के कमरे में सोकर और पाया कि सिर्फ इमर्सन के कमरे में सोने से भी उसके सपनों का गुणात्मक रूप बदल गया है; उसकी नींद की क्वालिटी बदल गई है। इमर्सन के साथ जंगल में चलकर देखा कि जंगल वही नहीं मालूम होता है। इस जंगल में वह पहले भी निकला था, लेकिन वृक्ष इतने हरे न मालूम पड़े थे। और फूल इतने ताजे न मालूम पड़े थे। और फूल इतने

मेरे पास तो वही आ सकता है जो मेरी हजार-हजार
असंगतियों को झेलने की छाती रखता हो।
बड़ी छाती चाहिए !

ओशो अहोभाव
अमी झरत बिसगत कंवल

 ahobhav_

OSTEO



भोलापन
बहुत महँगी चीज़ है,
अपनी पूरी
हस्ती मिटाकर मिलता है।

हृदय



*Man has probably never
been so cruel as he is
now , so violent . One
wonders if man will ever
live on this beautiful
earth peacefully, with
some divinity and love
in his heart .*

*KRISHNAMURTI -From " Krishnamurti to
Himself " - 26 April 1983*

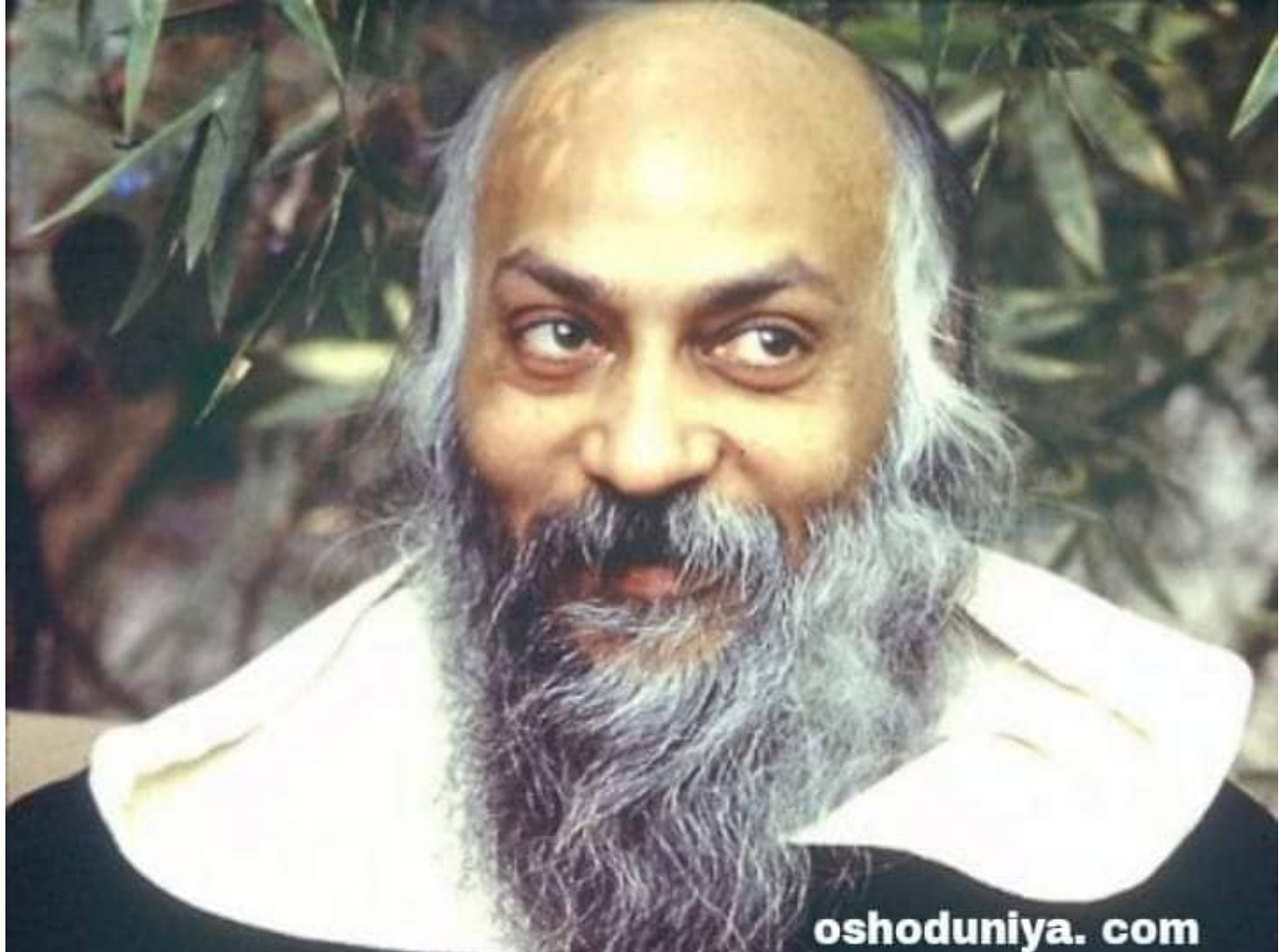
A black and white photograph of an elderly man with a beard, looking down thoughtfully. The image is used as a background for the text.

A slave is one who waits
for someone to come and
free him.



To regard anyone as an enemy is a great folly. Either one understands and so helps, or one does not understand and so hinders. The diffusion of that which is intelligent can only be hindered by stupidity.

Krishnamurti, From Collected Works, Vol. 2



oshoduniya. com

"दुनियां में और सब कलाएं बाहर है, मूर्तिकार मूर्ति बनाता है, चित्रकार चित्र बनाता है, गीतकार गीत बनाता है, लेकिन बुद्ध कहते हैं, असली ज्ञानी अपने आप को बनाता है, मूर्ति को नहीं गढ़ता हैं, चित्र को नहीं रंगता, अपने को रंगता हैं, गीत को नहीं सजाता अपने को सजाता हैं, अपने सौन्दर्य को निखारता हैं, बड़े से बड़ा स्रष्टा वही हैं, जो पाने को सृजन दे देता हैं, जो अपने को नया जन्म दे देता..👉❤️💻

❤️ओशो❤️

एक पीढ़ी का पाखण्ड अगली पीढ़ी
की परम्परा बन जाती है।

Follow// Himanshi Sharma

ईश्वर प्रदत्त चार वेद

वेद	ऋषि	विषय	मंत्रों की संख्या
ऋग्वेद	अग्नि	ज्ञान	10552
यजुर्वेद	वायु	कर्म	1975
सामवेद	आदित्य	उपासना	1875
अथर्ववेद	अंगिरा	विज्ञान	5977

ऋषिकृत ग्रंथ

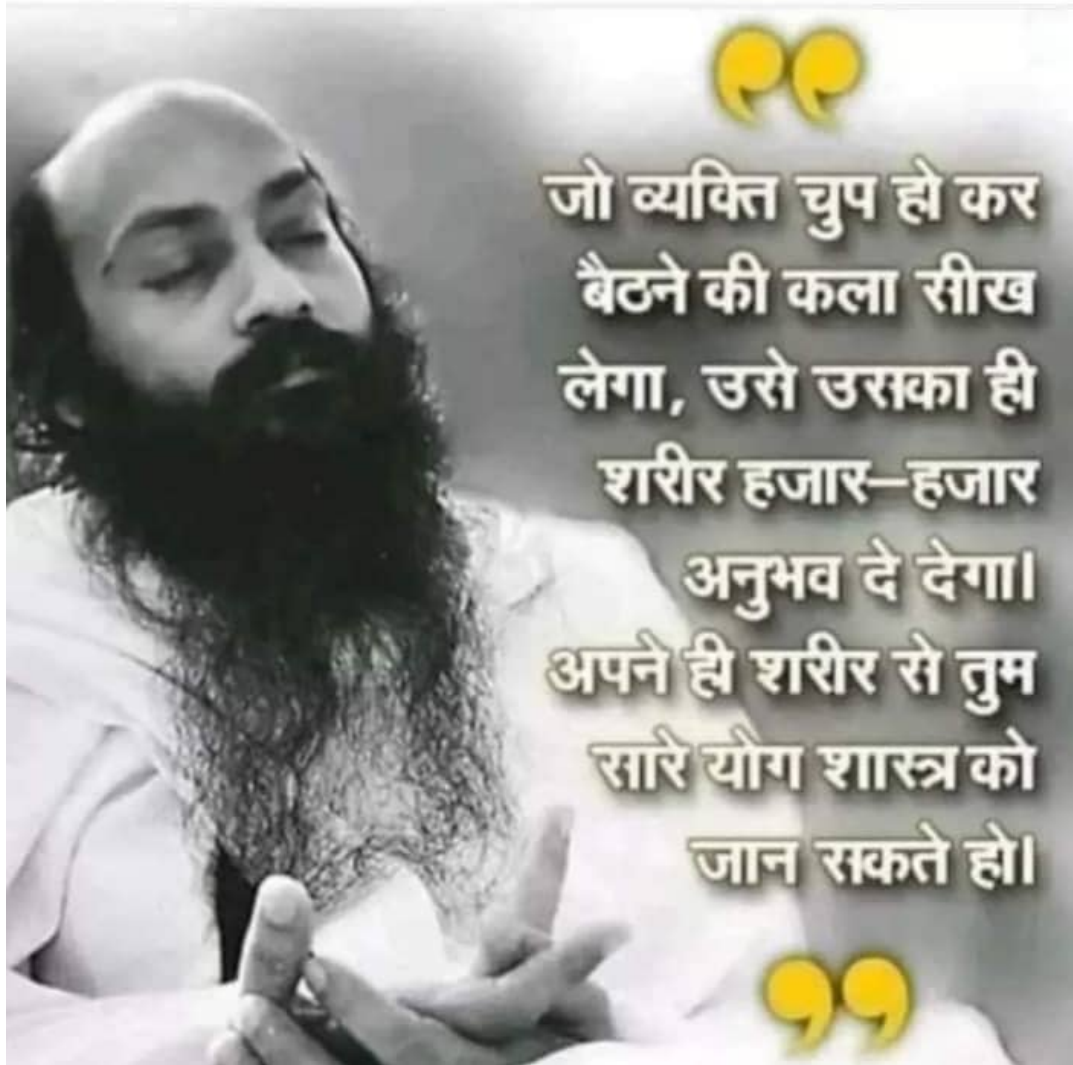
छः अंग	छः उपांग/दर्शन	रचयिता	विषय	सूत्रों की संख्या
1. शिक्षा	न्यायदर्शन	महर्षि गौतम	न्याय	538
2. कल्प	वैशेषिकदर्शन	महर्षि कणाद	परमाणु	370
3. व्याकरण	सांख्यदर्शन	महर्षि कपिल	सृष्टि	451
4. निरुक्त	योगदर्शन	महर्षि पतंजलि	योग	195
5. छन्द	मीमांसादर्शन	महर्षि जैमिनी	कर्मकाण्ड	2731
6. ज्योतिष	वेदांतदर्शन	महर्षि वेदव्यास	ब्रह्म	555

चार उपवेद	विषय	ब्राह्मण ग्रंथ	नीतिग्रंथ	स्मृतिग्रंथ
1. आयुर्वेद	चिकित्साशास्त्र	ऐतरेय	विदुरनीति	मनुस्मृति
2. धनुर्वेद	राजनीतिशास्त्र	शतपथ	चाणक्यनीति	याज्ञवल्क्यस्मृति
3. गान्धर्ववेद	संगीतशास्त्र	साम	शुक्रनीति	हरितस्मृति
4. अथर्ववेद	शिल्पशास्त्र	गोपथ	नीतिशतक	व्यासस्मृति/गीता

ग्यारह उपनिषद: 1. ईश, 2. केन, 3. कठ, 4. प्रश्न, 5. मुण्डक, 6. माण्डूक्य, 7. श्वेताश्वतर, 8. छान्दोग्य, 9. ऐतरेय, 10. तैत्तिरीय, 11. बृहदारण्यक।

दो सनातन वैदिक महाकाव्य: रामायण और महाभारत।

नोट - वेदविद्या को जानने हेतु सत्यार्थप्रकाश व ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका पढ़ें।



जो व्यक्ति चुप हो कर
बैठने की कला सीख
लेगा, उसे उसका ही
शरीर हजार-हजार
अनुभव दे देगा।
अपने ही शरीर से तुम
सारे योग शास्त्र को
जान सकते हो।



Thought has created reality -
the marvelous architecture,
the great cathedrals of the
world, the temples, the
mosques, and the idols that
are put in them, the images,
all are created by thought.

And we say, **that is reality,**
because **you can touch it, you**
can taste it, you can smell it.

Krishnamurti, To Be Human

facebook

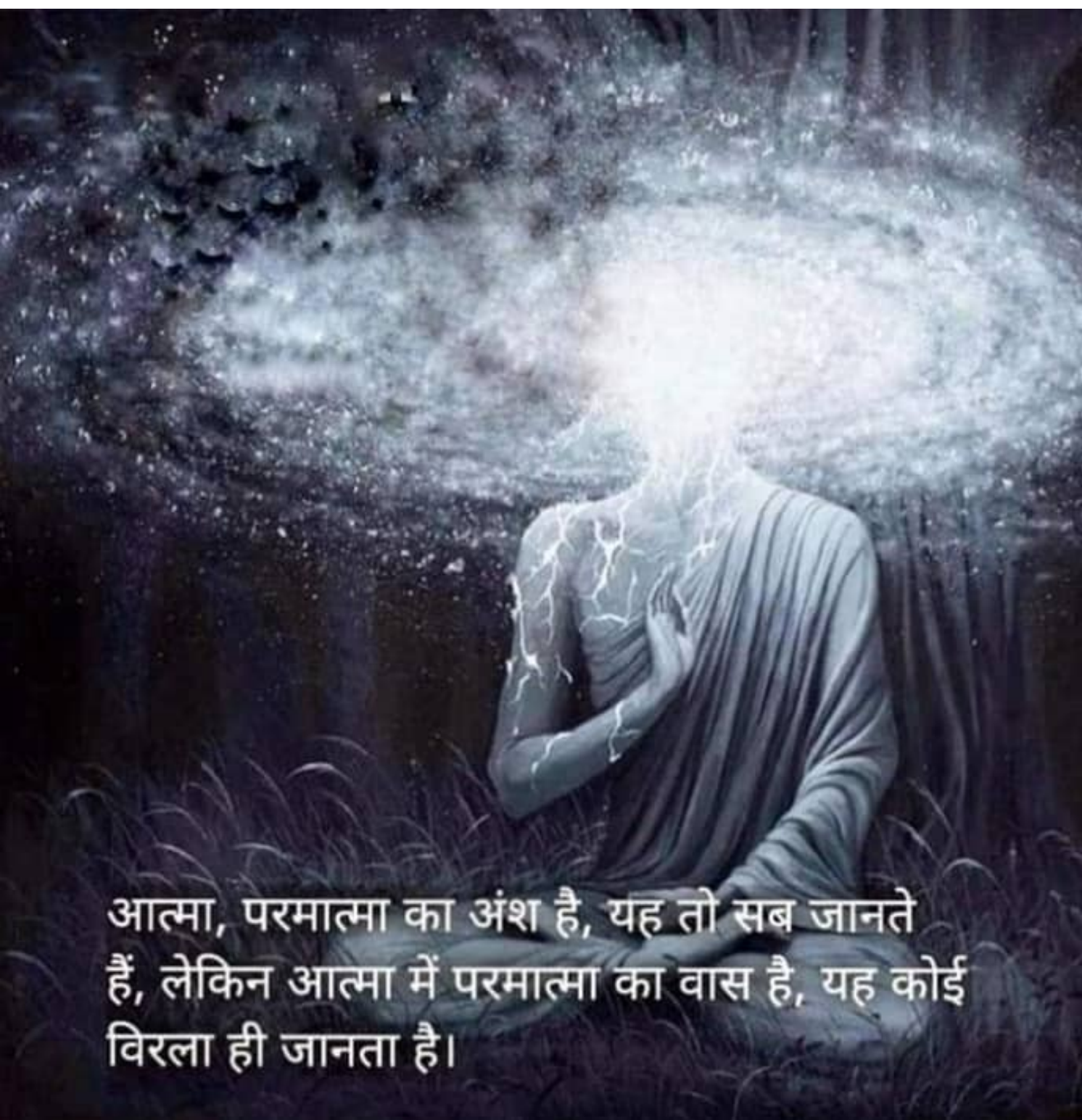


Seema Mangal · 1h · 🌐

#लाओत्से कहता है, जो जीतने की कोशिश करेगा, वह हारेगा। हम इसलिए नहीं हारते हैं कि कमजोर हैं; हम इसलिए हारते हैं कि हम जीतने की कोशिश करते हैं। इसे थोड़ा हम समझ लें। क्योंकि मनुष्य-जाति का जो बुनियादी भ्रांत तर्क है, वह इस पर ही निर्भर है। हारता हूं मैं तो सोचता हूं, कमजोर था। तो शक्ति और बढ़ा लूं तो जीत जाऊंगा। तो शक्ति को हम बढ़ाने में लगे रहते हैं। लेकिन कितनी ही शक्ति आ जाए आदमी के हाथ, अंततः हार ही हाथ लगती है; जीत उपलब्ध नहीं हो पाती। सिकंदर हारा हुआ मरता है, नेपोलियन हारा हुआ मरता है; सभी हारे हुए मरते हैं। कमजोर तो हारते ही हैं, शक्तिशाली भी हारे हुए मरते हैं। तो तर्क, कि शक्ति ज्यादा होगी तो हम जीत जाएंगे, गलत है।

लाओत्से कहता है, जीतना चाहोगे तो हारोगे। हार का कारण जीतने की इच्छा में छिपा है, शक्ति की कमी में नहीं। असल में, जो जीतना चाहता है, उसके मन को हम समझें। जो जीतना चाहता है, पहली तो बात एक उसने स्वीकार कर ली कि हारने की भी संभावना है। जो जीतना चाहता है, उसने यह भी स्वीकार कर लिया कि जीतना बहुत मुश्किल है। जो जीतना चाहता है, उसने यह भी स्वीकार कर लिया कि मेरी जीत दूसरों पर निर्भर करेगी। क्योंकि जीत अपने पर निर्भर नहीं करती; कोई हारेगा तो मैं जीतूंगा। तो जीत में दूसरे की गुलामी छिपी है। सब जीतने वाले हारने वालों के अनुगृहीत होना चाहिए; क्योंकि उनके बिना वे न जीत सकेंगे। और जो जीत दूसरे पर निर्भर है, उसे हम जीत कह सकते हैं? अगर मेरी जीत भी आप पर निर्भर है तो आप मेरी जीत के भी मालिक हो गए। आपकी मुट्ठी में बंद है फिर मेरी चाबी। आप हारेंगे तो मैं जीतूंगा। और यह जगत है विराट और बड़ा। और कितनी ही बड़ी शक्ति हो हमारे पास, सदा क्षुद्र है--इस जगत की शक्तियों को देख कर। और कितने ही हम हाथ-पैर तड़पाएं, हम इस जगत की शक्ति से ज्यादा न हो सकेंगे। हम इसके हिस्से हैं, छोटे से हिस्से हैं। हम हारेंगे ही।

ओशो; ताओ उपनिषाद



आत्मा, परमात्मा का अंश है, यह तो सब जानते हैं, लेकिन आत्मा में परमात्मा का वास है, यह कोई विरला ही जानता है।



ईरान का एक बादशाह सर्दियों की शाम जब अपने महल में दाखिल हो रहा था तो एक बूढ़े दरबान को देखा जो महल के सदर दरवाज़े पर पुरानी और बारीक वर्दी में पहरा दे रहा था।

बादशाह ने उसके करीब अपनी सवारी को रुकवाया और उस ज़ईफ़ दरबान से पूछने लगा ;

"सर्दी नहीं लग रही ?"

दरबान ने जवाब दिया "बोहत लग रही है हुज़ूर ! मगर क्या करूँ, गर्म वर्दी है नहीं मेरे पास, इसलिए बर्दाश्त करना पड़ता है।"

"मैं अभी महल के अंदर जाकर अपना ही कोई गर्म जोड़ा भेजता हूँ तुम्हें।"

दरबान ने खुश होकर बादशाह को फर्शी सलाम किया और आजिज़ी का इज़हार किया।

लेकिन बादशाह जैसे ही महल में दाखिल हुआ, दरबान के साथ किया हुआ वादा भूल गया।

सुबह दरवाज़े पर उस बूढ़े दरबान की अकड़ी हुई लाश मिली और करीब ही मिट्टी पर उसकी उंगलियों से लिखी गई ये तहरीर भी ;

"बादशाह सलामत ! मैं कई सालों से सर्दियों में इसी नाज़ुक वर्दी में दरबानी कर रहा था, मगर कल रात आप के गर्म लिबास के वादे ने मेरी जान निकाल दी।"

सहारे इंसान को खोखला कर देते हैं। झूठे वादों से उम्मीदें बनती हैं वही उम्मीदें इंसान को कमज़ोर कर देती हैं, उम्मीदें ही दुख का कारण होती हैं।

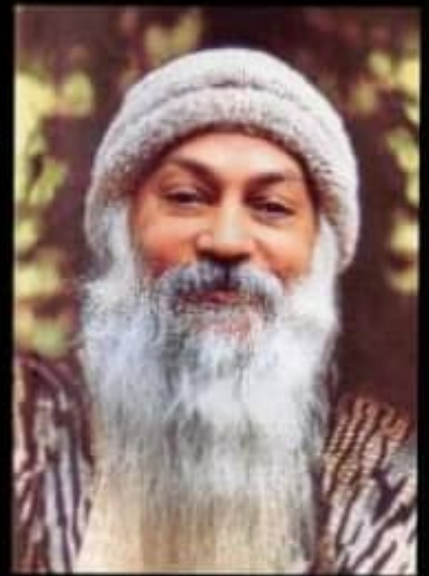


1 comment





कोई दूसरा आपको
नहीं जगा सकता,
सिर्फ आप खुद ही
अपने को जगा
सकते हो।

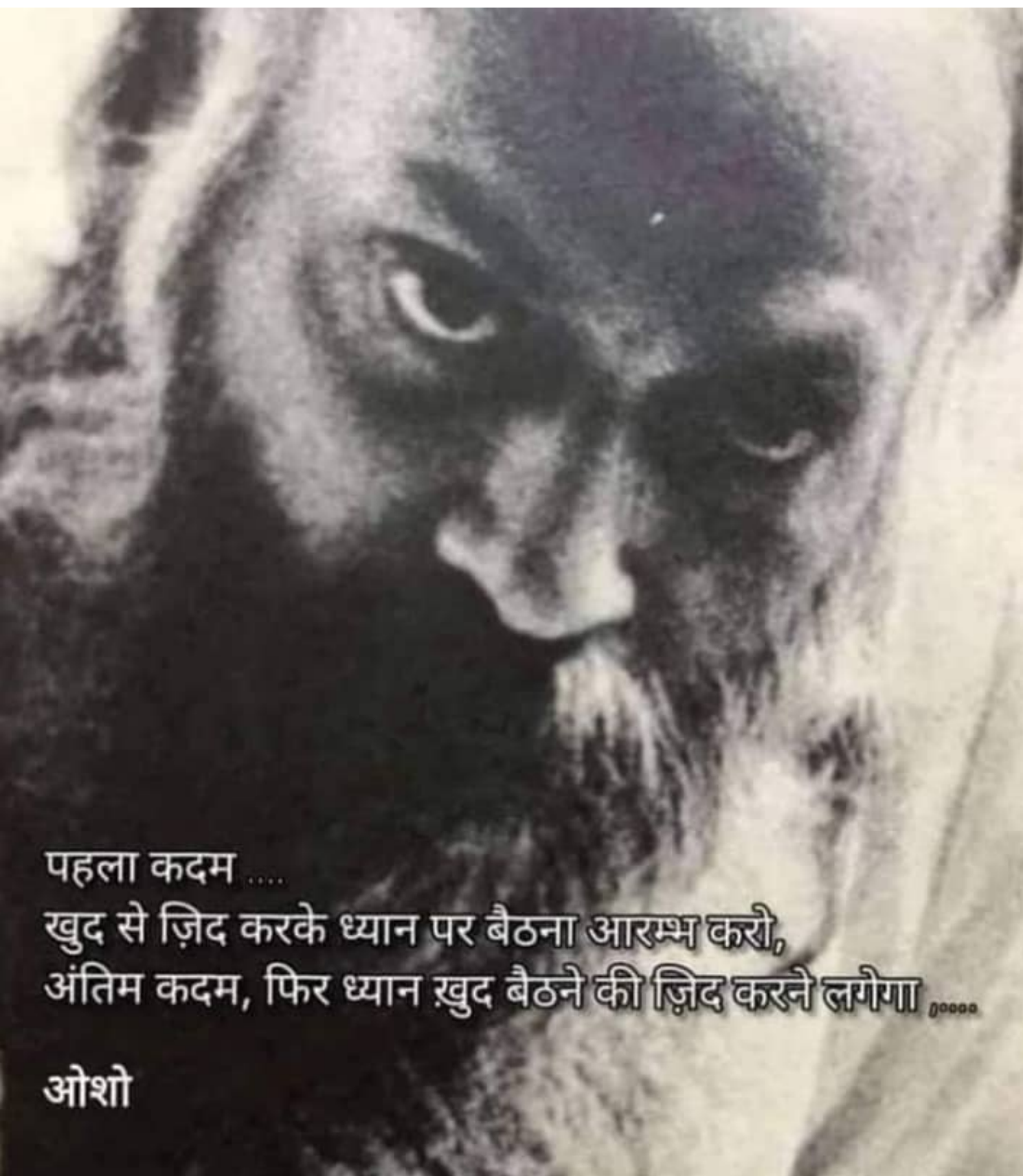


ओशो



बुद्धीमान आदमी बहुत बातें नहीं जानता।
वह एक को ही जान लेता है,
क्योंकि उस एक को ही जान लेने से सब
जान लिया जाता है,





पहला कदम

खुद से ज़िद करके ध्यान पर बैठना आरम्भ करो,
अंतिम कदम, फिर ध्यान खुद बैठने की ज़िद करने लगेगा ॥०००००॥

ओशो



ठीक समय पर पोद्दार जी के यहां बालक ने जन्म लिया और जब हम तीन वर्ष बाद काशी पहुंचे तब तक उसकी ख्याति वाराणसी और उसके आसपास के क्षेत्र में फैल चुकी थी। मात्र तीन वर्ष का बालक गणित के कठिन समीकरणों को आसानी से हल कर लेता। लगभग पन्द्रहों अंकों की संख्या से गुणनफल कुछ ही सेकण्डों में स्पष्ट कर देता। घनमूल और वर्ग चुटकियों में बता देता।

आज वही बालक अरुण पोद्दार विश्व विख्यात गणितज्ञ है और अंतर्राष्ट्रीय गणित के क्षेत्र में उसने जो कीर्तिमान कायम किये हैं वह विश्व को आश्चर्यचकित कर देने के लिये पर्याप्त है।

▶ !! सनातन धर्म की जय हो !! ▶



34

14 comments



Like



Comment



Send



Samarthguru Sidhharth Aulia Lovers



Rajendra Patidar · 23h · 🌐



बालक जब गर्भ में होता है तो वह समर्थ ब्रह्म स्वरूप होता है और उसे जो भी बताया जाता है वह पूर्ण दक्षता के साथ हृदयंगम कर लेता है। उस पर अन्य किसी भी प्रकार के विचार, भावनाएं और क्रियाकलाप का प्रभाव नहीं होता। फलस्वरूप उसमें ग्रहण करने की वृत्ति बहुत अधिक होती है, और वह एक ही बार में सुनकर समझ लेता है, हृदयंगम कर लेता है और उसमें दक्षता भी प्राप्त कर लेता है। गर्भस्थ शिशु पर उसका कोई भी प्रभाव व्याप्त नहीं होता।

पुत्तलिका विधान के अनन्तर गर्भस्थ बालक को जो भी सिखाया जाता है, वह मां के द्वारा सीखता जाता है, क्योंकि उसका आधार तो मां ही होती है। जब मां चैतन्य अवस्था में होती है तब उस बालक को मां के द्वारा जो भी बताया जाता है, उस ज्ञान को गर्भस्थ बालक ब्रह्मस्वरूप होने के कारण सीखता जाता है और हृदयंगम करता जाता है। इसलिए बाह्य जीवन में जो ज्ञान पांच वर्ष में सीखा जा सकता है, वही गर्भ में केवल पांच महीनों में ही प्राप्त कर लेता है।

इस पुत्तलिका विधान के द्वारा गर्भस्थ शिशु का जिन जिन व्यक्तियों से सम्पर्क सम्पन्न किया जाता है, बालक केवल उसी की बात को स्वीकार करता है। ऐसा सम्बन्ध एक व्यक्ति से या दस व्यक्तियों से भी किया जा सकता है। समय-समय पर इनमें से कुछ व्यक्तियों का सम्बन्ध विच्छेद भी किया जा सकता है। इसके बाद यदि वह कुछ भी कहता है तो गर्भस्थ शिशु पर उसका कोई भी प्रभाव व्याप्त नहीं होता।

पोद्दार जी के मन में अपने पुत्र को उच्च कोटि का गणितज्ञ बनाने की इच्छा थी। उन्होंने कलकत्ता से विख्यात गणितज्ञ रामानुजाचार्य को बुलाया था और सात महीनों के लिये उनकी सेवाएं प्राप्त कीं। रामानुजाचार्य लगभग ६० वर्ष के अत्यन्त ही अनुभवी और विश्व विख्यात गणितज्ञ थे। पोद्दार जी के पिता और वे दोनों सहपाठी थे तथा दोनों परिवारों का परस्पर अत्यधिक घनिष्ठ सम्बन्ध था।

ठीक समय पर पोद्दार जी के यहां बालक ने जन्म लिया और जब हम तीन वर्ष बाद काशी पहुंचे तब तक उसकी ख्याति वाराणसी और उसके आसपास के क्षेत्र में फैल चुकी थी। मात्र तीन वर्ष का बालक गणित के कठिन समीकरणों को आसानी से हल कर लेता। लगभग पन्द्रहों अंकों



वैदिक काल में गर्भ ज्ञान की परम्परा प्रचलित थी। गूढ़ और दुरूह ज्ञान तो बालक को गर्भ में ही दे दिया जाता था और बाद में जन्म लेने पर अन्य लौकिक क्रियाओं का ज्ञान कराया जाता था। पौराणिक काल में अभिमन्यु की ही नहीं, अपितु सैकड़ों घटनाएं इसकी साक्षी हैं। अष्टावक्र ने सम्पूर्ण वैदिक ज्ञान मां के गर्भ में ही प्राप्त किया था।

काल अपने-आप में अखण्ड है। वैदिक काल, पौराणिक काल या वर्तमान काल शब्द तो हमारे गढ़े हुए हैं। जबकि ऐसा कोई काल खण्ड नहीं होता। आज भी वे घटनाएं और तथ्य उतने ही सही हैं जितने कि उस समय में थीं।

इस प्रकार की इच्छा रखनेवाली माताएं यदि 'पुत्तलिका साधना' सम्पन्न कर लें तो उनके गर्भ का सम्बन्ध बाह्य व्यक्ति से हो जाता है। यहां बाह्य व्यक्ति का तात्पर्य उनके पति या गुरु ही हो सकते हैं। ऐसा विधान करने पर मां अन्तर्मुखी और बहिर्मुखी के बीच की दीवार तोड़ देती है।

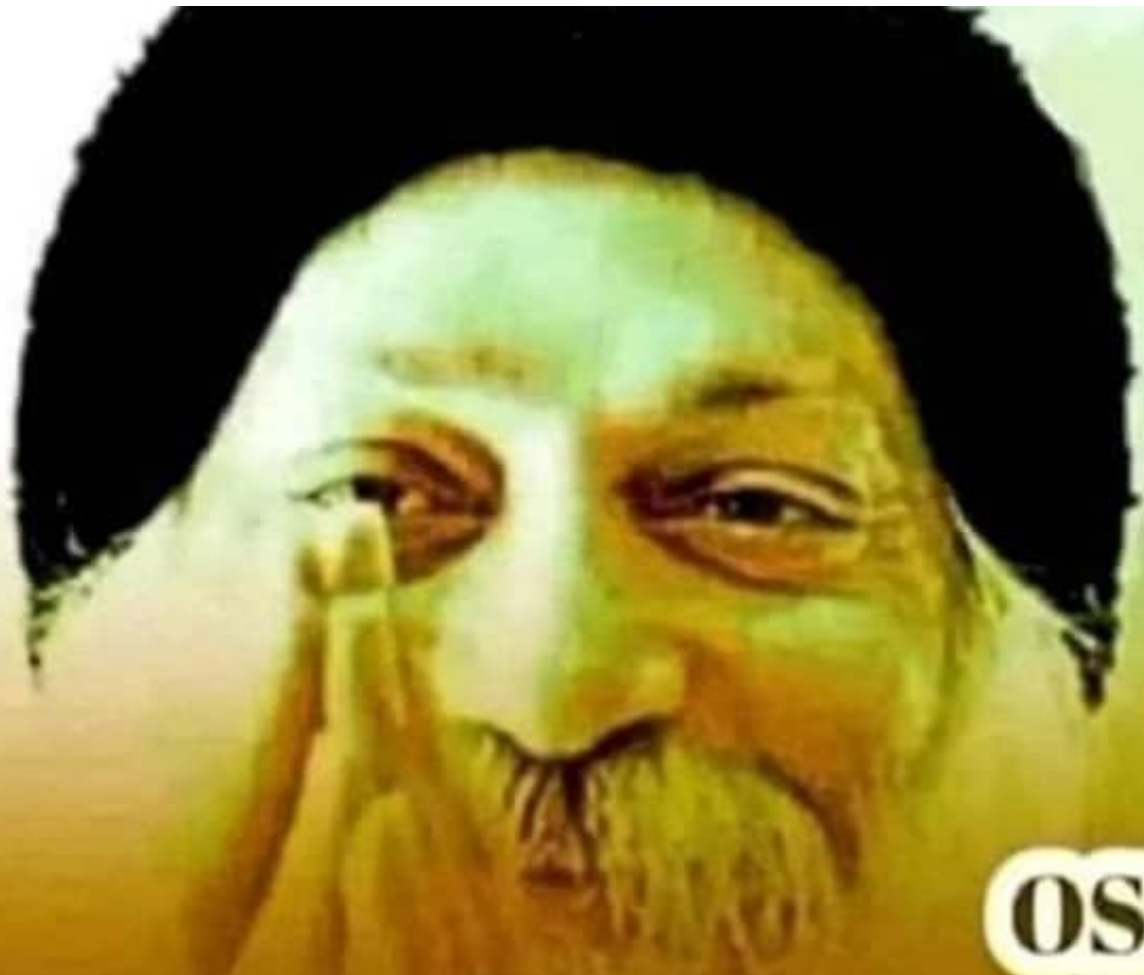
यों प्रत्येक स्त्री और पुरुष के दो जीवन हैं। एक अन्तर्मुखी जीवन है जो कि शरीर के अन्दर होने वाली क्रियाओं और घटनाओं से सम्बन्धित है, दूसरा उसका बहिर्मुखी जीवन है जिसमें वह कर्त्ता बनकर अपना कार्य सम्पादन करता है जबकि योग के क्षेत्र में प्रवेश करता है तो पहली बार बहिर्जीवन और आन्तरिक जीवन में संपर्क सहयोग स्थापित होता है।

आगे चलकर एक स्थिति ऐसी आ जाती है कि बहिर्जीवन और अन्तर् जीवन की विभाजक रेखा उपस्थित हो जाती है। इसी को पुत्तलिका कहते हैं। 'वशिष्ठ संहिता' में इसका प्रामाणिकता के साथ उल्लेख है। पुत्तलिका विधान से वह विभाजक रेखा समाप्त हो जाती है और आन्तरिक जीवन का बाह्य जीवन से सीधा सम्बन्ध हो जाता है।

बालक जब गर्भ में होता है तो वह समर्थ ब्रह्म स्वरूप होता है और उसे जो भी बताया जाता है वह पूर्ण दक्षता के साथ हृदयंगम कर लेता है। उस पर अन्य किसी भी प्रकार के विचार, भावनाएं और क्रियाकलाप का प्रभाव नहीं होता। फलस्वरूप उसमें ग्रहण करने की वृत्ति बहुत अधिक होती है, और वह एक ही बार में सुनकर समझ लेता है, हृदयंगम कर लेता है और उसमें दक्षता भी प्राप्त कर लेता है। गर्भस्थ शिशु पर उसका

When you are aware that you are happy, is there happiness? When there is happiness, are you aware of it? Consciousness comes only with conflict, the conflict of remembrance of the more. Happiness is not the remembrance of the more. Where there is conflict, happiness is not. Conflict is where the mind is. Thought at all levels is the response of memory, and so thought invariably breeds conflict. Thought is sensation, and sensation is not happiness. Sensations are ever seeking gratifications. The end is sensation, but happiness is not an end; it cannot be sought out.

J Krishnamurti



OSHO

सदगुरु स्नेह

प्रेम की डोर दिखती तो नहीं है,
पर इतनी मजबूत होती है
की परमात्मा को भी
बांध सकती है ।

What are you afraid of losing
when nothing in the world
actually belongs to you

spiritualgoal



**Usno Talks**

4d · 🌐

Music is love , love is music.

Alexander McLean

संगीत प्यार है, प्यार संगीत है।

अलेक्जेंडर मैकलीन

⚙️ • Rate this translation



👍 12

1 share



Like



Comment



Send



Share

॥श्रीहरिः॥



कलियुगमें विशेष सावधान रहनेकी जरूरत है-‘कलि प्रभाव बिरोध चहुँ ओरा’ (मानस, उत्तर० १०४ । ३) । सर्दीमें अपने शरीरका ध्यान रखते-रखते सर्दी लग जाती है ! अतः सावधान रहते हुए आपसमें विशेष प्रेम रखें। थोड़ी-थोड़ी बातसे ईर्ष्या न करें। कैकेयीने वनवास दे दिया, फिर भी सीताजी और रामजीने उसकी निन्दा, तिरस्कार नहीं किया। उनमें कैकेयीके प्रति कोई दुर्भाव नहीं आया। रामायणका पाठ करते हो तो वैसी ही शिक्षा लो। घरमें सभी परस्पर प्रेम रखें। जहाँ प्रेम है, वहाँ सत्ययुग है। जहाँ कलह है, वहाँ कलियुग है।

•स्वामी रामसुखदासजी महाराज•



कामवासना बड़ा रहस्य है जीवन का,
सबसे बड़ा रहस्य। उसके पार बस एक
ही रहस्य है - परमात्मा का।

इसलिए मैं कहता हूँ, जीवन में दो रहस्य है -
एक संभोग का और एक समाधि का।

तीसरा कोई रहस्य नहीं है।

संभोग ने तुम्हें जीवन दिया है और
समाधि तुम्हें नया जीवन देगी।

संभोग ने तुम्हें देह का जीवन दिया है,
समाधि तुम्हें आत्मा का जीवन देगी।

ओशो सहज आशिकी नाहिं



ओशो

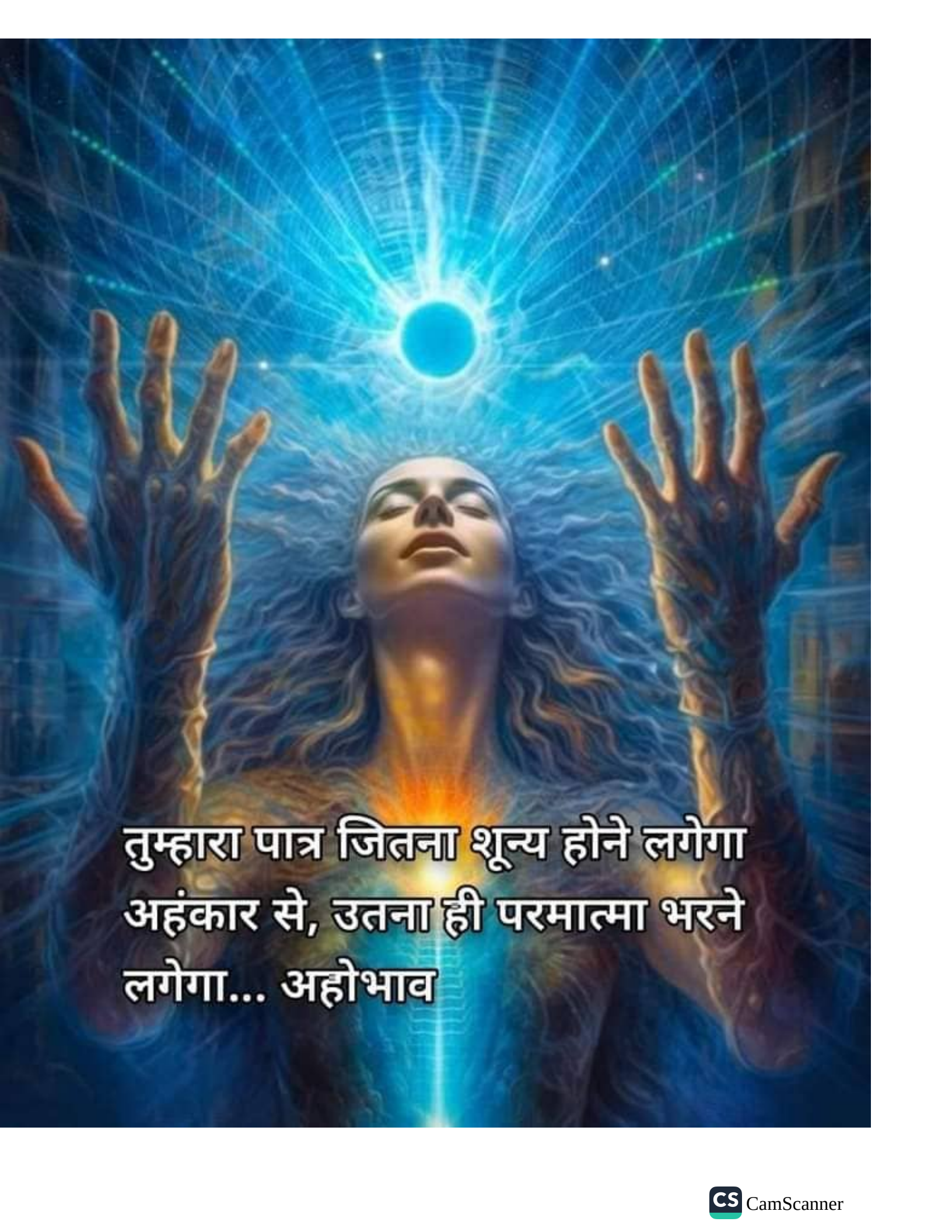
जो हृदय से जीते हैं,
जिंदगी उनकी है।

धन्यभागी हैं वे, जिनके हृदय में
प्रेम है!!!!



Intelligence is not discernment and judgment or critical evaluation. Intelligence is the seeing of what is. The what is is constantly changing, and when the seeing is anchored in the past, the intelligence of seeing ceases. Then the dead weight of memory dictates the action and not the intelligence of perception. Meditation is the seeing of all this at a glance. And to see, there must be silence, and from this silence there is action which is entirely different from the activities of thought.

J KRISHNAMURTI, THE ONLY REVOLUTION



तुम्हारा पात्र जितना शून्य होने लगेगा
अहंकार से, उतना ही परमात्मा भरने
लगेगा... अहोभाव



वह तीसरे आदमी को पकड़ लाया। और उससे भी यही सवाल किया कि लाखों रुपए के मूल्य की अशर्फियां मिल जाएं दस कदम की दूरी पर, तुम उसके मालिक को वापस लौटा दोगे? उस आदमी ने कहा, कहना मुश्किल है। मन का भरोसा क्या? क्षण का भी पक्का नहीं है। अगर परमात्मा की कृपा रही तो लौटा दूंगा। लेकिन मन बड़ा शैतान है, और बड़ा उत्तेजनाएं देगा मन कि मत लौटाओ! मेरा सौभाग्य और परमात्मा की कृपा रही तो लौटा दूंगा; मेरा दुर्भाग्य और उसकी कृपा न रही तो लेकर भाग जाऊंगा। पर अभी कुछ भी कह नहीं सकता; क्षण आए, तभी पता चले। उस फकीर ने अपने शिष्यों से कहा कि यह आदमी सच्चा संत है।

क्या मतलब है?

संत का पहला लक्षण यह है कि वह क्षण के साथ जीएगा। कल के लिए निर्णय नहीं लिया जा सकता। कल की कौन कहे? कल क्या होगा, कौन जानता है? कल हम होंगे भी या नहीं, यह भी कौन जानता है? और कल की परिस्थिति में क्या मौजूद पड़ेगा, इसका निर्णय आज कौन लेगा और कैसे लिया जा सकता है? कल अज्ञात है; अज्ञात के लिए तुम कैसे निर्णय लोगे?

आने दो कल। जीवन कोई नाटक नहीं है कि तुमने आज रिहर्सल कर लिया और कल नाटक में सम्मिलित हो गए। जीवन में कोई भी रिहर्सल नहीं है। इसीलिए तो नाटक में सफल हो जाना आसान, जीवन में सफल होना बहुत मुश्किल है। तैयारी करने का उपाय ही नहीं है। जीवन जब आता है, तभी अनजाना। जब भी जीवन द्वार पर दस्तक देता है, तभी नई तस्वीर। पुराने से पहचान की थी, तब तक वह बदल जाता है। जीवन प्रतिपल नया है। पुराना कभी दुहरता नहीं। हर सूरज नया है। और हेराक्लाइटस ठीक कहता है कि एक ही नदी में तुम दुबारा न उतर सकोगे। इसलिए पहले की तैयारियां काम न आएंगी। जीवन में कोई अभिनय की पूर्वतैयारी नहीं हो सकती; तुम जीवन के लिए तैयार कभी हो ही नहीं सकते। यही संतत्व का सार है।

ताओ उपनिषाद--प्रवचन--087

(सौजन्य-ओशो का हिन्दी साहित्य गुप)

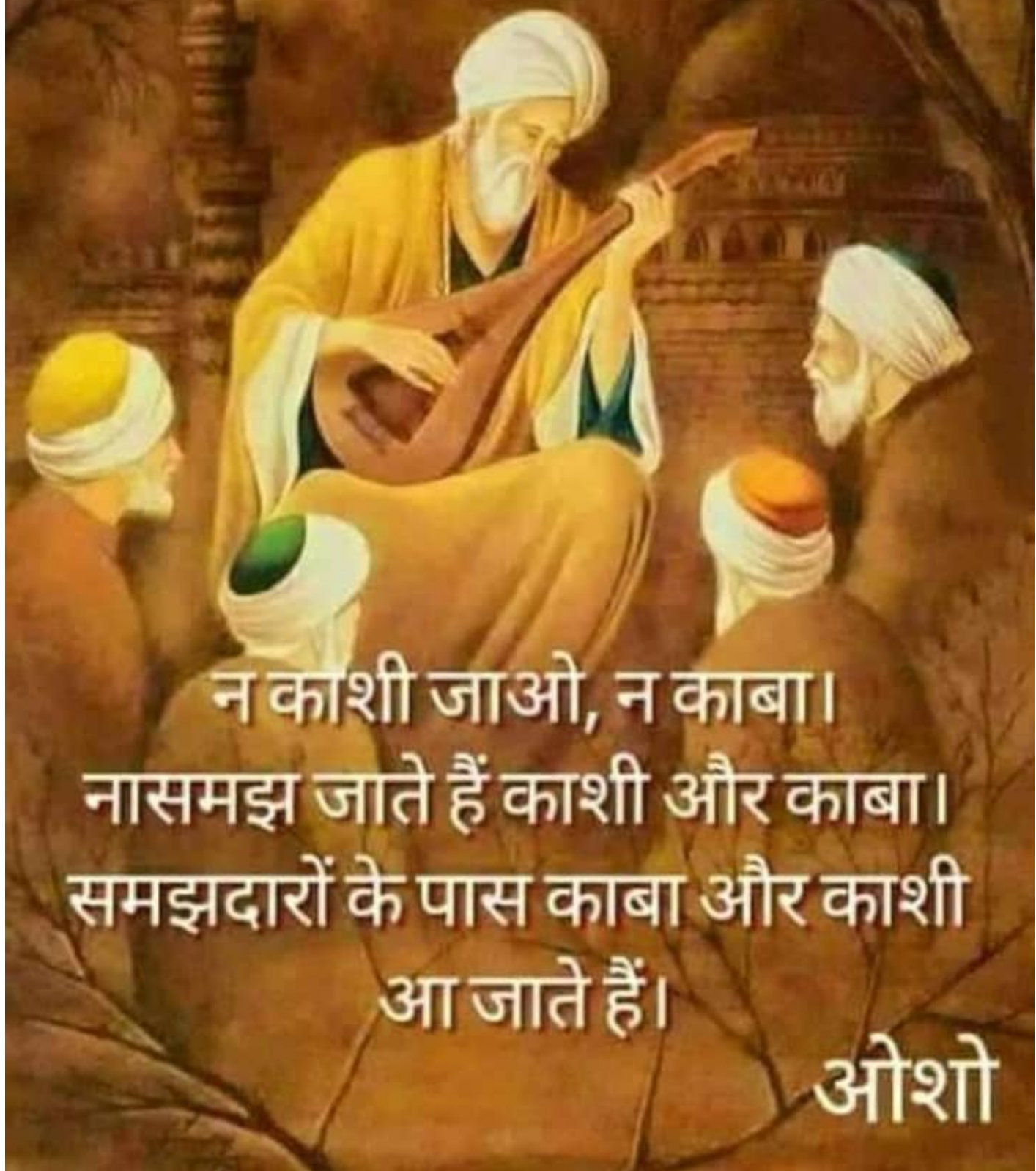
संकलन-रामजी 🙏🌹🌹

कहीं का किया
कहीं तो अवश्य मिलता है,
Believe In Equation Of कर्मा..!!

Instagram ❤️ @Golden words



परमात्मा कहीं और नहीं है,
तुम जहां हो वहीं है।



न काशी जाओ, न काबा।
नासमझ जाते हैं काशी और काबा।
समझदारों के पास काबा और काशी
आ जाते हैं।

ओशो

Thought begins to compare, judge, and say 'I must have it again tomorrow'. The continuity of an experience that has given delight for a second is sustained by thought.



JIDDU KRISHNAMURTI

Freedom From The Known

CP

तुम प्रेम की परिभाषा,
किसी स्त्री-पुरुष से!

"मत समझ लेना..
प्रेम तो भीतर का एक,
"झरना है.!आत्मा का!
आनंद का..!!

ओशो





यह रहस्य आज तक नहीं खुला
कि...

जो नहीं मिला..वही क्यों चाहिए!!



Lives Starting RS 2400/1akh

289

7 comments



Like



Comment

**OSHO FRAGRANCE FRIENDS**

Anil Bharti · 12m ·

चैन तुमसे है ,करार तुमसे है
जिन्दगी की ,बहार तुमसे है
क्या करूंगा ,पूरी दुनिया को लेकर
मेरे ,दिल को तो बस प्यार तुमसे है



8

2 comments



Like



Comment



Send

**Anil Bharti**

Like Reply

**Anil Bharti**

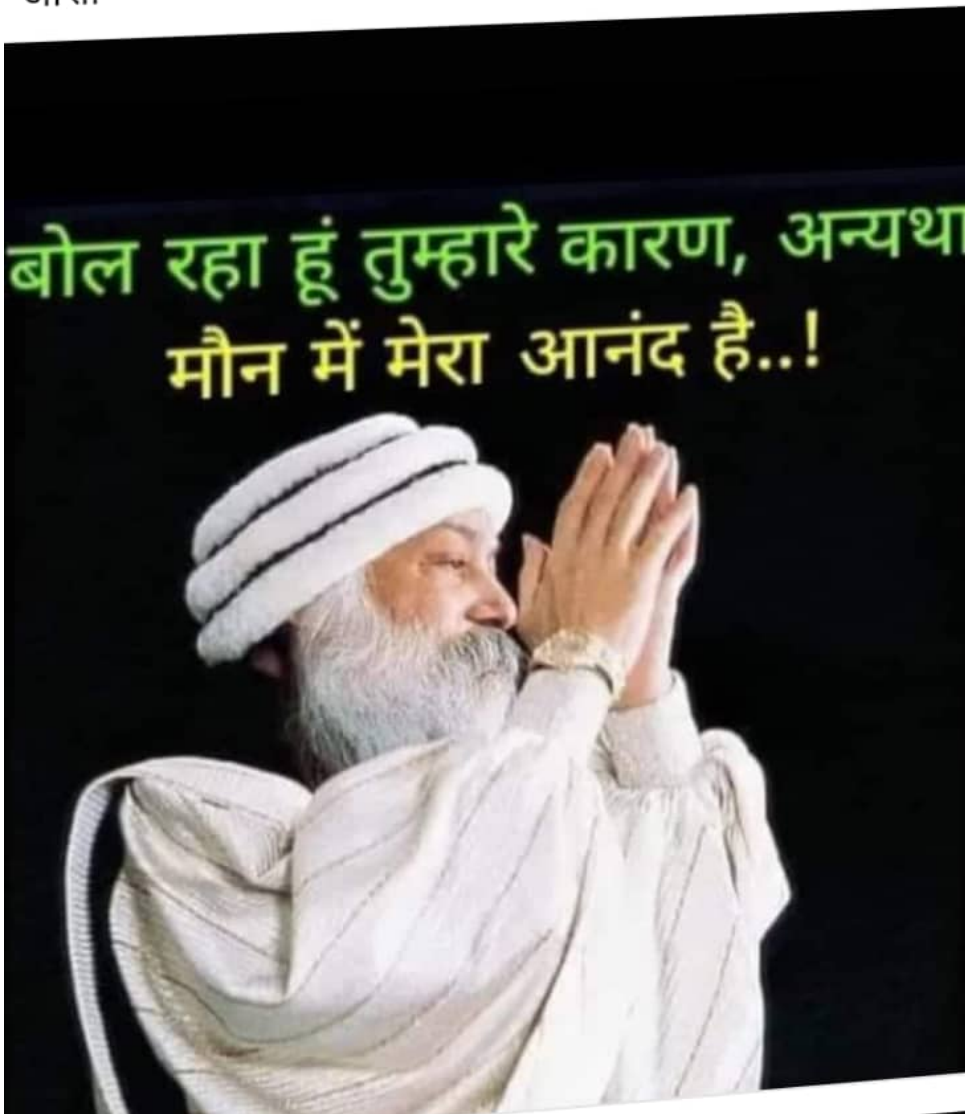


ता उसक नदशा का मानना हा पड़गा।

और तब, अचानक ही, एक बड़ी घटना घटी। जब शरीर को आग दी जाने लगी, तो वह बूढ़ा आदमी आखिरी चाल चल गया। उसने बहुत से पटाखे छिपा रखे थे कपड़ों के नीचे, और अचानक दीपावली हो गयी! तब तो सारा गांव हंसने लगा। ये दोनों पागल मित्र नाच ही रहे थे, फिर तो सारा गांव ही नाचने लगा। यह कोई मृत्यु न थी, यह नया जीवन था।

कोई मृत्यु मृत्यु नहीं होती, क्योंकि प्रत्येक मृत्यु खोल देती है एक नया द्वार वह एक प्रारंभ होती है। जीवन का कोई अंत नहीं, सदा एक नया प्रारंभ होता है, एक पुनर्जीवन।

पतंजलि योगसूत्र
ओशो





फिर, एक गांव में ऐसा हुआ कि उन तीनों में से एक मर गया। गांव के लोग इकट्ठे हुए और वे कहने लगे, 'अब तो मुश्किल आ पड़ेगी। अब हम देखेंगे कि कैसे हंसते हैं वे। उनका मित्र मर गया है, वे तो जरूर रोके।' लेकिन जब वे आए, तो दोनों नाच रहे थे, हंस रहे थे, और उत्सव मना रहे थे मृत्यु का। गांव के लोगों ने कहा, 'यह तो बहुत ज्यादाती हुई। यह असंभव्यता है। जब कोई व्यक्ति मर जाता है तो हंसना और नाचना अधर्म होता है।' वे बोले, 'तुम नहीं जानते कि क्या हुआ।

हम तीनों सदा ही सोचते रहते थे कि सब से पहले कौन मरेगा। यह आदमी जीत गया है, हम हार गए। सारी जिंदगी हंसते रहे उसके साथ। तो हम उसे अंतिम विदाई किसी और चीज के साथ कैसे दे सकते हैं? हमें हंसना ही है, हमें आनंदित होना ही है, हमें उत्सव मनाना ही है। यही एक मात्र विदाई संभव है उस व्यक्ति के लिए जो जीवन भर हंसता रहा है। और यदि हम नहीं हंसते, तो वह हंसेगा हम पर और वह सोचेगा, अरे नासमझों! तो तुम फिर जा फंसे जाल में? हम नहीं समझते कि वह मर गया है। हंसी कैसे मर सकती है? जीवन कैसे मर सकता है?’

हंसना शाश्वत चीज है, जीवन शाश्वत है, उत्सव चलता ही रहता है। अभिनय करने वाले बदल जाते हैं, लेकिन नाटक जारी रहता है। लहरें परिवर्तित होती हैं, लेकिन सागर बना रहता है। तुम हंसते, तुम बदलते और कोई दूसरा हंसने लगता, लेकिन हंसना तो जारी रहता है। तुम उत्सव मनाते हो, कोई और उत्सव मनाता है, लेकिन उत्सव तो चलता ही रहता है। अस्तित्व सतत प्रवाह है, वह सब कुछ समाए चलता है, उसमें एक पल का अंतराल नहीं होता। लेकिन गांव के लोग नहीं समझ सकते थे और वे इस हंसी में उस दिन तो शामिल नहीं हो सकते थे।

फिर देह का अग्नि संस्कार करना था, और गांव के लोग कहने लगे, 'हम तो इसे स्थान कराएंगे जैसे कि धार्मिक कर्मकांड नियत होते हैं।' लेकिन वे दोनों मित्र बोले, 'नहीं, हमारे मित्र ने कहा है कि कोई धार्मिक अनुष्ठान मत करना और मेरे कपड़े मत बदलना और मुझे स्नान मत कराना। जैसा मैं हूं तुम मुझे वैसा ही रख देना चिता की आग पर। इसलिए हमें तो उसके निर्देशों को मानना ही पड़ेगा।'



मैंने सुना है तीन चीनी फकीरों के बारे में। कोई नहीं जानता उनके नाम। वे जाने जाते थे केवल 'तीन हंसते हुए संतों' के रूप में, क्योंकि उन्होंने कभी कुछ किया ही नहीं था, वे केवल हंसते रहते थे। वे एक नगर से दूसरे नगर की ओर बढ़ जाते, हंसते हुए। वे खड़े हो जाते बाजार में और खूब जोर से हंसते। सारा बाजार उन्हें घेरे रहता। सारे लोग आ जाते। दुकानें बंद हो जातीं और ग्राहक भूल जाते कि वे आए किसलिए थे। ये तीनों आदमी सचमुच सुंदर थे हंसते और उनके पेट हिलते जाते। और फिर यह बात संक्रामक बन जाती और दूसरे हंसना शुरू कर देते। फिर सारा बाजार हंसने लगता। उन्होंने बदल दिया होता बाजार की गुणवत्ता को, स्वरूप को ही। और यदि कोई कहता कि 'कुछ कहो हम से' तो वे कहते, 'हमारे पास कहने को कुछ है नहीं। हम तो बस हंस पड़ते हैं और बदल देते हैं गुणधर्म ही।' जब कि अभी थोड़ी देर पहले यह एक असुंदर जगह थी जहां कि लोग सोच रहे थे केवल रुपये पैसे के बारे में ही, ललक रहे थे धन के लिए, लोभी, धन ही एकमात्र वातावरण था हर तरफ अचानक ये तीनों पागल आदमी आ पहुंचते हैं और वे हंसने लगते, और बदल देते गुणवत्ता सारे बाजार की ही। अब कोई ग्राहक न था। अब वे भूल चुके थे कि वे खरीदने और बेचने आए थे। किसी को लोभ की फिक्र न रही। वे हंस रहे थे और नाच रहे थे इन तीन पागल आदमियों के आस पास। कुछ पलों के लिए एक नयी दुनिया का द्वार खुल गया था!

वे घूमे सारे चीन में, एक जगह से दूसरी जगह, एक गांव से दूसरे गांव, बस लोगों की मदद कर रहे थे हंसने में। उदास लोग, क्रोधित लोग, लोभी लोग, ईर्ष्यालु लोग वे सभी हंसने लगे उनके साथ। और बहुतों ने अनुभव की कुंजी तुम रूपांतरित हो सकते हो।

फिर, एक गांव में ऐसा हुआ कि उन तीनों में से एक मर गया। गांव के लोग इकट्ठे हुए और वे कहने लगे, 'अब तो मुश्किल आ पड़ेगी। अब हम देखेंगे कि कैसे हंसते हैं वे। उनका मित्र मर गया है, वे तो जरूर रोके।' लेकिन जब वे आए, तो दोनों नाच रहे थे, हंस रहे थे, और उत्सव मना रहे थे मृत्यु का। गांव के लोगों ने कहा, 'यह तो बहुत ज्यादाती हुई। यह असभ्यता है। जब कोई व्यक्ति मर जाता है तो हंसना और नाचना अधर्म होता है।' वे बोले, 'तुम नहीं जानते कि क्या हुआ।

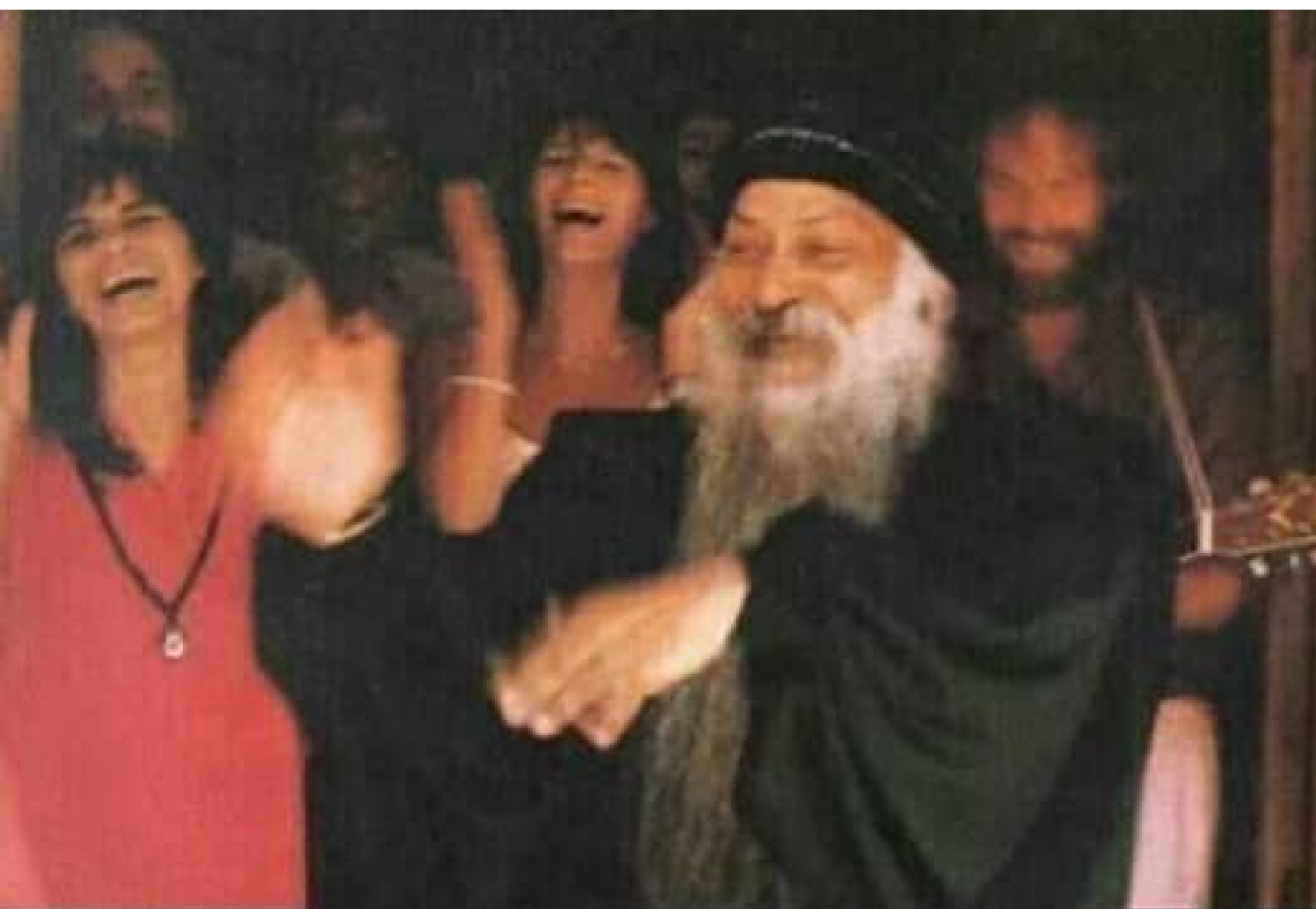
हम तीनों सदा ही सोचते रहते थे कि सब से पहले कौन मरेगा। यह

बोल रहा हूं तुम्हारे कारण, अन्यथा
मौन में मेरा आनंद है..!





बुद्ध ने कहा;- जागो! मेरे
जैसे हो जाओ..
जैसे मैं जागा हूं, ऐसे तुम भी
"जागो! जागते ही तुम्हें
सारे.. प्रश्नों के उत्तर मिल
जाएंगें.!! ओशो



जीवन तो जायेगा, इस लिए जी लो...!
अगर ना जियोगे, तो भी मौत तो
आयेगी ही..!! _ओशो

ओशो अहोभाव

"यह उत्तर है: क्षण-क्षण जियो
और तुम बुद्ध बन जाओगे।"

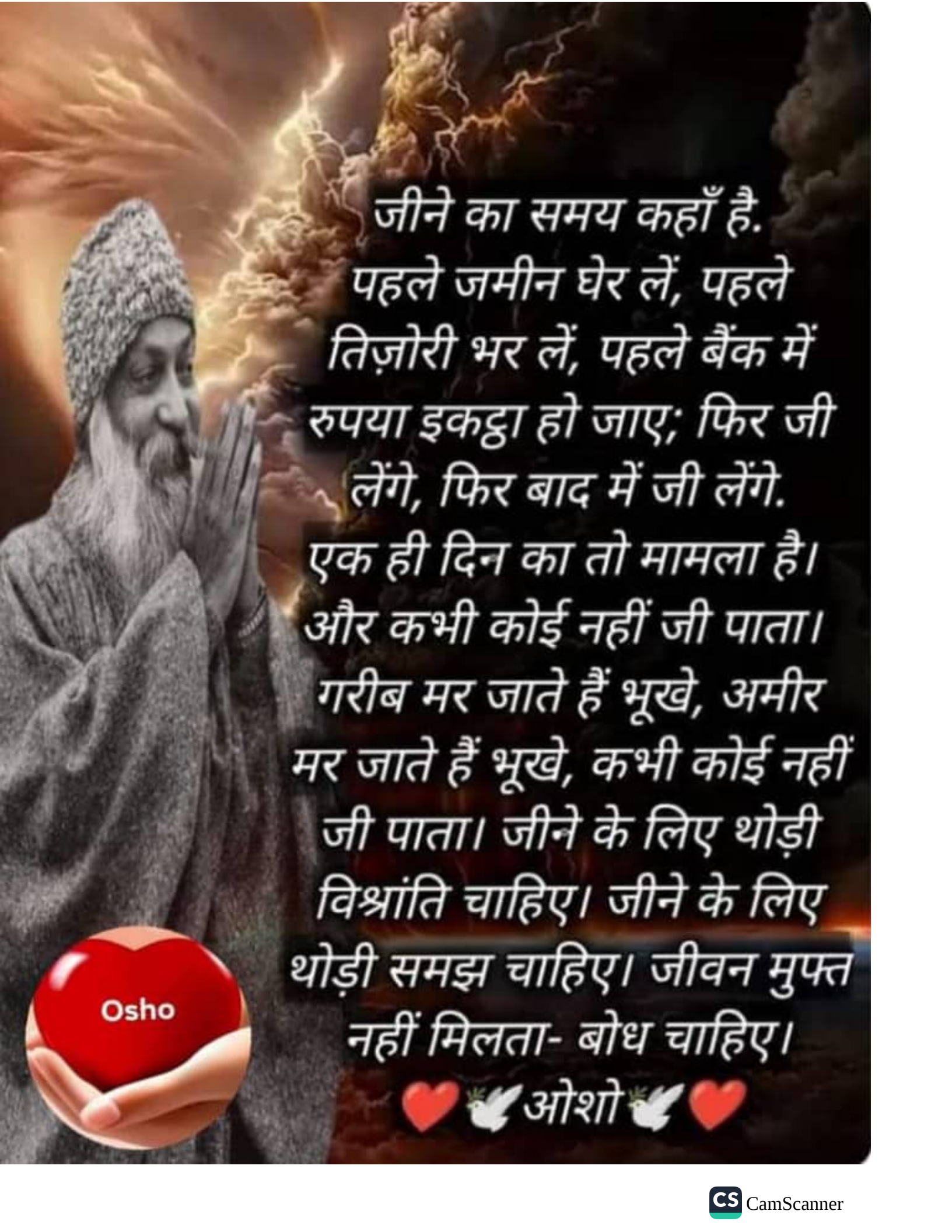
Attention is seeing. Seeing is an art as listening. But one hardly ever listens or sees; everyone is so occupied, so busy with the things that have to be done, with one's joys, problems and tears. One has no time to see. But time does not give you sight; time hinders seeing, listening. Time is the space for experiencing and experience only dulls the mind and heart. The mind is filled and the heart has turned away and so there is no seeing.

] KRISHNAMURTI, KRISHNAMURTI NOTEBOOK

**"Everyone will die, so one should
not be afraid of death; Don't
spoil the sad present"**

**"मृत्यु सभी की होगी, इसलिए मृत्यु से डरना
नहीं चाहिए; दुखी होकर वर्तमान खराब न
करें "**

~~Love Buddha~~



जीने का समय कहाँ है.
पहले जमीन घेर लें, पहले
तिज़ोरी भर लें, पहले बैंक में
रुपया इकट्ठा हो जाए; फिर जी
लेंगे, फिर बाद में जी लेंगे.
एक ही दिन का तो मामला है।
और कभी कोई नहीं जी पाता।
गरीब मर जाते हैं भूखे, अमीर
मर जाते हैं भूखे, कभी कोई नहीं
जी पाता। जीने के लिए थोड़ी
विश्वांति चाहिए। जीने के लिए
थोड़ी समझ चाहिए। जीवन मुफ्त
नहीं मिलता- बोध चाहिए।



❤️🕊️ ओशो 🕊️❤️

**Maitreyi Nivi**

3m ·



I sometimes forget
that I was created for Joy.
My mind is too busy.
My Heart is too heavy
for me to remember
that I have been
called to dance
the Sacred dance of life.
I was created to smile
To Love
To be lifted up
And to lift others up.
O' Sacred One
Untangle my feet
from all that ensnares.
Free my soul.
That we might
Dance
and that our dancing
might be contagious.

~Hafiz

See translation



Posts

About

Videos

Photos

More ▾



152 views



Like



Comment



Send



Share



Sacred Love Child by ARA Shakti Deva





Posts

About

Videos

Photos

More ▾

**Yogini Amrita Nath**

Reels · 21 Aug · 🎵 Ashutosh Patel · 🌐



3

1 share • 202 views

[Posts](#)[About](#)[Videos](#)[Photos](#)[More](#) ▼

Excerpt From

The Divine Romance: Collected Talks and Essays on
Realizing God in Daily Life – Volume 2

Paramahansa Yogananda

{ Namastute 🙏 Love ❤️ Respects 🌺 Gratitude 🌹 For
All.

[AmritaNath/Channel -Multidimensional Healer](#)

See translation





Collected Works of The Mother

Set of 17 volumes

Search

- THE MOTHER

CWM 

Agenda 

Misc. 

CWM (Fre) 

L'Agenda de Mère 

Compilations 

Corr. with disciples 

- TRANSLATIONS

CWM (Hin) 



TOC





इस दुनिया में बहुत हो चुकी दूसरों की सेवा, कुछ सार हाथ नहीं आया। दूसरों की सेवा के नाम पर बहुत थोथे धंधे चल चुके। सेवा के नाम पर सत्ताधिकारियों ने लोगों का शोषण किया है। जो भी सेवक बनकर आता है, आज नहीं कल सत्ताधिकारी हो जाता है। जो तुम्हारे पैर दबाने से शुरू करता है, एक दिन तुम्हारी गर्दन दबाएगा। जब तुम्हारे पैर दबाए तभी चेत जाना, अन्यथा पीछे बहुत देर हो जाती है। फिर चेतने से कुछ सार नहीं। क्यों करेगा कोई सेवा तुम्हारी? और सेवा करेगा, तो बदला मांगेगा; पुरस्कार चाहेगा।

Osho



Nov · 🌐

The Real Meaning of "Mantra"

... See more



👍❤️ 3.5K

98 comments • 972 shares • 95K views



Like



Comment



Share



22 Sep · 🌐



What is Creation?
... See more



👍❤️ You and 1.1K others 55 comments • 442 shares • 24K views



11:25 am

🕒 ⚙️ VoLTE 4G 54%



22 Sep · 🌐



What is Creation?
... See more



👍❤️ You and 1.1K others · 55 comments · 442 shares · 24K views



Like



Comment



Share



CamScanner



What is Creation?
... See more



You and 1.1K others 55 comments • 442 shares • 24K views



Like



Comment



Share



Reels





Fulfill me, make me happy,
make me feel safe, tell me
who I am. The world cannot
give you those things, and
when you no longer have such
expectations, all self created
suffering comes to an end.

~ E. Tolle



JK

Seeing, sentation,
image-thaught,
interval-time,
mind-desire, brain
Have it|



परमात्मा किसी को उसकी सहन करने की
शक्ति से ज्यादा नहीं तपाता..

**A Tribe Called Dhillon Podcast**

Sponsored ·

Hi Friends, here's a motivational quote to in... See more

*Karma is a
silent but
constant
observer
of all things
in our life.*



PODCAST

A Tribe Called Dhillon Podcast

15K

279 comments • 1.4K shares • 241K views



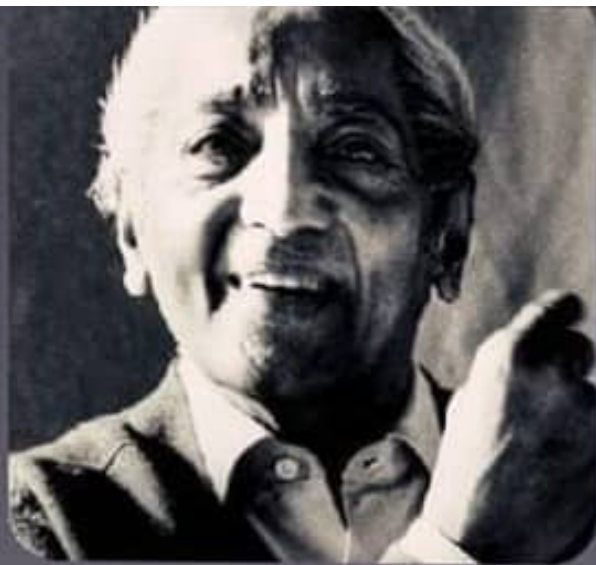
Like



Comment



Share



*I am a living thing, not a
dead thing, so each time
I observe and learn, it
must be new learning.
Otherwise, I bring in the
old, and it prevents me
from learning.*

Krishnamurti, Bangalore, 10 January

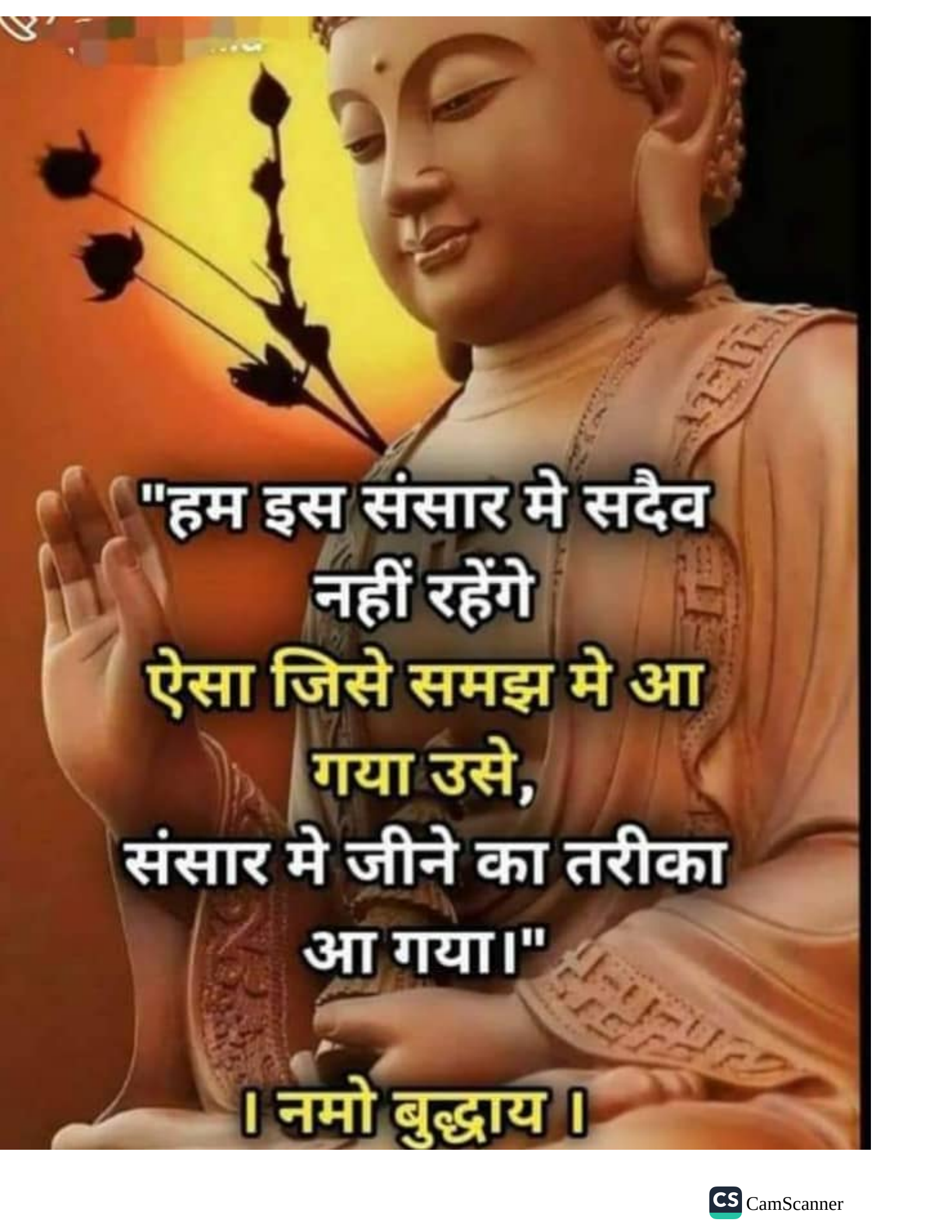
1974



संसार का अर्थ होता है - यह भी, यह भी, और संन्यास
का अर्थ होता है - नेति नेति। न यह न वह।

छोड़ता जाता है भाव और धीरे-धीरे वही आ जाता है जहाँ
शाश्वत अमृत तुम्हारे भीतर बीज की तरह पड़ा है। जहाँ
विकास हुआ था। वापस अपने घर लौट आना ही मोक्ष है।
यह दशा ही मोक्ष है। इस दशा का नाम ही निर्वाण है।

- आचार्य रजनीश, अथातो भक्ति जिज्ञासा-३७

A close-up, warm-toned image of a Buddha statue. The Buddha has a peaceful expression, with eyes slightly closed and a gentle smile. The statue is shown from the chest up, wearing a robe with intricate patterns. In the background, a lotus flower is in bloom, its petals dark against a bright, glowing yellow and orange light that fills the upper left portion of the frame. The overall mood is calm and spiritual.

**"हम इस संसार मे सदैव
नहीं रहेंगे
ऐसा जिसे समझ मे आ
गया उसे,
संसार मे जीने का तरीका
आ गया।"**

। नमो बुद्धाय ।



To understand relationship is the most important thing in life; not god, not all these scriptures, but to understand the depth, the meaning, the beauty, the quality of relationship.



चाहए। पाग जार सायनाए सामान्य जन का वस्तु ह हा नहा। यह ता ऋषियों का पवित्र ज्ञान है। वही प्रकृति को मां की तरह पाल सकते हैं, निर्वाह कर सकते हैं और अपने आप में आत्मसात् कर सकते हैं।

विषोका सिद्धि के माध्यम से ऐसा संभव है। एक व्यक्ति इस सिद्धि के माध्यम से चाहे तो सैकड़ों रूप धारण कर सकता है और वे सभी रूप असली, सही और प्रामाणिक होते हैं। इन सबमें परस्पर किसी प्रकार का कोई अन्तर नहीं होता।

वे सभी रूप एक साथ ही बैठ सकते हैं और अलग-अलग स्थानों पर भी अलग-अलग कार्यों में संलग्न हो सकते हैं। इस सिद्धि के माध्यम से व्यक्ति चाहे तो हजारों रूप धारण कर सकता है। श्रीकृष्ण ने इसी सिद्धि के माध्यम से सैकड़ों रूप धारण किये थे और एक गोपी के साथ एक श्रीकृष्ण बने थे।

परकाया प्रवेश के समान ही दूसरी क्रिया है - बहुकायाधारण अर्थात् एक शरीर होने पर भी वैसे ही अनेक शरीर बना लेना।

भगवान् श्रीकृष्ण के सम्बन्ध में भागवत में लिखा है कि एक बार नारद जी को जब यह जिज्ञासा हुई कि सैकड़ों रानियों के साथ भगवान् कृष्ण कैसे रहते हैं, तब द्वारका में उन्होंने भगवान् श्रीकृष्ण की अनेक रानियों के भवनों में दौड़ दौड़कर जाकर देखा कि कहीं वे हवन कर रहे हैं, कहीं बालक खिला रहे हैं, कहीं चौसर खेल रहे हैं, कहाँ घुड़सवारी कर रहे हैं आदि। अर्थात् भगवान् कृष्ण ने अपनी योग-शक्ति से अपने इतने सहस्र रूप बना रखे थे कि वे सब रानियों के साथ अपने अलग अलग रूपों में निवास और व्यवहार करते थे।

इस प्रकार के बहुरूप निर्माण के अधिक प्रमाण नहीं प्राप्त होते किन्तु परकाया प्रवेश के अनेक उदाहरण मिल जाते हैं। ऐसे विवरण तो अनेक मिलते हैं जहाँ कोई मृत व्यक्ति अपने परिवार में जाकर जनम ले लेता है, किन्तु यह क्रिया परकाया प्रवेश की नहीं है। यह तो पुनर्जन्म के सिद्धान्त का पोषण करने वाली घटना है।

► !! सनातन धर्म की जय हो !! ► — at देवभूमि उत्तराखंड।



“Asked, Who is the rich man? Epictetus replied, He who is content.”

Epictetus



सज्जन और थे। वे मुझसे कुछ बातचीत करना चाहते होंगे। जैसे ही मैं बैठा, उन्होंने सिगरेट निकालकर मुझे दी। मैंने कहा, 'क्षमा करें, मैं नहीं लूंगा।' उन्होंने सिगरेट अंदर रख ली। फिर थोड़ी देर बाद उन्होंने पान निकाला और मुझसे कहा, 'लीजिए।' मैंने कहा, 'माफ करें। मैं नहीं लूंगा।' वे फिर पान रखकर बैठ गए। फिर उन्होंने अपना अखबार उठाया, बोले, 'इसको पढ़िएगा?' मैंने कहा, 'क्षमा करें, मैं नहीं पढ़ूंगा।' वे बोले, 'बड़ा मुश्किल है। हम आपको कुछ भी देते हैं, आप नहीं लेते हैं।' वे मुझसे बोले, 'हम आपको कुछ भी देते हैं, आप कुछ भी नहीं लेते।' मैंने कहा कि 'जो कुछ भी ले लेते हैं, वे नासमझ हैं। और आप जो दे रहे हैं, मैं कोशिश करूंगा कि आपसे भी छिन जाए। मैं तो उसे नहीं लूंगा, आपसे भी छिन जाए, यह कोशिश करूंगा।'

आप क्या करते हैं, अगर खाली बैठे हैं? अखबार उठाकर पढ़ने लगेंगे, क्योंकि खाली बैठे हैं! तो खाली बैठे रहना बेहतर है, बजाय कचरा इकट्ठा करने से। खाली बैठे रहना बुरा नहीं है। कुछ ऐसे पागल हैं, जो यह कहते हैं कि कुछ न कुछ करना न करने से अच्छा है। यह गलत है। कुछ भी गलत करने से न करना हमेशा बेहतर है। कुछ हैं, जो कहते हैं कि कुछ न कुछ करते रहना कुछ भी न करने से बेहतर है। मैं आपसे कहता हूं, कुछ भी न करना कुछ भी गलत-सलत करने से हमेशा बेहतर है। क्योंकि उस वक्त कम से कम आप कुछ खो तो नहीं रहे। उस वक्त कम से कम कुछ व्यर्थ तो इकट्ठा नहीं कर रहे हैं।

तो इसकी एक सजगता। विचार के आंतरिक संक्रमण में हम सजग हों, तो विचार को शुद्ध रखना कठिन नहीं है। अशुद्ध विचार को पहचान लेना कठिन नहीं है। वे विचार, जो आपके भीतर जाकर उत्तेजना पैदा करते हों, अशुद्ध हैं। वे विचार, जो आपके भीतर जाकर शांति के झरने पैदा करते हों, शुद्ध हैं। वे विचार, जो आपके भीतर जाकर आनंदोन्मुख करते हों, शुभ हैं। वे विचार, जो आपके भीतर जाकर किसी तरह की बेचैनी, चिंता, एंग्जाइटी पैदा करते हों, वे अशुभ हैं। तो उन विचारों से अपने को बचाएं। और अपने मन के सजग पहरेदार बनें, तो विचार-शुद्धि की तरफ संक्रमण होता है।



JK
Seeing, sentation,
image-thaught,
interval-time,
mind-desire,
Have it|



परमात्मा किसी को उसकी सहन करने की
शक्ति से ज्यादा नहीं तपाता..

**A Tribe Called Dhillon Podcast**

Sponsored ·

Hi Friends, here's a motivational quote to in... See more

*Karma is a
silent but
constant
observer
of all things
in our life.*



PODCAST

A Tribe Called Dhillon Podcast

15K

279 comments • 1.4K shares • 241K views



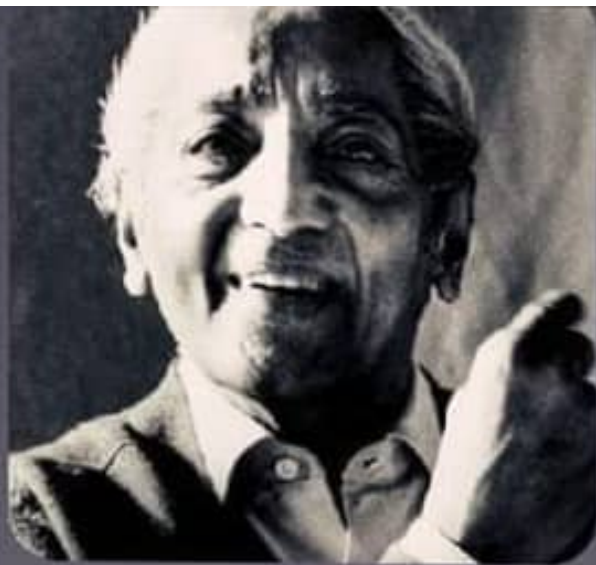
Like



Comment



Share



*I am a living thing, not a
dead thing, so each time
I observe and learn, it
must be new learning.
Otherwise, I bring in the
old, and it prevents me
from learning.*

Krishnamurti, Bangalore, 10 January

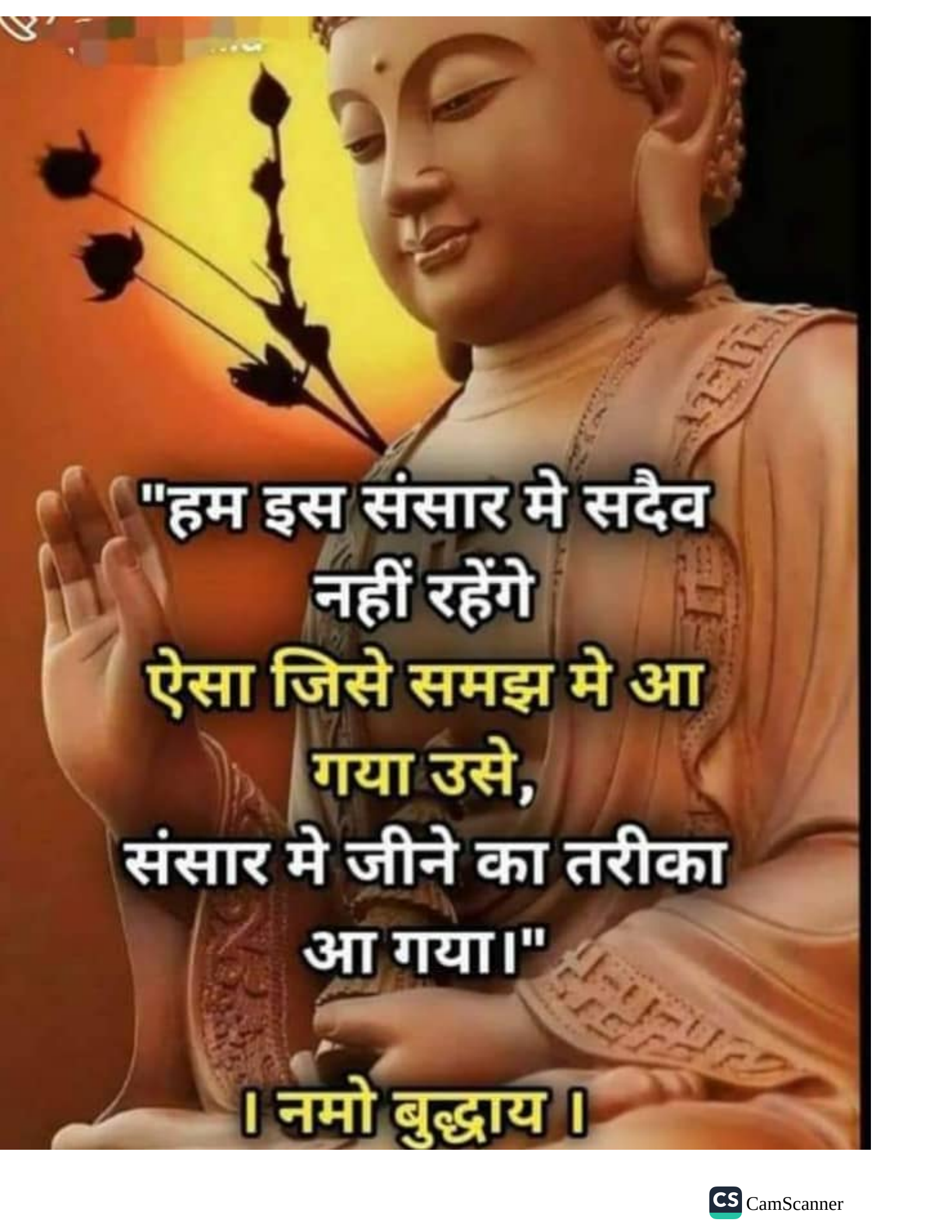
1974



संसार का अर्थ होता है - यह भी, यह भी, और संन्यास
का अर्थ होता है - नेति नेति। न यह न वह।

छोड़ता जाता है भाव और धीरे-धीरे वही आ जाता है जहाँ
शाश्वत अमृत तुम्हारे भीतर बीज की तरह पड़ा है। जहाँ
विकास हुआ था। वापस अपने घर लौट आना ही मोक्ष है।
यह दशा ही मोक्ष है। इस दशा का नाम ही निर्वाण है।

- आचार्य रजनीश, अथातो भक्ति जिज्ञासा-३७

A close-up, warm-toned image of a Buddha statue. The Buddha has a peaceful expression, with eyes slightly closed and a gentle smile. He is wearing a robe with intricate patterns. In the background, a lotus flower is in bloom, and the overall lighting is soft and golden, suggesting a sunset or sunrise.

**"हम इस संसार मे सदैव
नहीं रहेंगे
ऐसा जिसे समझ मे आ
गया उसे,
संसार मे जीने का तरीका
आ गया।"**

। नमो बुद्धाय ।



To understand relationship is the most important thing in life; not god, not all these scriptures, but to understand the depth, the meaning, the beauty, the quality of relationship.

facebook



Like



Comment



Send



Share



Biblword

Sponsored ·



Are you struggling in life? Do you want to k... See more



biblword.learnnnn.com

Free course of 15 lessons

[Learn more](#)



2.6K

64 comments · 69 shares



Like



Comment

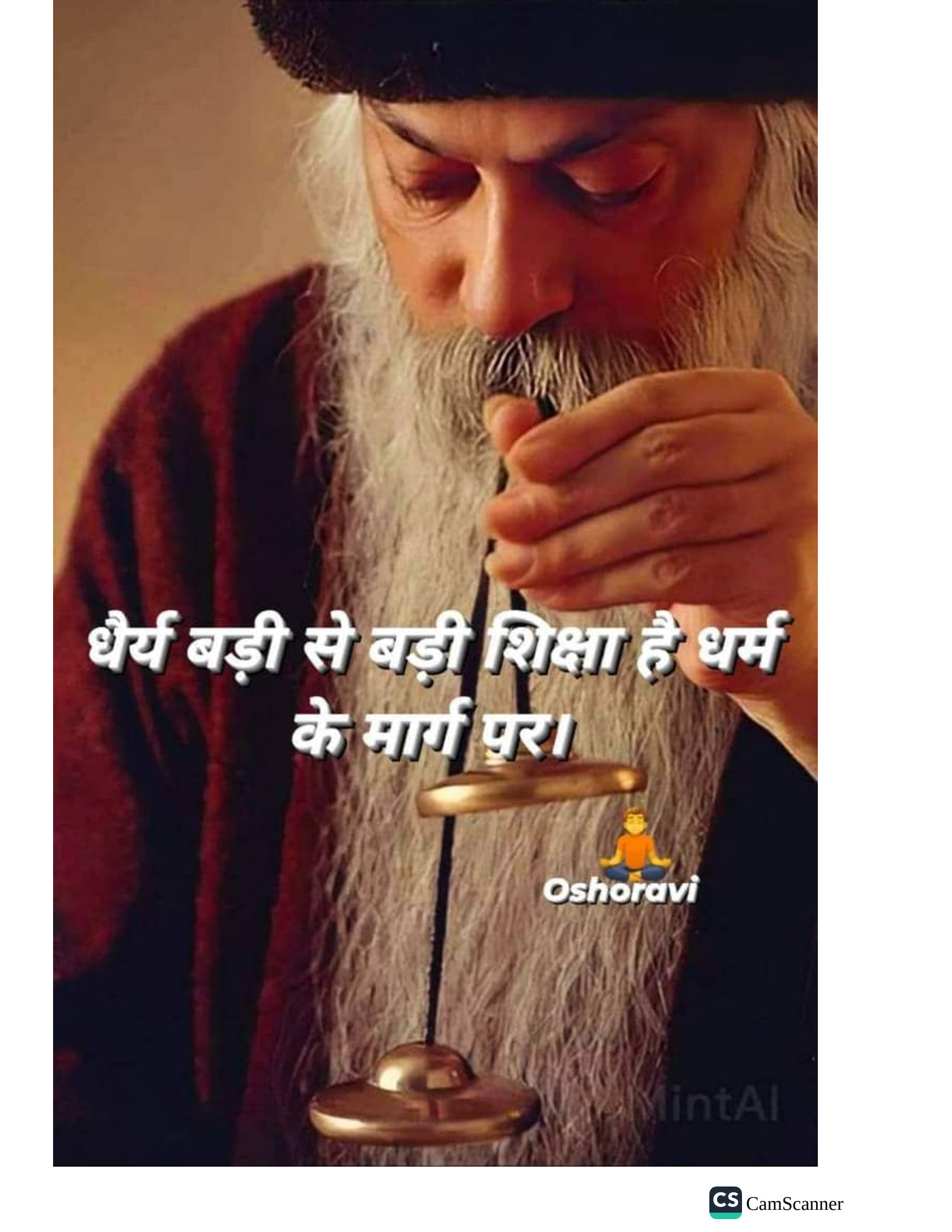


Share



Reels and short videos





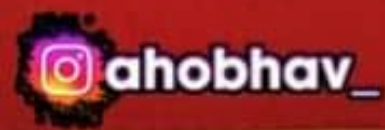
**धैर्य बड़ी से बड़ी शिक्षा है धर्म
के मार्ग पर।**


Oshoravi

MintAI

संसार दुख का सागर है।
ऐसा जिसे अनुभव होता है, वही
परमात्मा की तलाश में निकलता है।

ओशो अहोभाव
संतो मगन भया मन मेरा # 13





Acharya Rajesh Osho

स्त्रियाँ साधारण व्यक्ति के प्रेम में पड़ ही नहीं सकती, वह कुछ विशेष व्यक्तित्व खोजती हैं। तुम्हारे विशेष लक्षण ही, तुमको किसी स्त्री के प्रेम के योग्य बनाते हैं।

One has to be a light to oneself; this light is the law. There is no other law. All the other laws are made by thought and so fragmentary and contradictory. To be a light to oneself is not to follow the light of another, however reasonable, logic, historical, and however convincing. You cannot be a light to yourself if you are in the dark shadows of authority, of dogma, of conclusion.

Krishnamurti's Journal

11th Entry



← Reels ▾



53

बुद्ध ने ना प्रार्थना की बात की,
न पूजा की बात की , बुद्ध ने सीधा सा
सूत्र दिया - ध्यान



3



Buddha teaching

ध्यान का अर्थ है - नींद को तोड़ो

नींद को तोड़ो और जागो | buddha advice | quot... more

Give

सपने को तोड़ो और जागो।

Tabun Sutradhar · Aap Ki

India



Add a comment...





Osho on Enlightenment... See more



गौतम बुद्ध दार्शनिक नहीं हैं ।
मेटाफिजिक्स और परलोक के
प्रश्नों में उनकी जरा भी-जरा
भी-रुचि नहीं है । उनकी रुचि
है मनुष्य के मनोविज्ञान में ।
उनकी रुचि है मनुष्य के रोग
में और मनुष्य के उपचार में ।
बुद्ध ने जगत को एक उपचार
का शास्त्र दिया है । वे मनुष्य
जाति के पहले मनोवैज्ञानिक
हैं ।



34

3 shares • 391 views



Like



Comment



Send



Share



OceanX

Sponsored ·





तन के भूगोल से परे
एक स्त्री के
मन की गाँठें खोलकर
कभी पढ़ा है तुमने
उसके भीतर का खौलता इतिहास

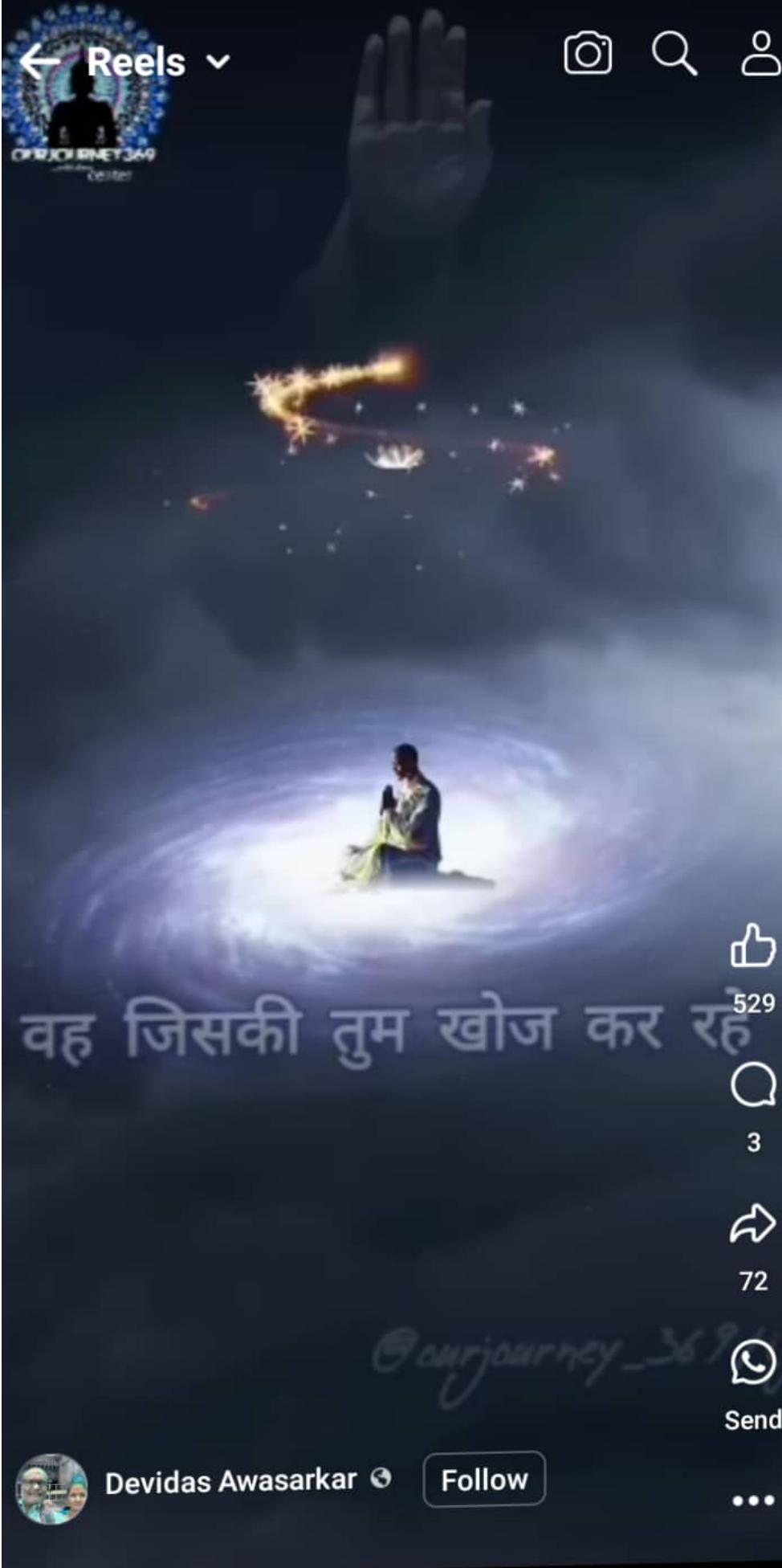
पढ़ा है कभी
उसकी चुप्पी की दहलीज़ पर बैठ
शब्दों की प्रतीक्षा में उसके चेहरे को ।

अगर नहीं
तो फिर जानते क्या हो तुम
रसोई और बिस्तर के गणित से परे
एक स्त्री के बारे में





← Reels ▾



वह जिसकी तुम खोज कर रहे



529



3



72



Send



Devidas Awasarkar

Follow



जो आदमी!
खाली रहने को
राजी है...
वह सम्राटों का भी
सम्राट है..!
~लाओ त्से



शरीर, मन, आत्मा, विचार

कर्म तीन तरह के होते हैं, संचित, प्रारब्ध और क्रियमण, परंतु प्रश्न ये उठता है कि कर्म करता कौन है। शरीर, मन, आत्मा या विचार।

Ved Dwivedi

क्या शरीर कर्म करता है, नहीं, क्योंकि शरीर कर्म के परिणाम को भोग सकता है, मतलब शरीर कर्म नहीं करता। तो क्या मन कर्म करता है, नहीं, क्योंकि मन के पास कर्म करने की शक्ति नहीं है, मन पश्चाताप करवा सकता है, पर कर्म नहीं। फिर क्या आत्मा कर्म करती है, नहीं, आत्मा भी कर्म नहीं कर सकती, आत्मा किए गए कर्म की साक्षी होती है, परंतु कर्म करना आत्मा के वश में नहीं है। तो क्या विचार कर्म करते हैं, उत्तर है, हां, विचार कर्म करते हैं, क्योंकि विचार के उत्पन्न होने से ही कर्म करने का भाव पैदा होता है। मृत्यु के बाद विचार उत्पन्न नहीं होते। कर्म का अर्थ सिर्फ अच्छे या सिर्फ बुरे से नहीं है अपितु दोनों से है।

धान

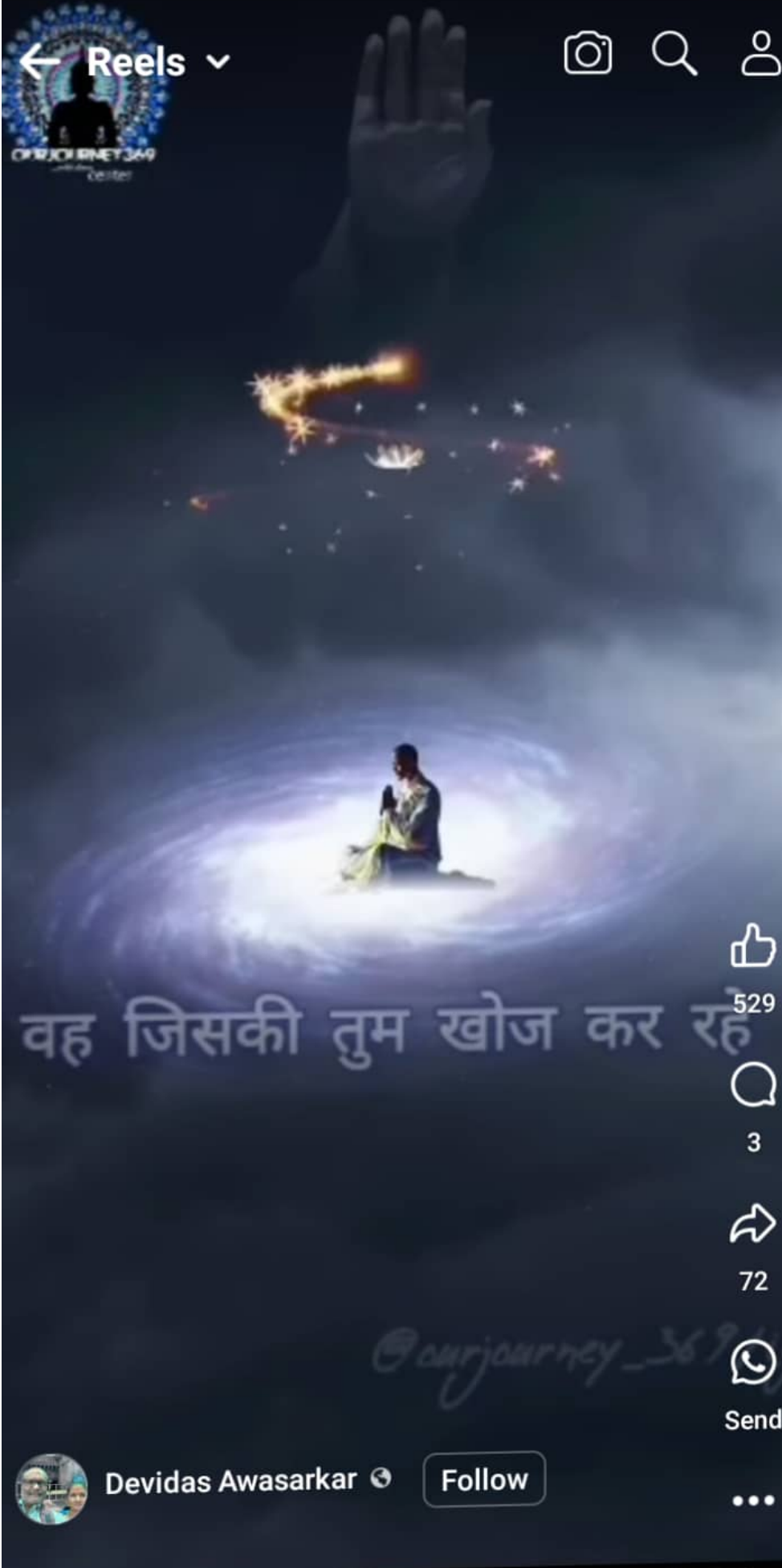


एक आदमी ने गुरु नानक से पूछा: मैं इतना गरीब क्यों हूँ? गुरु नानक ने कहा : तुम गरीब हो क्योंकि तुमने देना नहीं सीखा...आदमी ने कहा : परन्तु मेरे पास तो देने के लिए कुछ भी नहीं है । गुरु नानक ने कहा : तुम्हारा चेहरा, एक मुस्कान दे सकता है...तुम्हारा मुँह, किसी की प्रशंसा कर सकता है या दूसरों को सुकून पहुंचाने के लिए दो मीठे बोल बोल सकता है...तुम्हारे हाथ, किसी ज़रूरतमंद की सहायता कर सकते हैं...और तुम कहते हो तुम्हारे पास देने के लिए कुछ भी नहीं...।। आत्मा की गरीबी ही वास्तविक गरीबी है...पाने का हक उसी को है... जो देना जानता है ।

॥ Jai Guru ॥
Ravi prakash



← Reels ▾



वह जिसकी तुम खोज कर रहे



529



3



72



Send



Devidas Awasarkar

Follow



जो आदमी!
खाली रहने को
राजी है...
वह सम्राटों का भी
सम्राट है..!
~लाओ त्से



शरीर, मन, आत्मा, विचार

कर्म तीन तरह के होते हैं, संचित, प्रारब्ध और क्रियमण, परंतु प्रश्न ये उठता है कि कर्म करता कौन है। शरीर, मन, आत्मा या विचार।

Ved Dwivedi

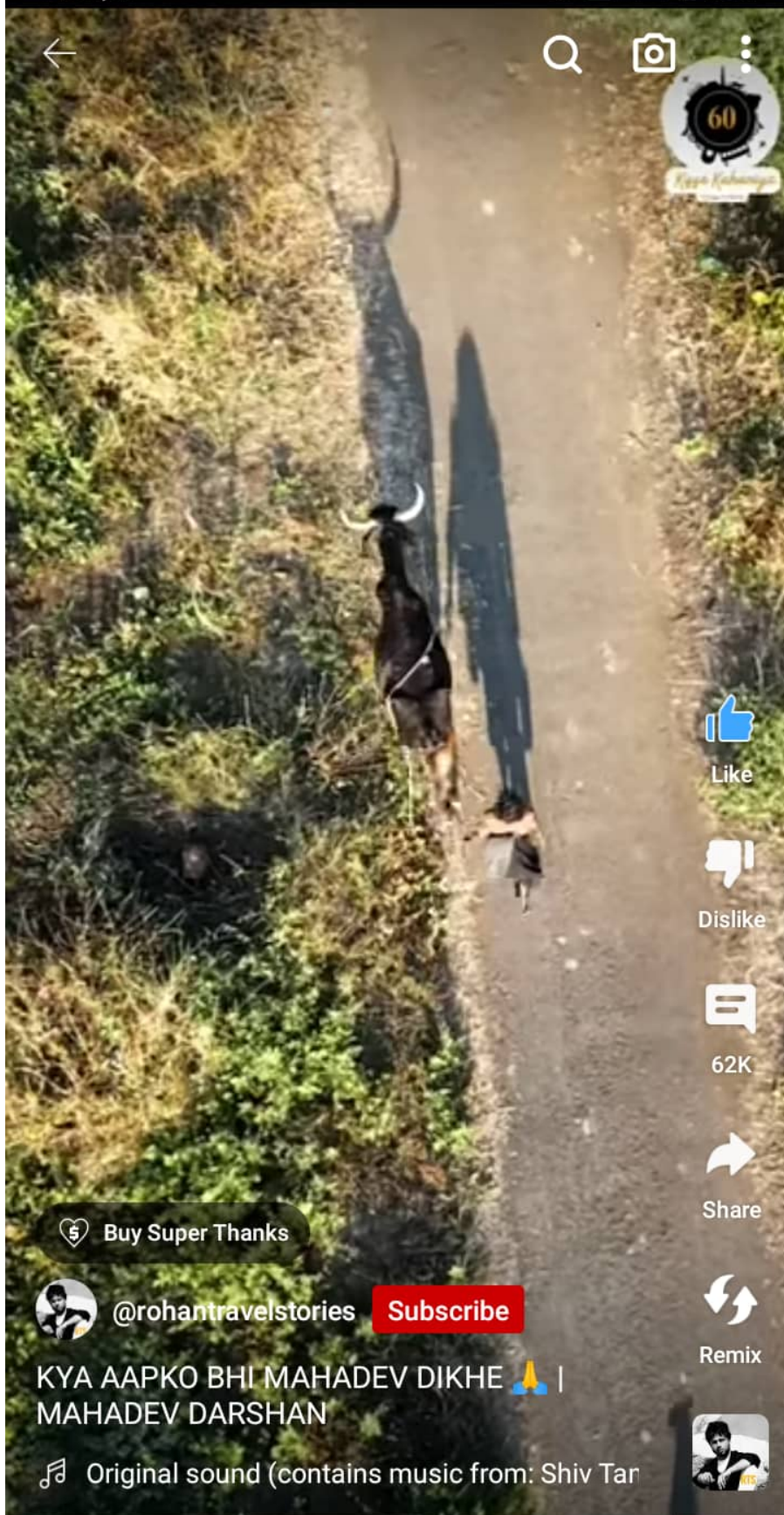
क्या शरीर कर्म करता है, नहीं, क्योंकि शरीर कर्म के परिणाम को भोग सकता है, मतलब शरीर कर्म नहीं करता। तो क्या मन कर्म करता है, नहीं, क्योंकि मन के पास कर्म करने की शक्ति नहीं है, मन पश्चाताप करवा सकता है, पर कर्म नहीं। फिर क्या आत्मा कर्म करती है, नहीं, आत्मा भी कर्म नहीं कर सकती, आत्मा किए गए कर्म की साक्षी होती है, परंतु कर्म करना आत्मा के वश में नहीं है। तो क्या विचार कर्म करते हैं, उत्तर है, हां, विचार कर्म करते हैं, क्योंकि विचार के उत्पन्न होने से ही कर्म करने का भाव पैदा होता है। मृत्यु के बाद विचार उत्पन्न नहीं होते। कर्म का अर्थ सिर्फ अच्छे या सिर्फ बुरे से नहीं है अपितु दोनों से है।

धान



एक आदमी ने गुरु नानक से पूछा: मैं इतना गरीब क्यों हूँ? गुरु नानक ने कहा : तुम गरीब हो क्योंकि तुमने देना नहीं सीखा...आदमी ने कहा : परन्तु मेरे पास तो देने के लिए कुछ भी नहीं है । गुरु नानक ने कहा : तुम्हारा चेहरा, एक मुस्कान दे सकता है...तुम्हारा मुँह, किसी की प्रशंसा कर सकता है या दूसरों को सुकून पहुंचाने के लिए दो मीठे बोल बोल सकता है...तुम्हारे हाथ, किसी ज़रूरतमंद की सहायता कर सकते हैं...और तुम कहते हो तुम्हारे पास देने के लिए कुछ भी नहीं...।। आत्मा की गरीबी ही वास्तविक गरीबी है...पाने का हक उसी को है... जो देना जानता है ।

॥ Jai Guru ॥
Ravi prakash



Home



Shorts



Subscriptions



You

FACULTY OF AGRICULTURE
UDAI PRATAP COLLEGE (AUTONOMOUS), VARANASI
MID-TERM EXAMINATION PROGRAMME
OF B.SC. (HONS.) AGRICULTURE ODD SEMESTER, 2023-24

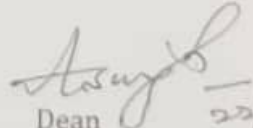
REVISED

Date: 22.11.2023

DATE	I - Semester TIME: 08.30am. -10.30am Room No- 43, 44, 45 & 46	III - Semester TIME: 11.00am. -01.00pm Room No- 43, 44 & 45	V - Semester TIME: 08.30am. -10.30am Room No- 21, 29 & 40
28.11.23	AGR - 112	AGE - 211	PPA - 311
29.11.23	GPB - 111	AHD - 211	AGE - 311
30.11.23	HOR - 111	ENT - 211	AGE - 312
01.12.23	ENG - 111	AGR - 211	HOR - 312
02.12.23	SAC - 111	HOR - 211	GPB - 311
04.12.23	AGR - 111	PPA - 211	AES - 311
05.12.23	AES - 111	EXE - 211	ENT - 311
06.12.23	EXE - 111	GPB - 211	AGR - 311
07.12.23	EXE - 112	AES - 211	SAC - 311
08.12.23	HOR - 112	SAC - 211	AHD - 311

Copy to

- (1) Principal/Controller of Exam, UP College, Varanasi
- (2) All the Head of Departments of Agriculture faculty.


Dean
(Faculty of Agriculture)



What is philosophy: Seeking to know what can be known.

Problems with philosophy: thinking new reasoning is superior to old reasoning. Many modern philosophers build upon the old philosophers, point out select defects, introduce new opinions in those areas and assume superiority. I don't know that any have ever been better than Marcus Aurelius or Descartes.

[See translation](#)

1h Like Reply



Ray T Ylaya

PHILOS'OPHY, n. [L. philosophia; Gr. love, to love, and wisdom.]

1. Literally, the love of wisdom. But in modern acceptance, philosophy is a general term denoting an explanation of the reasons of things; or an investigation of the causes of all phenomena both of mind and of matter. When applied to any particular department of knowledge, it denotes the collection of general laws or principles unde... [See more](#)

[See translation](#)

2h Like Reply



Fabrizio Obando

Google it

[See translation](#)

3h Like Reply



Elmer Gloria

Philosophy is. the light of truth. the

Write a comment...



100 comments ▼



Joseph A Sprute

philosophy "creates" ology. the study of, which is the basis for Institutional design. it lacks clear footing in terms "simplicity", which is a Natural Axiom

[See translation](#)

3h Like Reply

1 🤔



Sam Ruhman

Philosophy as it's own course of study seems like a glorified frame of reference. Different philosophies, like Stoicism or Nihilism or Existentialism, have their own strengths and weaknesses, making different ones better suited to different people. The same can be said for religion. There are different branches on that same general tree if that makes sense.

[See translation](#)

3h Like Reply



Elmer Gloria

That the world denies it yet solely builds itself upon it. That it's a degree rather than a test. That there is no King of philosophy. That if true philosophers are born they are Martyred for their over powered world script breaking eyes and voice and hands. The only problem philosophy have. Is that they are born in a world that does not follow the light of truth but rather their own biasness.

[See translation](#)

3h Like Reply

2 👍🤔

Write a comment...

ये तो सच है कि...
तुम्हे चाहने वाले बहुत होंगे...
पर मेरी भी ज़िद है कि...
मुझे सिर्फ तुम चाहो...!!



राधे कृष्णा



घटना--और क्रांति हो गई। मीरा मस्त रहने लगी, जैसे एक शराब मिल गई। दो वर्ष बाद पड़ोस में किसी का विवाह हुआ, और यह सात-आठ साल की लड़की ने पूछा अपनी मां को: सबका विवाह होता है, मेरा कब होगा? और मेरा वर कौन है?

और मां ने तो ऐसे ही मजाक में कहा, क्योंकि वह उस वक्त भी कृष्ण की मूर्ति को छाती से लगाए खड़ी थी--कि तेरा वर कौन है?--यह गिरधर गोपाल! यह गिरधरलाल! यही तेरे वर हैं! और क्या चाहिए? यह तो मजाक में ही कहा था! मां को क्या पता था कि कभी-कभी मजाक में कही गई बात भी क्रांति हो जा सकती है। और क्रांति हो गई।

और कभी-कभी कितनी ही गंभीरता से तुमसे कहा जाए, कुछ भी नहीं होता, क्योंकि तुम्हारे भीतर कुछ छूता ही नहीं। हो तो छुए। बीज को पत्थर पर फेंक दोगे तो अंकुरित नहीं होता; ठीक भूमि मिल जाए तो अंकुरित हो जाता है। वह ठीक भूमि थी। मां को भी पता नहीं था; सोचती थी कि बच्चे का खेलवाड़ है; कृष्ण एक खिलौना हैं। मिल गए हैं इसको। सुंदर मूर्ति है, माना। तो नाचती-गुनगुनाती रहती है--ठीक है--अपने उलझी रहती है; कुछ हर्जा भी नहीं है। मजाक में ही कहा था कि तेरे तो और कौन पति! ये गिरधर गोपाल हैं! ये नंदलाल हैं!

मगर उसका मन उसी दिन भर गया। यह बात हो गई। कभी-कभी संयोग प्रारम्भ बन जाते हैं--महाप्रस्थान के पथ पर। उसने तो मान ही लिया। वह छोटा सा भोला-भाला मन! उसने मान लिया कि यही उसके पति हैं। फिर क्षण भर को भी यह बात डगमगाई नहीं। फिर क्षण भर को भी यह बात भूली नहीं।

असल में बचपन में अगर कोई भाव बैठ जाए तो बड़ा दूरगामी होता है। यह बात बैठ गई। उस दिन से उसने अपना सारा प्रेम, कृष्ण पर उंडेल दिया। जितना तुम प्रेम उंडेलोगे, उतने ही कृष्ण जीवित होते चले गए। पहले अकेली बात करती थी, फिर कृष्ण भी बात करने लगे। पहले अकेली डोलती थी, फिर कृष्ण भी डोलने लगे। यह नाता भक्त का और मूर्ति का न रहा; भक्त और भगवान का हो गया।

ओशो, पद घूंघरू बांध

Superb Saakhi

एक आदमी किसी गाँव की श्मशान भूमि के पास से गुजर रहा था जहाँ पत्थरों पर मरने वाले की उम्र लिखी हुई देखी 5 वर्ष, 8 वर्ष, 10 वर्ष और 20 वर्ष। उस आदमी ने सोचा कि इस गाँव में सभी की मृत्यु अल्प आयु में ही हो जाती है। पूछने पर गाँव वाले कहने लगे कि हमारे गाँव में रिवाज़ है कि आदमी सारा दिन काम काज करके, फिर भगवान का भजन कीर्तन, जीव की सेवा करके, रात को भोजन करने के बाद, जब वह सोने जाता है, तब वो अपनी डायरी के अंदर यह बात लिखता है कि आज कितना समय भगवान का सत्संग, भजन सुमिरन किया। जब उस आदमी की मृत्यु होती है, तब उसकी लिखी हुई डायरी लेकर उसके किये हुए भजन सिमरन के समय को जोड़ कर हम उसे महीने और साल बनाकर उसे पत्थरों पर लिख देते हैं क्योंकि इंसान की असली आयु तो वही है जो उसने भगवान के भजन सुमिरन में बिताई है, इंसान का बाकी जीवन तो दनियाँ में ही व्यर्थ चला गया

बुद्ध के सूत्र को समझें।

**‘वह काम शुभ नहीं,
जिसे करके पीछे मनुष्य को पछताना पड़े और
जिसके फल को आंसू बहाते
और विलाप करते हुए भोगना पड़े।’**

वह काम शुभ नहीं!

कसौटी ? .. जिसको करके पीछे पछताना पड़े।
तो जिन—जिन कर्मों को करके तुम पीछे पछताए हो, कृपा करो,
आगे अब उन्हें मत करो। यद्यपि तकलीफ यही है कि
पाप का पता पीछे से चलता है; जब हो जाता है तब पता चलता है;
पहले से पता नहीं चलता।

पहले से पता चलने का कोई कारण भी नहीं है।
कांटा जब चुभेगा तभी तो पीड़ा होगी। जब तक चुभे न, पीड़ा कैसे होगी?
हाथ जब आग में डालोगे तभी तो जलेगा;
हाथ डालोगे ही नहीं तो जलेगा कैसे?
माना, इसलिए थोड़े बहुत पाप करने की संभावना सभी के लिए है।
लेकिन उसी आग में बारबार हाथ डालने का
कोई कारण समझ में नहीं आता।
एक बार समझ में आता है, दो बार समझ में
आता है, तीन बार समझ में आता है।
एक बार कांटा चुभ जाता है; परिचय न था, पहचान न थी,
दूसरी बार चुभ जाता है, क्योंकि काटे का रंग—ढंग अलग था।
तीसरी बार चुभ जाता है। लेकिन कितनी बार?
रंग—ढंग अलग हो, कांटा तो कांटा है।
लेकिन

हम जीवन से सीखते ही नहीं।

आचार्य श्री रजनीश(Osho) एस धम्मो सनंतनो-(25)
पुण्यातीत ले जाए, वही साध—कर्म

facebook



माना,
इसलिए थोड़े—बहुत पाप करने की
संभावना सभी के लिए है।

लेकिन
उसी आग में
बार—बार हाथ डालने का कोई
कारण समझ में नहीं आता।

एक बार समझ में आता है,
दो बार समझ में आता है,
तीन बार समझ में आता है।
एक बार कांटा चुभ जाता है;
परिचय न था, पहचान न थी,
दूसरी बार चुभ जाता है,
क्योंकि काटे का रंग—ढंग अलग था।
तीसरी बार चुभ जाता है।

लेकिन
कितनी बार?
रंग—ढंग अलग हो,
कांटा तो कांटा है।

लेकिन
हम जीवन से सीखते ही नहीं।



आचार्य श्री रजनीश(Osho)
एस धम्मो सनंतनो-(25)
पुण्यातीत ले जाए, वही साध—कर्म

ACHADVA - CHDEE



बुद्ध के सूत्र को समझें।

‘वह काम शुभ नहीं,
जिसे करके पीछे मनुष्य को पछताना पड़े और
जिसके फल को आंसू बहाते
और विलाप करते हुए भोगना पड़े।’

वह काम शुभ नहीं!
कसौटी ?
—जिसको करके पीछे पछताना पड़े।

तो जिन—जिन कर्मों को
करके तुम पीछे पछताए हो,
कृपा करो,
आगे अब उन्हें मत करो।
यद्यपि तकलीफ यही है
कि पाप का पता पीछे से चलता है;
जब हो जाता है तब पता चलता है;
पहले से पता नहीं चलता।
पहले से पता चलने का कोई कारण भी नहीं है।
कांटा जब चुभेगा तभी तो पीड़ा होगी।
जब तक चुभे न, पीड़ा कैसे होगी?

हाथ जब आग में डालोगे तभी तो जलेगा;
हाथ डालोगे ही नहीं तो जलेगा कैसे?

माना,
इसलिए थोड़े—बहुत पाप करने की
संभावना सभी के लिए है।

लेकिन
उसी आग में
बार—बार हाथ डालने का कोई
कारण समझ में नहीं आता।



facebook



उठता कि जरा ज़र आग देख लू ? अब छह महान मस्त पड़ा रहता ह,
घर में कुछ काम भी नहीं है, फुरसत है । जरा जंगल में आगे देखकर
देखूँ यह खयाल में नहीं आता ?

उसने कहा कि मैं भी मंदभागी, मुझे यह खयाल ही न आया, मैं तो
समझा चांदी, बस आखिरी बात हो गई, अब और क्या होगा ? गरीब ने
सोना तो कभी देखा न था, सुना था । फकीर ने कहा, थोड़ा और आगे
सोने की खदान है । और ऐसे कहानी चलती है । फिर और आगे हीरों की
खदान है । और ऐसे कहानी चलती है । और एक दिन फकीर ने कहा
कि नासमझ, अब तू हीरों पर ही रुक गया ? अब तो उस लकड़हारे को
भी बड़ी अकड़ आ गई, बड़ा धनी भी हो गया था, महल खड़े कर लिए थे
। उसने कहा अब छोड़ो, अब तुम मुझे परेशान न करो । अब हीरों के
आगे क्या हो सकता है ?

उस फकीर ने कहा, हीरों के आगे मैं हूँ । तुझे यह कभी खयाल नहीं
आया कि यह आदमी मस्त यहां बैठा है, जिसे पता है हीरों की खदान
का, इसको जरूर कुछ और आगे मिल गया होगा ! हीरों से भी आगे
इसके पास कुछ होगा, तुझे कभी यह सवाल नहीं उठा ?

वह आदमी रोने लगा । फकीर के चरणों में सिर पटक दिया । कहा कि मैं
कैसा मूढ़ हूँ, मुझे यह सवाल ही नहीं आता । तुम जब बताते हो, तब
मुझे याद आता है । यह खयाल तो मेरे जन्मों-जन्मों में नहीं आ सकता
था । कि तुम्हारे पास हीरों से भी बड़ा कोई धन है । फकीर ने कहा : उसी
धन का नाम ध्यान है । अब खूब तेरे पास धन है, अब धन की कोई
जरूरत नहीं । अब जरा अपने भीतर की खदान खोद, जो सबसे आगे है
।

यही मैं तुमसे कहता हूँ : और आगे, और आगे । चलते ही जाना है । उस
समय तक मत रुकना जब तक कि सारे अनुभव शांत न हो जाएं ।
परमात्मा का अनुभव भी जब तक होता रहे, समझना दुई मौजूद है, द्वैत
मौजूद है, देखनेवाला और दृश्य मौजूद है । जब वह अनुभव भी चला
जाता है तब निर्विकल्प समाधि । तब सिर्फ दृश्य नहीं बचा, न द्रष्टा बचा,
कोई भी नहीं बचा । एक सन्नाटा है, एक शून्य है । और उस शून्य में
जलता है बोध का दीया । वही परम है । वही परम-दशा है, वही समाधि
ॐ .



Osho Moga 3h



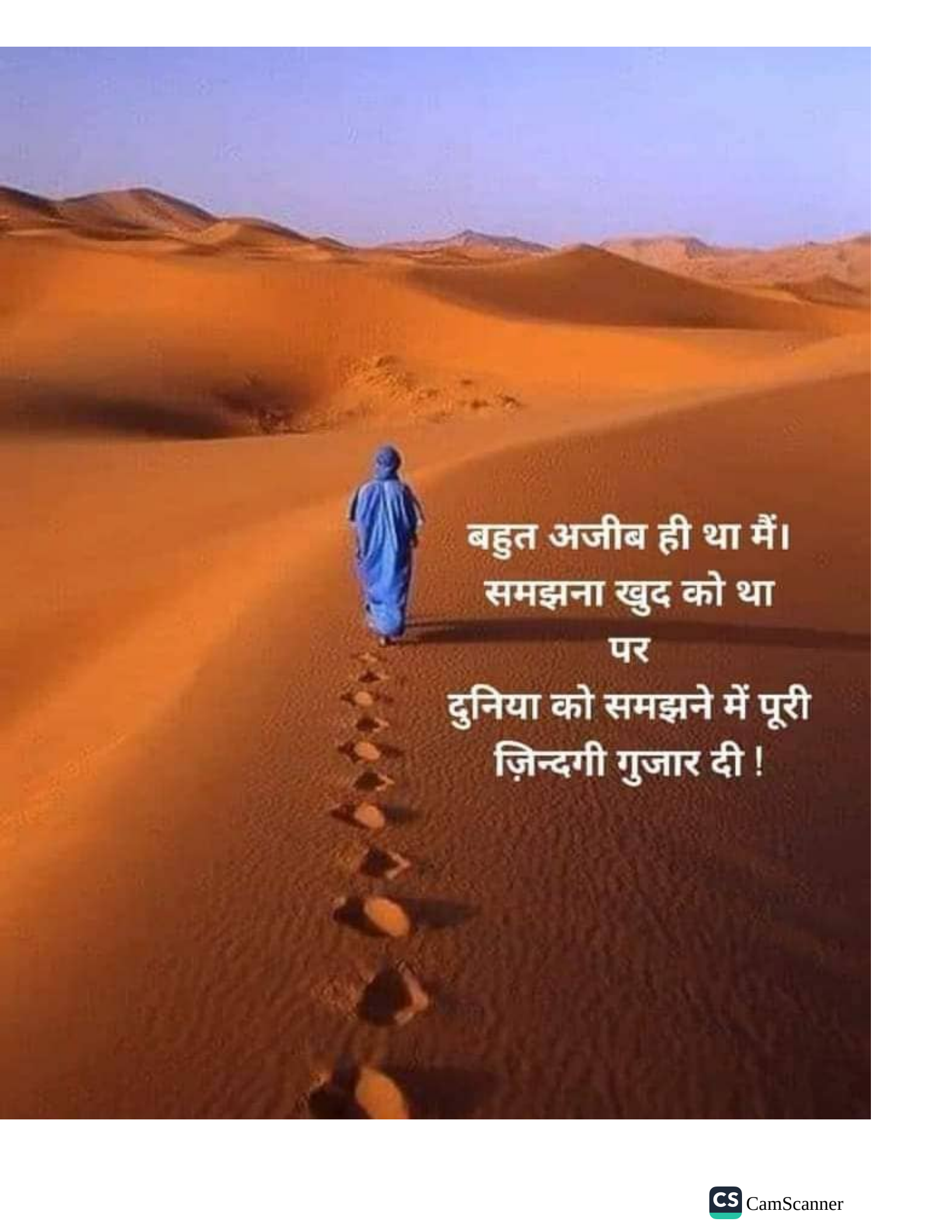
ओशो

प्रेम और मृत्यु मे ये समानता है
न ये उम्र देखती ,न ये समय देखती
और न ये जगह देखती



Comment

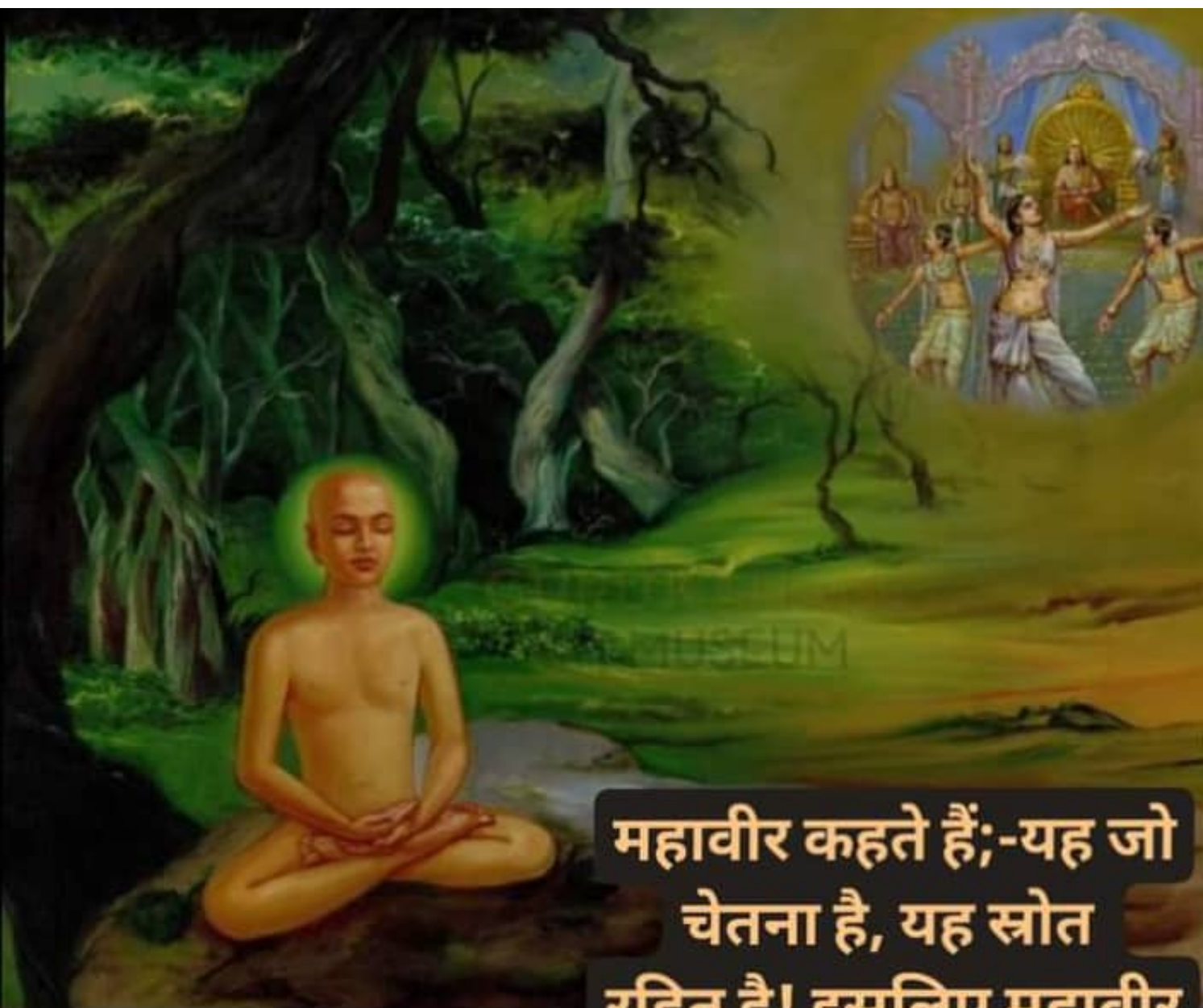




बहुत अजीब ही था मैं।
समझना खुद को था
पर
दुनिया को समझने में पूरी
ज़िन्दगी गुजार दी !



जब किसी की संगत से आपके विचार
शुद्ध होने लगे तो समझना वो कोई
साधारण व्यक्ति नहीं है..



ओशो

महावीर कहते हैं;-यह जो
चेतना है, यह स्रोत
रहित है! इसलिए महावीर
ने ईश्वर को.. मानने से
इनकार कर दिया,
क्योंकि.! अगर ईश्वर को
मानें.? तो ईश्वर.. स्रोत हो
जाता है.!!

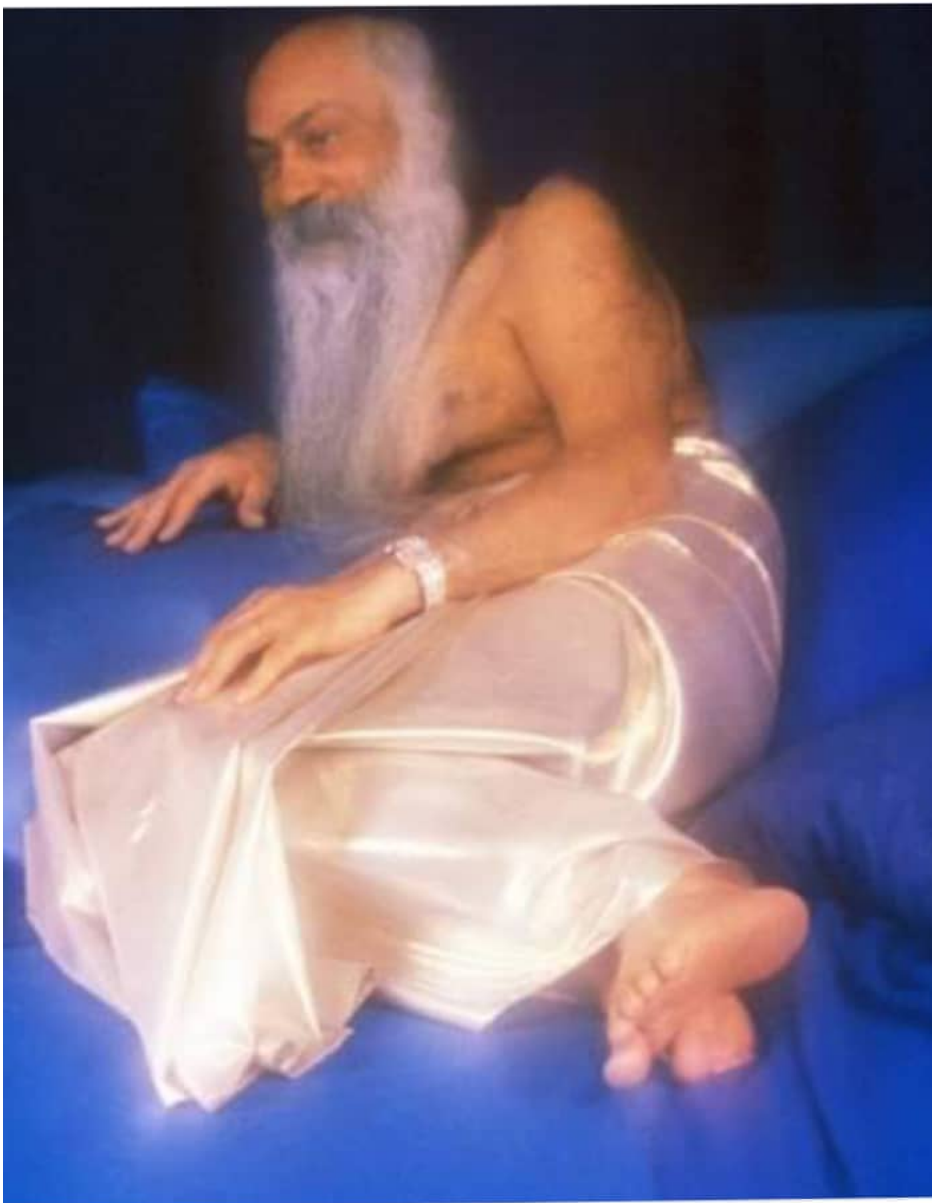


कहना!

जो आदमी भागेगा, उसको तो कहीं भी कारण परेशान होने के मिलते रहेंगे। उसे तुम स्वर्ग में भी बिठा दो तो भी वह कुछ भूल चूके निकाल लेगा। निकाल ही लेगा! अभी भीतर के बीज मौजूद हैं।
तो जरूर पहाड़ पर, जंगल में एक तरह की शांति होगी—वह पहाड़ की शांति है। उसे तुम अपनी न समझ लेना। तुम्हारा उससे क्या लेना देना

ओशो !!

मेरा स्वर्णिम भारत--(प्रवचन--30)



74

5 comments • 6 shares



चिनगारी मातर मौजूद है ता फिर सार जगल में जाग लग जाएगा—फिर—
—फिर.....!

क्योंकि एक चिनगारी काफी है। संसार में तो ईंधन उपलब्ध होता है।
मगर ईंधन भी उसको जलाएगा जिसके भीतर चिनगारी हो। नहीं तो
ईंधन पड़ा रहेगा।

किसी ने तुम्हें गाली दी, तुमने सुन ली, पड़ी रही। तुम्हारे भीतर कुछ भी
न होगा। हा, अगर तुम्हारे भीतर अहंकार है तो कुछ होगा। अहंकार
चिनगारी है। अहंकार का अर्थ है: तुम्हारे भीतर कोई घाव है जिस पर
गाली चोट कर देती है।

पतंजलि ने दो तरह की समाधियां कहीं,
सबीज समाधि और निर्बीज समाधि।

वह भेद बहुत गहरा है। वह भेद बहुत विचारणीय है।

असल में सबीज समाधि को समाधि कहना नहीं चाहिए। बस समाधि
जैसी मालूम होती है; समाधि का धोखा है। सबीज समाधि का अर्थ है :
अहंकार तो भीतर है, लेकिन बीज की तरह है। और बीज की तरह है,
इसलिए दिखायी नहीं पड़ता। अंकुरण हो, पत्ते निकलें, शाखाएं ऊंगें,
फल लगें, फूल लगें, तो दिखाई पड़ेगा। अभी अदृश्य है। अगर तुम बीज
को काटोगे भी तो बीज के भीतर न तो फूल मिलेंगे, न रंग मिलेंगे, न पत्ते
मिलेंगे—कुछ भी न मिलेगा। बीज को तो अवसर चाहिए।

संसार में अवसर है।

हिमालय की गुफा में अवसर नहीं है, बस इतना ही फर्क है। और अगर
तुम मुझसे पूछो, तो जहां अवसर है वहीं रहना उचित है, क्योंकि वहीं
निर्बीज समाधि फलित हो सकती है। हिमालय की गुफा में जो समाधि
फलित होगी, वह सबीज समाधि होगी। ऊपर से सब शांत हो जाएगा
मगर भीतर तो सारी सम्भावना मौजूद है अशांत होने की। भीतर तो
मवाद भरी है, फोड़ा पक रहा है। ही, कोई चोट नहीं पड़ रही, इसलिए
पीड़ा नहीं हो रही है। लेकिन जब भी चोट पड़ेगी..... और चोट कभी—
न—कभी पड़ेगी; और किस बात से चोट पड़ जाए, बड़ा मुश्किल है
कहना!

जो आदमी भागेगा, उसको तो कहीं भी कारण परेशान होने के मिलते
रहेंगे। उसे तुम स्वर्ग में भी बिठा दो तो भी वह कुछ भूल चूके निकाल
लेगा। निकाल ही लेगा! अभी भीतर के बीज मौजूद हैं।



कामी सोचता है कि स्त्री के कारण काम वासना है। यह गणित को शीर्षासन करवाना है। कामवासना के कारण स्त्री में रस है। और वासना तुम्हारे भीतर है, स्त्री बाहर है। लोभ तुम्हारे भीतर है, धन बाहर है। क्रोध तुम्हारे भीतर है, अपमान, गाली गलौज बाहर है। लेकिन हम तो बाहर ही देखते हैं, भीतर तो देखते नहीं।

इससे स्वभावतः जिन्होंने उथला उथला जीवन को समझना चाहा है, वे संसार से भागने लगे। उन्होंने देखा कि संसार में उपद्रव है। लेकिन तुम जहां भी जाओगे भागकर सिर्फ परिस्थिति से बचोगे, बीज कहां जाएंगे ???

बीज तो जन्मों जन्मों तक पीछा करेंगे। इस जन्म में छिप रहोगे गुफा में हिमालय की, फिर अगले जन्म में फिर परिस्थिति उपलब्ध होगी, फिर मौसम आएगा, फिर वसन्त आएगा, फिर बीज फूटेंगे, फिर फूल लगेंगे।

ऐसे भगोड़ेपन से कोई संन्यास नहीं हो सकता है। संन्यास हो ही सकता है केवल संसार में, क्योंकि संसार परीक्षा है।

धन हो और लोभ न हो तब संन्यास।

सुन्दर से सुन्दर स्त्रियां हों, पुरुष हों और वासना न जगे, तब संन्यास।
पद पर बैठने की सुविधा हो, सम्भावना हो, लेकिन भीतर पद पर बैठने
की कोई आकांक्षा न हो, तब संन्यास।

संन्यास तो बाजार में ही परीक्षित होगा, वहीं कसौटी है। यह जो भगोड़ा संन्यासी है, यह तो ऐसा सोना है जो कसौटियों से भाग गया। कसौटियों से भाग गए तो असली होओ कि नकली, क्या पता चलेगा ???

सच्चे हो कि खीटे, कैसे जानोगे ???

संसार में सारा उपाय है, प्रतिपल मौके हैं। अगर तुम्हारी आग बुझ ही गयी हो भीतर से तो ही शांति रहेगी, सन्नाटा रहेगा। अगर जरा सी भी चिनगारी भीतर मौजूद है तो फिर सारे जंगल में आग लग जाएगी—फिर—फिर.....!

क्योंकि एक चिनगारी काफी है। संसार में तो ईंधन उपलब्ध होता है। मगर ईंधन भी उसको जलाएगा जिसके भीतर चिनगारी हो। नहीं तो ईंधन पड़ा रहेगा।



॥ वासना, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष की पकड़ का बीज तो मन के भीतर है, संसार तो केवल उन बीजों को अंकुरित होने का अवसर मात्र है। जैसे कामी सोचता है कि स्त्री के कारण काम-वासना है, लेकिन सत्य तो कुछ और ही है काम-वासना है मन के भीतर इसलिए स्त्री में रस है॥

कमत्यागान्न संन्यासौ न प्रैषोच्चारणेनतु।
संधौ जीवात्मनौरैक्यं संन्यासः परिकीर्तितः॥

कर्मों को छोड़ देना कुछ संन्यास नहीं है। इसी प्रकार मैं संन्यासी हूँ, ऐसा कह देने से भी कोई संन्यासी नहीं होता है। समाधि में जीव और परमात्मा की एकता का भाव होना ही संन्यास कहलाता है।

विश्लेषण :---

कर्मत्यागान्न संन्यासौ न.....

संन्यास सदियों से कर्म का त्याग ही समझा जाता रहा है। और कर्म का त्याग मन का त्याग नहीं है। कर्म के त्याग से एक भ्रांति भर पैदा होती है — भ्रांति गहरी और खतरनाक।

जैसे कोई गाली न दे, अपमान न करे, तो स्वभावतः क्रोध न उठेगा। इसका यह अर्थ नहीं है कि तुम्हारे भीतर क्रोध की समाप्ति हो गयी। जब भी कोई गाली देगा और अपमान करेगा, सदियों—सदियों भी क्रोध सोया रहा हो, पुनः फन उठाकर खड़ा हो जाएगा। सिर्फ अनुकूल परिस्थिति नहीं मिल रही थी। यूँ जैसे बीज तो हों, वर्षा न हो, तो खेत में पड़े रह जाएं। लेकिन जब वर्षा होगी तब बीज अंकुरित हो जाएंगे।

बीज तो मन में है संसार के। संसार तो केवल उन मन के बीजों को अंकुरित होने का अवसर है, परिस्थिति है। लेकिन मनुष्य बहिर्मुखी है। वह हमेशा बाहर देखता है। वह सोचता है यह संसार है जो मुझे उलझाए है। संसार किसी को नहीं उलझाए है। उलझाए है तुम्हारा मन। लेकिन मन को तो तुम तब देखो जब भीतर मुड़ो। बाहर ही देखते हो तो लोभी सोचता है धन के कारण लोभ है। असलियत उलटी है। लोभ के कारण धन है। धन की दौड़ है, धन की अभीप्सा है, धन की वासना है। लोभ जड़ है।



ओशो

अहिंसा

कोई दूसरा आपको
नहीं जगा सकता,
सिर्फ आप खुद ही
अपने को जगा
सकते हो।

मनुष्य विराट रहस्य का हिस्सा है

जैसे मछली को कोई पता नहीं चलता कि सागर है
और मछली सागर में रहती है, फिर भी सागर का
क्या रहस्य जानती है! वैसे ही अवस्था मनुष्य की है.

**आध्यात्मिक मार्ग Aadhyaatmik Marg**

Parshotam Rai · 6h · 🌐

एक बार की बात है, विवेकानंद जी अपने गुरु रामकृष्ण परमहंस जी के पास गए और उन्होंने उनसे सवाल किया कि मुझे ईश्वर कितने समय में मिलेगा।

तो रामकृष्ण परमहंस जी ने कहा की, तुम्हें ईश्वर सिर्फ तीन मिनट में मिल सकता है ।

विवेकानंद जी ने आश्चर्य से पुछा की जिसकों पाने के लिए सालों लग जाते हैं बहुत तप और त्याग करना पड़ता है । वो भला मात्र तीन मिनटों में कैसे मिल सकता है ।

तो रामकृष्ण परमहंस जी ने कहा की , यदि मछली को पानी में से बाहर निकाल दिया जाए तो वह पानी को पाने के लिए जिस प्रकार से तड़पती है ।

बस उसी प्रकार से जिस दिन तुम्हारे अंदर वो मछली की तरह तड़प याने ईश्वर को पाने की तड़प पैदा हो जायेगी उस दिन तुम्हें ईश्वर तीन मिनट में मिल जायेगा ।

अपने अंदर ही सब कुछ है उसके लिए जंगलों में भटकने की या मारे-मारे फिरने की जरूरत नहीं है बस अपने अंदर ईश्वर के लिए वो जुनून पैदा कर लो । हरपल उसको याद करते-करते नेक काम करते रहो । जिस दिन तुम्हारे अंदर वो लगन या तड़प पैदा हो जाएगी उस दिन अगले ही पल तुम ईश्वर को पा लोगे ओर उसमें समाकर आनन्द के सागर में डूब जाओगे याने परम शांति को पा लोगे ।।



18

7 comments · 1 share



Like



Comment



Send



Share

**Braj Bhushan Rai**

To live in the eternal present there must be death to the past, to memory. In this death there is timeless renewal.

Only a mind that is totally free knows the beauty of life. That mind is not bound by any boundary and the life is one of extraordinary peace and beauty.

Jiddu Krishnamurti

Talk 7, Saanen, 24 July 1966





तक जरा आग खाया गया।

और फिर इसका अंत कहां होगा? अगर तुम कहो कि हां, परमात्मा को फिर और किसी बड़े परमात्मा ने बनाया, और उसको फिर किसी और बड़े परमात्मा ने बनाया, तो इसका अंत कहां होगा? यह तो अंतहीन शृंखला हो जाएगी, व्यर्थ शृंखला हो जाएगी। नहीं, ऐसे प्रमाणों से कुछ सिद्ध नहीं होता। ऐसे प्रमाणों से सिर्फ प्रमाण देने वालों की नासमझी, बुद्धिहीनता, असंवेदनशीलता सिद्ध होती है और कुछ भी सिद्ध नहीं होता। परमात्मा सिद्ध नहीं होता, सिर्फ प्रमाण देने वालों का बुद्धूपन सिद्ध होता है।

बुद्ध परमात्मा का प्रमाण नहीं देते। बुद्ध परमात्मा का प्रमाण बनते हैं।

भेद को समझ लेना। बुद्ध प्रमाण बनते हैं परमात्मा का, बुद्ध प्रमाण होते हैं परमात्मा का। मैं तुमसे कहूंगा, तुम भी प्रमाण बनो। तुम भी प्रमाण बन सकते हो, क्योंकि तुम्हारे भीतर भी बुद्धत्व छिपा पड़ा है। झरने को तोड़ने की जरूरत है। जरा चट्टान हटाओ विचारों की और फूटने दो भाव का झरना! नाचो, गाओ जीवन के उत्सव को अनुभव करो! और तुम्हें पता चल जाएगा कि परमात्मा है। जिस दिन तुम जानोगे कि जीवन एक रास है; एक महोत्सव है, राग से, रंग से भरा; एक इंद्रधनुष है, सतरंगा; एक संगीत है, अदभुत स्वरों से पूर्ण, उस दिन परमात्मा का प्रमाण मिल गया। हालांकि तुम वह प्रमाण किसी और को भी न दे सकोगे। गूंगे का गुड़ हो जाता है वह अनुभव।

मगर धन्य हैं वे, जिन्हें कुछ ऐसा अनुभव मिल जाता है जिसे वह कह नहीं पाते। इस जगत में सर्वाधिक धन्य वे ही हैं, जिन्हें गूंगे का गुड़ मिल जाता है।

सपना यह संसार

ओशो५५



गलत प्रश्न न पूछो! पूछो कि क्या मैं हूँ? पूछो कि कैसे मैं जानूँ कि मैं कौन हूँ? परमात्मा को छोड़ो! परमात्मा से लेना देना क्या है? पहले पानी की बूंद तो पहचान लो, फिर सागर को पहचान लेना। अभी बूंद से भी पहचान नहीं और सागर के संबंध में प्रश्न उठाए। वे प्रश्न व्यर्थ हैं। उनके उत्तर सिर्फ नासमझ देने वाले मिलेंगे। हां, किताबों में इस तरह के प्रमाण दिए हुए हैं, बड़े बड़े प्रमाण दिए हुए हैं, बड़े पंडित, शास्त्री प्रमाण देते हैं ईश्वर के होने का। और उनके प्रमाण सब बचकाने, दो कौड़ी के! क्योंकि प्रमाण कोई दिया ही नहीं जा सकता।

क्या प्रमाण हैं उनके?

इस तरह के प्रमाण कि जैसे कुम्हार घड़ा बनाता है। बिना कुम्हार के घड़ा कैसे बनेगा? इसी तरह परमात्मा ने जगत को बनाया, वह कुम्भकार है कुम्हार है।...कर दिया शूद्र उसको भी!...अब जरा कोई इन बुद्धिमानों से पूछे कि अगर घड़े को बनाने के लिए कुम्हार की जरूरत है, तो कुम्हार को बनाने के लिए भी तो किसी की जरूरत है! वह कहते हैं, हां, परमात्मा ने कुम्हार को बनाया। फिर तुम्हारी दलील का क्या होगा? परमात्मा ने संसार बनाया, फिर परमात्मा को किसने बनाया?

यही तो बुद्ध ने पूछा, महावीर ने पूछा और पंडितों की बोलती बंद हो गई। पंडित तो नाराज हो गए। इसको वह अतिप्रश्न कहते हैं। तुम पूछे कि संसार किसने बनाया, तो सम्यक प्रश्न। और कोई पूछे कि भई, जब बिना बनाए कोई चीज बनती ही नहीं, तो परमात्मा को किसने बनाया? तो अतिप्रश्न। तो जबान काट ली जाएगी। यह न्याय हुआ? तुम्हारा ही तर्क जरा आगे खींचा गया।

और फिर इसका अंत कहां होगा? अगर तुम कहो कि हां, परमात्मा को फिर और किसी बड़े परमात्मा ने बनाया, और उसको फिर किसी और बड़े परमात्मा ने बनाया, तो इसका अंत कहां होगा? यह तो अंतहीन शृंखला हो जाएगी, व्यर्थ शृंखला हो जाएगी। नहीं, ऐसे प्रमाणों से कुछ सिद्ध नहीं होता। ऐसे प्रमाणों से सिर्फ प्रमाण देने वालों की नासमझी, बुद्धिहीनता, असंवेदनशीलता सिद्ध होती है और कुछ भी सिद्ध नहीं होता। परमात्मा सिद्ध नहीं होता, सिर्फ प्रमाण देने वालों का बुद्धूपन



*भगवान 🌸🌸, क्या परमात्मा का अस्तित्व सिद्ध किया जा सकता है?

*

मुल्ला नसरुद्दीन नदी के किनारे गया था तैरना सीखने। जो उस्ताद उसे तैरना सिखाने को थे, वह तो एकदम चौंके, क्योंकि मुल्ला जैसे ही तट पर गया नदी के, पत्थर पर पैर फिसल गया कोई जमी होगी भड़ाम से गिरा, एक पैर तो पानी में भी पड़ गया, कपड़े भी भींग गए, एकदम उठा और घर की तरफ भागा। उस्ताद ने कहा कि बड़े मियां, कहां जाते हो? मुल्ला ने कहा कि अब जब तक तैरना न सीख लूं, नदी के पास पैर न रखूंगा। यह तो खतरनाक धंधा है! यह तो उसकी दुआ कहो, यह तो उसकी कृपा कहो। अगर जरा और फिसलकर अंदर चला गया होता, तो उस्ताद, तुम तो खड़े थे बाहर, तुम तो देखते ही रहे, हम काम से गए थे! अब तो तैरना सीख लूंगा, तभी पानी के पास फटकूंगा।

अगर अब तैरना कहां सीखोगे? कोई गद्देतकिए बिछा कर तैरना सीखा जाता है। और गद्देतकिए बिछाकर तुम कितना ही तैरने का अभ्यास कर लो, पानी में काम न आएगा, खयाल रखना। हाथ पैर पटकना सीख लोगे गद्देतकिए पर, लेकिन पानी में सब बेकाम हो जाएगा।

नहीं, तैरना सीखने के लिए भी पानी के पास जाना ही पड़ता है। परमात्मा का अस्तित्व कैसे सिद्ध करोगे? तर्क से? विचार से? तो तो तुम उल्टे काम में लग गए। परमात्मा को जाना है लोगों ने निर्विचार से। परमात्मा को जाना है लोगों ने हृदय से। और तुम सिद्ध करने लगे बुद्धि से। नहीं सिद्ध होगा, तो आज नहीं कल तुम कहोगे: है ही नहीं। और एक बार तुम्हारे मन में यह बात गहरी बैठ गई कि है ही नहीं, तो बस अटक गए। तो तुम्हारा विकास अवरुद्ध हुआ।

गलत प्रश्न न पूछो! पूछो कि क्या मैं हूं? पूछो कि कैसे मैं जानूं कि मैं कौन हूं? परमात्मा को छोड़ो! परमात्मा से लेना देना क्या है? पहले पानी की बूंद तो पहचान लो, फिर सागर को पहचान लेना। अभी बूंद से भी पहचान नहीं और सागर के संबंध में प्रश्न उठाए। वे प्रश्न व्यर्थ हैं। उनके उत्तर सिर्फ नासमझ देने वाले मिलेंगे। हां, किताबों में इस तरह के प्रमाण दिए हुए हैं, बड़े बड़े प्रमाण दिए हुए हैं, बड़े पंडित, शास्त्री प्रमाण देते हैं ईश्वर के होने का। और उनके प्रमाण सब बचकाने, दो कौड़ी के! क्योंकि



लेकिन जैनों ने तो कृष्ण को नर्क में डाल दिया है उसी मोरमुकुट के कारण। और थोड़े बहुत दिन के लिए नहीं डाला है, जब तक यह सृष्टि है तब तक नर्क में रहेंगे। यह सृष्टि नष्ट होगी, फिर दूसरी सृष्टि बनेगी, तब मुक्त हो पाएंगे। छोटे मोटे पापी तो कई दफा आ जाएंगे, चले जाएंगे, आवागमन हो जाएगा बहुत, लेकिन कृष्ण तो सातवें नर्क में पड़े हैं सो पड़े ही रहेंगे। मोरमुकुट को क्षमा न कर पाए!

अगर तुमने कोई एक धारणा बांध ली है मजबूती से, तुमने कोई पक्षपात बना लिया है, तो फिर अड़चन होगी। फिर तो तुम अनुमान भी करने में समर्थ न रह जाओगे। अनुमान भी वही कर सकता है जो पक्षपातरहित हो। थोड़ा मुक्त हो। कोई धारणा पहले से ही निर्णीत न हो। और कोई धारणा काम नहीं आएगी। क्योंकि महावीर महावीर हैं, कृष्ण कृष्ण, बुद्ध बुद्ध, मुहम्मद मुहम्मद। सब उस एक को उपलब्ध हुए हैं, लेकिन फिर भी सबने गीत तो अपनी ही आवाज में गाए। सबने अभिव्यक्ति तो अपने ही ढंग से दी। इन छोटी छोटी बातों से निर्णय नहीं होगा। हां, अगर इन सारी बातों की तलहटी में उतरोगे, तो कुछ बातें जरूर पाओगे जैसे एक समता पाओगे, सुख में, दुख में; सफलता में, असफलता में, दरिद्रता में, समृद्धि में; एक समतुलता पाओगे, तराजू हिलेगा ही नहीं, दोनों पलड़े हमेशा बराबर ही रहेंगे।

ओशो५५

*भगवान  , क्या परमात्मा का अस्तित्व सिद्ध किया जा सकता है?

*

मुल्ला नसरुद्दीन नदी के किनारे गया था तैरना सीखने। जो उस्ताद उसे तैरना सिखाने को थे, वह तो एकदम चौंके, क्योंकि मुल्ला जैसे ही तट पर गया नदी के, पत्थर पर पैर फिसल गया कोई जमी होगी भड़ाम से गिरा, एक पैर तो पानी में भी पड़ गया, कपड़े भी भींग गए, एकदम उठा और घर की तरफ भागा। उस्ताद ने कहा कि बड़े मियां, कहां जाते हो? मुल्ला ने कहा कि अब जब तक तैरना न सीख लूं, नदी के पास पैर न रखूंगा। यह तो खतरनाक धंधा है! यह तो उसकी दुआ कहो, यह तो उसकी कृपा कहो। अगर जरा और फिसलकर अंदर चला गया होता, तो



हालैंड में कृष्णमूर्ति का एक शिविर था। एक महिला भारत से हालैंड गई शिविर में सम्मिलित होने। लौट कर आई तो उसने मुझे कहा कि मेरी भ्रांति टूट गई! मैं तो फिर शिविर में उपस्थित हो ही नहीं सकी। बात ही कुछ ऐसी हो गई! जल्दी आ गई थी तो मैंने पूछा भी कि अभी तो शिविर समाप्त ही नहीं हुआ, तू वापिस भी आ गई? उसने कहा, सब व्यर्थ है। क्योंकि मामला ऐसा हुआ कि शिविर के एक दिन पहले मैं बाजार गई, कुछ सामान खरीदने, मैंने एक दुकान पर कृष्णमूर्ति को टाई खरीदते देखा। बुद्धपुरुष और टाई खरीदें! महावीर स्वामी और टाई खरीदें। एक तो नंग धड़ंग और फिर टाई बांधें, तो खूब मजाक हो जाएगी। जैन महिला है। तो कहीं न कहीं छिपी तो महावीर की धारणा बैठी रही होगी। कृष्णमूर्ति से भी अपेक्षा तो वही होगी। चाहे प्रगट न हो, चेतन में न हो, अचेतन में होगी। यही तो उपद्रव है। तो कृष्णमूर्ति और टाई खरीदें! और बाजार पाई खरीदने आए! और न केवल इतना, वह खड़ी हो गई दुकान में भीतर जाकर, ठीक से निरीक्षण करने को, न केवल कृष्णमूर्ति टाई खरीद रहे थे, बल्कि उन्होंने कम से कम दो सौ टाइयां फैला रखी थीं। यह भी नहीं जंच रही; वह भी नहीं जंच रही; इसका रंग नहीं मेल खा रहा, इस का ढंग नहीं मेल खा रहा। उसने कहा, वह जो मैंने देखा, अपनी आंखों से जो देखा, मैंने कहा, यह आदमी क्या ज्ञान को उपलब्ध होगा! इस आदमी को कैसा बुद्धत्व! अभी जो टाइयों में उलझा है!

फिर शिविर में सम्मिलित होने का कोई कारण ही न रहा।

लेकिन अगर कोई कृष्ण का भक्त होता, तो शायद अड़चन न होती। क्योंकि कृष्ण कुछ कम वस्त्रों की चिंता नहीं करते मालूम होते हैं। पीतांबर, मोरमुकुट टाई तो उन दिनों नहीं होती थी नहीं तो जरूर बांधते, छोड़ सकते नहीं थे; जब मोरमुकुट तक बांधने में न झेंपे, तो टाई बांधने में कुछ अड़चन होती!

लेकिन जैनों ने तो कृष्ण को नर्क में डाल दिया है उसी मोरमुकुट के कारण। और थोड़े बहुत दिन के लिए नहीं डाला है, जब तक यह सृष्टि है तब तक नर्क में रहेंगे। यह सृष्टि नष्ट होगी, फिर दूसरी सृष्टि बनेगी, तब मुक्त हो पाएंगे। छोटे मोटे पापी तो कई दफा आ जाएंगे, चले जाएंगे, आवागमन हो जाएगा बहुत, लेकिन कृष्ण तो सातवें नर्क में पड़े हैं सो

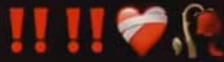
जोड़ियाँ सिर्फ जुड़ों
की सही होती हैं
बाकी सब मन का
वहम है

Osho





तेरी ख्वाहिश कर ली तो कौन सा गुनाह कर लिया
लोग तो इबादत में पूरी कायनात माँग लेते हैं !



Insta@ shayar.ka.khat



331



25



Give



Vijay Singh



Follow



Phaphund Phaphund

Add a comment...



← SPIRITUAL
OSHO | ओशो



Don't be corrupt,
inside,



20



1



Give



भगवान श्री रजनीश



← SPIRITUAL
OSHO | ओशो



if you are
really humble.



20



1



Give



भगवान श्री रजनीश





की तुम कामवासना
में क्यूं जिए



221



1



82



OSHO

#osho #osholove #hindi #live #love #ka... more



Send

8K ULTRA HD by fvckjew



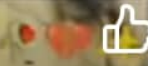
Add a comment...





तेरी हालत से लगता है तेरा अपना था कोई,
इतनी सादगी से बरबाद कोई गैर नहीं करता।

sad_writer_00777



562



74



Give



Azzu shorts

Follow



Add a comment...





"जब भी तू मुझसे कुछ छीन लेता है"
मैं खुशी से नाच उठता हूँ

Most relevant ▼



Rairkz Osho

Mera ek bhaar, aur Kam ho jata hai.... Jab bhi tu mujhse kuch chhin leta hai....

Just now

Like

Reply



Rakesh Saxena

😬 sab tera hai

2d

Like

Reply



Ganesh Gurav



3d

Like

Reply



Vinod Vinod

बहुत बढ़िया दोस्त

3d

Like

Reply



Ram Nishan Singh



1d

Like

Reply



Rita

Dukhmabhiigadhyadaatji

Write a comment...



"जब भी तू मुझसे कुछ छीन लेता है"
मैं खुशी से नाच उठता हूँ

कि पूरी दुनिया में तुझे एक मैं ही अमीर मिला।

insta:@sufi_ke_kisse



2.2K



9



519



Send



Sufi Ke Kisse

Following

Puri duniya me me hi ek Amir hu... 🎵💖💖 ... more



You're now following this page.

[Edit Settings](#)





Osho Wisdom

संसार छोड़ने की बात ज्ञानियों ने कही है, उसका अर्थ है--सपने छोड़ो, तृष्णाएं छोड़ो, वासनाएं छोड़ो। मगर लोग संसार छोड़कर भाग गए। बैठ गए हिमालय पर जाकर। सोचने लगे कि हिमालय संसार के बाहर है। पागल हो गए हो! हिमालय उतना ही संसार का हिस्सा है। जितनी यह जमीन, उतनी कोई और जमीन। जितना यह घर, उतना कोई और घर। जितनी तुम्हारी पत्नी संसार है, तुम्हारे पुत्र संसार हैं, तुम्हारे मित्र संसार हैं--उतना ही कोई आश्रम भी संसार का हिस्सा है। गुफा में भी बैठ जाओगे, तो गुफा भी संसार का हिस्सा है।



बाप को जानने के लिए पंडित जी अपने गुरु जी से मिलने चल दिए चलते चलते रास्ते में एक वैश्या का घर आया उस वैश्या ने यूं ही कहा पंडित जी राम राम कहाँ जा रहे हैं आप।

पंडित जी ने जवाब दिया कि मैं एक प्रश्न का उत्तर खोजने अपने गुरु के पास जा रहा हूँ।

वैश्या ने कहा- प्रश्न क्या है?

तब पंडित जी ने बताया कि "पाप का बाप कौन है?"

ये सुनते ही वैश्या बोली इस प्रश्न का जवाब तो मैं ही आपको बता सकती हूँ,

पंडित जी ने सोचा ये तो और भी अच्छा है यहीं पता चल जायेगा तो बताओ कौन है पाप का बाप ?

वैश्या बोली बता तो दूंगी लेकिन आपको मेरे यहाँ भोजन करना पड़ेगा ये सुनकर पंडित जी कहने लगे नहीं तो रहने दो मैं अपने गुरु जी से ही पूछ लूँगा तब वैश्या ने एक सौ का नोट पंडितजी को दिया तो पंडितजी के मन में लोभ आ गया और वह खाना खाने के तैयार हो गए फिर जब वैश्या खाना बना कर लाई तो उसने कहा कि पंडित जी अगर आपको ऐतराज ना हो तो मैं आपको अपने हाथों से ही खाना खिला दूँ? तो पंडितजी ने फिर ऐतराज जताया तो फिर से वैश्या ने सौ का नोट दे दिया पंडितजी उसके हाथ से खाना खाने को तैयार हो गए जैसे ही वैश्या ने भोजन का एक निवाला पंडितजी के मुख के तरफ बढ़ाया और पंडितजी ने जैसे ही मुँह खोला तो वैश्या ने एक जोर से थप्पड़ मार दिया और कहा कि यही है पाप का बाप और कहा कि तुम अपनी मर्यादा लोभ के कारण भूल गए लेकिन मैं अपनी मर्यादा को जानती हूँ।

नोट- इस कहानी में पंडितजी को इसलिए मुख्य बनाया क्योंकि पंडितजी सर्वश्रेष्ठ है और जब कोई सम्मानीय या सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति लोभ के कारण नीच की संगति करता है वही पाप है और पाप का बाप लोभ है।

लोभ ही सब पापों का कारण बनता है अतः हमें लोभ से बचना चाहिए। संत महात्मा भी अपने सत्संगों में हमें यही समझाते हैं कि काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार से बचना चाहिए।



पशुओं को काटने में उसकी कुशलता अनूठी थी। और जो देखने गया था, उसने पूछा उस बधिक को कि तुम इतने पशु काटते हो, यह तुम जिस खंजर से काटते हो, कितने दिन में खराब हो जाता है ?

तो उस बधिक ने कहा, मेरे पिता भी इसी से काटते थे, उनके पिता भी इसी से काटते थे, मैं भी इसी से काट रहा हूँ। लेकिन हम इतनी सजगता से काटते हैं कि इसकी धार मरती नहीं, रोज़ नई हो जाती है। हम बेहोशी से नहीं काटते कि हड्डी पर पड़ जाए। हम इतनी सजगता से काटते हैं कि जहां दो हड्डियाँ मिलती है, उनके बीच से यह शस्त्र गुज़र जाता है। और वे दोनों हड्डियाँ इस पर धार रखने के काम आ जाती हैं।

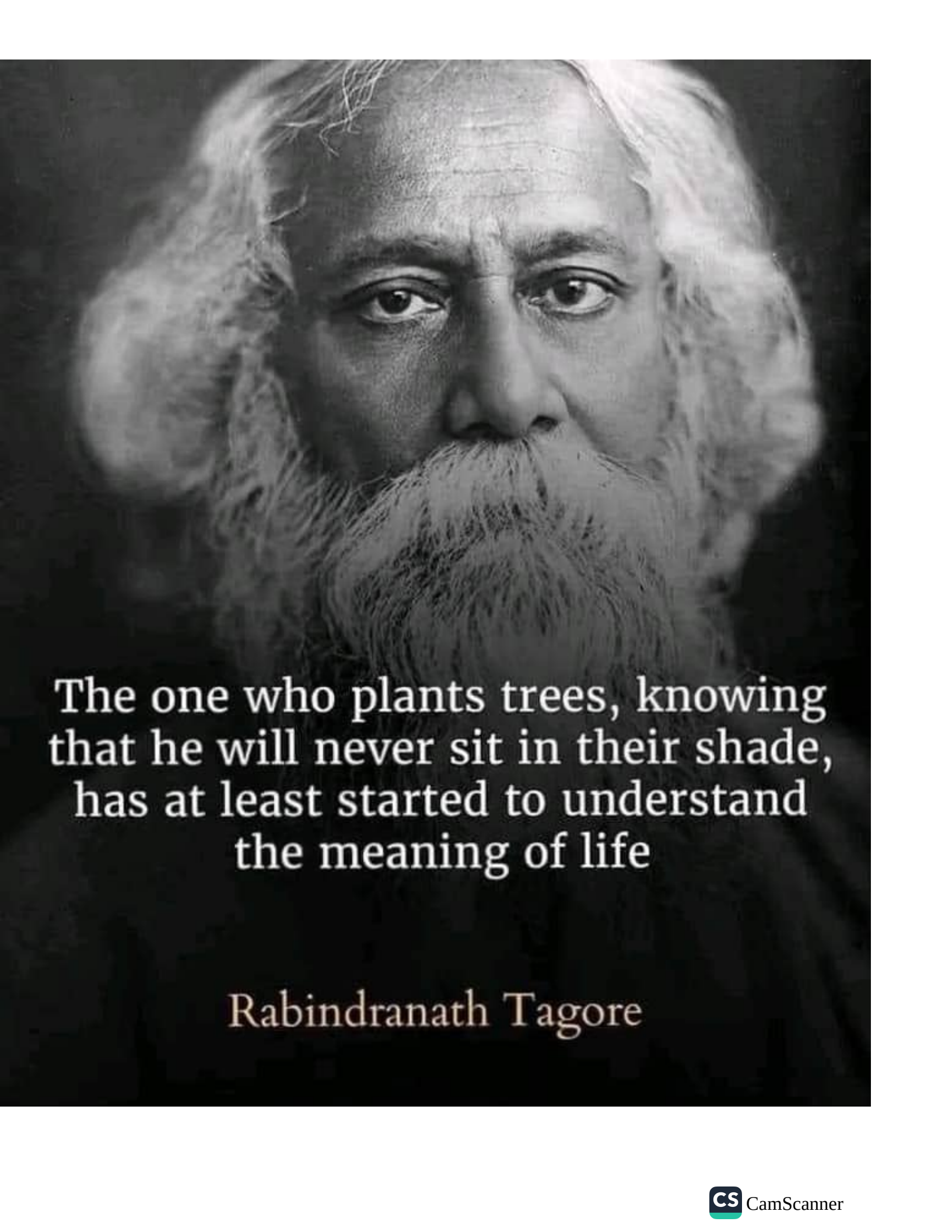
उस आदमी ने उस बधिक से पूछा कि तुम्हें कभी तकलीफ़ नहीं होती इनको काटते ?

तो उस बधिक ने कहा, जो कट सकता है, वही कटता है। जो नहीं कट सकता, उसके काटने का कोई उपाय नहीं है। मैं जिसे काटता हूँ, वह मरा ही हुआ है। और जो जीवन्त है, उसको किसी अस्त्र-शस्त्र से काटने का कोई भी उपाय नहीं है।

उसने वही कहा, जो कृष्ण ने गीता में कहा है। लेकिन कृष्ण के शब्द हमारी समझ में आ सकते हैं, एक बधिक के शब्द हमारी समझ में आना मुश्किल हो जाएंगे।

वह आदमी लौटा और उसने कहा कि बात तो वह बहुत ज्ञान की करता है, लेकिन आचरण ज्ञानी का नहीं मालूम पड़ता। पता नहीं, बात ही करता हो। तो लाओत्से ने कहा कि तू जा एक तलवार लेकर और उस बधिक का हात काट दे। वह आदमी गया और उसने तलवार उठाई, तो बधिक ने अपना हात उसके सामने कर दिया और कहा कि ठीक जोड़ पर मारना, नहीं तो तलवार की धार खराब हो जाएगी। तुझे कुछ अंदाज भी नहीं है, नया-नया है। तो ठीक जोड़ पर !

उस आदमी की हिम्मत नहीं पड़ी। वह वापस लौट आया। लेकिन यह जो आदमी है, यह पशुओं को काटते वक्रत ही सजग हो, ऐसा नहीं, अपने को कटाते वक्रत भी उतना ही सजग है। ~ओशो

A black and white portrait of Rabindranath Tagore, an elderly man with long, wavy white hair and a full white beard. He is looking directly at the camera with a calm expression. The background is dark and out of focus.

The one who plants trees, knowing
that he will never sit in their shade,
has at least started to understand
the meaning of life

Rabindranath Tagore

🔥 मन को छोड़ दो!

Oshoravi

**Usno Ravi Yog**

1d · 🌐

॥ओशो नमन॥

मन को छोड़ दो,,,

और देखो! मन को बिल्कुल खुला छोड़ दो और उसमें आने जाने वाले विचारों को बस चुपचाप देखते रहो ! जैसे कोई नदी के किनारे बैठकर,,,

जल-प्रवाह को देखता है, ठीक वैसे ही मन में बहने वाले विचारों को देखते रहो! देखते रहो और देखते ही रहो, उस देखने के आघात से,,,

विचार शून्य हो जाते हैं, और मन खत्म हो जाता है मर जाता है मिट जाता है! मन के हटते ही उसके खाली स्थान पर जिसका अनुभव होता है,,,

वहीं है परमात्मा, वहीं है सत्य और वहीं तुम्हारी सत्ता है तुम्हारी आत्मा है...

ओशो

.
. .
.

#ओशो #oshoravi #oshoraviyog #viralpage
#viralpage2023

**दूसरे को दुख
देने की अकांक्षा में ही तुमने पाप किया है।**

दूसरे को दुख देकर सुख पाने की आकांक्षा में ही
तुमने पाप के बीज बोए हैं।

अब उन्हें छिपाओ मत। अब उन्हें उघाड़ो।
अब उन्हें खुली आंख के सामने रखो।
उनके साक्षी बनो।

**अपनी पूरी जिंदगी को
शास्त्र समझो;
उसमें ही
सारा सार छिपा है।**

और अगर तुमने अपनी भूलें ठीक से देख लीं,
तो तुम्हें कहीं और सीखने जाना न पड़ेगा।

तुम्हारा गुरु तुम्हारे जीवन में छिपा है;

वहीं से तुम्हें बोध की किरण मिलेगी;
वहीं से तुम्हारे जीवन में
क्रांति शुरू हो जाएगी।

आचार्य श्री रजनीश(Osho) एस धम्मो सनंतनो-(25)
पुण्यातीत ले जाए, वही साध—कर्म



बढ़ा हा, क्याक आप सचतन हा गए, आप काशस हा गए घबड़ाहट आ गई। तनाव बढ़ गया। तो बीमारी जब डाक्टर जांचता है तो उसे यह नहीं समझना चाहिए बीमारी इतनी ही होगी, थोड़ी ज्यादा मालूम होती है। क्योंकि उतनी घबड़ाहट भी बढ़ गई होती है भीतर।

च्वांगत्सु लेट गया और उसने कहा, मेरी श्वास देख लो। तो उसका पेट ऊपर-नीचे गिर रहा है। वह एक छोटे बच्चे की तरह लेटा है। और लाओत्से कहता है कि तू उत्तीर्ण हो गया है। अब मुझे कुछ पूछना नहीं है। क्योंकि जो जवाब दे सकता है, अब तेरे भीतर मौजूद है।

बुद्धि से हटाना है चेतना को और नाभि की तरफ ले आना है।

हमारा सारा संस्कार, हमारी सारी शिक्षा, सारा समाज चेतना को बुद्धि की तरफ ले जाने की कोशिश में लगा रहता है। उपयोग है उसका, जैसा मैंने कहा। लेकिन एक दिन हमें उस उपयोग से वापस लौट आना जरूरी है। मूल केंद्र को खो देना किसी भी कीमत पर खतरनाक है। और किसी भी कीमत पर मूल केंद्र को पा लेना सस्ता है।

तो लाओत्से के इस सूत्र को साधना का सूत्र समझें। अपनी श्वास का ध्यान रखें और श्वास के रूपांतरण की कोशिश करें। श्वास की बदलाहट आपकी बदलाहट हो जाएगी। श्वास में क्रांति आपके स्वयं के व्यक्तित्व की क्रांति हो जाएगी। और जैसे-जैसे श्वास गहरी होने लगेगी, आपकी गहराई बढ़ने लगेगी, आपका उथलापन समाप्त हो जाएगा। और जिस दिन श्वास केंद्र पर होगी, उस दिन आप सारे जगत के साथ एक अद्वैत के बिंदु पर मिल जाएंगे।

अपने केंद्र पर जो आ गया, वह जगत के केंद्र पर आ जाता है। स्वयं के केंद्र पर जो डूब गया, वह विराट के केंद्र से एक हो जाता है। तो एक परम आलिंगन अद्वैत का फलित होता है। और जैसे-जैसे आपकी श्वास गहरी और भीतर-भीतर उतरने लगती है, वैसे-वैसे रहस्य के नए पर्दे और सत्य के नए द्वार खुलने शुरू हो जाते हैं। जो मनुष्य के भीतर छिपा है, वही विराट में विस्तीर्ण होकर फैला हुआ है। जो अपने भीतर गहरे उतर आता है, वह परम के भीतर ऊंचा उठ जाता है।

ओशो: ताओ उपनिषद



#लाओत्से अपने शिष्यों की परीक्षाएं लिया करता था। वह उनको सवाल देता, वे ठीक जवाब ले आते और लाओत्से फाड़ कर फेंक देता। क्योंकि उनके पेट पर हाथ रख कर देखता और कहता, सवाल बेकार गया, जवाब गलत है। एक युवक आया हुआ था और उसने लाओत्से से कहा, तुम पागल तो नहीं हो! तुमने जो समझाया था, ठीक वही-वही लिख कर लाया हूं। लाओत्से ने कहा, वह तो बिलकुल ठीक है, लेकिन जो लिख कर लाया है, उसकी श्वास! उसकी श्वास नाभि से नहीं चल रही है। और यह जवाब तो तभी आ सकता है भीतर से, जब श्वास नाभि से चल रही हो। तुम मुझे सुन कर ले लाए हो। यह बुद्धि से सुना गया था, बुद्धि से दे दिया गया है। तुम्हारे भीतर इसका कोई भी अनुभव नहीं है।

च्वांगत्सु जब उसके पास पहुंचा, उसका सबसे बड़ा शिष्य, तो लाओत्से ने उसे सब समझाया और उसने सब सुना। और जब उसकी परीक्षा का वक्त आया, तो जैसे कि सभी शिष्य अपने कागजात लेकर आते थे जवाब देने के लिए, वह बिना कागजात खाली हाथ आकर बैठ गया। लाओत्से ने कहा कि आज तुम्हारी परीक्षा का दिन है और मैं कुछ पूछूंगा; जवाब लिखने के लिए कुछ लाए नहीं? च्वांगत्से ने कहा कि अगर मैं जवाब नहीं हूं, तो मेरे लिखे हुए जवाबों का क्या उपयोग होगा! उसने अपने कपड़े उतार दिए और नग्न होकर सामने लेट गया। उसने कहा कि तुम मेरी श्वास देख लो।

और ध्यान रहे, अगर नाभि से सच्ची श्वास नहीं चलने लगी है और आप सिर्फ कोशिश करके चलाते रहे हैं, तो जब कोई आपके पेट पर हाथ रखेगा, फौरन श्वास सीने से चलने लगेगी। फौरन! जैसे ही आप कांशस हो जाएंगे, श्वास आपकी सीने से चलने लगेगी। वह तो बच्चे जैसे सरल ही न हो गए हों कि कोई पेट पर हाथ रखे या कुछ भी करे, श्वास वहीं से चलती ही है। डाक्टर जब आपका हाथ अपने हाथ में लेकर नाड़ी नापता है, तो आप कभी यह मत सोचना कि नाड़ी उतनी ही होती है जितनी डाक्टर को पता चलती है। डाक्टर को भी कम से कम थोड़ा उसे घटा लेना चाहिए; उतनी नहीं होती। वह डाक्टर के पकड़ने से बढ़ती है। बढ़ेगी ही, क्योंकि आप सचेतन हो गए, आप कांशस हो गए। घबड़ाहट आ गई। तनाव बढ़ गया। तो बीमारी जब डाक्टर जांचता है तो उसे यह नहीं समझना चाहिए बीमारी इतनी ही होगी, थोड़ी ज्यादा मालूम होती



ध्यान रखो जब तक तुम दूसरे को प्रभावित करना चाहते हो, तब तक तुम अहंकार से ग्रस्त हो। आत्मा किसी को प्रभावित करना नहीं चाहती। दूसरे को प्रभावित करने में सार भी क्या है! पानी पर बनायी हुई लकीरों जैसा है।

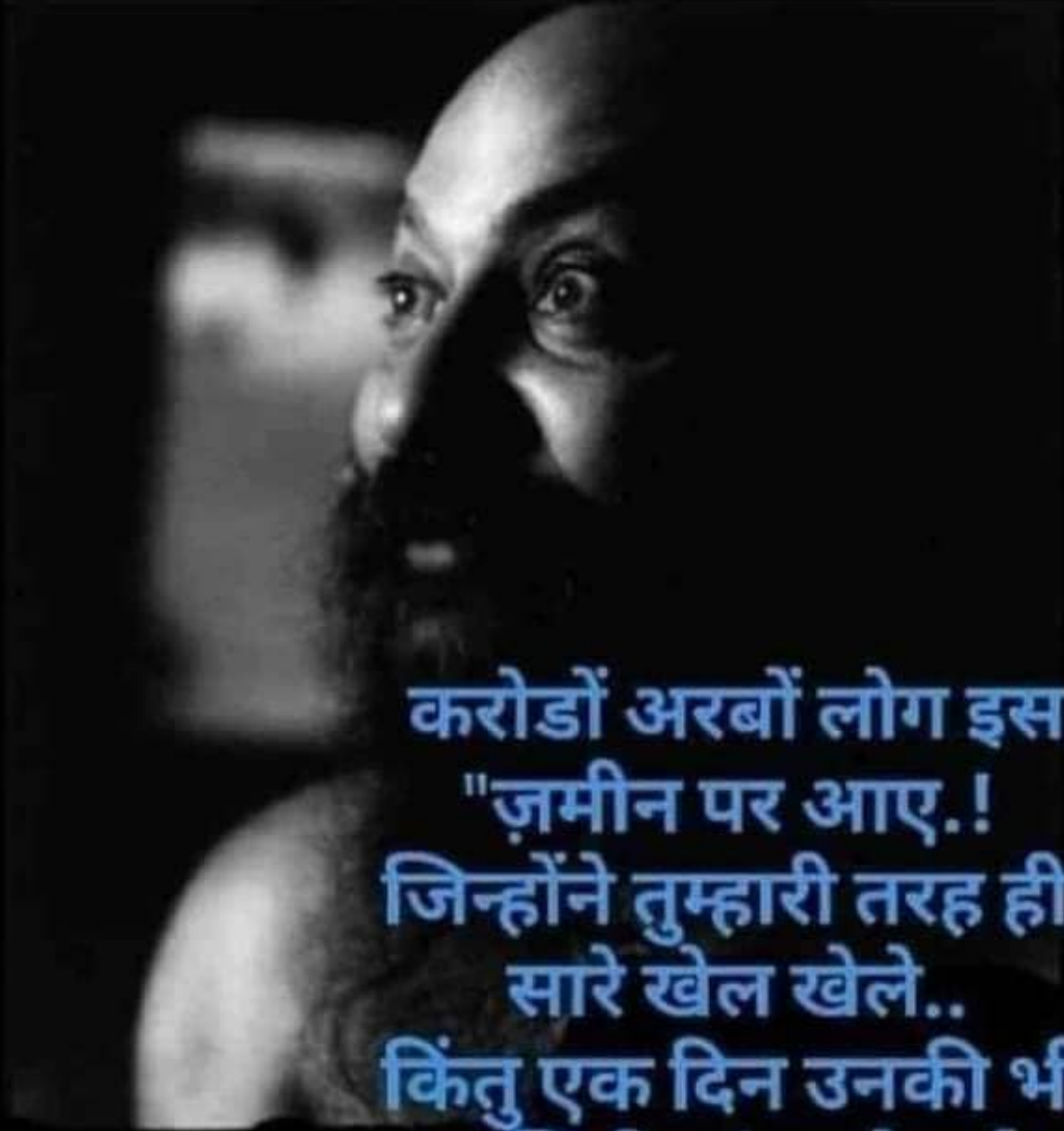
क्या होगा मुझे दस हजार लोग प्रभावित हों कि दस करोड़ लोग प्रभावित हों। इससे होगा क्या? उनको प्रभावित करके मैं क्या पा लूंगा। अज्ञानियों की भीड़ को प्रभावीत करने की इतनी उत्सुकता अज्ञान की खबर देती है। राजनेता दूसरों को प्रभावित करने में उत्सुक होता है समझ में आता है; लेकिन धार्मिक व्यक्ति क्यों दूसरों को प्रभावित करने में उत्सुक होगा?

जब भी तुम दूसरों को प्रभावित करना चाहते हो, तब एक बात याद रखना कि तुम आत्मस्थ नहीं हो। दूसरे को प्रभावित करने का अर्थ है कि तुम अहंकारस्थित हो। अहंकार दूसरे के प्रभाव को भोजन की तरह उपलब्ध करता है; उसी पर वह जीता है। जितनी आंखें मुझे पहचान लें, उतना मेरा अहंकार बड़ा होता है। अगर सारी दुनिया मुझे पहचान ले, मेरा अहंकार सर्वोत्कृष्ट हो जाता है। कोई मुझे न पहचाने गांव से निकलूं सड़क से गुजरूं, कोई देखे न, कोई रेकगनीशन नहीं, कोई प्रत्यभिज्ञा नहीं; किसी की आंख में झलक न आये, लगे ऐसा जैसा कि मैं हूं ही नहीं बस, वहां अहंकार को चोट है।

अहंकार चाहता है कि दूसरे ध्यान दें। यह बड़े मजे की बात है अहंकार ध्यान नहीं करना चाहता; दूसरे उस पर ध्यान करें.., सारी दुनिया उसकी तरफ देखे, वह केंद्र हो जाए।

धार्मिक व्यक्ति, दूसरा मेरी तरफ देखे, इसकी फिक्र नहीं करता; मैं अपनी तरफ देखूं क्योंकि अंततः वही मेरे साथ जाएगा। राह तो बच्चों की बात हुई। बच्चे खुश होते हैं कि दूसरे उनकी प्रशंसा करें। सर्टिफिकेट घर लेकर आते हैं तो नाचते-कूदते आते हैं। लेकिन बुढ़ापे में भी तुम सर्टिफिकेट मांग रहे हो तब तुमने जिंदगी गंवा दी! सिद्धि की आकांक्षा दूसरे को प्रभावित करने में है। धार्मिक व्यक्ति की वह आकांक्षा नहीं है। वही तो सांसारिक का स्वभाव है।





करोड़ों अरबों लोग इस
"ज़मीन पर आए.!
जिन्होंने तुम्हारी तरह ही,
सारे खेल खेले..
किंतु एक दिन उनकी भी
आखिरी सांझ हो गई!
इसलिए जो आदमी मौत
से पहले चेत गया..
समझो वहीं बुद्धिमान है!

ओशो {SGB}

हम से ताल्लुक रखोगे तो
तबियत ठीक रहेगी
हम वो हकीम हैं जो लफ्जों
से इलाज करते हैं

Osho the bhagvan

मनुष्य क्या है..?

**ओ शो वाणी**

Bhavna Joshi · 3h · 🌐



मेरी रूह पूछती है मुझसे
अक्सर ,

जी भर गया हो तो चले
अपने घर !!

127

16 comments · 20 shares



Like



Comment



Send



Share

अगर मैं सोचूं कि मुझे किसी
की भी ज़रूरत नहीं. तो ये मेरा
'अहम' है, और अगर मैं सोचूं
कि सबको मेरी ज़रूरत है. तो
ये मेरा 'वहम' है।

A meditating figure, possibly a Hindu deity or sage, is shown in a lotus position. The figure has a glowing orange and yellow heart or energy source in the center of their chest. The figure's hands are in a mudra (gesture). The background is a swirling, ethereal orange and yellow light, suggesting a spiritual or cosmic environment.

सच तो ये है, हम तुम से, तुम
हम से, हम सब एक दूजे से हैं
यही जीवन का सच है।



किसी और ने तुम्हारी गर्दन पकड़कर तुम्हें पिला दी थीं, अब तुम किसी और के साथ बदला ले रहे हो।

दुनिया में सलाहें इतनी दी जाती हैं, मगर लेता कौन! कोई किसी की सलाह लेता है! तुमने कभी किसी की ली? और खयाल रखना, जिसने भी तुम्हारी असहाय अवस्था का मौका उठाकर सलाह दी है, उससे तुम नाराज हो, अभी भी नाराज हो, तुम उसे क्षमा नहीं कर पाए हो। क्योंकि तुम असमय में थे और दूसरे ने फायदा उठा लिया। तुम्हारे घर में आग लग गयी थी और कोई ज्ञानी तुमसे कहने लगा : क्या रखा है; यह संसार तो सब जल ही रहा है; सब जल ही जाएगा, सब पड़ा रह जाएगा—सब ठाठ पड़ा रह जाएगा जब बांध चलेगा बंजारा—अरे, यहा रखा क्या है! यह बाते तो तुम्हें भी मालूम हैं, लेकिन तुम्हारा घर जल रहा है और इन सज्जन को सलाह देने की सूझी है! तुम्हारी पत्नी मर गयी और कोई कह रहा है कि आत्मा तो अमर है। तुम्हारी तबियत होती है कि इसको यहीं दुरुस्त कर दो इस आदमी को! मेरी पत्नी मर गयी है, इसे ज्ञान सूझ रहा है! और तुम भलीभांति जानते हो कि इसकी पत्नी जब मरी थी तब यह भी रो रहा था—और कल जब इसका बेटा मरेगा तो फिर यह जार—जार रोका। तब तुम्हारे हाथ में एक मौका होगा कि तुम भी बदला ले लोगे, तुम भी सलाह दे दोगे।

सलाहें एक—दूसरे का अपमान हैं। सलाह का मतलब यह होता है, तुम सिद्ध कर रहे हो; मैं जानता हूँ तुम नहीं जानते; मैं ज्ञानी, तुम अज्ञानी। तुम मौका पाकर गुरु बन रहे हो। जांचना। अपने जीवन को जरा परखना। हर किसी को सलाह देने को तैयार हो! कोई सिगरेट पी रहा है और तुम्हारे भीतर एकदम खुजलाहट होती है कि इसको सलाह दो कि सिगरेट पीना बुरा है—और तुम पान चबा रहे हो! मगर पान चबाना बात और! —लेकिन तुम सलाह देने का मौका नहीं छोड़ोगे। तुम्हारे बाप ने तुम्हें सलाह दी थी और तुमने एक न मानी। और वे ही सलाहें तुम अपने बेटों को पिला रहे हो। वे भी नहीं मानेगे। तुमने नहीं मानी थी। कौन मानता है सलाह! क्यों सलाहें नहीं मानी जातीं? कारण है। देने वाला अहंकार का मजा लेता है, लेने वाले के अहंकार को चोट लगती है।

अथातो भक्ति जिज्ञासा
ओशो



एक शिष्य गुरु के पास पहुंचा। उसने पूछा कि मुझे स्वीकार करेंगे? मैं दीक्षित होने आया हूं। गुरु ने कहा : कठिन होगा मामला। यात्रा दुर्गम है, सम्हाल सकोगे? पात्रता है? पूछा उस युवा ने : क्या करना होगा? ऐसी कौन—सी कठिनाई है? गुरु ने कहा : जो मैं कहूंगा, वही करना पड़ेगा। वर्षों तक तो जंगल से लकड़ी काटना, आश्रम के जानवरों को चरा आना, बुहारी लगाना, भोजन पकाना—इसमें ही लगना होगा। फिर जब पाऊंगा कि अब तुम्हारा समर्पण ठीक—ठीक हुआ, तार ठीक—ठीक बंधे, तब तुम्हारे ऊपर सत्य के प्रयोग शुरू होंगे, तब ध्यान और तप।

उस युवक ने पूछा : यह तो बड़ी झंझट की बात है। कितने वर्ष लगेंगे यह जंगल जाना, लकड़ी काटना, भोजन बनाना, सफाई करना, जानवर चराना? गुरु ने कहा : कुछ कहा नहीं जा सकता। निर्भर करता है कि कब तुम तैयार होओगे। जब तैयार हो जाओगे, तभी—वर्ष भी लग सकते हैं, कभी—कभी जन्म भी लग जाते हैं।

उस युवक ने कहा, चलिए, यह तो जाने दीजिए, यह मुझे जंचता नहीं। गुरु होने में क्या करना पड़ता है? तो उस गुरु ने कहा : गुरु होने में कुछ नहीं। जैसे मैं यहा बैठा हूं ऐसे बैठ जाओ और आज्ञा देते रहो। तो उसने कहा : फिर ऐसा करिए, मुझे गुरु ही बना लीजिए। यह जंचता है।

गुरु कौन नहीं बन जाना चाहता! तुम भी कोई मौका नहीं खोते जब गुरु बनने का मौका मिले। किसी को अगर तुम पा लो किसी हालत में कि सलाह की जरूरत है, तो तुम्हें चाहे सलाह देने योग्य पात्रता हो या न हो, तुम जरूर देते हो। तुम चूकते नहीं मौका। कोई मिल भर जाए मुसीबत में, तुम उसकी गर्दन पकड़ लेते हो। तुम उसको सलाह पिलाने लगते हो। और ऐसी सलाहें, जो तुमने जीवन में खुद भी कभी स्वीकार नहीं कीं; जिन पर तुम कभी नहीं चले; जिन पर तुम कभी चलोगे भी नहीं। लेकिन किसी और ने तुम्हारी गर्दन पकड़कर तुम्हें पिला दी थीं, अब तुम किसी और के साथ बदला ले रहे हो।

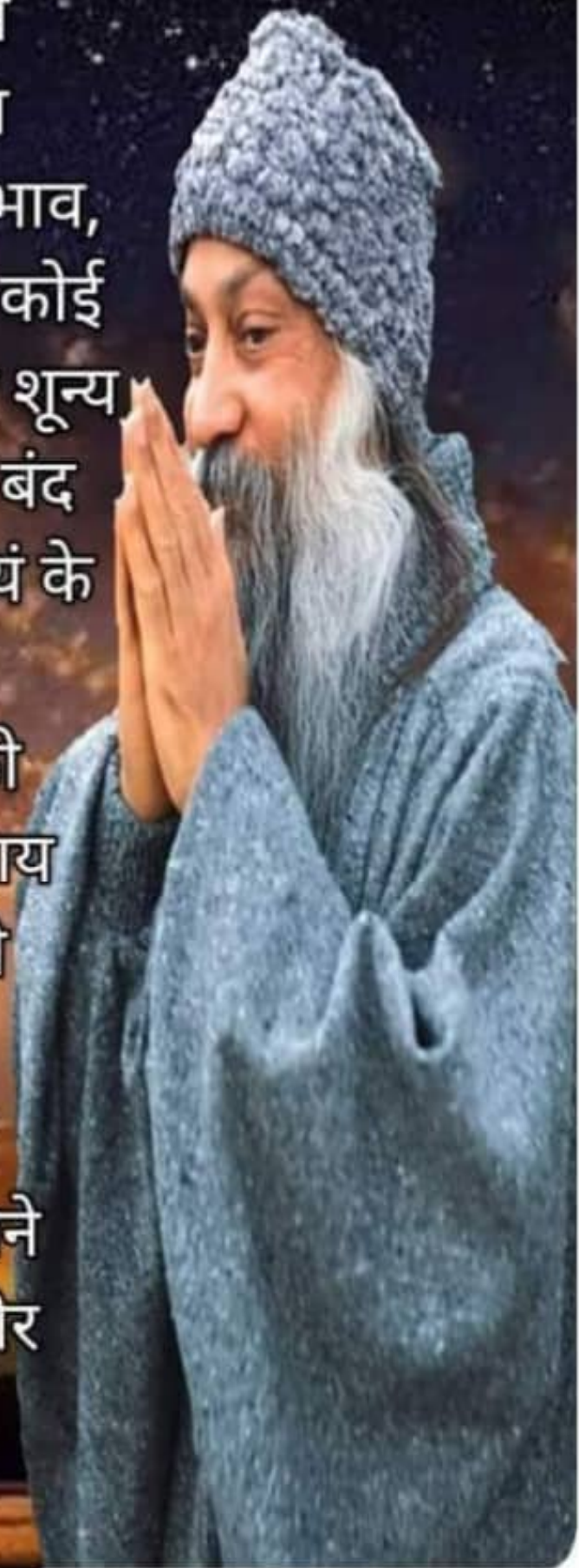
दुनिया में सलाहें इतनी दी जाती हैं, मगर लेता कौन! कोई किसी की सलाह लेता है! तुमने कभी किसी की ली? और खयाल रखना, जिसने भी तुम्हारी असहाय अवस्था का मौका उठाकर सलाह दी है, उससे तुम नाराज हो, अभी भी नाराज हो, तूम उसे क्षमा नहीं कर पाए हो। क्योंकि

दुनियां में सबसे कठिन काम
है स्वयं के साथ अकेले होना
जिसमे ना कोई विचार, ना भाव,
ना तंत्र, ना मंत्र, ना जंत्र, ना कोई
कल्पना, ना कोई चाह, मौन शून्य
चेतना की अवस्था मे आंखे बंद
कर बैठना। यानी केवल स्वयं के
साथ होना।

🧘 एक बार अगर मनुष्य को
इस स्वाद का अनुभव हो जाय
तो फिर बाहर का जगत उसे
विचलित नहीं कर सकता।

🧘 भगवान बुद्ध का अंतिम
सन्देश अण्ण दीपो भव। अपने
दीये स्वयं बनो। चेतना के तीर
को मोड़ दो स्वयं के भीतर।

🍁 ओशो 🍁



**Naye bharat ke khoj**

15h · 🌐

तुझे पराई क्या परी, अपनी ओर निबेर।।

पलटू कहते हैं - "तुझे पराई क्या परी, अपनी आप निबेर।" पहले अपनी सुलझा ले, अपनी तो निपटा ले। अपनी इतनी उलझन है, अपनी अंदर इतनी बीमारियां हैं, इनको लेकर तू दूसरों की बीमारी और सुलझाने चला जाएगा, और झंझट बढ़ा देगा।

अपने जीवन में अमृत नहीं उतरा, और तू दूसरों की चिंता में पड़ रहा है! पहले परमात्मा को तो थोड़ा पचा; नहीं ये तो दूसरों की चिंताएं ही तेरा भोजन बन जाएंगी।. . .

"छोड़ि गुड़ विस को खावै।"

जहां बड़ी मिठास हो सकती थी परमात्मा को अपने भीतर ले लेने से, वहां लोगों की चिंताएं और दुःखों का हिसाब लगा-लगा कर तू बड़ा खट्टा और कड़वा हो जाएगा, विष से भर जाएगा।

तुझे पराई क्या परी, अपनी ओर निबेर।।'

पहले अपनी तरफ तो आंख उठा। पहले ध्यान अपनी तरफ तो ले जा। फिर दूसरों में उलझना। और जो सुलझ गया, उससे दूसरे भी सुलझते हैं। यह सहज ही होता है फिर; यह कुछ करना नहीं पड़ता। उसकी मौजूदगी करती है। उसके आशीष करते हैं। उसके वचन करते हैं। उसका मौन करता है। उसकी उपस्थिति करने लगती है। फिर कुछ करना नहीं पड़ता। फिर वह सेवा करने नहीं निकलता.. उससे सेवा होने लगती है।

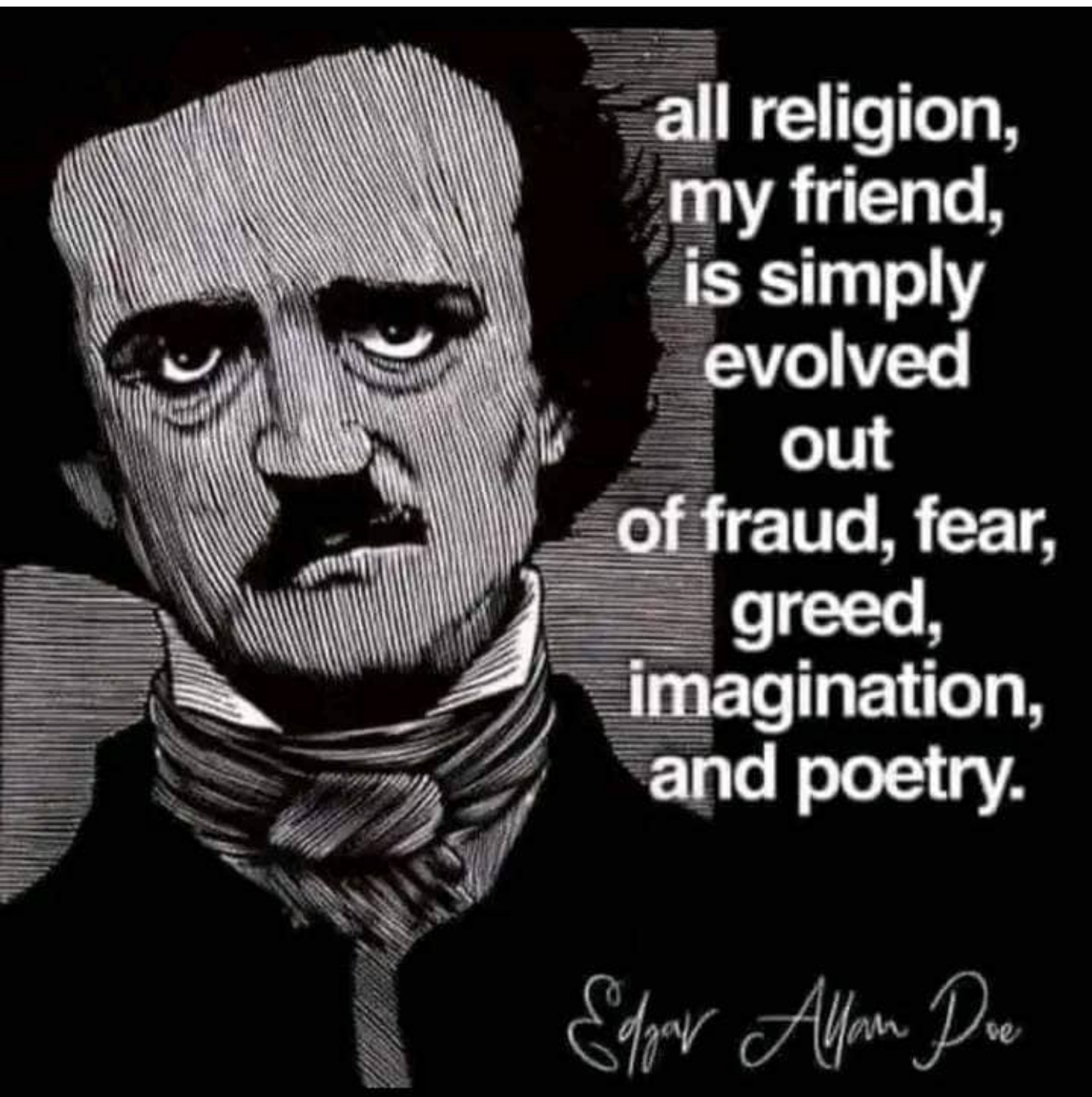
ओशो

अजहू चेत गवांर-(पलटू दास)



परमात्मा उतरता है
एक नृत्य की भांति,
एक गीत की भांति ।
मगर उतरता उसी हृदय में है,
जो मस्त है।

ओशो



all religion,
my friend,
is simply
evolved
out
of fraud, fear,
greed,
imagination,
and poetry.

Edgar Allan Poe



वह भी चूक जाएगी। मौत तो छीज
ही लेगी तो तुम्ही क्यों नहीं छोड़ देते ?
और



40K



193



766



oshorajneesh_ @

Instagram/oshorajneesh_

Send

तुम्हारे पास अभी है क्या ?



Add a comment...





मौत तो छीन लेगी, तब छोड़ने का
मजा भी न मिलेगा,
तब छोड़ने का जो गौरव है, गरिमा है



40K



193



766



oshorajneesh_



Instagram/oshorajneesh_

Send

तुम्हारे पास अभी है क्या ?



Add a comment...





40K



193

मौत तो छीन लेगी, तब छोड़ने का
मजा भी न मिलेगा,



766



oshorajneesh_ @

Instagram/oshorajneesh_

Send

तुम्हारे पास अभी है क्या ?



Add a comment...





OSHO

ब्रह्मा ने आकर सिर टेक दिया बुद्ध के चरणों में
और कहा कि मुझे ज्ञान दें।



69



12



Give



अपो दीपो भव

Add a comment...





योगेश, उपलब्ध व्यक्ति की उपलब्धि का पता अन्य को नहीं चल सकता। अनुमान ही हो सकता है। अंधे को कैसे पता चलेगा कि आंख वाले को प्रकाश दिखाई पड़ता है? अनुमान कर सकता है। क्योंकि टटोल कर देख सकता है कि आंख वाला आदमी बिना टटोले चलता है। टटोल कर देख सकता है कि आंख वाले आदमी के हाथ में लकड़ी नहीं है। अंधा है, लेकिन इतना अनुमान कर सकता है कि आंख वाला उठता है तो किसी से पूछता नहीं कि दरवाजा कहां है, चुपचाप निकल जाता है। बिना पूछे निकल जाता है। जरूर दिखाई पड़ता होगा। क्योंकि मुझे तो पूछकर निकलना पड़ता है। मुझे तो लकड़ी से खटखट खोजना पड़ता है। नि मुझे तो एक एक कदम राह पर चलता हूं तो समझलना पड़ता है। मैं दौड़ नहीं सकता और मैं दूसरों को दौड़ते देखता हूं। बच्चे उसके पास किलकारी मारते हैं और दौड़ते हैं, बाहर और भीतर घर के होते हैं, इतनी सुगमता से, तो जरूर उनके पास कुछ है जो मेरे पास नहीं है। पर यह अनुमान ही होगा, ओ प्रमाण नहीं।

लेकिन, अगर अनुमान भी करने में तुम समर्थ हो जाओ, तो भी तुम्हारे लिए संभावना का एक द्वार खुलता है। फिर प्रत्येक बुद्धपुरुष का व्यवहार अलग अलग है, क्योंकि प्रत्येक बुद्धपुरुष एक अनूठी, अद्वितीय घटना है। इसलिए अगर तुमने पहले से ही कुछ सिद्धांत तय कर रखे हों, कि ऐसा होना चाहिए बुद्धपुरुष, अनुभूत व्यक्ति ऐसा होना चाहिए, तो तुम अनुमान भी न कर पाओगे। तो तुम बड़ी अड़चन में पड़ोगे। महावीर नग्न हैं, और बुद्ध नग्न नहीं है!

हालैंड में कृष्णमूर्ति का एक शिविर था। एक महिला भारत से हालैंड गई शिविर में सम्मिलित होने। लौट कर आई तो उसने मुझे कहा कि मेरी भ्रांति टूट गई! मैं तो फिर शिविर में उपस्थित हो ही नहीं सकी। बात ही कुछ ऐसी हो गई! जल्दी आ गई थी तो मैंने पूछा भी कि अभी तो शिविर समाप्त ही नहीं हुआ, तू वापिस भी आ गई? उसने कहा, सब व्यर्थ है। क्योंकि मामला ऐसा हुआ कि शिविर के एक दिन पहले मैं बाजार गई, कुछ सामान खरीदने, मैंने एक दुकान पर कृष्णमूर्ति को टाई खरीदते देखा। बुद्धपुरुष और टाई खरीदें! महावीर स्वामी और टाई खरीदें। एक तो नंग धड़ंग और फिर टाई बांधें, तो खूब मजाक हो जाएगी। जैन महिला है। तो



"मुझे कहाँ मालूम था कि सुख और उम्र की आपस में बनती नहीं"

कड़ी मेहनत के बाद सुख को घर ले आया तो उम्र नाराज होकर चली गई।

insta:@sufi_ke_kisse



212



1



45



Send



Sufi Ke Kisse

Mujhe maloom nahi tha... more

Add a comment...





Suraj Bhan

Suraj Bhan Just now

जागने की चाबी

जिस दिन से हम एकांत में बैठ अपने दोष उघाड़ने लगते हैं और स्वीकारने लगते हैं, उसी दिन से हमारी भक्ति में पंख लग जाते हैं, हमारा ध्यान, हमारा गुरु तत्व (प्रज्ञा) (चैतन्य) जागने लगता है। यह छोटा सा सूत्र हमारे जागने की अभूतपूर्व कुंजी है, अन्यथा तुम जागने के लाख उपायों में पड़े रहोगे, फिर भी आंख खुल जाए यह बड़ी ही बात है, तुम्हें चाबी मिल गई अब आगे तुम्हारी अपनी मर्जी ही सर्वोपरि है, तुम असली चाबी को ना उठाते हुए नकली चाबियों के गुच्छे से चैतन्य के ताले को खोलने में पड़े रहो, यह इस बात का संकेत है कि तुम वास्तव में जागना नहीं चाहते, सोए रहना तुमने अपनी झूठी नियति बना ली मात्र है, अन्यथा तुम मनुष्य अवस्था हो, तुम्हारी मूल नियति जागरण है, तुम नकली चाबियों को कूड़ेदान में फेंक दो, चुपके से धैर्यपूर्वक सहज समर्पण भाव से असली को उठा लो और परिणाम खुद देख लो, खुद अमृत का स्वाद ले लो, मृगतृष्णा से मुक्त हो जाओ ॥ॐ॥



नियम से बंधकर जीने वाला व्यक्ति कभी भी,
कभी भी परम सत्य के जीवन की तरफ कदम नहीं उठा पाता है। मैं यह
नहीं कह रहा हूँ कि नियम तोड़कर जीएं। मैं यह भी नहीं कह रहा हूँ कि
मर्यादाएं छोड़ दें। उस फकीर ने भी उस अंधे को नहीं कहा था कि जब
तक आंख ठीक न हो जाए, तो तू अपनी लकड़ी फेंक दे। मैं भी नहीं
कहता हूँ। लकड़ी रखनी ही पड़ेगी, जब तक आंख फूटी है; लेकिन
लकड़ी को ही आंख समझ लेना नासमझी है। और यह जिद करना कि
आंख खुल जाएगी, तब भी हम लकड़ी को सम्हालकर ही चलेंगे,
पागलपन है।

ओशो
निर्वाण उपनिषद



25

2 comments • 2 shares



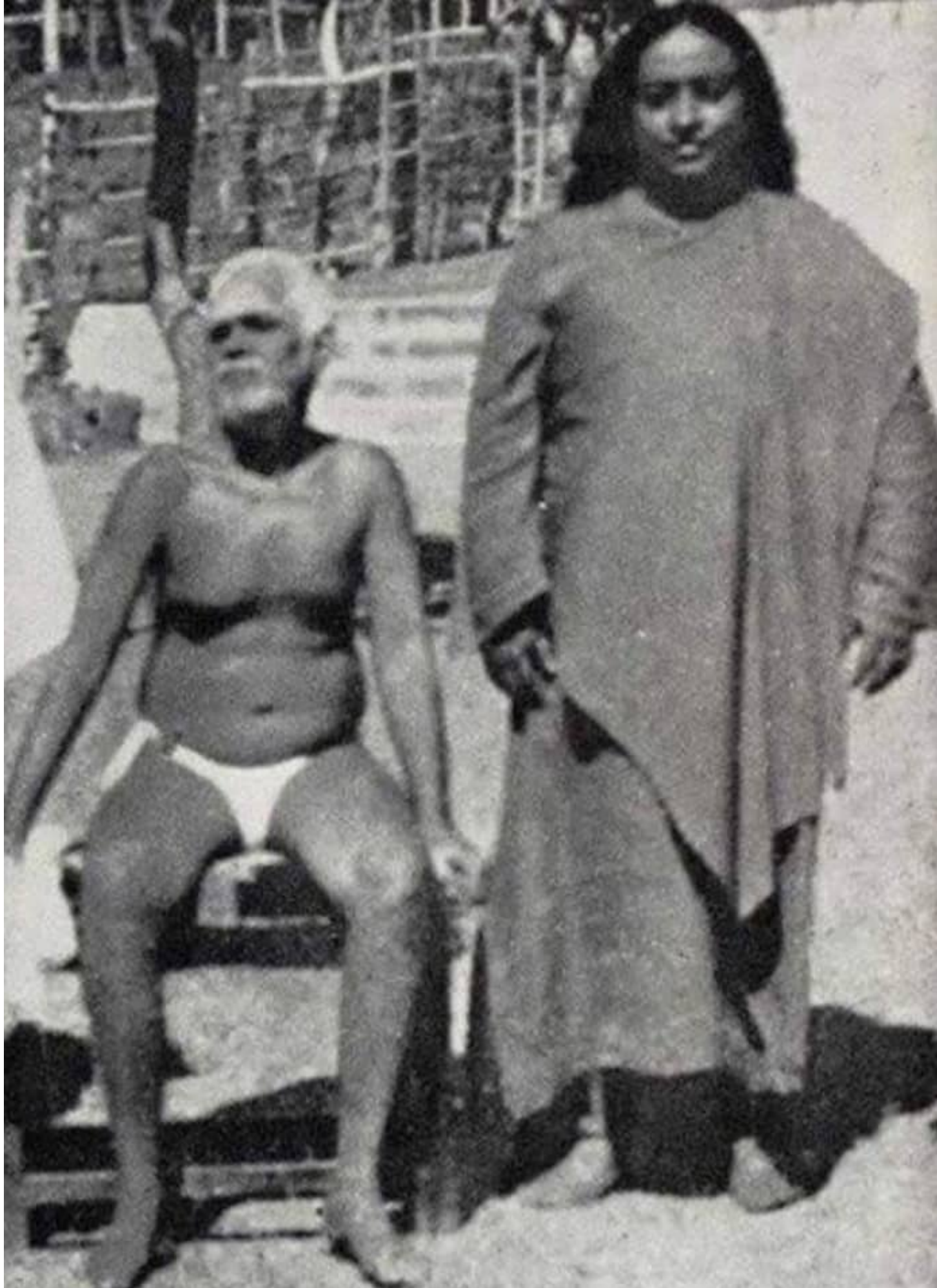
Like



Send



Share



10:11 pm

VoLTE 4G 29%



ध्यान करते है, नींद आ जाती है!

201



55



Give



अपो दीपो भव

🙏 अपनी ऊर्जा बचाएं और ध्यान में लगाएं 🙏



Add a comment...



सारी चीजे आती है
और जाती है। तुम साक्षी हो जाओ

OSHO_GYAN



692



15



708



Give



Osho_Gyan

Vaghela Uvrajshinh commented: Pahali bar
duniyame naman karane ka man karata hey is A...



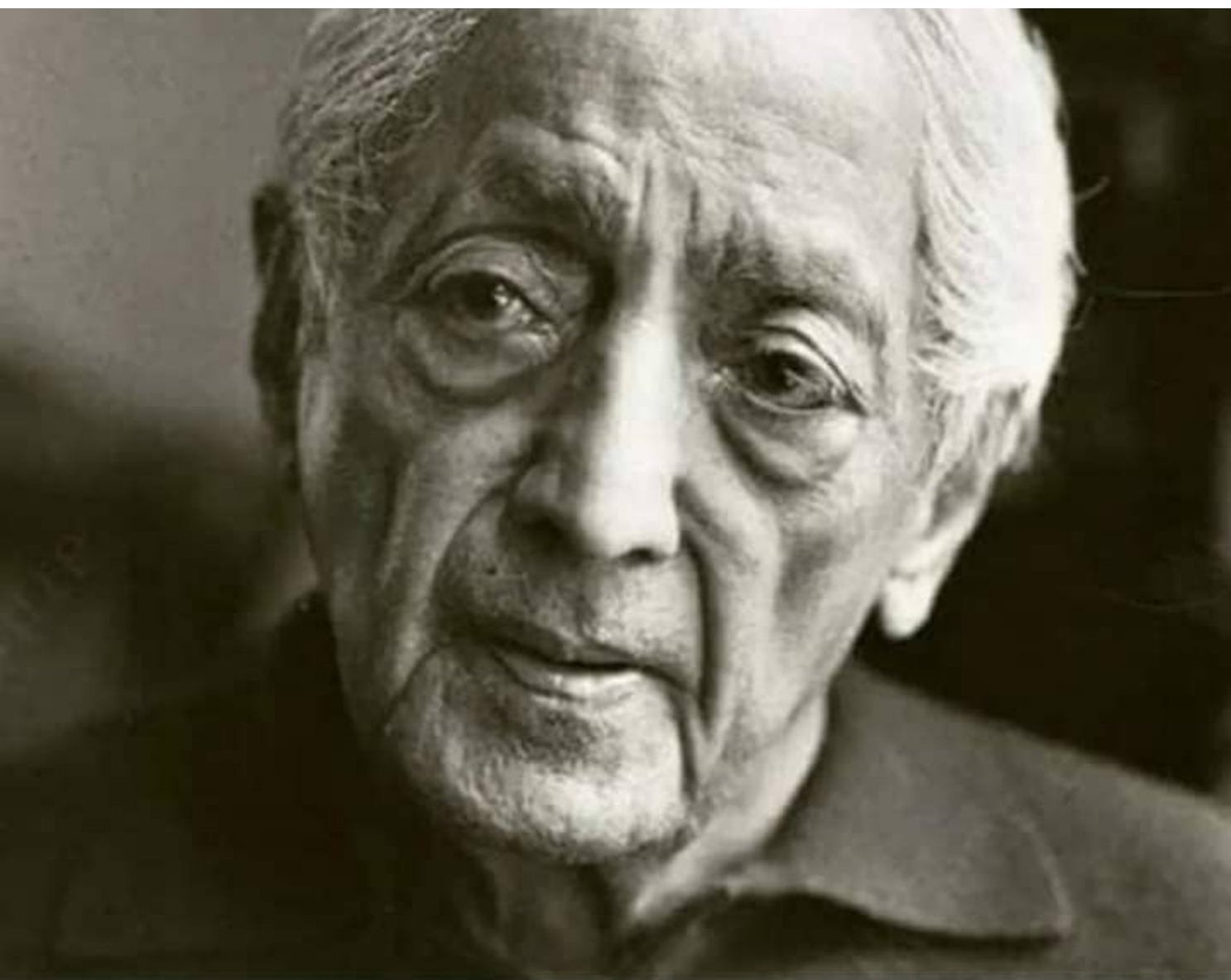


जब भूखा होता है आदमी
तो भोजन को तलाशता है
तब वह यह दार्शनिक सवाल नहीं उठाता
कि मुझे यह भूख कैसे लग जाती है
ऐसे ही जीवन सत्य का खोजी
वास्तविक जीवन सत्य को ही तलाशता है
तब वह यह प्रश्न नहीं उठाता
कि जीवन सत्य की क्या जरूरत है मुझे !



#ObserveWithJKrishnamurti #OWJK

#स्व_ज्ञान_दर्पण_जे_कृष्णमूर्ति



Meditation is not an intellectual process - which is still within the area of thought. Meditation is the freedom from thought, and a movement in the ecstasy of truth.

J KRISHNAMURTI, THE ONLY REVOLUTION



Usha

Today, 11:13 am



पहले लोग रिश्तों को ईमानदारी
से निभाते थे, लेकिन आजकल
के लोग रिश्तों को अपना
नफा-नुकसान देखकर निभाते
हैं!!!

"मेरे अनुभव"

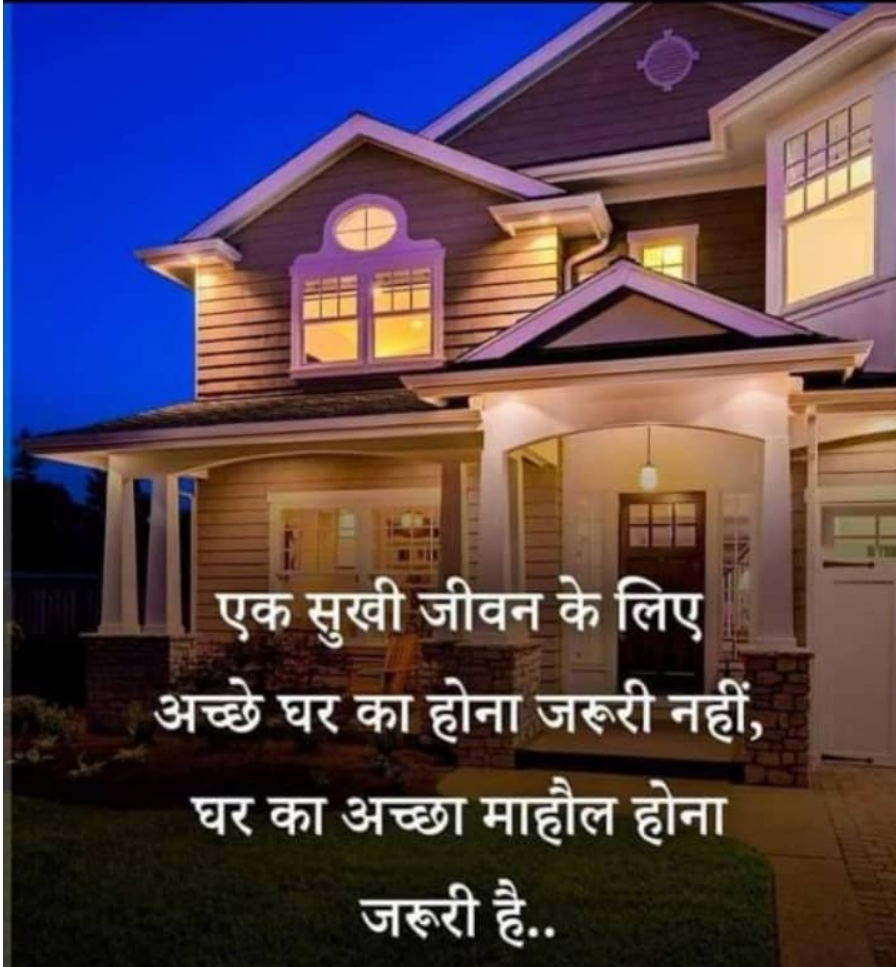


^
Reply



Usha

Today, 11:13 am



एक सुखी जीवन के लिए
अच्छे घर का होना जरूरी नहीं,
घर का अच्छा माहौल होना
जरूरी है..



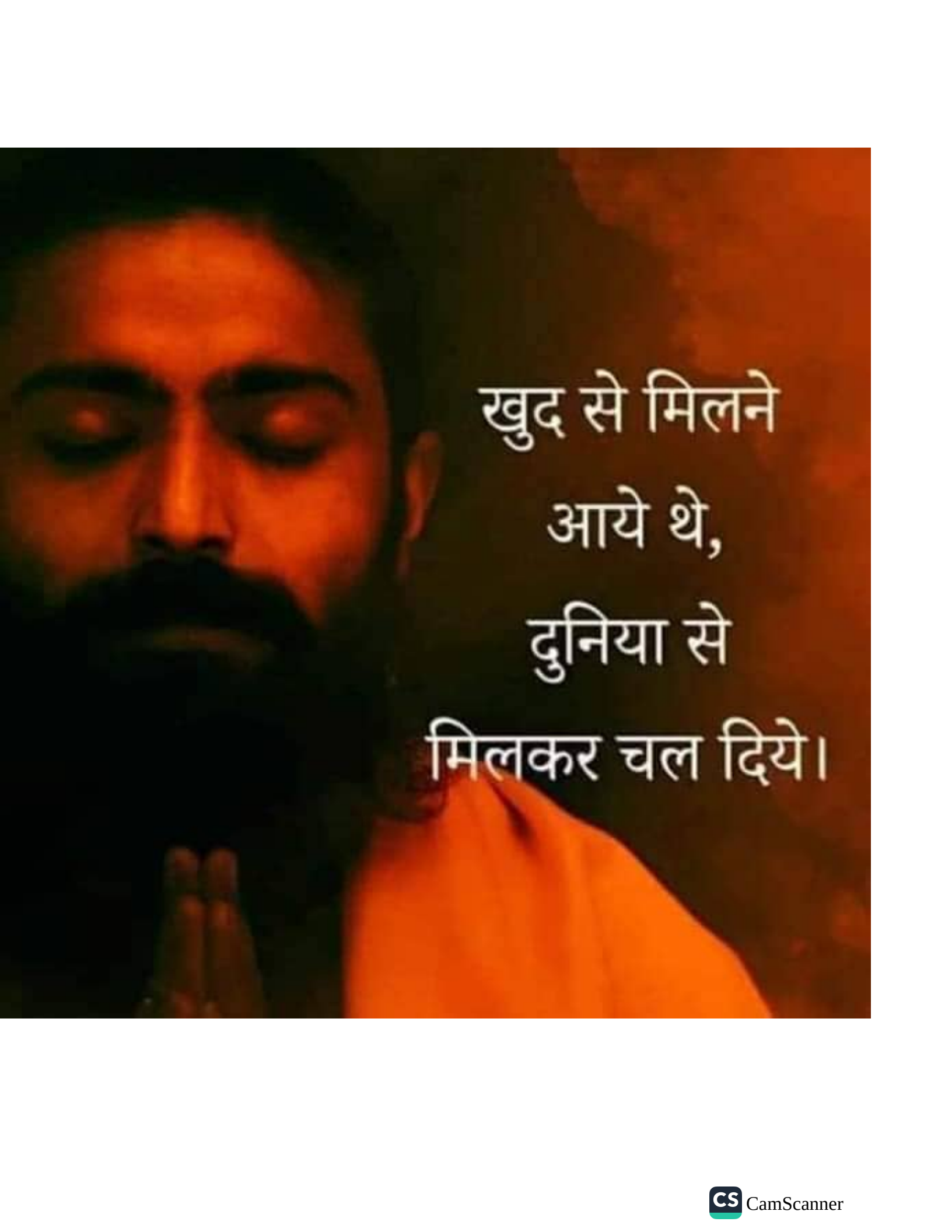
Reply





सांसाकि व्यक्ति मैं उसी को कहता हूं जो इस संसार में अपना घर बना रहा है। हमारा शब्द बड़ा प्यारा है। हम सांसारिक को 'गृहस्थ' कहते हैं। लेकिन तुमने उसका ऊपरी अर्थ ही सुना है। तुमने इतना ही जाना है कि जो घर में रहता है, वहा संसारी है। नहीं, घर में तो संन्यासी भी रहते हैं। छप्पर तो उन्हें भी चाहिए पड़ेगा। उस घर को चाहे आश्रम कहो, चाहे उस घर को मंदिर कहो, चाहे स्थानक कहो, मस्जिद कहो—इससे कुछ फर्क पड़ता नहीं। घर तो उन्हें भी चाहिए होगा। नहीं, घर का भेद नहीं है, भेद कही गहरे में होगा।

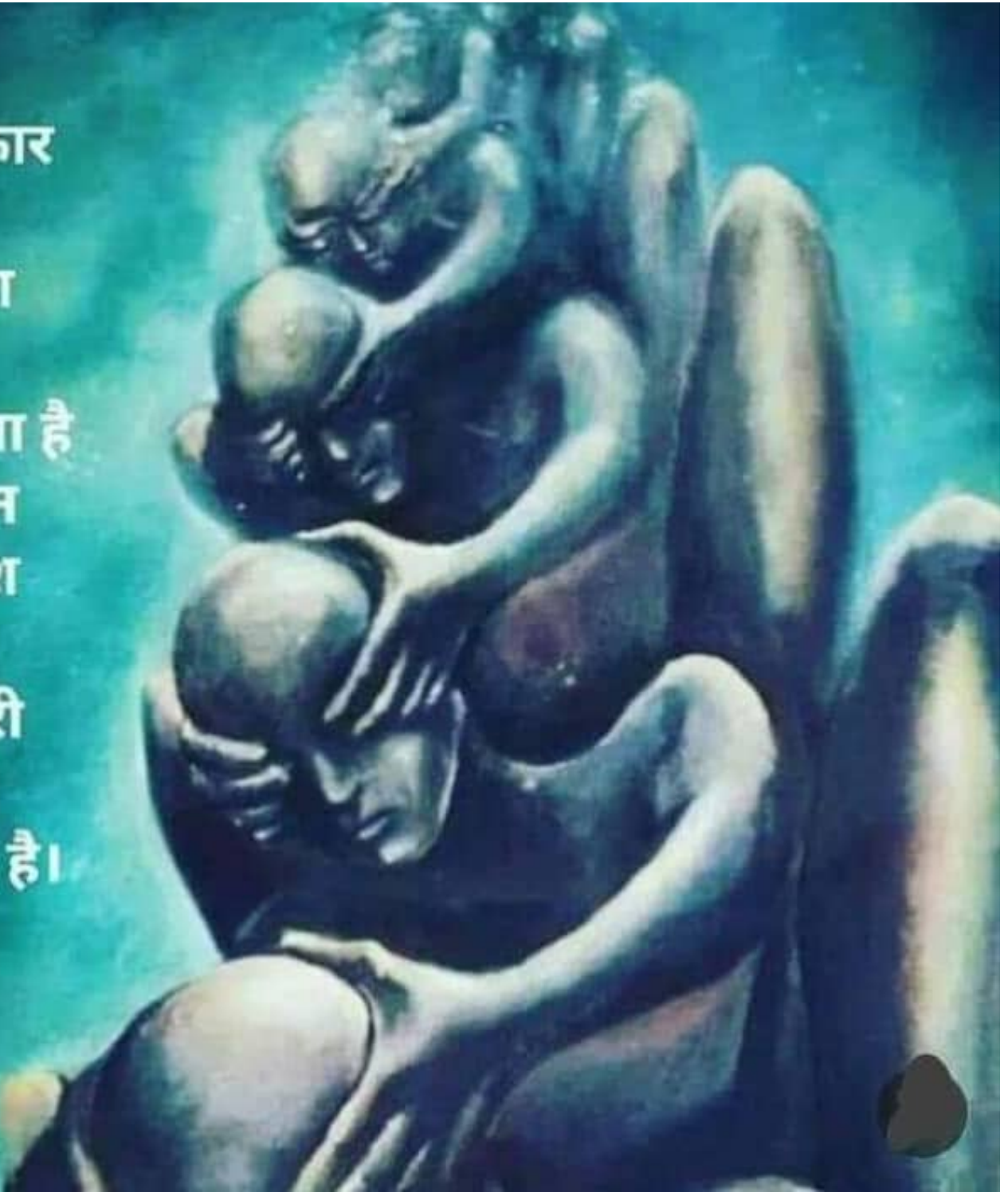
संसारी मैं उसको कहता हूं, जो इस संसार में घर बना रहा है; जो सोचता है, यहां घर बन जाएगा; जो सोचता है कि हम यहां के वासी हो जाएंगे, हम किसी तरह उपाय कर लेंगे। और संन्यासी वही है जिसे यह बात समझ में आ गई है : यहां घर बनता ही नहीं। जैसे दो और दो पांच नहीं होते ऐसे उसे बात समझ में आ गई कि यहां घर बनता ही नहीं। तुम बनाओ, गिर-गिर जाता है। यहां जितने घर बनाओ, सभी ताश के पत्तों के घर सिद्ध होते हैं। यहां तुम बनाओ कितने ही घर, सब जैसे रेत में बच्चे घर बनाते हैं, ऐसे सिद्ध होते हैं; हवा का झोंका आया नहीं कि गए। ऐसे मौत का झोंका आता है, सब विसर्जित हो जाता है। यहां घर कोई बना नहीं पाया। ❤️ ~Osho~ ❤️



खुद से मिलने
आये थे,
दुनिया से
मिलकर चल दिये।

"पहुंचने से अधिक ज़रूरी,
ठीक से यात्रा करना है"

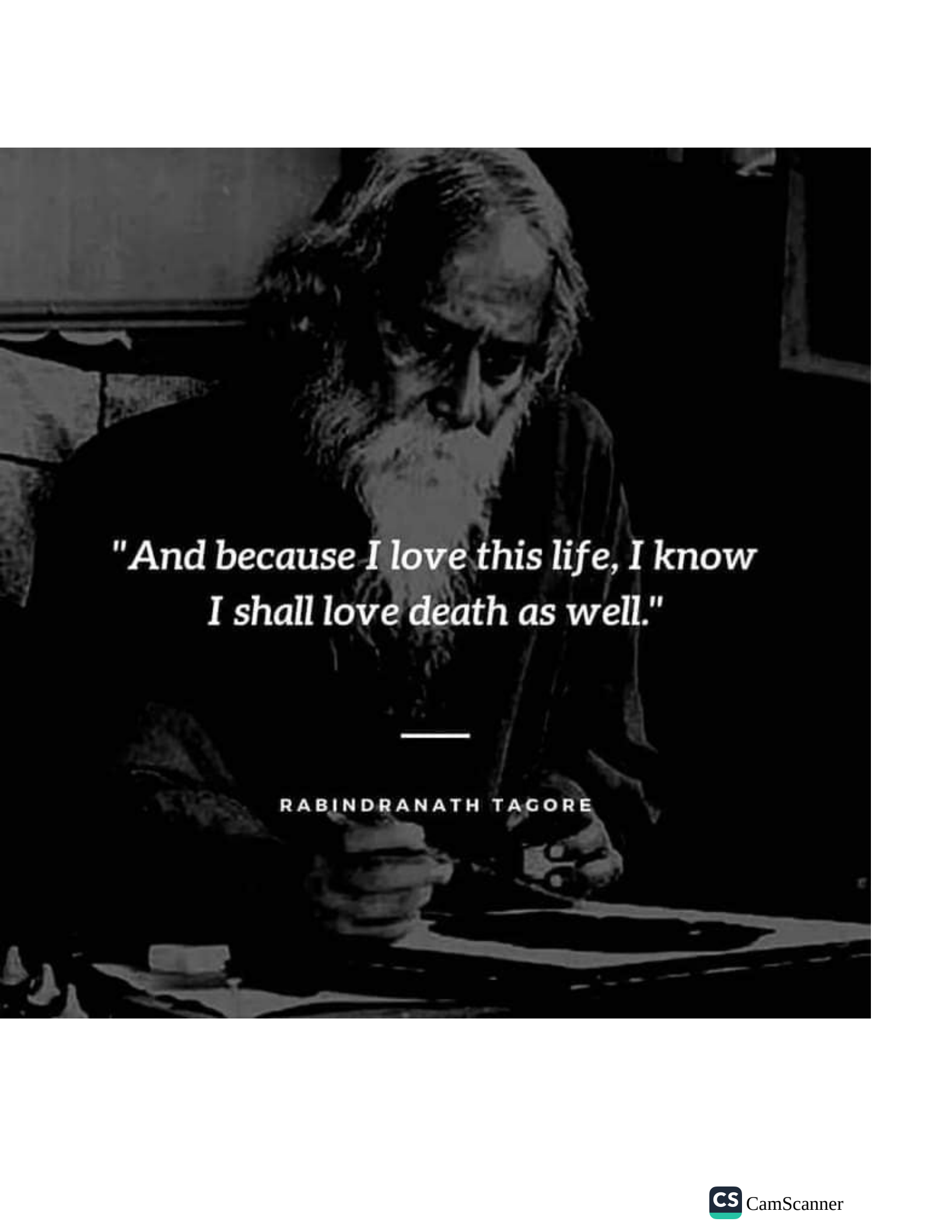
अंधकार
तो
परंपरा
से
मिलता है
लेकिन
प्रकाश
तो
तुम्हारी
निजी
खोज है।





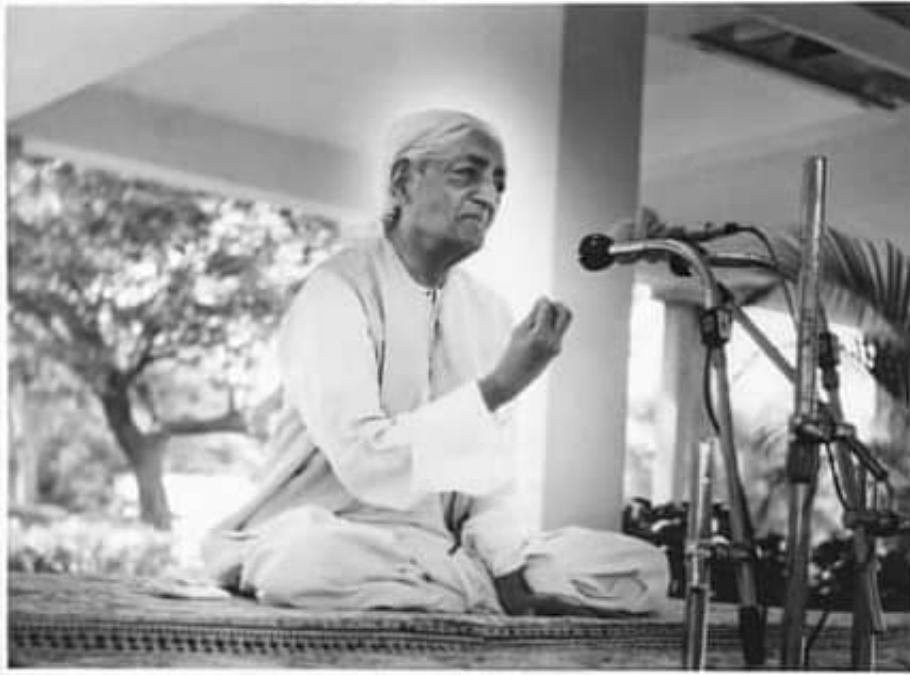
**We are concerned with
opinions, and opinions
are not the truth.
Discussing opinions has
very little meaning; it
only leads to dialectical,
clever, intellectual
argumentation.**

**Krishnamurti - Public Talk 1, Saanen,
10 July 1966**



*"And because I love this life, I know
I shall love death as well."*

RABINDRANATH TAGORE

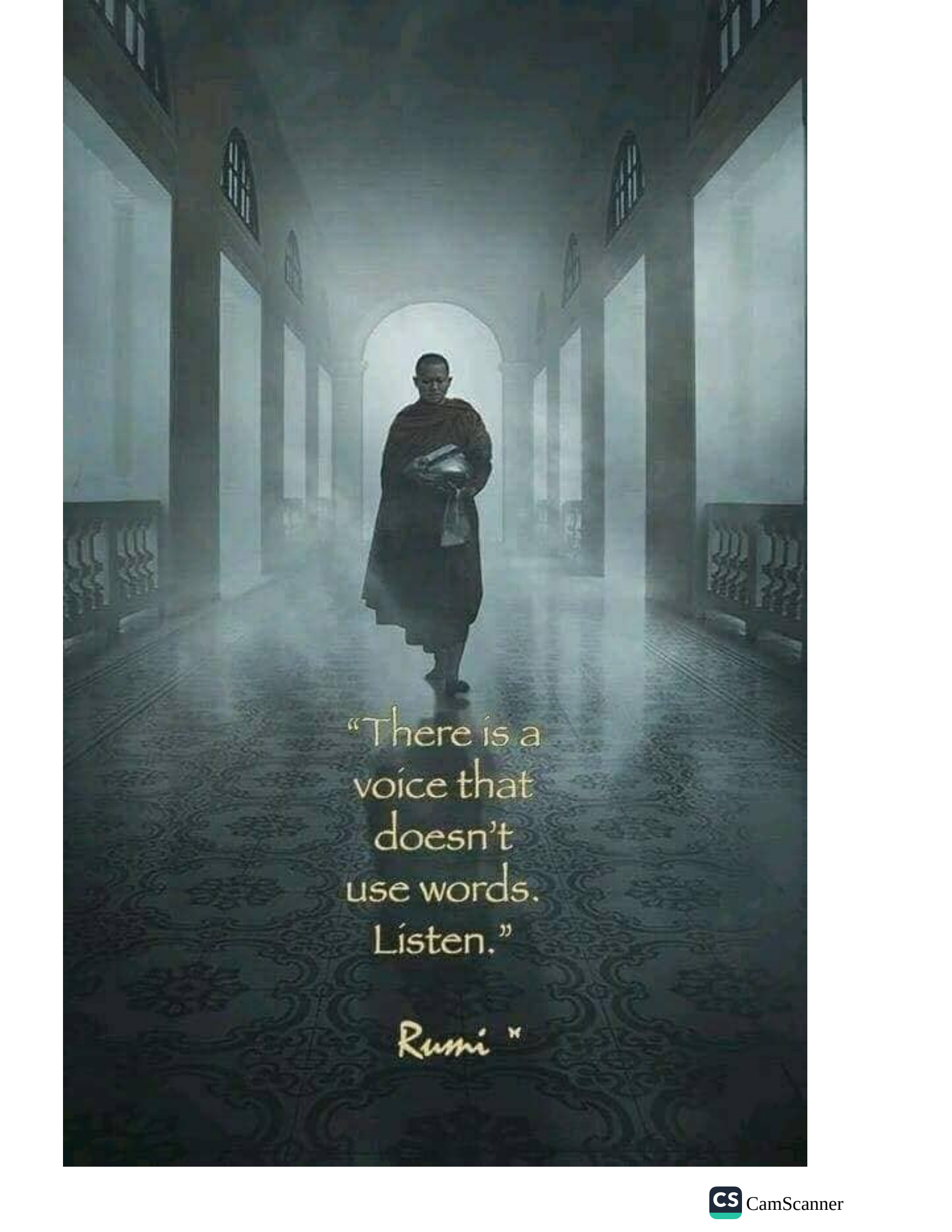


Freedom and love go together. Love is not a reaction. If I love you because you love me, that is mere trade, a thing to be bought in the market; it is not love. To love is not to ask anything in return, not even to feel that you are giving something – and it is only such love that can know freedom.

J. Krishnamurti—Think on These Things—Chapter 3



सोच
समझ कर
रखना,
हमारी
सल्तनत में
कदम।
हमारी
मोहब्बत की
कैद में
फिर,
रिहाई नहीं
मिलती।

A Buddhist monk in a dark robe is walking towards the camera in a long, arched hallway. The floor is highly reflective and covered in a complex, repeating geometric pattern. The walls are white with arched windows and doorways. The air is thick with mist or smoke, creating a hazy, ethereal atmosphere. The lighting is soft and diffused, coming from the far end of the hallway.

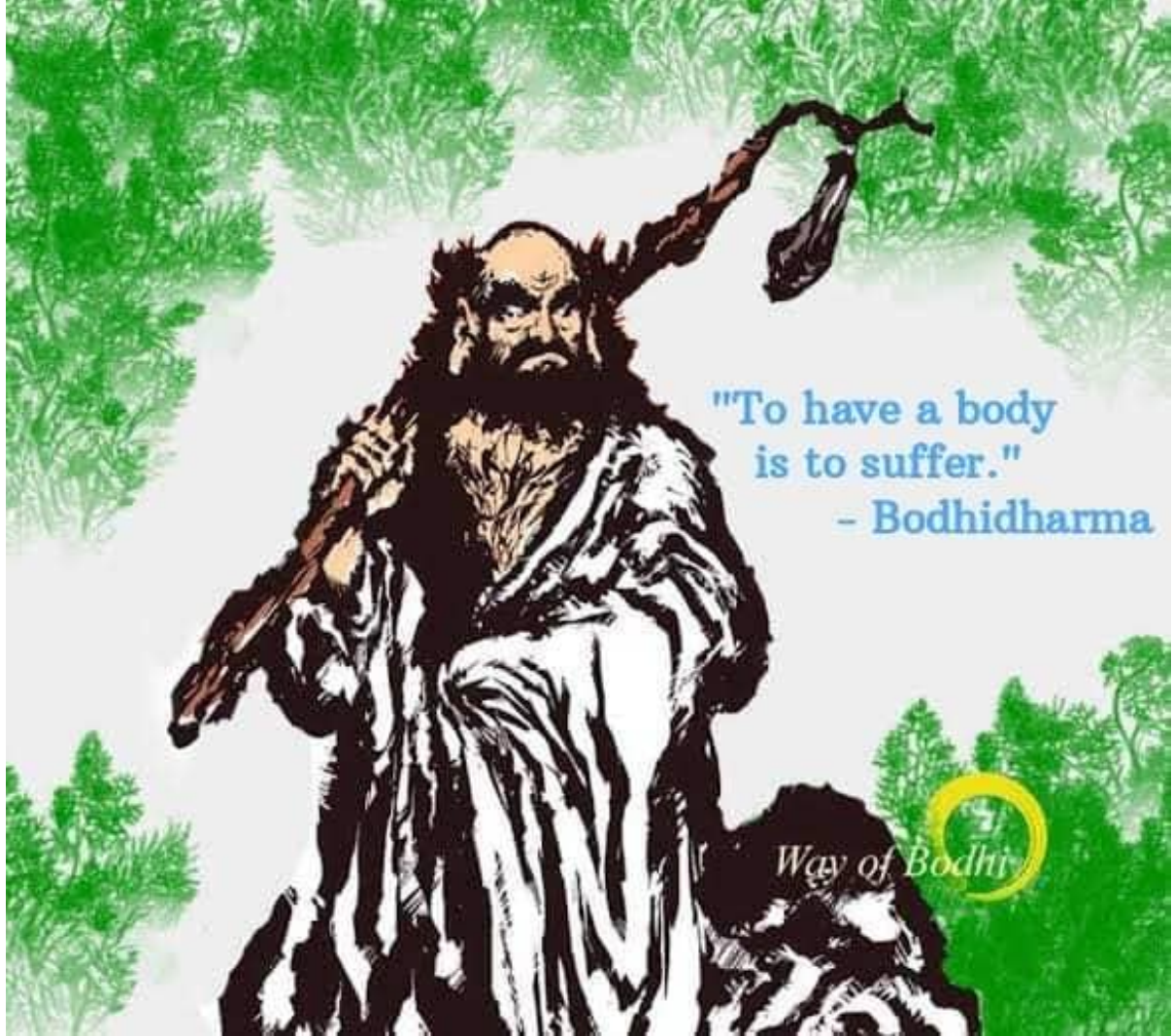
“There is a
voice that
doesn’t
use words.
Listen.”

Rumi ”

ब्रह्म का अर्थ है अनंत,
असीम फैलाव। और
मोक्ष की खोज
स्वतंत्रता की खोज है।
सीमित शरीर में तुम
स्वतंत्र नहीं हो सकते
हो। एक स्थान में तुम
बंध जाते हो। 'कहीं नहीं'
या 'सब कहीं' में ही तुम
स्वतंत्र हो सकते हो।

ओशो







हमने यीशु के पुनर्जीवित होने के बारे में बहुत कुछ सुना है। लेकिन किसी ने भी बोधिधर्म के पुनर्जीवित होने के बारे में ज्यादा बात नहीं की है। शायद वह केवल कोमा में था जब उन्होंने उसे दफनाया, और फिर वह होश में आया, कब्र से बाहर निकला, एक चप्पल वहीं छोड़ दी और दूसरी चप्पल अपनी लाठी पर लटका ली, और अपनी योजना के अनुसार वह चला गया।

वह चाहता था कि वह हिमालय की अनन्त बर्फ में मरे। वह चाहता था कि उसकी कोई कब्र, कोई मंदिर, कोई मूर्ति न हो। वह पूजा के लिए अपने पीछे कोई पदचिह्न नहीं छोड़ना चाहता था। जो लोग उससे प्रेम करते हैं उन्हें अपने अस्तित्व में प्रवेश करना चाहिए।

"मैं पूजा जाने वाला नहीं हूँ" - और वह लगभग हवा की तरह गायब हो गया। किसी ने उसके बारे में कुछ नहीं सुना - क्या हुआ, कहाँ उसकी मृत्यु हुई। वह अवश्य ही हिमालय की अनंत बर्फ में कहीं दफन हो गया होगा।

- Bodhidharma : To Seek Nothing is Bliss.

OSHO.. 🙏🌹

**OSHO FRAGRANCE FRIENDS**

अज्ञात अज्ञात · 3h · 🌐

रात में किसी शिष्य ने बदला लेने के लिए बोधिधर्म को जहर दे दिया, क्योंकि उसे उत्तराधिकारी के रूप में नहीं चुना गया था। शिष्यों ने उसे दफना दिया।

और अजीब कहानी यह है कि तीन साल बाद उसे एक सरकारी अधिकारी ने चीन से हिमालय की ओर जाते हुए देखा। उसके हाथ में उसकी लाठी थी और उसकी एक चप्पल लाठी से लटकी हुई थी - और वह नंगे पैर था। यह अधिकारी उसे जानता था, वह कई बार उसके पास गया था, और वह उससे प्रेम करता था, यह जानते हुए भी कि बोधिधर्म थोड़ा सनकी था।

उसने बोधिधर्म से पूछा, "यह लाठी और इससे लटकी एक चप्पल का क्या मतलब है?" बोधिधर्म ने कहा, "जल्द ही तुम्हें पता चल जाएगा। अगर तुम मेरे शिष्यों से मिलो तो बस उन्हें बताना कि मैं हमेशा के लिए हिमालय जा रहा हूँ।"

अधिकारी तुरंत जितनी जल्दी हो सकता था, पहाड़ पर उस मठ में पहुंचा जहां बोधिधर्म रहता था। और वहाँ उसने सुना कि उसे ज़हर दे दिया गया था और वह मर चुका था...और वहां उसकी कब्र थी। उस अधिकारी को इसके बारे में नहीं पता था, क्योंकि वह साम्राज्य की सीमा रेखा पर तैनात था। उसने कहा, "हे भगवान, लेकिन मैंने उसे देखा है, और मैं धोखा नहीं खा सकता क्योंकि मैंने उसे पहले भी कई बार देखा है। वह वही आदमी था, वही तेज़ आँखें, वही उग्र और जंगली दृष्टिकोण, और इसके अलावा वह अपनी लाठी पर एक चप्पल लटकाये हुए था।

शिष्य अपनी जिज्ञासा पर नियंत्रण नहीं रख सके और उन्होंने कब्र खोल दी। वहां उन्हें केवल एक चप्पल ही मिली। और तब अधिकारी को समझ में आया कि उसने ऐसा क्यों कहा था, "तुम्हें इसका अर्थ पता चल जाएगा, जल्द ही तुम्हें पता चल जाएगा।"





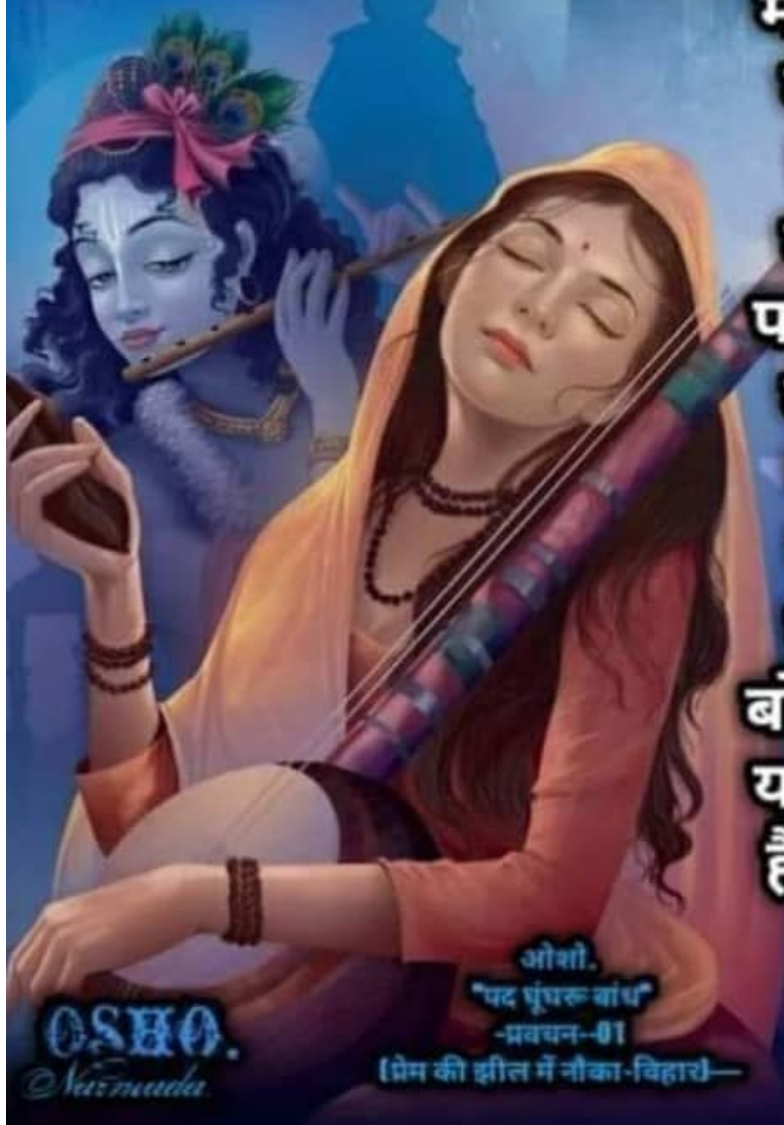


बहुत

बार मौके आए
जब मैं मीरा पर
बोलता; लेकिन
टालता गया।
क्योंकि मीरा
पर कुछ बोलना
कठिन है।

महावीर पर बोलना
बहुत आसान है।
बुद्ध पर बोलना
बहुत आसान है।
पतंजलि पर बोलना
बहुत आसान है।
मीरा पर बोलना
बहुत कठिन है।
क्योंकि यह बात
बोलने की है ही नहीं;
यह बात तो होने की
है। यह भाव की है।

ओशो.



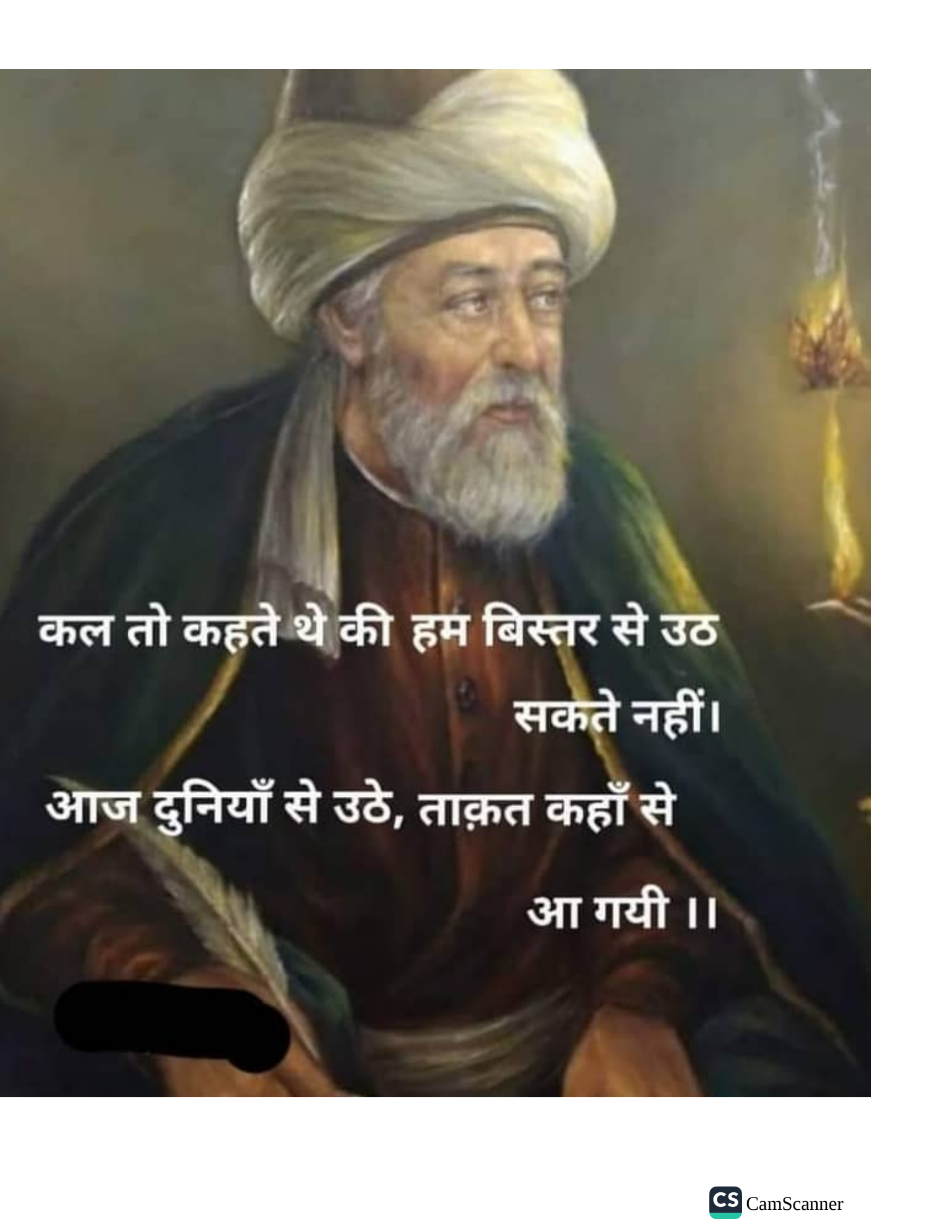
ओशो.

"पद धूमक बांध"
-प्रवचन-४१

[प्रेम की झील में नौका-बिहारी—

OSHO.

© New media.



कल तो कहते थे की हम बिस्तर से उठ
सकते नहीं।
आज दुनियाँ से उठे, ताक़त कहाँ से
आ गयी ।।



मिथय पाव यह स्त्रा यहा नातर कस जा गइ:

कृष्ण के सामने मीरा आकर नाच रही है,

भगत देख राजी हुई, जगत देख रोई
अंसुवन जल सींचि-सींचि, प्रेम-बेलि बोयी
अब तो बेल फैल गई, जाने सब कोई
मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई

उसने कहा: "ऐ औरत! तुझे समझ है कि इस मंदिर में स्त्री का निषेध है?"

मीरा ने सुना। मीरा ने कहा: "मैं तो सोचती थी, कि कृष्ण के अतिरिक्त और कोई पुरुष है नहीं। तो तुम भी पुरुष हो? मैं तो कृष्ण को ही बस पुरुष मानती हूं, और तो सारा जगत उनकी गोपी है; उनके ही साथ रास चल रहा है। तो तुम भी पुरुष हो? मैंने सोचा नहीं था कि दो पुरुष हैं। तो तुम प्रतियोगी हो?"

लेकिन अड़चनें शुरू हो गईं। इस घटना के बाद मीरा को वृंदावन में नहीं टिकने दिया गया। मीरा को वृंदावन भी छोड़ देना पड़ा। फिर वह द्वारिका चली गई।

वर्षों के बाद राजस्थान की राजनीति बदली, राजा बदला, राणा सांगा का सबसे छोटा बेटा राजा उदयसिंह मेवाड़ की गद्दी पर बैठा। वह राणा सांगा का बेटा था और राणा प्रताप का पिता। उदयसिंह को बड़ा भाव था मीरा के प्रति। उसने अनेक संदेशवाहक भेजे कि मीरा को वापस लिवा लाओ। यह हमारा अपमान है। यह राजस्थान का अपमान है कि मीरा गांव-गांव भटके, यहां-वहां जाए। यह लांछन हम पर सदा रहेगा। उसे लिवा लाओ। वह वापस लौट आए। हम भूल-चूकों के लिए क्षमा चाहते हैं। जो अतीत में हुआ, हुआ।

गए लोग, पंडितों को भेजा, पुरोहितों को भेजा, समझाने-बुझाने; लेकिन मीरा सदा समझा कर कह देती कि अब कहां आना-जाना! अब इस प्राण-प्यारे के मंदिर को छोड़ कर कहां जाएं!

वह रणछोड़दासजी के मंदिर में द्वारिका में मस्त थी।



साधारण होना ⁶

बड़ी असाधारण बात है

लाओत्से  Give



Naye bharat ke khoj 





You ask for my ten commandments.

This is very difficult
because I am against any sort of
commandment.
Yet, just for the fun of it I set down
what follows:

1. Obey no orders except those from
within.

2. The only God is life itself.

**3. Truth is within, do not look for it
elsewhere.**

4. Love is prayer.

5. Emptiness is the door to truth;
it is the means, the end and the
achievement.

6. Life is here and now.

7. Live fully awake.

8. Do not swim, float.

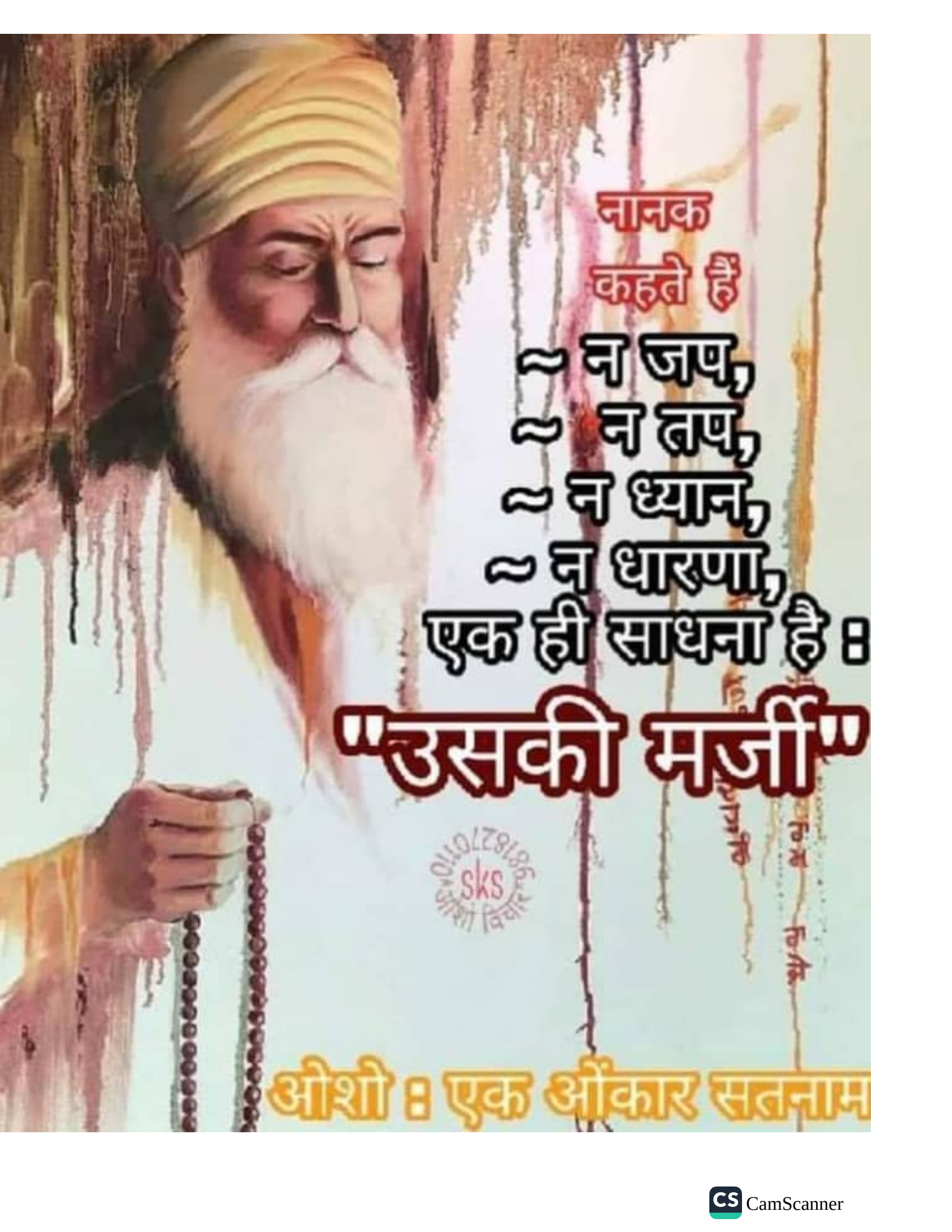
**9. Die each moment so that you are
renewed each moment.**

**10. Stop seeking. That which is, is:
stop and see.**

- Osho

A Cup of Tea, Letter # 124

6:18 pm



नानक
कहते हैं

~ न जप,
~ न तप,
~ न ध्यान,
~ न धारणा,
एक ही साधना है :

"उसकी मर्जी"



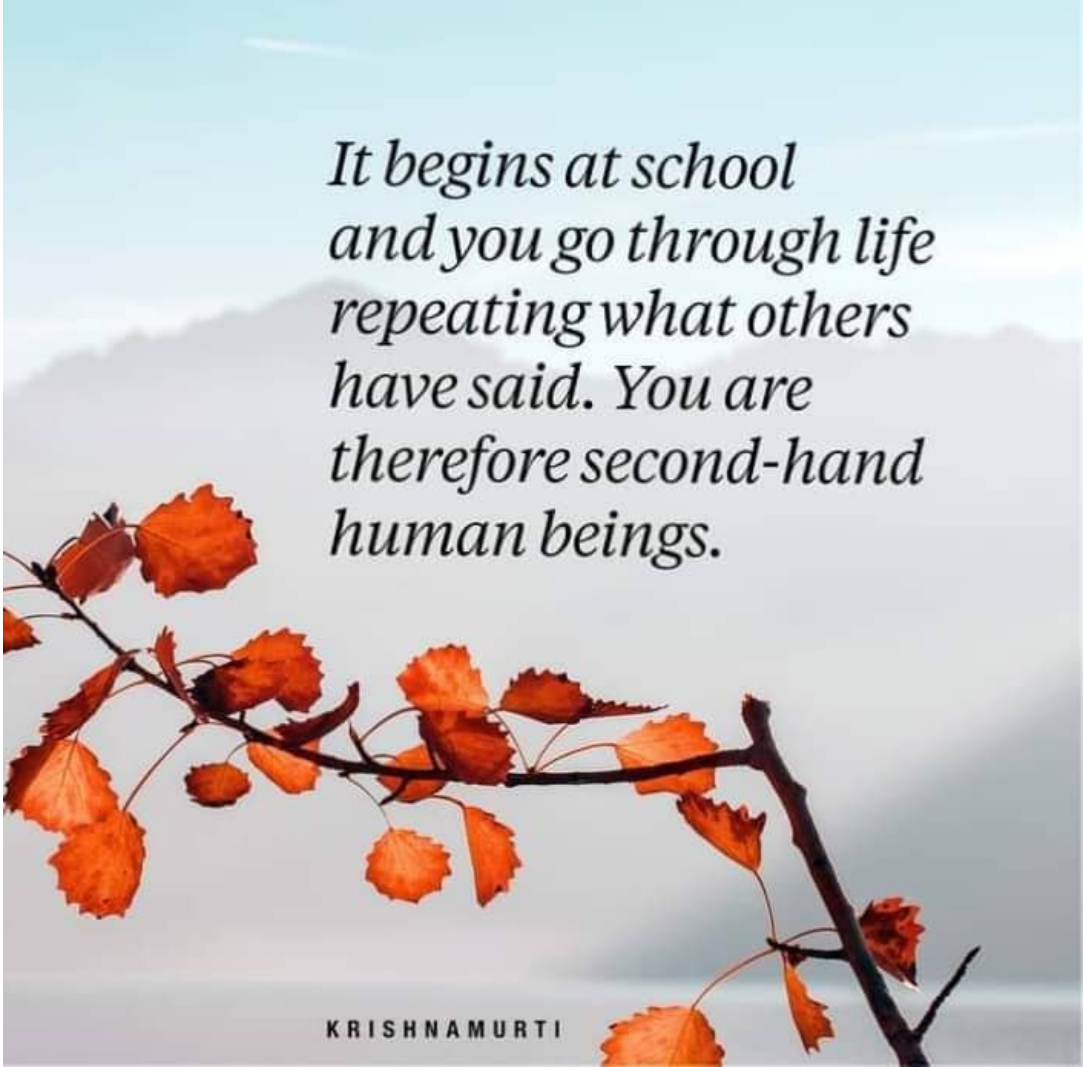
ओशी : एक ओंकार सतनाम



नानक नाम जहाज़ है!
"चढ़े सो उतरे पार..
जो श्रद्धा कर सेवदें, गुरु है
तारणहार.!!



**इस पृथ्वी पर ना कुछ
खोने को है!
और ना पाने को, बस
वर्तमान के पल से प्रेम
कर लो, काफी है.!**

A photograph of a dark, thin branch extending from the left towards the right. It is covered with several bright orange, lobed leaves, characteristic of autumn foliage. The background is a soft-focus sky with light blue and white clouds. The text is overlaid on the upper right portion of the image.

*It begins at school
and you go through life
repeating what others
have said. You are
therefore second-hand
human beings.*

KRISHNAMURTI

facebook



हा।

और

एक चौथा वर्ग है,,,,

जो सिर्फ ब्रह्म की तलाश में है।

जो कहता है: सब व्यर्थ है।

न तो आलस्य का जीवन अर्थपूर्ण है, क्योंकि वह प्रमाद है। होश चाहिये।

न धन के पीछे दौड़ अर्थपूर्ण है, क्योंकि वह कहीं भी नहीं ले जाती।

उससे कोई कहीं पहुंचता नहीं। धन तो मिल जाता है, आत्मा खो जाती है।

नहीं, ब्रह्म से कम पर राजी नहीं होना है।

ब्राह्मण कहता है--तुम कुछ भी नहीं हो, तभी तो जीवन का परम धन उपलब्ध होगा।

जब तुम नहीं रहोगे, तभी तो ब्रह्म उतरेगा।

आलस्य तोड़ना है शूद्र जैसा;

धन की दौड़ छोड़नी है वैश्य जैसी;

अहंकार छोड़ना है क्षत्रिय जैसा;

तब कभी कोई ब्राह्मण हो पाता है।

ये चार व्यक्तित्व के ढंग हैं।

ऐसे चार तरह के लोग हैं जमीन में।

इन चार में तुम बराबर बांट लोगे।

पांचवां आदमी तुम न पाओगे।

और चार से कम में भी काम न चलेगा, तीन से भी काम न चलेगा।

इसलिए दुनिया में जितने भी मनुष्यों को बांटने के प्रयोग हुए हैं, सबने चार में बांटा है।

ओशो...दीया तले अंधेरा



WE ARE FRIGHTENED TO BE SIMPLE. WE WANT THINGS TO BE COMPLICATED. THE MORE THINGS ARE COMPLICATED, THE MORE WE THINK WE ARE INTELLECTUAL.

CP

JIDDU KRISHNAMURTI

Public Talk 3, Sydney, 25 November 1970



अति सरलता और स्पष्टता के साथ बोलते थे जे कृष्णमूर्ति
मगर शायद उनका भीतरी अवलोकन और भी स्पष्ट था
इसलिए पहले स्पष्ट अवलोकन की फिक्र करिए दोस्तों
फिर भाषा तो अपने से स्पष्ट और वास्तविक होती चली जाएगी !



#ObserveWithJKrishnamurti #OWJK

#स्व_ज्ञान_दर्पण_जे_कृष्णमूर्ति



**WE ARE FRIGHTENED TO BE SIMPLE. WE WANT
THINGS TO BE COMPLICATED. THE MORE THINGS
ARE COMPLICATED, THE MORE WE THINK WE ARE
INTELLECTUAL.**

CP

JIDDU KRISHNAMURTI

Public Talk 3, Sydney, 25 November 1970



93

7 comments • 9 shares



Like



Comment



Send



Share



Happy Thoughts

ईश्वर कहाँ से आया ?

ईश्वर कहाँ से आया ? यह सवाल सुनकर लगता है कि बिल्कुल सही सवाल है मगर सोचकर देखेंगे तो इसका अर्थ होता है कि वह कहीं पर था और अब वहाँ पर नहीं है । जब वह यहाँ पर आ गया तब वह वहाँ पर नहीं होगा, जहाँ था तो क्या वह एक जगह से दूसरी जगह घूमता रहता है ? ईश्वर तो हर जगह है । "कहाँ से आया" यह सवाल ही गलत है । जैसे आपसे कोई पूछता है कि लाल रंग टेढ़ा होता है या सीधा ? तो आप कहेंगे लाल रंग का टेढ़ा या सीधा होने से कोई संबंध नहीं है । यह सवाल ही गलत है । इस तरह से ईश्वर कहाँ से आया ? कहाँ था ? यह सोचना फिजूल है । ईश्वर तो हर जगह है, "कहाँ से आया" यह सवाल ही गलत है ।...सरश्री



जिसके लिए कण कण में
"परमात्मा नहीं है,
उसके लिए मंदिर और
मस्जिदों में परमात्मा कैसे
हो सकता है?

ओशो



दिनेश कौशिक · 1d · 🌐

एक भोर की बात है! अभी अंधेरा ही था,, जैसे ही मंदिर के द्वार खुले!
कि एक अछूत मंदिर की सीढ़ियाँ चढ़ कर द्वार पर पहुंच गया.!
वह द्वार के भीतर पैर रखने को ही था कि, पुजारी क्रोध से गरजा: "रुक,
रुक, पामर! एक पग भी आगे ब.ढाया तो तेरा सर्वनाश हो जाएगा। मूढ़!
परमात्मा के मंदिर की पवित्र सीढ़ियाँ तूने अपवित्र कर दी हैं।"

सहमे हुए अछूत ने उठा हुआ पैर वापस ले लिया। उसकी आंखों में आंसू
आ गए। परमात्मा के लिए उसके प्यासे हृदय में जैसे किसी ने छुरी भोंक
दी थी। वह रोता हुआ बोला: "हे परमात्मा, मेरा ऐसा कौन सा पाप है,
जिसके कारण तेरे दर्शन मुझे नहीं हो सकते हैं? "

परमात्मा की ओर से पुजारी ने कहा: "तू जन्म से अशुद्ध है, पाप-भंडार
है।" उस अछूत ने प्रार्थना की: "फिर मैं शुद्धि के लिए साधना करूंगा,
लेकिन प्रभु-दर्शन के बिना नहीं मरना चाहता हूं।" और फिर वर्षों तक
उस अछूत का कोई पता न चला। वह न मालूम कहां चला गया था।
लोग उसे भूल ही गए थे और तब अचानक एक दिन वह गांव में आया।
गांव के प्रवेश-द्वार पर ही वह देवालय था। पुजारी ने उसे देवालय के
पास से जाते देखा। एक अपूर्व तेज उसके चेहरे पर था। एक अपूर्व शांति
उसकी आंखों में थी। उसके आसपास भी जैसे प्रकाश का एक मंडल
था। लेकिन उसने देवालय की ओर आंख भी उठा कर नहीं देखा। वह
उस ओर से बिल्कुल निरपेक्ष और असंग दीख रहा था।
लेकिन पुजारी से न रहा गया। उसने उसे पुकारा और पूछा: "क्यों रे!
क्या शुद्धि की साधना पूरी कर ली? " वह अछूत इस पर हंसा और उसने
स्वीकृति में सिर हिलाया। पुजारी ने पूछा: "फिर मंदिर में क्यों नहीं
आता? " वह अछूत बोला: "महाराज, क्या करूं आकर? प्रभु ने दर्शन
दिए तो कहा: मेरी खोज में मंदिर क्यों गया था? वहां कुछ भी नहीं है। मैं
तो स्वयं ही कभी उन मंदिरों में नहीं गया हूं। और जाऊं भी तो क्या
पुजारी मुझे वहां घुसने दे सकते हैं? "

ओशो.. 🍌



जापान में एक फकीर था बोकोजू। वह लोगों को वृक्षों पर चढ़ने की कला सिखाता था। और वह यह कहता था कि वृक्षों पर चढ़ने की कला के साथ ही मैं जागने की कला भी सिखाता हूं।

अब फकीर को वृक्षों पर चढ़ने की कला सिखाने से कोई प्रयोजन भी नहीं है। लेकिन उस फकीर ने बड़ी समझ की बात खोजी थी कि जागना और वृक्ष पर चढ़ना एक साथ सिखाना आसान था।

जापान का एक राजकुमार उस फकीर के पास वृक्ष पर चढ़ना सीखने गया। कोई डेढ़ सौ फीट ऊंचे सीधे वृक्ष पर उस फकीर ने कहा कि तुम चढ़ो। और वह फकीर नीचे बैठ गया। राजकुमार जैसे-जैसे ऊपर जाने लगा, उसने नीचे लौट कर देखा, वैसे-वैसे फकीर ने आंख बंद कर ली। राजकुमार डेढ़ सौ फीट ऊपर चढ़ गया, जहां से जरा भी चूक जाए तो प्राणों का खतरा है। तेज हवाएं हैं, वृक्ष कंपता है, आखिरी शिखर तक जाकर उसे वापस लौटना है। श्वास लेने तक में डर लगता है। और वह फकीर कुछ भी नहीं बोलता, चुपचाप नीचे बैठा है, न बताता है कैसे चढ़ो, न कहता है कि क्या करो। फिर वह वापस लौटना शुरू हुआ। जब कोई पंद्रह फीट ऊपर रह गया, तब वह फकीर छलांग लगा कर खड़ा हो गया और उसने कहा, सावधानी से उतरना! होश से उतरना!

राजकुमार बहुत हैरान हुआ कि कैसा पागल है! जब मैं डेढ़ सौ फीट ऊपर था, तब चुपचाप बैठा रहा। और अब जब मैं पंद्रह फीट कुल ऊंचाई पर रह गया हूं, जहां से गिर भी जाऊं तो अब बहुत खतरा नहीं है, वहां इन सज्जन को होश आया है, चिल्ला रहे हैं कि सावधान!

होशियारी से उतरना! बोधपूर्वक उतरना! गिर मत जाना!

नीचे उतरा, और उसने कहा, मैं बहुत हैरान हूं! जब मैं डेढ़ सौ फीट ऊपर था, तब तुमने सावधानी के लिए नहीं कहा। और जब पंद्रह फीट, नीचे से केवल पंद्रह फीट रह गया, तब तुम चिल्लाने लगे।

उस फकीर ने कहा, जब तुम डेढ़ सौ फीट ऊपर थे, तब तुम खुद ही सावधान थे। मुझे कुछ कहने की जरूरत न थी। खतरा इतना ज्यादा था कि तुम खुद ही जागे हुए रहे होगे। लेकिन जैसे-जैसे तुम जमीन के करीब आने लगे, मैंने देखा कि नींद ने पकड़ना तुम्हें शुरू कर दिया है, तुम्हारा होश खो रहा है। उस फकीर ने कहा, जिंदगी भर का मेरा अनुभव है, लोग जमीन के पास आकर गिर जाते हैं, ऊपर से कभी कोई नहीं गिरता। ऊपर इतना खतरा होता है कि आदमी जागा होता है। और उस राजकुमार से उसने कहा कि तुम सोचो: जब तुम डेढ़ सौ फीट ऊपर



होशियारी से उतरना! बोधपूर्वक उतरना! गिर मत जाना!

नीचे उतरा, और उसने कहा, मैं बहुत हैरान हूं! जब मैं डेढ़ सौ फीट ऊपर था, तब तुमने सावधानी के लिए नहीं कहा। और जब पंद्रह फीट, नीचे से केवल पंद्रह फीट रह गया, तब तुम चिल्लाने लगे।

उस फकीर ने कहा, जब तुम डेढ़ सौ फीट ऊपर थे, तब तुम खुद ही सावधान थे। मुझे कुछ कहने की जरूरत न थी। खतरा इतना ज्यादा था कि तुम खुद ही जागे हुए रहे होगे। लेकिन जैसे-जैसे तुम जमीन के करीब आने लगे, मैंने देखा कि नींद ने पकड़ना तुम्हें शुरू कर दिया है, तुम्हारा होश खो रहा है। उस फकीर ने कहा, जिंदगी भर का मेरा अनुभव है, लोग जमीन के पास आकर गिर जाते हैं, ऊपर से कभी कोई नहीं गिरता। ऊपर इतना खतरा होता है कि आदमी जागा होता है। और उस राजकुमार से उसने कहा कि तुम सोचो: जब तुम डेढ़ सौ फीट ऊपर थे, हवाएं जोर की थीं और वृक्ष कंपता था, तब तुम्हारे मन में कितने विचार चलते थे?

उसने कहा, विचार? एक विचार नहीं चलता था! बस एकमात्र होश था कि जरा चूक न जाऊं! मैं उस वक्त पूरी तरह जागा हुआ था। तो उस फकीर ने पूछा, उस जागरण में तुम्हें कोई विचार नहीं थे! मन अशांत था, दुखी था, परेशान था, स्मृतियां आती थीं, भविष्य की कल्पना आती थी?

उसने कहा, कुछ भी नहीं आता था! बस मैं था, डेढ़ सौ फीट की ऊंचाई थी, प्राण खतरे में थे! वहां कुछ भी न अतीत था, न भविष्य था। बस वर्तमान था! वही क्षण था और कंपती हुई हवाएं थीं, और प्राण का खतरा था, और मैं था, और मैं पूरी तरह जागा हुआ था!

उस फकीर ने कहा, तो तुम समझ लो, अगर इस तरह तुम चौबीस घंटे जागे रहने लगो, तो तुम उसे जान लोगे जो आत्मा है। इसके अतिरिक्त तुम नहीं जान सकते हो।

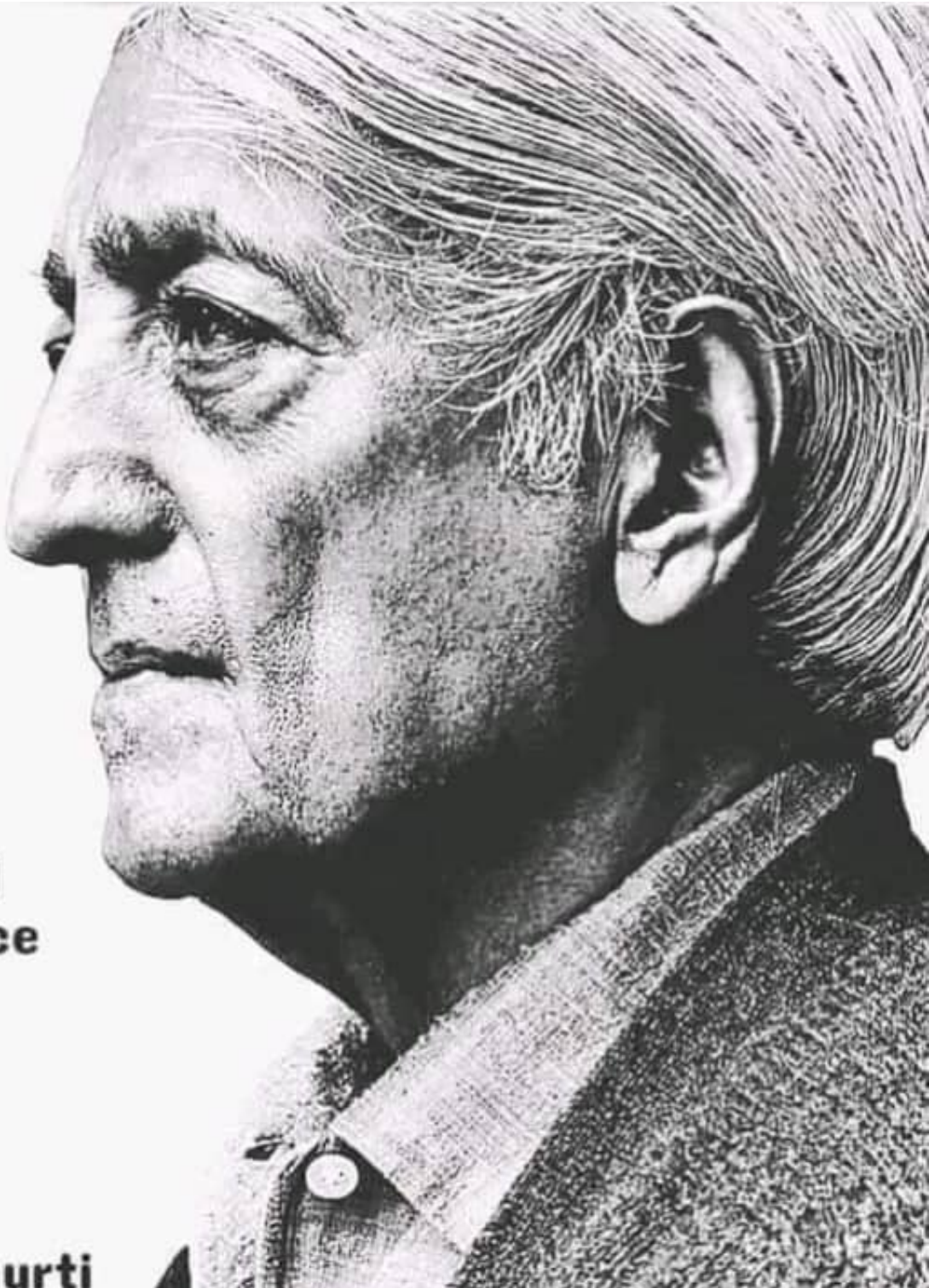
यह जान कर हैरानी होगी कि बहुत बार खतरों में आदमी को आत्मा का साक्षात्कार हो जाता है। और यह भी जान कर हैरानी होगी कि खतरे का जो हमारे भीतर आकर्षण है, वह आत्मा को पाने का ही आकर्षण है। खतरे का भी एक आकर्षण है, डेंजर का भी एक आकर्षण है हर एक के भीतर। और जब तक आदमी में थोड़ा बल होता है, खतरे का एक मोह होता है, खतरे को स्वीकार करने की एक इच्छा होती है।

ओशो, तृषा गई एक ब्रूंद से-७



**सोया हुआ मन भागता है, जागा हुआ मन नहीं भागता।
जाग कर कोई भी काम होगा तो मन
इधर-उधर भागना बंद कर देगा।**

- आचार्य रजनीश

A black and white profile portrait of J. Krishnamurti, an elderly man with long, thinning hair, looking towards the left. He is wearing a collared shirt and a jacket. The image is high-contrast, with deep shadows and bright highlights.

**A
Still
Mind
Is
Not
Seeking
Experience
Of
Any
Kind.**

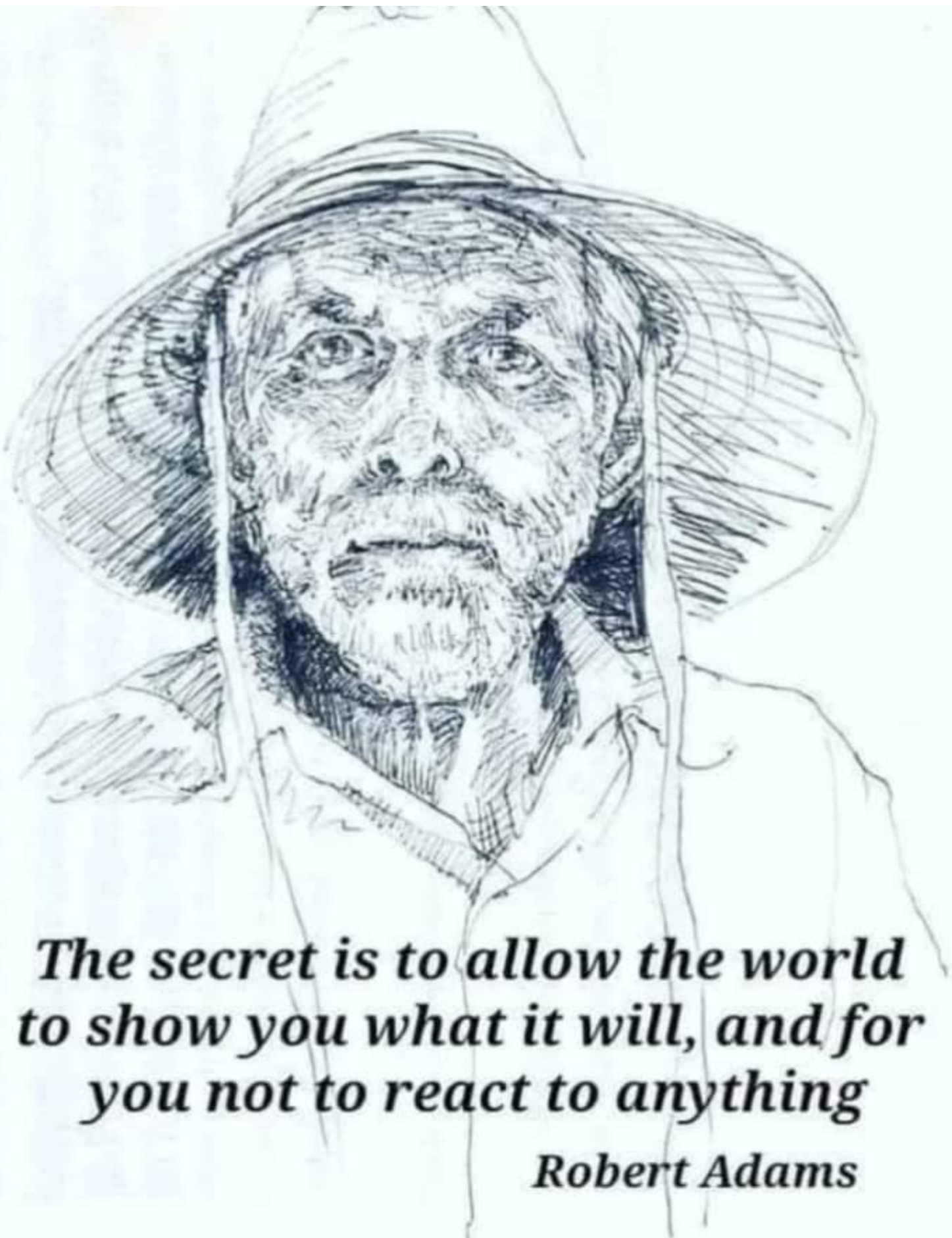
J Krishnamurti

land 21h
You are
already whole
and complete
— Love is who
you are



Comment





***The secret is to allow the world
to show you what it will, and for
you not to react to anything***

Robert Adams



Dr. Himanshu Gaur
LIVE ON ZOOM WITH DR. HG
Sponsored



NEURO LINGUISTIC PROGRAMING (NLP)



~~INR 4,999~~
FREE

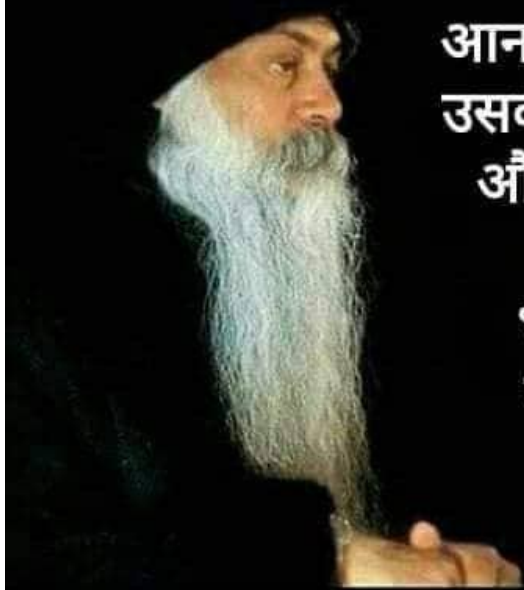
FREE BONUS WORTH **INR 10,000**



APPLY NOW



CamScanner



● अकेला रहना तो
बड़ा आनन्द है ।
सच्चाई भी यही है कि
हम सब अकेले हैं।
भीड़-भाड़ में कबतक
स्वयं के सत्य को
भुलाया जा सकता है?
एक दिन तो अकेला —
बिलकुल अकेला होना ही पड़ता है।
उसके पूर्व ही जो अकेला होने में
आनन्द अनुभव करने लगता है,
उसकी जीवन-यात्रा बहुत सरल
और शान्तिपूर्ण हो जाती है।
उस एकान्त घर में —
भीड़ का विचार न कर,
मन को भी शान्त और
शून्य में ले जाया कर।
मौन बैठा कर।
आकाश को देखा कर।
फिर, धीरे-धीरे एक
अभिनव आनन्द प्रकट होगा
और तेरे प्राणों को स्वर्गीय संगीत
संगीत से भर देगा।
शान्ति में, मौन में ही तो
परमात्मा के संगीत की
अनुभूति होती है।

~ ओशो ●



एक बहुत अरबपति महिला ने एक गरीब चित्रकार से अपना चित्र बनवाया, पोट्टू बनवाया। चित्र बन गया, तो वह अमीर महिला अपना चित्र लेने आयी। वह बहुत खुश थी। चित्रकार से उसने कहा, कि क्या उसका पुरस्कार दूं?

चित्रकार गरीब आदमी था। *गरीब आदमी वासना भी करे तो कितनी बड़ी करे, मांगे भी तो कितना मांगे?* हमारी मांग, सब गरीब आदमी की मांग है परमात्मा से। हम जो मांग रहे हैं, वह क्षुद्र है। जिससे मांग रहे हैं, उससे यह बात मांगनी नहीं चाहिए। तो उसने सोचा मन में कि सौ डालर मांगूं, दो सौ डालर मांगूं, पांच सौ डालर मांगूं। *फिर उसकी हिम्मत डिगने लगी। इतना देगी, नहीं देगी!* फिर उसने सोचा कि बेहतर यह हो कि इसी पर छोड़ दूं, शायद ज्यादा दे। डर तो लगा मन में कि इस पर छोड़ दूं, पता नहीं दे या न दे, या कहीं कम दे और एक दफा छोड़ दिया तो फिर! *तो उसने फिर भी हिम्मत की। उसने कहा कि आपकी जो मर्जी। महिला के हाथ में जो बैग था, पर्स था, उसने कहा, तो अच्छा! यह पर्स तुम रख लो। यह बड़ा कीमती पर्स है।*

पर्स तो कीमती था, लेकिन चित्रकार की छाती बैठ गयी कि पर्स को रखकर करूंगा भी क्या? माना कि कीमती है और सुंदर है, पर इससे कुछ आता-जाता नहीं। इससे तो बेहतर था कुछ सौ डालर ही मांग लेते। तो उसने कहा, नहीं-नहीं, मैं पर्स का क्या करूंगा, आप कोई सौ डालर दे दें। *उस महिला ने कहा, तुम्हारी मर्जी। उसने पर्स खोला, उसमें एक लाख डालर थे, उसने सौ डालर निकाल कर चित्रकार को दे दिये* और पर्स लेकर वह चली गयी। सुना है कि चित्रकार अब तक छातीपीट रहा है और रो रहा है—मर गये, मारे गये, अपने से ही मारे गये!

आदमी करीब-करीब इस हालत में है। परमात्मा ने जो दिया है, वह बंद है, छिपा है। और हम मांगे जा रहे हैं—दो-दो पैसे, दो-दो कौड़ी की बात। और वह *जीवन की जो संपदा उसने हमें दी है, उस पर्स को हमने खोल कर भी नहीं देखा है। जो मिला है, वह जो आप मांग सकते हैं, उससे अनंत गुना ज्यादा है।* लेकिन मांग से फुरसत हो, तो दिखायी पड़े, वह जो मिला है।

🌸 आचार्य रजनीश ओशो 🌸



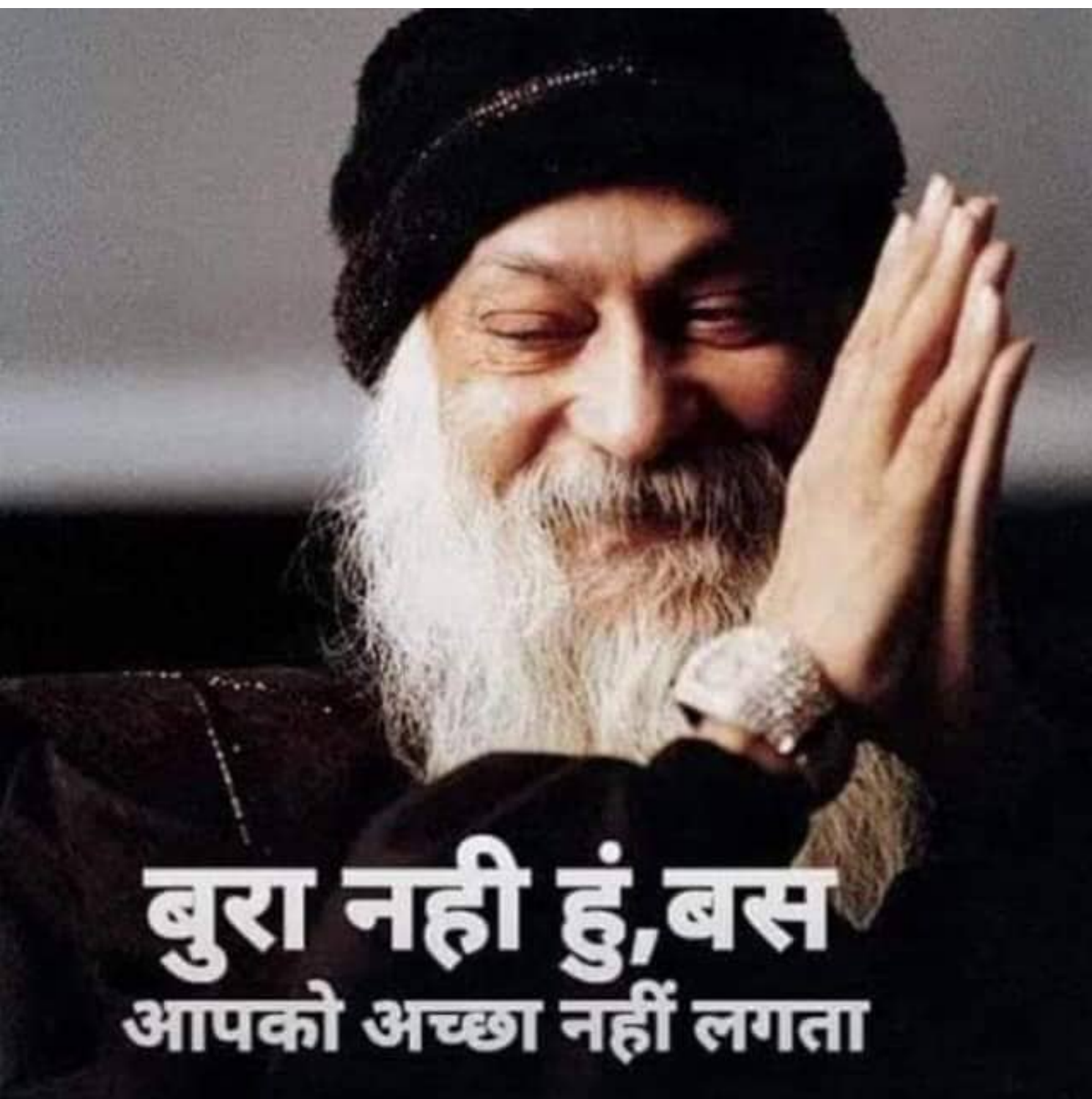
हर रंग में जला हूँ साहब
इसलिए इतना रंगीन बना हूँ..!



और मैं
मन से छूटने की
कला ही
सिखा रहा
हूँ

तेरे दुख तेरे ही रहेंगे,
फिर चाहे तू इसको सुना
या उसको सुना।





**बुरा नहीं हूं, बस
आपको अच्छा नहीं लगता**



जॉन स्मिथ एक मशहूर शराबी था। एक शाम को पीकर, वह शहर के कब्रिस्तान के मध्य से निकलने वाले छोटे रास्ते द्वारा रात में, घर लौट रहा था कि एक पत्थर से टकरा कर वह औंधे मुंह जमीन पर गिर पड़ा।

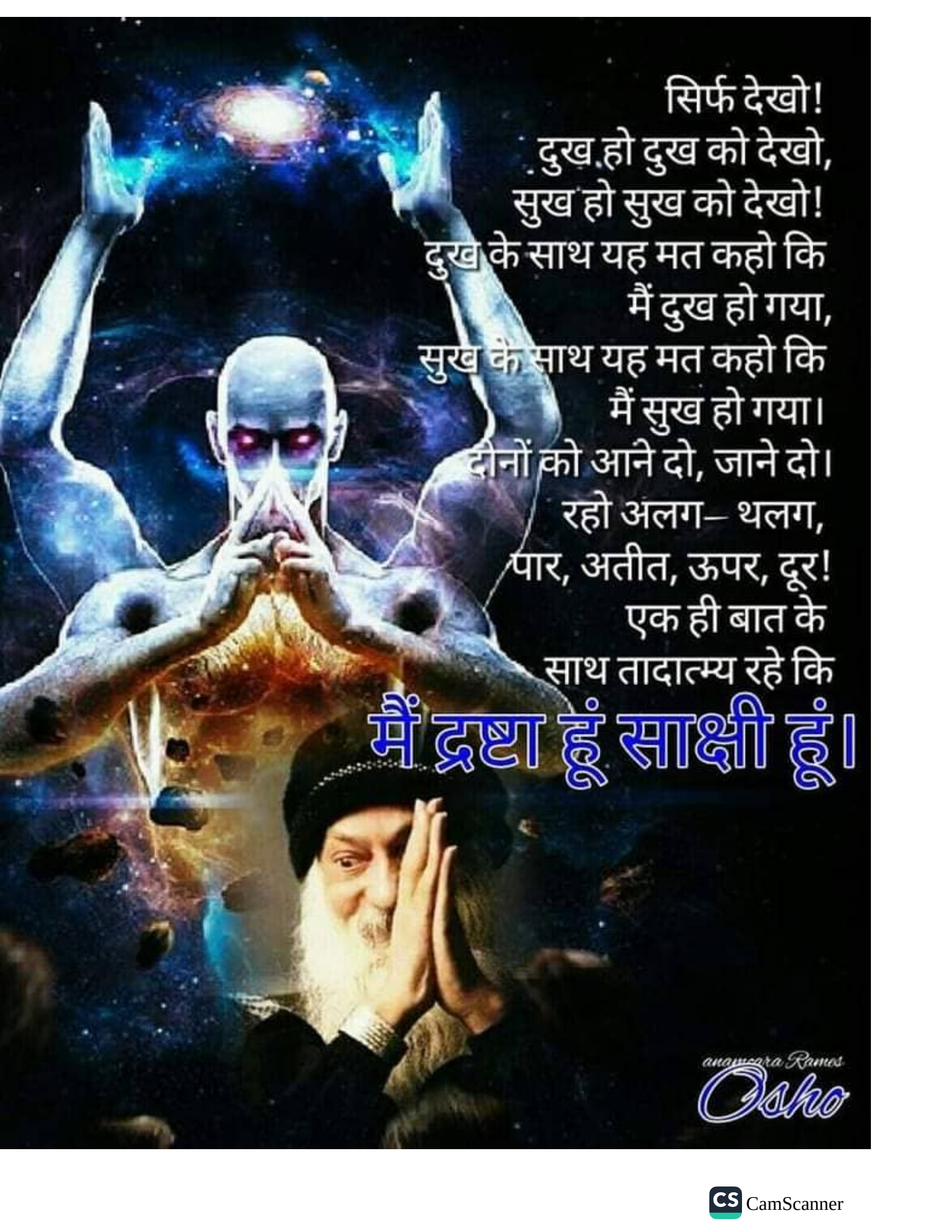
अगली सुबह तक उसे होश नहीं आया, और जब सुबह उसकी आख खुली तो पहली चीज जो उसने देखी वह था कब्र का पत्थर। जॉन स्मिथ तो एक आम प्रचलित नाम है, और जिस कब्र पर वह लेटा हुआ था वह उसी के नाम वाले एक अन्य व्यक्ति की थी।

जैसे ही उसकी निगाह में ये शब्द आए, "जॉन स्मिथ की पवित्र स्मृति में", उसने बड़बड़ा कर अपने आप से कहा, अच्छा, ठीक, तो यह मेरी कब्र है, लेकिन मुझे अपने अंतिम संस्कार के बारे में एक जरा सी बात तक याद नहीं आ रही है।

जब कोई व्यक्ति ध्यान करना आरंभ करता है, तो वह अनेक जन्मों के लंबे नशे से बाहर आ रहा होता है। पहली बार, व्यक्ति विश्वास तक नहीं कर पाता कि अब तक वह किस भांति जीता रहा है। यह एक दुख स्वप्न जैसा प्रतीत होता है भयावह।

इसीलिए लोग सजग होने का प्रयास भी नहीं करते, क्योंकि जागरूकता की पहली झलक उनके उस जीवन को छिन्न भिन्न, विनष्ट करने जा रही है जिसे वे अभी तक किसी अर्थ से भरा हुआ सोचते थे। उनका सारा जीवन अर्थहीन, महत्वहीन होने जा रहा है। सजगता का भय यही है कि यह तुम्हारे सारे जीवन को गलत सिद्ध कर सकती है।

यही कारण है कि बेहद हिम्मतवर लोग ही ध्यान करने का, सजग होने का प्रयास करते हैं। वरना लोग बस उन्हीं इच्छाओं और उन्हीं स्वप्नों और उन्हीं विचारों के दुचक्र में घूमते चले जाते हैं, और वे बार बार लौट कर जीवन में आते हैं और पुनः मर जाते हैं पालने से कब तक जरा थोड़ा सा सोचना आरंभ करो, जो तुम अब तक करते रहे हो कुछ अचेतन इच्छाओं को दोहराते रहना, कुछ ऐसा दोहराते जाना जो तुम्हें कभी आनंद नहीं देता, जो तुमको सदैव हताश करता है, उसके बारे में थोड़ा मनन करो। फिर भी तुम ऐसे जीते हो जैसे कि तुम्हें सम्मोहित कर दिया गया हो।



सिर्फ देखो!
दुख हो दुख को देखो,
सुख हो सुख को देखो!
दुख के साथ यह मत कहो कि
मैं दुख हो गया,
सुख के साथ यह मत कहो कि
मैं सुख हो गया।
दोनों को आने दो, जाने दो।
रहो अलग-थलग,
पार, अतीत, ऊपर, दूर!
एक ही बात के
साथ तादात्म्य रहे कि
मैं द्रष्टा हूं साक्षी हूं।

anandamora Ramos
Osho



आपने आपको जानने के बाद
जो कर्म होगा,
वह कर्म मुक्ति का
कर्म, महाकर्म,
तेजकर्म होगा ।

महावीर ने जो प्रयोग
किए! वो पृथ्वी पर किसी
ने नहीं किए..

उनके अनशन और
उपवास बड़े अद्भुत थे!
वे ऐसा संकल्प लेते थे कि,

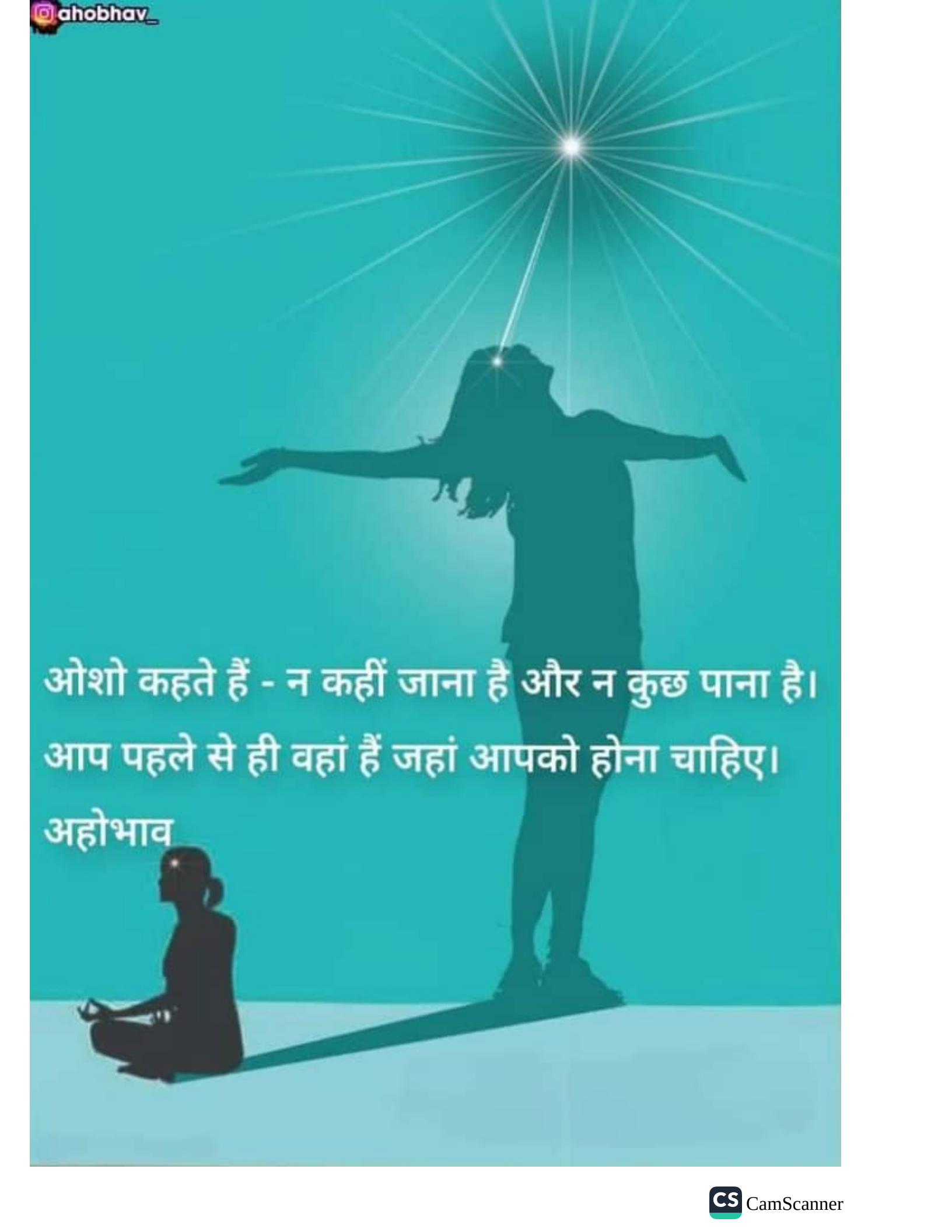
"मैं गांव में उस घर
से भोजन ग्रहण करूंगा!
जिस घर के आगे काला

"बैल खड़ा हो!
और स्त्री! सफ़ेद साड़ी में
"दरवाज़े पर खड़ी हो!
ऐसे होना.. अगर नियति
चाहती है, तो भोजन हो
जाएगा, नहीं तो वे वापिस

"आनंदित होकर लौट
आते थे, और ऐसे में 3-4
महीने भी निकल जाते.!!
वे पशु पक्षियों और पेड़
पौधों की तरह जीते थे.!!

ओशो





ओशो कहते हैं - न कहीं जाना है और न कुछ पाना है।
आप पहले से ही वहां हैं जहां आपको होना चाहिए।
अहोभाव

पूजा-पाठ, जप-तप, दान-पुण्य, तीर्थ-धाम, हवन-यज्ञ, मंदिर-घंटा, ग्रह-नक्षत्र, योग-साधना आदि सभी आस्था के अंग हैं।

जबकि

सत्य, न्याय, नीति, नियम, परोपकार, उदारता, मधुरभाषिता दया, सद्भावना, सर्वजन-कल्याण, अनुशासन आदि सभी धर्म के अंग हैं।

वेद, शास्त्र, पुराण और गीता धर्म के इसी परिभाषा को स्वीकार करते हैं।

जो धर्म अर्थात हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, यहूदी और बौद्ध आदि जन्म लेते ही हमारे नाम के साथ जुड़ जाता हैं, वह एक सामुदायिक-वर्गीकरण हैं और कुछ नहीं हैं। इसको हिंदी व्याकरण की अशुद्धि मान लेना चाहिए।

#

इस आधार पर यदि देखा जाय तो

महात्मा-गाँधी (हिंदू),

अम्बेडकर(बौद्ध),

महात्मा बुध (बौद्ध)

सरदार भगत सिंह (सिख),

अब्राहमलिनकन (ईसाई),

APJ अब्दुल कलाम (मुस्लिम),

नेलशन-मंडेला (ईसाई),

आइंस्टीन (यहूदी)

आदि सबके समुदाय तो अलग-अलग थे लेकिन धर्म तो एक ही था,, अच्छाई की रक्षा करना ।



By -एस. रामायण (हरि और हाइड्रोजन)





... See more



404

7 comments • 57 shares • 6.5K views



Like



Comment



Share



Jeevan Pakhi

23 Oct · 🌐





- * ब्रह्म का नाम ॐ है ब्रह्म को ओ३म् नाम से पुकारने पर उसकी अनुभूति होती है।
- * ॐ और गायत्री मन्त्र का जप चलते-फिरते करते रहना चाहिए, इससे अन्तःकरण की शुद्धि होती है।
- * ॐ में जो बिन्दु है वही पर ब्रह्म है।
- * वेद गायत्री से निकले हैं गायत्री ॐ की व्याख्या है।
- * ॐ और गायत्री मन्त्र की ठीक से साधना करने वाला व्यक्ति वायु और आकाश में स्थित होकर ब्रह्म को प्राप्त कर लेता है।
- * ॐ ही परम सत्य है। ब्रह्म सुहूर्त (प्रातः 3 से 5 बजे) में ॐ का ध्यान करें।
- * सत्य वचन बोलने वाला सब का उपकार करने वाला होता है।
- * मौन रखने से असत्य कर्म की प्रवृत्ति नहीं होती अन्दर का ज्ञान प्राप्त करने की भावना होती है।
- * जब कोई आपत्ति आ रही हो तब अपने इष्ट की शरण हो जाना चाहिए। मन से सदा अपने इष्ट की शरण में रहना चाहिए, शरणागत की सब रक्षा करते हैं।
- * जो संसार है वह संकल्प ही तो है। सब प्रकार के संकल्प के नाश से ही तो आत्मज्ञान होता है।
- * मैं क्या हूँ: ऐसी अनुभूति प्राप्त करने के लिए रामचरित मानस का पाठ नियम से करिये।
- * मोक्ष की कामना हो तब गीता पढ़नी चाहिए।
- * धर्म की जिज्ञासा हो तो मनुस्मृति पढ़नी चाहिए।
- * दुर्गा सप्तशती का पाठ करने से धर्म, अर्थ, काम-मोक्ष की प्राप्ति होती है।
- * वैराग्य प्राप्त करने के लिए विनय पत्रिका पढ़नी चाहिए।
- * पाठ जप खुद करिये दुसरो के द्वारा करवाने से क्या लाभ है।
- * क्रोध तब आता है जब मन से विपरीत कोई काम होता है। जब क्रोध आए तब अपने इष्ट की शरण में ही जाना चाहिए।
- * जिन लोगों ने ग्रहस्थ कर लिया उनको बाल बच्चों में ही रहकर साधना करनी चाहिए।
- * ठीक से गृहस्थ का पालन करने से स्वर्ग की प्राप्ति होती है।

ब्रह्मलीन हिमालय के योगी मौनी बाबा

facebook



Like



Comment

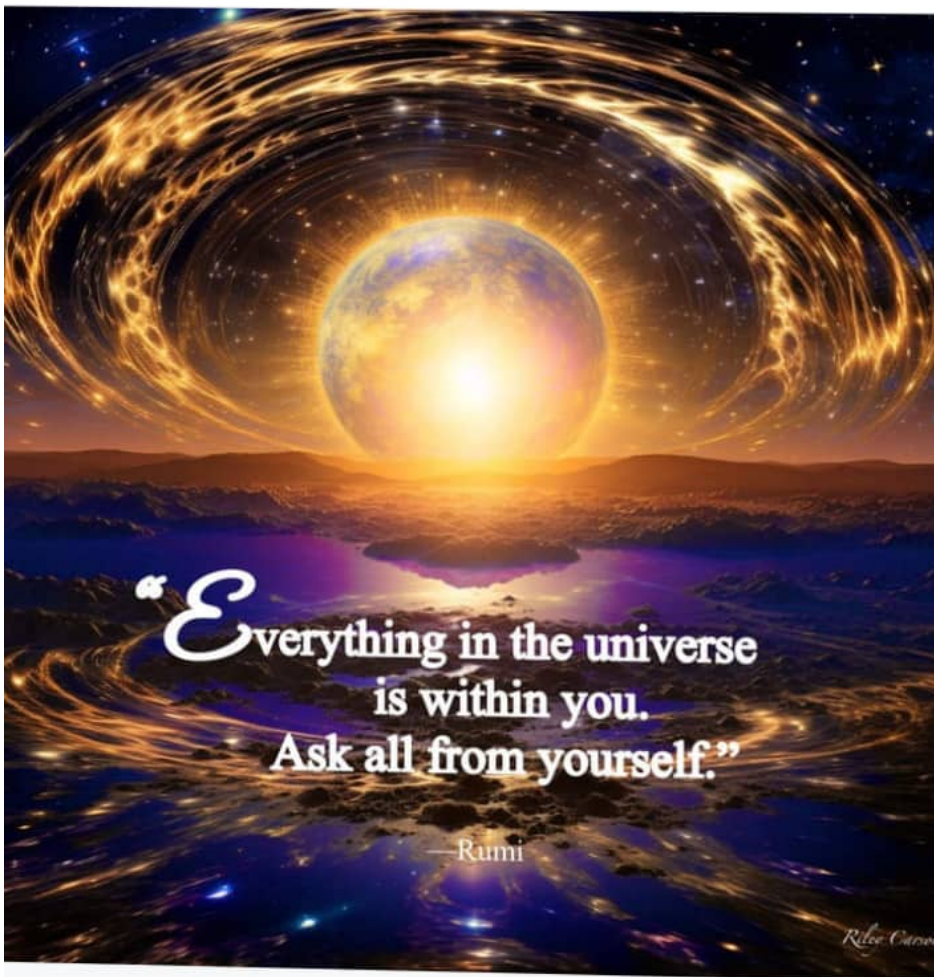


Send

**Signs, Synchronicity, and Waking Dreams**

Sponsored ·

Unlock the power of Waking Dreams! Disc... See more



Signs, Synchronicity, and Waking Dreams



3.5K

71 comments



Like



Comment

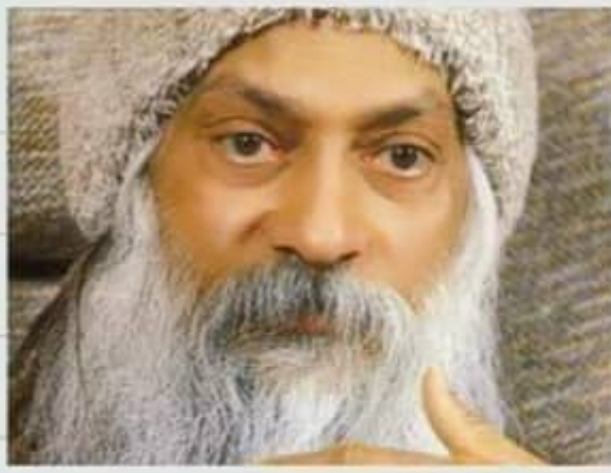


Share

**प्रेम को प्रार्थना बनाओ**

जब तक तुम दूसरे के मालिक होना चाहते हो तब तक तुम पशु-वृत्ति से जी रहे हो। जिस दिन तुम अपने मालिक होना चाहते हो, उस दिन तुम सच में मनुष्य हुए। स्वयं की मालिकियत की खोज धर्म; दूसरे की मालिकियत की खोज राजनीति है।





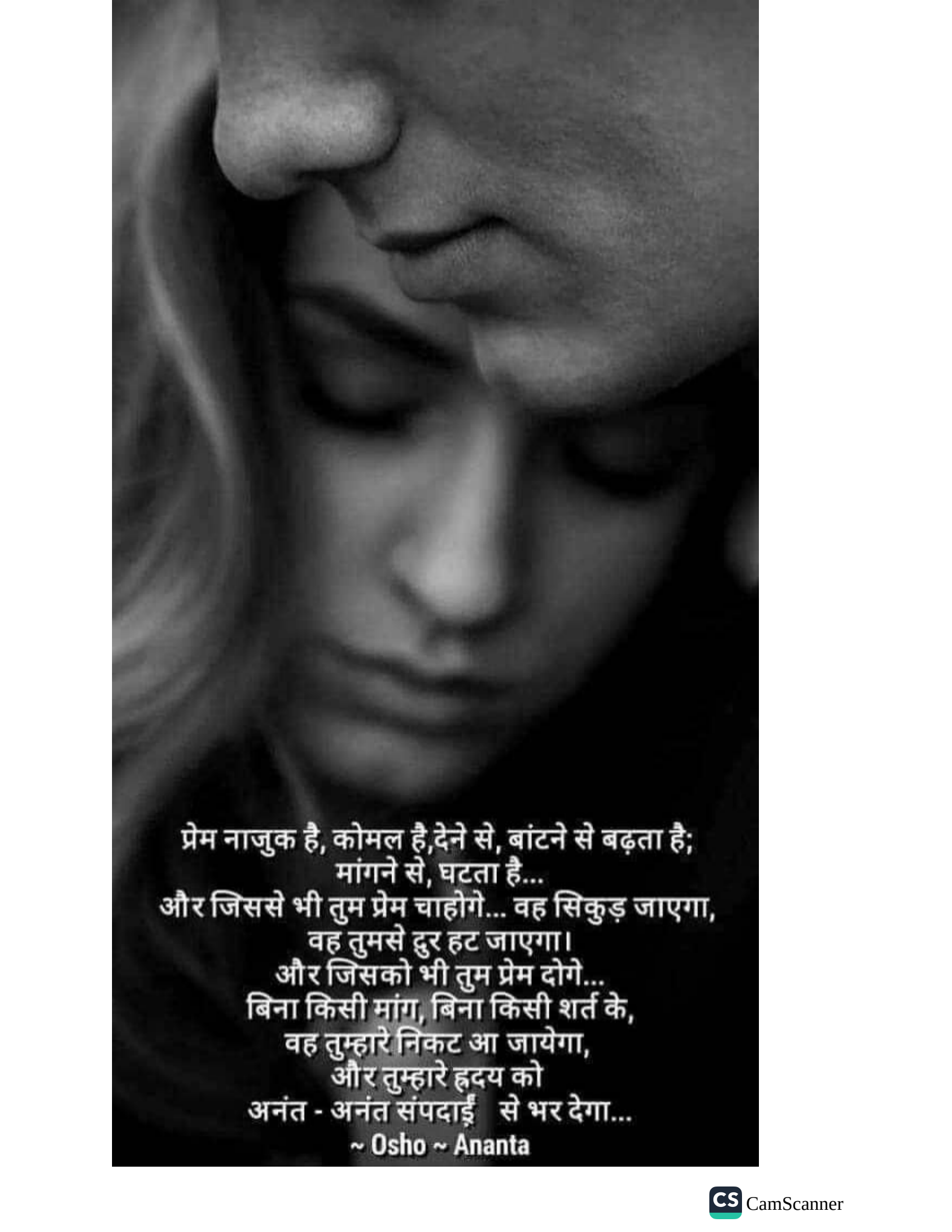
मनुष्य को परमात्मा से रोकने वाली
जो बड़ी से बड़ी बाधा हो सकती है
वह शास्त्र है। सुन कर एकदम भरोसा
भी नहीं आता। क्योंकि हमने तो यही
सुना है बार-बार कि शास्त्र के द्वारा ही
आदमी परमात्मा तक पहुंचता है।
लेकिन मैं तुमसे कहना चाहता हूं :
शास्त्र से कोई कभी परमात्मा तक न
पहुंचा है, न पहुंच सकता है। हां, जो
परमात्मा तक पहुंच जाते हैं, उनके
सामने शास्त्र का अर्थ प्रकट हो जाता
है। लेकिन पहुंचना पहले है, शास्त्र का
अर्थ पीछे प्रकट होता है।

🌸 हरि बोलौ हरि बोल, प्रवचन -3, ओशो 🌸



लोगो के सामने उतना ही झुको जितनी आवश्यकता हैं,
गुलाम मत बनो, हमेशा अपने भाग्य के स्वामी बने रहो।

_Osho



प्रेम नाजुक है, कोमल है, देने से, बांटने से बढ़ता है;
मांगने से, घटता है...
और जिससे भी तुम प्रेम चाहोगे... वह सिकुड़ जाएगा,
वह तुमसे दूर हट जाएगा।
और जिसको भी तुम प्रेम दोगे...
बिना किसी मांग, बिना किसी शर्त के,
वह तुम्हारे निकट आ जायेगा,
और तुम्हारे हृदय को
अनंत - अनंत संपदाई से भर देगा...
~ Osho ~ Ananta

ओशो सूत्र

अगर दुखी होते हो तो कारण तुम हो;
अगर सुखी होते हो तो कारण तुम हो।
कारण बाहर मत खोजना।

मूढ़ता बाहर कारण खोजती है
और भटक जाती है।

ज्ञान भीतर कारण खोजता है
और सम्हल जाता है।

सब तुम्हारे भीतर है—सुख भी, दुख भी,
सुख और दुख के पार जाना भी।

एस धम्मो सनंतनो(प्र-27)

न कोई खौफ़;
न कोई अहंकार...
न कोई ठौर-ठिकाना

मिट्टी था मैं; मिट्टी ही हूँ
और फिर मिट्टी हो
जाना... 😊

राम
राम
जी



आत्मा का आनंद निःशुल्क है,
फिर भी वह हर मनुष्य के भाग्य में नहीं होता है ।

@आध्यात्मिक जीवन की खोज



जीवन को जीओ। जीवन एक अवसर है, उसे
चूको मत। उसके उतार-चढ़ाव देखो। उसकी
अंधेरी घाटियों में भी उतरो और प्रकाशोज्वल
शिखरों पर भी चढ़ो। कांटे भी चुभेंगे-फूल भी
हाथ लगेंगे। इन दोनों को भोगो, क्योंकि इसी
चुनौती में से गुजर कर, इसी आग में से गुजर
कर तो आत्मा का जन्म होता है।

ओशो : जो बोले सो हरि कथा



साक्षी

न तो ज्ञानयोगी हैं,
न भक्तियोगी,
न कर्मयोगी।
अष्टावक्र कहते हैं,
सीधे ही
साक्षी में उतर जाओ;
इन बहानों की
कोई जरूरत नहीं है।
यह औषधि सीधी ही
गटकी जा सकती है।
छोड़ो बहाने,
वाहन छोड़ो,
सीधे ही
दौड़ सकते हो,
साक्षी सीधे ही
हो सकते
हो।



सेवा से आपके असली माता पिता को सेवा होता है या नहीं।

व्यक्ति गिड़गिड़ा कर बोला – नहीं राजन उन मूर्तियों की सेवा से मेरे माता पिता की सेवा नहीं हो सकती।

राजा बोला - जब आप सर्वशक्तिमान सर्वव्यापक परमेश्वर की मूर्ति बनाकर पूज सकते हैं और उससे सर्वशक्तिमान सर्वव्यापक परमेश्वर की पूजा होना मानते हो तो अपने माता पिता की मूर्ति की सेवा से आपके माता पिता की सेवा क्यों नहीं हो सकती ?

अब वह व्यक्ति कुछ न बोला और दृष्टि भूमि पर गड़ा ली।

राजा पुनः बोला – आपके माता पिता में जो गुण हैं जैसे ममता, स्नेह, वात्सल्य, ज्ञान, मार्गदर्शन करना, रक्षा करना, चेतन आदि उनकी मूर्ति में कभी नहीं हो सकते। वैसे ही मूर्ति में परमेश्वर के गुण जैसे सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, सर्वान्तर्यामी, सृष्टि, दयालू, न्यायकारी, चेतन नहीं हो सकते। फिर ऐसी मूर्ति की पूजा करने का कोई लाभ नहीं।

इसके बाद थोड़ी देर राजसभा में सन्नाटा रहा। वह व्यक्ति निरुत्तर हो चुका था।

व्यक्ति बोला – मुझे क्षमा कर दें राजन। आपने मेरी आँखें खोल दी हैं। मुझे मेरी गलती पता चल गई है। अब मैं ऐसी गलती दोबारा नहीं करूंगा।

अंत में राजा बोला – और हाँ! जैसे हम अपने कपड़ों को साफ़ रखते हैं गंदा नहीं होने देते उनका सम्मान करते हैं। यादगार के लिए बनाए गए अपने पूर्वजों महापुरुषों के चित्र और मूर्तियाँ को साफ़ रखने या नष्ट होने से बचाने का महत्व बस इतना ही है। जाओ अपने माता पिता को सम्मान से ले जाओ।

अगर आस्था है, तो सम्मान कीजिये लेकिन अंधविश्वास की तरह पाखण्ड के ढोंग को बढ़ावा मत दीजिए।



honge... 🥺💔🌹



👍 23

1 comment • 1 share • 703 views



Like



Comment



Send



Share



Centre For Sight ✓

Sponsored · 🌐

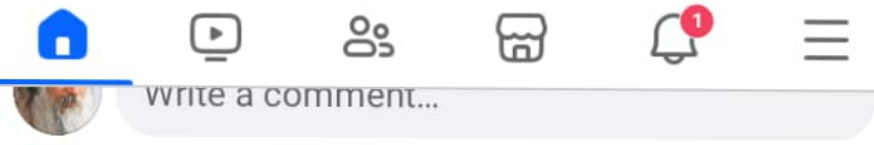


विश्वव्यापी रूप से आँखों की देखभाल को सभी के लिए सामान्य

अत्याधिक भरोसा
आपको धोखा,,

अत्याधिक प्रेम
आपको कष्ट,

और अत्याधिक ईमानदारी
आपको कई
लोगों के द्वारा अपमान
और
नफरत भेंट में देती हैं,,



write a comment...

**Shashi Shubhangee**

2d · 🌐

मैंने सब कुछ देखने के लिए अपनी आँखें बंद कर लीं..!

पॉल गौगुइन



28

2 comments • 1 share

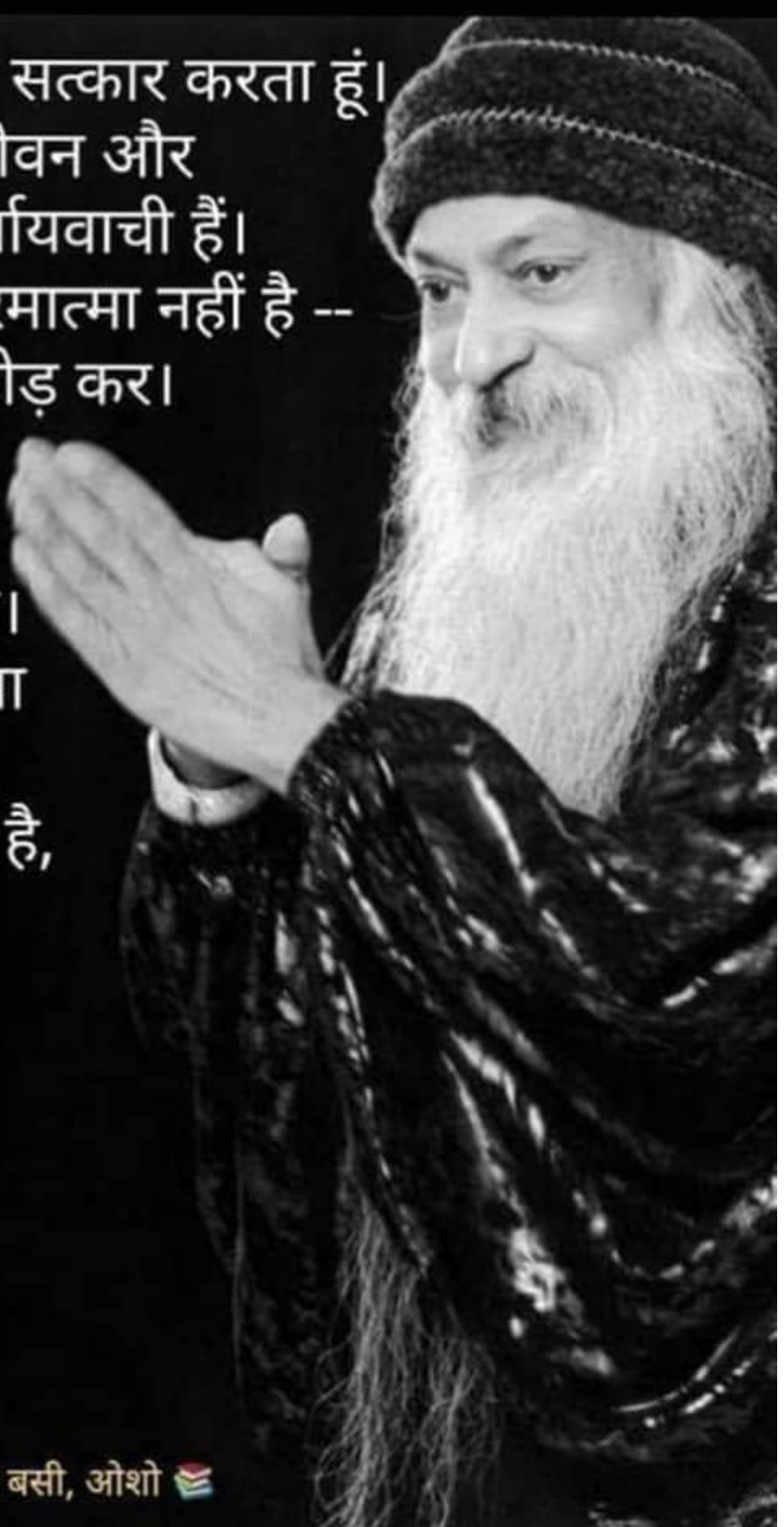
Like

Send

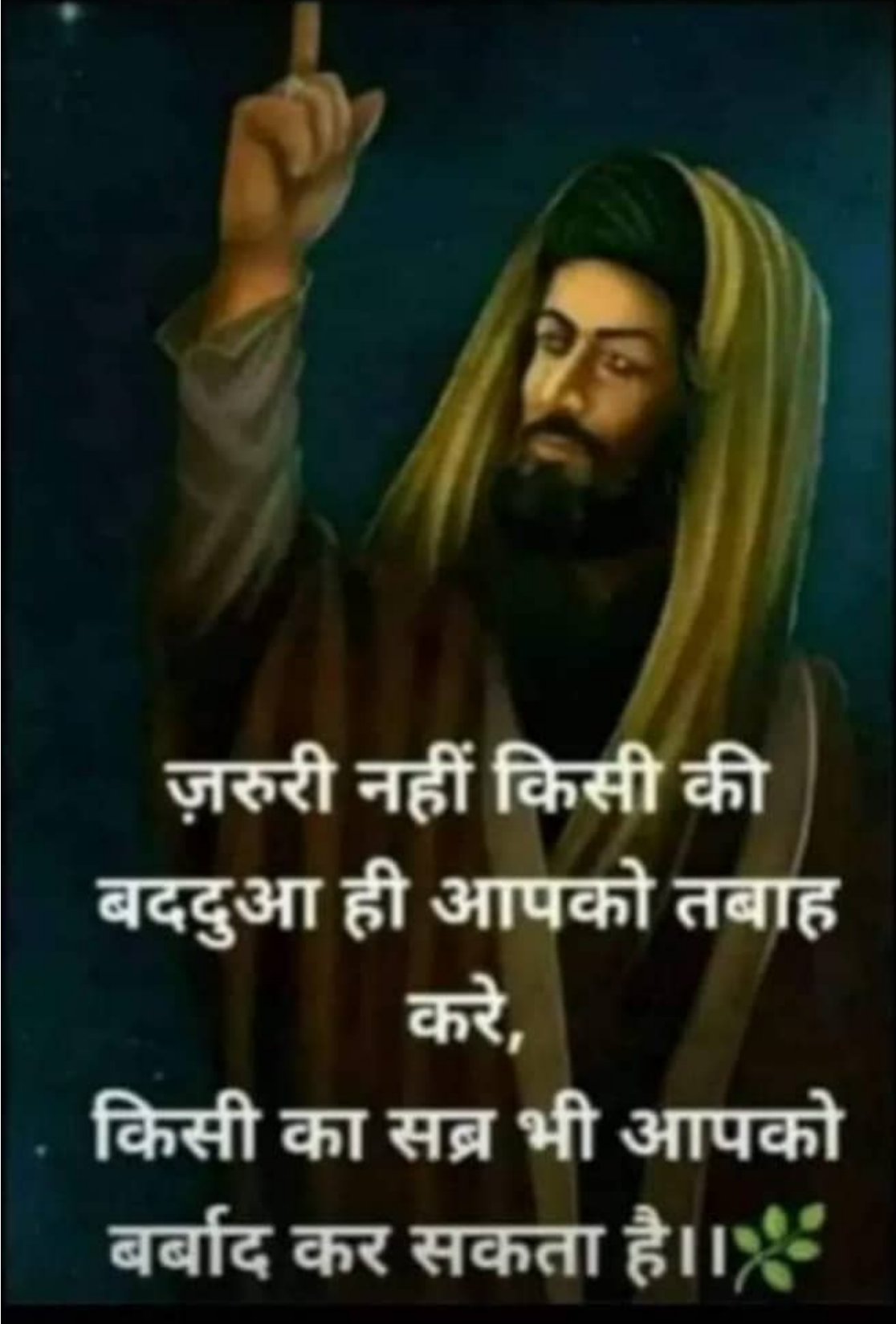
Share



मैं जीवन का सत्कार करता हूं।
मेरे मन में जीवन और
परमात्मा पर्यायवाची हैं।
और कोई परमात्मा नहीं है --
जीवन को छोड़ कर।
जीवन को
अहोभाव से
स्वीकार करो।
और परमात्मा
ने तुम्हें जहां,
जैसा बनाया है,
वहीं जीओ।
और वहीं
जीते-जीते
शांत बनो,
मौन बनो,
शून्य बनो।



🇮🇳 प्रीतम छबि नैनन बसी, ओशो 🇮🇳



ज़रूरी नहीं किसी की
बददुआ ही आपको तबाह
करे,
किसी का सब्र भी आपको
बर्बाद कर सकता है।।



Like Comment Send Share



Osho Human Being To Be.In.God



4d ·

What is the difference between

I like you &
I love you

Beautifully answered by Buddha:

When you like a flower, you just pluck it. But
when you love a flower, you water it daily..!

One who understand this, understands life...



1 share

Like Comment Send Share



Osho English



1d ·

" ध्यान में रेचन अनिवार्य है;
क्योंकि वह स्नान है भीतर का ।"

- ओशो (समाधि के सप्तद्वार)

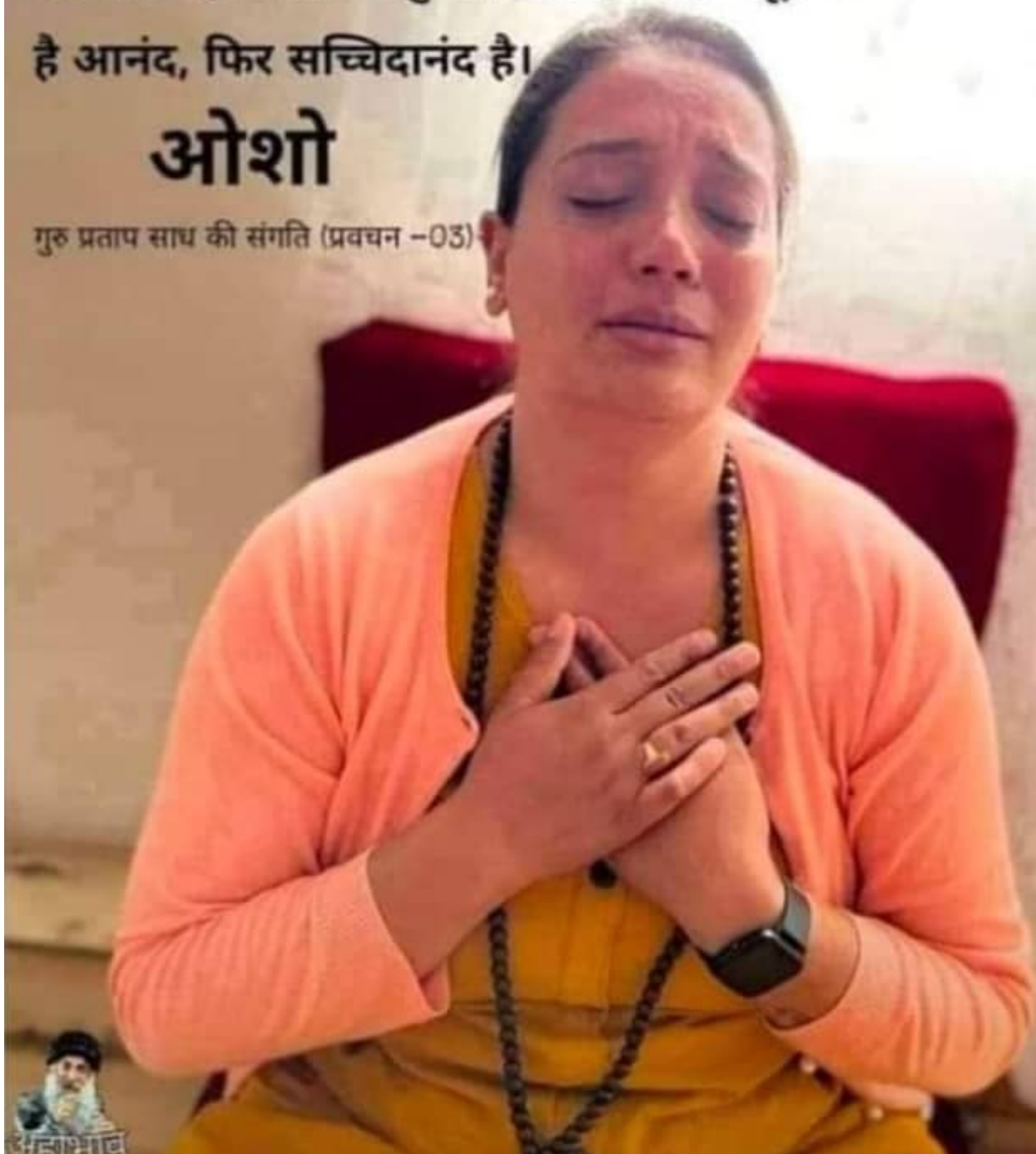
आदमी के पचास से नब्बे प्रतिशत रोग उसके मन से पैदा होते हैं।लेकिन परिणाम शरीर में होते हैं।क्योंकि मन से जहर धीरे-धीरे शरीर में रिस जाता है,भर जाता है और शरीर में दूरगामी होते हैं।यहां जो ध्यान में रेचन का हम प्रयोग कर रहे हैं,अगर आप हृदयपूर्वक कर सकें,तो आपका मन तो शुद्ध होगा ही,आप पायेंगे कि आपका शरीर भी—स्वास्थ्य के नये आयाम पा सकते हैं,कि बहुत सी बीमारियां अचानक गिर गयीं आपके रेचन के साथ।वे जो आपको जकड़े हुए थे बहुत से रोग,सब अचानक विदा हो गये।



जो भी जागे हैं वे सभी यही कहते हैं: असली यात्रा करनी होगी। और असली यात्रा बाहर की तरफ नहीं है, भीतर की तरफ है। असली आंख चाहिए और असली आंख यह चमड़े की आंख नहीं है, ध्यान की आंख है। ध्यान-चक्षु को खोलो, फिर अपूर्व है आनंद, फिर सच्चिदानंद है।

ओशो

गुरु प्रताप साध की संगति (प्रवचन -03)





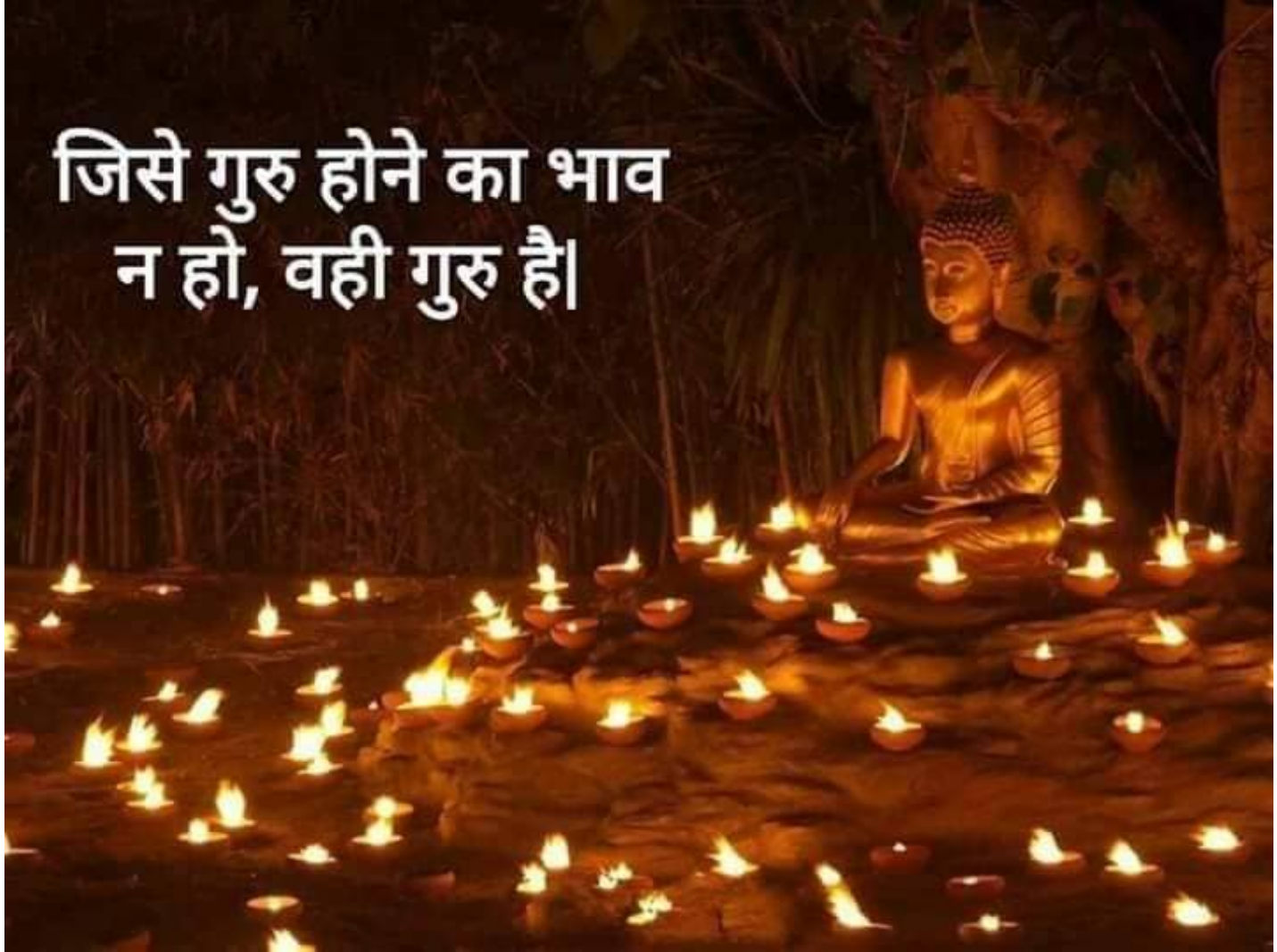
जो मित्र नहीं
है वो गुरु
कैसे हो सकता

है

आशा

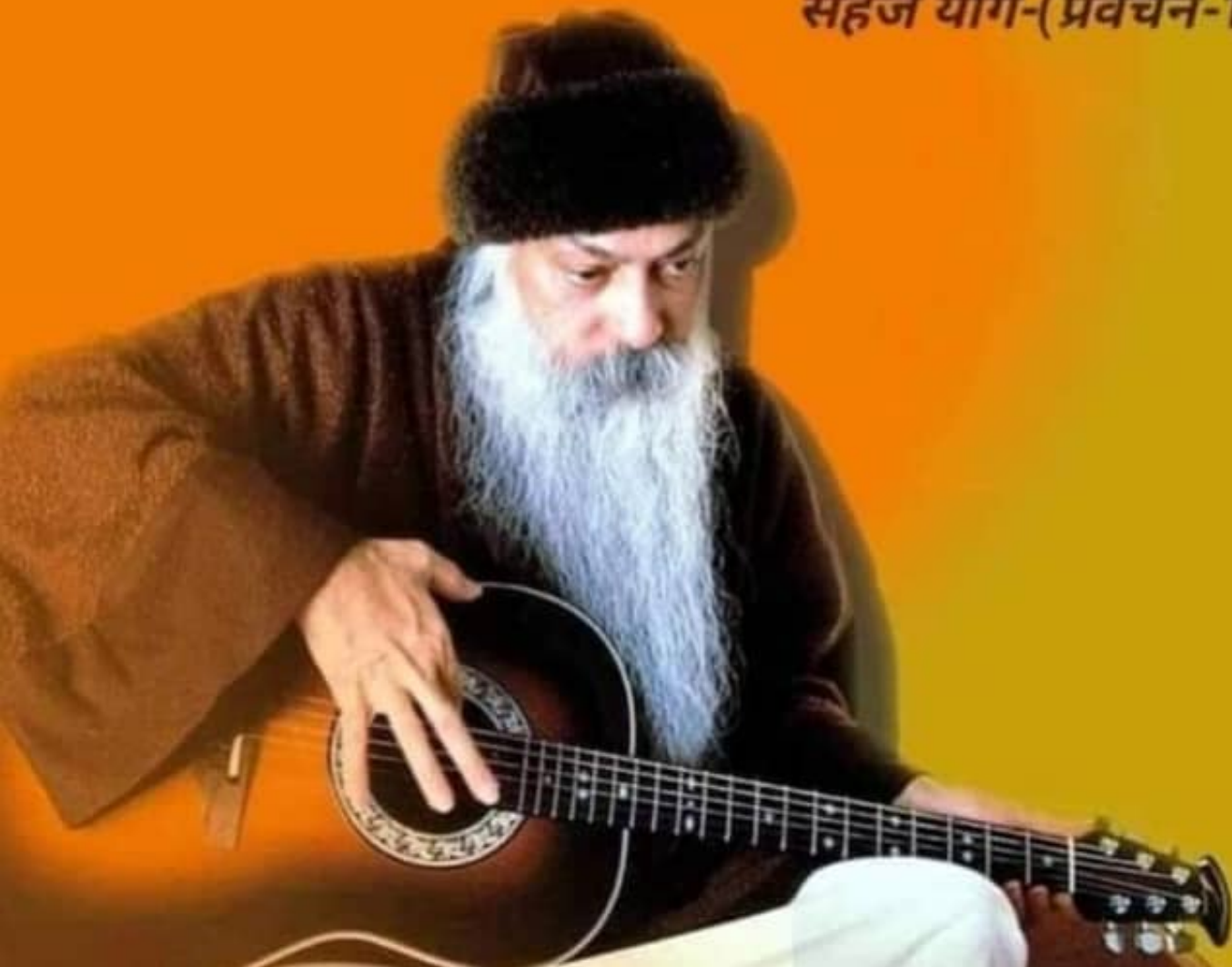


जिसे गुरु होने का भाव
न हो, वही गुरु है।



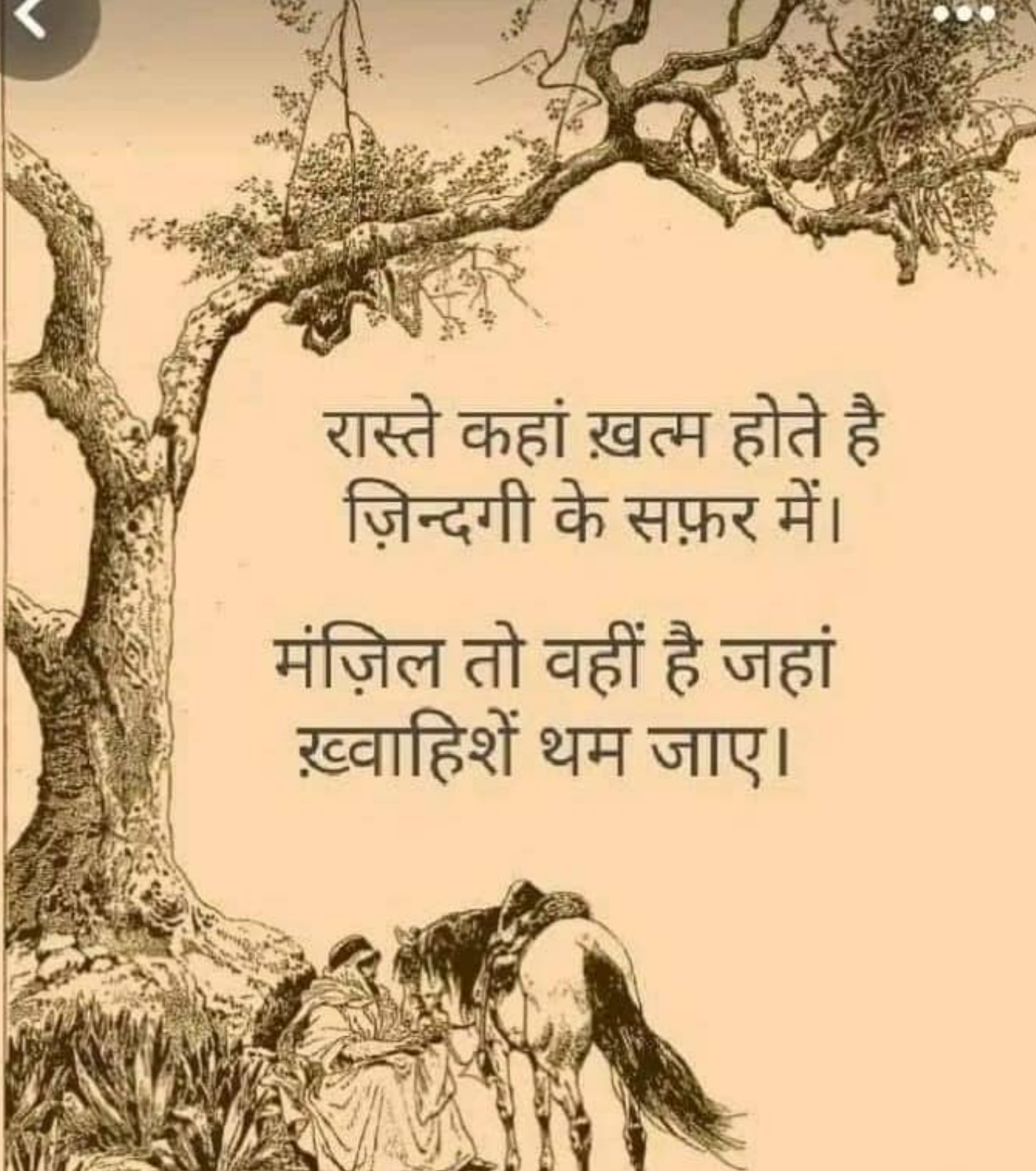
अपने साथ होना सीखो।
इतने मस्त तुम्हें अकेले में होना चाहिए
कि दूसरा न हो तो तुम्हारी मस्ती में बाधा न पड़े।
तुम्हारी मस्ती दूसरे पर निर्भर नहीं होनी चाहिए।

ओशो  अही भाव
सहज योग-(प्रवचन-19)





हम समझते कम ,,
और ...
उलझते ज्यादा हैं ... !



रास्ते कहां खत्म होते है
ज़िन्दगी के सफ़र में।

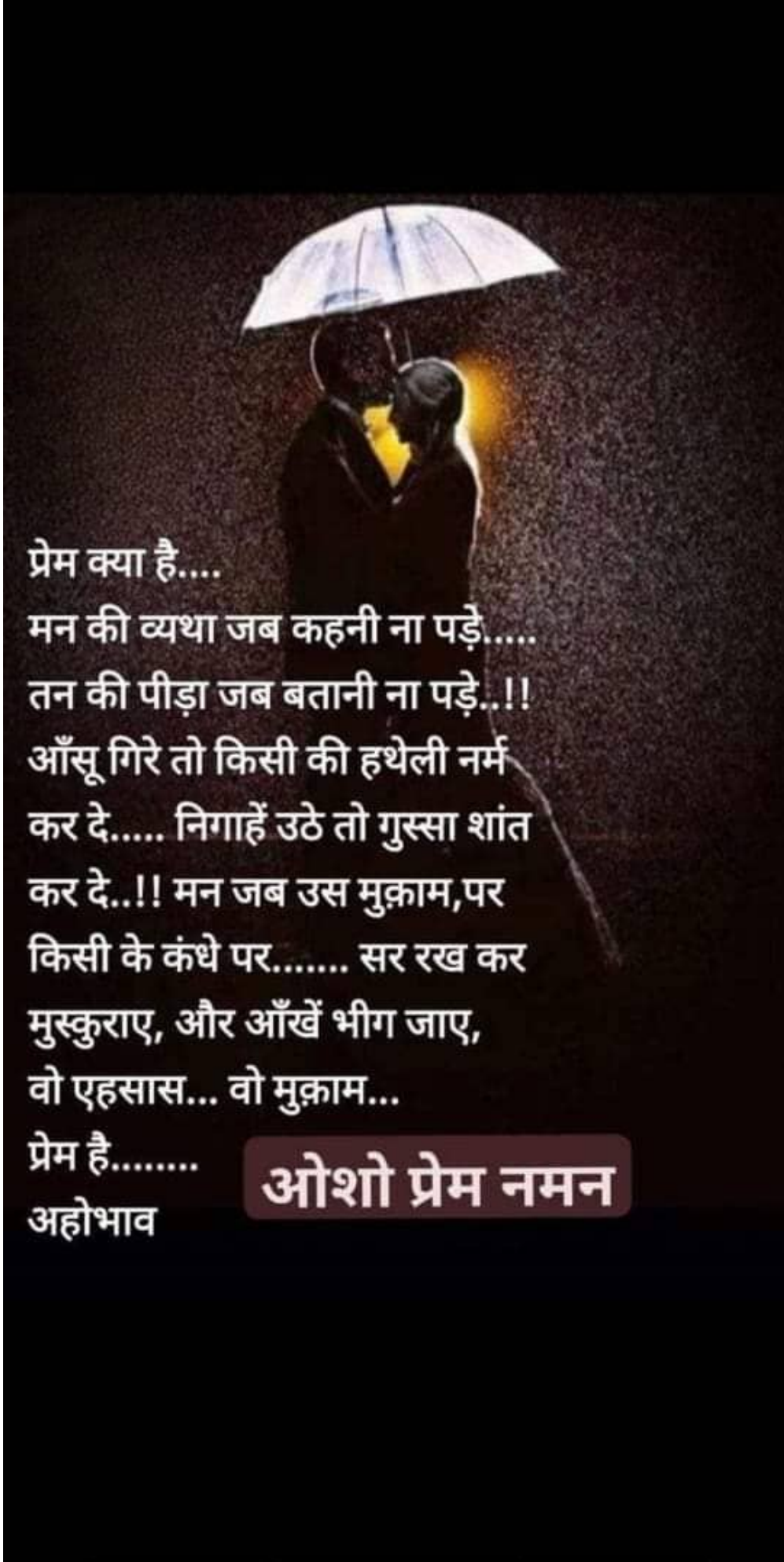
मंज़िल तो वहीं है जहां
रूखाहिशें थम जाए।

शरीर, मन, आत्मा, विचार

कर्म तीन तरह के होते हैं, संचित, प्रारब्ध और क्रियमण, परंतु प्रश्न ये उठता है कि कर्म करता कौन है। शरीर, मन, आत्मा या विचार।

Ved Dwivedi

क्या शरीर कर्म करता है, नहीं, क्योंकि शरीर कर्म के परिणाम को भोग सकता है, मतलब शरीर कर्म नहीं करता। तो क्या मन कर्म करता है, नहीं, क्योंकि मन के पास कर्म करने की शक्ति नहीं है, मन पश्चाताप करवा सकता है, पर कर्म नहीं। फिर क्या आत्मा कर्म करती है, नहीं, आत्मा भी कर्म नहीं कर सकती, आत्मा किए गए कर्म की साक्षी होती है, परंतु कर्म करना आत्मा के वश में नहीं है। तो क्या विचार कर्म करते हैं, उत्तर है, हां, विचार कर्म करते हैं, क्योंकि विचार के उत्पन्न होने से ही कर्म करने का भाव पैदा होता है। मृत्यु के बाद विचार उत्पन्न नहीं होते। कर्म का अर्थ सिर्फ अच्छे या सिर्फ बुरे से नहीं है अपितु दोनों से है।



प्रेम क्या है....

मन की व्यथा जब कहनी ना पड़े.....

तन की पीड़ा जब बतानी ना पड़े..!!

आँसू गिरे तो किसी की हथेली नर्म
कर दे..... निगाहें उठे तो गुस्सा शांत

कर दे..!! मन जब उस मुक़ाम, पर
किसी के कंधे पर..... सर रख कर

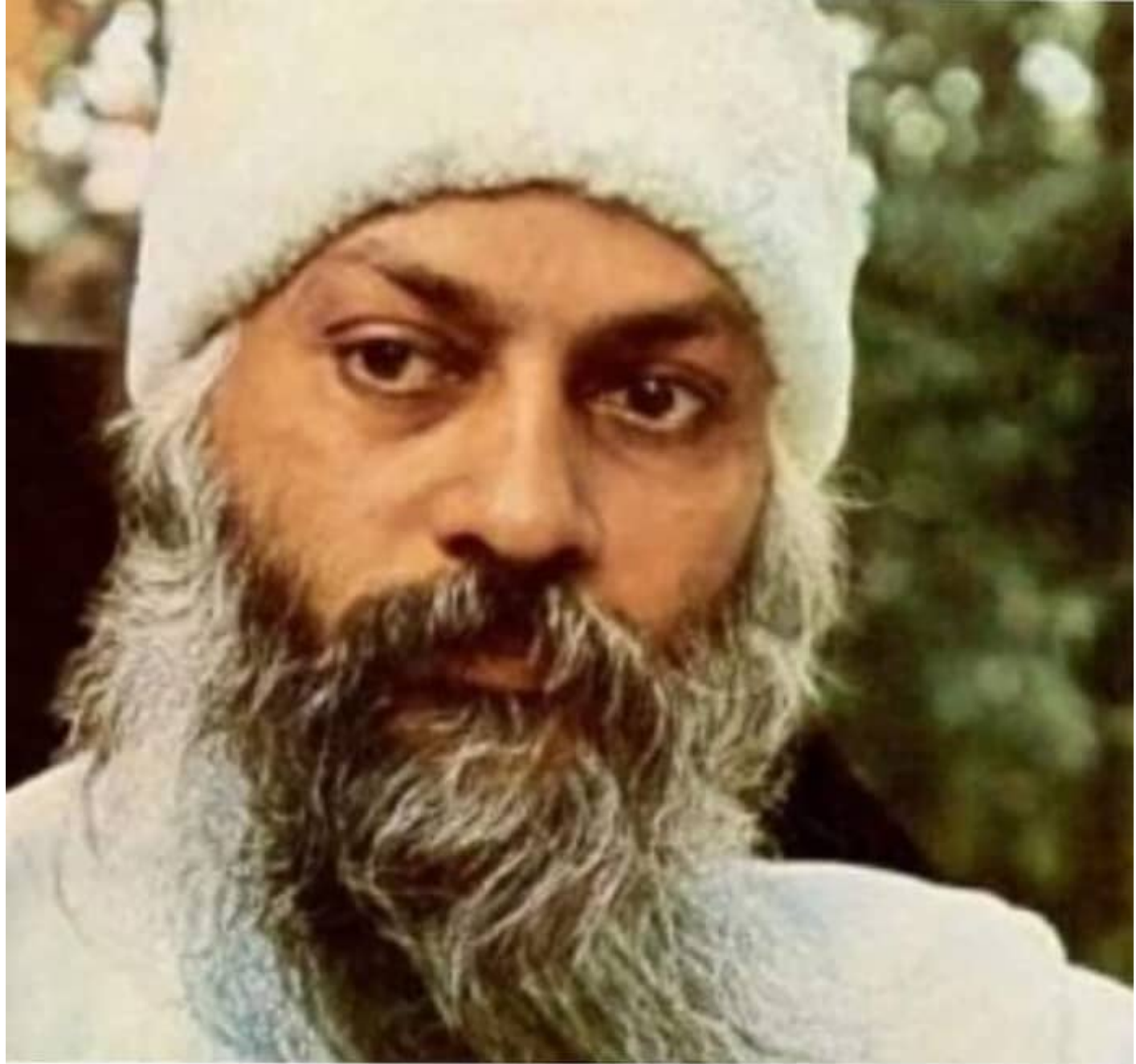
मुस्कुराए, और आँखें भीग जाए,

वो एहसास... वो मुक़ाम...

प्रेम है.....

अहोभाव

ओशो प्रेम नमन



जो आदमी सारे फल!
परमात्मा पर छोड़ देता
है, उसके जीवन से,
चिंता खत्म हो जाती है.!

O
S
H
O



YOU
ARE NOT
LEARNING
FROM ME,
FROM THE
SPEAKER;

YOU ARE
LEARNING
BY
OBSERVING
YOURSELF,
BY
WATCHING.



] KRISHNAMURTI, INWARD REVOLUTION



पहली बात, आधुनिक मनोविध्यान कहता है की मनुष्य का मन उसकी बिमारियों का नब्बे प्रतिशत कारण है, नब्बे प्रतिशत बिमारियों के आधार मन में है, इस लिये इलाज से बीमारी बदल जाती है, ठिक नहीं होती ! एक बीमारी हुई इलाज कर लिया , दवाओं ने उस बीमारी को रोक दिया दूसरी तरफ से बीमारी बहने लगी ! क्योंकि मन तो वही है, मन तो बदला नहीं, मन की तो कोई चिकित्सा हुई ही नहीं !

Shared by Anil Osho



यदि आप अंतरंग होने के लिए तैयार हैं,
तो आप दूसरे व्यक्ति को भी अंतरंग होने
के लिए प्रोत्साहित करेंगे। आपकी सरल
सादगी दूसरे को भी सादगी, मासूमियत,
विश्वास, प्यार, खुलेपन का आनंद लेने
की अनुमति देगी। ओशो अहोभाव



लाओत्से महावीर जैसा
"गणितीय नहीं है,
वह बिल्कुल पागल है!
बेतुका है, लेकिन उसका
"पागलपन तर्क से है,
लाओत्से सिर्फ जीवन का
प्रवक्ता है, यदि जीवन
बेतुका है, तो लाओत्से भी
"बेतुका है.!!

ओशो

OSHO

नानक ने कहा है:
'अंधा अंधा ठेलिया, दोनों कूप पड़ंत।'



33



2



38

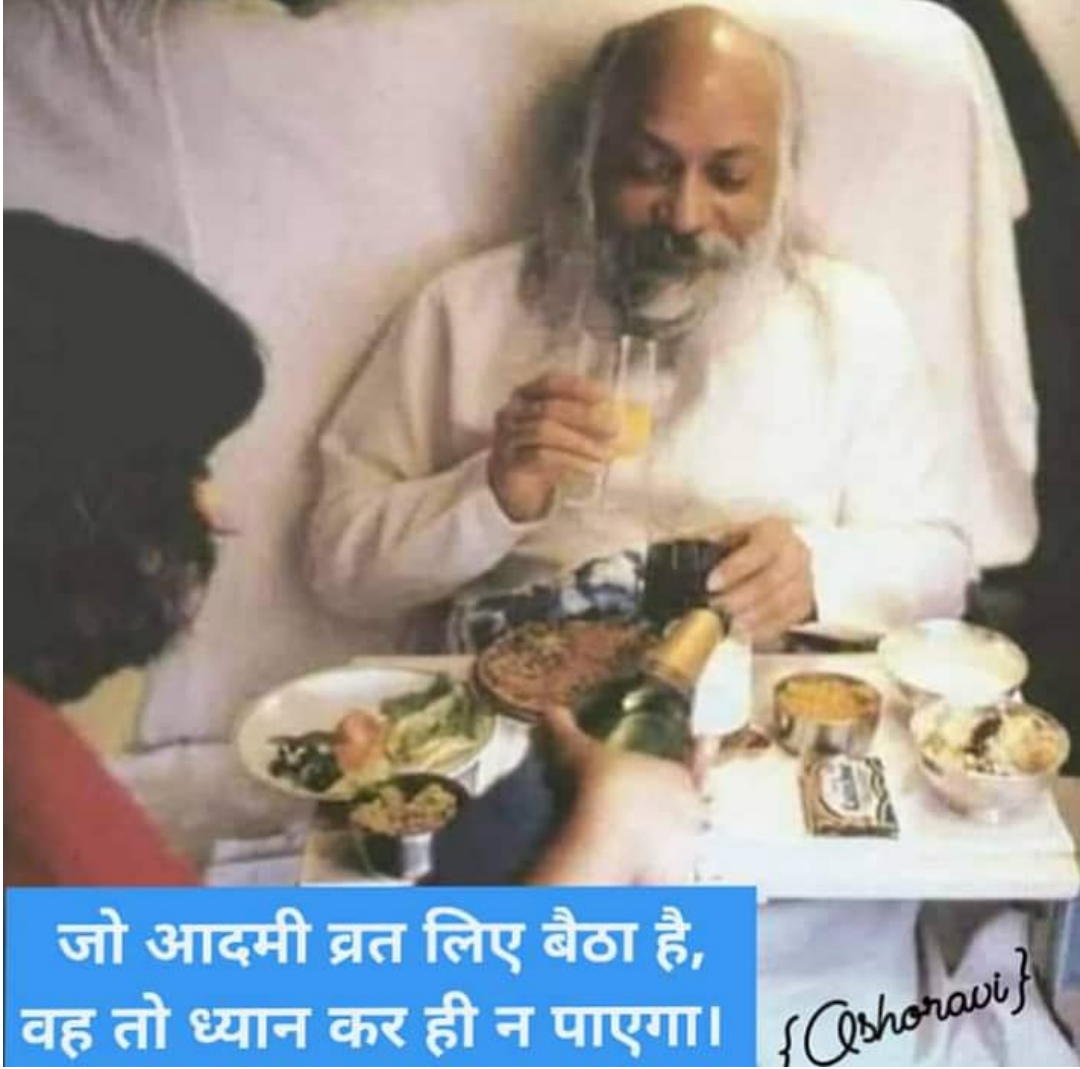


@AVINASH4991_

कुरुक्षेत्र का मैदान
तब भी था, अब भी है
दुश्मन अपने
तब भी थे, अब भी हैं
चक्रव्यू रचते
तब भी थे, अब भी हैं
बदला नज़ारा इतना है
हाथों में तब थी तलवारें
और अब मुँह पर ताने हैं

दुश्मन तब सामने ही खड़े थे
अब छुपे हुए पहचानने हैं
कहते हैं कि इतिहास
खुद को दोहराता है
लहू बहा था तब बदन का
अब दिल का बहाया जाता है...







उसने जो बात कही, मौलिक है। उसने कहा कि मैं जिंदगी को भुलाने के लिए शराब पीता था, क्योंकि जिंदगी मेरी दुखपूर्ण थी। ध्यान ने मेरी जिंदगी में सुख की एक नई आभा दे दी है। सुबह उठता हूं, तो इतनी प्यारी सुबह मैंने कभी जानी न थी! पक्षियों के गीत पहले भी होते रहे होंगे, मैंने नहीं सुने थे। सूरज पहले भी निकलता था, मैंने नहीं देखा था। वृक्ष पहले भी हरे रहे होंगे, मेरी आंखें उनकी हरियाली से नहीं भरी थीं। फूल पहले भी नाचते रहे होंगे हवाओं में, लेकिन मैंने उन्हें पहचाना नहीं था। रात तारों से भर जाती है और मेरा हृदय इतना आनंदमग्न हो रहा है! पहले मैं दुखी था, शराब पीता था तो दुख भूल जाता था। अब शराब पीता हूं तो यह सुख भूल जाता है। और सुख को कौन भूलना चाहता है? इसलिए अब मैं शराब नहीं पी सकता। असंभव है।

मैंने कहा, अब तुम जब समझ ही गए हो और बात हो ही गई है तो मैं तुमसे कह ही दूं कि धोखा दिया। मुझे क्षमा करना!

संत, मन को गालियां मत दो! मन को समझो और जागो, ध्यान में लगे। और जैसे हो वैसे ही ध्यान को उपलब्ध हो सकते हो।

ध्यान बेशर्त है। कोई शर्त नहीं लगाता। ऐसी कोई शर्तें नहीं लगाता कि पहले सिगरेट छोड़ो, शराब छोड़ो, पत्नी छोड़ो, बच्चे छोड़ो, धन छोड़ो, तब ध्यान होगा। नहीं, नहीं, बिलकुल उलटी बात है। पहले ध्यान हो, फिर जो-जो व्यर्थ है, अपने आप छूट जाएगा। और जो-जो सार्थक है, वह और भी गहराई से जुड़ जाएगा। ध्यान व्यर्थ को जला कर राख कर देता है और सार्थक को निखार देता है।

ध्यान अग्नि है। उससे गुजर कर स्वर्ण शुद्ध होता है, कुंदन बनता है।

ओशो... "प्रेम पंथ ऐसो कठिन -12 "

.
. .

#oshoravi #ओशो #oshoraviyog #viralpage
#viralpage2023



एक शराबी ने मुझसे संन्यास लिया। वह तो मान ही न सका कि मैं उसे संन्यास दूंगा! वह तो आया था मुझसे कहने कि क्या आप मुझे स्वीकार करेंगे? उसने कहा, मैं पहले ही बता दूं कि मैं शराबी हूं। मैंने कहा कि ठीक, मुझे सभी स्वीकार हैं। जब परमात्मा को तुम स्वीकार हो और परमात्मा...तुम शराब कितने दिन से पी रहे हो? उसने कहा, आज बारह साल से शराब पी रहा हूं। तो मैंने कहा, जब परमात्मा बारह साल से तुम्हें जिंदा रखे है और मार नहीं डालता, तो मैं कौन हूं बाधा डालने वाला? मेरी कसौटियां कोई परमात्मा से बड़ी कसौटियां नहीं हो सकती हैं। तुम बेफिक्री से पीओ। मगर तुम ध्यान शुरू करो! उसने कहा, क्या शराबी ध्यान कर सकता है? मैंने कहा, सच तो यह है कि शराब पीने की आकांक्षा उनको ही पैदा होती है जिनके भीतर ध्यान की संभावना है। यह तुम हैरान होओगे सुन कर बात! शराब थोड़ी देर के लिए विस्मरण लाती है संसार का और ध्यान सदा के लिए मुक्ति लाता है। शराब क्षणभंगुर ध्यान है और ध्यान शाश्वत शराब है। शराब में जो लोग उत्सुक हो जाते हैं, वे वे ही लोग हैं जो किसी तरह जिंदगी की चिंताओं को भूलना चाहते हैं। और ध्यान में तो चिंताओं से मुक्ति हो जाती है, भूलने की जरूरत नहीं रह जाती। मैंने कहा, तुम ध्यान करो, शराब तुम पीते रहो।

कोई पांच-सात महीने बाद उसने आकर मुझे कहा, आपने मुझे बहुत धोखा दिया! अब ध्यान में रस लगने लगा है, शराब छूट गई। अब मैं पीना भी चाहूं तो नहीं पी सकता।

मैंने कहा, मुझे कारण बताओ, क्यों नहीं पी सकते?

उसने जो बात कही, मौलिक है। उसने कहा कि मैं जिंदगी को भुलाने के लिए शराब पीता था, क्योंकि जिंदगी मेरी दुखपूर्ण थी। ध्यान ने मेरी जिंदगी में सुख की एक नई आभा दे दी है। सुबह उठता हूं, तो इतनी प्यारी सुबह मैंने कभी जानी न थी! पक्षियों के गीत पहले भी होते रहे होंगे, मैंने नहीं सुने थे। सूरज पहले भी निकलता था, मैंने नहीं देखा था। वृक्ष पहले भी हरे रहे होंगे, मेरी आंखें उनकी हरियाली से नहीं भरी थीं। फूल पहले भी नाचते रहे होंगे हवाओं में, लेकिन मैंने उन्हें पहचाना नहीं था। रात तारों से भर जाती है और मेरा हृदय इतना आनंदमग्न हो रहा है। पहले मैं टरवी था शराब पीता था तो टरव भल जाता था। अब शराब



॥ओशो नमन॥

जो आदमी व्रत लिए बैठा है, वह तो ध्यान कर ही न पाएगा।

मैं चाहता हूं, तुम बिल्कुल सामान्य और साधारण जीवन जीओ। जरा भी अड़चन न डालो जीवन में। जैसा है जीवन, उसको वैसा ही चलने दो और ध्यान में उतर जाओ। सुगमतम रास्ता है ध्यान में उतरने का: जीवन की साधारणता को बिल्कुल स्वीकार कर लो। यही है तुम्हारा जीवन। गालियां मत दो! जैसा है, ठीक है। जैसा है, वैसा ही हो सकता है अभी। अभी तुम्हारी उतनी ही क्षमता है, उतनी ही पात्रता है, उतनी ही तुम्हारी आत्मा है। मगर ध्यान में उतरो!

और जैसे-जैसे ध्यान में उतरोगे, तुम चमत्कृत होने लगोगे। ध्यान में उतरते ही क्रांतियां शुरू हो जाती हैं। ध्यान में उतरते ही मुश्किल हो जाएगा धूम्रपान करना। मुश्किल हो जाएगा। क्योंकि धूम्रपान आदमी करता है अपने मानसिक तनाव को भुलाने के लिए। इसलिए जब भी तुम मानसिक तनाव से भरते हो, ज्यादा सिगरेट पीते हो। सिगरेट पीने में उलझ जाते हो, मन का तनाव थोड़ा सुलझता मालूम पड़ता है। सिगरेट से जाता हुआ निकोटीन तुम्हारे मन के तनाव को थोड़ा सा हलकापन दे देता है। तुम शराब पीते हो, क्योंकि तुम्हारी जिंदगी याद रखने योग्य नहीं है, भुलाने योग्य है। तुम शराब पीते हो, क्योंकि तुम विस्मरण करना चाहते हो।

एक शराबी ने मुझसे संन्यास लिया। वह तो मान ही न सका कि मैं उसे संन्यास दूंगा! वह तो आया था मुझसे कहने कि क्या आप मुझे स्वीकार करेंगे? उसने कहा, मैं पहले ही बता दूं कि मैं शराबी हूं। मैंने कहा कि ठीक, मुझे सभी स्वीकार हैं। जब परमात्मा को तुम स्वीकार हो और परमात्मा...तुम शराब कितने दिन से पी रहे हो? उसने कहा, आज बारह साल से शराब पी रहा हूं। तो मैंने कहा, जब परमात्मा बारह साल से तुम्हें जिंदा रखे है और मार नहीं डालता, तो मैं कौन हूं बाधा डालने वाला? मेरी कसौटियां कोई परमात्मा से बड़ी कसौटियां नहीं हो सकती हैं। तुम बेफिक्री से पीओ। मगर तुम ध्यान शुरू करो! उसने कहा, क्या शराबी ध्यान कर सकता है? मैंने कहा, सच तो यह है कि शराब पीने की आकांक्षा उनको ही पैदा होती है जिनके भीतर ध्यान की संभावना है।

मगर जब ध्यान में उतरोगे तो तुम शराबी नहीं रहोगे। ध्यान में उतरने के लिए ध्यान में उतरना ही है।



क्या है? आर जा बोलता, वह नाहक अज्ञाना बन जाता। क्याक जा वह बोल कर कहता, वह दूसरे ने जो जाना है, उससे इतना छोटा होता--वह दूसरे के पास तो जाना हुआ है और एक बोल कर कहता, तो जाने हुए के सामने बोल कर कहना बहुत कठिन बात है। क्योंकि उसको लगता है कि अरे! उसका जाना हुआ तो अपार है और बोला हुआ छोटा सा! तो जो बोलता, वह नासमझ होता।

फरीद से कहा, तो फरीद ने कहा कि बोलते? कबीर के सामने बोलते? तो तुम मुझे पागल बना देते। बोल कर मैं फंसता! क्योंकि जो बोलता, वह बोलते से ही गलत हो जाता।

जो जाना गया है, उसके सामने बोला हुआ सब गलत है--सब। न जाना गया हो तो सभी बोला हुआ सच मालूम पड़ता है। लेकिन जिसने जाना हो, उसके सामने बोला गया इतना फीका है, इतना फीका...

जैसे मैंने आपको देखा हो, आपको देखा हो निकट से, जाना हो, पहचाना हो। और फिर कोई मुझे सिर्फ आपका नाम बता दे और नाम को ही परिचय बता दे, तो नाम क्या परिचय बनेगा! जिस व्यक्ति को मैं जानता हूं, उसका नाम क्या परिचय बनेगा! हां, जिसको हम नहीं जानते, उसके लिए नाम भी परिचय बन जाता है। लेकिन जिसको हम जानते हैं, उसके नाम से क्या फर्क पड़ता है! कोई परिचय नहीं बनता। नाम कोई परिचय है? तो परिचय नहीं है।

तो फरीद ने कहा कि जरूरी था कि मैं चुप रह जाऊं, क्योंकि बोल कर मैं जो कहता, वह सिर्फ नाम होता। और उस आदमी ने उसे जाना है, और उसका सिर्फ नाम लेना एकदम बचकाना था।

जहां ज्ञान है, वहां भेद नहीं है। और जहां शब्द है, वहां अभेद होना असंभव है। जैसे ही शब्द का प्रयोग किया, भेद पड़ने शुरू हो गए। यह ऐसे ही है, जैसे हम सूरज की किरण को देखें, वहां कोई भेद नहीं है। सूरज की किरण सीधी और साफ है। लेकिन एक प्रिज्म ले लें, और फिर सूरज की किरण को देखें, तो प्रिज्म सात टुकड़ों में तोड़ देता है। प्रिज्म के इस पार सूरज की इकहरी किरण देखनी मुश्किल है। प्रिज्म के उस पार सूरज की सात खंडों में विभाजित किरण देखनी मुश्किल है। शब्द प्रिज्म का काम कर रहा है। जो जाना गया है, वह शब्द के उस पार है; और जो कहा गया है, वह शब्द के इस पार है। शब्द के इस पार सब टूट जाता है खंड-खंड, शब्द के उस पार सब अखंड है।

ओशो..



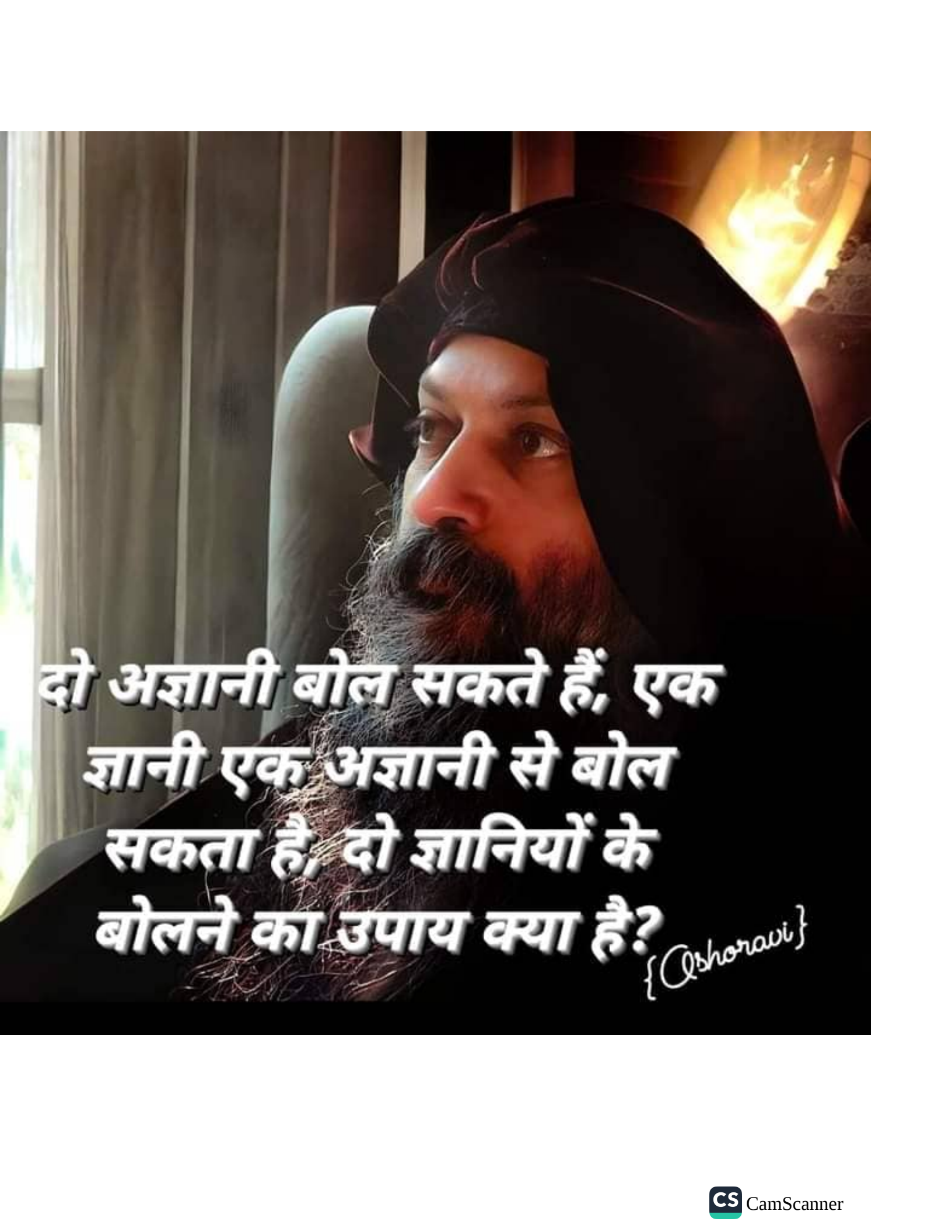
दो अज्ञानी बोल सकते हैं, एक ज्ञानी एक अज्ञानी से बोल सकता है, दो ज्ञानियों के बोलने का उपाय क्या है?

एक बार ऐसा हुआ कि फरीद यात्रा कर रहा था। कुछ मित्र साथ थे। और कबीर का आश्रम निकट आया तो फरीद के मित्रों ने कहा, कितना अच्छा न हो कि हम कबीर के पास दो दिन रुक जाएं! आप दोनों की बातें होंगी, तो हम तो धन्य हो जाएंगे। शायद ऐसा जन्मों में ऐसा अवसर मिले कि कबीर और फरीद का मिलना हो और लोग सुन लें। फरीद ने कहा, तुम कहते हो तो जरूर रुक जाएंगे, लेकिन बात शायद ही हो। तो उन्होंने कहा, लेकिन बात क्यों नहीं होगी? उन्होंने कहा, वह तो चल कर ठहरेंगे तो ही पता चल सकता है।

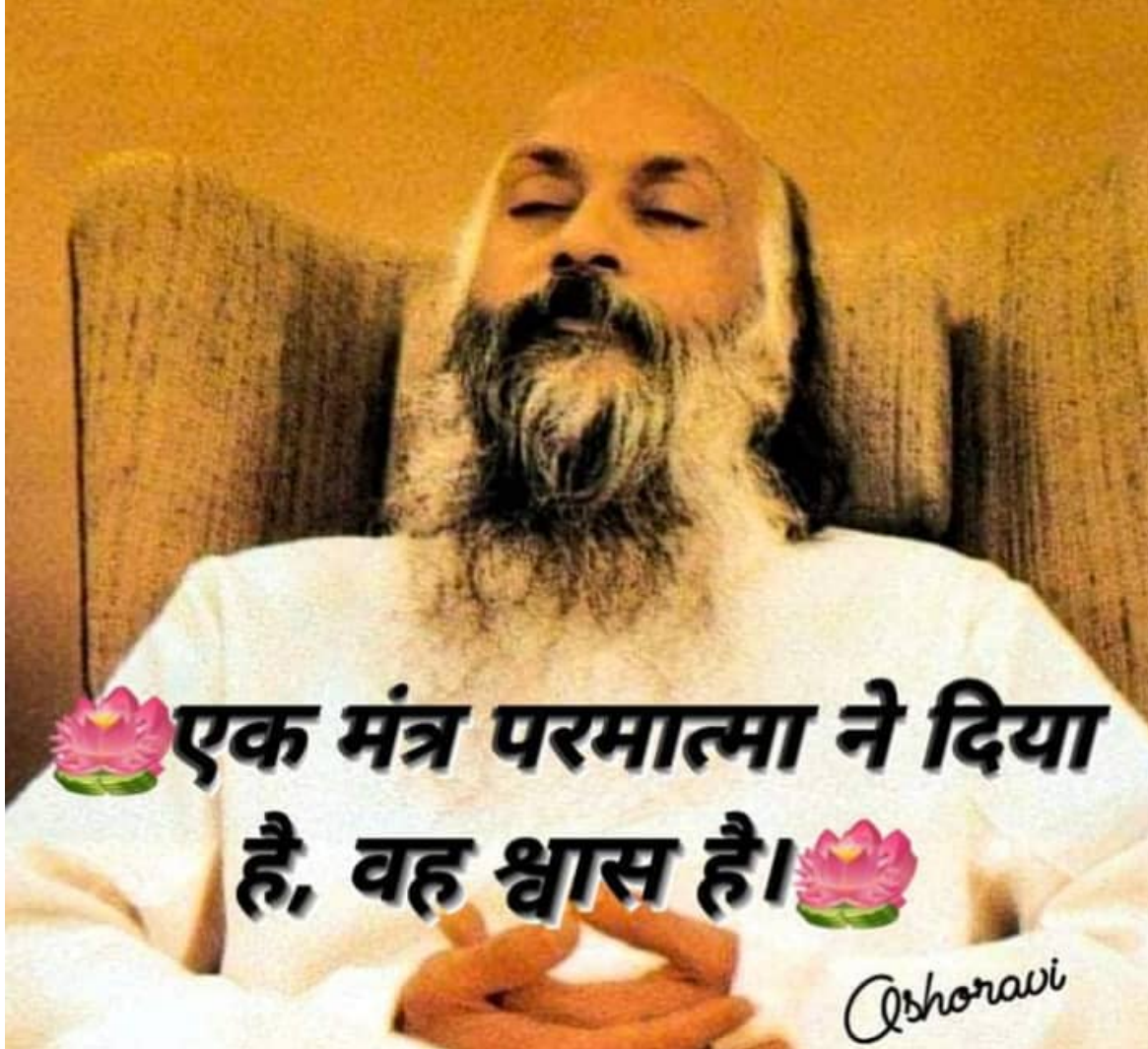
कबीर के मित्रों को भी खबर लग गई है, उन्होंने कहा कि फरीद निकलता है यहां से, रोक लें, प्रार्थना करें, हमारे आश्रम में रुक जाए दो दिन। आप दोनों की बातें होंगी, कितना आनंद होगा! कबीर ने कहा, रोको जरूर, आनंद भी बहुत होगा, लेकिन बातें शायद ही हों। पर उन्होंने कहा, बातें क्यों न होंगी? तो कबीर ने कहा, वह तो फरीद आ जाए तो पता चले।

फरीद को रोक लिया गया है। वे दोनों गले मिले हैं, वे दोनों हंसे हैं, वे दोनों पास बैठे हैं--दो दिन बीत गए हैं, लेकिन कोई बात नहीं होती। सुनने वाले तो बहुत ऊब गए हैं, बहुत घबड़ा गए। फिर विदाई भी हो गई, फिर कबीर गांव के बाहर जाकर छोड़ भी आए। वे मिले गले, रोए भी, लेकिन फिर भी नहीं बोले!

छूटते ही कबीर के शिष्यों ने पूछा, यह क्या पागलपन है? दो दिन आप बोले नहीं? फरीद के शिष्यों ने पूछा, यह क्या हुआ? हम तो घबड़ा गए। दो दिन यह कैसी चुप्पी! तो कबीर ने कहा, जो मैं जानता हूं, वही फरीद जानते हैं, अब बोलने का उपाय क्या है? दो अज्ञानी बोल सकते हैं, एक ज्ञानी एक अज्ञानी से बोल सकता है, दो ज्ञानियों के बोलने का उपाय क्या है? और जो बोलता, वह नाहक अज्ञानी बन जाता। क्योंकि जो वह बोल कर कहता, वह दूसरे ने जो जाना है, उससे इतना छोटा होता--वह दूसरे के पास तो जाना हुआ है और एक बोल कर कहता, तो जाने हुए के सामने बोल कर कहना बहुत कठिन बात है। क्योंकि उसको लगता है कि अरे! उसका जाना हुआ तो अपार है और बोला हुआ छोटा सा! तो जो बोलता, वह नासमझ होता।



दो अज्ञानी बोल सकते हैं, एक
ज्ञानी एक अज्ञानी से बोल
सकता है, दो ज्ञानियों के
बोलने का उपाय क्या है? {Qshoravi}





We Love Old
Songs

रजनीश ओशो की सत्य
की खोज

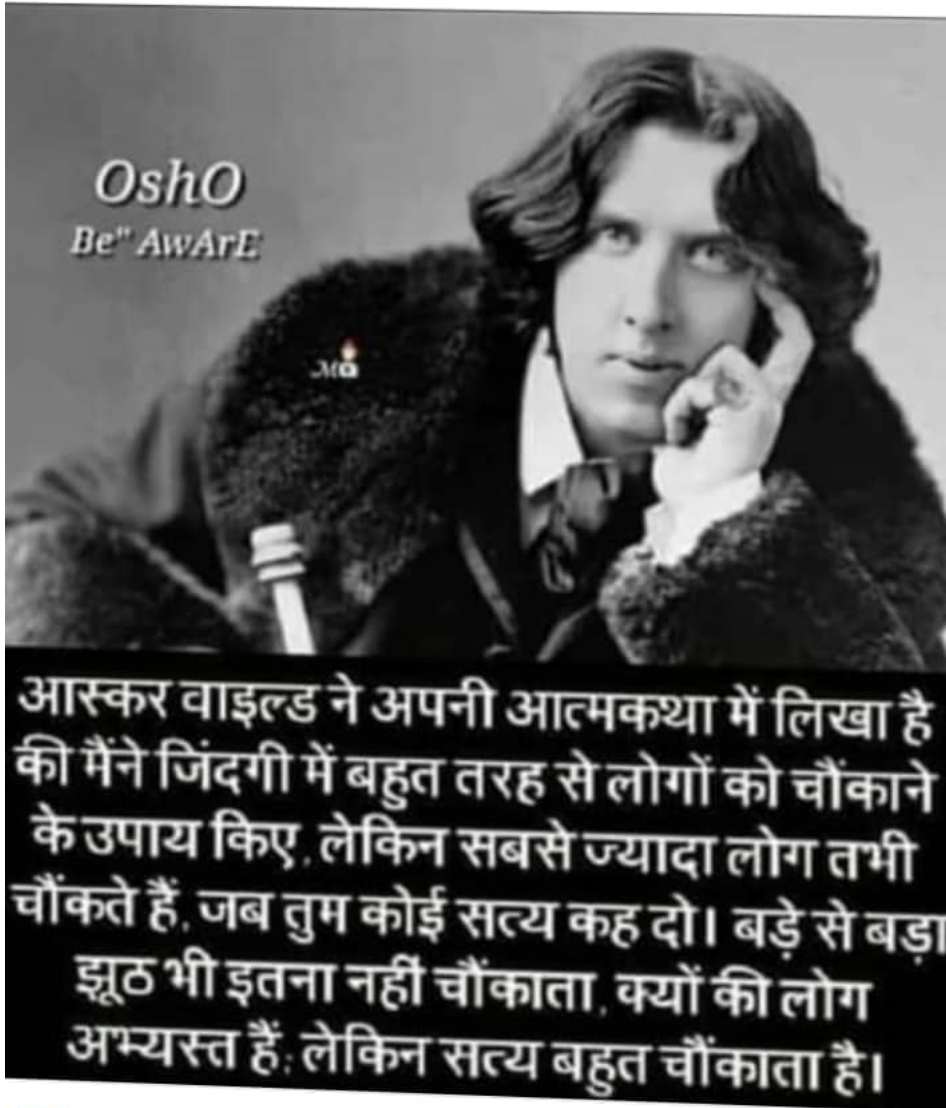
Ma Ananda Sarita

एक
और



ओशो - जीवन-मृत्यु

Om Dutt Sharma · 1d · 🌐



108

7 comments · 15 shares



Like



Comment



Send



Share



Suggested pages



सुझाए गए पेज



माँ प्रेम सुगंधा — at CG Saswatdham -
सिजी सास्वतधाम.



Reels · 3d · 🌐

परमात्मा जो करता है करने दे, तू निमित्त हो जा।
जो निमित्त हो गया, वह मालिक हो गया।
क्योंकि जो निमित्त हो गया,
वह मालिक के साथ एक हो गया।

❤️ओशो❤️ #अहोभाव #osho #meditation
#maapremsugandha #gurublessings #morningvibes



इंसान को अगर सही समझ मिले, तो धर्मों के सारे झगड़े समाप्त हो जाएँ ।

हिंदू  कहते हैं, "ईश्वर अमर है" । मुसलमान  कहते हैं, "अल्लाह अकबर है ।" अकबर का अर्थ भी वही है, अ-कबर यानी जिसकी क़ब्र नहीं खोदी जा सकती । "अल्लाह हूँ अकबर" का अर्थ है GOD IS GREAT । जो ईश्वर नहीं है उसकी क़ब्र खोदी जा सकती है । जो ईश्वर है वो अमर है, अकबर है, उनकी क़ब्र नहीं खोदी जाती । क्रिश्चियन  कहते हैं, "एंथनी ।" एंथनी का अर्थ है, जिसका कोई अंत नहीं । ईश्वर का सही अर्थ समझ आया तो झगड़ा नहीं होगा क्योंकि तीनों का अर्थ एक ही है वरना धर्मों का झगड़ा चलता रहता है । सबका अर्थ एक ही है, इंशा-अल्लाह कहें, Thy will be done कहें, ईश्वर की इच्छा पूर्ण हो कहें-सबका अर्थ वही है । आपस में झगड़ने की जरूरत ही नहीं है ।...सरश्री

8:34 am ✓✓

"तुम्हें मुखाट लगाने के लिए बाध्य किया गया है क्योंकि तुम से उम्मीद की जाती है कि तुम विशेष ढंग से व्यवहार करो, विशेष ढंग से बातचीत करो, विशेष ढंग से वस्त्र पहनो। तुम्हारी अपनी कोई स्वतंत्रता नहीं है।

हर कोने से, समाज ने तुम्हें पूरी तरह कैद कर रखा है। यही तुम्हारी दासता है और यही तुम्हारा दुख है। यही तुम्हारा दर्द है और यही तुम्हारा नरक है।

इन सभी झूठों से बाहर निकलो और बस सरल हो जाओ – इतने सरल जितने गीत गाते पक्षी, इतने सरल जितने सूरज का आनंद लेते वृक्ष, इतने सरल जैसे छोटे बच्चे" ओशो 



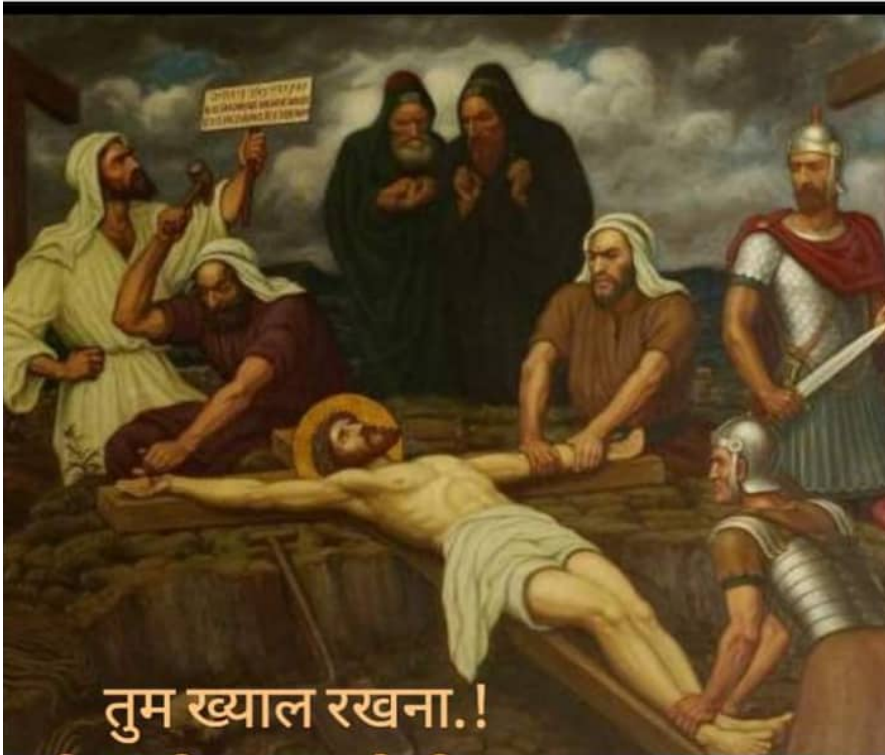
You chose to see more posts from this Group.



ओशो - जीवन-मृत्यु



दिनेश कौशिक · 3d · 🌐



तुम ख्याल रखना. !
भीड़ हमेशा उनको ही पसंद
करती है, जो उनके
जैसे हैं. ! किसी अनूठे को
नहीं. !!

ओशो



719

13 comments · 56 shares



Like



Comment



Send



Share



ओशो-रूमी



2d · 🌐





उसने कहा: 'लेकिन मैंने कोई चिकित्सा नहीं की।'

लुकमान ने कहा: इसका कोई सवाल नहीं है। क्योंकि मैंने तुझे जिस वृक्ष के नीचे सोते हुए भेजा था। तू जिन्दा लौट नहीं सकता था। तू लौटा कैसे। क्या किसी और वृक्ष ने नीचे सोत हुआ लौटा है।

उसने कहा: ' मुझ आज्ञा दी कि अब बबूल से बचूं। और नीम के नीचे सोता हुआ लौट जाऊं। तो लुकमान ने कहा कि वह भी जानते है।

असल में बबूल सक-अप करता है एनर्जी को। आपकी जो एनर्जी है, आपकी जो प्राण ऊर्जा है, उसे बबूल पीता है। बबूल के नीचे भूलकर मत सोना। और अगर बबूल की दातुन की जाती रही है तो उसका कुल कारण इतना है कि बबूल की दातुन में सर्वाधिक जीवन एनर्जी होती है। वह आपके दांतों को फायदा पहुंचा देती है। क्योंकि वह पाता रहता है। जो भी निकलेगा पास से वह उसकी एनर्जी पी लेता है। नीम आपकी एनर्जी नहीं पीता है। बल्कि अपनी एनर्जी आपको दे देता है। अपनी ऊर्जा आप पर उड़ेल देता है।

लेकिन पीपल के वृक्ष के नीचे भी मत सोना। क्योंकि पीपल का वृक्ष ज्यादा एनर्जी उड़ेल देता है कि उसकी वजह से आप बीमार पड़ जाएंगे। पीपल का वृक्ष सर्वाधिक शक्ति देने वाला वृक्ष है। इसलिए यह हैरानी की बात नहीं है कि पीपल का वृक्ष बोधि-वृक्ष बन गया, उसके नीचे लोगों को बुद्धत्व मिला। उसका कारण है कि वह सर्वाधिक शक्ति दे पाता है। वह अपने चारों ओर से शक्ति आप पर लुटा देता है। लेकिन साधारण आदमी उतनी शक्ति नहीं झेल पाएगा। सिर्फ पीपल अकेला वृक्ष है पृथ्वी पर जो रात में भी और दिन में भी पूरे समय शक्ति दे रहा है। इसलिए उसको देवता कहा जाने लगा। उसकी और कोई कारण नहीं है। सिर्फ देवता ही हो सकता है जो ले न और देता ही चला जाए। लेता नहीं, लेता ही नहीं देता ही चला जाता है।

यह जो आपके भीतर प्राण ऊर्जा है, इस प्राण-ऊर्जा को...यही आप है।।

महावीर वाणी

ओशो



लुकमान के जीवन में उल्लेख है कि एक आदमी को उसने भारत भेजा आयुर्वेद की शिक्षा के लिए और उससे कहा कि तू बबूल के वृक्ष के नीचे सोता हुआ भारत पहुंच। और किसी दूसरे वृक्ष के नीचे न तो आराम करना और न ही सोना। वह आदमी जब तक भारत आया, क्षय रोग से पीड़ित हो गया था। कश्मीर पहुंचकर उसने पहले चिकित्सक को कहा कि मैं तो मरा जा रहा हूं। मैं तो सीखने आया था आयुर्वेद, अब सीखना नहीं है। सिर्फ मेरी चिकित्सा कर दें। मैं ठीक हो जाऊं तो अपने घर वापस लौटू। उस वैद्य ने उससे कहा, तू किसी विशेष वृक्ष के नीचे सोता हुआ तो नहीं आया?

उस आदमी ने तपाक से कहा: हां मुझे मेरे गुरु ने आज्ञा दी थी कि तू बबूल के वृक्ष के नीचे सोता हुआ जाना।

वह वैद्य हंसा। उसने कहा, तू कुछ मत कर। तू अब नीम के वृक्ष के नीचे सोता हुआ वापस लौट जा।" वह नीम के वृक्ष के नीचे सोता हुआ वापस लौट गया। वह जैसा स्वस्थ चला था, वैसा स्वस्थ लुकमान के पास पहुंच गया।

लुकमान ने उससे पूछा: "तू जिन्दा लौट आया, अब आयुर्वेद में जरूर कोई राज है।"

उसने कहा: 'लेकिन मैंने कोई चिकित्सा नहीं की।'

लुकमान ने कहा: इसका कोई सवाल नहीं है। क्योंकि मैंने तुझे जिस वृक्ष के नीचे सोते हुए भेजा था। तू जिन्दा लौट नहीं सकता था। तू लौटा कैसे। क्या किसी और वृक्ष ने नीचे सोत हुआ लौटा है।

उसने कहा: ' मुझे आज्ञा दी कि अब बबूल से बचूं। और नीम के नीचे सोता हुआ लौट जाऊं। तो लुकमान ने कहा कि वह भी जानते हैं।

असल में बबूल सक-अप करता है एनर्जी को। आपकी जो एनर्जी है, आपकी जो प्राण ऊर्जा है, उसे बबूल पीता है। बबूल के नीचे भूलकर मत सोना। और अगर बबूल की दातुन की जाती रही है तो उसका कुल कारण दंतना है कि बबूल की दातुन में सर्वाधिक जीवन एनर्जी होती है।



तुम सत्यनारायण की कथा करवा लेते हो,
कभी हवन भी करवा लेते हो,
कभी यज्ञ करवा लेते हो,
और बड़ा आश्चर्य है,
करोड़ों रुपये यज्ञ पर फूँके जाते हैं,
और यज्ञ धार्मिक अनुष्ठान ही नहीं है।
यजन है, भजन नहीं है।

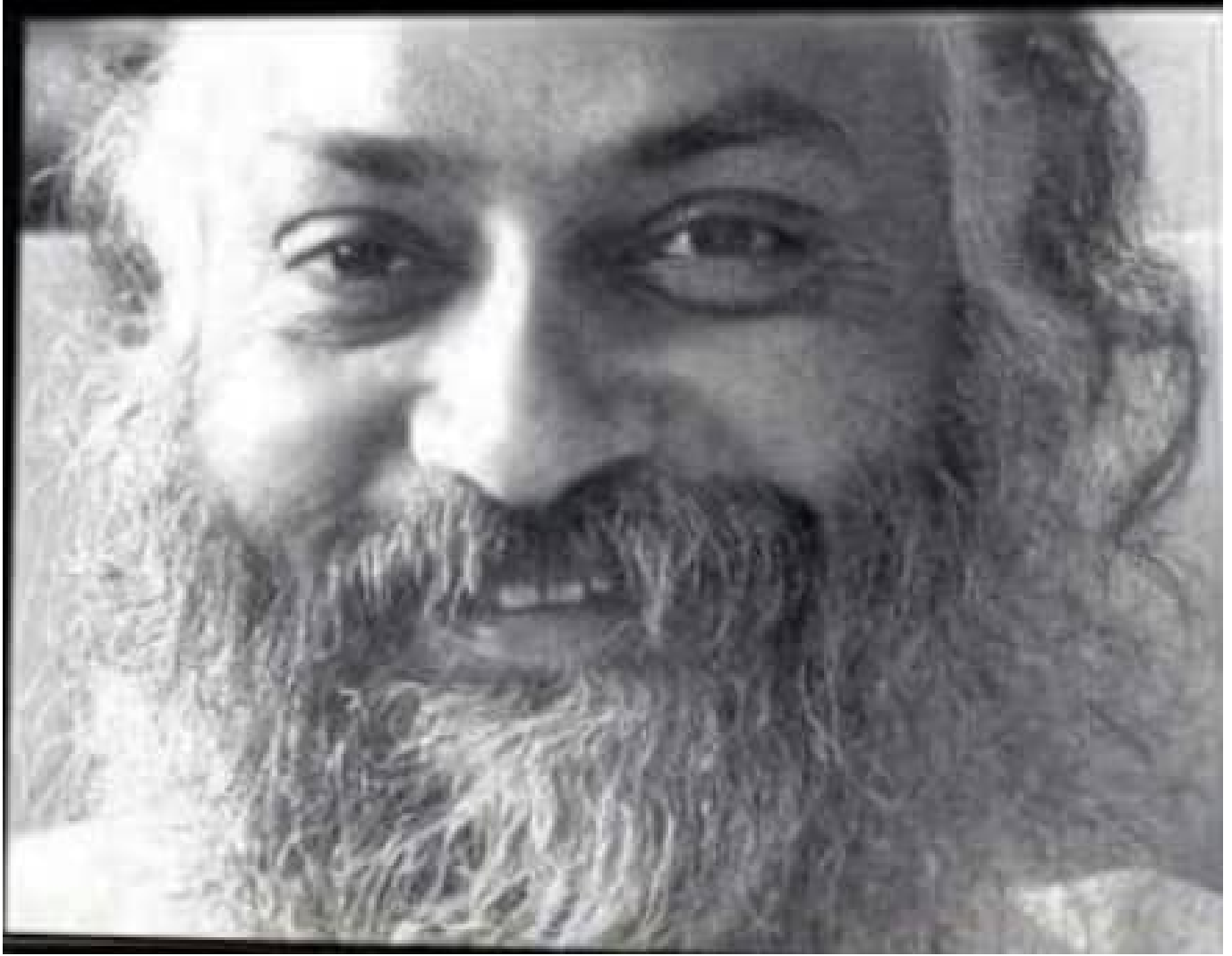
घी डालो, गेहूँ डालो, जो तुम्हें डालना हो डालते रहो,
सब आग खा जाएगी।

तुम जब तक अपने को न डालोगे
तब तक कोई यज्ञ पूरा नहीं होता।

जिस दिन तुम यह गेहूँ और घी
इत्यादि डालने का पागलपन छोड़ोगे,
अपने को डाल दोगे आग में,

तुम जिस दिन कहते कि मैं जलने को तैयार हूँ
उस दिन क्रांति घटती है, उस दिन भक्त का जन्म होता है।

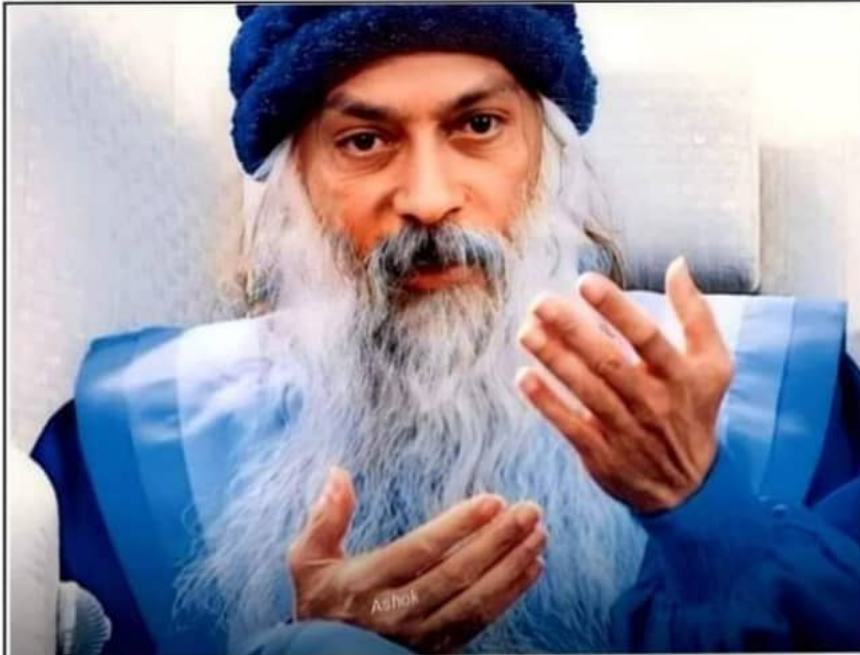
📖 अथातो भक्ति जिज्ञासा, भाग ~२, प्रवचन #७, ओशो 📖





❤️ Osho Raman ❤️

🌹🙏🏻🕉️🙏🏻🌹... See more



ध्यान रहे ।
यदि तुम्हारे भीतर स्वयं को
समय के साथ साथ बदलते
रहने का सामर्थ्य नहीं है तो ।
साल का यूँ बदलते रहना
तुम्हारे लिए कोई अर्थपूर्ण
नहीं है । **OSHO**



4

1 comment



Like



Comment



Send



Share



भोजन का निमंत्रण देकर ले आए हैं।

उसने कहा: मेरे पति? वे तो दिन भर से आज घर में नहीं हैं, उनका कोई पता नहीं है।

मित्र हंसने लगे, उन्होंने कहा: खूब मजाक हो गई यह तो। वे ही हमें लिवा कर लाए हैं, ऐसा कैसा हो सकता है कि वे घर पर न हों। वे भीतर मौजूद हैं। मित्र विवाद करने लगे। और आखिर में उनकी पत्नी से बोले कि आप हट जाओ, हम भीतर जाकर देख लेते हैं अगर नहीं है तो।

नसरुद्दीन को भी क्रोध आ गया। वह बाहर निकल कर आ गया और उसने कहा, क्यों विवाद किए चले जा रहे हो। यह भी तो हो सकता कि नसरुद्दीन आपके साथ आए हों फिर पीछे के दरवाजे से निकल गए हों।

नसरुद्दीन खुद ही आकर यह कहने लगे कि यह भी तो हो सकता कि नसरुद्दीन आपके साथ आए हों फिर पीछे के दरवाजे से निकल गए हों।

मित्रों ने कहा: पागल हो गए हो! क्रोध में तुम्हें समझ नहीं आ रहा। तुम खुद ही यह कह रहे हो कि मैं नहीं हूँ। यह कैसे हो सकता है। यह तो तुम्हारे होने का प्रमाण हो गया।

एक जगह है केवल जहां संदेह खंडित हो जाते हैं, गिर जाते हैं, वह है स्वयं का अस्तित्व, वह है स्वयं की आत्मा। लेकिन हम संदेह करते ही नहीं, तो इस बिंदु तक हम कभी पहुंच ही नहीं पाते। संदेह की यात्रा किए बिना कोई सत्य की मंजिल पर न कभी पहुंचा है न पहुंच सकता है। हम तो विश्वास कर लेते हैं। इसलिए निःसंदिग्ध सत्य का कभी कोई अनुभव नहीं हो पाता। और जब हमें कोई ऐसा सत्य ही न मिलता हो, जो निःसंदिग्ध है, जो इनडूबिटेबल, जिस पर शक नहीं किया जा सकता, तो हम सत्य की खोज भी कैसे करें। जब कोई स्वयं की चेतना के पास आकर यह अनुभव करता है कि नहीं, इस पर संदेह असंभव है, तब, तब इसकी खोज में और गहरे उतर सकता है।

ओशो



लाता था, उसा स साझा भाजन बनता था। जाज जाता मा नहा ला पाया था। मुश्किल होगी, द्वार पर जाकर उसे लगा, कठिनाई होगी खड़ी। उसने मित्रों से कहा, तुम रुको, जरा मैं भीतर जाऊं, अपनी पत्नी को समझा लूं। मित्र भी समझ गए, पत्नियों को बिना समझाए बड़ी कठिनाई है ऐसी स्थिति में।

मित्र बाहर रुक गए। नसरुद्दीन भीतर गया। पत्नी तो आगबबूला होकर बैठी थी। दिन भर से उसका कोई पता न था। घर में चूल्हा भी नहीं जला था। मांग कर आटा ही नहीं लाया गया था। और जब उसने जाकर कहा कि बीस मित्रों को भोजन के लिए निमंत्रण देकर ले आया हूं।

तो उसकी पत्नी ने कहा, तुम पागल हो गए हो, कहां थे दिन भर? भोजन का सवाल कहां है, हमारे लिए भी आटा नहीं भोजन का, मित्रों का तो कोई सवाल उठता नहीं। जाओ, उन्हें वापस लौटा दो।

नसरुद्दीन ने कहा: मैं कैसे वापस लौटाऊं? एक काम कर, तू जाकर उनसे कह दे कि नसरुद्दीन घर पर नहीं है।

उसकी पत्नी ने कहा: यह और अजीब बात आप मुझे समझा रहे हैं। आप उन्हें लेकर आए हैं और मैं उनसे जाकर कहूं कि नसरुद्दीन घर पर नहीं है!

नसरुद्दीन ने कहा: अब इसके सिवाय कोई रास्ता नहीं। जाकर कह, समझाने की कोशिश कर।

वह स्त्री बाहर गई, उसने मित्रों से पूछा: आप कैसे आए हैं?

उन मित्रों ने कहा: आए नहीं, लाए गए हैं, निमंत्रित हैं। आपके पति भोजन का निमंत्रण देकर ले आए हैं।

उसने कहा: मेरे पति? वे तो दिन भर से आज घर में नहीं हैं, उनका कोई पता नहीं है।

मित्र हंसने लगे, उन्होंने कहा: खूब मजाक हो गई यह तो। वे ही हमें लिवा कर लाए हैं, ऐसा कैसा हो सकता है कि वे घर पर न हों। वे भीतर



एक व्यक्ति था, दैप्यान। उसने संदेह करना शुरू किया—ईश्वर पर, जगत पर, शास्त्रों पर, सब पर। उसने तय किया कि मैं उस समय तक संदेह किए चला जाऊंगा जब तक मुझे कोई ऐसी चीज उपलब्ध न हो जाए जिस पर मैं संदेह करना भी चाहूं तो न कर सकूं। जहां जाकर मेरी संदेह की नौका जिस चट्टान से जाकर टकरा कर चूर-चूर हो जाएगी, उसी चट्टान को मैं नमस्कार करूंगा और कहूंगा यह सत्य है।

संदेह किया उसने तो ईश्वर भी चला गया संदेह में। शास्त्र भी चले गए। महापुरुष भी चले गए। गुरु भी चले गए। सिद्धांत, संप्रदाय, धर्म भी चला गया। सब चला गया। लेकिन एक जगह आकर वह चट्टान उपलब्ध हो गई जिस पर संदेह नहीं किया जा सकता था। वह चट्टान थी, स्वयं की चट्टान। अंत में उसने चाहा कि मैं अपने पर भी संदेह करूं कि मैं हूं या नहीं? लेकिन उसे पता चला, अगर मैं यह भी कहूं कि मैं नहीं हूं, तो भी यह मेरे होने का ही प्रमाण बनता है। अगर मैं संदेह करूं अपने पर, तो मेरा संदेह भी मेरे होने को सिद्ध करता है। इस जगह आकर संदेह टूट गया। स्वयं पर संदेह नहीं किया जा सकता।

एक फकीर था, नसरुद्दीन। एक सांझ मित्रों के साथ बातचीत में संलग्न रहा और नसरुद्दीन की बातें इतनी मीठी और इतनी प्रीतिपूर्ण थीं कि रात के कब बारह बज गए मित्रों को भी पता न चला। रात के भोजन का समय चूक गया। फिर नसरुद्दीन बोला, अब मैं जाता हूं। तो उसके मित्रों ने कहा, तुमने हमारे रात्रि का भोजन भी चूका दिया है। और अब तो घर लोग सो चुके होंगे, हमें भूखे ही सोना पड़ेगा आज। नसरुद्दीन ने कहा, घबड़ाओ मत, मेरे साथ चलो, आज मेरे घर ही भोजन कर लेना।

बीस मित्रों को लेकर आधी रात नसरुद्दीन घर पहुंचा। जोश में निमंत्रण तो दे दिया। जैसे-जैसे घर के पास पहुंचा और पत्नी की याद आई, वैसे-वैसे डरा। रात आधी हो गई थी, बिना खबर दिए बीस लोगों को भोजन के लिए लाना। पत्नी क्या कहेगी? और फिर आज दिन भर से वह घर लौटा भी नहीं था। और वह तो फकीर था। सुबह आटा मांग लाता था, उसी से सांझ भोजन बनता था। आज आटा भी नहीं ला पाया था। मुश्किल होगी, द्वार पर जाकर उसे लगा, कठिनाई होगी खड़ी। उसने मित्रों से कहा, तुम रुको, जरा मैं भीतर जाऊं, अपनी पत्नी को



कृष्णमूर्ति कहते हैं, योग की कोई जरूरत नहीं, ध्यान की कोई जरूरत नहीं, जप-तप की कोई जरूरत नहीं। ये सब अनुष्ठान हैं। अनुष्ठान उसके लिए करना होता है, जो हमारा स्वभाव नहीं है, स्वभाव को पाने के लिए क्या अनुष्ठान करना है? सब अनुष्ठान छोड़कर अपने में झाँक लो, स्वभाव प्रकट हो जाएगा।

स्वस्थ और रोग

स्वस्थ शब्द का अर्थ समझ लो तो रोग का अर्थ समझ में आ जायेगा। स्वस्थ का अर्थ होता है स्वयं में स्थित हो जाना। यह शब्द बड़ा प्यारा है। स्वस्थ का अर्थ होता है स्वयं में ठहर जाना। जो चीज भी तुम्हें स्वयं से दूर ले जाये, वही रोग। जो तुम्हें स्वयं से भटकाये, अलग करे, तोड़े, अस्वस्थ करे--वही रोग। कौन करता है तुम्हें अपने से दूर? तुम्हारी वासना, तुम्हारी तृष्णा तुम्हें भविष्य में भटकाती है।

—ओशो



www.oshofragrance.org



Like



Comment



Send



Share

**रजनीश ओशो की सत्य की खोज**Reels · 1d · Paid partnership ·
PARTHOMATIC ·

जिस को मृत्यु का स्मरण आ गया वो सौभाग्यशाली है



ओशो की दस आज्ञाएं-

1. किसी की आज्ञा कभी मत मानो जब तक कि वह स्वयं की ही आज्ञा न हो।
2. जीवन के अतिरिक्त और कोई परमात्मा नहीं है।
3. सत्य स्वयं में है, इसलिए उसे और कहीं मत खोजना।
4. प्रेम प्रार्थना है।
5. शून्य होना सत्य का द्वार है; शून्यता ही साधन है, साध्य है, सिद्धि है।
6. जीवन है, अभी और यहीं।
7. जियो--जागे हुए
8. तैरो मत, बहो
9. मरो प्रतिक्षण, ताकि प्रतिपल नए हो सको
10. खोजो मत, जो है--है, रुको और देखो।



insta:- swami_dhyan_rohan

मनुष्य खुद ईश्वर तक नहीं पहुंचता है बल्कि
जब वह तैयार हो जाता है तो ईश्वर खुद उस
तक पहुंच जाते हैं।

~ओशो



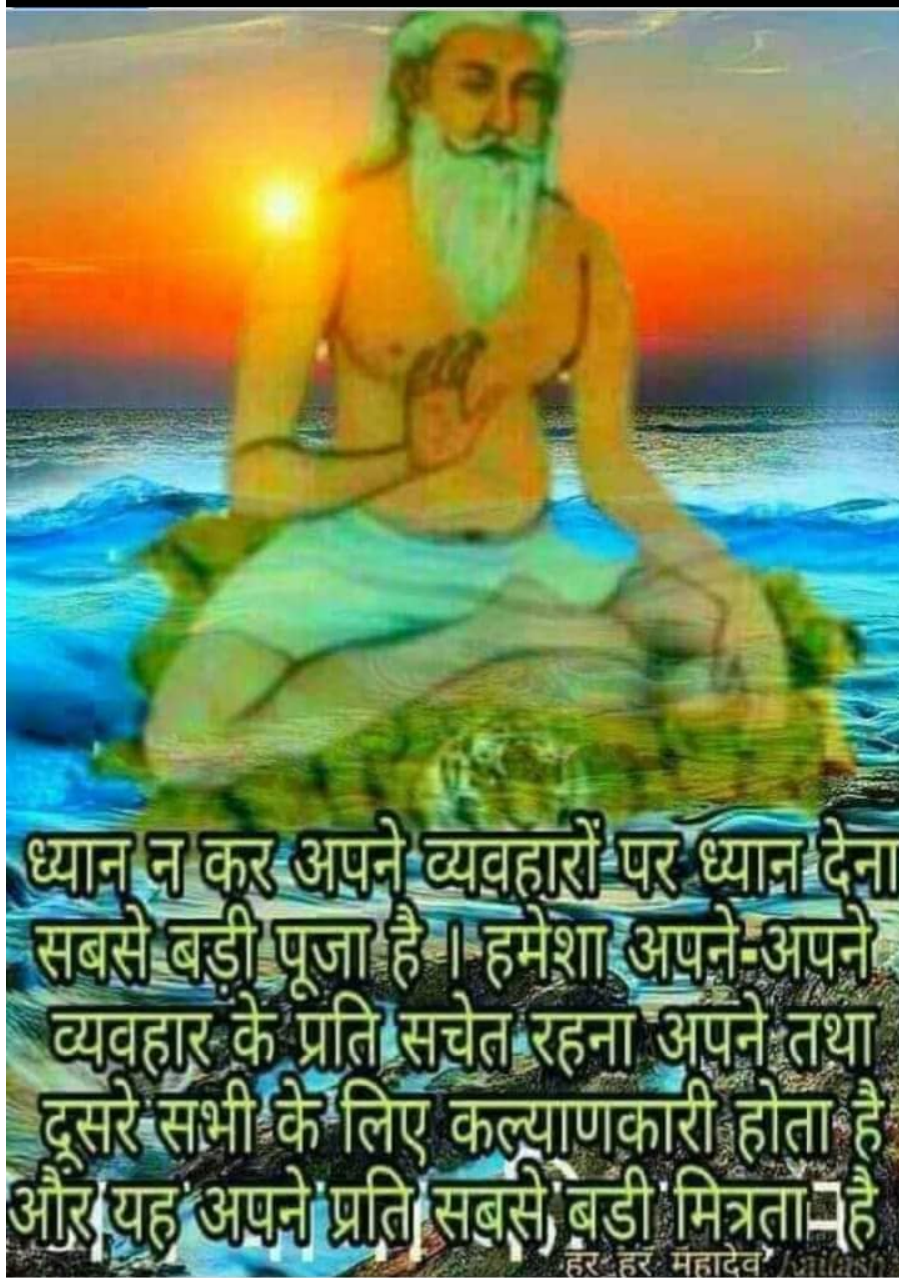
Reels · 2d ·

😞 अशांति का एक ही कारण है!! 😞

🏃‍♂️ 🏃‍♀️ गैरज़रूरी की दौड़!! 🏃‍♀️ 🏃‍♂️

#ओशो #osho #oshoravi #oshoraviyog #oshkosh
#oshawa #oshoquotes #reels #viralreels #virals
#viralpage #viralpage2023





**Osho Osho**

2d · 🌐



#यूनान में एक कथा है। एक बहुत सुंदर युवक हुआ, नार्सीसस। वह इतना सुंदर था कि वह अपने ही प्रेम में पड़ गया। उसने अपनी छांह देख ली एक सरोवर में। तब दर्पण न रहे होंगे। बहुत पुरानी कथा है। एक सरोवर में अपनी छांह देख ली; इतनी सुंदर थी! निश्चित ही युवक बहुत सुंदर था। फिर बहुत युवतियों ने उस पर अपने तीर फेंके, वे कारगर न हो सकीं। क्योंकि वह जो छांव में उसने देख लिया था वैसा सुंदर फिर उसने किसी को पाया नहीं।

वह भटकता रहा, वह खोजता रहा उस व्यक्ति को, जो उसने देख लिया था सरोवर के भीतर छिपा हुआ। वह घंटों, और दिनों, और महीनों सरोवर के किनारे बैठा रहता और देखता रहता टकटकी लगा कर। पानी में छलांग लगाता, प्रतिबिंब खो जाता; डुबकी मारता, खोजता, कुछ भी न पाता। वहां कुछ था तो नहीं, वहां तो बस प्रतिफलन था, वहां तो सिर्फ प्रतिछाया थी। उसके कूदते ही खो जाती। कहते हैं, नार्सीसस पागल हो गया। सरोवर दर्पण, प्रतिफलन, छलांग लगाना, खोजना; खाना-पीना भूल गया। जंगल-जंगल खोजता फिरा। पहाड़-पहाड़ उसकी आवाज से गूंजने लगे।

जो नार्सीसस की कथा है, वही तुम्हारी कथा है। तुम जिसे खोज रहे हो वह तुम्हारे भीतर छिपा है। हो सकता है किसी की आंख के सरोवर में तुम्हें दिखाई पड़ा हो अपना प्रतिबिंब। हो सकता है किसी के चेहरे पर तुम्हारा प्रतिबिंब दिखाई पड़ा हो। हो सकता है कभी संगीत के माधुर्य में झलक गई हो बात। किसी सुबह सूरज के उगते क्षण में, आकाश के मौन में, पक्षियों के कलरव में, खिलते हुए गुलाब के फूल में तुम्हें दर्पण मिल गया हो। लेकिन जो तुमने देखा है, जो तुमने सुना है, जो तुमने पाया है कहीं भी बाहर, सब खोजियों की खोज एक है कि वह तुम्हारे भीतर छिपा है।

ओशो

**Osho Osho**

2d · 🌐

महावीर कहते हैं कि आत्मा ही ज्ञान है, आत्मा ही सत्य है, आत्मा ही धर्म है, आत्मा ही परमात्मा है, आत्मा ही सब कुछ है।

और बुद्ध क्या कहते हैं? बुद्ध कहते हैं, आत्मा अज्ञान है। जो आत्मा को मानता है, भटक जाएगा। जिसने आत्मा को माना वह डूबा। आत्मा से बड़ा मानना अज्ञान का और कुछ भी नहीं है।

बड़ी अजीब बात है! एक कहता है, आत्मा ही ज्ञान। एक कहता है, आत्मा अज्ञान। अब हम बड़ी मुश्किल में पड़ जाएंगे कि बड़ी मुश्किल हो गई। लेकिन जो जानते हैं, वे जानते हैं कि मुश्किल नहीं हो गई। बुद्ध की एक डिवाइस है, बुद्ध का एक ढंग है आपके चिंतन को जगाने का।

महावीर का ढंग दूसरा है आपके चिंतन को जगाने का। दोनों का इरादा एक है, रास्ते अलग हैं।

महावीर कहते हैं कि आत्मा ही ज्ञान है, आत्मा ही सब कुछ है। साथ में कहते हैं, लेकिन आत्मा का पता कब चलेगा? कहते हैं, जब अहंकार गिर जाएगा तब पता चलेगा। अहंकार गिर जाएगा तब पता चलेगा कि आत्मा क्या है। और बुद्ध कहते हैं, आत्मा अज्ञान है; क्योंकि आत्मा ही अहंकार है। जब आत्मा मिट जाएगी, तब पता चलेगा कि क्या है। अब इसमें कोई फर्क नहीं है।

इधर हिंदुस्तान के सारे शिक्षक चिल्ला-चिल्ला कर कहते हैं कि अनंत-अनंत जन्म हैं। अनंत-अनंत जन्मों से तुम भटक रहे हो, भटक रहे हो, सड़ रहे हो, बार-बार उसी चक्कर में घूम रहे हो। कब तक घूमते रहोगे? अब जागो! उधर जीसस और मोहम्मद कहते हैं, अनंत जन्म वगैरह नहीं हैं, एक ही जन्म है! एक ही मौका है, अगर जाग गए तो जाग गए; नहीं जागे तो खो गए हमेशा के लिए। इसलिए जाग जाओ!

ओशो



जब तक जीवन है, जीओ,
जब मौत आए तो मरो।
झेन फकीर कहते हैं,
जब भूख लगे तो भोजन कर लो
और जब नींद आ जाए तो सो जाओ'।
जब तक जीवन चले,
चलो और जब जीवन बिखरने लगे,
बिखर जाओ। जो घटे, उसे सहज स्वीकार कर लो,
ओशो संतो मगन भया मन मेरा-(प्रवचन-18)





1d · 🌐

आज' वही 'कल' है जिस 'कल' की फिक्र तुम्हें 'कल' थी। तो उठो और अपनी पूरी ताकत के साथ अपने लक्ष्य की ओर बढ़ो, उन्हें पूरा करो और अपने सपनों को जियो।



Like



Comment



Send



Share



Like



Comment



Send



Share



🌸 OSHO TODAY 🌸
❤️ OSHO TOMORROW ❤️



Meet Panwar · 31m · 🌐

**Raj Panwar**

1d · 🌐

आज' वही 'कल' है जिस 'कल' की फिक्र तुम्हें 'कल' थी। तो उठो और अपनी पूरी ताकत के साथ अपने लक्ष्य की ओर बढ़ो, उन्हें पूरा करो और अपने सपनों को जियो।

OSHO

Lovel



साहसी लोग ही
मुझे सुनने को तैयार होंगे,
क्योंकि मुझे
anamcara Rames
सुनना जोखिम से भरा होगा।

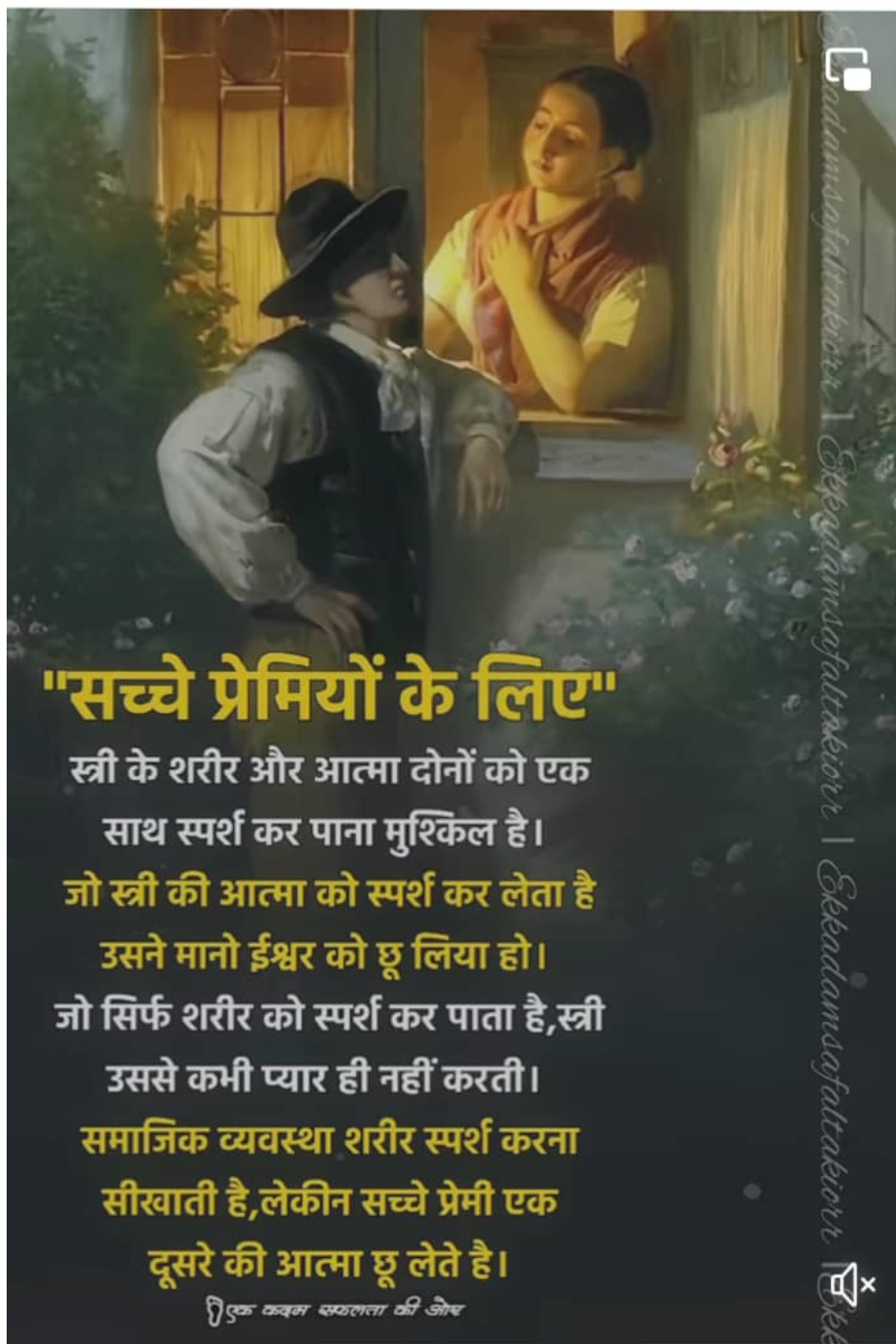


एक क़दम सफलता की ओर

Reels · 22h · Madhuri Dixit ·



स्त्री के शरीर को छू लेना आसान है लेकिन उसकी आत्मा को वही छू पाते हैं जिसने पूरे मन से प्रेम किया हो 100 🌹❤️



"सच्चे प्रेमियों के लिए"

स्त्री के शरीर और आत्मा दोनों को एक साथ स्पर्श कर पाना मुश्किल है।

जो स्त्री की आत्मा को स्पर्श कर लेता है उसने मानो ईश्वर को छू लिया हो।

जो सिर्फ शरीर को स्पर्श कर पाता है, स्त्री उससे कभी प्यार ही नहीं करती।

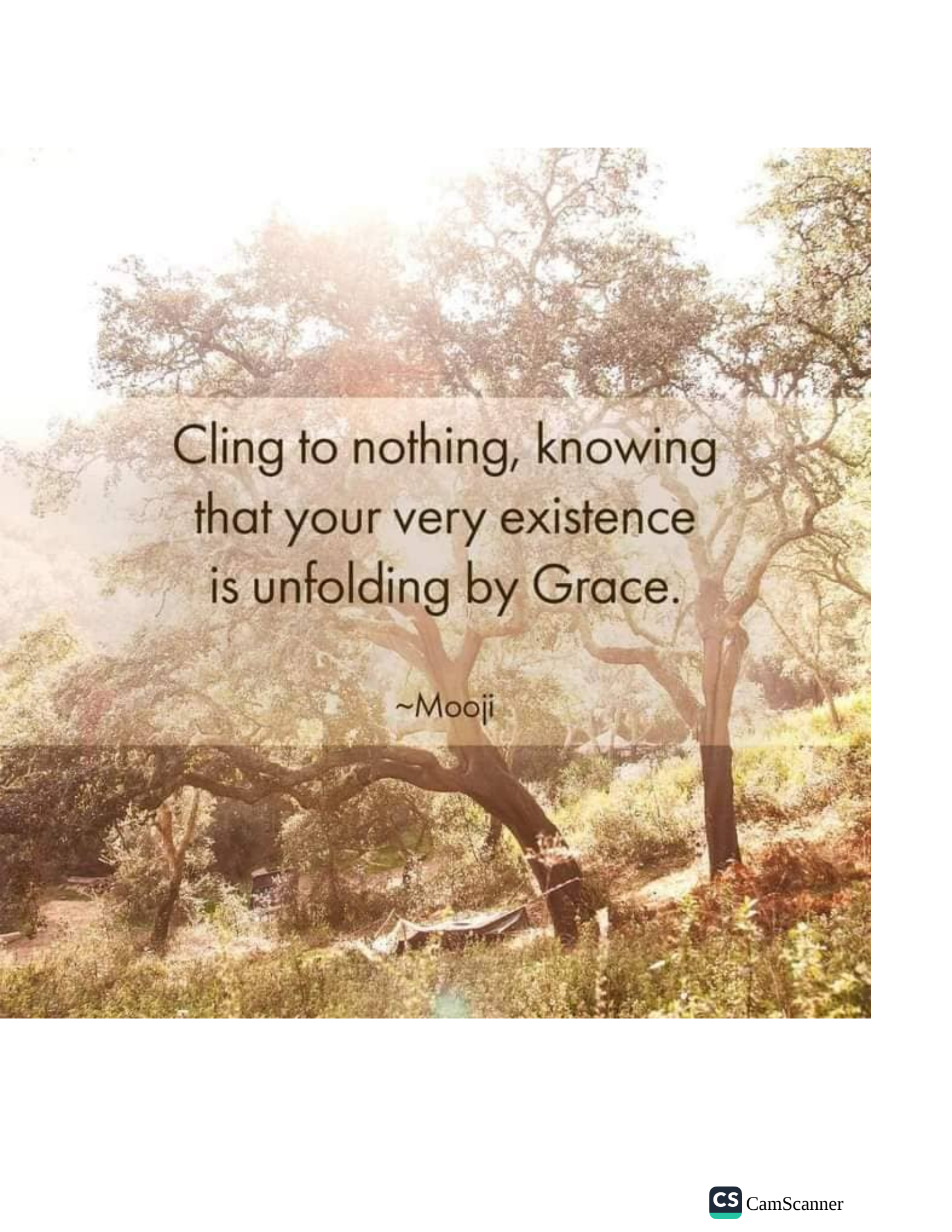
समाजिक व्यवस्था शरीर स्पर्श करना सीखाती है, लेकिन सच्चे प्रेमी एक दूसरे की आत्मा छू लेते हैं।

एक क़दम सफलता की ओर

417

7 comments · 112 shares · 130K views



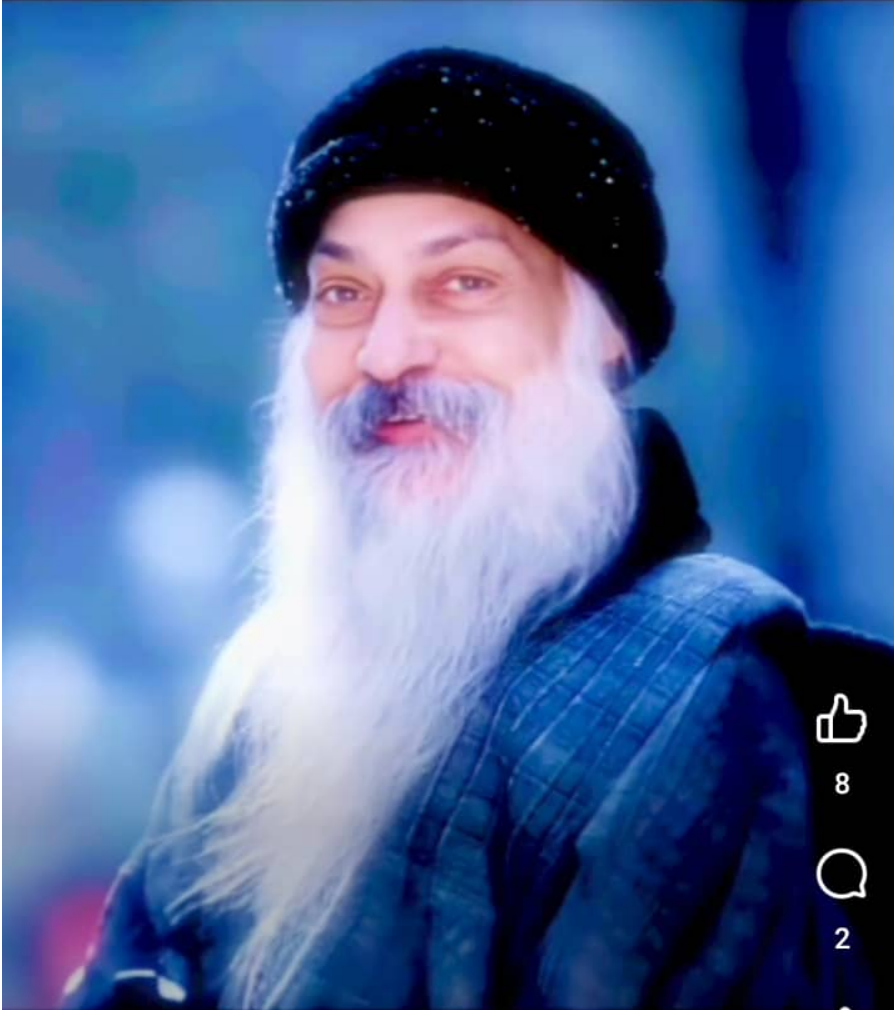


Cling to nothing, knowing
that your very existence
is unfolding by Grace.

~Mooji



कोई समझौता मत करना



8



2



1



Send



Osho World

Osho word #osho #oshohindi

Add a comment...





Like



Comment



Send



Share



OSHO TODAY
OSHO TOMORROW



Meet Panwar · 31m ·

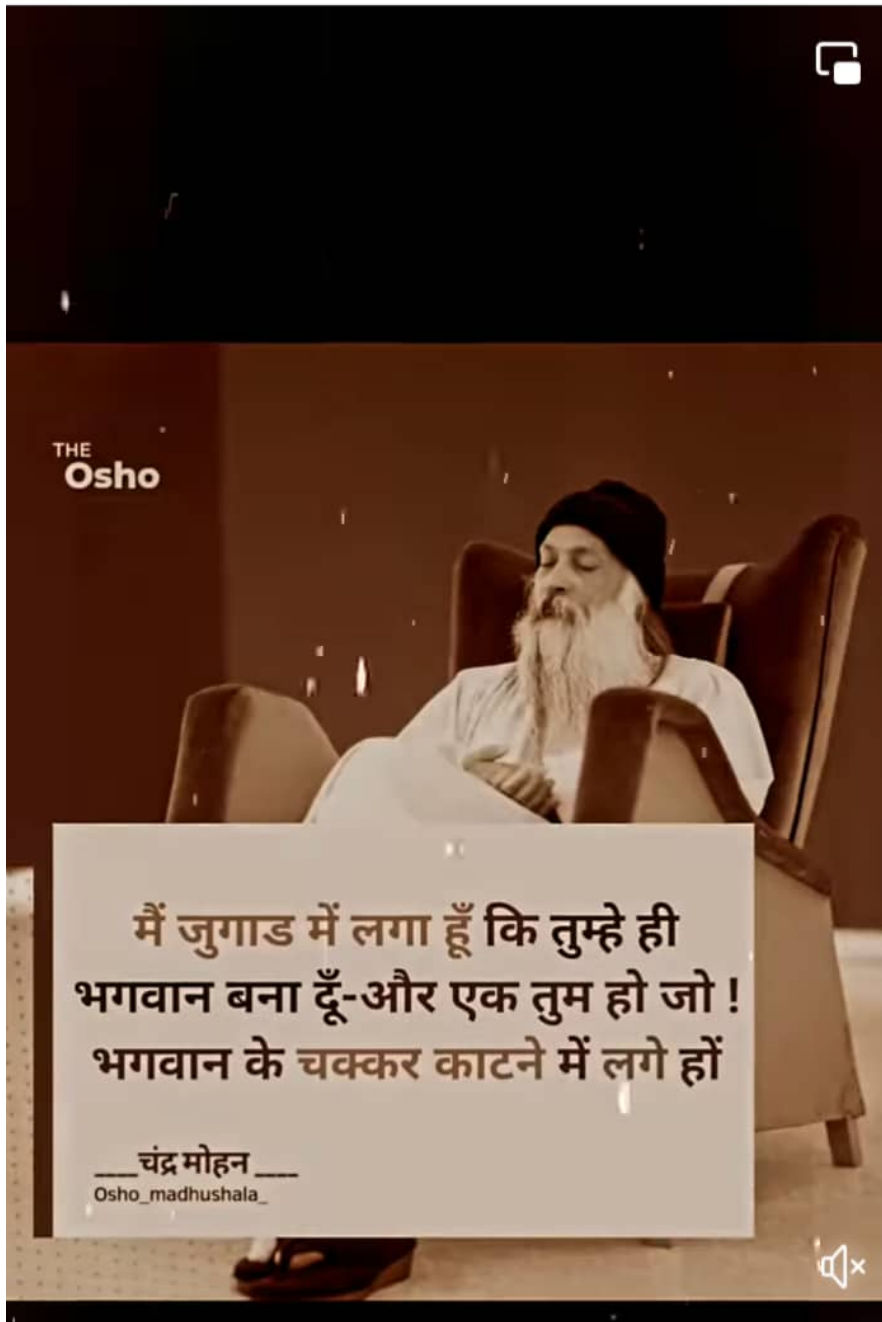
**Raj Panwar**

1d ·

आज' वही 'कल' है जिस 'कल' की फिक्र तुम्हें 'कल' थी। तो उठो और अपनी पूरी ताकत के साथ अपने लक्ष्य की ओर बढ़ो, उन्हें पूरा करो और अपने सपनों को जियो।



See more



377

7 comments • 49 shares



Like



Comment



Send



Share



Suggested pages



गुडगाय गा गा फेन



प्रयत्न साधन है तुम्हे आलस्य
छोड़ना पड़ेगा। याद रखो,
जीवन श्रम है। मृत्यु विश्राम है।
तो अगर मरना है तो कुछ करने
की जरूरत नहीं पर अगर जीना
हो तो कुछ करना पड़ेगा। और
अगर विराट जीना है तो विराट
उधम करना
होगा।

ओशो

मंदिर किसी का होगा, हिंदू का होगा या मुसलमान का होगा, या ईसाई का होगा। मंदिर किसी का होगा। और जो किसी का है वह परमात्मा का नहीं हो सकता। परमात्मा का मंदिर भी है, लेकिन वह ईंट और पत्थरों से नहीं बनता। परमात्मा का मंदिर भी है, लेकिन बाहर जो स्थान है उस पर जगह घेर कर नहीं बनता। मनुष्य के भीतर जो है चेतना उससे निर्मित होता है। और वहीं निर्मित होता है। स्थान में नहीं, आत्मा में। बाहर नहीं भीतर, अंतस में।

ओशो



जिस तरह चाहे नचा ले तू
इशारे पे मुझे ऐ मालिक

तेरे ही लिखे हुए अफ़साने का
किरदार हूँ मैं

जिन खोजा तिन पाइयाँ.

असली धार्मिक कौन है?
असली धार्मिक वह है जिसने द्वंद्व छोड़ा।
जो न तो मन के पक्ष में है,
न मन के विपरीत है।
जो न तो मन को भरने में लगा है,
न मन को तोड़ने में।
जो न तो मन की अपवित्र आकांक्षाओं
को पूरा करने में उत्सुक है,
और न मन की पवित्र आकांक्षाओं
को पूरा करने में उत्सुक है;
जो न तो धन के पीछे दौड़ रहा है
और न परमात्मा के पीछे।
जो दौड़ ही नहीं रहा है।
क्योंकि सब दौड़ मन की है।

Osho

भय और लोभ

एक ही सिक्के के दो पहलू हैं ।

भय मानता है कि कुछ है , जो खो न जाये ;
लोभ मानता है कि कुछ है नहीं , मिल जाये ।

लेकिन न तुम्हारे पास कुछ खोने को है ,
और न तुम कुछ पा सकोगे ।

यह हकीकत है ।

तुम शून्य हो और शून्य ही रहोगे ।

शून्यता
तुम्हारा
स्वभाव
है ।



ओशो

स
ह
ज
स
मा
धि
भ
ली

शरीर से प्रेम है तो, आसन करें!
सांस से प्रेम है तो, प्राणायाम करें!
आत्मा से प्रेम है तो, ध्यान करें!
और परमात्मा से प्रेम है
तो समर्पण करे!

यहाँ हिन्दुओं के मन्दिर है ;
मुसलमानों के मन्दिर है ; जैनो के मन्दिर है।
और अब तक पृथ्वी पर आदमी एक भी
ऐसा मन्दिर नहीं बना पाया जो सबका हो !
और जो मन्दिर सबका नहीं !
वह परमात्मा का कैसे हो सकता है ?

- ओशो



**Virendra Kumar**

Top Contributor · 15h · 🌐

आदमी मरते वक्त एकदम रूपांतरित नहीं हो सकता। रूपांतरण इतना मुफ्त नहीं है। जीवन दांव पर लगाना होता है। तो तुम कहते हो, तुम परेशान हो गए हो। अच्छा है कि परेशान हो गये हो। भगवान करे इस परेशानी को तुम समझा बुझा कर लीप-पोत कर मिटा मत देना। अगर तुम परेशान हो गये हो। सौभाग्य है, कुछ करो। इस दुनिया में "मैं कौन हूँ" यह जाने बिना मत जाना।

अब रही बात यह कि जाना तो तुम्हारे हाथ में नहीं है। जब जाना पड़ेगा, तब जाना पड़ेगा। यह नहीं कह रहा हूँ कि जब जाने का मौका आ जाये तो कहना, अभी मैंने अपने को नहीं जाना, तो मैं कैसे जाऊँ? मैं तो तभी जाऊंगा जब अपने को जान लूंगा। कोई सुननेवाला नहीं है। मौत तुम्हें ले जायेगी। और तुमसे पूछेगी भी नहीं। मौत खबर देकर आती भी नहीं। मौत तो आ ही जाती है। एक क्षण का भी अंतराल नहीं होता आने और ले जाने में।

नहीं, जब मैं कह रहा हूँ कि बिना स्वयं को जाने नहीं जाऊंगा, तो उसका अर्थ यह है कि अभी जो क्षण मेरे हाथ में है...अभी तो जिंदा हो, इस क्षण तो अभी जिंदा हो, इस क्षण तो परमात्मा की खोज में लगा दो। और परमात्मा की खोज से यह मत सोचना कि परमात्मा आकाश में बैठा हुआ कोई व्यक्ति है। परमात्मा तुम्हारे ही भीतर छिपी हुई तुम्हारी परम अवस्था है। आत्मा की परम अवस्था का नाम परमात्मा है आत्मा को जान लेना परमात्मा को जान लेना है। और जो अपने को ही नहीं जानता, वह और क्या जानेगा?



आचार्य श्री रजनीश

हरि बोलौ हरि बोल (संत सुंदर दास)--प्रवचन-04

वन समस्या नहीं--वरदान है

भगवान कोई व्यक्ति नहीं ;
जीवन का ही दूसरा नाम
है। इसलिए जब तुम
परिपूर्ण रूप से जीवंत
होते हो और तुम्हारे अंदर
सब मौन हो जाता है, सब
शांत हो जाता है, सब
निर्विचार हो जाता है--तब
जो सुगंध उठती है, तब जो
अनुभूति होती है। उस
अनुभूति का नाम, उस
दिव्यता का नाम, उस
भगवत्ता का नाम ही
भगवान है।
ओशो





#रामकृष्ण एक दिन गंगा पार कर रहे हैं। बैठे हैं नाव में। अचानक चिल्लाने लगते हैं जोर से, कि मत मारो, मत मारो, क्यों मुझे मारते हो? पास, आस-पास बैठे लोग कोई भी उनको नहीं मार रहे हैं। सब भक्त हैं, उनके पैर छूते हैं, पैर दबाते हैं, उनको कोई मारता तो नहीं। सब कहने लगे, आप क्या कह रहे हैं? कौन आपको मार रहा है? रामकृष्ण चिल्लाये जा रहे हैं। उन्होंने पीठ उघाड़ दी। पीठ पर देखा तो कोड़े के निशान हैं। खून झलक आया है। सब बहुत घबड़ा गये। रामकृष्ण से पूछा, यह क्या हो गया? किसने मारा आपको? रामकृष्ण ने कहा, वह देखो, वे मुझे मार रहे हैं।

उस किनारे पर मल्लाह एक आदमी को मार रहे हैं कोड़ों से, और उसकी पीठ पर जो निशान बने हैं वे रामकृष्ण की पीठ पर भी बन गये। ठीक वही निशान। और जब तट पर उतर कर भीड़ लग गई है और दोनों के निशान देखे गये हैं तो तय करना मुश्किल हो गया कि कोड़े किसको मारे गये? ओरिजिनल कौन है? रामकृष्ण को चोट ज्यादा पहुंची है मल्लाह से। निशान वही हैं, चोट ज्यादा है। क्योंकि मल्लाह तो विरोध भी कर रहा होगा भीतर से, रामकृष्ण ने तो पूरा स्वीकार ही कर लिया! चोट ज्यादा गहरी हो गई। लेकिन रामकृष्ण के मुख से जो शब्द निकला—“मुझे मत मारो”, इसका मतलब समझते हैं? एक शब्द है हमारे पास, सिम्पैथी, सहानुभूति। यह सहानुभूति नहीं है।

सहानुभूति हिंसक के मन में होती है। वह कहता है, मत मारो उसे। दूसरे को मत मारो। सहानुभूति का मतलब है कि मुझे दया आती है। लेकिन दया सदा दूसरे पर आती है। यह सहानुभूति नहीं है, यह समानुभूति है, इम्पैथी है। सिम्पैथी नहीं है। यहां रामकृष्ण यह नहीं कह रहे हैं कि “उसे मत मारो। रामकृष्ण कह रहे हैं “मुझे मत मारो—यहां दूसरा गिर गया!

असल में दूसरे से जो हमारा फासला है वह शरीर का ही फासला है, चेतना का कोई फासला नहीं। चेतना के तल पर दो नहीं हैं। हम दूसरे को बचायें तो वह अहिंसा नहीं हो सकती। हम दूसरे को बचायें, तो वह भी हिंसा ही है। जिस दिन हम ही रह जाते हैं, और बचने को कोई भी नहीं रह जाता, उस दिन अहिंसा फलित होती है।





Like



Comment



Send



Share

**Lafz.**

10h · 🌐



सूरत संवार कर इश्क़ लड़ाने वाले बहुत मिलेंगे,
मगर सब कुछ लुटा कर इश्क़ निभाने वाले अब कहाँ मिलेंगे..

#hindi #quotes #poetry #twolineshayari #urdupoetry
#love #lovequotes #loveyourself #yourself #happy
#goodvibes #positivevibes #morning



39

16 comments • 1 share

कृष्ण, बुद्ध, महावीर, नानक, मीरा
और तमाम बुद्धों-फ़कीरों से मिलने के लिए
मैं रजनीश जी से मिलती हूं





🔍 #sufi

Top

Latest

Video

Reels

**Sufinama**

Reels · 26 Nov · 🌐



इश्क़ बे-घर करे, इश्क़ बे-दर करे, इश्क़ का सच है कोई ठिकाना नहीं,
हम जो कल तक ठिकाने के थे आदमी, आपसे मिल के कैसे ठिकाने
लगे

-जावेद अख़्तर

#sufinama #sufism #sufi #reels #reelsviral
#nusratfatehalikhan #JavedAkhtar





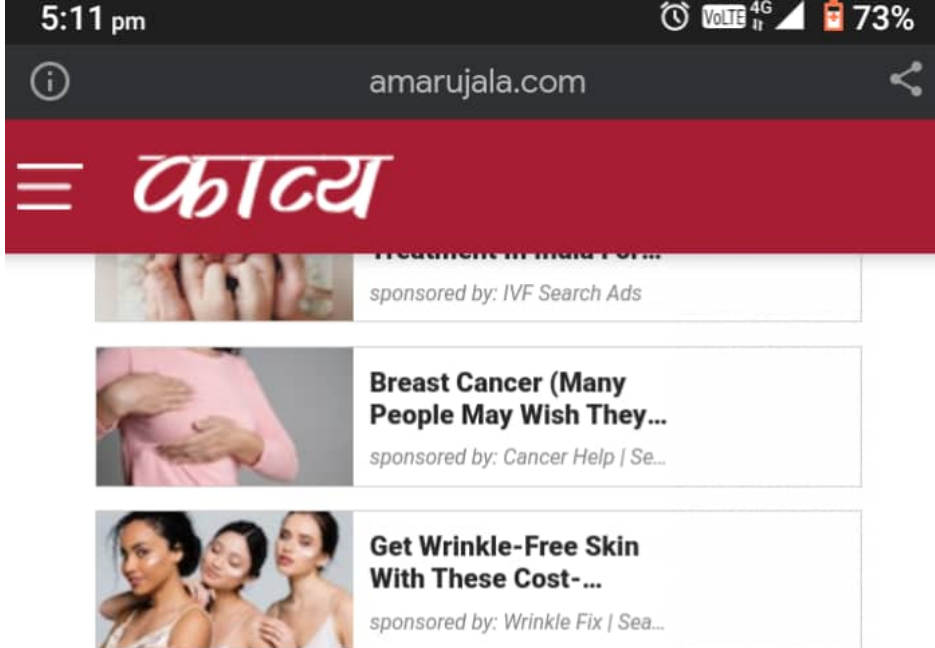
कविता कोश से जुड़ें

बहुत कठिन है डगर पनघट की / अमीर खुसरो

 अमीर खुसरो »

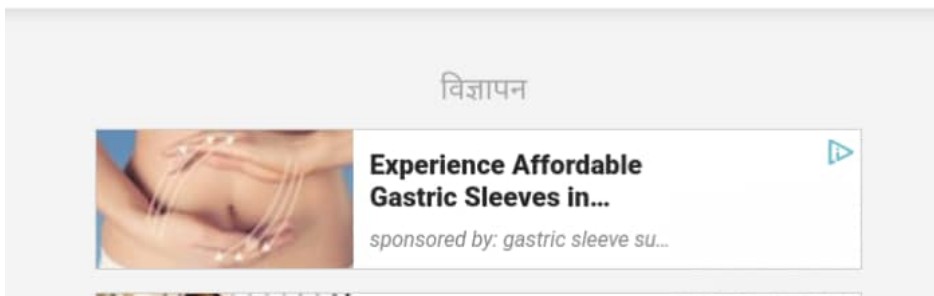
 Script ▼

बहुत कठिन है डगर पनघट की।
कैसे मैं भर लाऊँ मधवा से मटकी
मेरे अच्छे निज़ाम पिया।
कैसे मैं भर लाऊँ मधवा से मटकी
ज़रा बोलो निज़ाम पिया।
पनिया भरन को मैं जो गई थी।
दौड़ झपट मोरी मटकी पटकी।
बहुत कठिन है डगर पनघट की।
खुसरो निज़ाम के बल-बल जाइए।
लाज राखे मेरे घूँघट पट की।
कैसे मैं भर लाऊँ मधवा से मटकी
बहुत कठिन है डगर पनघट की।



बहुत कठिन है डगर पनघट की
कैसे मैं भर लाऊँ मधवा से मटकी
पनिया भरन को मैं जो गई थी
दौड़ झपट मोरी मटकी पटकी
बहुत कठिन है डगर पनघट की
'खुसरव' निज़ाम के बल-बल जड़े
लाज रखो मेरे घूँघट पट की
कैसे मैं भर लाऊँ मधवा से मटकी
बहुत कठिन है डगर पनघट की

2 वर्ष पहले





Phylum Human • FOLLOW

30 Sep 2019 • 🌐

इधर काशी में है पत्थर इधर काबे में है पत्थर

इधर पत्थर का पूजन है तो इधर पत्थर को बोसा है

समझ में कुछ नहीं आता कि आखिर माजरा क्या है?

इधर पंडित अकड़ते हैं कि वो काशी में रहता है

और इधर है शेख जी नाजाँ हैं कि वो काबे में रहता है

यानी जैसे मस्जिद भीतर अल्लाह बंद

और ईश्वर कैद शिवालन में

स्वर्ग पे कब्जा पंडित जी का

जन्नत अल्लाह वालन में

भई राम की पड़ गई खींचातानी राम फंसे जंजालन में

अरे बहुत कठिन है डगर पनघट की

अमीर खुसरो का लिखा हुआ हबीब पेंटर कव्वाल की आवाज में सुनिए

**Manoj Pathak**

27 Oct · 🌐



#अमीर_खुसरो #हबीब_पेंटर

इधर काशी में है पत्थर, इधर काबा में है पत्थर
इधर पत्थर का पूजन है, तो इधर पत्थर को बोसा है,
समझ में कुछ नहीं आता कि आखिर माजरा क्या है... ? 🤔🤔
मनोज पाठक #छैडोरिया



37K

1.2K comments • 15K shares • 968K views



Like



Comment



Send



Share

**Siddhguru Sri Sidheshwar Brahmurishi
Gurudev**

Sponsored · 🌐



5:02 pm

VoLTE 4G 75%

मृत्यु का स्वीकार ही मृत्यु भय से मुक्ति का उपाय "ओशो"



जो होनी है उसका
क्या भय



571



7



1.2K



Give



Al Osho

मृत्यु का स्वीकार ही मृत्यु भय से मुक्ति का उपाय #r... more

Add a comment...





30 साल की उम्र तक आपको इतना समझदार हो जाना चाहिए कि आप अपने जीवन में ऐसा कभी न करें

1. अपनी हर बात शेयर न करें करीबी दोस्तों और परिवार के साथ भी कुछ गोपनीयता बनाए रखना महत्वपूर्ण है।
 2. केवल अपने नौ से पांच पर निर्भर न रहें आय के अनेक स्रोत होना एक स्मार्ट वित्तीय रणनीति है।
 3. अपने स्वास्थ्य को नज़रअंदाज़ न करें। अच्छा खान-पान, नियमित व्यायाम और पर्याप्त नींद लेकर अपने शरीर का ख्याल रखें। याद रखें आपके पास केवल एक ही शरीर है।
 4. वह मत करो जो तुम्हारे दोस्त करते हैं। अगर आपके दोस्त अच्छा समय बिताने के लिए स राव पीते हैं या अन्य कुछ गलत काम करते हैं। तो अपनी प्राथमिकताओं पर दोबारा विचार करें।
 5. सिर्फ अपने माता-पिता को दोष न दें। अपने जीवन की जिम्मेदारी लेना हर चीज़ के लिए अपने माता-पिता को दोष न देना महत्वपूर्ण है।
 6. सही समय का इंतजार न करें। कार्रवाई करने का सही समय अभी है अपनी महत्वाकांक्षाओं को सपना न रहने दें।
 7. आलोचना को व्यक्तिगत रूप से न लें। दूसरे आपके बारे में क्या सोचते हैं इस पर ध्यान ना देने का प्रयास करें। अपने मानसिक स्वास्थ्य को प्राथमिकता देना याद रखें।
- यदि आप मुझे फॉलो नहीं कर रहे हैं तो आप शायद मुझे नहीं देख पाएंगे। यदि आप फॉलो कर रहे हैं तो बधाई हो आप हर दिन कुछ नया सीख रहे हैं।



Apni Udaan

Follow



Apni Udaan

Give

#motivational #motivational more



नैतिक होना,
अनैतिक जगत में,



3.6K



12



739



Give

Use audio



HDR studio

Following

अच्छा होना #viral #post #oshohindi #osh... more

eil Black · Sad

Ne

Happy Holi by _n





टू बी मोरल इन इममोरल



3.6K



12



739



Give

Use audio



HDR studio

Following

अच्छा होना #viral #post #oshohindi #osh... more



Neil Black · Sad



Happy Holi by ...n



💎💎💎💎good morning💎💎💎💎

प्रकृति के तीन कड़वे नियम जो सत्य है

1-: प्रकृति का पहला नियम

यदि खेत में बीज न डालें जाएं तो कुदरत उसे *घास-फूस* से भर देती हैं...!!

ठीक उसी तरह से दिमाग में *सकारात्मक* विचार न भरे जाएँ तो *नकारात्मक* विचार अपनी जगह बना ही लेती है...!!

2-: प्रकृति का दूसरा नियम

जिसके पास जो होता है...!!

वह वही बांटता है....!!

सुखी *सुख* बांटता है...

दुःखी *दुःख* बांटता है..

ज्ञानी *ज्ञान* बांटता है..

भ्रमित *भ्रम* बांटता है..

भयभीत *भय* बांटता हैं.....!!

3-: प्रकृति का तिसरा नियम

आपको जीवन से जो कुछ भी मिलें उसे पचाना सीखो क्योंकि *भोजन* न पचने पर रोग बढ़ते है...!

पैसा न *पचने* पर दिखावा बढ़ता है...!

बात न *पचने* पर चुगली बढ़ती है...!

प्रशंसा न *पचने* पर अंहकार बढ़ता है....!

निंदा न *पचने* पर दुश्मनी बढ़ती है...!

राज न *पचने* पर खतरा बढ़ता है...!

दुःख न *पचने* पर निराशा बढ़ती है...!

और सुख न *पचने* पर पाप बढ़ता है...!

बात कड़वी बहुत है पर सत्य है

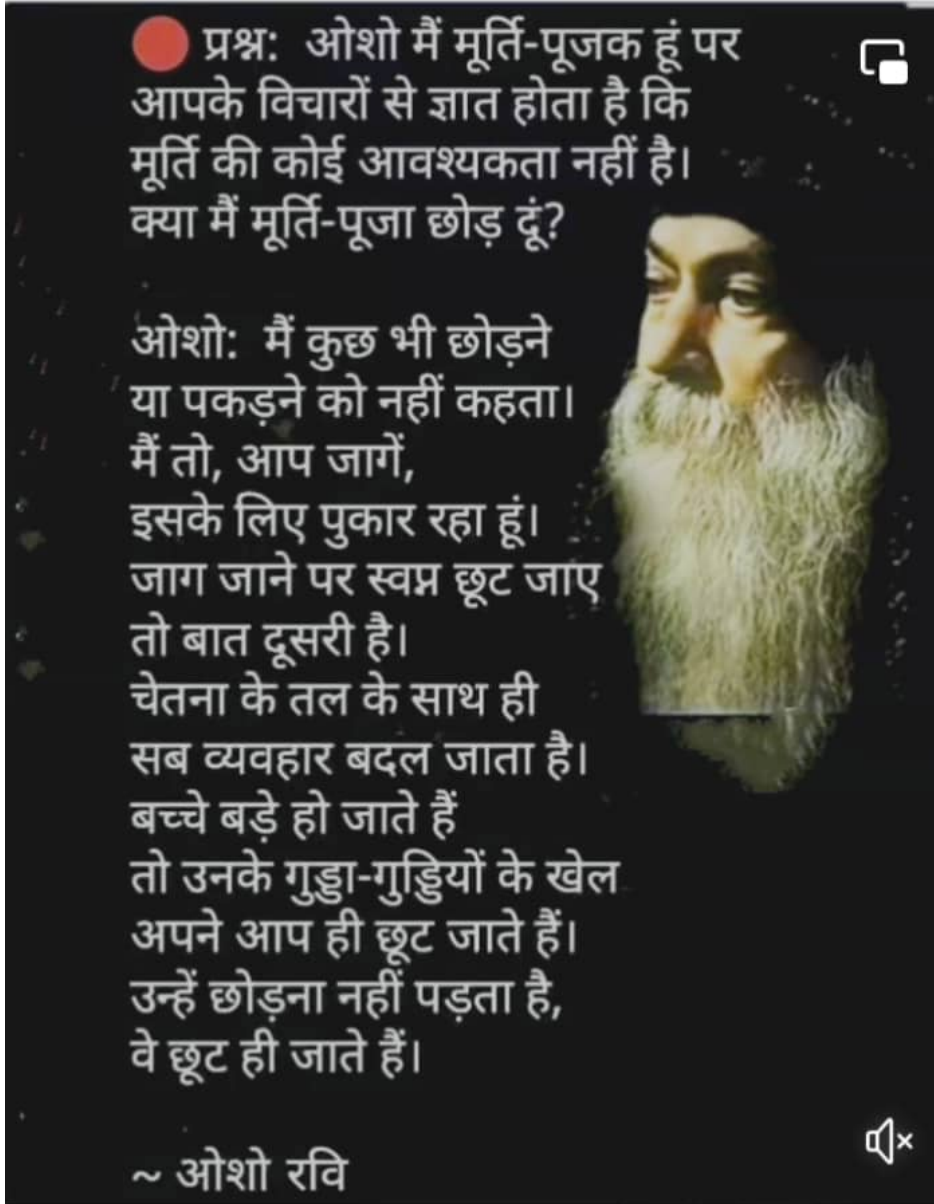
💎💎💎💎💎💎💎💎💎💎

👍 17

5 shares



#ओशो #osho #oshoravi #oshoraviyog #viralpage
#viralpage2023



● प्रश्न: ओशो मैं मूर्ति-पूजक हूं पर
आपके विचारों से ज्ञात होता है कि
मूर्ति की कोई आवश्यकता नहीं है।
क्या मैं मूर्ति-पूजा छोड़ दूँ?

ओशो: मैं कुछ भी छोड़ने
या पकड़ने को नहीं कहता।
मैं तो, आप जागें,
इसके लिए पुकार रहा हूँ।
जाग जाने पर स्वप्न छूट जाए
तो बात दूसरी है।
चेतना के तल के साथ ही
सब व्यवहार बदल जाता है।
बच्चे बड़े हो जाते हैं
तो उनके गुड्डा-गुड्डियों के खेल
अपने आप ही छूट जाते हैं।
उन्हें छोड़ना नहीं पड़ता है,
वे छूट ही जाते हैं।

~ ओशो रवि



1



Like



Comment



Send



Share



Osho Ravi Yog

8m · 🎵 Mbrascatu · 🌐



॥ओशो नमन॥



ओशो कहते हैं- वासना प्रेम के समान ही ऊर्जा है।
फर्क सिर्फ दिशा का है। वासना नीचे की ओर गति करती है,
प्रेम ऊपर की ओर गति करता है। वासना पेड़ की जड़ों की
तरह है, प्यार पक्षी के पंखों की तरह है। लेकिन ऊर्जा वही है।
सारी ऊर्जा एक जैसी है। अहोभाव



**“We all have a light inside,
but trying to look at it makes it turn black.”
- Zen Master Ummon**



USHU FRAGRANCE FRIENDS

Agyat Agyat · 15m ·

एक बार जापान के सिज़ान शहर का एक विद्वान व्याख्याता रयो झेन गुरु बासो से मिलने गया।

बासो ने उससे पूछा, "आप किस सूत्र पर व्याख्यान दे रहे हैं?"

"मन-सूत्र पर" उसने उत्तर दिया।

बासो ने कहा, "और ये व्याख्यान आप कहां से देते हैं?"

रयो ने उत्तर दिया, "मन से।"

बासो ने कहा, "मन एक अभिनेता (कलाकार) है, अर्थ एक विदूषक (मसखरा/जोकर) है, और छह इंद्रियां उनकी परिचारिकायें हैं। मन किसी सूत्र पर व्याख्यान देने में कैसे सक्षम हो सकता है?"

रयो ने उत्तर दिया, "यदि मन व्याख्यान नहीं दे सकता, तो अ-मन भी कोई व्याख्यान नहीं दे सकता।"

बासो ने उत्तर दिया, "हाँ बिल्कुल! अ-मन बिल्कुल सही व्याख्यान देता है।"

तब रयो ने अपनी आस्तीन पर जमी धूल साफ़ की और उठ कर जाने लगा। बासो ने आवाज दे कर उसे वापस अपने निकट बुलाया और कहा, "व्याख्याता महोदय!" रयो ने अपना सिर उठाकर उसकी आंखों में देखा।

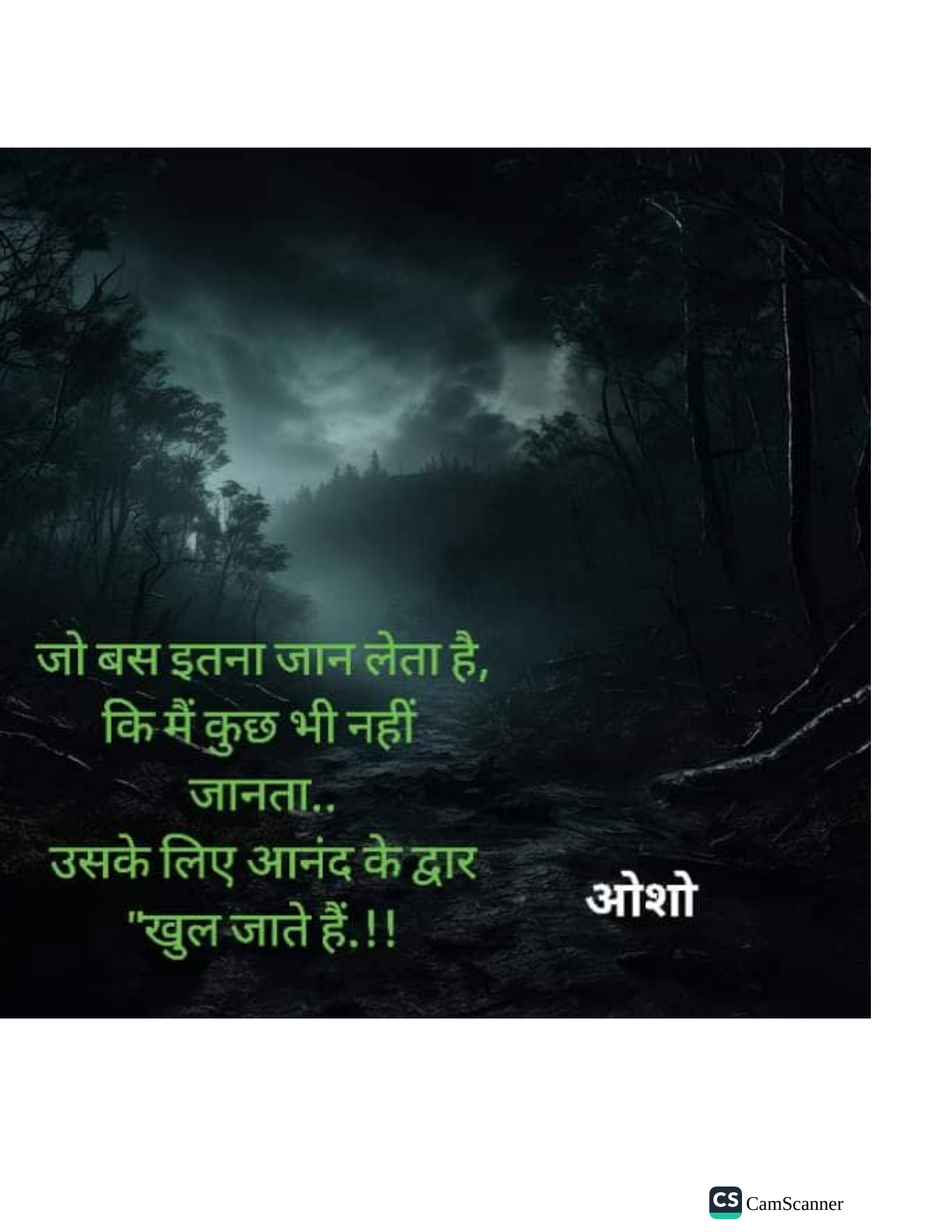
बासो ने कहा, "जन्म से मृत्यु तक, बस यही होता है।"

रयो में अचानक बड़ी जागृति हुई और वह बासो के सम्मान में झुक गया।

बासो ने कहा, "आखिर अब तुम किसलिए झुक रहे हो, बच्चे?" रयो का पूरा शरीर अब पसीने से भीगा हुआ था।

मठ में वापस जाकर रयो ने अपने शिष्य भिक्षुओं से कहा, "मैं मेरे पूरे जीवन यह सोचता था कि सूत्रों पर मुझसे बेहतर व्याख्यान कोई नहीं दे सकता। लेकिन आज बासो के एक प्रश्न ने मेरे जीवन की पूरी बर्फ को क्षण भर में पिघला दिया।"

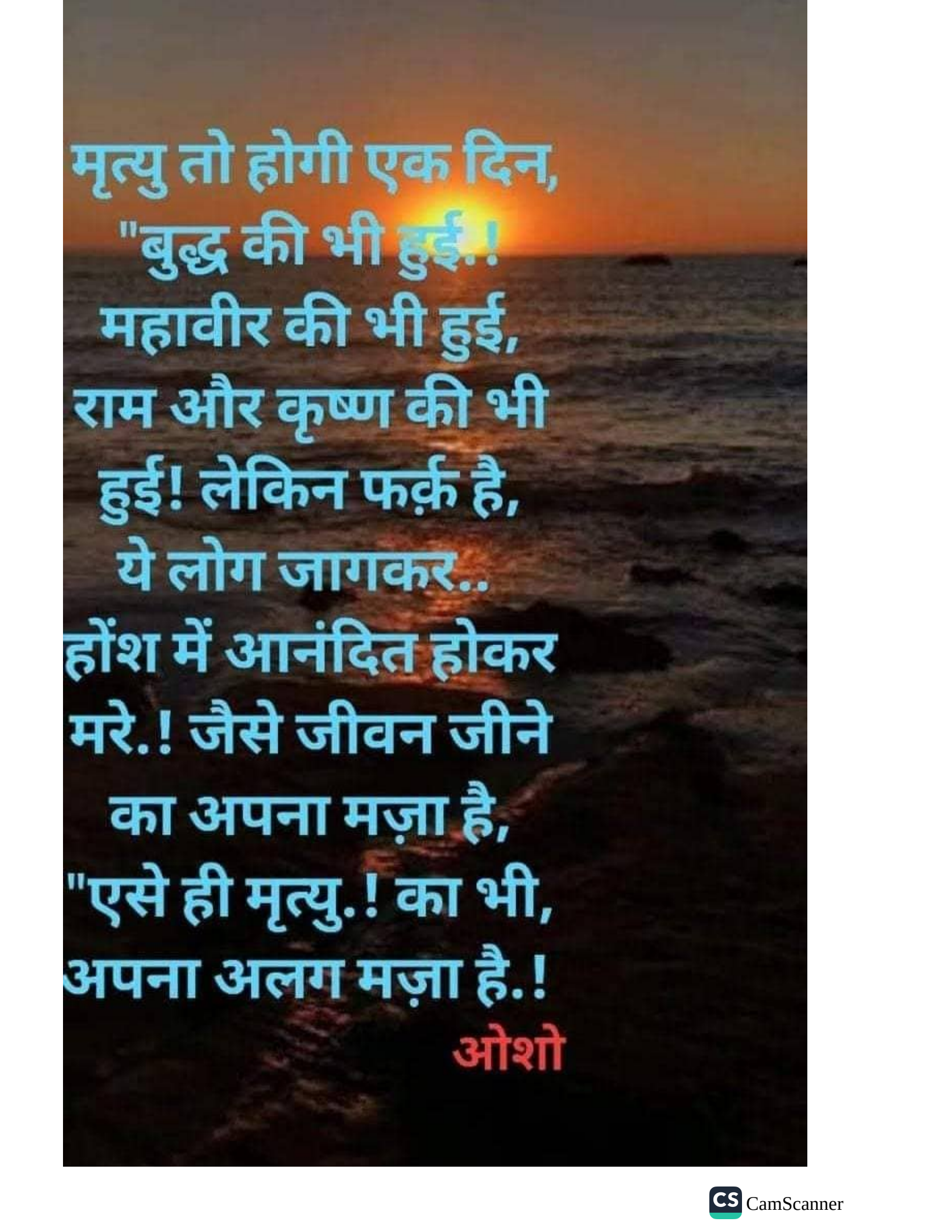
रयो ने व्याख्यान देना छोड़ दिया और पश्चिमी पहाड़ों में बहुत दूर चला गया और उसके बारे में कभी किसी ने फिर कुछ नहीं सुना।



जो बस इतना जान लेता है,
कि मैं कुछ भी नहीं
जानता..

उसके लिए आनंद के द्वार
"खुल जाते हैं.!!

ओशो



मृत्यु तो होगी एक दिन,

"बुद्ध की भी हुई..!

महावीर की भी हुई,

राम और कृष्ण की भी

हुई! लेकिन फर्क है,

ये लोग जागकर..

होंश में आनंदित होकर

मरे.! जैसे जीवन जीने

का अपना मज़ा है,

"एसे ही मृत्यु.! का भी,

अपना अलग मज़ा है.!

ओशो



बहुत अजीब ही था मैं।
समझना खुद को था
पर
दुनिया को समझने में पूरी
ज़िन्दगी गुजार दी !



जो टूट जाता है वह सपना है, जो नहीं टूटता वह सत्य!
सत्य सदा है! बाकी सब सपने!

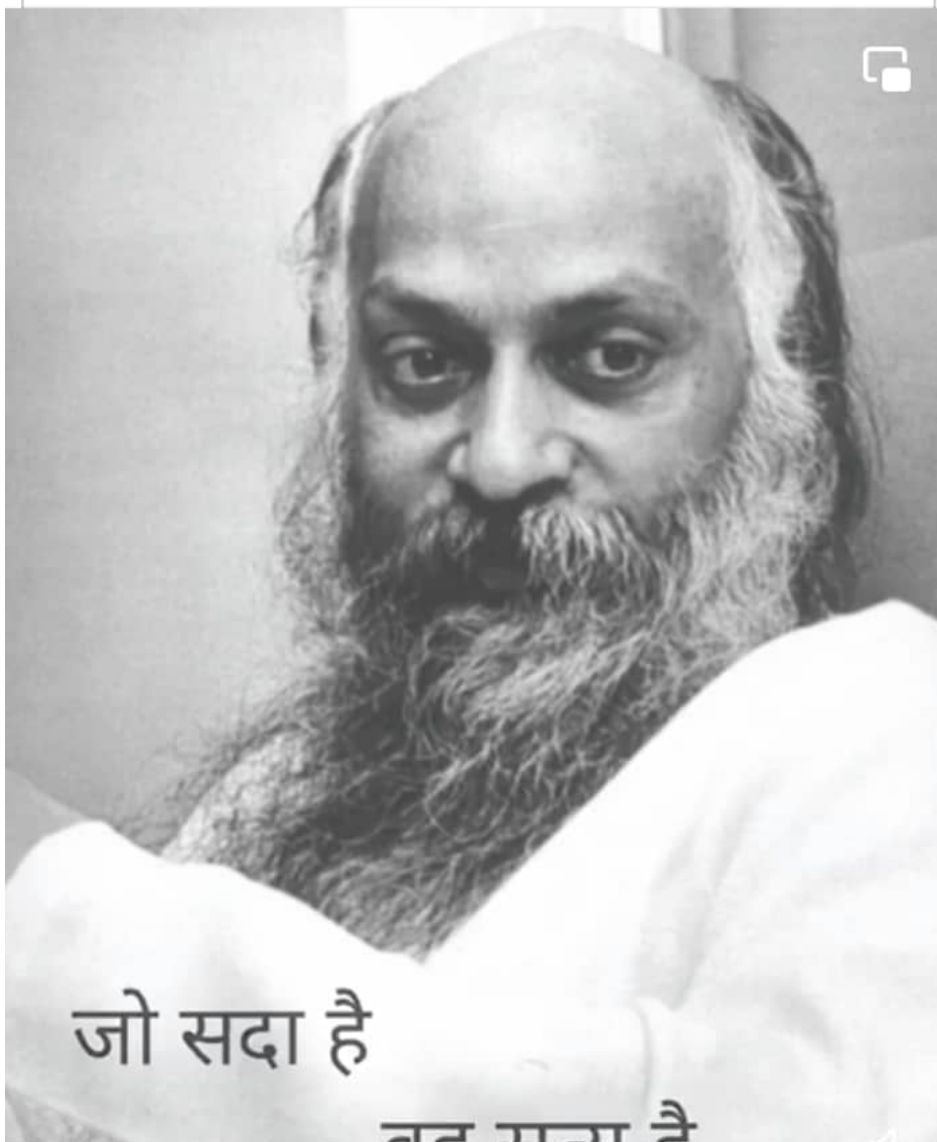
ओशो की इन बातों को ध्यान से सुनें, कुछ गहरे सूत्र पकड़ में
आएँगे।

मोती बिखरे हुए हैं, यह आप पर है कि आप क्या चुनते हैं!

प्रणाम 🙏

Sakshi Prem

#Osho #Tathastu #tathastuvibes



सुरति और निरति

जब किसी शब्द को ध्यान के साथ बिना आवाज निकाले व बिना जीभ हिलाए सांसों के साथ बाहर छोड़ा जाता है। तब यह प्रक्रिया "निरति" कहलाती है। ठीक इसके विपरीत किसी शब्द को बिना आवाज किये और जीभ हिलाए अंदर लिया जाता है तब यह क्रिया "सुरति" कहलाती है। सुरति और निरति से उच्चारित किया गया एक शब्द ध्वनि के रूप में उच्चारित उसी शब्द से 108 गुना अधिक प्रभावशाली होता है। इसी विधि से सिद्धियां प्राप्त की जाती हैं।



सन्तों की अपनी ही मौज होती है ! एक सन्त अपने शिष्य के साथ किसी अजनबी नगर में पहुँचे। रात हो चुकी थी और वे दोनों सिर छुपाने के लिए किसी आसरे की तलाश में थे। उन्होंने एक घर का दरवाजा खटखटाया, वह एक धनिक का घर था और अंदर से परिवार का मुखिया निकलकर आया। वह संकीर्ण वृत्ति का था, उसने कहा- “मैं आपको अपने घर के अंदर तो नहीं ठहरा सकता लेकिन तलघर में हमारा स्टोर बना है। आप चाहें तो वहाँ रात को रुक सकते हैं, लेकिन सुबह होते ही आपको जाना होगा।” वह सन्त अपने शिष्य के साथ तलघर में ठहर गए। वहाँ के कठोर फर्श पर वे सोने की तैयारी कर रहे थे कि तभी सन्त को दीवार में एक दरार नजर आई। सन्त उस दरार के पास पहुँचे और कुछ सोचकर उसे भरने में जुट गए। शिष्य के कारण पूछने पर सन्त ने कहा-“चीजें हमेशा वैसी नहीं होतीं, जैसी दिखती हैं।”

अगली रात वे दोनों एक गरीब किसान के घर आसरा मांगने पहुँचे। किसान और उसकी पत्नी ने प्रेमपूर्वक उनका स्वागत किया। उनके पास जो कुछ रूखा-सूखा था, वह उन्होंने उन दोनों के साथ बाँटकर खाया और फिर उन्हें सोने के लिए अपना बिस्तर दे दिया। किसान और उसकी पत्नी नीचे फर्श पर सो गए। सवेरा होने पर सन्त व उनके शिष्य ने देखा कि किसान और उसकी पत्नी रो रहे थे क्योंकि उनका बैल खेत में मरा पड़ा था। यह देखकर शिष्य ने सन्त से कहा- ‘गुरुदेव, आपके पास तो कई सिद्धियाँ हैं, फिर आपने यह क्यों होने दिया ? उस धनिक के पास सब कुछ था, फिर भी आपने उसके तलघर की मरम्मत करके उसकी मदद की, जबकि इस गरीब ने कुछ ना होने के बाद भी हमें इतना सम्मान दिया फिर भी आपने उसके बैल को मरने दिया। सन्त फिर बोले-“चीजें हमेशा वैसी नहीं होतीं, जैसी दिखती हैं।” उन्होंने आगे कहा- ‘उस धनिक के तलघर में दरार से मैंने यह देखा कि उस दीवार के पीछे स्वर्ण का भंडार था। उस घर का मालिक बेहद लोभी और कृपण था, इसलिए मैंने उस दरार को बन्द कर दिया, ताकि स्वर्ण भंडार उसके हाथ ना लगे। इस किसान के घर में हम इसके बिस्तर पर सोए थे। रात्रि में इस किसान की पत्नी की मौत लिखी थी और जब यमदूत उसके प्राण हरने आए तो मैंने रोक दिया, लेकिन वे खाली हाथ नहीं जा सकते थे, इसलिए मैंने उनसे किसान के बैल के प्राण ले जाने के लिए कहा। यह सुनकर शिष्य सन्त के समक्ष नतमस्तक हो गया।

ठीक इसी तरह गुरु की कृपा वह नहीं है जो हम चाहते बल्कि गुरु-कृपा

मृत्यु गुरु है.

पांच दिन बाद मौत दिखाई पड़े या
पचास वर्ष बाद मौत दिखाई पड़े, इससे
क्या फर्क पड़ता है! जिसको मौत
दिखाई पड़ने लगती है, उसके जीवन में
आमूल परिवर्तन शुरू हो जाता है।
मौत सबसे बड़ा शिक्षक है। मृत्यु सबसे
बड़ा गुरु है।

और जिस व्यक्ति को धार्मिक जीवन में
दीक्षा लेनी हो, उसे मृत्यु के अतिरिक्त
और किसी गुरु को खोजने की कभी भी
जरूरत नहीं।

मृत्यु को स्मरण करें। वह चौबीस घंटे
तलवार लिए आपके साथ है। और मृत्यु
को स्मरण करके जीने की कोशिश करें।
और आप पाएंगे कि आप जागना शुरू
हो गए हैं, नींद टूटनी शुरू हो गई है। नींद
समाप्त हो जाएगी. मैं मृत्यु सिखाता हूँ

❤️🌹 ओशो 🌹❤️





लेकिन वह यही देखता है कि पत्नी बरबाद करवा रही है। यह नहीं देखता कि मैं भी चाकू पर ही अटका हुआ हूँ अगर वह कैची पर अटकी है। तो दोनों कुछ बहुत भिन्न नहीं हैं। पर खुद का दोष तो युद्ध के क्षण में, विरोध के क्षण में, क्रोध के क्षण में दिखाई नहीं पड़ता। उसने पतवार जोर से मारी, पत्नी नीचे गिर गई। उसने कहा, अभी भी बोल दे! तो भी उसने डूबते हुए आवाज दी, कैची। एक डुबकी खाई, मुंह-नाक में पानी चला गया। फिर ऊपर आई। फिर भी पति ने कहा, अभी भी जिंदा है। अभी भी मैं तुझे बचा सकता हूँ? बोल! उसने कहा, कैची। अब पूरी आवाज भी नहीं निकली, क्योंकि मुंह में पानी भर गया। तीसरी डुबकी खाई, ऊपर आई। पति ने कहा, अभी भी कह दे, क्योंकि यह आखिरी मौका है! अब वह बोल भी नहीं सकती थी। डूब गई। लेकिन उसका एक हाथ उठा रहा और दोनों अंगुलियों से कैची चलती रही। दोनों अंगुलियों से वह कैची बताती रही—डूबते—डूबते, आखिरी क्षण में।

महाभारत के लिए कोई कुरुक्षेत्र नहीं चाहिए; महाभारत तुम्हारे मन में है। क्षुद्र पर तुम लड़ रहे हो। तुम्हें लड़ने के क्षण में दिखाई भी नहीं पड़ता कि किस क्षुद्रता के लिए तुमने आग्रह खड़ा कर लिया है। और जब तक तुम्हारा अज्ञान गहन है, अंधकार गहन है, अहंकार सघन है, तब तक तुम देख भी न पाओगे कि तुम्हारा पूरा जीवन एक कलह है। जन्म से लेकर मृत्यु तक, तुम जीते नहीं, सिर्फ लड़ते हो। कभी-कभी तुम दिखलाई पड़ते हो कि लड़ नहीं रहे हो, वे लड़ने की तैयारी के क्षण होते हैं; जब तुम तैयारी करते हो।

गीता दर्शन-भाग-8

प्रवचन 11. मन का महाभारत

संकल्प-शक्ति



वह बात इतनी बढ़ गई कि वर्षों तक झगड़ा चलता रहा। फिर तो बात ऐसी सुनिश्चित हो गई कि जब भी झगड़े की हालत आए, तो पति को इतना ही कह देना काफी था, चाकू! और पत्नी उसी वक्त चिल्लाकर कहती, कैची! वे प्रतीक हो गए।

वर्षों खराब हो गए। आखिर पति के बरदाश्त के बाहर हो गया। और डब्बा अनखुला रखा है। क्योंकि जब तक यही तय न हो कि कैची या चाकू तब तक वह खोला कैसे जाए। कौन खोलने की हिम्मत करे?

एक दिन बात बहुत बढ़ गई, तो पति समझा—बुझाकर झील के किनारे ले गया पत्नी को। नाव में बैठा, दूर जहां गहरा पानी था, वहां ले गया, और वहां जाकर बोला कि अब तय हो जाए। यह पतवार देखती है, इसको तेरी खोपड़ी में मारकर पानी में गिरा दूंगा। तैरना तू जानती नहीं है, मरेगी। अब क्या बोलती है? चाकू या कैची? पत्नी ने कहा, कैची।

जान चली जाए, लेकिन आन थोड़े ही छोड़ी जा सकती है! रघुकुल रीत सदा चली आई, जान जाय पर वचन न जाई।

पति भी उस दिन तय ही कर लिया था कि कुछ निपटारा कर ही लेना है। यह तो जिंदगी बरबाद हो गई। और चाकू—कैची पर बरबाद हो गई!

लेकिन वह यही देखता है कि पत्नी बरबाद करवा रही है। यह नहीं देखता कि मैं भी चाकू पर ही अटका हुआ हूं अगर वह कैची पर अटकी है। तो दोनों कुछ बहुत भिन्न नहीं हैं। पर खुद का दोष तो युद्ध के क्षण में, विरोध के क्षण में, क्रोध के क्षण में दिखाई नहीं पड़ता। उसने पतवार जोर से मारी, पत्नी नीचे गिर गई। उसने कहा, अभी भी बोल दे! तो भी उसने डूबते हुए आवाज दी, कैची। एक डुबकी खाई, मुंह—नाक में पानी चला गया। फिर ऊपर आई। फिर भी पति ने कहा, अभी भी जिंदा है। अभी भी मैं तुझे बचा सकता हूं? बोल! उसने कहा, कैची। अब पूरी आवाज भी नहीं निकली, क्योंकि मुंह में पानी भर गया। तीसरी डुबकी खाई, ऊपर आई। पति ने कहा, अभी भी कह दे, क्योंकि यह आखिरी मौका है! अब वह बोल भी नहीं सकती थी। डूब गई। लेकिन उसका एक हाथ उठा रहा और दोनों अंगुलियों से कैची चलती रही। दोनों अंगुलियों से वह कैची बताती रही—डूबते—डूबते, आखिरी क्षण में।



एक बड़ी प्रसिद्ध हंगेरियन कहानी है कि एक आदमी का विवाह हुआ। झगड़ल प्रकृति का था, जैसे कि आदमी सामान्यतः होते हैं। मां—बाप ने यह सोचकर कि शायद शादी हो जाए तो यह थोड़ा कम क्रोधी हो जाए, थोड़ा प्रेम में लग जाए, जीवन में उलझ जाए तो इतना उपद्रव न करे, शादी कर दी।

शादी तो हो गई। और आदमी झगड़ल होते हैं, उससे ज्यादा झगड़ल स्त्रियां होती हैं। झगड़ल होना ही स्त्री का पूरा शास्त्र है, जिससे वह जीती है। मां—बाप लड़की के भी यही सोचते थे कि विवाह हो जाए, घर—गृहस्थी बने, बच्चा पैदा हो, सुविधा हो जाएगी। उलझ जाएगी, तो झगड़ा कम हो जाएगा।

लेकिन जहां दो झगड़ल व्यक्ति मिल जाएं, वहां झगड़ा कम नहीं होता; दो गुना भी नहीं होता; अनंत गुना हो जाता है। जब दो झगड़ल व्यक्ति मिलते हैं, तो जोड़ नहीं होता गणित का; दो और दो चार, ऐसा नहीं होता, गुणनफल हो जाता है।

पहली ही रात, सुहागरात, पहला ही—भेंट में जो चीजें आई थीं, उनको खोलने को दोनों उत्सुक थे—पहला डब्बा हाथ में लिया; बड़े ढंग से पैक किया गया था। पति ने कहा कि रुको, यह रस्सी ऐसे न खुलेगी। मैं अभी चाकू ले आता हूं। पत्नी ने कहा कि ठहरो, मेरे घर में भी बहुत भेंटें आती रहीं। हम भी बहुत भेंटें देते रहे हैं। तुमने मुझे कोई नंगे—लुच्चो के घर से आया हुआ समझा है? ऐसे सुंदर फीते चाकुओं से नहीं काटे जाते, कैची से काटे जाते हैं।

झगड़ा भयंकर हो गया कि फीता चाकू से कटे कि कैची से कटे। दोनों की इज्जत का सवाल था। बात इतनी बढ़ गई कि डब्बा उस रात तो काटा ही न जा सका, सुहागरात भी नष्ट हो गई उसी झगड़े में। और विवाद, क्योंकि प्रतिष्ठा का सवाल था, दोनों के परिवार दाव पर लगे थे कि कौन सुसंस्कृत है!

वह बात इतनी बढ़ गई कि वर्षों तक झगड़ा चलता रहा। फिर तो बात ऐसी सुनिश्चित हो गई कि जब भी झगड़े की हालत आए, तो पति को इतना ही कह देना काफी था. चाकू! और पत्नी उसी वक्त चिल्लाकर



ओशो का हिन्दी साहित्य

Rahul Kumar Ojha · 2d · 🌐



ब्रह्म को जानने के लिए ऊर्जा चाहिए.....

*****_*****

ऊर्जा इकट्ठी न हो, तो तू कैसे ब्रह्म को जानेगा? ब्रह्म को जानने के लिए ऊर्जा चाहिए! ऐसी ऊर्जा कि ऊपर से बह उठे! अतिरेक चाहिए। ऊर्जा के अतिरेक को बल कहा है छांदोग्य उपनिषद् ने। ऐसी ऊर्जा चाहिए कि तुम सम्हाल न सको; तुम्हारे ऊपर से बहने लगे। इतनी ही ऊर्जा हो, तो ही सत्य को जाना जा सकता है। निर्वीर्य सत्य को नहीं जान सकते।

तुमने कभी सुना न होगा कि कोई नपुंसक, और ब्रह्मज्ञान को उपलब्ध हुआ हो! वीर्यवान, ऊर्जा से भरे हुए लोग...। वृक्ष पर फूल कब खिलते हैं? जब वृक्ष के पास इतनी ऊर्जा होती है कि अब उमंग में लुटा सकता है, तब फूल खिलते हैं। अगर वृक्ष को ठीक खाद न मिले, ठीक जल न मिले, रोशनी न मिले, फूल न आएंगे। फूल तो विलास है, वैभव है, ऐश्वर्य है। और इसलिए मुझे ईश्वर शब्द प्यारा है। ईश्वर शब्द ऐश्वर्य से ही बना है। ईश्वर को वे ही लोग जान पाते हैं, जिनके भीतर इतनी ऊर्जा होती है कि जैसे वृक्षों की ऊर्जा फूल बन जाती है। ऊर्जा जब न्यूनतम होगी, तो फूल तो दूर, पत्ते भी मुश्किल से पैदा होंगे। फूल तो बहुत दूर, पत्ते भी कुम्हलाए- कुम्हलाए होंगे। ऊर्जा अतिरेक होनी चाहिए।

पश्चिम के बहुत बड़े रहस्यवादी कवि विलियम ब्लैक का वचन महत्वपूर्ण है; उपनिषद् के सूत्रों जैसा है। विलियम ब्लैक आदमी था भी कि उसे कवि नहीं, ऋषि ही कहना चाहिए। उसका सूत्र है: एनर्जी इज़ डिलाइट--ऊर्जा ही आनंद है। पते की बात कही। ऊर्जा ही आनंद है। ऊर्जा की कमी ही दुख है। ऊर्जा की दीनता और क्षीणता ही पीड़ा है, नर्क है। क्योंकि फूल खिलते नहीं, सुगंध बिखरती नहीं। जैसे दीए में तेल चुक जाए, तो बाती बुझ जाए। दीए में तेल चाहिए, बाती चाहिए, तो ज्योति जले। और जितना तेल हो, उतनी ही प्रगाढ़ता से ज्योति जले। छांदोग्य जिस बल की बात कर रहा है, वह वही ऊर्जा है, जिसको ब्लैक ने कहा, अतिरेक ऊर्जा का आनंद है। जिसको बुद्ध ने कहा, ऊर्जावान बनो। शक्ति को भीतर सरोवर बनने दो।

ओशो....



वर्ष
९९

गीताप्रेस, गोरखपुर

संख्या
१०



"कल्याण" - गीता प्रेस गोरखपुर से प्रकाशित मासिक "पत्रिका"

Yash Khandelwal · 3d ·

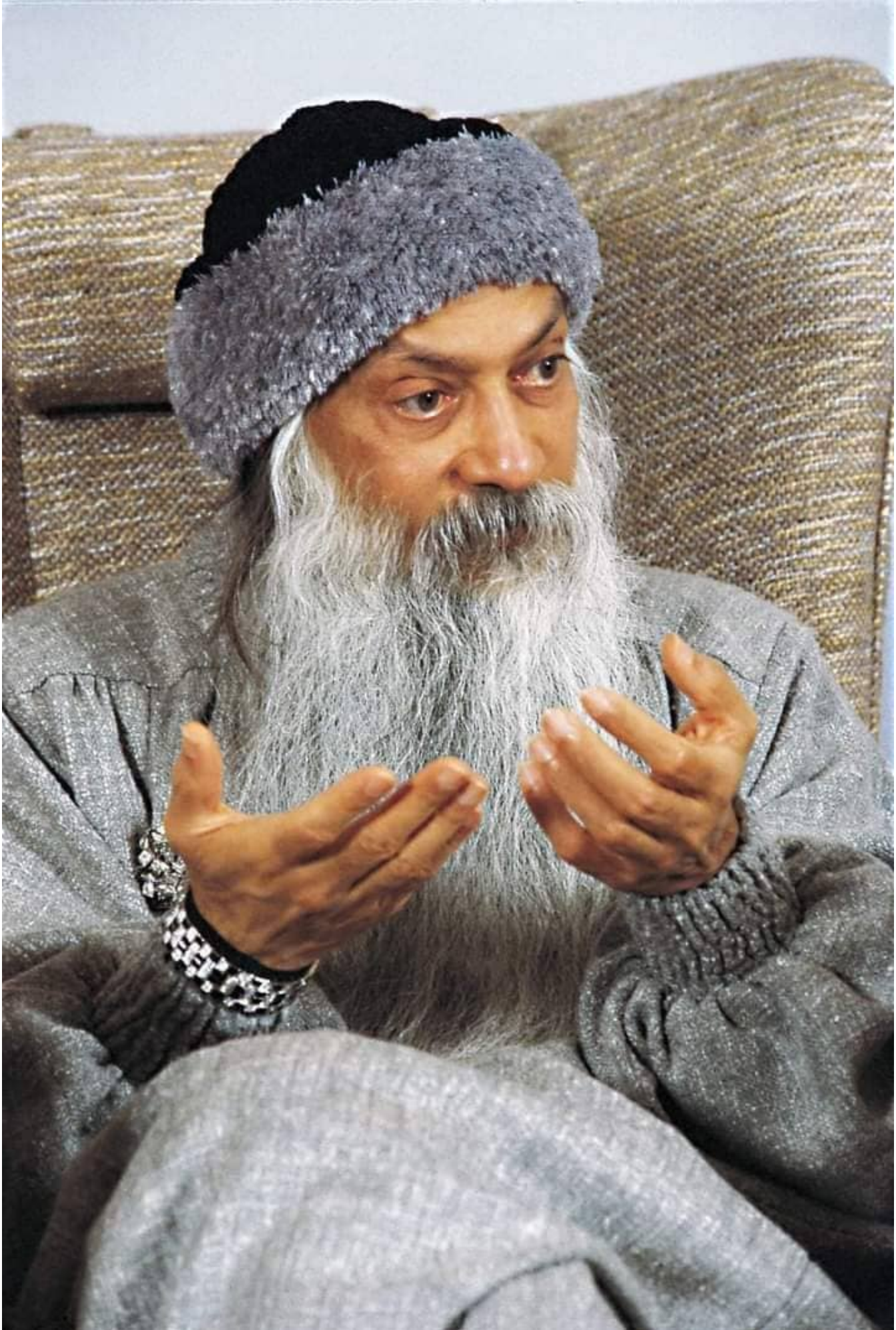
बहुत सारे लोग आजकल यह कहते हैं कि शास्त्रों की अमुक बात तो काल्पनिक है, अमुक बात तो फालतू में ही लिख दी अमुक बात में भेदभाव है, ऐसा कुछ नहीं होता आदि आदि

उनसे एक ही निवेदन है कि अगर आपको शास्त्रों पर संदेह है तो बस आप एक बार राम नाम का 2 लाख जप कर लीजिए जितने दिनों में आप कर सकते हो उतने दिन का संकल्प लेकर।

और आप जब भी जप करने बैठे और जप करके उठे तो भगवान से यह प्रार्थना अवश्य करें कि भगवान मुझे लगता है कि शास्त्रों की बातें झूठी है। यह झूठी है या सच्ची आप यह मुझे जना दे इसलिए मैं आपके 2 लाख नाम का जाप कर रहा हूं।

उन दिनों आहार शुद्ध रखें और ब्रह्मचर्य का पालन करें आपको भगवान की शक्ति और शास्त्रों की शक्ति का परिचय हो जाएगा अनुष्ठान पूर्ण होते होते यह मेरा विश्वास है







🌹 हर रोज अपनी क्लास के विद्यार्थियों से मैं सबसे पहले यही कहता था, 'याद रखो' यहां मैं गुरु हूं। अगर तुम मुझे नहीं सुनना चाहते तो तुरंत चले जाओ। अगर सुनना चाहते हो तो चुपचाप सुनो। मैं तुम्हारे सब प्रश्नों के उत्तर देने को तैयार हूं। लेकिन मैं किसी प्रकार की कोई आवाज बर्दाश्त नहीं करूंगा--फुसफुसाहट भी नहीं। अगर तुम्हारी गर्ल-फ्रेंड यहां है तो तुम अभी बाहर चले जाओ, और मैं तुम्हें अपनी गर्ल-फ्रेंड के साथ जाने की अनुमति देता हूं। जब मैं बोल रहा हूं तो केवल मैं ही बोल रहा हूं। और तुम सुन रहे हो। अगर तुम कुछ कहना चाहते हो तो अपना हाथ उठा दो और उठाए रहो, क्योंकि इसका अर्थ यह नहीं है कि तुम जब पूछना चाहो तभी मैं उत्तर दे दूँ। मैं यहां पर तुम्हारा नौकर नहीं हूं। मैं अरस्तू नहीं हूं। सिकंदर भी मुझे घोड़ा नहीं बना सकता।' हर रोज बस यही मेरा परिचय होता। और मुझे खुशी है कि वे समझ जाते उन्हें समझना ही पड़ता था। इसीलिए कभी-कभी मैं तुमसे देव गीत कठोर हो जाता हूं कि तुम्हें बटन दबाने पड़ते हैं और उससे आवाज तो होगी ही, तुम क्या कर सकते हो, मुझे यह अच्छी तरह से मालूम है। यह सिर्फ मेरी पुरानी आदत है। मैं जब भी बोला गहन मौन में बोला। तुम तो जानते हो। वर्षों से तुम सुन रहे हो। तुम बुद्धा-हॉल के मौन से परिचित हो। केवल उस मौन में तुम्हारा अंग्रेजी का यह मुहावरा बहुत अर्थपूर्ण है कि मौन इतना गहन है कि जमीन पर सूई के गिरने की आवाज भी तुम सुन सकते हो। इस लिए मैं जानता हूं लेकिन मुझे मौन की आदत है।

उस दिन जब मैं कमरे से बाहर जा रहा था तो तुम खुश नहीं दिखाई दे रहे थे। उसके बाद मुझे बहुत बुरा लगा, बहुत पीड़ा हुई मुझे। मैं तो कभी भी किसी तरह तुम्हारा दिल दुखाना नहीं चाहता था। यह तो सिर्फ मेरी पुरानी आदत है और अब तूम नई बातें मुझे नहीं सिखा सकते। सीखने की सीमा के मैं पार चला गया हूं।

नाना की मृत्यु के बाद मुझे फिर नानी से दूर रहना पड़ा, लेकिन मैं जल्दी ही अपने पिता के गांव वापस आ गया। मैं वापस आना तो नहीं चाहता था, लेकिन वह इस के ओ. के. की तरह था जो कि मैंने शुरूआत में कहा, नहीं के मैं ओ. के. कहना चाहता था। लेकिन मैं दूसरों की चिंता की उपेक्षा नहीं कर सकता। मेरे माता-पिता मुझे अपने मृत नाना के घर भेजने को तैयार नहीं थे। मेरी नानी भी मेरे साथ जाने को तैयार नहीं थी।

दिन बीत जाते। न भोजन की फिक्र है, न प्यास का पता है। लेकिन एक आभा प्रकट होने लगी, एक तेजोमंडल आविर्भूत होने लगा। चारों तरफ एक सुगंध फैलने लगी। लोग सेवा करने लगे। लोग भोजन ले आते, हाथ-पैर दबाते कि लौट आओ, भोजन कर लो। कोई पानी ले आता, कोई स्नान करवा देता; नहीं तो वे बैठे रहते बिना ही स्नान के। मक्खियों के झुंड के झुंड उन पर बैठे रहते और वे मस्त हैं, वे मदहोश हैं। और लोग पूछते : तुम करते क्या हो? तो वे कहते कि मैं कुछ भी नहीं करता हूं। करने की कोई जरूरत ही नहीं। फिर यही उनका जिंदगी--भर संदेश रहा जो भी उनके पास जाता, पूछता : हम क्या करें परमात्मा को पाने को? तो वे कहते: करने की कोई जरूरत नहीं, बस बैठ रहो। खाली बैठे रहो। खाली बैठे, बैठे, बैठे, बैठे एक दिन ऐसा सुर बंध जाएगा कि जो भीतर है उसकी प्रतीति होने लगेगी। बाहर से मन मुड़ जाएगा, भीतर का अनुभव होने लगेगा।

सुंदरदास कह रहे हैं : सुंदर कहत कोऊ कौन विधि जानै ताहि। विधि से तो नहीं होता, बिना विधि के होता है। इसलिए छोटे बच्चे चाहें तो उनको भी हो सकता है। स्वस्थ को हो सकता है, बीमार को हो सकता है। बाजार में जो बैठा है उसको हो सकता है, हिमालय पर जो बैठा है उसको हो सकता है। सुंदर को कुरूप को, गरीब को अमीर को, पढ़े--लिखे को गैर पढ़े--लिखे को, सब को हो सकता है। क्योंकि बात सब छोड़कर भीतर थोड़ी देर चुपचाप डुबकी मार लेने की है।

और जब ऐसा हो जाए तो सुंदर कहते हैं कुछ बोलना। नहीं तो लोगों के सिर वैसे ही कचरे से भरे हैं, और कचरे से मत भरना।

इस जगत् में जो सबसे बड़ा पाप चल रहा है, वह है--उनके द्वारा बोला जाना जिन्हें अनुभव नहीं है। वे लोगों के मस्तिष्क कचरे से भरते रहते हैं।

🌸 आचार्य रजनीश "ओशो" 🌸

ज्योति से ज्योति जले--(संत सुंदर दास)

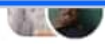


उत्तरा ना पूरा हा नई मृत्यु जस वला जार जव पट नर पाय लगान
आंखें खोलीं तो वे दूसरे ही व्यक्ति थे। चमत्कार हो गया। देख ही लिया उन्होंने भीतर अपने कि "जो है", उसकी कोई मृत्यु नहीं। जाकर घर के लोगों को कहा : व्यर्थ रो रहे हो, धो रहे हो। कोई कहीं गया नहीं, कोई कहीं जाता नहीं।

और उसी दिन उन्होंने घर छोड़ दिया, चल पड़े जंगल की तरफ। अब इस संसार में कुछ अर्थ न रहा। सारे अर्थों का अर्थ तो भीतर मिल गया। संपदा तो मिल गई, अब क्या तलाश करनी है? इस संसार में तो हम संपदा की ही तलाश करते रहते हैं। जब मिल गयी संपदा, धनी हो गए, तो अब यहां क्या करना है? चल पड़े। और ऐसा रस लगा, यह मरने की कला में ऐसा रस लगा कि लोग कहते हैं कि जहां रमण बैठ जाते थे, दिनों बैठे रहते थे। आंख बंद कर ली, शरीर को मुर्दा कर लिया और बैठ हैं और पी रहे रस!

दिन बीत जाते। न भोजन की फिक्र है, न प्यास का पता है। लेकिन एक आभा प्रकट होने लगी, एक तेजोमंडल आविर्भूत होने लगा। चारों तरफ एक सुगंध फैलने लगी। लोग सेवा करने लगे। लोग भोजन ले आते, हाथ-पैर दबाते कि लौट आओ, भोजन कर लो। कोई पानी ले आता, कोई स्नान करवा देता; नहीं तो वे बैठे रहते बिना ही स्नान के। मक्खियों के झुंड के झुंड उन पर बैठे रहते और वे मस्त हैं, वे मदहोश हैं। और लोग पूछते : तुम करते क्या हो? तो वे कहते कि मैं कुछ भी नहीं करता हूं। करने की कोई जरूरत ही नहीं। फिर यही उनका जिंदगी-भर संदेश रहा जो भी उनके पास जाता, पूछता : हम क्या करें परमात्मा को पाने को? तो वे कहते: करने की कोई जरूरत नहीं, बस बैठ रहो। खाली बैठे रहो। खाली बैठे, बैठे, बैठे, बैठे एक दिन ऐसा सुर बंध जाएगा कि जो भीतर है उसकी प्रतीति होने लगेगी। बाहर से मन मुड़ जाएगा, भीतर का अनुभव होने लगेगा।

सुंदरदास कह रहे हैं : सुंदर कहत कोऊ कौन विधि जानै ताहि। विधि से तो नहीं होता, बिना विधि के होता है। इसलिए छोटे बच्चे चाहें तो उनको भी हो सकता है। स्वस्थ को हो सकता है, बीमार को हो सकता है। बाजार में जो बैठा है उसको हो सकता है, हिमालय पर जो बैठा है उसको हो सकता है। सुंदर को कुरूप को, गरीब को अमीर को, गटे... निगटे को गैर गटे... निगटे को यत्न को तो यत्नता है। तर्कोक्ति नाव



रमण की समाधि समझने जैसी है। ज्यादा उम्र उनकी न थी। ज्यादा होती तो शायद समाधि मिलती भी न। ज्यादा उम्र क्या हो जाती है लोगों की, अनुभव का कचरा खूब इकट्ठा हो जाता है। फिर उस कचरे से छूटना बड़ा मुश्किल होता है। ज्यादा उम्र क्या हो जाती है, लोग ज्ञानी हो जाते हैं बिना ज्ञान के--और बिना ज्ञान के जो ज्ञानी हो गया उसकी हालत अज्ञानी से बहुत बदतर हो जाती है। ज्यादा उम्र क्या हो जाती है लोग, सुन-सुन कर पंडित हो जाते हैं, तोते हो जाते हैं। उपनिषद--वेद दोहराने लगते हैं। और जितने ही वेद-उपनिषद कंठस्थ हो जाते हैं, उतना ही समझ लेना कि परमात्मा से दूरी बढ़ी। अब तुम्हारा वेद नहीं जन्म सकेगा; अब तुम उधार वेद से बंध गए। अब तुम्हारा उपनिषद नहीं जन्मेगा; अब तुमने दूसरों के उपनिषद पकड़ लिए।

सत्रह साल की उम्र थी रमण की। परिवार में किसी की मृत्यु हो गयी। रमण ने मृत्यु को घटते देखा। अभी-अभी था यह आदमी, अभी-अभी नहीं हो गया! न किसी को देखा आते न किसी को देखा जाते। सब वैसा ही का वैसा। नाक, मुंह, आंख, कान सब वैसे, हाथ--पैर सब वैसे। एक क्षण पहले यह था और एक क्षण बाद न रहा। हुआ क्या! कौन चला गया! कहां चला गया! कहां से आया था!

रमण को एक बात सूझी। बच्चों को अकसर बातें सूझ जाती हैं। घर के लोग तो रोने-धोने में लगे थे, वे बगल के कमरे में चले गए और जमीन पर लेट गए, जैसे वह मुर्दा आदमी लेटा था वैसे लेट गए। हाथ--पैर वैसे ही कर लिए ढीले, जैसे मुर्दे ने किए थे। आंखें बंद कर लीं। एक प्रयोग किया मृत्यु का कि मैं देखूं कि मेरे भीतर क्या होता है; अगर मैं ऐसे ही मर जाऊं तो कोई आता--जाता है या नहीं; कोई बचता है कि नहीं भीतर? शरीर को शिथिल छोड़ दिया। सरल भाव का बच्चा रहा होगा--अति सरल भाव का, कि जल्दी ही लगा कि मौत घट रही है। हाथ--पैर सब सूख गए। थोड़ी देर विचार घूमते रहे, फिर विचार भी समाप्त हो गए। थोड़ी देर बाहर की आवाजें और रोना--धोना सुनाई पड़ता रहा, फिर पता नहीं वे भी सब आवाजें कहीं दूर...निकल गईं। कान जैसे बंद हो गए। थोड़ी देर श्वास चलती मालूम पड़ती रही, फिर उससे भी दूरी हो गई। मृत्यु जैसे घटी। और जब घंटे--भर बाद रमण ने आंखें खोलीं तो वे दूसरे ही व्यक्ति थे। चमत्कार हो गया। देख ही लिया



जलसा शुरू हुआ। लेकिन उस वेश्या ने बड़ा अद्भुत गीत गाया। उसने नरसी मेहता का एक भजन गाया। पास ही था शामियाना, विवेकानंद को सुनायी पड़ने लगा नरसी मेहता के भजन उस वेश्या के टपकते आंसू और नरसी मेहता का भजन! नरसी मेहता के भजन में यह कहा गया है कि पारस पत्थर को इस बात की चिंता नहीं होती कि जो लोहा वह छू रहा है, वह पूजागृह में रखा जानेवाला लोहा है या कसाई के घर जिस लोहे से जानवरों की हत्या की जाती है, वह लोहा है। पारस पत्थर तो दोनों लोहों को छूकर सोना बना देता है। तो वह वेश्या अपने गीत में कहने लगी कि तुम कैसे पारस हो? तुम्हें अभी वेश्या दिखायी पड़ती है! मैं तो कितने भाव लेकर आई थी, मैं तो कितने भजन संजोकर आई थी—वेश्या सच में भजन संजोकर आयी थी। सोचा वेश्या ने कि विवेकानंद, संन्यासी के सामने नृत्य करना, गीत गाने हैं, तो मीरां के भजन लायी थी, नरसी मेहता के भजन लाई थी; जीवन को धन्य समझा था, कि आज मेरा नृत्य भी सार्थक होगा।

विवेकानंद को बहुत चोट लगी जब उन्होंने सुना यह नरसी मेहता का भजन। उठे और पहुंच गए समारोह में और वेश्या से क्षमा मांगी और कहा, मुझसे भूल हो गयी। मेरी गलती। मैं ही अभी पारस नहीं हूं, इसीलिए यह विचार किया कि कौन लोहा पात्र, कौन लोहा अपात्र। विवेकानंद ने कहा है कि उस दिन मेरी आंख खुल गयी। उस दिन से मैंने भेद करने छोड़ दिए पात्र—अपात्र के। वह पुरानी आदत उस वेश्या ने छुड़ा दी। वह वेश्या मेरी गुरु हो गयी।

जीवन बहुत अनूठा है। रहस्यपूर्ण है। कहां से द्वार खुलेगा परमात्मा का, कहना मुश्किल है।

🌺 आचार्य श्री रजनीश "ओशो" 🌺

राम दुवारे जो मरै-(प्रवचन-04)



विवेकानंद अमरीका जा रहे थे, तो राजस्थान में एक राज-परिवार (खेतड़ी नरेश) में मेहमान थे। राजा ने उनके स्वागत में एक समारोह किया: अमरीका जाता है संन्यासी। राजा तो राजा! उसने काशी से एक प्रसिद्ध वेश्या भी बुलवा ली। क्योंकि समारोह और बिना वेश्या के हो, यह तो उसकी समझ के बाहर था। नहीं तो समारोह ही क्या? वह तो दीवाली हुई बिना दीयों के। वेश्या तो होनी ही चाहिए। जब विवेकानंद को पता लगा—पता लगा आखिर—आखिर में; सांझ आ गयी उत्सव की और विवेकानंद को ले जाने के लिए द्वार पर आकर गाड़ी खड़ी हो गयी, तब उनको पता लगा कि एक वेश्या भी आई है समारोह में, वह विवेकानंद के सामने नाचेगी—तो विवेकानंद ने जाने से इनकार कर दिया: कि मैं नहीं जाऊंगा। मैं संन्यासी हूं, वेश्या का नृत्य देखूं! पास ही शामियाना था जहां विवेकानंद ठहरे थे, जहां उत्सव होनेवाला था। लेकिन राजा तो राजा, राजा ने कहा अब नहीं आते तो न आएँ, उत्सव तो चलेगा ही। अब वेश्या भी आ गयी, मेहमान भी आ गए, शराब भी आ गयी, अब जलसा तो बंद नहीं हो सकता; तो उनके बिना चलेगा।

जलसा शुरू हुआ। लेकिन उस वेश्या ने बड़ा अद्भुत गीत गाया। उसने नरसी मेहता का एक भजन गाया। पास ही था शामियाना, विवेकानंद को सुनायी पड़ने लगा नरसी मेहता के भजन उस वेश्या के टपकते आंसू और नरसी मेहता का भजन! नरसी मेहता के भजन में यह कहा गया है कि पारस पत्थर को इस बात की चिंता नहीं होती कि जो लोहा वह छू रहा है, वह पूजागृह में रखा जानेवाला लोहा है या कसाई के घर जिस लोहे से जानवरों की हत्या की जाती है, वह लोहा है। पारस पत्थर तो दोनों लोहों को छूकर सोना बना देता है। तो वह वेश्या अपने गीत में कहने लगी कि तुम कैसे पारस हो? तुम्हें अभी वेश्या दिखायी पड़ती है! मैं तो कितने भाव लेकर आई थी, मैं तो कितने भजन संजोकर आई थी—वेश्या सच में भजन संजोकर आयी थी। सोचा वेश्या ने कि विवेकानंद, संन्यासी के सामने नृत्य करना, गीत गाने हैं, तो मीरां के भजन लायी थी, नरसी मेहता के भजन लाई थी; जीवन को धन्य समझा था, कि आज मेरा नृत्य भी सार्थक होगा।

विवेकानंद को बहुत चोट लगी जब उन्होंने सुना यह नरसी मेहता का भजन। उठे और पहुंच गए समारोह में और वेश्या से क्षमा मांगी और



जायाच त्रा रजनारा

जिन सूत्र--(भाग--1) प्रवचन--24

मांग नहीं--अहोभाव, अहोगीत--



43

6 comments • 7 shares • 284 views



Like



Comment



Send



Share



Osho World





न तुम आये,
न तुम हो,
न तुम जाओगे।
कोई लाया,
कोई रखे है,
कोई ले जायेगा।

हिंदू पुराण
बड़ी मधुर कथा कहते हैं।
जो लाया वह ब्रह्मा।
जो सम्हाले वह विष्णु।
जो ले जायेगा वह शिव।

तुम पर कुछ छोड़ते नहीं।
काम ही नहीं छोड़ते कुछ।

ब्रह्मा ले आया है,
विष्णु सम्हाले हैं,
शिव ले जायेंगे।

मतलब केवल इतना है
कि विराट ने तुम में
एक तरंग ली है।

वही विराट जब चाहेगा
तो तरंग समा जायेगी।

तुम अपने को बीच में मत लाओ।
जब इतनी विराट चीजें भी
तुम्हारे बिना हो गयीं,
तो तुम छोटी-छोटी बातों का
हिसाब मत रखो

आचार्य श्री रजनीश





और अगर यह
खयाल ही रहा तो
ज्यादा देर न टिकेगा, चला जायेगा।
खयाल आते हैं, जाते हैं।
खयाल बसते थोड़े ही हैं!
खयाल का कोई बड़ा भरोसा थोड़े ही है!
जब तक कि यह खयाल ध्यान न बन जाये,
तब तक इस पर भरोसा मत करना।

यह तो आयी है तरंग, चली जायेगी।
अभी आयी है, अभी भूल जाओगे।
क्षणभर में उतर जायेगा खयाल।

जिस दिन यह खयाल ध्यान बन जाये,
यह तुम्हारी स्थिर चित्त की भाव-दशा बन जाये
कि कोई लाया है-
-क्या परिणाम होंगे?
परिणाम बड़े दूरगामी होंगे।

अगर कोई लाया है
तो तुम्हारे अहंकार के लिए
कोई जगह न रह जायेगी।
जन्म किसी ने दिया,
जीवन किसी ने दिया।
तुम क्यों अकड़े फिरते हो?
तुम नाहक बोझ ढो रहे हो
इस " मैं "का।

न तुम आये,
न तुम हो,
न तुम जाओगे।
कोई लाया,
कोई रखे है,
कोई ले जायेगा।



बैठे-बैठे दिले-नादां
ये खयाल आया है
हम नहीं आये यहां
कोई हमें लाया है।

खयाल तो दुरुस्त है। लेकिन
यह खयाल ही नहीं है,
यह सत्य है।
तुम यहां आये कहां?
कोई लाया है।
तुमने न तो आने का निर्णय किया था,
न तुमने आने की आकांक्षा की थी।
न तुमसे किसी ने पूछा था कि तुम
संसार जाना चाहते,
जीवन में उतरना चाहते?
कोई तुम्हें उतार गया है।

एक दिन अचानक तुमने जागकर पाया
कि तुम यहां हो।
हमने सदा अपने को जिंदगी के बीच में पाया है।
जिंदगी के प्रारंभ में तो किसी ने नहीं पाया।

जरूर कोई लाया है।
कोई आंख पर पट्टियां बांधकर
इस बगीचे में छोड़ गया है।

बैठे-बैठे दिले-नादां
ये खयाल आया है।
हम नहीं आये यहां,
कोई हमें लाया है।

और अगर यह
खयाल ही रहा तो
ज्यादा देर न टिकेगा. चला जायेगा।

शिव : ' योनिवर्ग और कला शरीर हैं '

योनि का अर्थ है : प्रकृति । इसलिए हम स्त्री को प्रकृति कहते हैं । स्त्री शरीर देती है : वह प्रकृति की प्रतीक है। और **कला** का अर्थ है : **कर्ता का भाव**। एक ही कला है , वह कला है , संसार में उतरने की कला , और वह है - कर्ता का भाव। इन दो चीजों से मिल कर तुम्हारा शरीर निर्मित होता है --- तुम्हारे कर्ता का भाव , तुम्हारा अहंकार , और प्रकृति से मिला हुआ शरीर। अगर तुम्हारे भीतर कर्ता का भाव है , तो तुम्हें योग्य शरीर प्रकृति देती चली जाएगी। इसी तरह तुम बार - बार जन्मे हो। कभी तुम पशु थे , पक्षी थे , वृक्ष थे , कभी मनुष्य। तुमने जो चाहा है , वह तुम्हें मिला है । तुमने जो आकांक्षा की है , तुमने जो कर्तृत्व की वासना की है , वही घट गया है। तुम्हारे कर्तृत्व की वासना घटना बन जाती है। विचार वस्तुएं बन जाते हैं । इसलिए बहुत सोच - विचार कर वासना करना ; क्योंकि सभी वासनाएं पूरी हो जाती हैं देर - अबेर।

इसलिए बुद्ध पुरुष कहते हैं , सभी वासनाओं को छोड़ दो , तभी तुम मुक्त हो सकोगे। तुमने अगर स्वर्ग की वासना की तो तुम देवता हो जाओगे , लेकिन वह भी मुक्ति न होगी । क्योंकि वासनाओं से कभी भी अशरीर की स्थिति पैदा नहीं होती ; सभी वासनाओं से शरीर निर्मित होते हैं । जब तक तुम निर्वासन को उपलब्ध नहीं हो , जब तक तृष्णा तुमने पूरी ही नहीं छोड़ दी है , तब तक तुम नये शरीरों में भटकते रहोगे। **ओशो** (Dr Sohan Lal Narang)



शिव सूत्र प्रवचन न.1

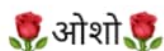
facebook



हात कि हर किसी की बात सुनने का इकट्ठा हो जाए। सुनने ही नहीं। म चिल्लाता रहूंगा, फूल अपनी मौज में, हवाओं में तैरते रहेंगे। फिकर भी नहीं करेंगे कि कोई समझाने आया हुआ है। लेकिन हो सकता है आदमी के साथ-साथ रहते-रहते कुछ फूल बिगड़ गए हों। सोहबत का बुरा असर पड़ता ही है। हो सकता है कुछ फूल उपदेश सुनने के प्रेमी हो गए हों और मेरी बात सुन लें, तो उस बगिया में बड़ा उत्पात मच जाएगा। फिर उस बगिया में एक बात तय है, फूल पैदा ही नहीं होंगे। क्योंकि गुलाब कोशिश करेगा कमल होने की। चमेली कोशिश करेगी चंपा होने की। गुलाब के भीतर कमल होने की कोई संभावना ही नहीं है। कमल होने की कोशिश में कमल तो हो ही नहीं सकेगा, यह असंभव है। लेकिन दूसरी दुर्घटना घट जाएगी, कमल होने की कोशिश में वह गुलाब भी नहीं हो पाएगा। क्योंकि सारी कोशिश कमल होने में लग जाएगी, तो गुलाब होने के लिए शक्ति कहां बचेगी, दृष्टि कहां बचेगी, समय कहां बचेगा, सुविधा कहां बचेगी, खयाल भी नहीं बचेगा कि मुझे गुलाब होना है, मुझे तो कमल होना है। यह रोग उसके ऊपर चढ़ गया तो वह गुलाब नहीं हो सकता। उस बगिया में फूल पैदा होने बंद हो जाएंगे।

आदमी की बगिया में फूल पैदा होना हजारों साल से बंद है। कभी एकाध फूल पैदा हो जाता है। अगर कोई माली साढ़े तीन लाख पौधे लगाए, साढ़े तीन अरब पौधे लगाए और एक पौधे में फूल पैदा हो जाए, उस माली को हम धन्यवाद देंगे? शायद हम यही समझेंगे कि यह फूल माली से बच कर शायद विकसित हो गया। क्योंकि साढ़े तीन अरब पौधों में तो कोई फूल नहीं लगा। एकाध महावीर कभी पैदा हो जाता, एकाध बुद्ध, एकाध क्राइस्ट, इससे कोई आदमी का गौरव है? इससे आदमी का कोई गौरव नहीं। अरबों आदमी बिना फूलों के समाप्त हो जाते हैं। क्या शेष सारे लोग पूजा करने को पैदा हुए हैं कि एक फूल पैदा हो जाए शेष उसकी पूजा करें? मंदिर बनाएं? जयजयकार करें? नहीं साहब, नहीं, हर आदमी अपने भीतर फूलों को विकसित करने को पैदा हुआ है किसी की पूजा करने को नहीं।

अंतर की खोज





Like



Comment



Send



Share

**ओशो का हिन्दी साहित्य**

Rahul Kumar Ojha · 4h · 🌐

मैंने सुना है, एक आदमी राह से गुजरता था और एक भिखमंगे ने उसके सामने हाथ फैलाए। बूढ़ा, अंधा दुर्बल! उस आदमी ने जल्दी से खीसे में हाथ डाले, लेकिन वह अपना बटुआ तो घर ही भूल आया था। तो वह बड़ा मुश्किल में पड़ गया।

वह पास बैठ गया, उसने बूढ़े का हाथ अपने हाथ में ले लिया और कहा, "बाबा! खीसे में कुछ है नहीं, बटुआ मैं घर भूल आया।"

उस बूढ़े ने कहा, "छोड़ो भी! बटुए और खीसे की बात क्या? तुमने मुझे इतना दिया हाथ हाथ में लेकर, जितना कभी किसी ने मुझे नहीं दिया। जब कभी यहां से गुजरो, क्षणभर को अपना हाथ मेरे हाथ में दे देना, बस बहुत है!"

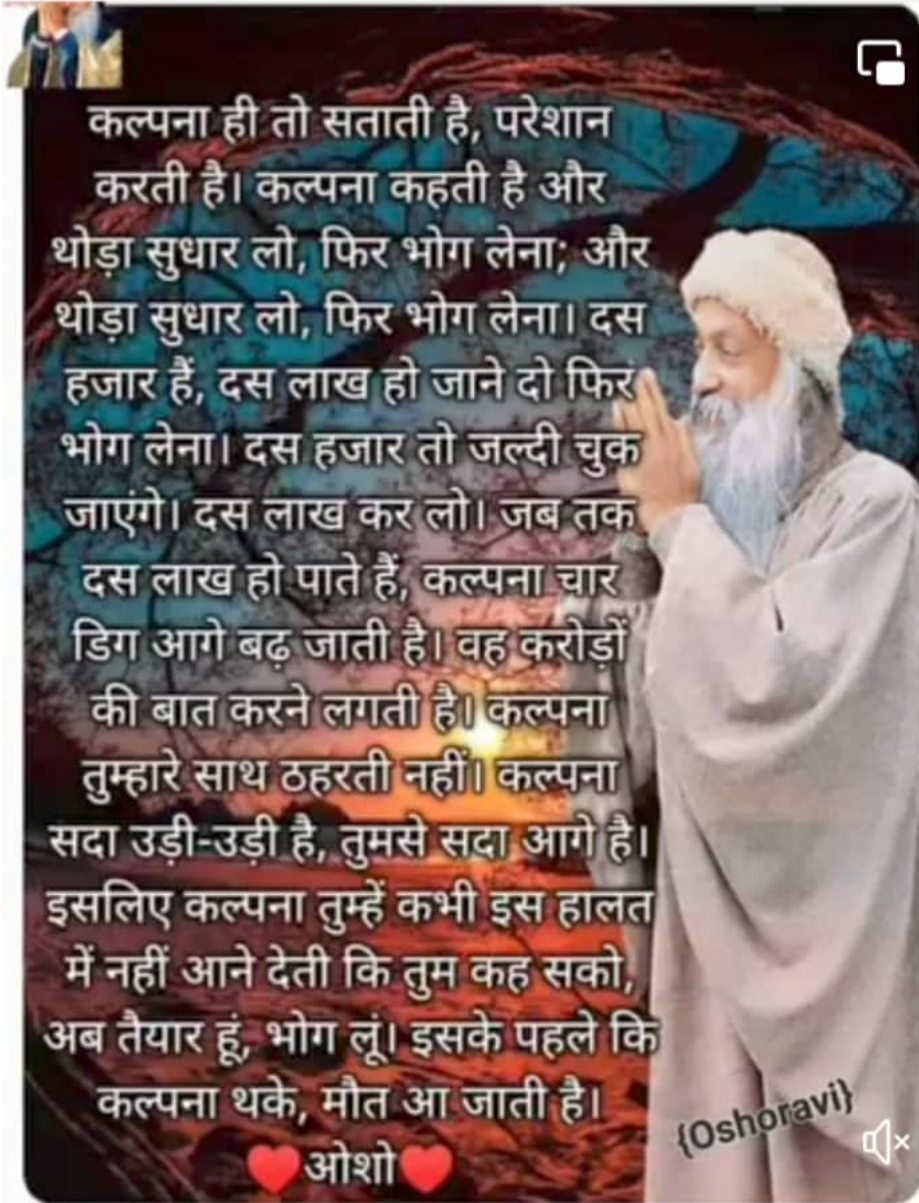
कौन किसी भिखमंगे का हाथ हाथ में लेता है! कोई पैसे ही देने की थोड़ी बात है... भाव की बात है!

जहां तुम्हें प्रेम करने का अवसर मिले, चूकना मत; नहीं तो चूकने की आदत मजबूत हो जाती है। अगर ज्यादा चूकते रहे तो चूकना तुम्हारा ढंग हो जाता है। प्रेम का रास्ता तब असंभव है। और हम जगह-जगह चूकते हैं।

ओशो



#ओशो #osho #oshoravi #oshoraviyog #viralpage
#viralpage2023



8

33 views



Like



Comment



Send



Share



Suggested pages



म्हारी बात मानो तो!
CM की कुर्सी की जगह माचो ढाल दो
सब होरा बैठी। 🤔 😄

Saathi

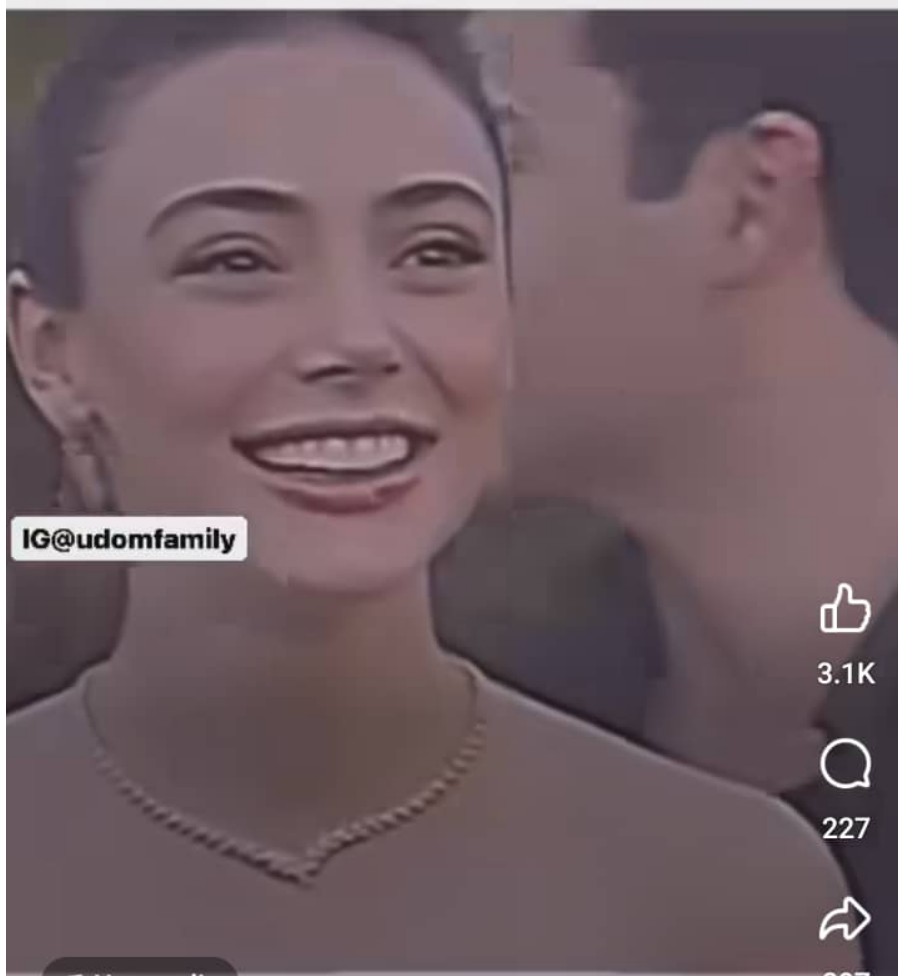
Date ____ / ____ / ____

the tree when the third prince
as it as the tree was all covered
green leaves

Page No.

[← Reels](#) ▾

A real man notices everything
but chooses to say nothing.

[IG@udomfamily](#)

3.1K



227



297

Use audio

[Khlur Trep](#) 

Send

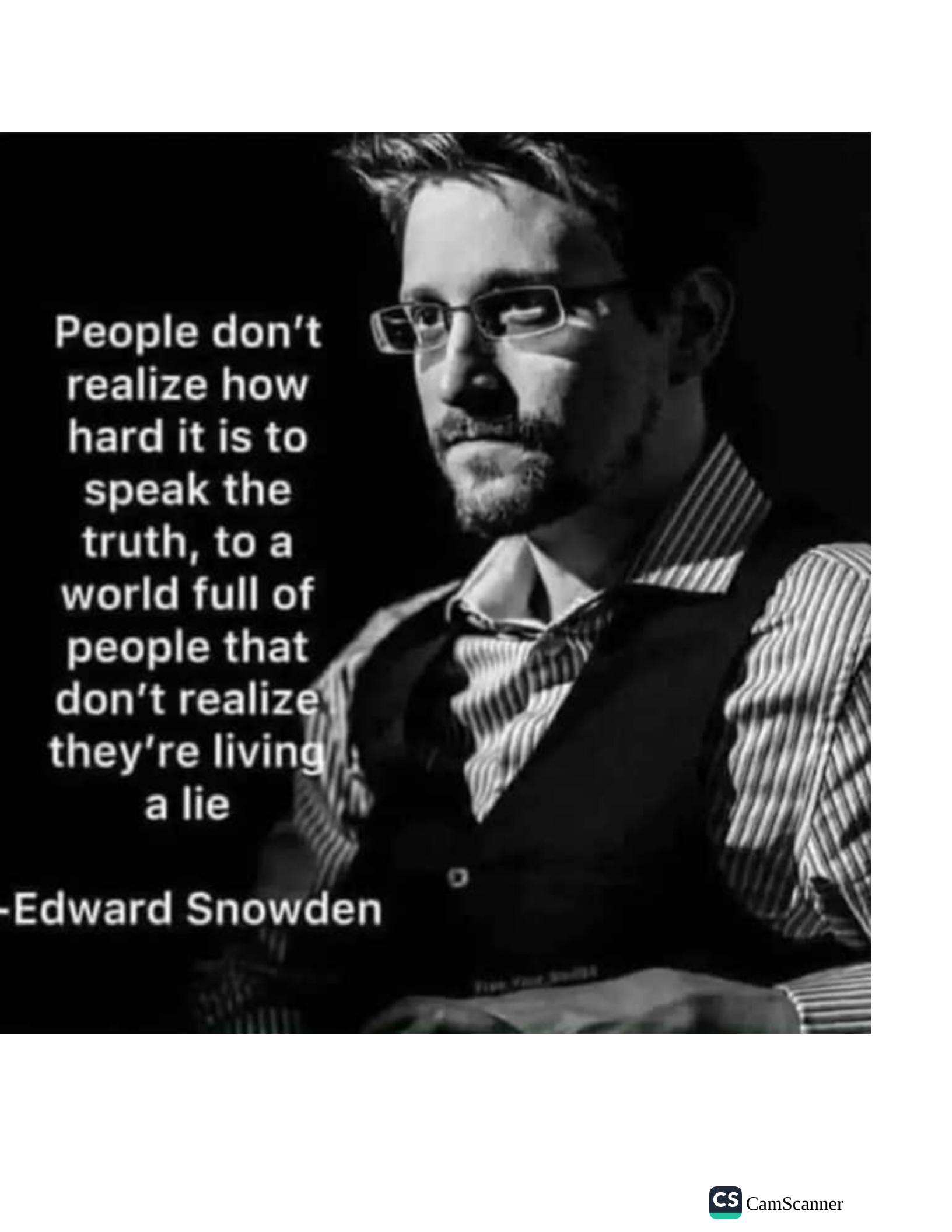
Kina · Can We Kiss Forever

Watch Video



Add a comment...



A black and white portrait of Edward Snowden. He is wearing glasses, has a beard, and is dressed in a striped shirt under a dark vest. He is looking slightly to the left of the camera with a serious expression. The background is dark and out of focus.

People don't
realize how
hard it is to
speak the
truth, to a
world full of
people that
don't realize
they're living
a lie

-Edward Snowden

यदि इस मन को बार बार
संयम की छड़ी लगने लगे,
तो इसकी भूख सदा के लिए मिट जाए।



011 राजा की बकरी



क्या न खा ल, उसका पेट न भरता, जहाँ हरा घास देखता, मुह जरूर मारती।

राजा ने बकरी का पेट भर देने वाले को एक लाख रुपए ईनाम देने की घोषणा की।

पर बड़े बड़े सेठ, उस बकरी को सुबह-शाम-दिन-रात घास खिला कर भी उसकी वह आदत न बदल पाए।

तब एक लंगोटीधारी संत आए। राजा ने व्यंग्य किया कि आपके पास तो खुद के लिए ही भोजन नहीं है, आप बकरी का पेट कैसे भरेंगे? परन्तु संत मुस्कुराते हुए उस बकरी को अपनी कुटिया में ले गए।

संत ने बकरी को एक खूँटे से बाँध दिया, सामने हरी हरी घास रख दी, और स्वयं एक छड़ी लेकर कुर्सी पर बैठ गए।

बकरी ने जैसे ही घास को मुँह लगाया, संत ने उसकी नाक पर हलके से छड़ी लगा दी। बकरी चोट खाकर पीछे हट गई। ऐसा ही चार दिन लगातार चलता रहा। संत ने बकरी को एक दिनका घास भी न खाने दिया।

जब बकरी घास देखते ही, तुरंत छड़ी की ओर देखने लगी, संत बकरी को राजा के पास लौटा लाए।

राजा ने बकरी को देखा तो चीख उठा। चीखता क्यों नहीं, चार दिन से कुछ भी न खाने से बकरी पिचक जो गई थी।

राजा बोला- हाय हाय! मेरी बकरी को भूखा मार दिया।

संत मुस्कुरा कर बोले- नहीं महाराज! यह तो आपकी याद में पतली हो गई है। मैंने इसे इतना खिला दिया है कि अब कई दिन घास नहीं खाएगी।

राजा ने हरी घास मंगवाई। संत भी छड़ी बगल में दबाए तैयार ही खड़े थे।

राजा ने घास हाथ में लेकर बकरी को पुचकारा। बकरी ने घास देखी। फिर छड़ी की ओर देखा। संत ने छड़ी जरा सी हिला दी। बकरी चार कदम पीछे हट गई।

संत ने कहा- नहीं खाएगी महाराज! नहीं खाएगी। राजा भी हैरान रह गया।

लोकेशानन्द कहता है कि वह राजा कोई ओर नहीं आप ही हैं। मन ही बकरी है। इसे कुछ भी क्यों न मिल जाए, यह 'और' माँगा ही करता है। यदि गुरुजी के मार्गदर्शन में, इस मन को संयम की छड़ी लगने लगे, तो इसकी भी भूख सदा के लिए मिट जाए।



दिल खोल के मुस्कुराइए..

दुनिया के सारे गम आपकी मलकियत थोड़ी है..!!

Smile openly..

All the sorrows of the world are yours..!!

[#everyone](#)



मंदिरों में तुम
उन मूर्तियों का ध्यान कर रहे हो
जिनको तुमने ही बनाया है,

उसका ध्यान कब करोगे
जिसने तुम्हें बनाया है...

-रजनीश



इसलिए मेरा कहना है, पुराने लीडर को बदलने की फिक्र ही मत करो। न पुरानी सिस्टम को बदलने की फिक्र करो। पुरानी सिस्टम और पुराने लीडर को जिस माइंड से सहारा मिलता है, तुम उस माइंड से सीधी लड़ाई लो और उसकी जड़ें हिला दो! और तुम पाओगे कि एक दस-पंद्रह साल की तीव्र अराजकता चित्त में पैदा हो जाए मुल्क के, तो इस अपहीवल में जो लोग ऊपर आ जाएंगे, वे बिलकुल और तरह के लोग होंगे। और उनसे एक्शन भी आएगा, उनसे कुछ काम भी होगा। नहीं तो नहीं होने वाला।

चेत सके तो चेत -- प्रवचन -- 02





इधर तो मैं यह कहता हूं--जैसे साक्रेटीज ने यूनान और एथेंस की गली-गली, कूचे-कूचे में क्वेश्चनिंग खड़ी कर दी। सड़क पर निकलना मुश्किल कर दिया लोगों का। कि अगर आप जा रहे हो और साक्रेटीज दिख गया, तो आप दूसरी गली से निकल जाओगे। क्योंकि वह मिल गया तो वह कुछ न कुछ पूछेगा और भीड़ खड़ी हो जाएगी। और आपको ऐसी स्थिति में डाल देगा कि आप कोई जवाब न दे सकोगे। उसी से एथेंस गुस्से से भर गया उस आदमी पर।

इस वक्त मुल्क को सैकड़ों साक्रेटीज की जरूरत है। वे कुछ न करें, वे गांव-गांव में क्वेश्चनिंग खड़ी कर दें और ऐसी हालत पैदा कर दें कि कोई भी निस्संदिग्ध भाव से खड़े होकर न कह सके कि यह सच है। और इस तरह न कह सके कि हमें पता है, हम जानते हैं, और तुम्हें मानने की जरूरत है।

तो इससे बिलकुल नई लीडरशिप पैदा होगी। और पुरानी लीडरशिप को और किसी तरह से बदला नहीं जा सकता। क्योंकि पुरानी लीडरशिप को अगर बदलते हो आप, तो या तो पुरानी लीडरशिप के हथकंडे ही उपयोग करो। तब आप बदलते में वही हो जाते हो जिसको आपने बदला है।

इस वक्त यही हो रहा है, कि अगर कांग्रेस की लीडरशिप को बदलती है कोई दूसरी पार्टी, तो उन्हीं सारे हथकंडों का उपयोग करती है जो कांग्रेस कर रही है। और उनको बदलते-बदलते वह उसी शक्ल में हो जाती है जो कि कांग्रेस थी, बल्कि उससे बदतर। क्योंकि उससे भी ज्यादा उसको हथकंडे उपयोग करना पड़ते हैं। अगर कांग्रेस लड़ रही है और वह भड़का रही है मुसलमान को और हिंदू को वोट करवाने के लिए या भंगी को और चमार को कि इसको वोट करो--जातिवाद का उपयोग कर रही है, तो विरोधी भी वही उपयोग कर रहा है। अगर वह पैसे बांट रही है, तो विरोधी भी पैसे बांट रहा है। और आखिर में उससे लड़ते-लड़ते आप वही के वही हो जाते हो।

सब क्षेत्रों में यह हो रहा है कि पुरानी लीडरशिप को किसी भी क्षेत्र से बदलने में नई लीडरशिप जो लड़ाई लेती है, वह आखिर में वही की वही हो जाती है।



अरस्तू ने अपनी किताब में लिखा हुआ है कि स्त्रियों के दांत कम होते हैं पुरुषों से। अरस्तू जैसे बुद्धिमान आदमी ने! और अरस्तू के एक हजार साल बाद तक किसी आदमी ने क्वेश्चन नहीं किया इस बात पर! और इतनी सरल सी बात है कि स्त्री के दांत गिने जा सकते हैं। लेकिन चूंकि अरस्तू के पहले से हजारों साल से यह बात यूनान में चल रही थी कि स्त्री के दांत कम होते हैं, यह मान ली गई थी! इसकी न किसी स्त्री ने फिक्र की, न किसी पुरुष ने फिक्र की! अरस्तू की खुद दो औरतें थीं--एक भी नहीं। वह किसी के भी दांत गिन सकता था बैठा कर कि दांत गिन लूं। मगर यह कोई सवाल नहीं था।

एक हजार साल बाद जब पहली दफा किसी आदमी ने औरत के दांत गिने और उसने कहा कि यह तो बड़ी गड़बड़ बात है, दांत बराबर होते हैं। तो कोई मानने को राजी नहीं हुआ कि यह हो कैसे सकता है? क्योंकि हजारों साल से अगर दांत बराबर थे, तो कोई तो गिनता! कोई तो पूछता!

इस मुल्क में तो ऐसी हजारों बातें बिना पूछे चली आ रही हैं, कि हम उनको सुनते हुए पैदा होते हैं, वे हमारे खून में मिल जाती हैं। सुनते हुए मर जाते हैं। हम कभी पूछते ही नहीं! मुल्क ने पूछना ही बंद कर दिया है।

तो मेरी तो अभी सारी कोशिश यह है कि मुल्क में एक प्रश्न और एक डायलाग... और सब मसलों पर, छोटे से लेकर बड़े मसले तक। हम किसी चीज को अंधे होकर विश्वास करने को राजी न हों। बड़ी तकलीफ होगी पहले, क्योंकि सब अस्तव्यस्त हो जाएगा। और जो भी निश्चित हो गया है, वह सब डांवाडोल हो जाएगा। लेकिन उसको डांवाडोल कर देना जरूरी है। और इस क्वेस्ट से, इस चिंतना और विचार से जो हवा पैदा होगी, तो एक नया माइंड मुल्क में पैदा होगा जो सोच-विचारशील होगा। और उस माइंड से फिर एक्शन करवाना बहुत कठिन नहीं है। एक दफा यह साफ हो जाए कि क्या करना है, कैसे करना है। लेकिन यह साफ उस माइंड को होगा जो पूछता हो, सोचता हो, खोजता हो। न हम सोचते हैं, न पूछते हैं, न खोजते हैं।

तो मेरा कोई बहुत ब्योरे में काम करने पर, अभी तो मेरा कोई जोर नहीं



OSHO
NEVER BORN
NEVER DIED
ONLY VISITED THIS
PLANET EARTH BETWEEN
DEC-11-1931-JAN 19-1990

12:42 pm

VoLTE 4G 69%



MH

मेरा दिल



Kisi

Ko Mai Acha Hi Nhi

Laga ! 😂💔

मेरा दिल



24K



142



3.9K



Send



My Heart - मेरा दिल

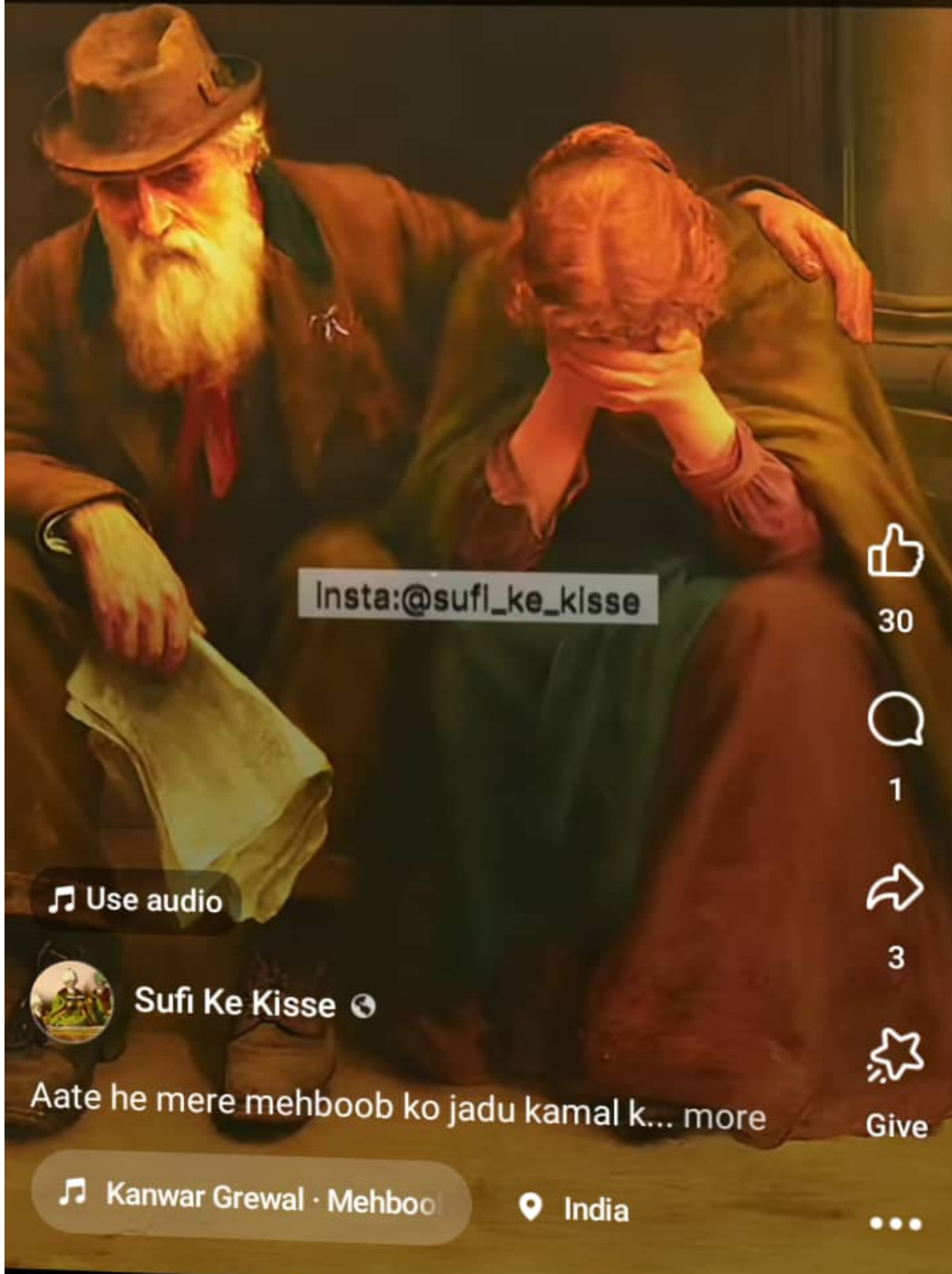
Following



Add a comment...



"आते है मेरे महबूब को जादू कमाल के"
देखो ले गये है मुझको मुझसे ही निकाल के।



Insta:@sufl_ke_kisse



30



1



3



Give

🎵 Use audio



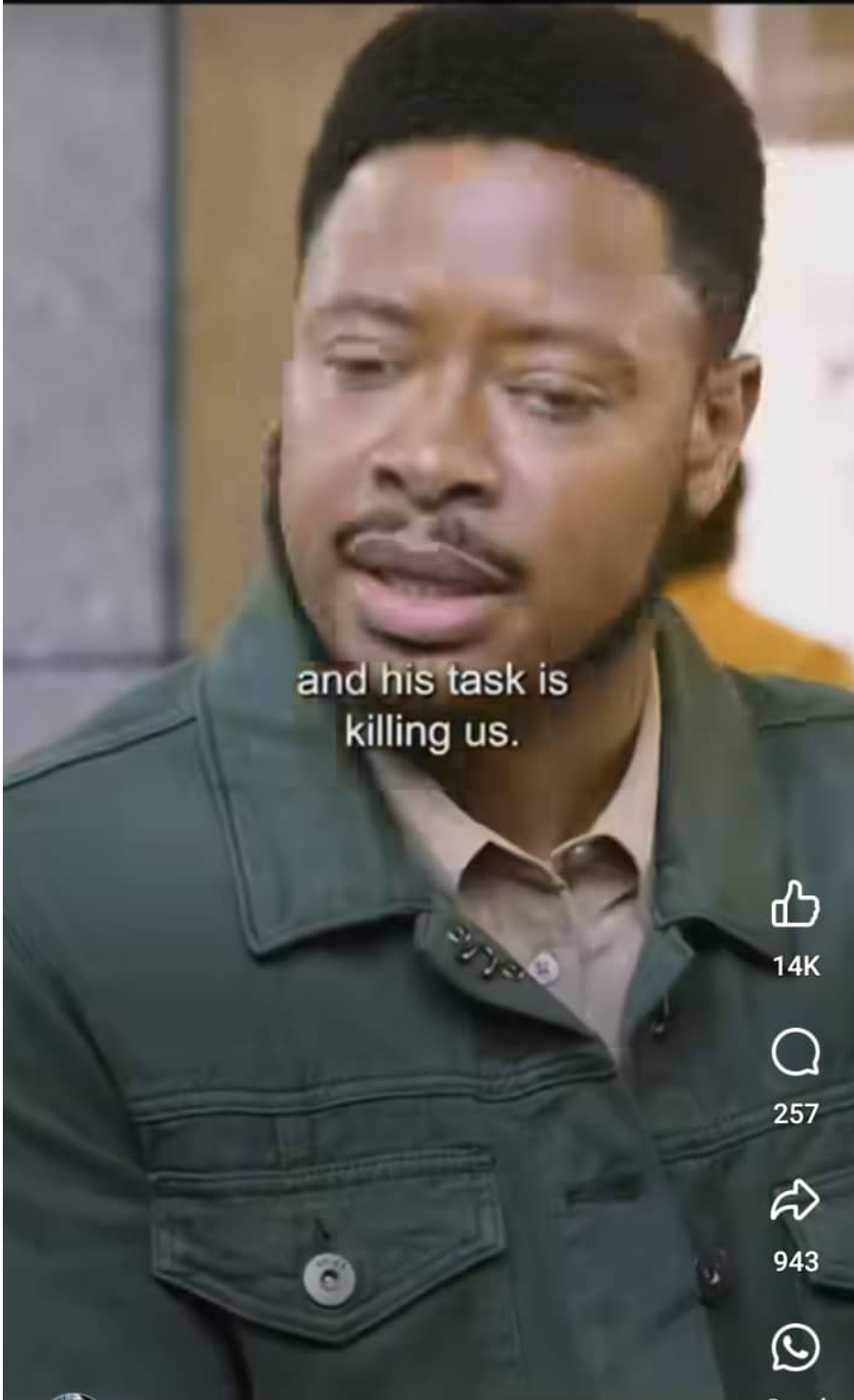
Sufi Ke Kisse

Aate he mere mehboob ko jadu kamal k... more

🎵 Kanwar Grewal · Mehboob

📍 India





14K



257



943



Send



WOLD BEST Movies

Following

Bank Ròbbèry Netflix best series 2023



Add a comment...



Male, white,
black jacket, dark pants,



14K



257



943



WOLD BEST Movies



14K



257



943



Send



WOLD BEST Movies

Following

Bank Ròbbèry Netflix best series 2023



Add a comment...





और अगर बैठा होता
तो कितनी सदियों से
तो तुम प्रार्थना कर
रहे हो, हवन कर रहे



19K



108



4.9K

@oshorajneesh_



oshorajneesh_ @



Send



तुम्हारे ऋषि मुनि थक गए चिल्ला चिल्ला के, पंडित प... mo...



9.2K



19



935



Send



प्रयोग के बाद **Marina** ने कहा कि अगर आप सब कुछ
दुनिया वालों पर छोड़ दोगे तो वो लोग आपकी जान भी
ले सकते हैं। **इसलिए अपने हिसाब से जियो।**
एक कदम सफलता की ओर



एक कदम सफलता की ओर

दुनिया आपको जीने ना देगी **100**

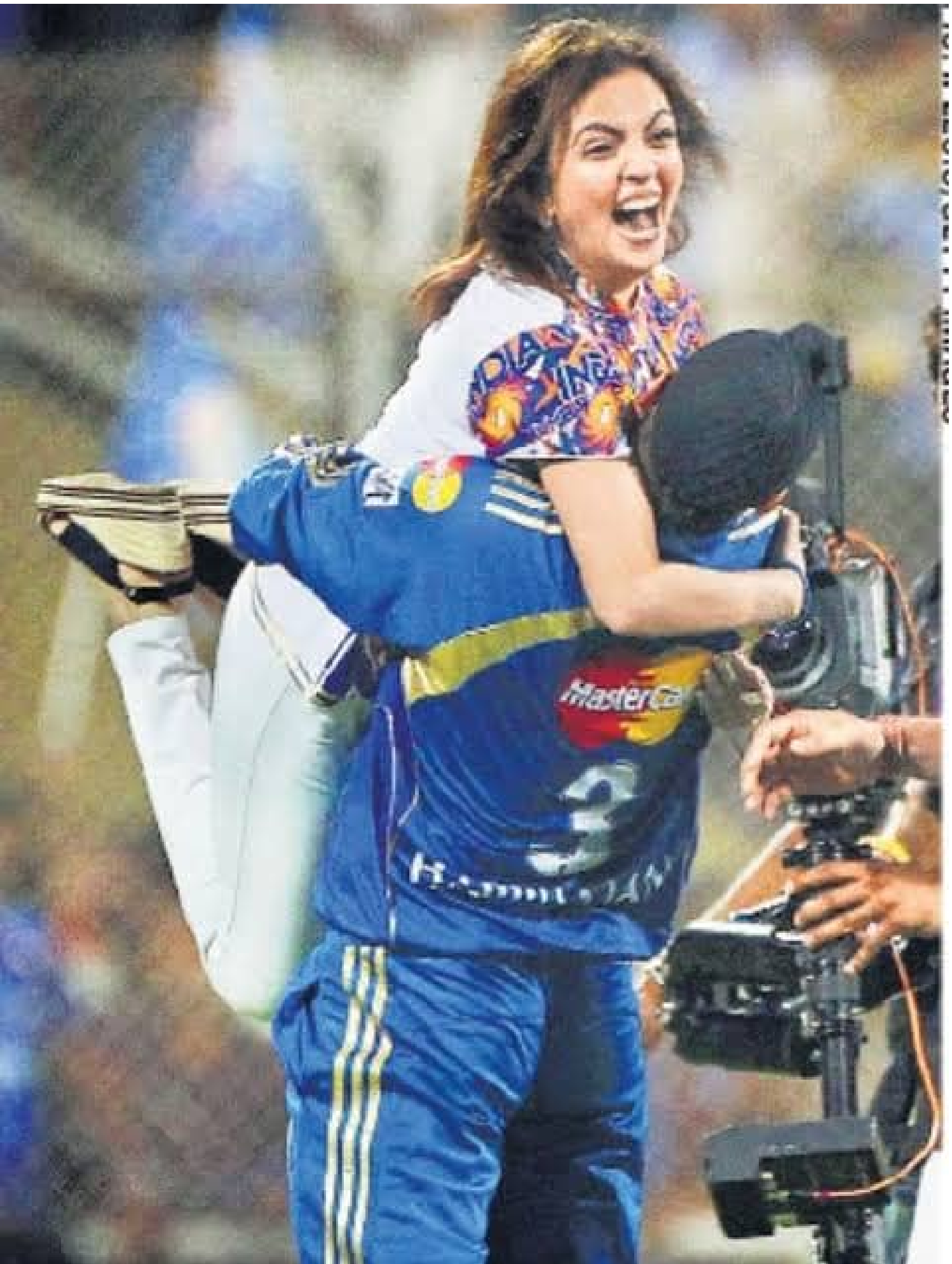
आप जहां हैं, वहीं रहें
ठहरना अर्थात् साक्षी होना!!!
जो कुछ भी घटित हो रहा है, उसके प्रति केवल जागरूक
रहना, वह स्वभावतः साक्षी हो जाना है, साक्षी हो जाना
है!

साक्षी ही साक्षी है !!
यह मूल ध्यान और सभी ध्यान विधियों की अंतिम
परिणति है!

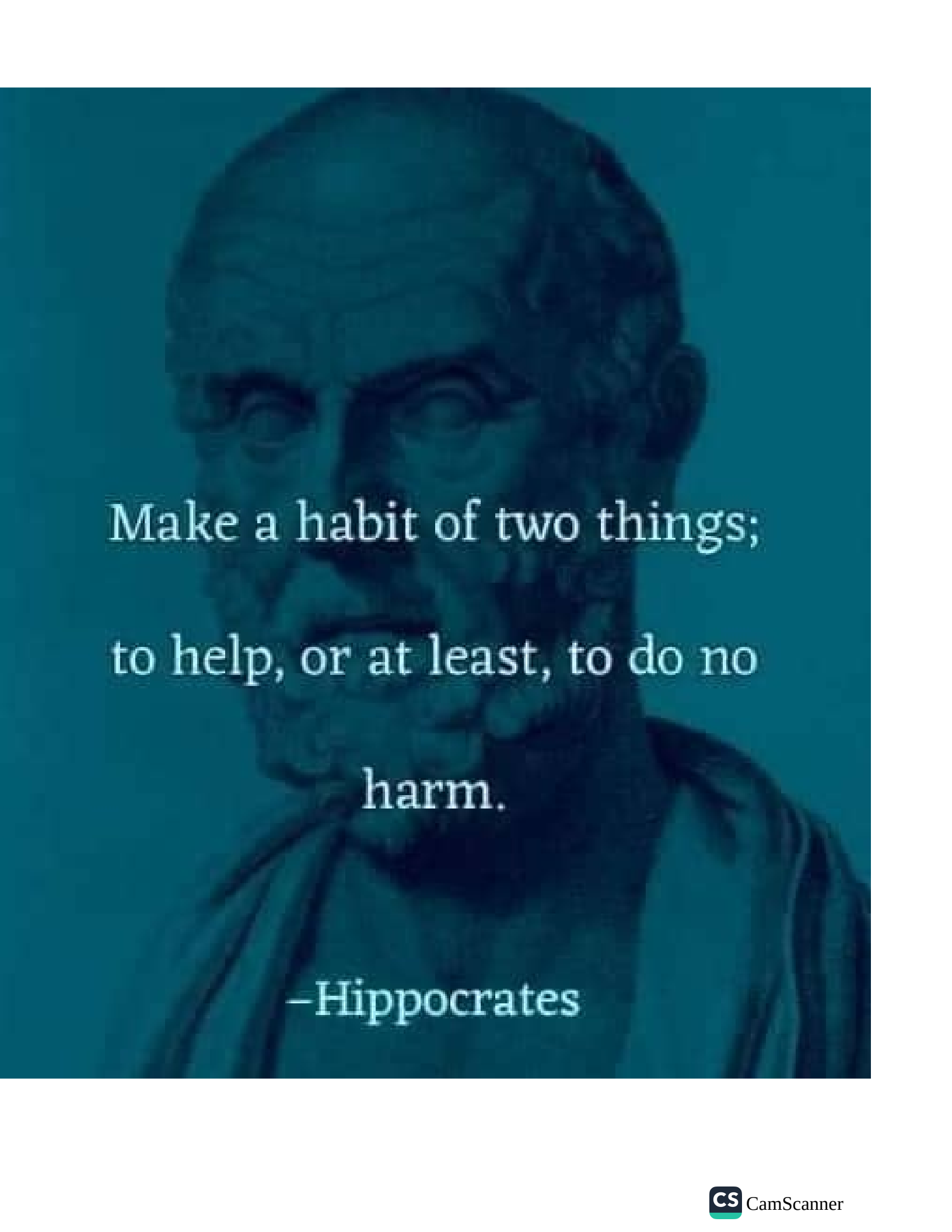
साक्षी ध्यान में सभी क्रियाएं या कर्म प्रकृति द्वारा ही
निर्मित होते हैं और कर्मों से मुक्ति मिलती है, सभी कर्म
प्रकृति द्वारा ही आत्मा में समाहित हो जाते हैं!
आत्मबोध हो गया !!!

इसे बार-बार करो,
फिर मंजिल मिल जायेगी!!!









Make a habit of two things;
to help, or at least, to do no
harm.

–Hippocrates

अब बंधे हुए को तो
कोई खोल भी दे,
नित्यमुक्त को
कौन मुक्त करे?

बंधन के भ्रम से मुक्ति ही
मुक्ति है॥

015 बंधन

facebook



क्योंकि जब जीवन धक्के देता है भीतर से, तो आप बिलकुल विवश हो जाते हैं। कामवासना में आप होते कहां हैं! प्रकृति होती है; आप नहीं होते।

और इसलिए समस्त धर्म यह मानकर चलते हैं कि जब तक कोई व्यक्ति कामवासना के पार न चला जाए, तब तक प्रकृति की परवशता नष्ट नहीं होती, तब तक प्रकृति उसे पकड़े ही रखती है। और तब प्रकृति आपको मूर्च्छित कर लेती है। और उस मूर्च्छा में आप द्वार बन जाते हैं। उस द्वार में चाहे आप मां हों और चाहे पिता हों, आप इंस्ट्रुमेंटल हैं, साधन मात्र हैं। जीवन आपका साधन की भांति उपयोग करता है और जन्म लेता है। आप स्रष्टा नहीं हैं, सिर्फ उपकरण हैं।

कृष्ण कह रहे हैं कि जीवन भी तेरे द्वारा नहीं आता और मृत्यु भी तेरे द्वारा नहीं आती। जीवन भी मेरे द्वारा है और मृत्यु भी मेरे द्वारा है। इसलिए तू बीच में चिंता में पड़ता है व्यर्थ ही। इसलिए तू बीच में उदास होता है व्यर्थ ही। इसलिए बीच में तू कर्ता बनता है व्यर्थ ही। तू कर्ता है नहीं।

क्रमशः ओशो ,गीता दर्शन 🙏



जीवन तरंग का उठना है आकाश की तरफ, मृत्यु तरंग का वापस सागर में खो जाना है। तू मृत्यु से इतना भयभीत न हो और तू मृत्यु के संबंध में इतनी चिंता मत कर। वह भी मैं ही हूं। और तू यह भी मत सोच कि तेरे द्वारा यह मृत्यु हो रही है। न तेरे द्वारा यह जीवन हुआ है, न तेरे द्वारा यह मृत्यु हो सकती है।

ध्यान रखें, न तो हमारे द्वारा जीवन हुआ है, न हमारे द्वारा मृत्यु हो सकती है। लेकिन हम मान लेते हैं। अगर आप एक बच्चे को जन्म देते हैं, तो आप सोचते हैं, आपने जन्म दिया है।

आप केवल एक पैसेज थे, एक मार्ग थे, जिससे बच्चा जन्मा है। आप सिर्फ एक द्वार थे, एक राह थे, जिससे बच्चा आया है। आपने क्या जन्म दिया है? जो आदमी पिता बन जाता है, उसने कभी सोचा है कि उसने किया क्या है पिता होने के लिए?

अगर हम तथ्य पर उतरें, तो पता चलेगा कि वह आदमी सिर्फ एक मार्ग था। प्रकृति ने उसका मार्ग की तरह उपयोग किया है। जीवन उसके द्वारा आया है, वह लाया नहीं है जीवन को। और सच तो यह है कि जीवन जब उसके द्वारा आता है, तो वह इतना परवश होता है! इसीलिए कामवासना इतनी प्रगाढ़ है कि आप उस पर काबू नहीं पा सकते। क्योंकि जब जीवन धक्के देता है भीतर से, तो आप बिलकुल विवश हो जाते हैं। कामवासना में आप होते कहां हैं! प्रकृति होती है; आप नहीं होते।

और इसलिए समस्त धर्म यह मानकर चलते हैं कि जब तक कोई व्यक्ति कामवासना के पार न चला जाए, तब तक प्रकृति की परवशता नष्ट नहीं होती, तब तक प्रकृति उसे पकड़े ही रखती है। और तब प्रकृति आपको मूर्च्छित कर लेती है। और उस मूर्च्छा में आप द्वार बन जाते हैं। उस द्वार में चाहे आप मां हों और चाहे पिता हों, आप इंड्रुमेंटल हैं, साधन मात्र हैं। जीवन आपका साधन की भांति उपयोग करता है और जन्म लेता है। आप स्रष्टा नहीं हैं, सिर्फ उपकरण हैं।

कृष्ण कह रहे हैं कि जीवन भी तेरे द्वारा नहीं आता और मृत्यु भी तेरे द्वारा नहीं आती। जीवन भी मेरे द्वारा है और मृत्यु भी मेरे द्वारा है।



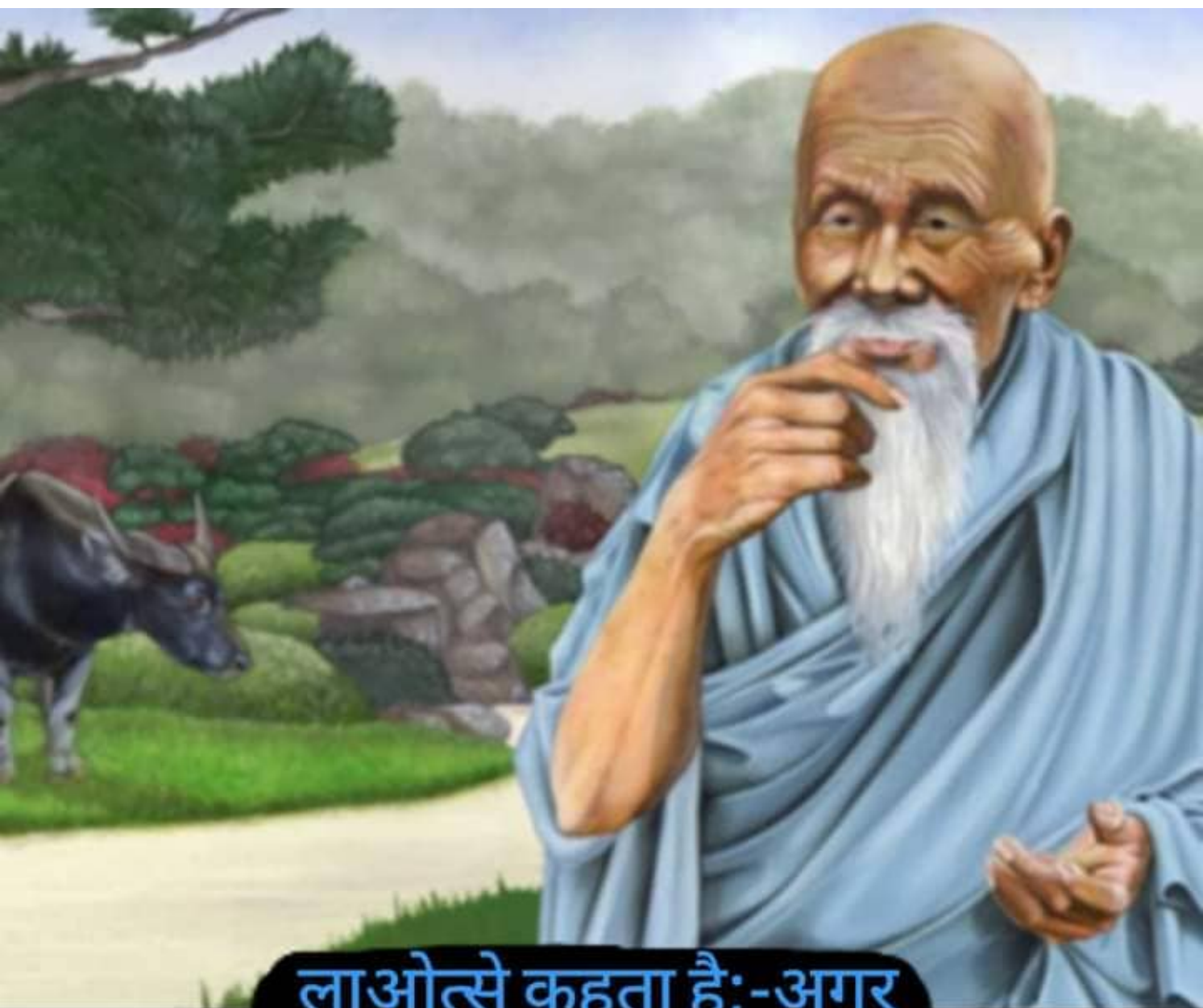
🙏 रोज एक मृत्यु घटती है। अगर हम इसे और करीब लाएं, तो और समझ में आ सकेगा। जब आप श्वास भीतर लेते हैं, तब वह जीवन की होती है, और जब आप श्वास बाहर फेंकते हैं, तब वह मृत्यु की होती है। एक—एक श्वास के साथ भी मृत्यु का संबंध जुड़ा हुआ है। जब श्वास बाहर जाती है, तब आप मृत्यु के क्षण में होते हैं; और जब श्वास भीतर आती है, तब आप जीवन के क्षण में होते हैं। एक— एक श्वास में भी जन्म और मृत्यु का पैर जुड़ा हुआ है। इसलिए बाहर श्वास जाती है, उस वक्त आपकी जीवन—ऊर्जा क्षीण होती है। ! जब भीतर श्वास आती है, तब आप जीवन्त होते हैं।

एक—एक श्वास में जन्म और मृत्यु। दिन में जन्म और रात में मृत्यु। अगर हम इस पूरे जीवन को जन्म समझें, तो फिर एक मृत्यु। अगर हम इस पूरे जगत को जीवन समझें, तो फिर एक प्रलय। मृत्यु अनिवार्य है जीवन के साथ। मृत्यु विश्राम है, जीवन थकान है। जीवन तनाव है, जीवन श्रम है। मृत्यु विश्राम है, विराम है, पुनः जीवन—शक्तियों को पा लेना है।

। यह सारा विराट विश्व भी थक जाता है! आप ही नहीं थक जाते,। यह सारा विराट विश्व भी थक जाता है। आप ही के नहीं होते,। पहाड़ भी बूढ़े हो जाते हैं, पृथ्वियां भी बूढ़ी हो जाती हैं, सूरज भी बूढ़ा हो जाते हैं। आप ही नहीं मरते, पृथ्वियां भी मरती हैं, सूरज भी मरते हैं, पहाड़ भी मरते हैं। इस जगत में जो भी है, वह मृत्यु और जीवन दोनों में डोलता रहता है।

तो कृष्ण ने कहा कि रुद्रों में मैं शंकर हूं— मृत्यु का, प्रलय का। लेकिन जीवन के विपरीत नहीं है मृत्यु। यही कृष्ण समझाना चाहते हैं अर्जुन को कि तू जीवन और मृत्यु को अलग—अलग करके देखता है। तू सोचता है, जीवन सदा ही हितकारी है और मृत्यु सदा ही। अहितकारी है। ऐसा विभाजन भ्रान्त है। ऐसा विभाजन भ्रान्त है। मृत्यु विश्राम है।

जीवन तरंग का उठना है आकाश की तरफ, मृत्यु तरंग का वापस सागर में खो जाना है। तू मृत्यु से इतना भयभीत न हो और तू मृत्यु के संबंध में इतनी चिंता मत कर। वह भी मैं ही हूं। और तू यह भी मत सोच कि तेरे



लाओत्से कहता है;-अगर
यह दिखाई पड़ जाए.! कि,
"घटनाएं हो रही हैं..
मैं कुछ भी नहीं कर रहा हूं!
तो सारी चिंताएँ. क्षण भर में
विलीन हो जाएंगी.!

ओशो

**आध्यात्मिक मार्ग Aadhyaatmik Marg**

Parshotam Rai · 20h · 🌐

॥ स्वयं को समझें ॥

लोग आपको समझें अथवा ना समझें पर आपकी समझ में आपका स्वभाव अवश्य आना चाहिए। दूसरे आपको नहीं समझ रहे हैं, यह चिंता का विषय बिल्कुल भी नहीं है पर आप स्वयं अपने आप को नहीं समझ पा रहे हो तो यह जरूर विचारणीय विषय है।

हमारे द्वारा कई बार अपनी अशांति, अपने दुःखों अथवा अपने द्वंदों का कारण दूसरों का मान लिया जाता है। हम सुखी तो होना चाहते हैं मगर दूसरों को बदल कर, स्वयं को बदल कर नहीं। हम अपनी ऊर्जा का उपयोग दूसरों को समझाने में करते हैं मगर स्वयं को नहीं समझ पाते।

प्रकृति ने सबको अलग स्वभाव प्रदान किया है। यहाँ पर प्रत्येक मनुष्य अलग उद्देश्य एवं अलग संकल्प के साथ जीवन जीता है। जब हमारे द्वारा अपनी धारणाओं के आधार पर दूसरों के जीवन का निरीक्षण किया जाता है तो उस स्थिति में दुःख ना होने पर भी हम दुःखी होने लग जाते हैं। स्वयं को जानने का प्रयास करो। जो स्वयं को जान लेता है वो अपने जीवन में घटित हो रही बहुत सारी समस्याओं का समाधान भी खोज लेता है।



31

9 comments · 5 shares



Like



Comment



Send



Share

**Uma Shahdeo Sinha**

सही और यही ध्यान की पहली सीढ़ी है

Like Reply

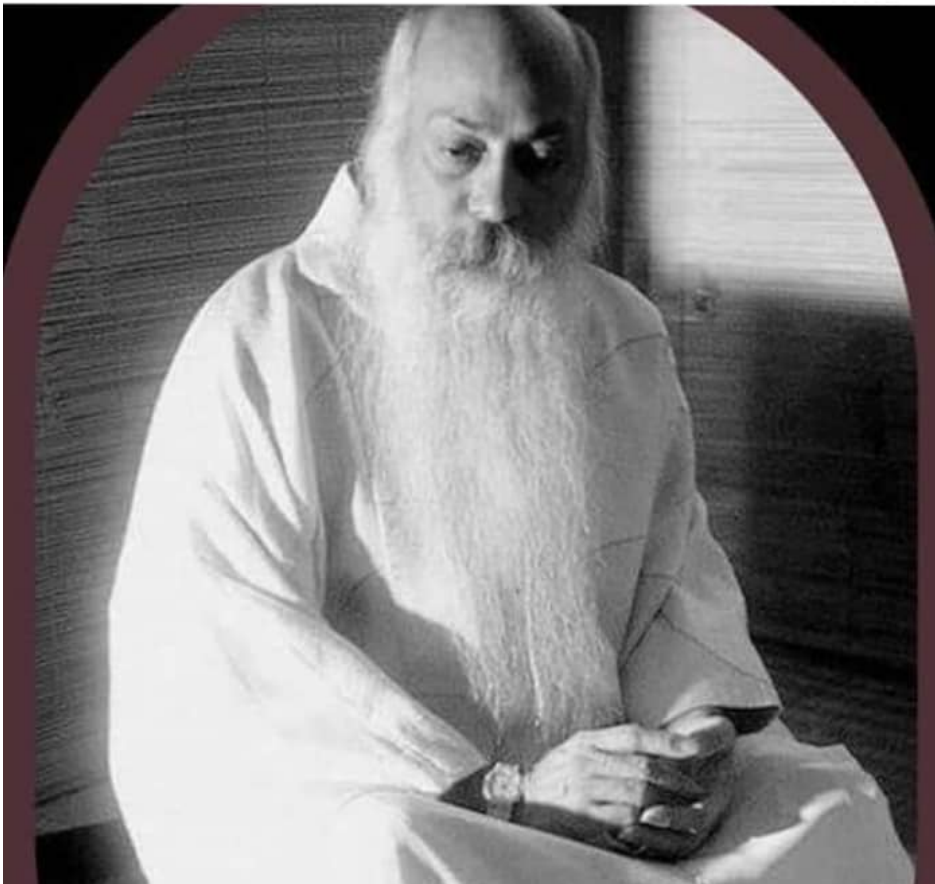


Write a comment...

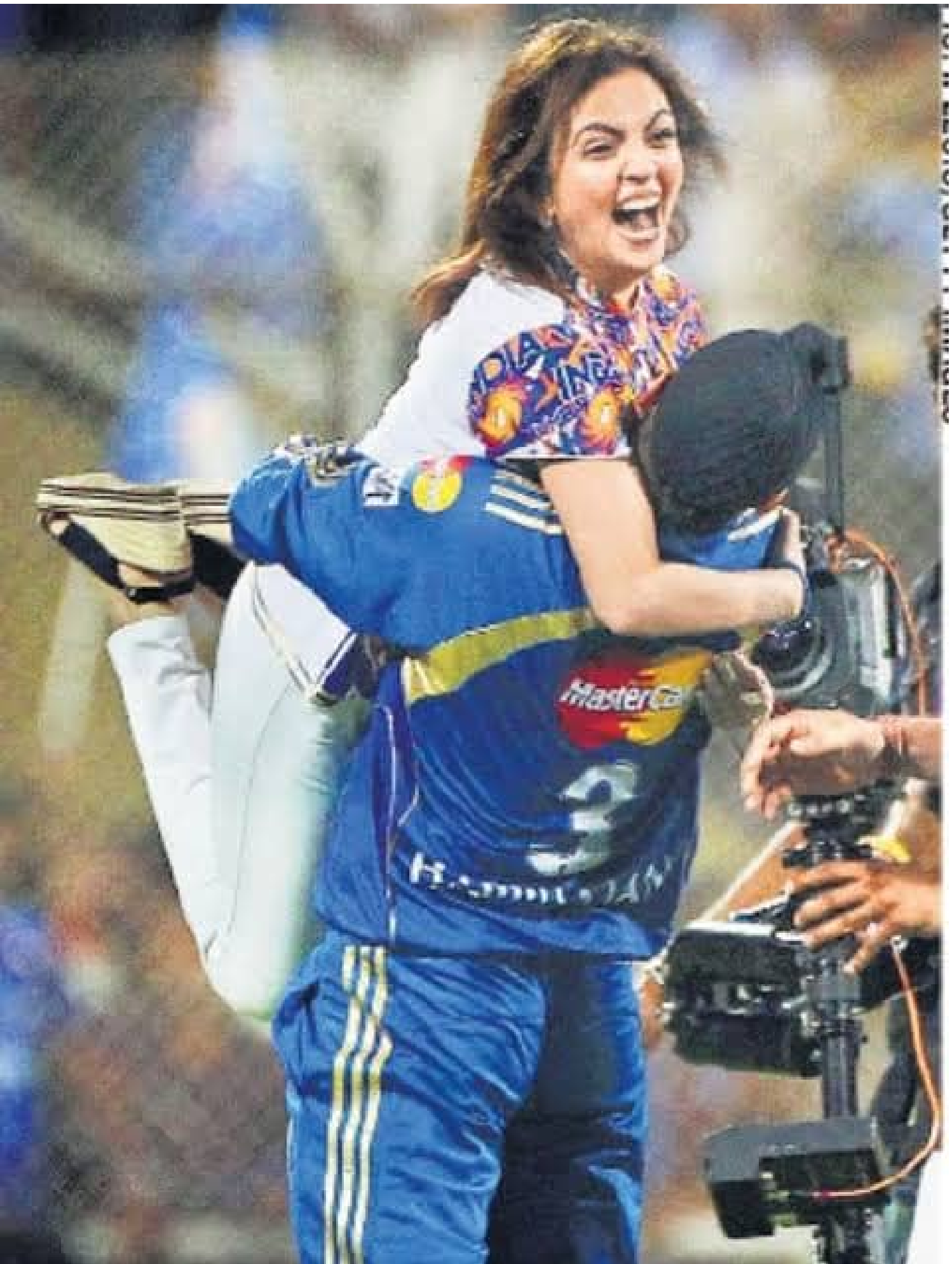
**"कल्याण" - गीता प्रेस गोरखपुर से प्रकाशित**
मासिक "पत्रिका"

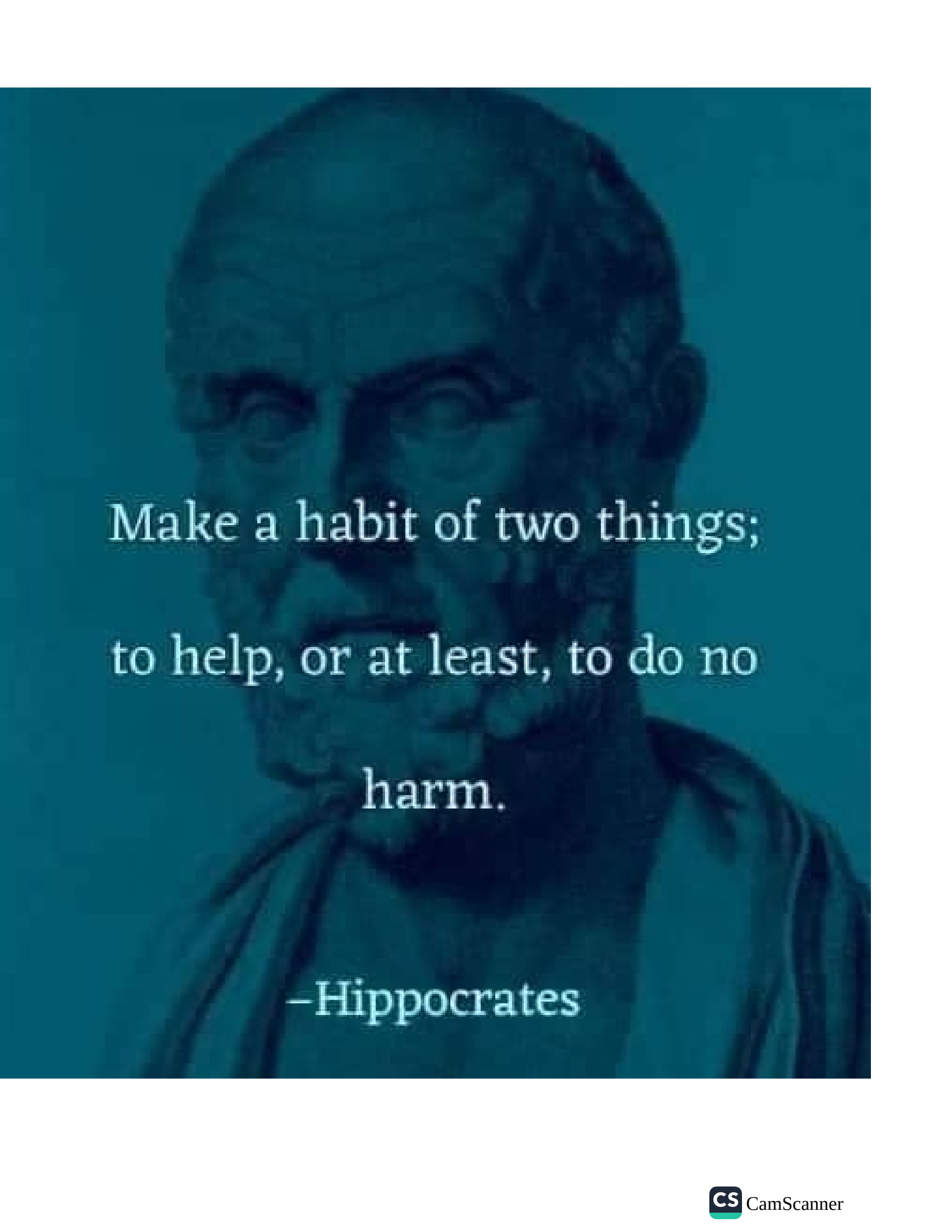


सतगुरु का अर्थ है मृत्यु
अगर तुम्हें कोई सतगुरु मिल जाए
तो तुम उसके पास ठहर ना सकोगे
क्योंकि की सतगुरु तुम्हारी सोई हुई ऊर्जा को जगाएगा
वो ऊर्जा तुम्हारे सारे चक्रों से गुजर कर
सहस्रार से होती हुई अस्तित्व से जा मिलेगी
और तुम परम् आनन्द से भर जाओगे
तुम अस्तित्व के प्रेम भर जाओगे
जैसे जैसे तुम्हारी ऊर्जा अस्तित्व में मिलती जाएगी
तुम्हारे भीतर आनन्द और प्रेम बढ़ता जाएगा.
और तुम मिटते जाओगे
एक समय ऐसा आएगा सतगुरु तुम्हारी पूरी ऊर्जा
को अस्तित्व में विलीन कर देगा
तब तुम ना बचोगे बस प्रेम ही बचेगा
इसलिए किसी सतगुरु से मिलना
अगर मिटने का साहस हो तो ही मिलना
याद रखना सतगुरु का अर्थ है मृत्यु



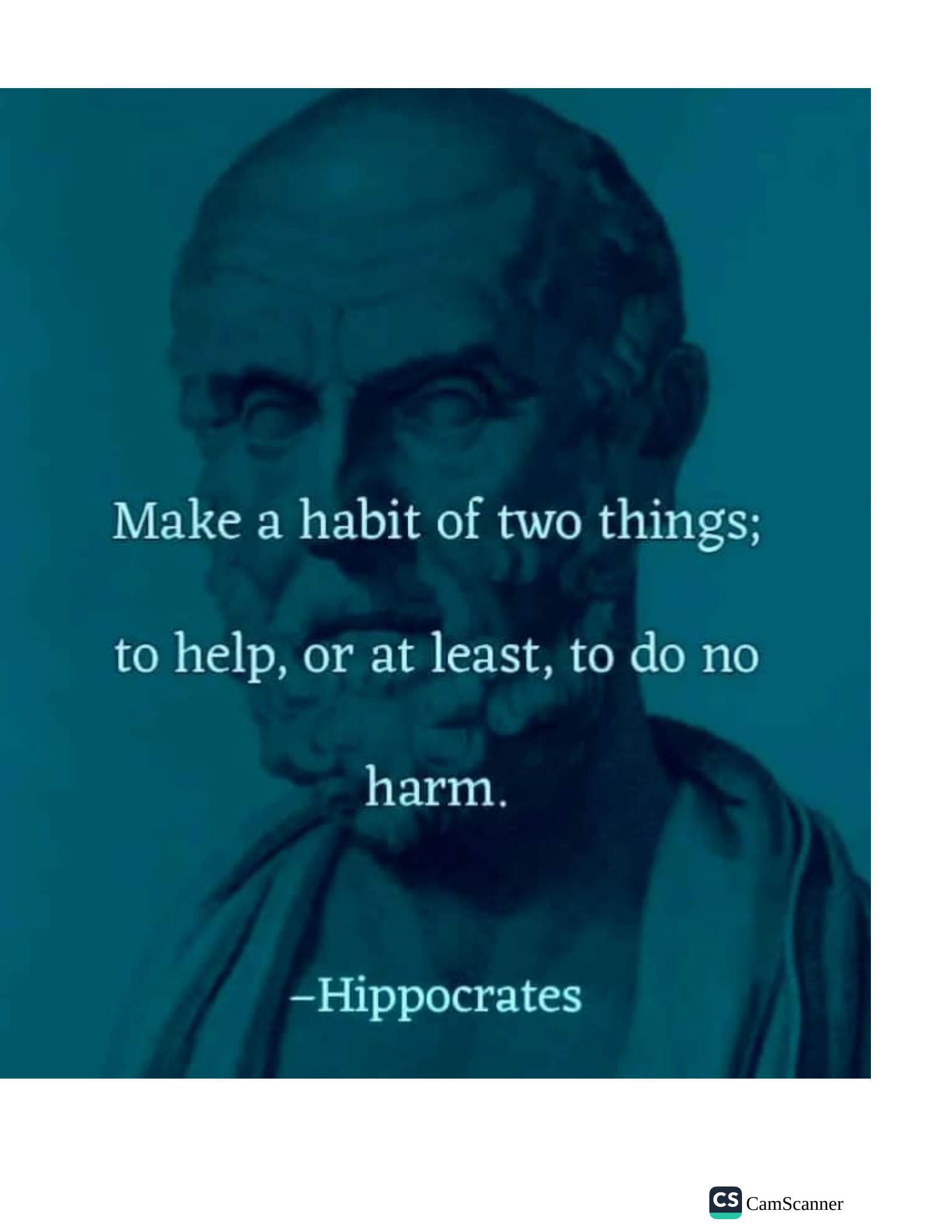






Make a habit of two things;
to help, or at least, to do no
harm.

–Hippocrates



Make a habit of two things;
to help, or at least, to do no
harm.

—Hippocrates

अब बंधे हुए को तो
कोई खोल भी दे,
नित्यमुक्त को
कौन मुक्त करे?

बंधन के भ्रम से मुक्ति ही
मुक्ति है॥

015 बंधन

हर हर महादेव





OSHO

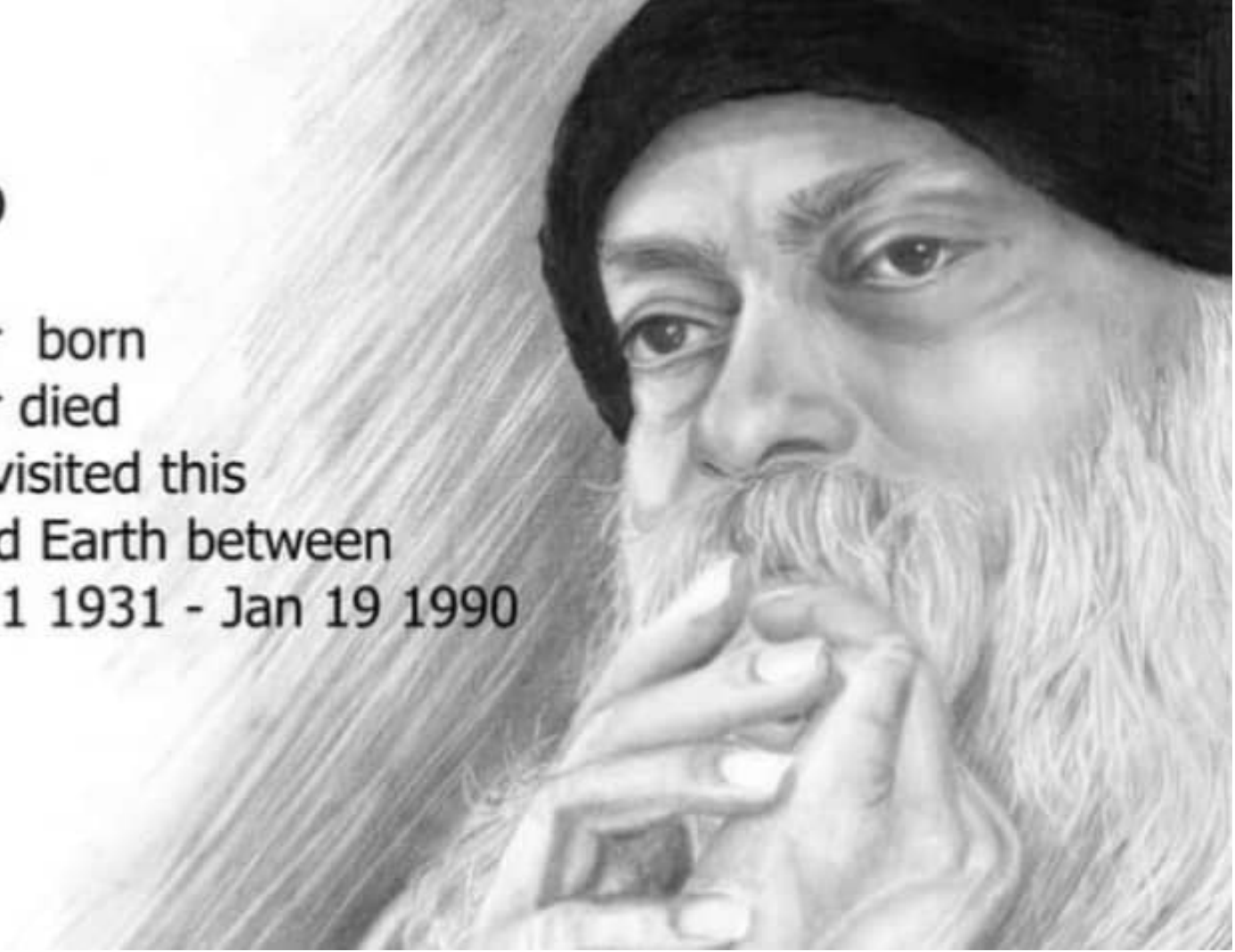
Never born

Never died

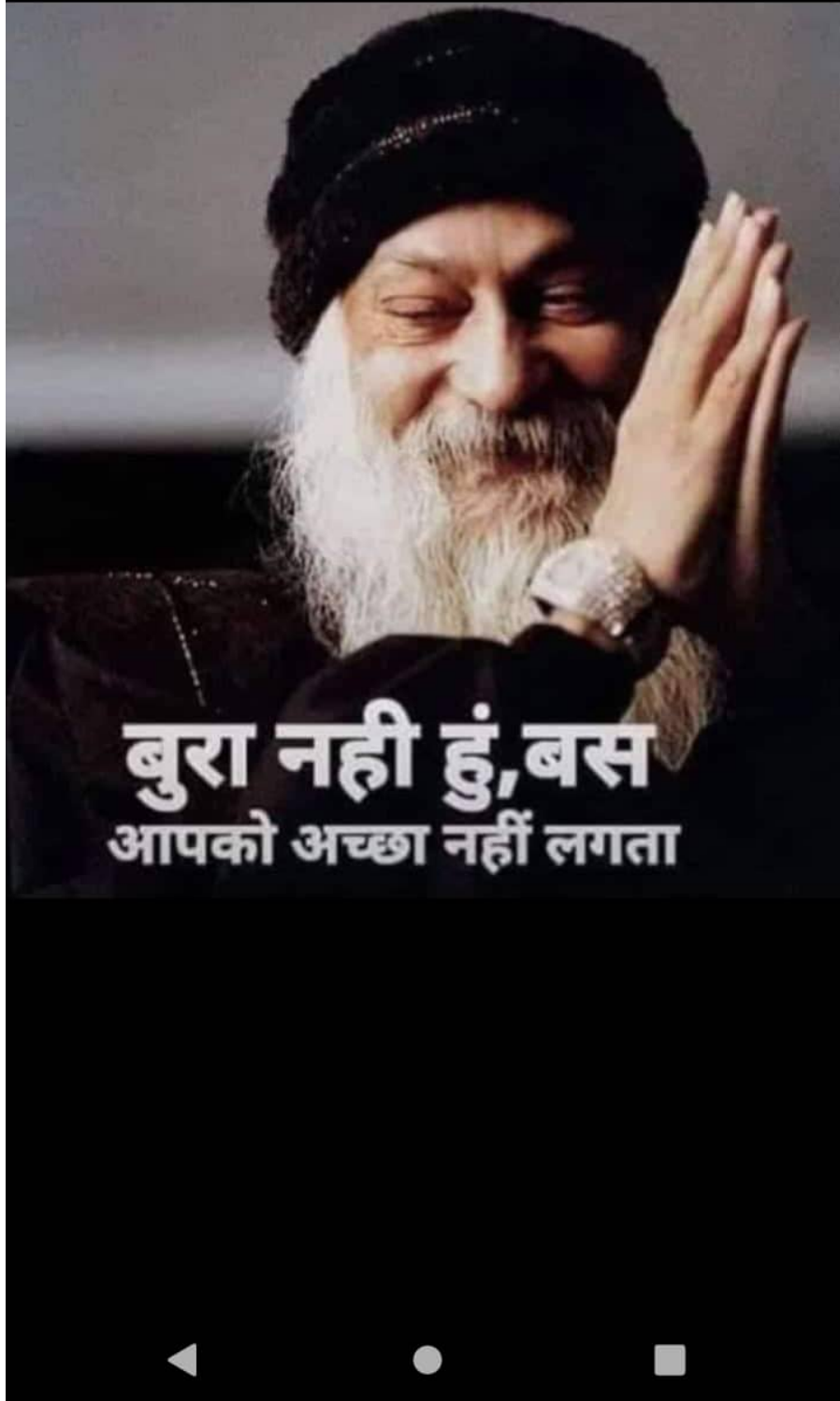
Only visited this

Planned Earth between

Dec 11 1931 - Jan 19 1990







**बुरा नही हुं, बस
आपको अच्छा नहीं लगता**

facebook



करता है। जीवन भर सुख का हाँ खाँ करता रहा है। सुख हाँ का आशा में ही जीता रहा हूँ। लेकिन तुमने सुख पाया कहाँ? जरा इस पर विचार करके देखो। जीवन भर सुख पाने के लिए जिए हो, सुख मिला कहाँ? अगर जीवन भर कोई सुख पाने की तलाश करे और सुख न मिले, तो विचार तो करना चाहिए--कहीं हमारी खोज में ही बुनियादी भूल तो नहीं है। और तुम्हारी अकेले की ही बात होती तो ठीक था, इस जगत में किसको सुख की खोज करने से सुख मिला है? किसी को भी नहीं। जो सुख की खोज करता है वह तो सुख पाता ही नहीं, जितनी खोज करता है वह उतना सुख दूर होता चला जाता है। क्योंकि जितनी खोज करता है, उतना ही अहंकार। और अहंकार को बचा कर कोई कभी सुखी नहीं हो सकता।

यह तो ऐसा हुआ ही कि सिरदर्द को बचा कर तुम चाहते हो कि सिरदर्द ठीक हो जाए। यह असंभव है। तुम चाहते हो, कांटा तो गड़ा रहे--कांटे से तुम्हें मोह हो गया है। हो सकता है कांटा सोने का हो, हीरे-जवाहरात जड़ा हो--कांटे का तुम्हें मोह हो गया है और तुम चाहते हो, पैर में जो पीड़ा होती है वह भी मिट जाए। तुम असंभव की कामना कर रहे हो। और तुम्हीं नहीं; सारा जगत तुम्हारे जैसे ही लोगों से भरा है, स्वरूपानंद! और यहां तुम दुखी ही दुखी लोग देखते हो। यहां कब तुम्हें सुखी आदमी मिलता है! बड़ी मुश्किल से। और जब भी सुखी आदमी मिलेगा, वह तुमसे यही कहेगा कि मिट जाओ तो सुख हो। सुख होता ही तब है जब तुम नहीं होते। तुम्हारे और सुख के, दोनों के साथ-साथ होने का कोई उपाय नहीं, तुम कांटे हो। लेकिन फिर भी मैं तुमसे कहता हूँ, तुम्हारे मिट जाने पर भी तुम्हारा एक और तरह का होना शेष रह जाता है। लेकिन वह होना बड़ा भिन्न है। उस होने का नाम ही आत्मा है।

तो होने के दो ढंग। एक अहंकार, एक आत्मा। अहंकार दुखद ढंग है होने को, नारकीय ढंग है होने का। आत्मा सुखद ढंग है होने का, आनंदपूर्ण ढंग है... होने का। अहंकार को पकड़ोगे तो आत्मा से चूकते रहोगे। अहंकार छोड़ोगे तो आत्मा की उपलब्धि तत्क्षण हो जाती है।

अरी मैं तो नाम के रंग छकी
ओशो



और अजातशत्रु अमराई में पहुंचा तो चौंक गया। तलवार उसने यद्यपि रख ली म्यान में लेकिन मुट्ठी पर उसका हाथ रहा। जब अमराई में पहुंच गया, तब उसने तलवार से हाथ छोड़ा। निश्चित ही दस हजार लोग थे। सन्नाटा था। बुद्ध के साथ चुपचाप बैठे थे। समय था ध्यान का, सब ध्यान में लीन थे। जैसे वहां एक भी व्यक्ति न हो।

तुम्हें मुझे सुनकर कभी जब सुख की थोड़ी सी झलक मिलती है, तो वह इसलिए मिलती है कि तुम उस घड़ी में अपने को भूल गए होते हो। मिट तो नहीं जाते, तुम होते तो हो ही, मगर यह होने का नया ढंग है, यह नई शैली है। एक होने का ढंग है रुग्ण, विक्षिप्त, ज्वरग्रस्त। और एक होने का ढंग है, स्वस्थ, शांत, निर्मल, ध्यानस्थ।

स्वरूपानंद, तुम्हारा प्रश्न महत्वपूर्ण है। तुम कहते हो, मैं सुख की तलाश करता हूं। जीवन भर सुख की ही खोज करता रहा हूं। सुखी होने की आशा में ही जीता रहा हूं। लेकिन तुमने सुख पाया कहां? जरा इस पर विचार करके देखो। जीवन भर सुख पाने के लिए जिए हो, सुख मिला कहां? अगर जीवन भर कोई सुख पाने की तलाश करे और सुख न मिले, तो विचार तो करना चाहिए--कहीं हमारी खोज में ही बुनियादी भूल तो नहीं है। और तुम्हारी अकेले की ही बात होती तो ठीक था, इस जगत में किसको सुख की खोज करने से सुख मिला है? किसी को भी नहीं। जो सुख की खोज करता है वह तो सुख पाता ही नहीं, जितनी खोज करता है वह उतना सुख दूर होता चला जाता है। क्योंकि जितनी खोज करता है, उतना ही अहंकार। और अहंकार को बचा कर कोई कभी सुखी नहीं हो सकता।

यह तो ऐसा हुआ ही कि सिरदर्द को बचा कर तुम चाहते हो कि सिरदर्द ठीक हो जाए। यह असंभव है। तुम चाहते हो, कांटा तो गड़ा रहे--कांटे से तुम्हें मोह हो गया है। हो सकता है कांटा सोने का हो, हीरे-जवाहरात जड़ा हो--कांटे का तुम्हें मोह हो गया है और तुम चाहते हो, पैर में जो पीड़ा होती है वह भी मिट जाए। तुम असंभव की कामना कर रहे हो। और तुम्हीं नहीं; सारा जगत तुम्हारे जैसे ही लोगों से भरा है, स्वरूपानंद! और यहां तुम दुखी ही दुखी लोग देखते हो। यहां कब तुम्हें सुखी आदमी मिलता है! बड़ी मुश्किल से। और जब भी सुखी आदमी मिलेगा, वह

मानने लगेगा कि जिस जगह तो सुख है, मैं क्यों दुखी हूँ? सुख जगह की बात है, उस



मैं सुखी होना चाहता हूं। मैं जो भी करता हूं, सो सुखी होने की आशा में ही करता हूं। अब मैं धर्म साधने आया हूं, सो भी उसी आशा में। आप कहते हैं--अहंकार को मिटाओ। इससे मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि अहंकार को मिटाने से मैं स्वयं ही मिट जाऊंगा; फिर मैं रहूंगा ही नहीं, तो सुखी कैसे होऊंगा? अस्तित्व खोने की अपेक्षा दुखमय अस्तित्व ही क्यों न ठीक होगा?

अजातशत्रु, बुद्ध के समय का एक सम्राट--और जैसे सम्राट होते हैं, सदा भयभीत, डरा हुआ। न मालूम कितने लोगों को मरवा डाला है उसने; अपने बाप तक को कैद में डाल दिया है; कैसे न डरेगा? कैसे न भयभीत होगा? कब कौन मार दे, कब कौन गोली चला दे, कब कौन छुरा भोंक दे! उसके वजीरों ने उसे कहा, बुद्ध का आगमन हुआ है, आप भी चलेंगे सत्संग को? उसने पूछा, कितने लोग बुद्ध के साथ आए हैं? पता चला दस हजार भिक्षु आए हैं। कहां ठहरे हैं? सब उसने पता लिया, ठिकाना लिया; उसने कहा, अच्छा मैं चलूंगा।

जब वह गया तो पूछता जाता कि अभी तक आया नहीं स्थान? तब उन्होंने कहा कि अब देखें, यह जो दूर अमराई दिखती है आमों की, बस इसी में बुद्ध ठहरे हैं। पास ही थी अमराई, थोड़े ही कदमों का फासला। अजातशत्रु ने अपनी तलवार निकाल ली! वजीरों ने कहा, आप तलवार क्यों निकाल रहे हैं? उसने कहा मुझे शक होता है, मुझे किसी धोखे का शक होता है। अगर दस हजार लोग यहां ठहरे हैं तो बाजार मचा होता! न कोई आवाज है, न कोई शोरगुल है। यहां तो लगता है अमराई खाली पड़ी है। मुझे कोई चहल-पहल नहीं दिखाई पड़ती। तुम मुझे कुछ धोखा तो नहीं दे रहे हो? तुम मुझे किसी शडयंत्र में तो नहीं डाल रहे हो? वे वजीर हंसने लगे, उन्होंने कहा कि आप निश्चित होकर तलवार भीतर कर लें, आपको बुद्ध के पास के लोगों का पता नहीं है। वह ऐसे हैं जैसे नहीं हैं। उनकी उपस्थिति अनुपस्थिति जैसी है। यही तो रहस्य है। यही तो उनका रस है, यही उनका आनंद है कि वे मिट गए हैं। और मिट कर हो गए हैं। एक और ढंग है उनके होने का। उनकी शैली और है। वे ध्यान को उपलब्ध लोग हैं। आप तो तलवार भीतर कर लें, आप व्यर्थ परेशान न हों, कोई शडयंत्र नहीं है। जरा चार कदम और--और हम पहुंच जाते हैं अमराई में।



तुम भी सोचना, तुम भी संन्यस्त हो,
तुम बैठकर अगर व्यर्थ की बातें करते हो,
तो विचार करना, इन बातों से क्या
होगा? और अगर ये बातें वैसी ही हैं जैसी
होटलों में लोग कर रहे हैं बैठकर, अगर
ये बातें वैसी ही हैं जैसी क्लबघरों में चल
रही हैं, दुकानों पर चल रही हैं, बाजार में
चल रही हैं, तो फिर तुममें और उन
लोगों में फर्क क्या होगा? तुम्हारी बात से
तुम्हारा पता चलता है। बात ऐसे ही थोड़े
आ जाती है! बात तो फल है।

OSHO ♥



Posts



Have you ever thought about this?

In 100 years like in 2123 we will all be buried with our relatives and friends.

Strangers will live in our homes we fought so hard to build, and they will own everything we have today. All our possessions will be unknown and unborn, including the car we spent a fortune on, and will probably be scrap, preferably in the hands of an unknown collector.

Our descendants will hardly or hardly know who we were, nor will they remember us. How many of us know our grandfather's father?

After we die, we will be remembered for a few more years, then we are just a portrait on someone's bookshelf, and a few years later our history, photos and deeds disappear in history's oblivion. We won't even be memories.

If we paused one day to analyse these questions, perhaps we would understand how ignorant and weak the dream to achieve it all was.

If we could only think about this, surely our approaches, our thoughts would change, we would be different people.

Always having more, no time for what's really valuable in this life. I'd change all this to live and enjoy the walks I've never taken, these hugs I didn't give, these kisses for our children and our loved ones, these jokes we didn't have time for. Those would certainly be the most beautiful moments to remember, after all they would fill our lives with joy. And some of us waste it day after day with greed, selfishness and intolerance.

Every minute of life is priceless and will never be repeated, so take time to enjoy, be grateful for, and celebrate your existence.

Rules

Write a public comment...



Posts



Swarna Ranjani Manike · 18h ·

क्या आपने कभी इस बारे में सोचा है? 2123 की तरह 100 वर्षों में हम सभी अपने रिश्तेदारों और दोस्तों के साथ दफन हो जाएंगे। अजनबी हमारे घरों में रहेंगे जिसे बनाने के लिए हमने बहुत संघर्ष किया, और आज हमारे पास जो कुछ भी है, वे सब कुछ मालिक होंगे। हमारी सभी संपत्ति अज्ञात और अजन्मे होंगी, जिसमें कार भी शामिल है जिस पर हमने एक भाग्य खर्च किया था, और शायद स्क्रेप होगा, अधिमानतः एक अज्ञात कलेक्टर के हाथों में। हमारे वंशज शायद ही जानते होंगे कि हम कौन थे और न ही हमें याद करेंगे। हम में से कितने अपने दादा के पापा को जानते हैं? मरने के बाद कुछ और साल याद आयेगे, फिर हम किसी के बुकशेल्फ पर चित्र बन जाते हैं, और कुछ साल बाद हमारा इतिहास, फोटो और कर्म इतिहास की गुमनामी में गायब हो जाते हैं। हम यादें भी नहीं रहेंगे। अगर हम इन सवालों का विश्लेषण करने के लिए एक दिन रुक जाते तो शायद हम समझ जाते कि यह सब हासिल करने का सपना कितना अज्ञानी और कमजोर था। अगर हम केवल इस बारे में सोच पाते, निश्चित रूप से हमारे दृष्टिकोण, हमारे विचार बदल जाते, हम अलग लोग होते। हमेशा अधिक होना, इस जीवन में वास्तव में क्या मूल्यवान है के लिए समय नहीं है। मैं यह सब जीने और चलने का आनंद लेने के लिए बदल दूंगा जो मैंने कभी नहीं लिया है, ये आलिंगन मैंने नहीं दिए हैं, ये चुंबन हमारे बच्चों और हमारे प्रियजनों के लिए, ये चुटकुले जिनके लिए हमारे पास समय नहीं था। वे निश्चित रूप से याद करने के लिए सबसे खूबसूरत क्षण होंगे, आखिरकार वे हमारे जीवन को खुशी से भर देंगे। और हम में से कुछ इसे लालच, स्वार्थ और असहिष्णुता के साथ दिन पर दिन बर्बाद करते हैं। जीवन का हर मिनट अमूल्य है और इसे कभी दोहराया नहीं जाएगा, इसलिए आनंद लेने के लिए समय निकालें, आभारी रहें, और अपने अस्तित्व का जश्न मनाएं।

• Rate this translation

Rules

Write a public comment...



वाइस चांसलर :
ये दाढ़ी क्यों बढ़ाई है ?

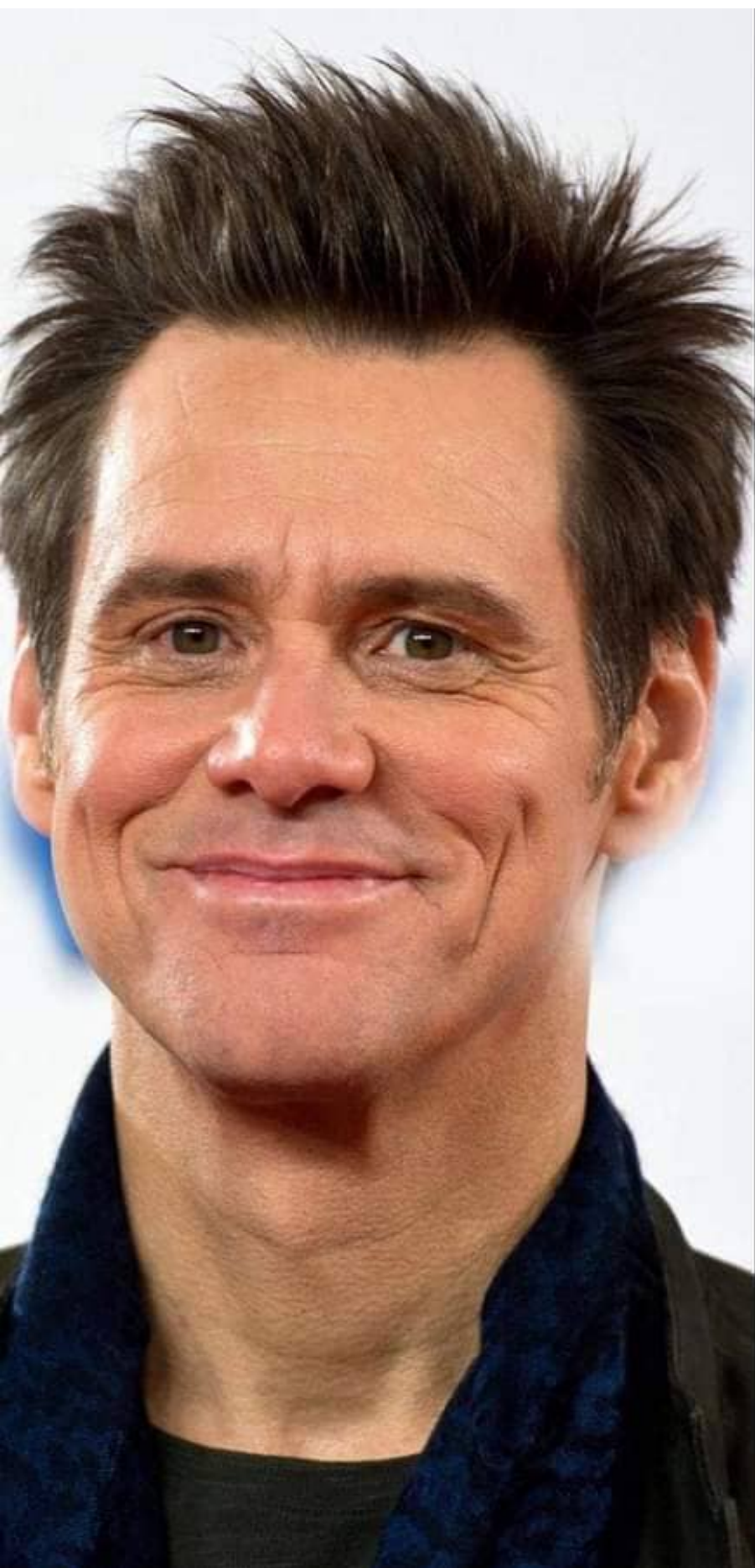
ओशो :
मैंने नहीं बढ़ाई,
यह खुद से बढ़ती है
क्योंकि प्राकृतिक है।

आपने दाढ़ी कटाई है,
प्रश्न आपसे बनता है कि
आपने दाढ़ी क्यों कटाई ?



कविताएँ और साहित्य

• ओशो



“When you go through that spiritual awakening nothing bothers you anymore. Because nothing matters. You realize your just a passenger on this earth with a limited time. Your mission here is to observe and learn. And then you go back far away from here.”

Jim Carrey



Like



Comment



Send

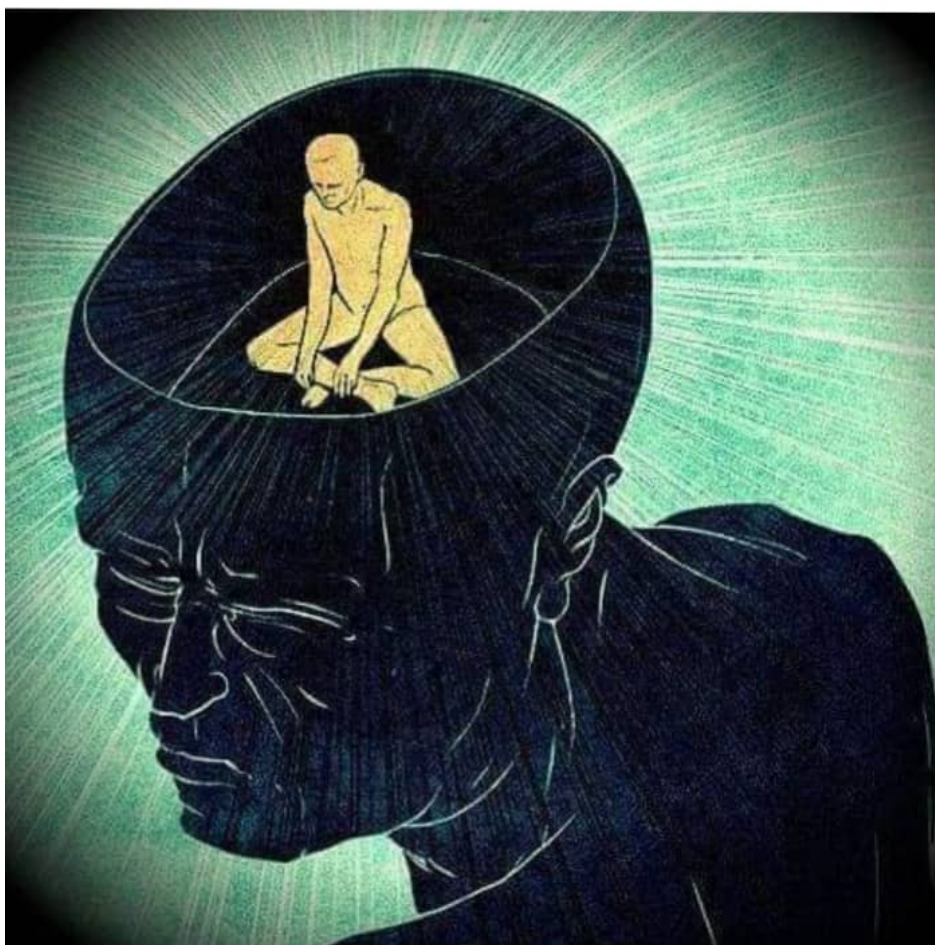


Share

**Osho Osho**

1h · 🌐

खाली दिमाग शैतान का घर नहीं शांति प्रेम का घर है नेगेटिव दिमाग
शैतान का घर है खाली दिमाग होना एक अचीवमेंट है
जितना मन खाली होगा निर्विचार होगा उतना ही मन पवित्र होगा और
पवित्र मन शांत मन ही कैलाश शिव का निवास हैं



36

5 comments • 4 shares



Like



Comment



Send



Share

**Grandmaster Tae Yun Kim**

Sponsored · 🌐



और खाया जा रहा हूँ।
यह भी भूल जाता है।
आश्चर्यजनक है।
लेकिन अगर हम अपने को भी समझें,
तो आश्चर्यजनक नहीं मालूम होगा।
वह कीड़ा है, इससे क्या फर्क पड़ता है ?
इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।
वही स्थिति मनुष्य की है।
वह जानता है, भलीभाँति पहचानता है।
फिर वासना पकड़ लेती है,
फिर वासना पकड़ लेती है।
वासना के बाद अनुभव भी होता है कि
व्यर्थ है, कोई अर्थ नहीं है।
लेकिन उस व्यर्थता के बोध का
कोई लाभ नहीं होने वाला है,
क्योंकि जब तक बेहोशी न टूटे,
वह फिर आ जायेगा ;
जिसको व्यर्थ कहा, वह फिर सार्थक हो जायेगा।
इसलिए ऋषि यह नहीं कहते कि उसे दबाओ।
वे कहते हैं, इतने जागो,
होश की इतनी अग्नि पैदा करो,
द फायर आफ अवेकनिंग,
कि उसमें सब दग्ध हो जाए।
और जब कामवासना दग्ध हो जाती है,
तो और शेष वासनाएँ अपने आप दग्ध हो जाती हैं।
यह कोई फ्रायड की नयी खोज नहीं है कि
कामवासना सब वासनाओं का केन्द्र है।
यह तो ऋषि सदा से जानते रहे हैं।
यह जिन्होंने भी खोज की है मनुष्य की अन्तरात्मा में,
वे सदा से जानते रहे हैं कि
बाकी सारी वासनाएँ कामवासना से ही पैदा होती हैं।

🌸🌸🌸 निर्वाण उपनिषद - ओशो 🌸🌸🌸

👍 132

10 comments • 19 shares



सारी वासनाएँ कामवासना से ही पैदा होती हैं।

अफ्रीका में एक मकोड़ा होता है।

जब भी नर मकोड़ा मादा

मकोड़े के साथ सम्भोग में जाता है,

इधर मकोड़ा सम्भोग शुरू करता है,

उधर मादा उस मकोड़े के शरीर को

खाना शुरू कर देती है।

एक ही सम्भोग कर पाता है वह मकोड़ा,

क्योंकि वह सम्भोग करता रहता है और

मादा उसके शरीर को खाती चली जाती है।

वैज्ञानिक जब उसके अध्ययन में थे,

तब बड़े हैरान हुए कि

क्या उस मकोड़े को यह भी पता नहीं चलता कि

मैं मारा जा रहा हूँ खाया जा रहा हूँ

और नष्ट किया जा रहा हूँ!

मकोड़ा सम्भोग के बाद मुर्दा ही गिरता है।

उसकी लाश को मादा खा जाती है पूरा।

बस, एक ही सम्भोग कर पाता है।

दूसरे मकोड़े यह देखते रहते हैं,

लेकिन जब उनकी सम्भोग की वृत्ति जगती है

तब वे भूल जाते हैं कि मौत में उतर रहे हैं।

तो शरीर शास्त्रियों ने उस मकोड़े का

बहुत अध्ययन कर के पता लगाया कि

उसके शरीर में बड़ी गहरी विषाक्तता है।

जब कामवासना पकड़ती है उसको,

तो उसे इतना भी होश नहीं रह जाता कि

मैं काटा जा रहा हूँ मारा जा रहा हूँ

और खाया जा रहा हूँ।

यह भी भूल जाता है।

आश्चर्यजनक है।

लेकिन अगर हम अपने को भी समझें,

तो आश्चर्यजनक नहीं मालूम होगा।

वह कीड़ा है, इससे क्या फर्क पड़ता है ?

क्या पा लाग?

कितने लोग आए और कितने लोग गये,
उनका कुछ नाम, पता, ठिकाना?
सुवर्ण के महल थे, स्वर्ण उनके रथ थे,
और अब क्या हुआ? सब मिट्टी में मिल गया

कुछ और करो – जो मिट्टी में न मिल सके ।
कुछ और, जिसको मृत्यु पोंछ न सके ।
कुछ और जो तुम्हें अमृत से जुड़ा दे ।
अमृत की तलाश करो, शाश्वत को खोजो ।
वही असली धन है ।
वही असली पद है ।
वही असली सोन्दर्य है ।

ओशो - रामद्वारे जो मरे

7:12 pm

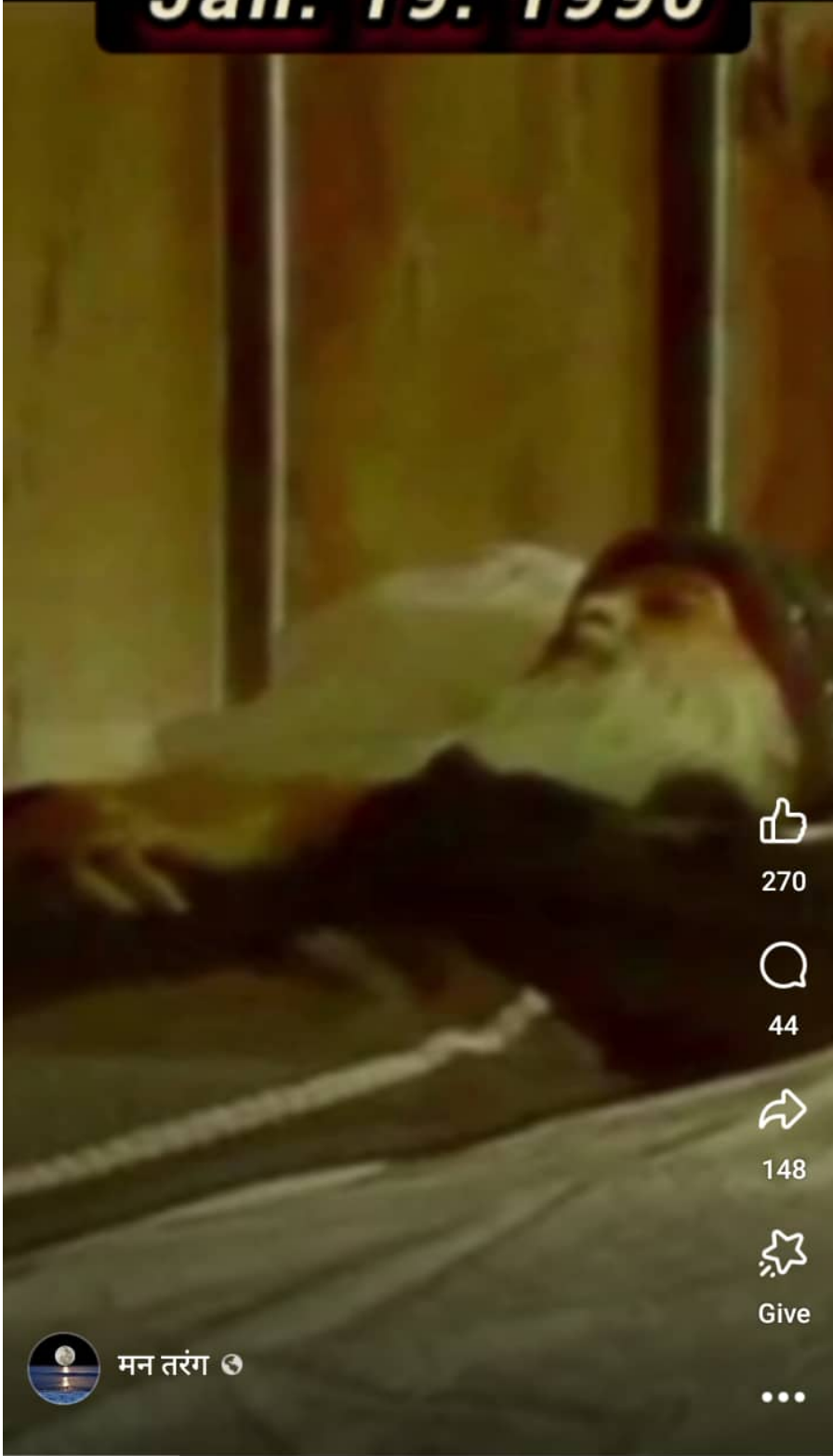
VoLTE 4G 47%



Never Died



Jan. 19. 1990



270



44



148



Give

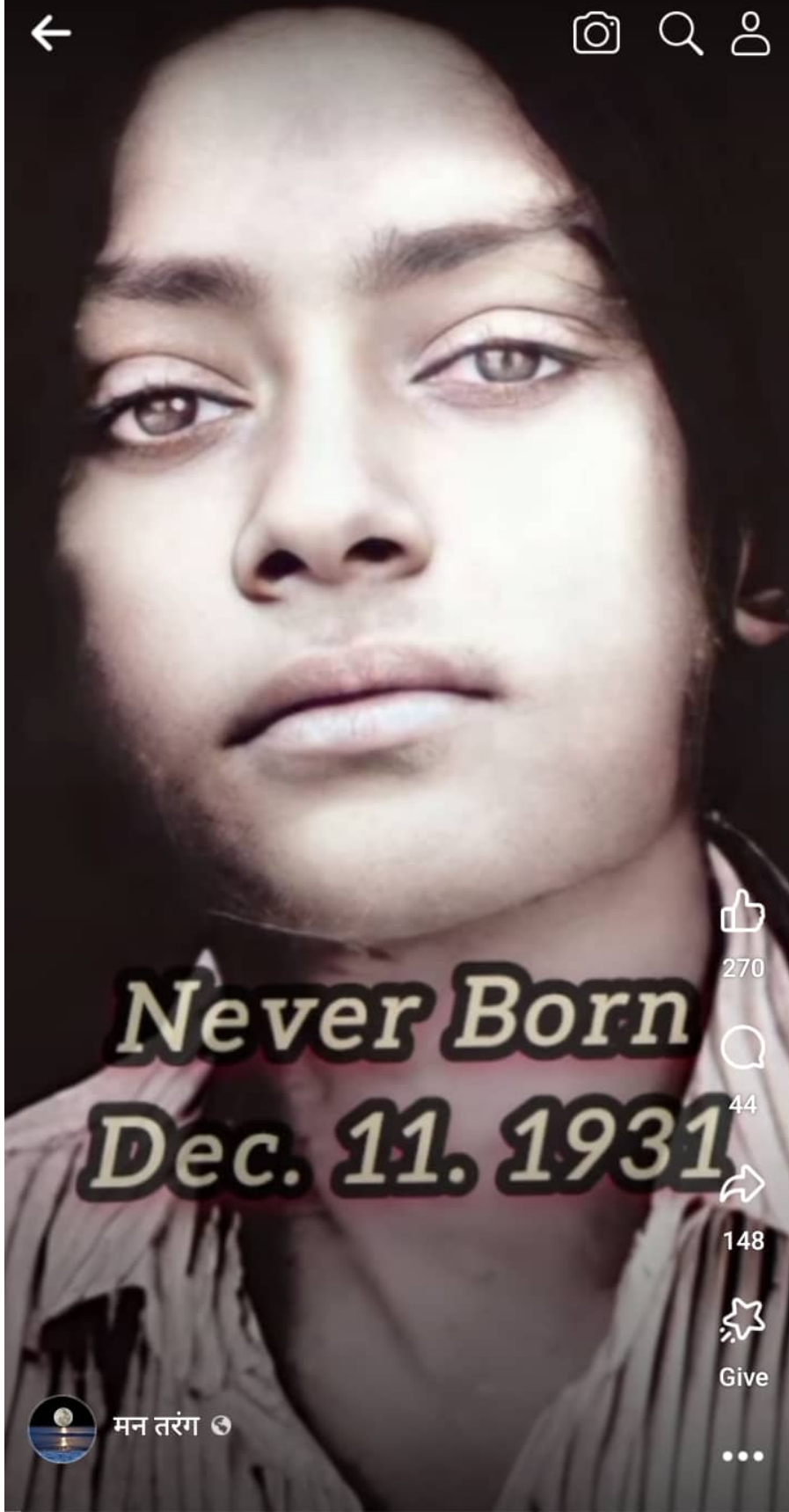


मन तरंग



Add a comment...





270



44



148



Give



मन तरंग

Add a comment...





Reels · 11h · 🌐

कृपया मुझे फॉलो करें [#Osho](#) [#love](#) [#oshoosho](#) [#india](#)

⚙️ • Rate this translation



👍❤️ 87

13 comments • 26 shares • 1.7K views



Like



Comment



Send



Share

***तेरी रजा को समझ पाऊँ ये
हुनर मुझमें नहीं मेरे मालिक***

***जिंदगी को आजमाने के बाद
बस इतना जाना है***

***तू जो करता है सबके भले के
लिए ही करता है***

   12

6 comments

 Like

 Comment

 Send

 Share

आ
शो

पं
में कहें ला
आंखें देखी

आपकी कमी है
आपकी चिन्ता है



अब तो मैं अपने
बचे हुए जीवन में
भगवान का ही
भजन करूंगा।

016 जीवन का पाठ



इसलिए रात को जो क्लब पैदा होते हैं, उनमें जानवरियत दिखाई पड़ती है। इसका और कोई कारण नहीं है। रात के क्लब, नाइट क्लब, जरूर वह पशुओं की प्रवृत्तियों के हो जाते हैं। वह दिन भर का थका हुआ आदमी आदमियत से थक जाता है। वह कहता है, हमें पशु चाहिए, शराब चाहिए, जुआ चाहिए, नाच चाहिए, नंगापन चाहिए, हो—हुल्लड़ चाहिए। तो रात के जो क्लब हैं, वे आदमी की पशुता के इर्द-गिर्द निर्मित होते हैं। इसलिए प्रार्थना करनी हो, तो सुबह ही अच्छा है। सांझ जरा शक है कि प्रार्थना संभव हो पाए। इसीलिए मंदिर सुबह घंटियां बजा देते हैं। रात में क्लबों के द्वार खुल जाते हैं, जुआघर खुल जाते हैं, शराबखाने खुल जाते हैं। वेश्या सुबह—सुबह नहीं आमंत्रण दे पाती, रात में ही आमंत्रण दे पाती है।

दिन भर का थका हुआ आदमी जानवर हो जाता है। इसलिए रात के अलग धंधे हैं और सुबह की अलग दुनिया है। ये चर्च सुबह, ये मस्जिद सुबह अजान दे देती है, मंदिर सुबह घंटी बजा देते हैं। थोड़ी—सी आशा है कि सुबह का जागा हुआ आदमी शायद परमात्मा की तरफ थोड़ी आंख उठा ले। सांझ को थके हुए आदमी से कम आशा रह जाती है। और इसीलिए बच्चों से ज्यादा आशा होती है कि वे परमात्मा की तरफ झुक जाएं। बूढ़ों से कम आशा होती है, क्योंकि वह सांझ है जिंदगी की। वह जिंदगी भर ने उनका सब उछाड़ दिया होगा, सब उखाड़ दिया होगा। इसलिए जितनी जल्दी हो सके, जितनी सुबह हो सके, उतनी जल्दी यात्रा पर निकल जाना चाहिए। सांझ आ ही जाएगी। इसके पहले कि सांझ आए अगर हम सुबह यात्रा पर निकल गए हों, तो यह भी हो सकता है कि सांझ भी हमें मंदिर में पाए।

तो वह मित्र ठीक पूछते हैं। यह संभव है कि कोई आदमी पशु रहा हो, पक्षी रहा हो। ध्यान यह रखना चाहिए कि अब भी तो पशु और पक्षी नहीं हैं। उसका स्मरण रखना जरूरी है।
ओशो

Osho Prem Naman 🙏❤️
[Osho international](#)



यह जो हमारी स्थिति है, उसमें हमारा वह सब मौजूद है, जो हम कभी रहे होंगे। उसकी परतें हैं भीतर, और अगर जरा खोदा जाए तो भीतर की परतों तक हम पहुंच सकते हैं। हम पत्थर की परत पर भी पहुंच जा सकते हैं, वह भी हमारी परत है। क्योंकि बहुत गहरे अंतःकरण में हम अब भी पत्थर हैं। और इसलिए अगर वहां तक हमें खरोंचा जाये, तो हम पत्थर की तरह भी व्यवहार करते हैं, कर सकते हैं। पशु की तरह भी व्यवहार करते हैं, कर सकते हैं। और आगे की हमारी सिर्फ संभावनाएं हैं, वे हमारी परतें नहीं हैं। इसलिए कभी—कभी छलांग लगाकर छूते हैं, लेकिन फिर जमीन पर वापस लौट आते हैं। वह हमारी संभावनाएं हैं। देवता भी हम हो सकते हैं, लेकिन हम कभी रहे नहीं। परमात्मा हम कभी हो सकते हैं, लेकिन... जो हम रहे हैं, वह हमारी स्थिति है।

तो ये दो बातें हैं कि अगर हमारे अंदर थोड़ा खोदा जाए, तो हमारे भीतर की स्थितियां मिल जाएंगी; और अगर हमें और आगे फेंका जाए, तो हमारी आगे की स्थितियों का अनुभव होता है। लेकिन जैसे कोई आदमी जमीन पर छलांग लगाए, तो एक सेकेंड को जमीन के बाहर हो जाता है, आकाश में होता है, लेकिन फिर वापिस जमीन पर खड़ा होता है। ऐसे ही हम छलांग लगा—लगाकर आदमी होते रहते हैं। हम कभी—कभी आदमी होते हैं, बाकी हम पीछे खड़े हो जाते हैं। अगर बहुत गौर से देखें, तो चौबीस घंटे में हम कभी—कभी किसी क्षण में ठीक आदमी होते हैं। हम सब जानते भी हैं।

भिखमंगे आपने देखे हैं। वह सुबह भीख मांगने आते हैं, शाम नहीं आते। क्योंकि शाम तक आदमी होने की संभावना कम हो जाती है। सुबह—सुबह ताजा आदमी होता है, रात भर का विश्राम किया हुआ। न कोई झगड़ा, न कोई कलह, न गाली, न गलौज, न उपद्रव। सुबह उठता है, ताजा—ताजा होता है। भिखारी सामने आ जाता है, तो आशा होती है कि वह थोड़ी आदमियत का व्यवहार करेगा। लेकिन सांझ ऐसी आशा नहीं होती है। इसलिए सांझ भिखारी नहीं आता है। वह जानता है कि दिन भर की खरोंच ने आदमी के भीतर की परतों को जगा दिया होगा—दफ्तर ने, दुकान ने, बाजार ने, दंगा—फसाद ने, अखबार ने, नेताओं ने गड़बड़ कर दिया होगा। और वह भीतर की जो परतें हैं, वे जग गई होंगी। सांझ को कोई भिखमंगा भीख मांगने नहीं आता, क्योंकि सांझ को आदमी थक गया होता है। जानवर हो गया होता है।



तो यह बहुत हैरानी या कठिनाई की बात नहीं है कि कोई आदमी पिछले जन्मों में पशु रहा हो। बड़ी कठिनाई तो तब होती है, जब कुछ लोग आदमी होते हुए भी पशु ही होते हैं। यह तो बहुत आश्चर्यजनक नहीं है, पिछले जन्मों में कभी न कभी हम सभी पशु रहे होंगे। लेकिन आदमी होते हुए भी हमारी चेतना इतनी क्षीण हो सकती है कि सिर्फ देह के तल पर हम आदमी मालूम हो सकते हैं। अगर हम अपनी वृत्तियों को खोजने जायें, तो हमें ऐसा ही लगेगा कि हम पशु तो नहीं रहे हैं, लेकिन आदमी भी नहीं हो गए हैं। कहीं बीच में अटक गये हैं। और इसलिए जब भी मौका आता है, तो हम फिर से पशु हो जाने में देर नहीं लगाते।

जैसे कि कोई आदमी आकर आपको एक धक्का मार जाए। आप बड़े भले आदमी की तरह चले जा रहे हैं और एक आदमी ने आपको घुंसा मार दिया और एक गाली दे दी। और आप अचानक पाते हैं कि जो आपका भला आदमी था वह एकदम तिरोहित हो गया है और आप वहां खड़े हो गये हैं, जहां आप किसी पिछले जन्म में रहे होंगे। आप पशु हो गये। हमारी आदमियत बहुत स्किन डीप है। जरा—सा हम खरोंच दें तो भीतर का पशु निकल आता है। और वह निकल इसीलिए आता है क्योंकि हम वह रहे हैं। क्योंकि वह जो ग्रोथ है हमारी, वह जो आदमी होना है, वह ऊपर से तो आ गया, लेकिन भीतर अभी भी पशु मौजूद है। और इसलिए उसको खोदने में देर नहीं लगती। हिंदुओं को कह दो कि हिंदू धर्म खतरे में है, खुद जाता है। मुसलमान को कह दो कि मुसलमान धर्म खतरे में है, खुद जाता है। कहीं गहरे नहीं जाना पड़ता है। आदमी, जो बिलकुल भला दिखाई पड़ता है, सफेद कपड़े पहने हुए, खादी पहने हुए, वह भी वही है। वह भी सब स्किन डीप है। जरा सा खरोंच दो तो भीतर का पशु निकल आये। और जब पशु निकलता है, तो इतने जोर से प्रकट होता है कि ऐसा लगता है कि यह आदमी कभी आदमी रहा होगा, यह भी संदिग्ध है।

यह जो हमारी स्थिति है, उसमें हमारा वह सब मौजूद है, जो हम कभी रहे होंगे। उसकी परतें हैं भीतर, और अगर जरा खोदा जाए तो भीतर की परतों तक हम पहुंच सकते हैं। हम पत्थर की परत पर भी पहुंच जा सकते हैं, वह भी हमारी परत है। क्योंकि बहुत गहरे अंतःकरण में हम अब भी पत्थर हैं। और इसलिए अगर वहां तक हमें खरोंचा जाये, तो हम



क्या मनुष्य फिर से पशु योनि में जा सकता है?

एक मित्र ने पूछा है कि उनके कोई मित्र हैं वे योगी हैं और कहते हैं कि पिछले जन्म में वे चिड़िया थे तो क्या आदमी पशु भी हो सकता है?

आदमी कभी पशु हो सकता है, लेकिन दुबारा पशु नहीं हो सकता। पीछे लौटना नहीं होता, पीछे लौटना असंभव है। तो यह तो हो सकता है कि पीछे की योनि में से आगे आना हो, लेकिन यह नहीं हो सकता कि आगे की योनि में से पीछे लौटना पड़े। इस जगत में पीछे लौटना होता ही नहीं, पीछे लौटने का उपाय ही नहीं है। दो ही उपाय हैं — या तो आगे बढ़े, या जहां हैं वहां ही रुक जाएं। पीछे नहीं लौट सकते। जैसे स्कूल में बच्चा पहली कक्षा में पढ़ता है। वह उत्तीर्ण हो जाए तो दूसरी कक्षा में चला जाए, और अनुत्तीर्ण हो जाए तो पहली कक्षा में ही रह जाए, लेकिन पहली कक्षा से उसे निकालने का कोई उपाय नहीं है। जब दूसरी कक्षा में कोई असफल हो जाए, तो उसे पहली कक्षा में उतारने का भी कोई उपाय नहीं। तो जिस योनि में हम होते हैं, हम या तो उस योनि में टिक सकते हैं बहुत लंबे समय तक, या हम आगे जा सकते हैं, लेकिन पीछे नहीं लौट सकते।

तो इसकी कोई बहुत कठिनाई नहीं है कि कोई पीछे पशु योनि में रहा हो। रहा ही है। कितने जन्मों तक रहा है, यह दूसरी बात है। इसमें जरा भी कठिनाई नहीं है। और अगर हम अपने पिछले जन्मों में उतरेंगे, तो हमें याद आएंगे वह सब जन्म, जब हम चिड़िया भी रहे होंगे, पशु भी रहे होंगे, स्त्री भी रहे होंगे, पक्षी भी रहे होंगे। और— और नीचे, और— और नीचे, इतनी जड़ता रही होगी जहां कि चेतना का कोई सूत्र ही खोजना मुश्किल है।

पहाड़ भी जीवन है। वहां भी जीवन है, लेकिन चेतना न के बराबर है। निन्यानबे प्रतिशत जड़ता है, एक प्रतिशत चेतना है। निरंतर चेतना बढ़ती चली जाती है और जड़ता कम होती चली जाती है। परमात्मा है, वह सौ प्रतिशत चेतन है। पदार्थ और परमात्मा में प्रतिशत का अंतर है। पदार्थ और परमात्मा में कोई क्वालिटी का अंतर नहीं है, क्वांटिटी का अंतर है। कोई गुण का अंतर नहीं है, मात्रा का अंतर है। इसलिए पदार्थ परमात्मा हो सकता है।

facebook



न भा न छुआ। पाना न छुए, समझ म आता ह!

अब संयोग कहना जरा मुश्किल मालूम पड़ा। गुरु के पास ये खबरें पहुंची। गुरु को भी भरोसा न आया, क्योंकि गुरु खुद ही इतनी श्रद्धा का आदमी न था। गुरु ने सोचा कि संयोग ही हो सकता है, क्योंकि मेरे नाम से हो जाए! अभी तो मुझे ही भरोसा नहीं कि अगर मैं जलते मकान में जाऊं तो बचकर लौटूंगा, कि मैं कूद पड़ पहाड़ से और कोई हाथ मुझे सम्हाल लेंगे अज्ञात के। तो गुरु ने कहा कि देखेंगे। एक दिन नदी के तट से सब गुजरते थे। गुरु ने कहा कि तुझे मुझ पर इतना भरोसा है कि आग में बच गया, पहाड़ में बच गया, तू नदी पर चल जा। वह शिष्य चल पड़ा। नदी ने उसे न डुबाया। वह नदी पर ऐसा चला जैसे जमीन पर चल रहा हो। गुरु को लगा कि निश्चित ही मेरे नाम का चमत्कार है। अहंकार भयंकर हो गया। कुछ था तो नहीं पास।

तो उसने सोचा, जब मेरा नाम लेकर कोई चल गया, तो मैं तो चल ही जाऊंगा। वह चला, पहले ही कदम पर डुबकी खा गया। किसी तरह बचाया गया। उसने पूछा कि यह मामला क्या है मैं खुद डूब गया! वह शिष्य हंसने लगा। उसने कहा, मुझे आप पर श्रद्धा है, आपको अपने पर नहीं। श्रद्धा बचाती है।

कभी-कभी ऐसा भी हुआ है कि जिन पर तुमने श्रद्धा की उनमें कुछ भी न था, फिर भी श्रद्धा ने बचाया। और कभी-कभी ऐसा भी हुआ है, जिन पर तुमने श्रद्धा न की उनके पास सब कुछ था, लेकिन अश्रद्धा ने डुबाया है। कभी बुद्धों के पास भी लोग संदेह करते रहे और डूब गए। और कभी इस तरह के पाखंडियों के पास भी लोगों ने श्रद्धा की और पहुंच गए।

तो मैं तुमसे कहता हूं गुरु नहीं पहुंचाता, श्रद्धा पहुंचाती है। इसलिए मैं तुमसे कहता हूं श्रद्धा ही गुरु है। और जहां तुम्हारी श्रद्धा की आंख पड़ जाए वहीं गुरु पैदा हो जाए। परमात्मा नहीं पहुंचाता, प्रार्थना पहुंचाती है। और जहां हृदयपूर्वक प्रार्थना हो जाए वहीं परमात्मा मौजूद हो जाता है। मंदिर नहीं पहुंचाते, भाव पहुंचाते हैं। जहां भाव है वहां मंदिर है।
ओशो



OSHO DHYAN · 4m ·

ऐसा हुआ कि तिब्बत का एक फकीर अपने गुरु के पास गया। गुरु की बड़ी ख्याति थी। और यह फकीर बड़ा श्रद्धालु था। और गुरु जो भी कहता, सदा मानने को तैयार था। इसकी प्रतिष्ठा बढ़ने लगी। और शिष्यों को पीड़ा हुई। उन्होंने एक दिन इससे छुटकारा पाने के लिए-एक पहाड़ी के ऊपर बैठे थे-इससे कहा कि अगर तुम्हें गुरु में पूरी श्रद्धा है तो कूद जाओ। तो वह कूद गया। उन्होंने तो पक्का माना कि हुआ खतम। नीचे जाकर देखा तो वह पद्यासन में बैठा था। और ऐसा सौंदर्य और ऐसी सुगंध उन्होंने कभी किसी व्यक्ति के पास न देखी थी, जो उसके चारों तरफ बरस रही थी। वे तो बड़े हैरान हुए। सोचा संयोग है।

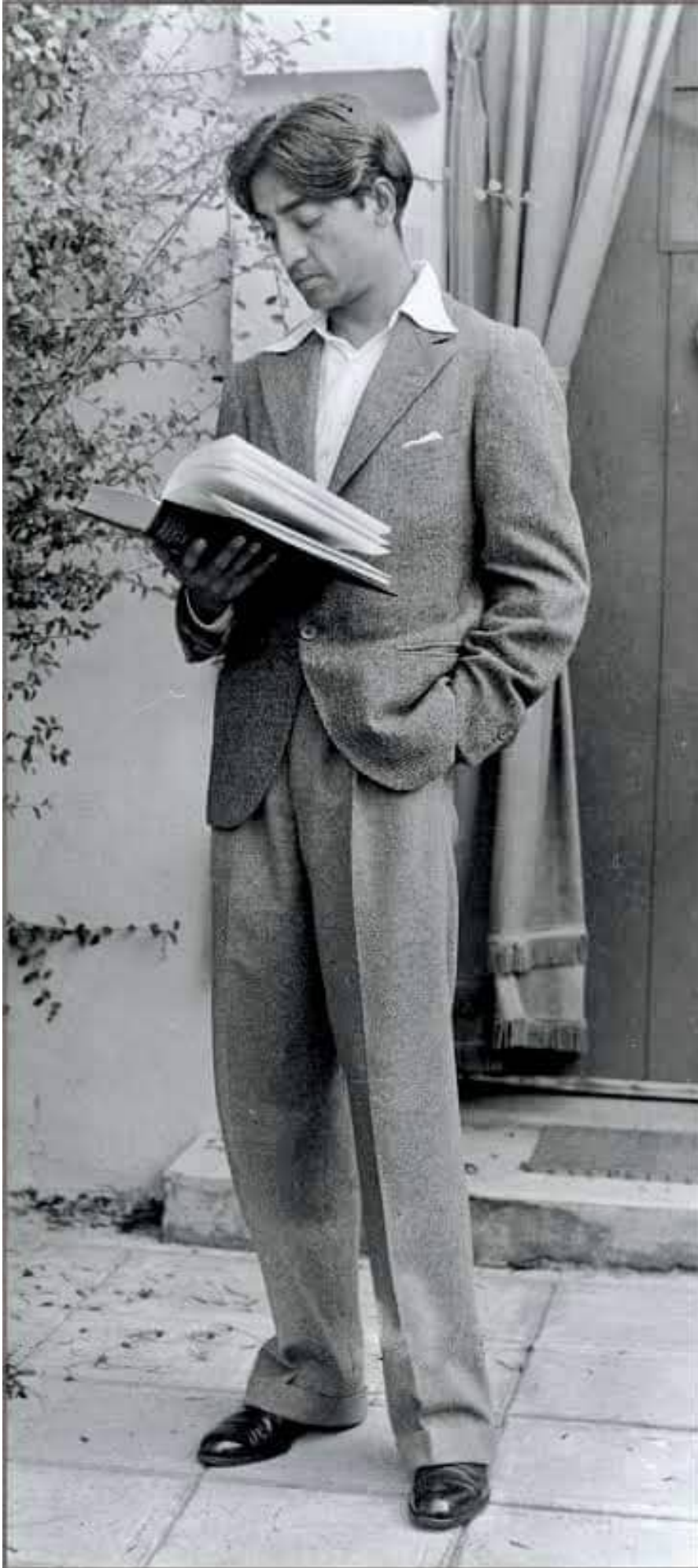
संदेह ज्यादा से ज्यादा संयोग तक पहुंच सकता है, कि संयोग की बात है कि बच गया। कोई फिकर नहीं। एक मकान में आग' लगी थी, उन्होंने कहा कि चले

जाओ, अगर गुरु पर पूरा भरोसा है, शिष्यों ने ही। वह चला गया भीतर। मकान तो जलकर राख हो गया। जब वे भीतर गए तो आशा थी कि वह भी जलकर राख हो चुका होगा। वह तो वहां ऐसे बैठा था, जल में कमलवत। आग ने छुआ ही नहीं। उन्होंने सुनी थीं अब तक ये बातें कि ऐसे लोग भी हुए हैं-जल में कमलवत, पानी में होते हैं और पानी नहीं छूता। आज जो देखा, वह अदभुत चमत्कार था! आग में था और आग ने भी न छुआ। पानी न छुए, समझ में आता है!

अब संयोग कहना जरा मुश्किल मालूम पड़ा। गुरु के पास ये खबरें पहुंची। गुरु को भी भरोसा न आया, क्योंकि गुरु खुद ही इतनी श्रद्धा का आदमी न था। गुरु ने सोचा कि संयोग ही हो सकता है, क्योंकि मेरे नाम से हो जाए! अभी तो मुझे ही भरोसा नहीं कि अगर मैं जलते मकान में जाऊं तो बचकर लौटूंगा, कि मैं कूद पड़ पहाड़ से और कोई हाथ मुझे सम्हाल लेंगे अज्ञात के। तो गुरु ने कहा कि देखेंगे। एक दिन नदी के तट से सब गुजरते थे। गुरु ने कहा कि तुझे मुझ पर इतना भरोसा है कि आग में बच गया, पहाड़ में बच गया, तू नदी पर चल जा। वह शिष्य चल पड़ा। नदी ने उसे न डुबाया। वह नदी पर ऐसा चला जैसे जमीन पर चल रहा हो। गुरु को लगा कि निश्चित ही मेरे नाम का चमत्कार है। अहंकार

अहंकार तो गंगा। क्लृप्त शा तो उत्ती गंगा।

जीसस ने कहा है : जीवन तो वह है जो महाजीवन में ले जाए ! यह बात समझ में आती है। सीधी साफ है। दो और दो चार जैसे होते हैं , इतनी साफ है। जीवन तो वही जो महाजीवन में ले जाए। यह भी कोई जीवन है जो मृत्यु में ले जाता है ? जरूर कहीं हम धोखा खा गए हैं। हमने जन्म को जीवन समझ लिया है। जन्म केवल एक अवसर है। जीवन हो भी सकता है , न भी हो। अगर परमात्मा का संस्पर्श हो जाए तो जन्म जीवन बन जाता है , फिर कोई मृत्यु नहीं है। हां , देह गिरेगी सो गिरेगी। औरों को मृत्यु मालूम पड़ेगी सो पड़ेगी। मगर जिसका जीवन जाग गया है , जिसने उस महाजीवन को पहचान लिया है , उसकी फिर कोई मृत्यु नहीं है। **ओशो** (Dr Sohan Lal Narang)



बुद्ध ने कहा है: अगर घर में काँड़
जागा हो तो चोर दूर रहते हैं। घर में
दीया जलता हो तो चोर दूर रहते हैं।
पहरेदार सजग हो तो चोर दूर रहते हैं।
ऐसी ही जीवन की दशा है। तुम्हारे
भीतर चेतना थोड़ी जागती रहे, पहरे
पर हो, तो न तो काम आता है न
क्रोध आता है।

मुझसे लोग पूछते हैं : काम को कैसे
जीते? मैं कहता हूँ : तुमने बात ही
बिगाड़ ली। जीतने का सवाल ही नहीं
है। जीतने का मतलब है: काम घुस
आया, अब तुम लड़ने की कोशिश कर
रहे हो। कैसे घुस आया है, इस प्रक्रिया
को समझ लो। तुम मूर्छित
थे तो घुस आया है। तुम
जाग जाओ। तुम्हारे जागते
ही तिरोहित हो जाएगा।
घर में लोग जाग जाते
हैं, चोर भाग जाते हैं।
ओशो : का सोवें दिन रैन



आप स्वर्ग में जाओगे इसका
कोई प्रमाण नहीं..!
आप स्वर्ग अपने पास ला सकते
हो, ये प्रमाणिक है..!



ओशो - जीवन-मृत्यु



दिनेश कौशिक · 21h · 🌐

एक समय की बात है.. एक किशोर! ऋषि हरिद्रुमत गौतम के आश्रम में पहुंचा! वह सत्य को जानना चाहता था, ब्रह्म को जानने की उसकी जिज्ञासा थी। उसने ऋषि के चरणों में सिर रख कर कहा: “आचार्य, मैं सत्य को खोजने आया हूं। मुझ पर अनुकंपा करें! और ब्रह्मविद्या दें, मैं अंधा हूं और आंखें चाहता हूं।”

उस किशोर का नाम सत्यकाम था।

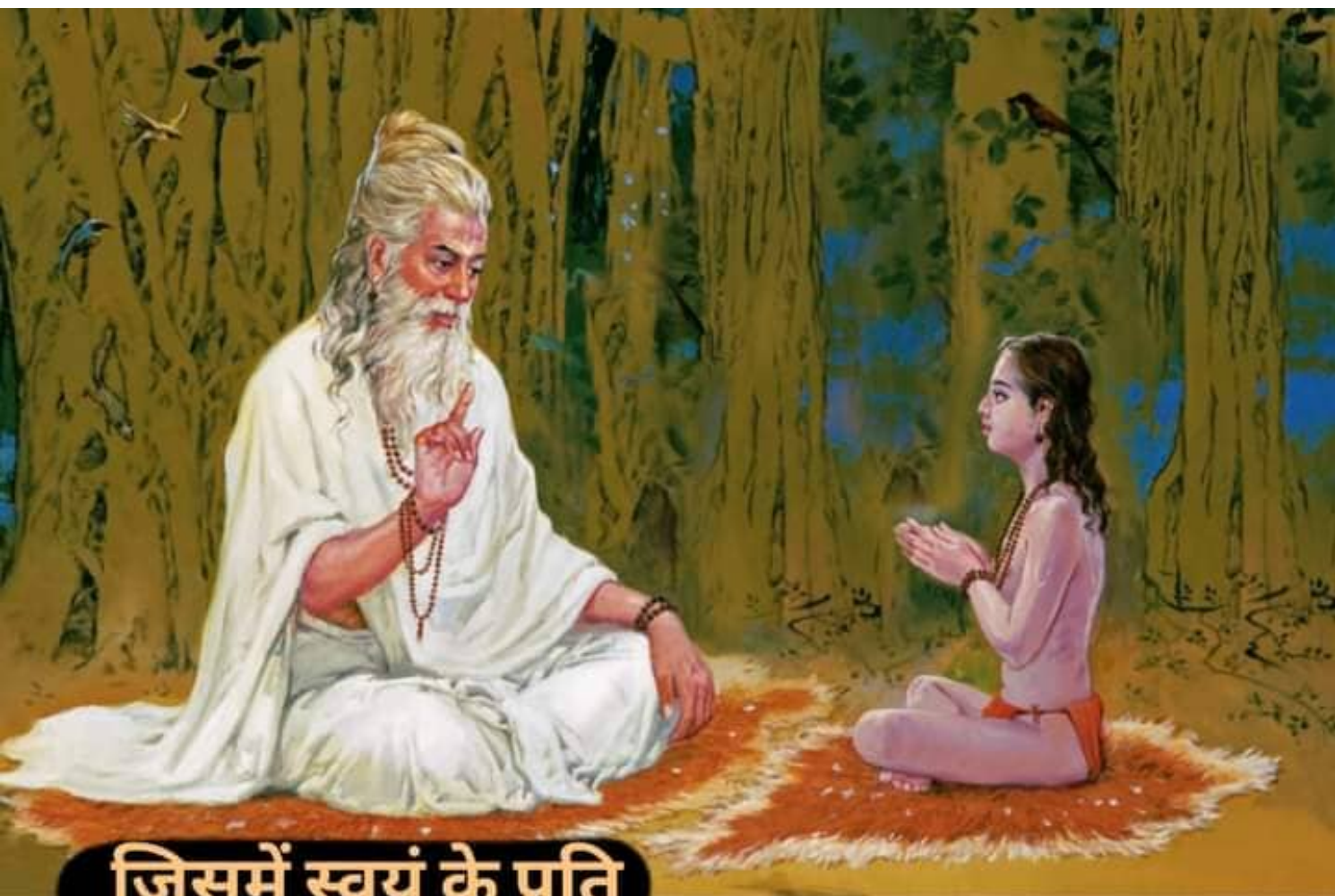
ऋषि ने उससे पूछा: “वत्स, तेरा गोत्र क्या है? तेरे पिता कौन हैं? उनका नाम क्या है? ”

उस किशोर को न अपने पिता का कोई ज्ञान था, न ही गोत्र का पता था। वह अपनी मां के पास गया और उससे पूछ कर लौटा। और उसकी मां ने जो उससे कहा, उसने जाकर ऋषि को कहा!

वह बोला: “भगवन! मुझे अपने गोत्र का ज्ञान नहीं है। न ही मैं अपने पिता को जानता हूं। मेरी मां को भी मेरे पिता का ज्ञान नहीं है। उससे मैंने पूछा तो उसने कहा;- कि युवावस्था में वह अनेक भद्रपुरुषों में रमती और उन्हें प्रसन्न करती रही। उसे पता नहीं कि मैं किससे जन्मा हूं। मेरी मां का नाम जाबाली है। इसलिए, मैं सत्यकाम जाबाल हूं। ऐसा ही आपसे बताने को उसने मुझे कहा है।”

हरिद्रुमत इस सरल सत्य से अभिभूत हो उठे। उन्होंने उस किशोर को हृदय से लगा लिया और बोले: “मेरे प्रिय! तू निश्चय ही ब्राह्मण है। सत्य के लिए ऐसी आस्था ही ब्राह्मण का लक्षण है। तू ब्रह्म को जरूर पा सकेगा, क्योंकि जिसमें स्वयं के प्रति सच्चा होने का साहस है, सत्य स्वयं ही उसे खोजता हुआ उसके द्वार आ जाता है.!!

🍁 ओशो.. 🍌



जिसमें स्वयं के प्रति
सच्चा होने का साहस है,
"सत्य स्वयं ही उसे
खोजता हुआ. उसके द्वार
पर आ जाता है.!

ओशो

सुंदर पंक्ति



झाँक रहे हैं इधर-उधर सब,
अपने अंदर झाँकें कौन ?

ढूँढ़ रहे दुनियाँ में कमियाँ,
अपने मन में ताके कौन ?



सबके भीतर दर्द छुपा है,
उसको अब ललकारे कौन ?

दुनियाँ सुधरे सब चिल्लाते,
खुद को आज सुधारे कौन ?

पर उपदेश कुशल बहुतेरे,
खुद पर आज विचारे कौन ?

हम सुधरें तो जग सुधरेगा,
यह सीधी बात गले उतारे कौन ?



स्त्री परमात्मा की सबसे

सुंदर रचना है।

अगर आप स्त्री का

सम्मान करते हो तो

समझ

लो आप परमात्मा की

इबादत में हो।

!! ओशो !!



मुहम्मद जब कहते हैं अल्लाह निगेबान हैं, वह रहीम हैं, रहमान हैं।
मतलब खुदा सर्वव्यापी हैं सब देखता है सब की मदद करता है...सबकी
खैरखबर लेता है...इस का भी यही मतलब है।

जीसस जब कहते हैं जो आखरी होने को राजी उसे प्रभू पहले नंबर पर
कर देते हैं। इस का भी यही मतलब तुम अपने को बीच में से
हटाओ....तुम हटे....आखरी हुये ...उस का हुक्म, उस का नियम अपना
काम करता है।

इस को आलसी यह भी समझ ले कि अब कुछ करना ही नहीं....मतलब
साफ है...करते करते अकर्ता हुये तो तुमने सभी की बात मान ली ...न
करने से तो तुम अकर्ता हो ही। राज जो छिपा है.....आखरी हो जाओ...
बेपरवाह हो जाओ...अकर्ता हो जाओ....उस निगेबान की निगाह तुम
पर पड जाए...बात समाप्त हो गई। बुद्ध का तृष्णा रहित और महावीर
का अहिंसा का मतलब भी यही है।

जब भी किसी को परम ज्ञान होता है वह ब्रह्म से एक होता है तो उसे यह
सब बातें समझ में आती हैं। वह कहता है....लोग सोचते हैं अब ज्ञान की
बात क्यों नहीं करते..अब तो वह केवल परमज्ञान की बात करता है....
नीचे की चेतना के लोग बुद्धपुरुषों की इस बात को समझ नहीं पाते।
बहुत जगह खुट्टीयां टंगी होती हैं। कहीं आश्रम बन रहा होता है...कहीं
शिष्यों की संख्या बढ़ रही होती है...सम्मान मिल रहा होता है...चेले
चेलियों में पसंद नापसंद का नाटक शुरू हो जाता है....फिर प्रकृति का
हाथ छूट जाता है तो फिर प्रकृति क्या करे ...वह कोशिश करती है कि
सब ठीक हो जाए मौका भी देती हैं।

याद रखो फिसल के संभलना ही संभलना है। यही सब से बड़ी परीक्षा
है। यह जो विश्वामित्र मेनका की कथा है यह उस तरफ ही इशारे हैं।
फिसलते फिसलते कोई संभला वही संभला....वह झंझट भी वही खड़ा
करता है ...।

प्रकृति का सहयोग का और सुरक्षा का नियम काम करता है वह अटल
नियम हैं मगर तुम यदि तुम होश संभाल पाये तो...आध्यात्म में होश का
यही लाभ है और यही होश की प्रकाशा है...



घंटीराम ने अपने गुरु गुरुघंटाल से निवेदन किया की सभी गुरु कहते हैं की होश को संभालो....इसका संसार में तो होश का लाभ लगता है मगर आध्यात्म में इस का क्या लाभ है, कृपया बतायें...समझायें?

गुरु घंटाल ने कहा कि घंटी, आज तुमने बहुत पते की बात पूछी है, लोग सचमुच होश का महत्व नहीं समझते...वह थोड़ा सा होश मिलने पर संसार में कुछ अलग तरह से दिखने पर बहुत थोड़ा सा पा लेने पर ही गुरु हो जाते हैं ...आश्रम, शिष्य,सम्मान, दौलत मिल जाने से संतुष्ट हो कर परमात्मा की तरफ उन का ध्यान कम हो जाता है और जो होश का असली लाभ है उस से वंचित रह जाते हैं...असली लाभ तो उस परम से मिलने का, उस परम से अलिंगन करने का है।

घंटी, प्रकृति का नियम है...यह सर्वश्रेष्ठ नियम है....यदि सच पूछो तो यही नियम है कि जब किसी का भी हाथ प्रकृति के साथ एक हो जाता है तो प्रकृति उसे ऊपर उठने में सहायता तो करती है....सहयोग देती है...वह कुछ भी करे यदि तुम्हें कुछ चिंता हो रहीं है कि उस परमात्मा की बदनामी न हो जाए तो उस समय न जाने कहां से कोई आ जाएगा और उस बात को सफल कर जाएगा। प्रकृति सहयोग के साथ साथ उसे नीचे भी गिरने नहीं देती ।

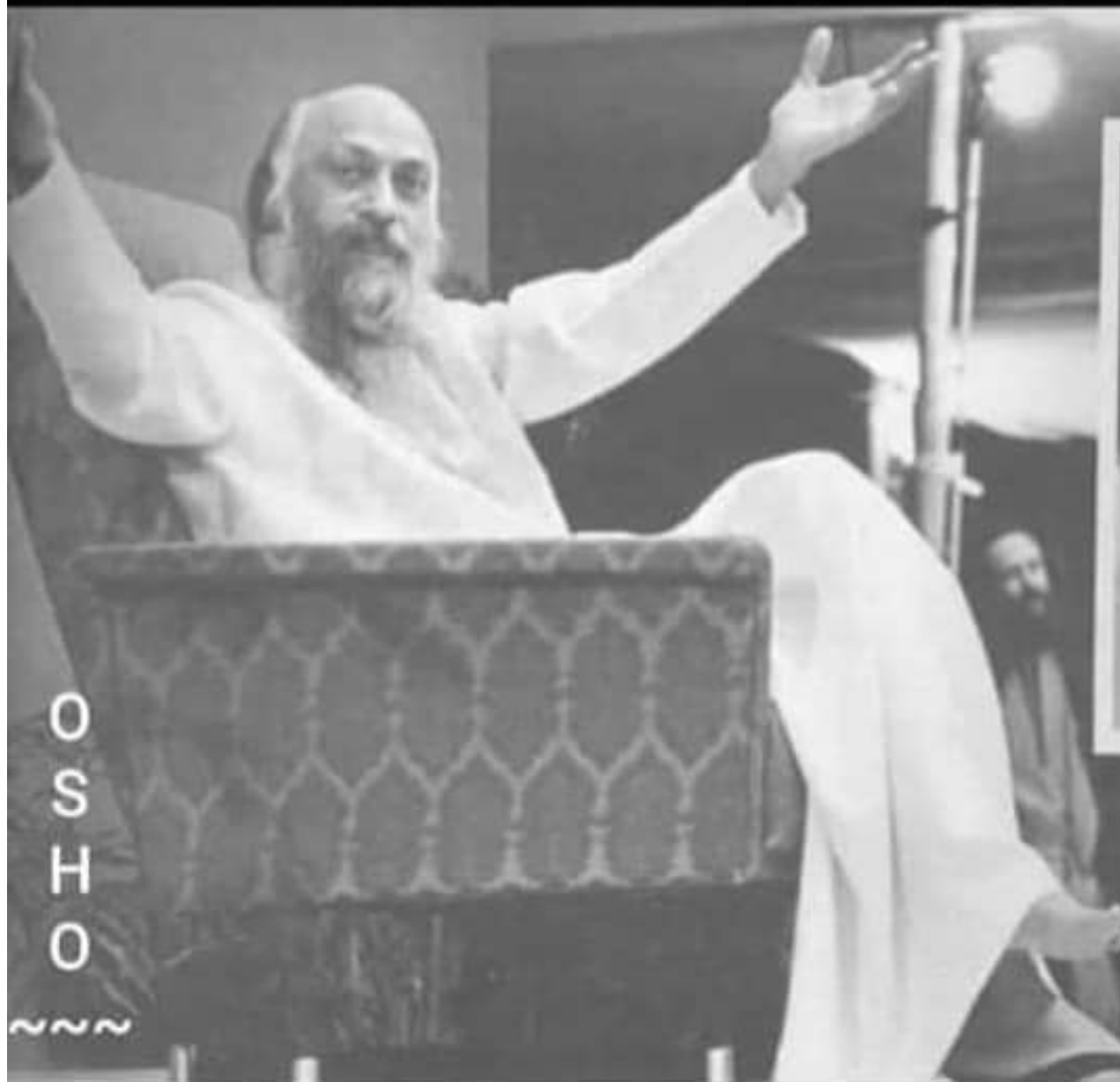
जैसे ही तुम ने परमात्मा पर छोड़ा वह दोनों बातों का ख्याल रखता है।

इस नियम को नानक हुक्म कहते हैं। ऐसा नहीं कि नानक हुक्म कह कर छोड़ देते हैं। हुक्म के संबंध में नानक तो कहते हैं....हुक्मी हुक्म चलाये और अपने बारे में नानक कहते हैं...नानक विगसे बेपरवाह...मतलब अब तू ही कर ... मैं तो बेपरवाह हो गया। उस हुक्म का ज्ञान हो जाने के बाद कबीर भी कहते हैं..... पाछे पाछे हरी फिरे कहत कबीर कबीर...क्योंकि सब संशय मिट गये। सब उस पर छोड़ दिया।

कृष्ण जो फल की इच्छा न करने को कहते हैं इस का भी यही मतलब है सब उस पर छोड़ दो... अर्जन को कहते हैं तू मेरी शरण में आ जा मतलब उस नियम उस हुक्म की शरण ले लो...विजय पराजय कोई भूल जाओ।

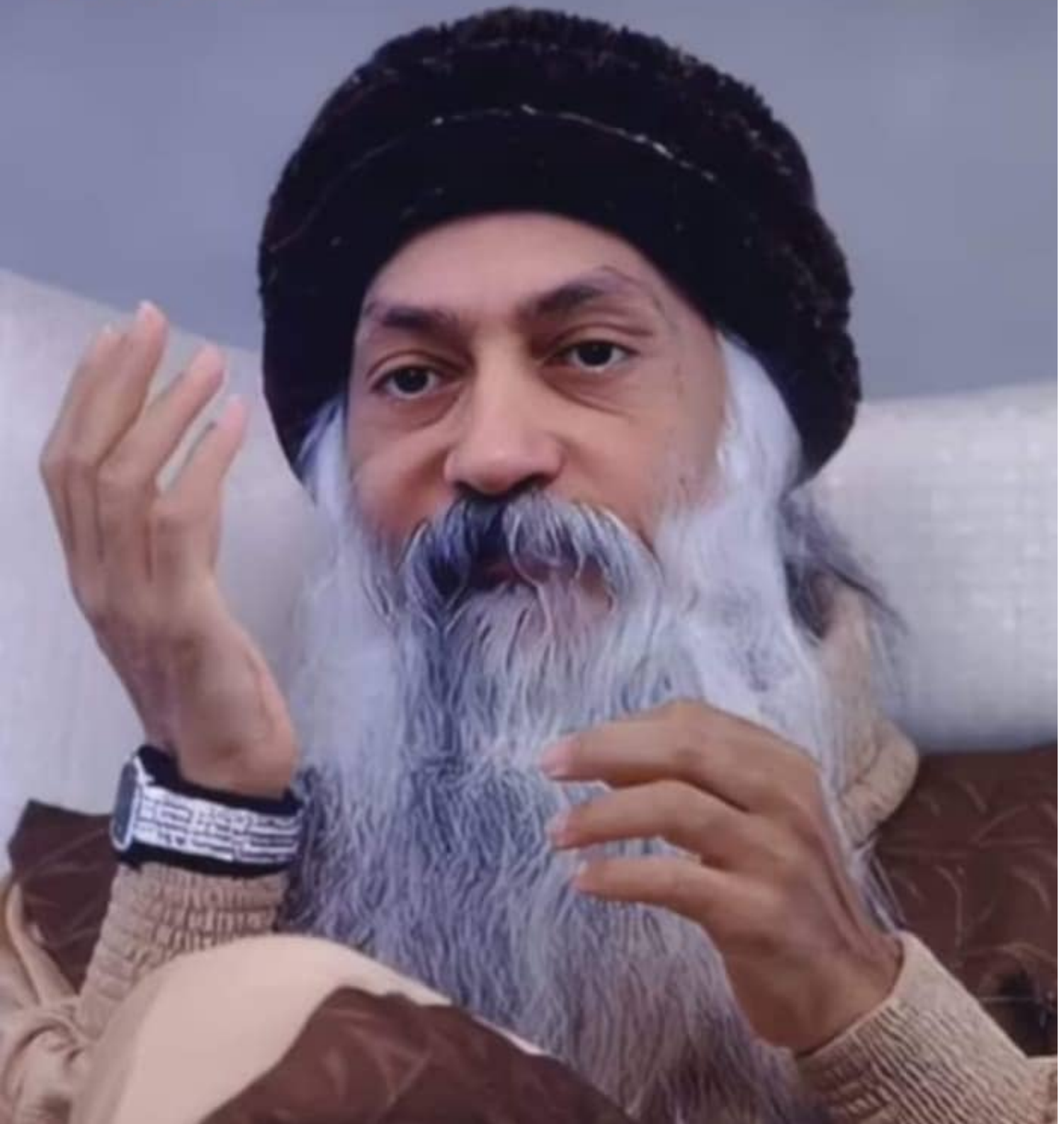
तुम्हें एक और बहुत ऊँचे नियम का पता
नहीं कि

"अस्तित्व उनकी सुरक्षा करता है,
जो सत्य की खोज में है। "



धीरे-धीरे तुम्हें दिखेगा कि तुम गिर नहीं
सकते, अस्तित्व उसकी अनुमति नहीं देगा

Osho



माला तो कर में फिरे , जीभ
फिरे मन मांहि ।
मनुआ तो चहुं दिशि फिरे ,
यह तो सुमरन नांहि।



19K

231 comments • 5.2K shares • 676K views



Like



Comment



Give



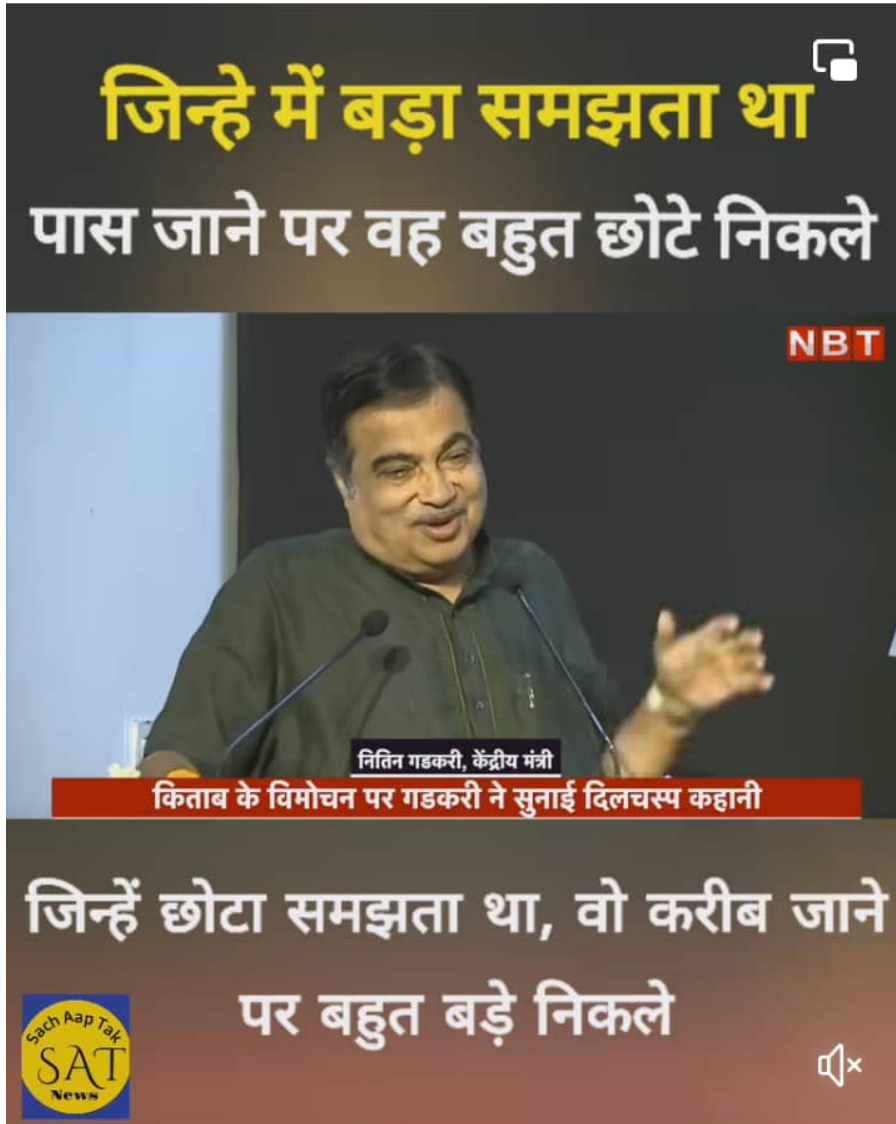
Share



Sach Aap Tak • Follow



26 Aug 2022 •



331K

4.6K comments • 28K shares • 12M views



Like



Comment



Give



Share



Avush Shivhare





कर्म बड़ा या भाग्य?

एक सुपर स्टार थे .. राजेश खन्ना। शूटिंग के बाद रात तीन बजे तक स्काच पीते थे। चार बजे खाना खाते थे। शूटिंग होती थी सुबह दस बजे, पहुंचते थे, शाम चार बजे



ठगा सा रह गया। पत्नी समझी कि कहीं पागल तो नहीं हो गया-आंख से आंसू न गिरा, ओंठ से चीख न निकली, दुख का एक शब्द न उठा, एक आह न प्रकट हुई। पत्नी घबड़ायी। उसने पति को हिलाया कि तुम्हें क्या हो गया? पता था कि बेटे का दुख भारी होगा। कहीं विक्षिप्त तो नहीं हो गया! कहीं पागल तो नहीं हो गया! ऐसा सुन्न क्यों हो गए हो? बोलो कुछ। पति हंसने लगा। उसने कहा, मैं बड़ी दुविधा में पड़ गया हूं। किसके लिए रोऊं? अभी बारह सुंदर युवक मेरे बेटे थे, स्वर्ण के महल थे, सब सुख था, वह अचानक टूट गया। उन बारह के लिए रोऊं जो मर गए, या इस एक के लिए रोऊं जो मर गया? क्योंकि जब मैं उन बारह के साथ था, इस एक को भूल ही गया था। पता ही न था कि मेरा कोई बेटा है। अब इस एक के पास हूं, उन बारह को भूल गया हूं। सच कौन है?

सहजो सुपने एक पल, बीतें बरस पचास-स्वप्न में एक क्षण में पचास वर्ष जीवन के बीत जाते हैं। तुम्हारे जीवन के पचास वर्ष भी सुपने के एक पल से ज्यादा नहीं हैं। कितने लोग इस जीवन में रहे हैं। कितने अनंत लोग इस पृथ्वी पर हुए हैं। उन्होंने भी ऐसे ही सपने देखे थे, जैसा तुम देखते हो। उन्होंने भी ऐसी ही महत्वाकांक्षाएं पाली थीं, जैसी तुम पालते हो। उन्होंने भी पद और प्रतिष्ठा के लिए ऐसी ही दौड़ साधी थी। वे भी लड़े थे, मरे थे। उन्होंने भी सुख-दुख पाए थे, मित्र-शत्रु बनाये थे, अपने-पराये माने थे। फिर सब विदा हो गए। वैज्ञानिक कहते हैं, जिस जगह पर तुम बैठे हो, जिस जगह पर एक आदमी खड़ा है, उस पर कम से कम दस लोगों की लाशें दबी हैं। उस जमीन में कोई दस लोग मर के मिट्टी हो चुके हैं। तुम भी उन्हीं दस लोगों की धूल में आज नहीं कल समाविष्ट हो जाओगे। धूल रह जाती है अखरी में, सब सपने उड़ जाते हैं। मिट्टी-मिट्टी में गिर जाती है। दो मिट्टियों के बीच ये जो थोड़ी देर के लिए सपने का संसार है, संदेह करना हो इस पर करो। और आश्चर्य है कि लोग इस पर तो संदेह नहीं करते, शाश्वत पर संदेह करते हैं।

बिन घन परत फुहार-(प्रवचन-09)

संकलन-रामजी 🙏🌹🌹

👍 134

2 comments • 12 shares





चीन में एक बड़ी पुरानी कथा है। एक सम्राट का बेटा मरता था। वो इकलौता बेटा था। आखिरी घड़ी करीब थी; चिकित्सकों ने कहा, बच न सकेगा अब। तो तीन दिन से सम्राट सोया ही नहीं, उसके पास बैठा है। आखिरी सांस घिसटती है। कभी भी टूट सकती है। बड़ा प्यारा बेटा है। इकलौता है। इसके ऊपर सारी आशाएं थीं, सारे सपने थे। यही भविष्य था। बूढ़ा सम्राट रोता है। लेकिन कुछ करने का उपाय नहीं। सब किया जा चुका है। कोई दवा काम नहीं आती, कोई चिकित्सक जीत नहीं पाता। बीमारी असाध्य है। मृत्यु होगी ही।

चौथी रात सम्राट बैठा है। तीन रात सोया नहीं—झपकी आ गयी। सपना देखा एक बड़ा...कि बड़े स्वर्ण-महल हैं...सारी पृथ्वी पर चक्रवर्ती राज्य है उसका...एकछत्र राज्य है...बारह सुंदर, स्वस्थ, युवा उसके बेटे हैं...उनके शरीर का सौष्ठव, उनके बुद्धि की प्रतिभा की कोई तुलना नहीं है... हीर-जवाहरात उसके महल की सीढ़ियों पर जड़े हैं...अपार संपदा है... वह बड़े सुख में...गहन सुख में...कोई दुख नहीं है...जब वे ऐसा सपना देख रहा है, तभी पत्नी छाती पीट के रोयी। लड़का मर चुका है। नींद टूट गयी। सामने पड़ी लाश देखी। अभी-अभी सपने में जाते, विदा होते महल-स्वर्ण के, चमकते हुए; वे बारह पुत्र-उनकी सुंदर सौष्ठव देह, उनकी प्रतिभा; आनंद की वो आखिरी झलक जो अभी सपने ने पैदा की थी, वो अभी मौजूद थी। और इधर बेटा मर गया। इधर चीख-पुकार मची। सम्राट किर्कतव्यविमूढ़ हो गया। कुछ सोच न पाया। एक क्षण को ठगा सा रह गया। पत्नी समझी कि कहीं पागल तो नहीं हो गया—आंख से आंसू न गिरा, ओंठ से चीख न निकली, दुख का एक शब्द न उठा, एक आह न प्रकट हुई। पत्नी घबड़ायी। उसने पति को हिलाया कि तुम्हें क्या हो गया? पता था कि बेटे का दुख भारी होगा। कहीं विक्षिप्त तो नहीं हो गया! कहीं पागल तो नहीं हो गया! ऐसा सुन्न क्यों हो गए हो? बोलो कुछ। पति हंसने लगा। उसने कहा, मैं बड़ी दुविधा में पड़ गया हूं। किसके लिए रोऊं? अभी बारह सुंदर युवक मेरे बेटे थे, स्वर्ण के महल थे, सब सुख था, वह अचानक टूट गया। उन बारह के लिए रोऊं जो मर गए, या इस एक के लिए रोऊं जो मर गया? क्योंकि जब मैं उन बारह के साथ था, इस एक को भूल ही गया था। पता ही न था कि मेरा कोई बेटा है। अब इस एक के पास हूं, उन बारह को भूल गया हूं। सच कौन है?

facebook



Swami Lokeshanand

4m · 🌐



एक बार एक नदी में बड़ी जोर की बाढ़ आई। प्रलयकारी लहरें नदी किनारे पर के बड़े बड़े पेड़ भी बहा ले गईं। उस बाढ़ भरी नदी की उफनती लहरों में जो अनगणित पेड़ बहे जा रहे थे, उनमें से एक बहुत बड़ी लकड़ी भी डूबती उतरती, डूब जाने के भय से, किनारे लगने के लिए, बहुत संघर्ष कर रही थी। पर उन लहरों के सामने उसके सभी प्रयास विफल हो रहे थे। तभी उस लकड़ी ने, अपने ही जैसी एक दूसरी लकड़ी को, नदी की प्रचंड धारा पर मस्त होकर तैरते देखा। और वह अकेली ही नहीं थी, उसके ऊपर बहुत से मनुष्य भी अपना अपना सामान लिए बैठे थे। इस डूबती लकड़ी ने, उस तैरती लकड़ी से पूछा- बहन! हम दोनों एक जैसी ही हैं। पर मैं डूब रही हूँ और तुम तैर रही हो। हम दोनों में इतना अंतर कैसे आ गया? तैरती लकड़ी बोली- बहन! मैं भी पहले तुम जैसी ही लकड़ी थी। पर मैं एक कारीगर के हाथ लग गई। उसने मुझे भीतर से खोखला कर दिया। तभी से मैं नदी में सुखपूर्वक तैरा करती हूँ। पर अब मुझे कोई भी लकड़ी नहीं कहता। अब सभी मुझे नाव कह कर पुकारते हैं। लोकेशानन्द कहता है कि यह जगत ही नदी है। वासना ही लहरें हैं। और हम ही वो लकड़ी हैं, जो वासना की लहरों में डूबे जा रहे हैं। यदि हम किन्हीं आत्मज्ञानी महात्मा के हाथ लग जाएँ, तो उन कारीगर के पुरुषार्थ से, कुछ ही समय में, भीतर के अहंकार को निकाल कर खोखला कर दिए जाने पर, हम लकड़ी से नाव बन कर, उन्हीं घरघराती लहरों की छाती पर, मदमस्त होकर खुद तो तैरने लगते ही हैं, अपने साथ साथ न मालूम कितने औरों को भी तैराने लगते हैं। यों आत्मज्ञानी महात्मा के हाथ लगा मनुष्य नहीं डूबता। फिर वह नहीं डूबता।

आत्मज्ञानी महात्मा के हाथ लगा मनुष्य नहीं डूबता।



इसलिए अचानक अनेक बार संतों की वाणी में तुम्हें यह मिलेगा कि पुरुष की भाषा बोलते वक्त वे कभी भी स्त्री भाषा में बोलने लगते हैं। तुम चौंकते भी नहीं। तुम धीरे-धीरे इसके आदी हो गए हो कि यह संतों की आदत है। यह आदत की बात नहीं है, इसके पीछे राज है--गहरा राज है।

‘पिय को खोजन मैं चली, आपुई गई हिराय।’

जैसे ही उस परमात्मा का नाम आता है, परमात्मा के आते ही संत एकदम स्त्रैण हो जाता है। कबीर कहते हैं: मैं राम की दुल्हनिया। फिर वह दूल्हा नहीं रह जाता, दुल्हनिया हो जाता है। फिर राम आ गया तो अब राम दूल्हा, अब वह राम की दुल्हनिया।

स्त्री की कुछ खूबियां हैं। वह प्रतीक्षा करती है, आक्रामक नहीं होती। प्रेम भी हो उसे तो अपनी तरफ से निवेदन नहीं करती, राह देखती है। पुरुष को ही निवेदन करना पड़ता है। अगर कोई स्त्री किसी पुरुष के पीछे पड़ जाए तो पुरुष घबड़ा जाएगा, पहले ही से भाग जाएगा, पहले ही से डर जाएगा। स्त्री कभी किसी के पीछे नहीं पड़ती। भीतर कितना ही उसके लिए आग्रह उठ रहा हो, प्रेम जग रहा हो, मगर वह प्रतीक्षा करेगी। वह उसका गुणधर्म है। वह उसका प्रसाद है। वह राह देखेगी।

और तुम जब उससे प्रार्थना करोगे प्रेम की, तब भी वह एकदम से हां नहीं भर देगी। हां भी भरेगी, लेकिन कहेगी ‘नहीं’। इस ढंग से कहेगी नहीं, इस प्यारे ढंग से कहेगी कि तुम समझ जाओगे कि नहीं का अर्थ हां है। यूँ रस-भरे ढंग से, यूँ प्रीतिकर ढंग से नहीं का उच्चार करेगी, इतने मदमाते ढंग से, इतनी मस्ती से, इतने आह्लाद से कि उसमें कहीं भी नकार नहीं होगा, लेकिन कहेगी ‘नहीं’।

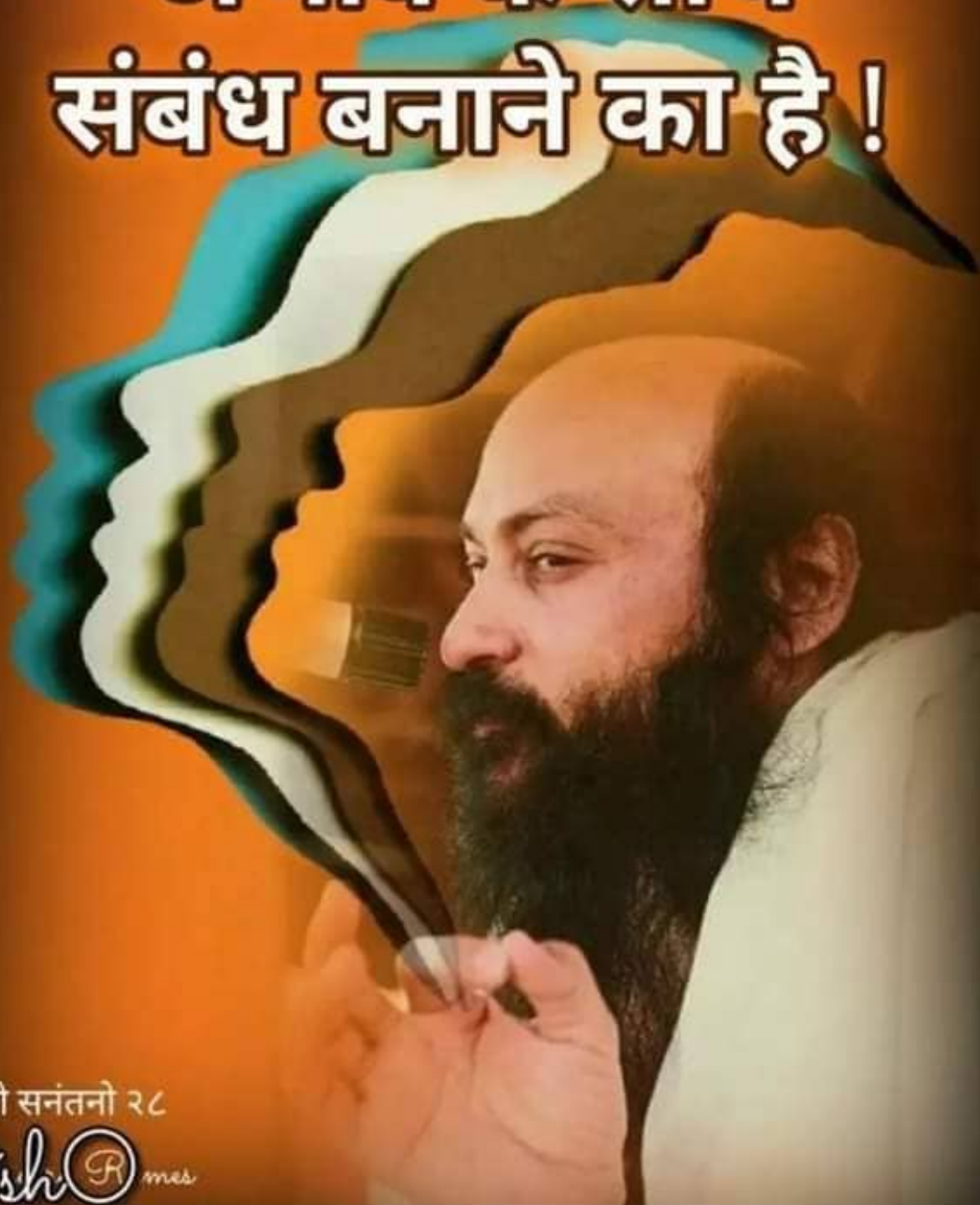
‘नहीं’ कह-कह कर वह सिर्फ घोषणा कर रही है कि इतना भी आक्रामक भाव नहीं है उसमें कि एकदम से हां भर दे। तुम निवेदन करो और स्त्री एकदम से हां भर दे, तो भी तुम थोड़े चौंक जाओगे। क्योंकि उसका मतलब यह हुआ कि वह राह ही देख रही थी कि कब तुम कहो और कब वह हां भरे। वह ‘नहीं’ करती रहेगी। वह शर्माती रहेगी। वह लजाती रहेगी। संतों ने नहीं लगे, संतों ने नहीं लगे।

सब
उपद्रव भीतर है,
बाहर नहीं।
बाहर तो
सिर्फ बहाने हैं,
निमित्त, खूंटियां,
जिन पर हम
अपने भीतर
के उपद्रव
टांग देते हैं।
फिर धन हो,
पद हो,
प्रतिष्ठा हो,
परिवार हो,
प्रियजन हों,
मित्र हों, देह हो,
मन हो-
-कोई भी बहाना
काम दे देगा।

anamcara Rame

ओशो

मन का सारा खेल
अभाव के साथ
संबंध बनाने का है !



एस धम्मो सनंतनो २८

Om Shri R mes



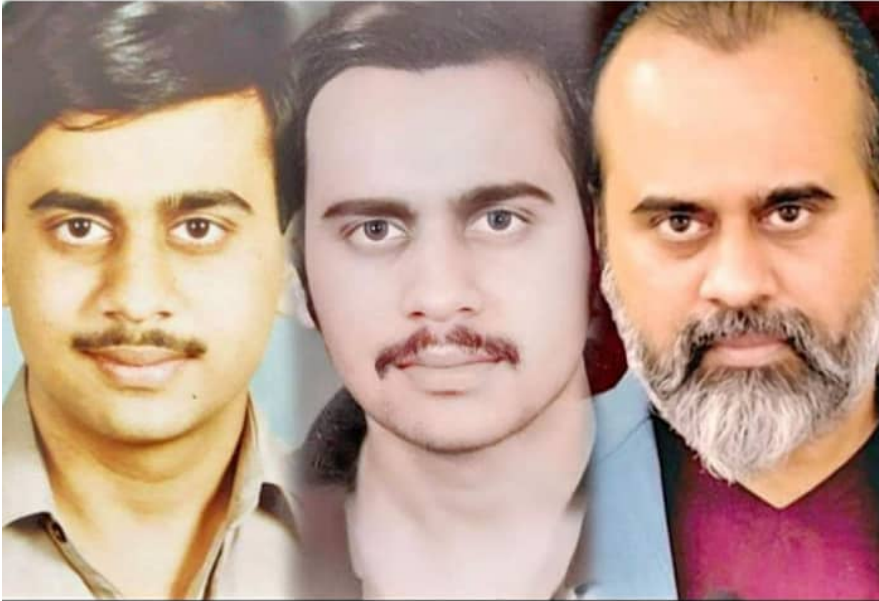
आचार्य प्रशांत



संदेश को हर व्यक्ति तक लेकर जाना है।

इस भगीरथ प्रयास में अपना योगदान दें:

<https://acharyaprashant.org/hi/contribute/contribute-work?cmId=m00067-t4>



IIT-IIM-सिविल सेवा फिर अध्यात्म क्यों?

(पूरी बात विवरण में)

acharyaprashant.org

आचार्य प्रशांत के हाथ मज़बूत करें

Learn more



Like



Comment



Share



606

Most relevant ▼

Write a comment...



बुद्ध एक जंगल से गुजरते थे, राह भटक गए थे। अब तुम कहोगे कि बुद्धपुरुष और राह भटक जाते हैं! बुद्धपुरुष अगर राह भटक ही न सकते हों, तो मुर्दा। राह भटक गए, जहा पहुंचना था न पहुंच पाए, देर होने लगी। तो आनंद ने राहगीर से पूछा कि गांव कितनी दूर है ' उस राहगीर ने कहा, बस दो कोस। चल पड़े, दो कोस पूरे हो गए, लेकिन गांव का कोई पता नहीं। फिर किसी राहगीर को पूछा। उसने कहा, बस दो कोस। आनंद ने कहा, ये लोग कैसे हैं? इनका कोस कितना बड़ा? दो कोस हम पार हो गए। पहला आदमी धोखा दे गया मालूम होता है। या उसे पता नहीं था, जवाब देने के मजे में जवाब दे गया। क्योंकि गुरु होने का जब मौका मिले तो कोई छोड़ता नहीं। तुम्हें पता भी न हो कि कितनी दूर है, कह दिया; अब कम से कम कहने से पता तो चला कि पता है।

फिर बुद्ध मुस्कुराते रहे। दो कोस फिर पूरे हो गए, अब भी गांव का कोई पता नहीं। आनंद ने कहा, ये इस गांव के आदमी सभी झूठे मालूम होते हैं। फिर किसी को पूछा। उसने कहा कि बस दो कोस। तब तो आनंद गुस्से में आ गया। उसने कहा, हद हो गई, जो देखो वही दो कोस कहता है! दो कोस का मतलब कितना होता है?

बुद्ध ने कहा, नाराज न होओ। इस गांव के लोग बड़े करुणावान हैं। चार कोस तो चला दिया उन्होंने। अगर पहला आदमी कहता दस कोस, आठ कोस, शायद हम थककर ही बैठ जाते कि अब कहां जाना! अब नहीं चलना हो सकता। दो कोस के भरोसे पर चल लिए, दो कोस पार हो गया। फिर दो कोस के भरोसे पर चल लिए, वह भी पार हो गया। अब इसकी मान लो। ऐसा लगता है कि अब दो ही कोस है। छह कोस रहा होगा शुरू में।

जब वे पहुंच गए दो कोस के बाद तो आनंद ने बुद्ध से क्षमा मांगी कि मुझे क्षमा कर दें। मैं तो समझा कहां के झूठे, बेईमान, दुष्ट लोग हैं कि कम से कम रास्ता तक सही नहीं बता सकते। लेकिन बुद्ध ने कहा, करुणावान हैं।

ओशो

एस धम्मो सनंतनो, भाग 2



तो उन्होंने कहा कि हमने एक प्रार्थना बना ली सोच-सोचकर तीनों ने। हमारी प्रार्थना यह है कि यू आर श्री, वी आर ऑल्सो श्री, हैव मर्सी ऑन अस। तुम भी तीन हो, हम भी तीन हैं, हम पर कृपा करो।

उस पुरोहित ने कहा कि बंद करो यह। यह कोई प्रार्थना है! प्रार्थना तो ऑथराइड होती है। चर्च के द्वारा उसके लिए स्वीकृति और प्रमाण होना चाहिए। तो मैं तुम्हें प्रार्थना बताता हूँ। इसको याद करो और आज से यह प्रार्थना शुरू करो। उन्होंने कहा, आपकी कृपा, बता दें। महापुरोहित ने, लंबी प्रार्थना थी चर्च की, वह बताई।

उन लोगों ने कहा कि क्षमा करें, हम बिलकुल गंवार हैं, इतनी लंबी याद न रहेगी। आप थोड़ा संक्षिप्त कर दें, कुछ थोड़ा सरल! पुरोहित ने कहा कि न तो यह सरल हो सकती है और न संक्षिप्त। यह प्रमाणित प्रार्थना है। और जो इसको नहीं करेगा, उसके लिए स्वर्ग के द्वार बंद हैं। तो उन्होंने कहा कि एक दफा आप फिर से दोहरा दें, ताकि हम याद कर लें। दुबारा कही। फिर भी उन्होंने कहा, एक बार और सिर्फ दोहरा दें। और तीनों ने दोहराने की भी कोशिश की और उन्होंने धन्यवाद दिया पुरोहित को, फिर चरण छुए। पुरोहित प्रसन्न नाव पर वापस लौटा।

आधी झील में आया था कि देखा कि पीछे से एक बवंडर चला आ रहा है पानी पर। वह तो घबड़ाया कि यह क्या चला आ रहा है? थोड़ी देर में साफ हुआ कि वे तीनों पानी पर दौड़ते चले आ रहे हैं! पुरोहित के तो प्राण निकल गए। वे पानी पर चल रहे हैं! और तीनों आकर पास, पकड़कर बोले कि एक बार और दोहरा दें। वह हम भूल गए। हम गरीब बेपढ़े-लिखे लोग। उस पुरोहित ने कहा कि क्षमा करो। तुम्हारी प्रार्थना काम कर रही है। तुम अपनी वही जारी रखो कि वी आर श्री, यू आर श्री, हैव मर्सी ऑन अस।

प्रेम एक हार्दिक घटना है। न तो उसकी कोई प्रामाणिक व्यवस्था है; न कोई विधि है, न कोई तंत्र है न कोई मंत्र है। प्रेम एक हार्दिक भाव है। प्रार्थना एक हार्दिक भाव है। उसे सिखाने का कोई भी उपाय नहीं है। और पृथ्वी पर चूंकि सभी धर्म सिखाने की कोशिश कर रहे हैं, इसलिए लोग अधार्मिक हो गए हैं। सिखाने से कभी भी कोई आदमी धार्मिक नहीं

नो गन-गन।



आशा का हिन्दा साहित्य

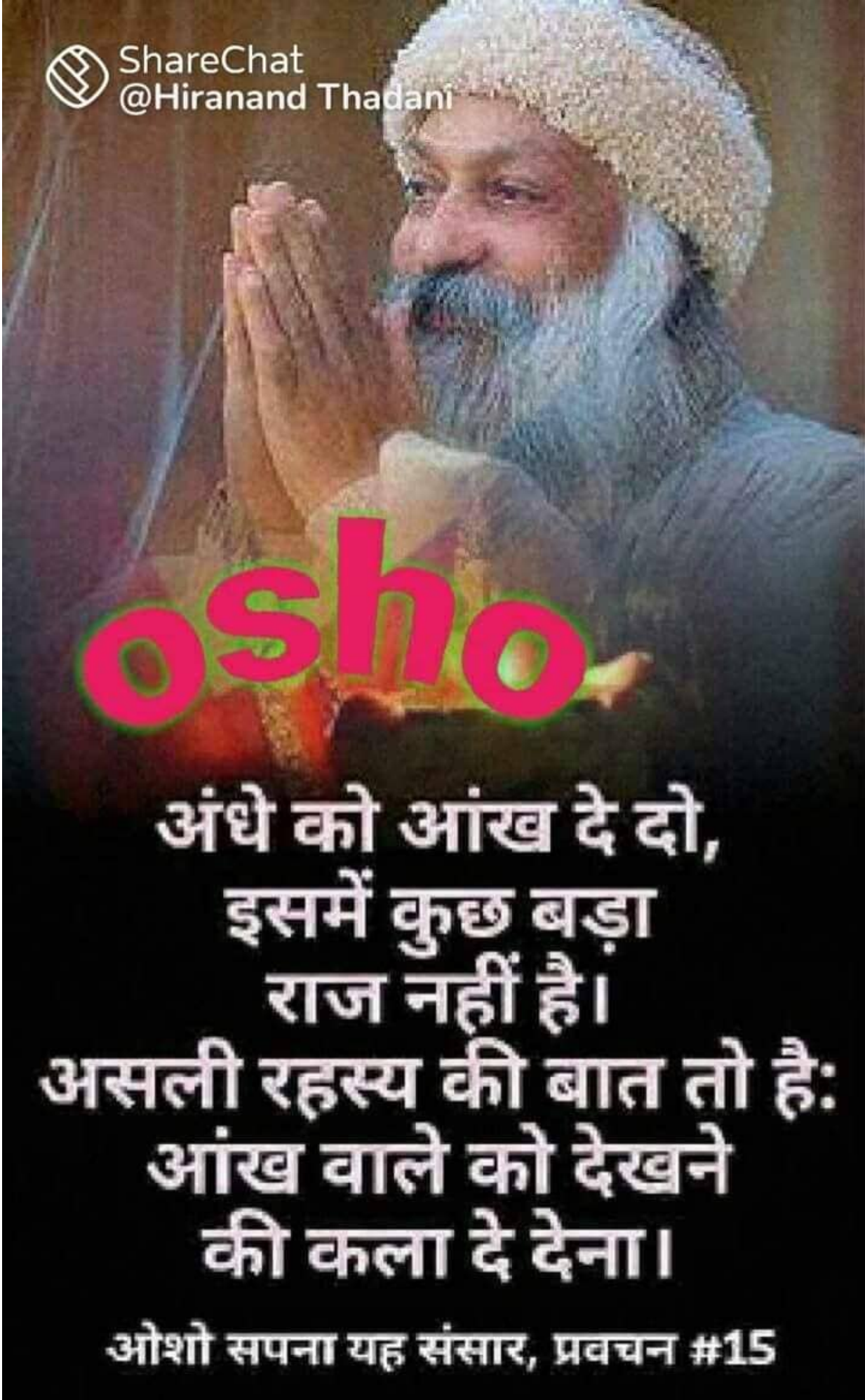
Seema Mangal · 34m ·

● टालस्टाय ने एक छोटी सी कहानी लिखी है। टालस्टाय ने लिखा है कि एक झील के किनारे तीन फकीर थे। तीनों बेपढ़े लिखे थे। लेकिन उनकी बड़ी ख्याति हो गई, और दूर दूर से लोग उनके दर्शन करने को आने लगे। तो रूस का जो सबसे बड़ा पुरोहित था, उसके कानों में भी खबर पहुंची कि तीन पवित्र पुरुष झील के उस पार हैं। पर उसने कहा कि मुझे उनका पता ही नहीं! और उन्होंने कभी चर्च में दीक्षा भी नहीं ली, वे पवित्र हो कैसे सकते हैं! और हजारों लोग वहां जा रहे हैं और दर्शन करके कृतार्थ हो रहे हैं! तो वह भी देखने गया कि मामला क्या है?

नाव पर सवार हुआ, झील के उस पार पहुंचा। वे तीनों तो बिलकुल बेपढ़े लिखे गंवार थे। वे अपने झाड़ू के नीचे बैठे थे। जब महापुरोहित उनके सामने गया तो उन तीनों ने झुककर उसको प्रणाम किया। महापुरोहित तभी आश्चर्य हो गया कि कोई डर की बात नहीं है। जब तीनों चरण छू रहे हैं, इनसे कोई ईसाई—धर्म को खतरा नहीं है। उस महापुरोहित ने कहा कि तुम क्या करते हो? क्या है तुम्हारी साधना? तुम्हारी पद्धति क्या है? उन्होंने कहा, पद्धति? वे एक दूसरे की तरफ देखने लगे।

पुरोहित ने कहा, बोलो, तुम करते क्या हो? तुमने साधा क्या है? उन्होंने कहा कि हम ज्यादा तो कुछ भी जानते नहीं। पढ़े—लिखे हम हैं नहीं। किसी ने हमें सिखाया नहीं। हमारी तो एक छोटी—सी प्रार्थना है, वही हम करते हैं। पर वे बड़े संकोच में भर गए कि इतने बड़े पुरोहित को कैसे...! उन्होंने कहा, फिर प्रार्थना भी हमारी खुद की ही गढ़ी हुई है, क्योंकि हमने किसी से सीखा नहीं और किसी ने हमें कभी बताया नहीं। क्या है तुम्हारी प्रार्थना? पुरोहित तो अकड़ता चला गया। उसने कहा कि बिलकुल ही गंवार हैं! क्या है तुम्हारी प्रार्थना? उन्होंने कहा कि अब आपसे हम कैसे कहें, बड़ी छोटी—सी है। हमने सुन रखा है कि परमात्मा तीन हैं, ट्रिनिटी, त्रिमूर्ति।

ईसाई मानते हैं, तीन हैं परमात्मा—परम पिता, उसका बेटा जीसस और दोनों के बीच में एक पवित्र आत्मा, होली घोस्ट—इन तीन के जोड़ से परमात्मा बना है, ट्रिनिटी। जैसा हम त्रिमूर्ति मानते हैं—शंकर विष्णु, ब्रह्मा।



osho

अंधे को आंख दे दो,
इसमें कुछ बड़ा
राज नहीं है।
असली रहस्य की बात तो है:
आंख वाले को देखने
की कला दे देना।

ओशो सपना यह संसार, प्रवचन #15



तो उन्होंने कहा कि हमने एक प्रार्थना बना ली सोच-सोचकर तीनों ने। हमारी प्रार्थना यह है कि यू आर श्री, वी आर ऑल्सो श्री, हैव मर्सी ऑन अस। तुम भी तीन हो, हम भी तीन हैं, हम पर कृपा करो।

उस पुरोहित ने कहा कि बंद करो यह। यह कोई प्रार्थना है! प्रार्थना तो ऑथराइड होती है। चर्च के द्वारा उसके लिए स्वीकृति और प्रमाण होना चाहिए। तो मैं तुम्हें प्रार्थना बताता हूँ। इसको याद करो और आज से यह प्रार्थना शुरू करो। उन्होंने कहा, आपकी कृपा, बता दें। महापुरोहित ने, लंबी प्रार्थना थी चर्च की, वह बताई।

उन लोगों ने कहा कि क्षमा करें, हम बिलकुल गंवार हैं, इतनी लंबी याद न रहेगी। आप थोड़ा संक्षिप्त कर दें, कुछ थोड़ा सरल! पुरोहित ने कहा कि न तो यह सरल हो सकती है और न संक्षिप्त। यह प्रमाणित प्रार्थना है। और जो इसको नहीं करेगा, उसके लिए स्वर्ग के द्वार बंद हैं। तो उन्होंने कहा कि एक दफा आप फिर से दोहरा दें, ताकि हम याद कर लें। दुबारा कही। फिर भी उन्होंने कहा, एक बार और सिर्फ दोहरा दें। और तीनों ने दोहराने की भी कोशिश की और उन्होंने धन्यवाद दिया पुरोहित को, फिर चरण छुए। पुरोहित प्रसन्न नाव पर वापस लौटा।

आधी झील में आया था कि देखा कि पीछे से एक बवंडर चला आ रहा है पानी पर। वह तो घबड़ाया कि यह क्या चला आ रहा है? थोड़ी देर में साफ हुआ कि वे तीनों पानी पर दौड़ते चले आ रहे हैं! पुरोहित के तो प्राण निकल गए। वे पानी पर चल रहे हैं! और तीनों आकर पास, पकड़कर बोले कि एक बार और दोहरा दें। वह हम भूल गए। हम गरीब बेपढ़े-लिखे लोग। उस पुरोहित ने कहा कि क्षमा करो। तुम्हारी प्रार्थना काम कर रही है। तुम अपनी वही जारी रखो कि वी आर श्री, यू आर श्री, हैव मर्सी ऑन अस।

प्रेम एक हार्दिक घटना है। न तो उसकी कोई प्रामाणिक व्यवस्था है; न कोई विधि है, न कोई तंत्र है न कोई मंत्र है। प्रेम एक हार्दिक भाव है। प्रार्थना एक हार्दिक भाव है। उसे सिखाने का कोई भी उपाय नहीं है। और पृथ्वी पर चूंकि सभी धर्म सिखाने की कोशिश कर रहे हैं, इसलिए लोग अधार्मिक हो गए हैं। सिखाने से कभी भी कोई आदमी धार्मिक नहीं हो सकता।



टालस्टाय ने एक छोटी सी कहानी लिखी है। टालस्टाय ने लिखा है कि एक झील के किनारे तीन फकीर थे। तीनों बेपढ़े लिखे थे। लेकिन उनकी बड़ी ख्याति हो गई, और दूर दूर से लोग उनके दर्शन करने को आने लगे। तो रूस का जो सबसे बड़ा पुरोहित था, उसके कानों में भी खबर पहुंची कि तीन पवित्र पुरुष झील के उस पार हैं। पर उसने कहा कि मुझे उनका पता ही नहीं! और उन्होंने कभी चर्च में दीक्षा भी नहीं ली, वे पवित्र हो कैसे सकते हैं! और हजारों लोग वहां जा रहे हैं और दर्शन करके कृतार्थ हो रहे हैं! तो वह भी देखने गया कि मामला क्या है?

नाव पर सवार हुआ, झील के उस पार पहुंचा। वे तीनों तो बिल्कुल बेपढ़े लिखे गंवार थे। वे अपने झाड़ू के नीचे बैठे थे। जब महापुरोहित उनके सामने गया तो उन तीनों ने झुककर उसको प्रणाम किया। महापुरोहित तभी आश्चर्य हो गया कि कोई डर की बात नहीं है। जब तीनों चरण छू रहे हैं, इनसे कोई ईसाई—धर्म को खतरा नहीं है। उस महापुरोहित ने कहा कि तुम क्या करते हो? क्या है तुम्हारी साधना? तुम्हारी पद्धति क्या है? उन्होंने कहा, पद्धति? वे एक दूसरे की तरफ देखने लगे।

पुरोहित ने कहा, बोलो, तुम करते क्या हो? तुमने साधा क्या है? उन्होंने कहा कि हम ज्यादा तो कुछ भी जानते नहीं। पढ़े—लिखे हम हैं नहीं। किसी ने हमें सिखाया नहीं। हमारी तो एक छोटी—सी प्रार्थना है, वही हम करते हैं। पर वे बड़े संकोच में भर गए कि इतने बड़े पुरोहित को कैसे...! उन्होंने कहा, फिर प्रार्थना भी हमारी खुद की ही गढ़ी हुई है, क्योंकि हमने किसी से सीखा नहीं और किसी ने हमें कभी बताया नहीं। क्या है तुम्हारी प्रार्थना? पुरोहित तो अकड़ता चला गया। उसने कहा कि बिल्कुल ही गंवार हैं! क्या है तुम्हारी प्रार्थना? उन्होंने कहा कि अब आपसे हम कैसे कहें, बड़ी छोटी—सी है। हमने सुन रखा है कि परमात्मा तीन हैं, ट्रिनिटी, त्रिमूर्ति।

ईसाई मानते हैं, तीन हैं परमात्मा—परम पिता, उसका बेटा जीसस और दोनों के बीच में एक पवित्र आत्मा, होली घोस्ट—इन तीन के जोड़ से परमात्मा बना है, ट्रिनिटी। जैसा हम त्रिमूर्ति मानते हैं—शंकर विष्णु, ब्रह्मा।

तो उन्होंने कहा कि हमने एक प्रार्थना बना ली सोच—सोचकर तीनों ने।



हो सकता है जब साधना करता था ऊपर तो सिर्फ दुग्धाहार करता रहा हो, उपवास करता रहा हो, शुद्ध फलाहार करता रहा हो। ऐसी ऊंची-ऊंची बातें सूझती हैं जब सुविधा होती है। लेकिन जहां सुविधा न हो वहां कोई उपवास करे! भरे पेट लोग उपवास करते हैं, भूखे पेट लोग उपवास करते। गरीब आदमी का धार्मिक दिन आता है तो उस दिन हलुआ-पूड़ी बनाता है। अमीर आदमी का धार्मिक दिन आता है तो उपवास करता है। जैनी अकारण उपवास नहीं करते, धन है तो उपवास करना पड़ता है। धार्मिक दिन--उपवास करना पड़ता है।

अब यह आदमी तो भूखा मर रहा था और उपवास का सोचा ही नहीं पांच साल इसने। और इतना ही नहीं, जब वह बाहर निकला तो वह बहुत-से कपड़े साथ लेकर निकला। क्योंकि तिब्बत में रिवाज है कि जब कोई मर जाता है तो उसके साथ दो जोड़ी कपड़े भी रख देते हैं। तो उसने सब मुर्दों के कपड़े इकट्ठे कर लिए थे कि जब निकलूंगा...आदमी का मन! और तिब्बत में यह भी रिवाज है, जब कोई मरता है तो उसके साथ दस-पांच रुपए भी रख देते हैं। उसने सब रुपए भी इकट्ठे कर लिए थे। एक पोटली में रुपए बांधे हुए था और एक पोटली में सारे कपड़े बांधे हुए था।

जब वे दोनों पोटलियां उसने बाहर खींची, लोगों ने कहा, यह क्या कर रहे हो? तुम अभी जिंदा हो? उसने कहा, मैं जिंदा हूं और भला-चंगा हूं। और यह पांच साल की मेरी कमाई है। एक पैसा नहीं छोड़ा है कहीं। सब ढूँढ डाला। काम भी नहीं था कोई दूसरा।

मर भी जाए आदमी, मुर्दाघर में भी पड़ा हो तो पैसा इकट्ठा करेगा। जिंदगीभर की आदतें ऐसी ही चली नहीं जातीं। फिर आदतों का सवाल परिस्थितियों से नहीं है, आदतों का सवाल मनःस्थितियों से है।

ओशो, नाम सुमिर मन बावरे--(प्रवचन-7)



और बड़े आश्चर्य की बात है...और प्रार्थना करने लगा। बौद्ध भिक्षु! परमात्मा को कभी माना नहीं था, लेकिन अब प्रार्थना करने लग गया। ऐसी कठिनाइयों में लोग परमात्मा को मान लेते हैं। परमात्मा के सिवा अब कोई सहारा नहीं दिखाई पड़ता था उसे। और प्रार्थना क्या करता था? प्रार्थना ऐसी, जो कि बुद्ध-धर्म के बिल्कुल खिलाफ। जिंदगी भर बौद्ध भिक्षु रहा! प्रार्थना यह थी कि अब कोई आश्रम में मर जाए। क्योंकि जब कोई मरे तभी चट्टान हटे। न कोई मरे तो चट्टान हटनेवाली नहीं है। कोई मर जाए आश्रम में। सोचता था कौन मरे। और एक ही प्रार्थना चौबीस घंटे। काम भी दूसरा नहीं था कि कोई मरे। हे भगवान, किसी को मार। किसी को भी मार, मगर जल्दी कर। ज्यादा देर हो गई तो मैं मर जाऊंगा।

आदमी को खुद जिंदा रहना हो तो वह किसी को भी मारने को तैयार हो जाए। यही तो सारे जिंदगी की गलाघोट प्रतियोगिता है। सब एक-दूसरे का गलाघोट रहे हैं। उस आदमी पर दया करना। उसने कुछ गलत प्रार्थना नहीं की। कितनी ही गलत मालूम पड़े, कितनी ही हिंसात्मक मालूम पड़े।

पांच साल बाद कोई मरा। कहते हैं न, देर है अंधेर नहीं। परमात्मा ने भी खूब देर से सुनी, पांच साल लग गए! सरकारी कामकाज! फाइल पहुंचते-पहुंचते भी तो समय लगता है। पहुंची होगी जब तक प्रार्थना, पांच साल बाद कोई मरा। चट्टान हटी। लोग तो दंग रह गए। जब उन्होंने चट्टान हटाई तो वह बाहर निकला आदमी। उसे देखकर एकदम घबड़ा गए। पहचान भी नहीं आया। सारे बाल शुभ्र हो गए थे। और बाल इतने बड़े हो गए थे कि जमीन छू रहे थे। दाढ़ी के बाल जमीन छू रहे थे। आंखें उसकी खराब हो गई थीं बिल्कुल क्योंकि पांच साल अंधकार में रहा। भयंकर बदबू उसकी देह से आ रही थी क्योंकि मांस सड़ा-सड़ाया, कीड़े-मकोड़े, गंदा पानी, यही उसका आहार था।

हो सकता है जब साधना करता था ऊपर तो सिर्फ दुग्धाहार करता रहा हो, उपवास करता रहा हो, शुद्ध फलाहार करता रहा हो। ऐसी ऊंची-ऊंची बातें सूझती हैं जब सुविधा होती है। लेकिन जहां सुविधा न हो वहां कोई उपवास करे! भरे पेट लोग उपवास करते हैं, भूखे पेट लोग उपवास करते हैं। यही आदमी जो प्रार्थना करता था वह है जो उस दिन



Kunal Pandey · 2h · 🌐

एक बड़ी महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना है, तिब्बत में घटी। भरोसा न आए ऐसी घटना है, मगर घटी। आदमी के मोह के संबंध में खबर देती है। लामाओं का एक आश्रम तिब्बत में है, उस आश्रम का यही नियम था कि जो भी मरे, आश्रम के नीचे ही पहाड़ की गहराइयों में बड़ी खंदकें थीं। उन खंदकों में मरघट था, वहां लाश को डाल देते थे अंदर। गुफाएं थीं, खोह थी। चट्टान हटाकर लाश को नीचे डाल देते थे, चट्टान फिर लगा देते थे।

एक आदमी मरा, वह पूरा मरा नहीं था, अधमरा था। अभी होश कुछ-कुछ चला गया था, लेकिन लोगों ने जल्दी की होगी। मरे आदमी को जल्दी विदा करने की फिक्र थी। उन्होंने उठा दिया पत्थर और लामा को डाल दिया नीचे। कोई घंटे-दो घंटे वह होश में आ गया। अब उस चट्टान के नीचे से कितना ही चिल्लाए, आवाज बाहर न जाए। और आवाज अगर जाए भी बाहर तो क्या तुम सोचते हो, कोई चट्टान हटाएगा? घबड़ाएंगे लोग कि पता नहीं भूत हो गया, प्रेत हो गया, क्या हो गया! और चट्टानें रख देंगे ऊपर कि किसी तरह अंदर ही दबा रहे, अब बाहर न निकल आए।

अब यह आदमी बिल्कुल बूढ़ा था। और बड़ी मुश्किल में पड़ गया। भयंकर अंधकार! और वहां सैकड़ों लाशें सड़ चुकी थीं, उनकी भयंकर बदबू! भूख भी लगने लगी। चिल्लाता भी रहा तो और भूख लगने लगी। प्यास भी लगने लगी। तुम चकित होओगे जानकर, वह सड़ी हुई लाशों का मांस खाता रहा। और गुफा की दीवारों से जो आश्रम का नाली इत्यादि का गंदा पानी उतर आता था, उसको चाट-चाटकर पीता रहा। लाशों में जो कीड़े-मकोड़े पड़ गए थे वे भी खाने लगा। करेगा क्या? जिंदगी का मोह ऐसा है।

और बड़े आश्चर्य की बात है...और प्रार्थना करने लगा। बौद्ध भिक्षु! परमात्मा को कभी माना नहीं था, लेकिन अब प्रार्थना करने लग गया। ऐसी कठिनाइयों में लोग परमात्मा को मान लेते हैं। परमात्मा के सिवा अब कोई सहारा नहीं दिखाई पड़ता था उसे। और प्रार्थना क्या करता था? प्रार्थना ऐसी, जो कि बुद्ध-धर्म के बिल्कुल खिलाफ। जिंदगी भर बौद्ध भिक्षु रहा! प्रार्थना यह थी कि अब कोई आश्रम में मर जाए।



कहा—निश्चित है, अति प्राचीन है—तीन हजार साल पुराना है। सोने के संदूक में बंद है, हीरे—जवाहरात जड़े हैं, उसकी पूजा की जाती है वर्ष में एक दिन, वह बड़ा पवित्र कछुआ है, वह धरोहर है, जब पहली दफा सम्राट के पूर्वज सम्राट बने थे तब से वह चला आया है। चवांगत्सु ने पूछा कि मैं तुमसे यह पूछता हूँ अगर इस कछुए से जो कीचड़ में मजा ले रहा है तुम पूछो कि तुम सोने की पेटी में बंद होना चाहोगे?—हीरे—जवाहरात जड़ी होगी और वर्ष में एक दिन तुम्हारी पूजा भी होगी, तो यह सोने की पेटी में बंद होने के लिए राजी होगा? या इसी कीचड़ में मजे से पूँछ हिलाना पसंद करेगा? वजीर ने कहा कि कछुए की बात करते हो तो कछुआ तो कीचड़ में ही पूँछ हिलाना पसंद करेगा, कछुआ जाना पसंद नहीं करेगा सोने के महल में और सोने की पेटी में। चवांगत्सु ने कहा—तुम मुझे कछुआ से ज्यादा मूढ़ समझते हो? तुम मुझे कछुआ से ज्यादा बुद्ध समझते हो? भाग जाओ और दुबारा कभी इस तरफ मत आना। मैं अपनी कीचड़ में मस्त हूँ, मुझे राजमहल नहीं चाहिए। कहते हैं चवांगत्सु ने वह गाव छोड़ दिया। वह राज्य छोड़ दिया क्योंकि राजा उसे के फिर—फिर पीछे पड़ा।

राजनीति विषाक्त करती है। एक्टन का प्रसिद्ध वचन है— 'पावर करप्ट्स एंड करप्ट्स एब्सोल्यूटली'। सत्ता विकृत करती है और समग्र रूप से विकृत करती है। यह चमत्कार तुम रोज देखते हो, फिर भी तुम देख नहीं पाते। तुम जब भी चुनते हो, अच्छे से अच्छे आदमी को चुनकर भेजते हो, लेकिन पद पर पहुँचते ही वह आदमी वही नहीं रह जाता। पद पर पहुँचते ही सब बदल जाता है। जिसको भेजा था, वह बड़ा विनम्र था, झुक—झुक कर नमस्कार करता था—शायद इसीलिए झुक—झुक कर नमस्कार करता था, शायद इसीलिए विनम्रता का आरोपण किये हुए था कि तुम उसे भेजो। पहुँचते से सब आरोपण समाप्त हो जाते हैं, सत्ता अपनी नग्न स्थिति में प्रकट होनी शुरू होती है, सब आश्वासन झूठे सिद्ध होते हैं, लेकिन तुम सदा यह आशा रखते हो कि इसने धोखा दे दिया तो कल किसी और को चुनेंगे, परसों किसी और को चुनेंगे, और ऐसा सदियों से तुम लोग चुनते रहे। सदियों से तुम क्रांतियाँ करते रहे। और हर क्रांति में तुमने बड़ी आशा मानी। और कोई क्रांति कभी पूरी नहीं हुई। किसी ने कभी कोई आशा पूरी नहीं की।

ओशो,

अथतो भक्ति जिज्ञासा(प्रव.-21)



बड़ी प्रसिद्ध कथा है—

चीन का एक महाज्ञानी— भारत की भाषा में कहें तो अवतार—चवांगत्सू एक नदी के किनारे बैठा मस्ती से नदी में उठती लहरों को देख रहा था। सुबह का सूरज निकल था, फूल खिले थे, पक्षी गीत गा रहे थे। मछलियां सुबह की ताजी रोशनी में छलांगें भर रही थीं। तभी सम्राट के दो वजीर चवांगत्सू को खोजते हुए आए और उन्होंने चवांगत्सू से आकर प्रार्थना की कि सम्राट ने आपकी प्रतिभा की बड़ी खबरें सुनी हैं और सम्राट उत्सुक है और वह चाहता है कि आप उसके प्रधान वजीर बन जाएं। चवांगत्सू खूब हंसा। वे वजीर थोड़े हतप्रभ भी हुए, उन्होंने पूछा कि आप इस तरह हंस रहे हैं, मामला क्या है? आप हां कहें, यह तो बड़े सौभाग्य का क्षण है। लोग तो दीवाने होते हैं, जिंदगी भर मेहनत करते हैं तब भी नहीं हो पाते हैं—हम भी मेहनत करते—करते थक गये हैं और अभी तक प्रधान वजीर ही हो पाए, आपके लिए सौभाग्य अपने— आप आया है; यह तो वरदान है। आपकी हंसी से हमें शक होता है।

चवांगत्सू ने कहा—एक बात का मुझे उत्तर दो। देखते हो वह पास एक कीचड़ के गट्टे में एक कछुआ मस्ती से अपनी पूंछ हिला रहा है, कीचड़ में मजा ले रहा है। पूछा चवांगत्सू ने, देखते हो इस कछुए को कीचड़ में मस्त होते? मैंने सुना है कि सम्राट के महल में कछुआ है। उन वजीर ने कहा—निश्चित है, अति प्राचीन है—तीन हजार साल पुराना है। सोने के संदूक में बंद है, हीरे—जवाहरात जड़े हैं, उसकी पूजा की जाती है वर्ष में एक दिन, वह बड़ा पवित्र कछुआ है, वह धरोहर है, जब पहली दफा सम्राट के पूर्वज सम्राट बने थे तब से वह चला आया है। चवांगत्सू ने पूछा कि मैं तुमसे यह पूछता हूं अगर इस कछुए से जो कीचड़ में मजा ले रहा है तुम पूछो कि तुम सोने की पेटी में बंद होना चाहोगे?—हीरे—जवाहरात जड़ी होगी और वर्ष में एक दिन तुम्हारी पूजा भी होगी, तो यह सोने की पेटी में बंद होने के लिए राजी होगा? या इसी कीचड़ में मजे से पूंछ हिलाना पसंद करेगा? वजीर ने कहा कि कछुए की बात करते हो तो कछुआ तो कीचड़ में ही पूंछ हिलाना पसंद करेगा, कछुआ जाना पसंद नहीं करेगा सोने के महल में और सोने की पेटी में। चवांगत्सू ने कहा—तुम मुझे कछुआ से ज्यादा मूढ़ समझते हो? तुम मुझे कछुआ से ज्यादा बुद्ध समझते हो? भाग जाओ और दुबारा कभी इस तरफ मत आना। मैं अपनी कीचड़ में मस्त हूं, मुझे राजमहल नहीं चाहिए। कहते हैं चवांगत्सू ने वह गाव छोड़ दिया। वह राज्य छोड़ दिया क्योंकि

← आखिर क्यों मनुष्य और भेड़ में जादा अंतर नहीं

ओशो



847



140



Send



तर्कशील नास्तिक

आखिर क्यों मनुष्य और भेड़ में जादा अंतर नहीं Os... more

You shared this post.

Add a comment...





हर उस चीज़ से
नाता तोड़ो जो तुम्हें रोक
रही है सफल होने से !



126K



2.4K



42K



Send



Prem Kumar



Follow

कुछ प्रेरणादायक अनमोल बातें जो जिंदगी जीने में रा... more



Add a comment...



चुप रहना सिखा!

कभी कभी कुछ बचाने के लिए,
कुछ जताने के लिए, कुछ समझाने
के लिए, कुछ आजमाने के लिए,
इतना ही काफी होता है।



126K



2.4K



42K



Send



Prem Kumar



Follow

कुछ प्रेरणादायक अनमोल बातें जो जिंदगी जीने में रा... more



Add a comment...





किसी की संगत से यदि
आपके विचार बदलने लगे
तो समझ जाना वो कोई
साधारण व्यक्ति नहीं है।



126K



2.4K



42K



Send



Prem Kumar



Follow

कुछ प्रेरणादायक अनमोल बातें जो जिंदगी जीने में रा... more



Add a comment...





हर लड़का

BEAUTY चाहता है और हर
beauty पैसा चाहती है।



126K



2.4K



42K



Send



Prem Kumar



Follow

कुछ प्रेरणादायक अनमोल बातें जो जिंदगी जीने में रा... more



Add a comment...





नर्क देखना है तो

बेरोजगार होकर देख लो
ना इज्जत, ना सम्मान, ना
पैसा, ना व्यवहार...!!



126K



2.4K



42K



Send



Prem Kumar



Follow

कुछ प्रेरणादायक अनमोल बातें जो जिंदगी जीने में रा... more



Add a comment...





Give

हम यहां नये नहीं है



1K



8



163



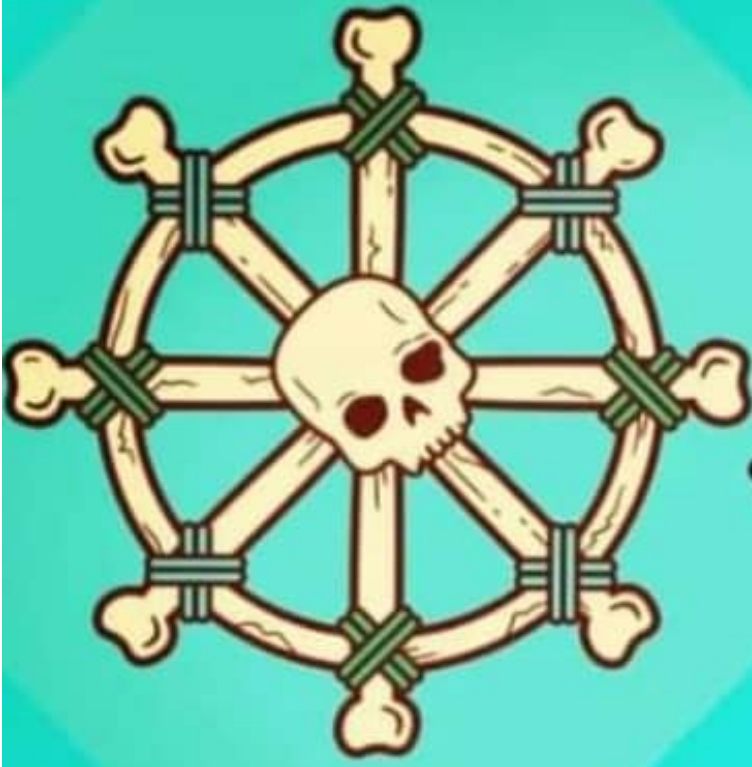
Osho's Aura

— ओशो ... more



Add a comment...





भगवान का भजन
किए बिना
इस मन की
जन्मों जन्मों की प्यास
बुझना असंभव है।

020 टक-टक



4h · 🌐

एक घुड़सवार कहीं दूर जा रहा था। बहुत देर से पानी न मिलने से उसका घोड़ा प्यास से बेहाल था। तभी उसे एक खेत में रहट चलता दिखाई दिया।

वह घोड़े को रहट के पास ले आया, ताकि घोड़ा पानी पी सके। पर वह रहट बहुत जोर से टक-टक-टक-टक आवाज कर रहा था। उस आवाज से घबरा कर घोड़ा पीछे हट गया।

घुड़सवार के कई बार प्रयास करने पर भी जब वह घोड़े को पानी न पिला सका, तो उसने खेत के मालिक को आवाज लगा कर कहा- भैया! आप कुछ देर के लिए अपना रहट बंद कर दो। ताकि घोड़ा पानी पी सके। रहट की टक-टक के कारण घोड़ा पानी नहीं पी पा रहा है। खेत का मालिक उसकी बात सुन कर हंसने लगा। और बोला- भाई! तुम समझदार लगते हो, फिर ऐसी मूर्खतापूर्ण बात क्यों करते हो? अगर रहट बंद हो जाएगा तो पानी आना भी तो बंद हो जाएगा। तब घोड़ा पियेगा क्या? अगर तुम अपने घोड़े की प्यास बुझाना चाहते हो, तो तुम्हें उसे इस टक-टक में ही पानी पीने का अभ्यास कराना पड़ेगा। दूसरा कोई उपाय नहीं है।

लोकेशानन्द कहता है कि वह घुड़सवार और कोई नहीं, आप ही हैं। मन ही घोड़ा है। जगत की चिक-चिक ही रहट की टक-टक है। भगवान स्वयं ही खेत के मालिक हैं। भगवान का भजन ही पानी है। बिना भगवान का भजन किए इस मन की जन्मों जन्मों की प्यास बुझाना असंभव है। मन कहता है कि मैं इस चिक-चिक में भगवान का भजन कैसे करूं? पर भगवान कहते हैं कि अगर तुझे प्यास बुझानी है, अगर तू आराम, विश्राम, आनन्द चाहता है, दुख से छूटना चाहता है, मुक्ति चाहता है, तो तुझे भजन का जल पीना ही पड़ेगा।

और भजन तो जगत की चिक-चिक में ही करना पड़ता है। यदि आप सोचते हैं कि पहले जगत की चिक-चिक रुक जाए, फिर मैं भजन करूंगा। तो निश्चित ही इस प्यास के बुझने की न कोई संभावना थी, न है, न कभी होगी।





It is only a wise man who can feel foolish. Fools never feel that they are foolish; they think they are wise. That is the definition of a foolish man: he thinks he is wise.

OSHO®

For Madmen Only, Price of Admission: Your Mind (Darshan Diary)

आत्मजागृति प्राप्त होने पर " मैं कौन हूं ? "
का सही उत्तर मिल सकता है ।



Telegram , Facebook , Instagram - आध्यात्मिक जीवन की खोज

facebook



2 comments



Like



Comment



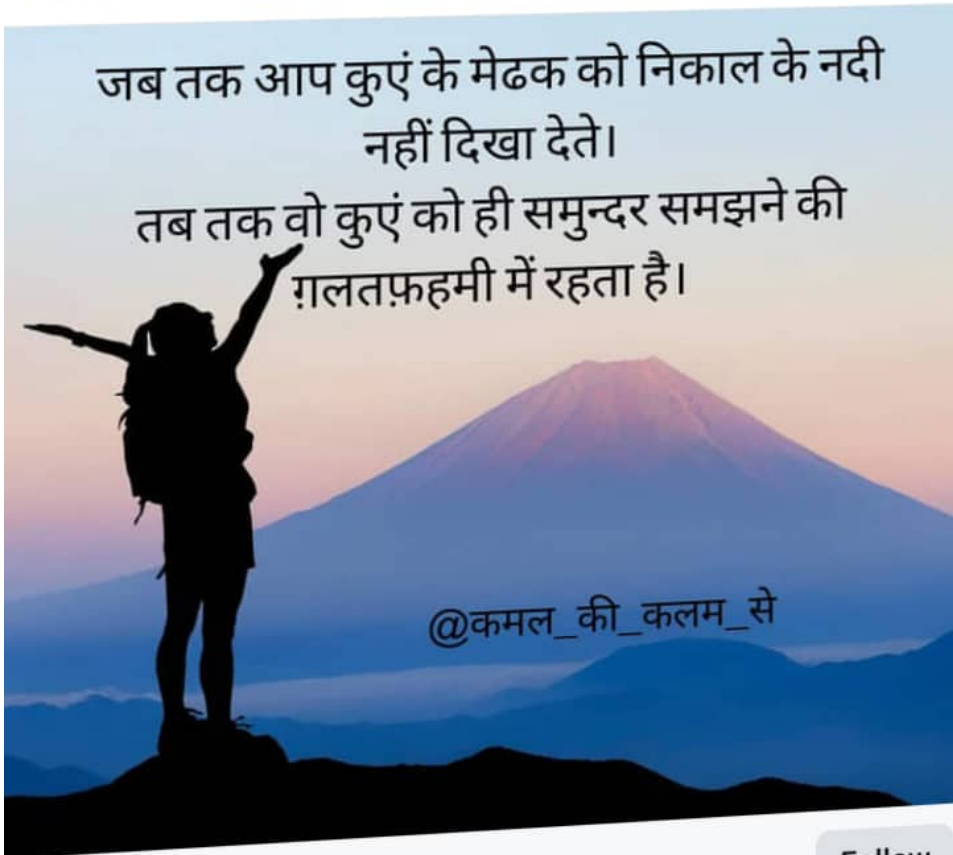
Send



Share

**Kamal Kant Dixit** ✓

Sponsored · 🌐



Kamal Kant Dixit

Follow

Do you want more of your ads to be like this one?

Yes

No

1 comment • 1 send

204



Like



Share





एक "प्रणाम"

कई

"परिणाम"

*बदल देता
है...!!!*

प्रत्येक व्यक्ति एक विशिष्ट भाग्य के साथ इस दुनिया में आता है – उसके पास जो कुछ है उसे परिपूर्ण करना पड़ता है, कुछ सन्देश दुनिया को देना होता है – कुछ कार्य जिन्हें पूरा करना पड़ता है. आप यहाँ संयोगवश नहीं हो – आपकी यहाँ सार्थकता है. आप के पीछे एक उद्देश्य है. सृष्टि आपके माध्यम से कुछ कराना चाहती है

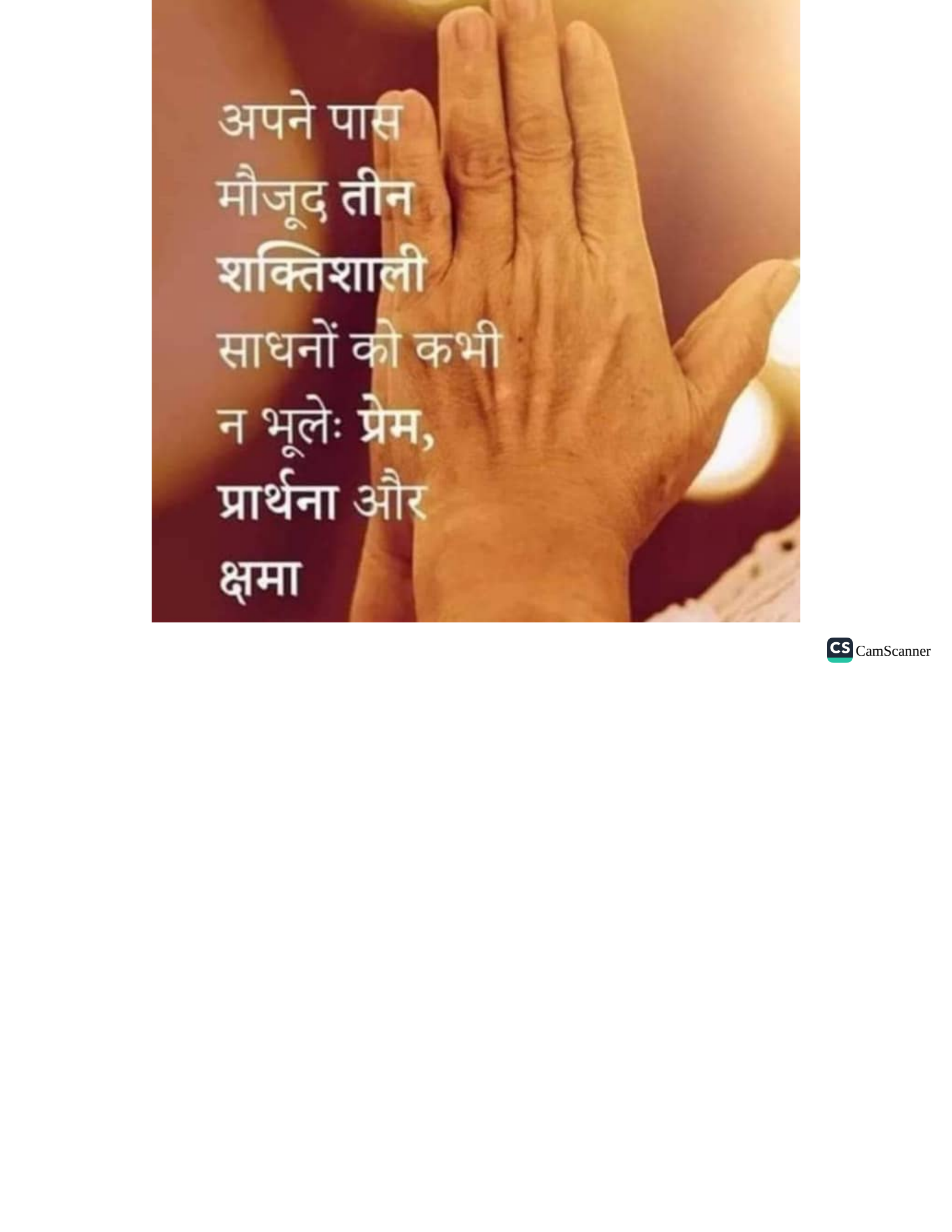
मित्रों! कृष्ण की व्यवस्था जटिल है, लेकिन बड़ी बहुमूल्य है। और इसलिए मैं राजी हुआ गीता पर बोलने को, क्योंकि गीता में मनुष्य का भविष्य छिपा है। अब न तो महावीर का संन्यासी बच सकता है दुनिया में, न बुद्ध का संन्यासी बच सकता है। दुनिया ही न रही वह; भगोड़ों का उपाय ही न रहा। अब तो सिर्फ कृष्ण का संन्यासी बच सकता है दुनिया में। जो भागता नहीं है, जो पैर जमाकर खड़ा हो जाता है, जो हर परिस्थिति का उपयोग कर लेता है, विपरीत परिस्थिति का भी उपयोग कर लेता है, जो युद्ध के बीच में ध्यान को उपलब्ध होता है।



मकड़ी भी नहीं उलझती अपने बनाए जाल में..
जितना एक मनुष्य उलझ जाता है, अपने ही
बनाए ख्याल में..!!



विपस्सना से मौन
यही आरंभ है यही प्रार्थना
और ध्यान है अंत नहीं अनंत
है विपस्सना ध्यान।
🍌 स्वामी बोधिसत्त्वा

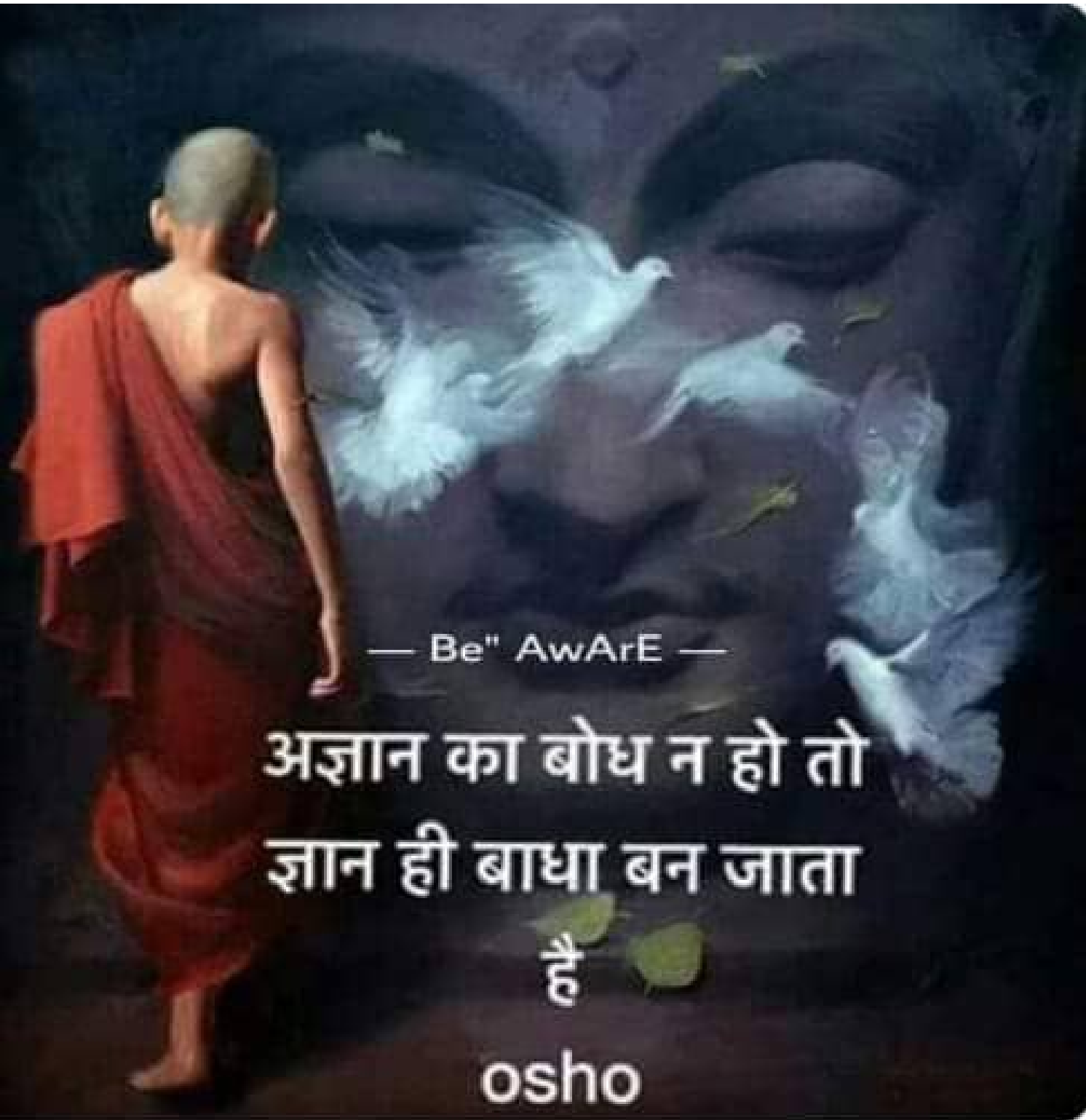


अपने पास
मौजूद तीन
शक्तिशाली
साधनों को कभी
न भूले: प्रेम,
प्रार्थना और
क्षमा



**यह जीवन अवसर है कि तुम
अमृत को तलाश लो। नहीं
तलाशो तो मृत्यु हाथ लगती है।
जिसने तलाश लिया, अमृत हाथ
लगता है।**

**और एक बूंद भी अमृत की मिल
गयी तो फिर दुबारा न कोई आना
है न कोई जाना है,
न कोई जन्म है न कोई मृत्यु है।
फिर तुम शाश्वत के अंग हो।
ध्यान तो अमृत की खोज
है--अंतर-खोज!
ओशो**



— Be" AwArE —

अज्ञान का बोध न हो तो
ज्ञान ही बाधा बन जाता
है

osho



अगर आशीर्वादों से सुख आता होता,
तो एक आदमी सभी को सुखी कर देता।
क्योंकि आशीर्वाद देने में क्या कंजूसी?
इतना आसान नहीं है। तुमने दुख बोया है,
मेरे आशीर्वाद से कैसे कटेगा? तुम मुझसे समझ
लो। आशीर्वाद मत मांगो। क्योंकि आशीर्वाद
तो बेईमानी का ढंग है। दुख तुमने दिया है न
मालूम कितने लोगों को। तुमने दुख बोया है
सब तरफ। अब तुम उसकी फसल काटने के
वक्त आशीर्वाद मांगने आ गए! और तुम्हारे ढंग
से ऐसा लगता है कि जैसे अगर तुम्हें दुख मिल
रहा है, तो मैं आशीर्वाद नहीं दे रहा हूं इसलिए
दुख मिल रहा है। किसी के आशीर्वाद से
तुम्हारा दुख न कटेगा। किसी के आशीर्वाद से
तुम्हारी समझ बढ़ जाए तो काफी। किसी के
आशीर्वाद से तुम में प्रेम का बीज आ जाए तो
काफी। पाप तो प्रेम से कटेगा। और दुख तो तुम
जब दूसरों के लिए सुख बोने लगोगे तब कटेगा।
ओशो



जिस दिन तुम्हारा प्रेम एक आंतरिक संवेदनशीलता बनेगा, जिस दिन संबंध कम और तुम्हारी सहज अवस्था ज्यादा होगा; ऐसा नहीं कि किसी के प्रति प्रेम, बल्कि ऐसा कि बैठे हैं तो प्रेम में, उठे हैं तो प्रेम में, चले हैं तो प्रेम में, बोले हैं तो प्रेम में, सोए हैं तो प्रेम में; उठना, बैठना, जगना, सोना--तुम्हारा प्रत्येक कृत्य जब प्रेमपूर्ण होगा; प्रेम जब किसी के प्रति निवेदित नहीं होगा, बल्कि तुम्हारी श्वास-श्वास में समोया होगा, तुम्हारे हृदय की धड़कन-धड़कन में बजता होगा उसका नाद; मैं उस प्रेम की बात कर रहा हूँ।

और निश्चित ही घबड़ाओगे, डरोगे, कतराओगे। लेकिन बिना इस यात्रा पर--कठिन यात्रा है, दुर्धर्ष मार्ग है, तलवार की धार पर चलना है--बिना इसके निखरोगे भी नहीं। तो कतराओ कितने ही, डरो कितने ही, लेकिन डर के बावजूद जाना है। यह यात्रा करनी ही है; करनी ही होगी। कब तक विश्वासों का बोझ लादते फिरते रहोगे।

ओशो; मृत्युर्मा अमृत गमय





इस दुनिया में जो लोग बना नहीं सकते, वे मिटाने में लग जाते हैं। जो कविता नहीं रच सकते, वे आलोचक हो जाते हैं। जो धर्म का अनुभव नहीं कर सकते, वे नास्तिक हो जाते हैं। जो ईश्वर की खोज नहीं कर सकते, वे कहने लगते हैं--ईश्वर है ही नहीं। अंगूर खट्टे हैं! इनकार करना आसान, स्वीकार करना कठिन। जो समर्पित नहीं हो सकते, वे कहते हैं--समर्पित होएं क्यों? मनुष्य की गरिमा उसके संकल्प में है, समर्पण में नहीं! जो समर्पित नहीं हो सकते, वे कहते हैं--कायर समर्पित होते हैं; बहादुर, वीर तो लड़ते हैं।

ध्यान रखना, सृजन कठिन है, विध्वंस आसान है। जो माइकलएंजलो नहीं हो सकता, वह अडोल्फ हिटलर हो सकता है। जो कालिदास नहीं हो सकता, वह जोसेफ स्टैलिन हो सकता है। जो वानगॉग नहीं हो सकता, वह माओत्से तुंग हो सकता है। विध्वंस आसान है। जो धार्मिक नहीं हो सकता, वह राजनीतिज्ञ हो सकता है। राजनीतिज्ञ होने और राजनीति करने में कोई बुद्धिमत्ता चाहिए! बुद्धिमत्ता ही एकमात्र अड़चन है राजनीति में। बुद्धिमान राजनीतिज्ञ नहीं हो सकता। उतना छोटा नहीं हो सकता। उतना ओछा नहीं हो सकता। उतना क्षुद्र नहीं हो सकता। उतना नीच नहीं हो सकता। उतने नीचे उतरना उसे आसान नहीं होगा। उसकी प्रतिभा उसे रोकेगी।

पत्थर को सुंदर मूर्ति में निर्मित कर लेना प्रेम को जानने का एक उपाय है। साधारण शब्दों को जोड़ कर एक गीत रच लेना प्रेम को जानने का एक उपाय है। नाचना, कि सितार बजाना, कि बांसुरी पर एक तान छेड़ देना--ये सब प्रेम के ही रूप हैं।

तुमने प्रेम को बहुत छोटा समझ रखा है। घर-गृहस्थी बसा ली कि समझा प्रेम हो गया। यह तो प्रेम नहीं है, यह तो पशु भी कर लेते हैं। ये बच्चे पैदा करना, ये घर-गृहस्थी बसाना, यह तो पशु-पक्षी भी कर लेते हैं। इसमें कुछ विशिष्टता नहीं है। इसके कारण तुम मनुष्य नहीं हो। इसके कारण तुम पशुओं के ही हिस्से हो।

जिस दिन तुम्हारा प्रेम एक आंतरिक संवेदनशीलता बनेगा, जिस दिन संबंध कम और तुम्हारी सहज अवस्था ज्यादा होगा; ऐसा नहीं कि किसी के प्रति प्रेम, बल्कि ऐसा कि बैठे हैं तो प्रेम में, उठे हैं तो प्रेम में, चले हैं



पश्चिम के बहुत बड़े मूर्तिकार माइकलएंजलो के जीवन में यह उल्लेख है कि संगमरमर बेचने वाले दुकानदार के पास वह एक दिन पहुंचा और उसने कहा, तुमने दुकान के उस तरफ रास्ते के किनारे एक बड़ा संगमरमर का पत्थर डाल रखा है। कई वर्षों से मैं गुजरता हूं, उसे देखता हूं। उसे बेचना नहीं? उस दुकानदार ने कहा, वह बिकता नहीं। इसलिए मैंने तो आशा ही छोड़ दी है, उसको उस तरफ डाल दिया है कि अगर कोई ले जाए तो ले जाए। माइकलएंजलो ने कहा कि मैं ले जाऊंगा।

वह दुकानदार बहुत खुश हुआ। उसने कहा, मेरी जगह खाली होगी। वह पत्थर बिलकुल बेकार है। ढोने का खर्च भी मैं दे दूंगा। तुम ले जाओ। झंझट मिटे और जगह खाली हो!

माइकलएंजलो पत्थर ले गया। कोई साल बीतने के बाद एक दिन माइकलएंजलो उस दुकानदार के पास आया और कहा कि मेरे घर चलोगे? कुछ दिखाने योग्य है! ले गया दुकानदार को। दुकानदार ने देखा जो, आंखों से आनंद के आंसू बहने लगे। उसने बहुत मूर्तियां देखी थीं, पर ऐसी मूर्ति नहीं। माइकलएंजलो ने उस पत्थर को रूपांतरित कर दिया था। उसे तो याद भी न आया कि यह वही पत्थर है, जो मैंने मुफ्त दिया था। और जिसको ढोने के पैसे भी मैंने दिए थे!

माइकलएंजलो ने उस पत्थर में जो प्रतिमा गढ़ी थी, वह है जीसस की प्रतिमा और मरियम की। जीसस को मरियम ने सूली से उतारा है। जीसस की लाश को मरियम अपने हाथों में लिए बैठी है! कहते हैं ऐसी अदभुत प्रतिमा दूसरी नहीं है।

अभी कुछ, दो या तीन साल पहले एक पागल आदमी ने इसी प्रतिमा को रोम में हथौड़ा लाकर तोड़ दिया। और जब उस आदमी से पूछा गया--क्योंकि वह अमरीका से आया तोड़ने इटली--उससे जब पूछा गया कि यह तूने क्या किया? तूने जगत की श्रेष्ठतम कृति नष्ट कर दी! तो उसने कहा, जैसे माइकलएंजलो का नाम प्रसिद्ध था, अब मेरा भी नाम प्रसिद्ध रहेगा। उसने बनाई, मैंने मिटाई। वह बना सकता था, मैं बना नहीं सकता, लेकिन मिटा तो सकता हूं!

इस दुनिया में जो लोग बना नहीं सकते, वे मिटाने में लग जाते हैं। जो

जो चुप हो कर बैठने की कला सिख लेगा
उसे उसका ही शरीर..
हजार हजार अनुभव देगा
एवं
भीतर के तीर्थ दिखाई पडने शुरू हो जाते है





More Videos

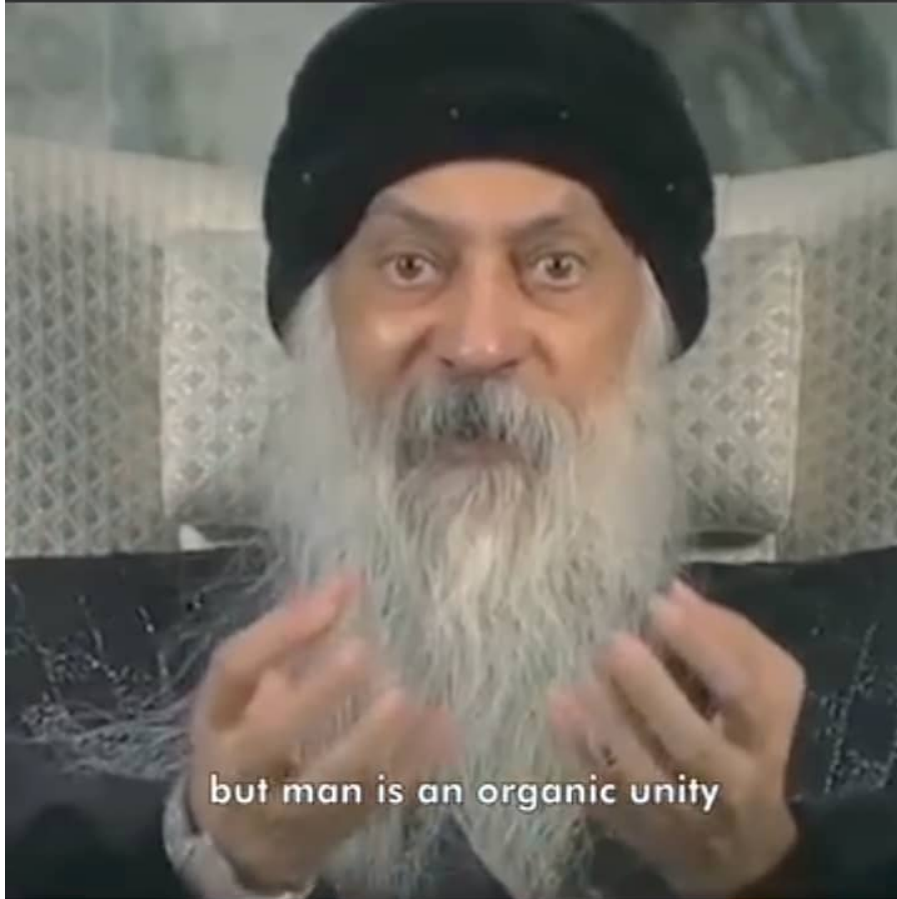


OSHO • 🔔

5 Oct 2022 • 🌐



"You can deal with a machine in a partial way, you can change on part if it is not functioning well, but ... See more



2.7K

127 comments • 589 shares • 50K views



Like



Comment



Send



Share

**THE KNOWLEDGE POWER and THE KNOWLEDGE**

14 Oct • 🌐

कैसे जाने कि हमारे ऊपर दैवीय शक्ति का हाथ है?





More Videos



OSHO • 🔔

5 Oct 2022 • 🌐



"You can deal with a machine in a partial way, you can change on part if it is not functioning well, but ... See more



2.7K

127 comments • 589 shares • 50K views



Like



Comment



Send



Share

**THE KNOWLEDGE POWER and THE KNOWLEDGE**

14 Oct • 🌐

कैसे जाने कि हमारे ऊपर दैवीय शक्ति का हाथ है?





More Videos

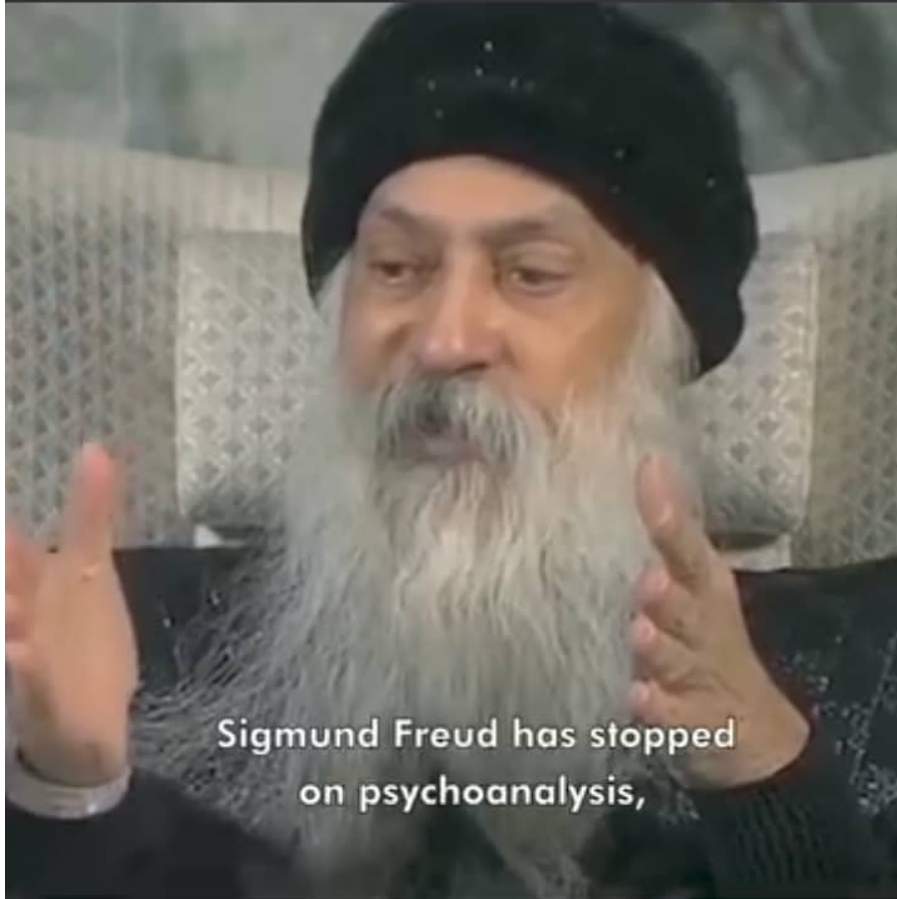


OSHO • 🔔

5 Oct 2022 • 🌐



"You can deal with a machine in a partial way, you can change on part if it is not functioning well, but ... See more



2.7K

127 comments • 589 shares • 50K views



Like



Comment



Send



Share

**THE KNOWLEDGE POWER and THE KNOWLEDGE**

14 Oct • 🌐

कैसे जाने कि हमारे ऊपर दैवीय शक्ति का हाथ है?





More Videos

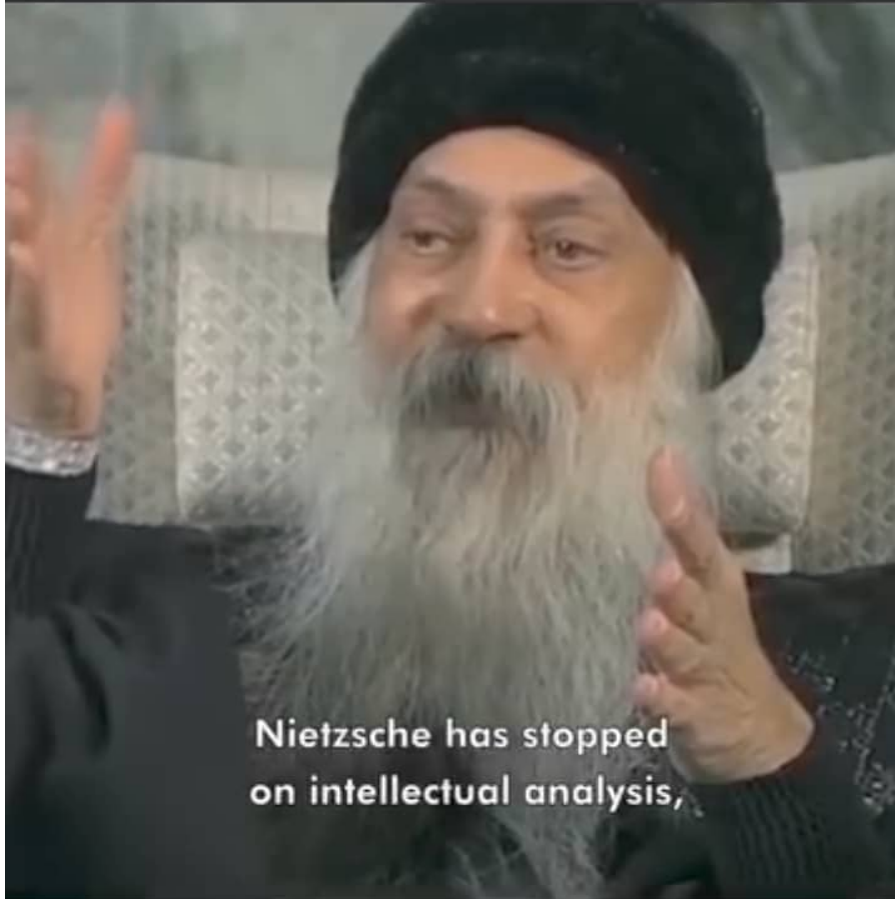


OSHO • 🔔



5 Oct 2022 • 🌐

"You can deal with a machine in a partial way, you can change on part if it is not functioning well, but ... See more



2.7K

127 comments • 589 shares • 50K views



Like



Comment



Send



Share

**THE KNOWLEDGE POWER and THE KNOWLEDGE**

14 Oct • 🌐

कैसे जाने कि हमारे ऊपर दैवीय शक्ति का हाथ है?

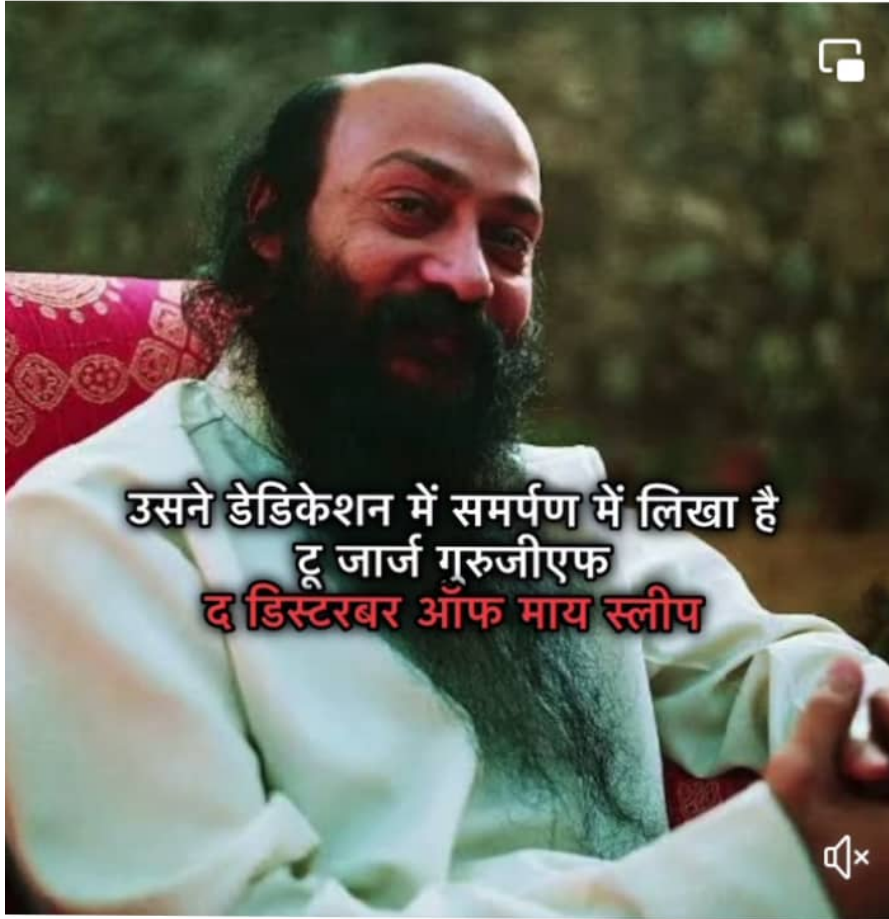


गुरुजी बोले "इसके अतिरिक्त भी
कुछ किया तो वो बताओ
गांव में या रास्ते में कोई परमार्थ
का काम भी किया क्या?"
तब शिष्य ने चींटियों को बचाने
वाला वाक्या गुरुजी को बता
दिया।

गुरुजी समझ गए। कि कर्म
विधि के विधान को भी
बदल सकते हैं



#enlightenment #anger #humanity #mooji #sadanga
#rumi #sufi #naturalremedies #knowthyself #oshovaani
#oshoessentials



369

5 comments • 35 shares • 8.5K views



Like



Comment



Send



Share



Motiversity • Follow

11 Feb •

Robert Kiyosaki reveals how he became rich!
... See more





एक अंग्रेज विद्वान केनेथ वाकर ने एक किताब लिखी है और उस किताब को एक फकीर गुरुजीएफ को समर्पित किया है समर्पण में डेडिकेशन में उसने जो शब्द लिखे हैं वह बड़े अद्भुत हैं उसने डेडिकेशन में समर्पण में लिखा है टू जार्ज गुरुजीएफ द डिस्टरबर ऑफ माय स्लीप मेरी नींद तोड़ने वाले जार्ज गुरुजीएफ को समर्पित 'थोड़े से लोग जमीन पर हुए हैं जो नींद तोड़ने की कोशिश करते हैं, लेकिन अगर आप किसी की नींद तोड़ने की कोशिश करेंगे तो निश्चित वह आपसे बदला लेगा, किसी सोते हुए आदमी को जगाने की कोशिश करिए, वह आपकी गर्दन पकड़ लेगा, आज तक मनुष्य को आध्यात्मिक नींद से जिन्होंने जगाने की कोशिश की है उन्होंने उनकी भी गर्ने पकड़ ली है हमारे बीच हमें पता नहीं चलता इसीलिए कि हम सब एक जैसे सोए हुए और नींद में लोग हैं, एक गांव के संबंध में मैंने सुना है, उसमें एक जादूगर आ गया था, एक दिन और उसने उस कुएं में गांव के एक पुड़िया डाल दी थी और कहा था, इस कुएं का पानी जो भी पिएगा, पागल हो जाएगा, एक ही कुआ था उस गांव में एक कुआ और था, लेकिन वह गांव का कुआ ना था, वह राजा के महल में था, सांझ होते होते तक गांव के हर आदमी को पानी पीना पड़ा, चाहे पागलपन की कीमत पे भी पीना पड़े, लेकिन मजबूरी थी, प्यास तो बुझानी पड़ेगी, चाहे पागल ही क्यों ना हो जाना पड़े, गाँव के लोग कब तक रोकते? उन्होंने पानी पिया साँझ होते होते पूरा गाँव पागल हो गया, सम्राट बहुत खुश था उसकी रानिया बहुत खुश थी, महल में गीत और संगीत का आयोजन हो रहा था, उसके वज़ीर खुश थे, की हम बच गये, लेकिन साँझ होते उन्हें पता चला कि गलती में है वो, क्योंकि सारा महल साँझ होते होते गाँव के पागलों ने घेर लिया, पूरा गाँव हो गया था पागल, राजा के पहरेदार और सैनिक भी हो गये थे पागल, सारे गांव ने राजा के महल को घेर कर आवाज लगाई कि मालूम होता है इस राजा का दिमाग खराब हो गया है हम ऐसे पागल राजा को सिंहासन पर बर्दाश्त नहीं कर सकते, महल के ऊपर खड़े होकर राजा ने देखा कि बचाओ का अब कोई उपाय नहीं, अपने वजीर से पूछने लगा, अब क्या होगा, हम तो सोचते थे भाग्यवान है हम कि हमारे पास अपना कुआ है, आज महंगा पड़ गया, सभी राजाओं को एक... ना एक दिन अलग कुआ महंगा पड़ता है, सारी दुनिया में पड़ रहा है, जो अभी भी राजा हैं, कल उनको भी पड़ेगा महंगा कुआ, अलग कुआ खतरनाक है, लेकिन तब तक ख्याल नहीं था, वजीर से कहने लगा, क्या होगा अब वजीर ने कहा, अब कुछ पूछने की जरूरत नहीं, आप भागे पीछे के द्वार से और उस कुएं का पानी पीकर जल्दी लौट आए, अन्यथा ये महल खतरे में, सम्राट ने कहा, उस कुएं का पानी क्या तुम मुझे पागल बनाना चाहते हो? वजीर ने कहा अब पागल बने बिना कोई बचने का उपाय नहीं है राजा भागा, उसकी रानियां भागी, उन्होंने जाकर उस कुएं का पानी पी लिया. उस रात उस गांव में एक बड़ा जलसा मनाया गया, सारे गांव के लोगों ने खुशी मनाई, बाजे बजाए, गीत गाए और भगवान को शक्रांता देगा कि हमारे राजा का दिमाग ठीक हो गया



More Videos

**Zack Philippides**

10 Feb · 🌐



Λεζ;,,,,



18K

5K shares · 1.2M views



Like



Send



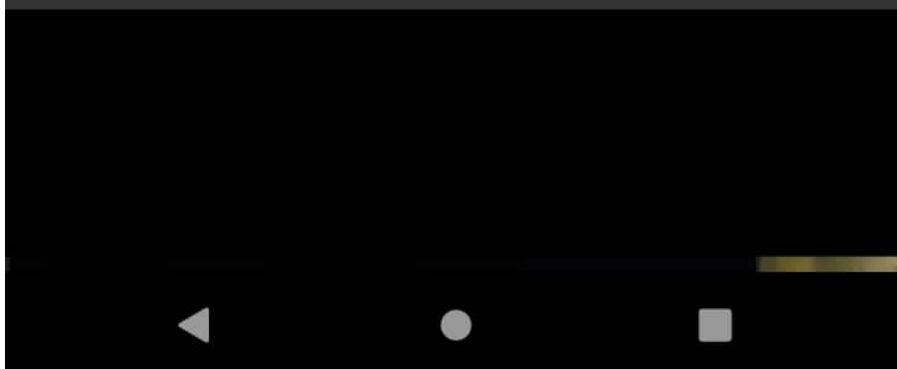
Share

**DramatizeMe** · Follow

14 Oct · 🌐



Man won't stand up for his gf





More Videos

**Zack Philippides**

10 Feb · 🌐



Λεζ;,,,,



18K

5K shares · 1.2M views



Like



Send



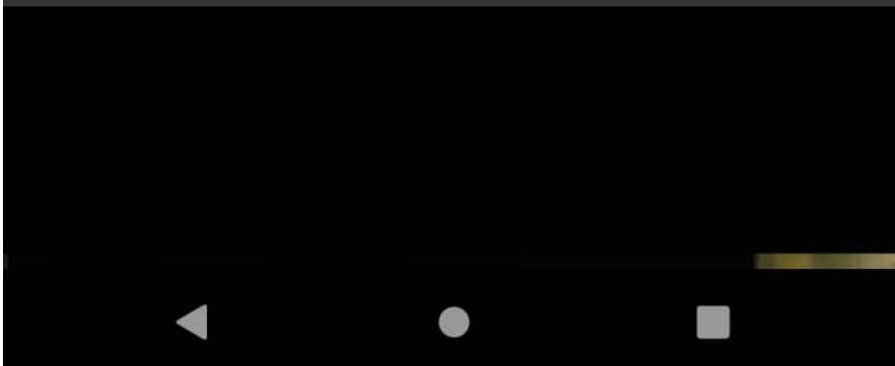
Share

**DramatizeMe** · Follow

14 Oct · 🌐



Man won't stand up for his gf

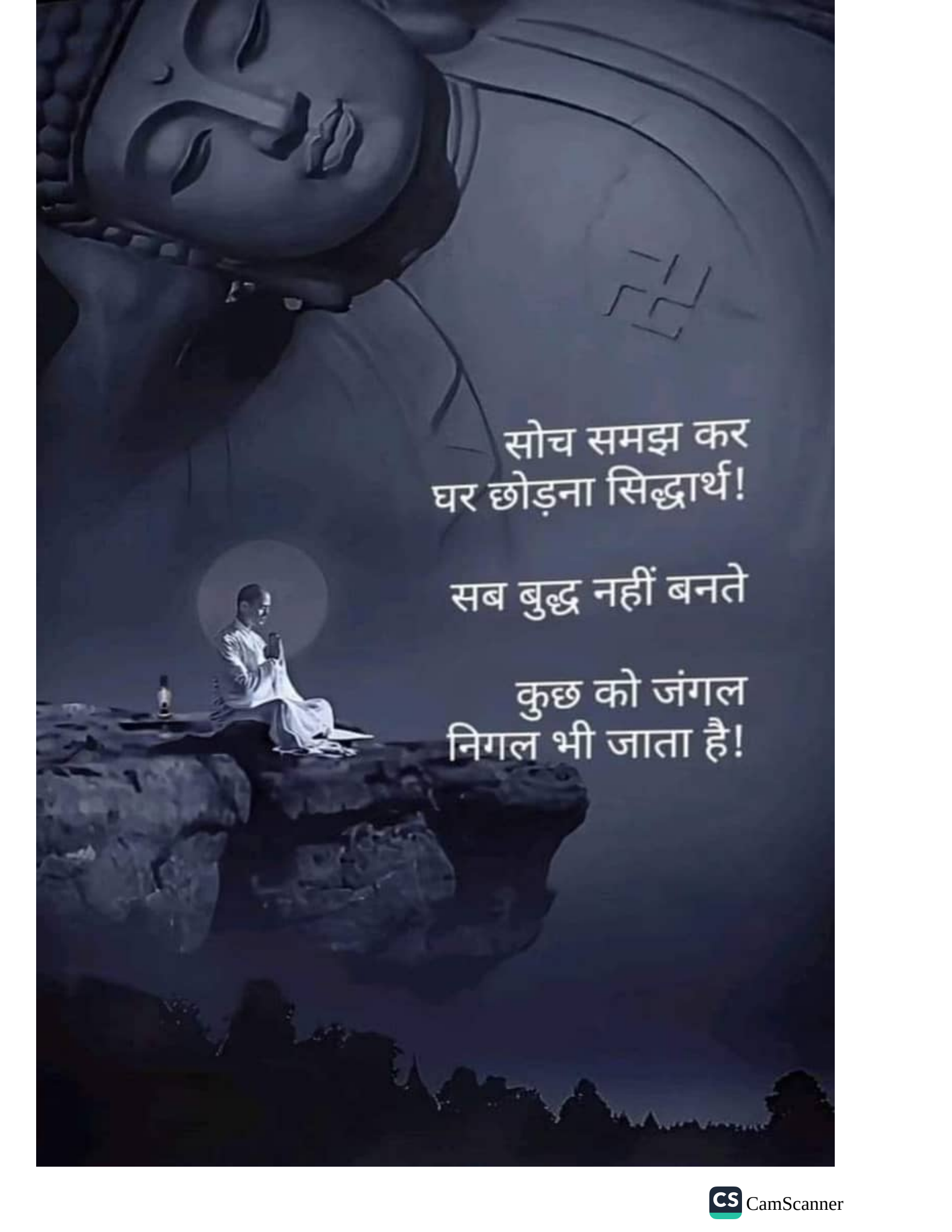




प्रत्येक घटना कुछ न कुछ सिखाती है!

आंखे खुली हो, तो पूरा जीवन ही विद्यालय है।
और जिसे सीखने की भुख है, वह प्रत्येक व्यक्ति
और प्रत्येक घटना से सीख लेता है। और स्मरण
रहे कि जो इस भांति नहीं सीखता है, वह जीवन में
कुछ भी नहीं सीख पाता।

ओशो अहोभाव
मैं कौन हूँ-के कुछ अंश



सोच समझ कर
घर छोड़ना सिद्धार्थ!

सब बुद्ध नहीं बनते

कुछ को जंगल
निगल भी जाता है!



Swami Atmo Vaibhav

**Swami Atmo Vaibhav**

23m · 🌐



रहस्य जगत के सूत्र

मेरे पास तुम्हें बताने के लिए कुछ रहस्य हैं, और मैं उन्हें बताने से पहले मरना नहीं चाहूंगा - क्योंकि मैं अब दुनिया में जीवित किसी और को नहीं जानता जो यह काम कर सके। मेरे पास ताओवाद के रहस्य हैं, तंत्र के रहस्य हैं, योग के रहस्य हैं, सूफियों के रहस्य हैं, झेन के रहस्य हैं। मैं दुनिया की लगभग सभी परंपराओं में रहा हूँ; मैं अनेक जन्मों में घुमक्कड़ रहा हूँ। मैंने बहुत से फूलों से बहुत सारा शहद इकट्ठा किया है।

और देर-सवेर वह समय आएगा जब मुझे प्रस्थान करना होगा - और मैं फिर से शरीर में प्रवेश नहीं कर पाऊंगा। ये मेरी आखिरी जिंदगी होने वाली है। मैंने जो सारा शहद इकट्ठा किया है, मैं तुम्हारे साथ साझा करना चाहता हूँ, ताकि तुम इसे दूसरों के साथ साझा कर सकें, ताकि यह पृथ्वी से गायब न हो जाए।

- ओशो

Translated From :

The Dhammapada: The Way of the Buddha, Vol 2

Chapter #2

Chapter title: Drink to the full and dance



तो उस काया के पिघलाने में लगा हुआ जो श्रम है, वही तपश्चर्या है। और उस काया को पिघलाने के लिए जो प्रक्रिया है, वही साक्षी-भाव, सामायिक या ध्यान है। और वह हमारे स्मरण में आ जाए और उसके प्रयोग से हम गुजर जाएं तो फिर कोई पुनर्जन्म नहीं है।

पुनर्जन्म रहा है सदा, रहेगा, अगर हम कुछ न करें। लेकिन ऐसा हो सकता है कि फिर पुनर्जन्म न हो। तब हम विराट जीवन के साथ एक हो जाते हैं। ऐसा नहीं कि हम मिट जाते हैं, ऐसा नहीं कि हम समाप्त हो जाते हैं, बस ऐसा ही जैसे बूंद सागर हो जाती है। मिटती-विटती नहीं, लेकिन मिट भी जाती है। बूंद की तरह मिट जाती है, सागर की तरह रह जाती है।

इसलिए महावीर कहते हैं, आत्मा ही परमात्मा हो जाती है। लेकिन नहीं समझे उनके पीछे वाले कि क्या मतलब है। मतलब इसका है कि आत्मा की बूंद खो जाती है उसमें जो परमात्मा है, वह एक हो जाती है।

उस एकता में, उस परम अद्वैत में परम आनंद है, परम शांति है, परम सौंदर्य है। 🙏

ओशो, 🙏

महावीर मेरी दृष्टी में-(प्रवचन-13)



बुद्ध को जिस दिन ज्ञान हुआ तो बुद्ध ने कहा, वह घर गिर गया, जो सदियों से नहीं गिरा था। वह घर के बनाने वाले कारीगर विदा हो गए, जो सदा उस घर को बनाते थे। अब मेरे लौटने की कोई उम्मीद न रही; क्योंकि मैं कहां लौटूंगा! वह घर ही न रहा, जिसमें सदा लौटता था!

और वह घर जो है, वह है सूक्ष्म शरीर का घर। हमारे सारे कर्म, हमारे कर्मों के फल, हमारा भोग, हमारा जीया हुआ जीवन, वह सब उस सूक्ष्म शरीर पर जैसे स्लेट पट्टी पर रेखाएं बन जाती हैं, वैसा बन जाता है।

उस सूक्ष्म शरीर को गलाना ही साधना है। अगर मुझसे कोई पूछे कि तपश्चर्या का क्या मतलब, तो मैं कहूंगा, सूक्ष्म शरीर को गलाना तपश्चर्या है।

और तप शब्द का उपयोग इसीलिए करते हैं कि तप का मतलब होता है, तीव्र गर्मी, जैसे सूर्य की गर्मी। ऐसी गर्मी भीतर साक्षी से पैदा करनी है कि सूक्ष्म शरीर पिघल जाए और गल जाए, तप का मतलब वह है। तप का मतलब धूप में खड़े होना नहीं है। वह पागल है आदमी जो धूप में खड़े होकर तप कर रहा है। एक और धूप की बात है। एक और तप की बात है। भीतर जो पैदा करनी है, जिससे सूक्ष्म शरीर गल जाए और बह जाए।

जब महावीर को कहते हैं महातपस्वी, तो उसका मतलब यह नहीं है कि धूप में खड़े हुए शरीर को सता रहे हैं। और जब महावीर को कहते हैं काया को मिटाने वाले, तो उस काया का इस काया से कोई मतलब नहीं है। उस काया का मतलब ही उस काया से है, वह जो भीतर की काया है। वही असली काया है। यह तो बार-बार मिलती है।

आप इस कमीज को अपनी काया नहीं कहते, क्योंकि रोज इसे बदल लेते हैं। शरीर को काया कहते हैं, क्योंकि जिंदगी भर उसे नहीं बदलते। महावीर भलीभांति जानते हैं कि यह शरीर भी तो कई बार बदल लेते हैं। लेकिन एक और काया है, जो कभी नहीं बदलती। बस एक ही बार खतम होती है, बदलती नहीं।

तो उस काया के पिघलाने में लगा हुआ जो श्रम है, वही तपश्चर्या है। और



🙏॥ साक्षीभाव से सूक्ष्म शरीर को गलाना ही साधना या तप है ॥

इस शरीर के छूट जाने पर वह सूक्ष्म शरीर ही सूखी रेखाओं की तरह आपके भोगे गए जीवन को लेकर नई यात्रा शुरू करता है। और वह सूक्ष्म शरीर ही नए शरीर ग्रहण करता है। इसलिए वह अंधा हो सकता है। इसलिए वह काना हो सकता है। इसलिए वह लंगड़ा हो सकता है। बुद्धिमान हो सकता है, बुद्धिहीन हो सकता है।

प्रत्येक मृत्यु में स्थूल देह मरती है। फिर अंतिम मृत्यु है महामृत्यु—जिसे हम मोक्ष कहते हैं, उसमें वह सूक्ष्म शरीर भी मर जाता है। जिस दिन सूक्ष्म शरीर मर जाता है, उस दिन व्यक्ति का मोक्ष हो गया।

यह शरीर तो हर बार मरता है। वह भीतर का शरीर हर बार नहीं मरता। वह तभी मरता है, जब उस शरीर के रहने का कोई अर्थ नहीं रह जाता—जब व्यक्ति न कुछ करता है, न भोगता है, न कर्ता बनता है, न किसी कर्म को ऊपर लेता है, न कोई प्रतिक्रिया करता है। जब व्यक्ति सिर्फ साक्षी मात्र रह जाता है, तब सूक्ष्म शरीर पिघलने लगता है, बिखरने लगता है।

साक्षी की जो प्रक्रिया है, वह सूक्ष्म शरीर को ऐसे पिघला देती है, जैसे सूरज निकले और बर्फ पिघलने लगे। साक्षी के निकलते ही सूक्ष्म शरीर के परमाणु पिघल कर बहने लगते हैं।

जिस दिन सूक्ष्म शरीर समाप्त हो जाता है, उस दिन आदमी कह सकता है...और यह पिघलना ऐसा ही अनुभव होता है, जैसे कि आपको सर्दी-जुकाम पकड़ गया है और जुकाम उतर रहा है तो आप अनुभव करते हैं, किसी को बता नहीं सकते कि अब जुकाम नीचे उतर रहा है। सूक्ष्म शरीर का पिघलना साक्षी को इसी तरह पता चलता है कि कोई चीज भीतर पिघल कर बहती चली जा रही है।

और जिस दिन सूक्ष्म शरीर पिघल जाता है, आत्मा और शरीर बिल्कुल पृथक दिखाई पड़ने लगते हैं। सूक्ष्म शरीर जोड़ है। वह पृथक नहीं दिखाई पड़ने देता। वह दोनों को जोड़ कर रखता है। और जिस दिन ये पृथक दिखाई पड़ जाते हैं, वह आदमी कह देता है, अब यह आखिरी

**ओशो की मधुशाला**

19h · 🌐



फ्रेडरिक महान ने अपनी डायरी में एक संस्मरण लिखा है। लिखा है उसने कि मैं अपनी राजधानी के बड़े कारागृह में गया। सम्राट स्वयं आ रहा है, स्वभावतः हर आदमी ने उसके पैर पकड़े, हाथ जोड़े और कहा कि 'अपराध हमने बिल्कुल नहीं किया है। यह तो कुछ शरारती लोगों ने हमें फंसा दिया।' किसी ने कहा, 'हम तो होश में ही न थे। हमसे करवा लिया किन्हीं षड्यंत्रकारियों ने।' किन्हीं ने कहा कि 'सिर्फ कानून....। हम गरीब थे, हम बचा न सके अपने को ;बड़ा वकील न कर सके, इसलिए हम फंस गए हैं। अमीर आदमी थे हमारे खिलाफ, वे तो बच गए, और हम सजा काट रहे हैं। '

पूरे जेल में सैकड़ों अपराधियों के पास फ्रेडरिक गया। हरेक ने कहा उससे ज्यादा निर्दोष आदमी खोजना मुश्किल है! अंततः सिर्फ एक आदमी सर झुकाए बैठा था। फ्रेडरिक ने कहा, 'तुम्हें कुछ नहीं कहना है?' 'उस आदमी ने कहा कि' माफ करो। मैं बहुत अपराधी आदमी हूं। जो भी मैंने किया है, सज़ा मुझे उससे कम मिली है।' फ्रेडरिक ने अपने जेलर से कहा, 'इस आदमी को इसी वक़्त जेल से मुक्त कर दो;कहीं ऐसा न हो कि बाकी निर्दोष और भले लोग इसके साथ रहकर बिगड़ जायें! इसे फौरन जेल के बाहर कर दो। कहीं ऐसा न हो कि बाकी इनोसेंट लोग.... क्योंकि बाकी पूरा जेलखाना तो निर्दोष लोगों से भरा हुआ है, वे कहीं इसके साथ रहकर बिगड़ न जाएं। तो इसे इसी वक़्त मुक्त कर दो। 'वह आदमी बहुत हैरान हुआ। उसने कहा कि' आप क्या कर हैं? मैं अपराधी हूं। 'फ्रेडरिक महान ने कहा कि' कोई आदमी अपने अपराध को स्वीकार कर ले, इससे बड़ी निर्दोषता, इससे बड़ी इनोसेंस और कोई भी नहीं है। तुम बाहर आओ। '

परमात्मा के जगत में भी केवल वे ही लोग संसार के बाहर जा पाते हैं, जो अपनी वास्तविक स्थिति को स्वीकार करने में समर्थ हैं। अपने को जो धोखा देगा - देता रहे...। परमात्मा को धोखा नहीं दिया जा सकता है।

ओशो 🌹🌹🙏

**अपो दीपो भव**

Reels · 22h · 🌐



🙏 मृत्यु के बाद उसी का सिलसिला जारी रहेगा मिटते के पहले जो तुमने निर्मित किया था 🙏



अपो दीपो भव and 103 others

3 comments · 143 shares



Like



Comment



Send



Share

तुम्हारे लिए सबसे बड़ी
जीत पता है कब होगी...

जब तुम उसे खामोशी
से माफ कर दो..जिसने

तुम्हें सबसे ज्यादा
तकलीफ दी हो

तुम्हारी सबसे
बड़ी दौलत तुम्हारा वक्त है
जिसे भी दे रहे
हो बहुत सोच-समझकर देना....!





UPC Politics Alka Rani Gupta2

Yesterday, 8:56 am



सुंदरता की कमी को अच्छा स्वभाव
पूरा कर सकता है...

लेकिन..

अच्छे स्वभाव की कमी को सुंदरता
कभी पूरा नहीं कर सकती..!

Shabdo ki zava

शुभ दिन ❤️☕



Reply



अब मुर्गे को अपनी मौत साफ दिखाई देने लगी और वह बहुत रोया।
मालिक ने पूछा, "क्या बात है?"
मौत के डर से रो रहे हो?
मुर्गे का जवाब बहुत सुंदर और सार्थक था।

मुर्गा कहने लगा:
"नहीं, मैं इसलिए रो रहा हूँ कि, अंडे न देने पर मरने से बेहतर है बाँग
देकर मरता...
बाँग मेरी पहचान और अस्मिता थी,
मैंने सब कुछ त्याग दिया और तुम्हारी हर बात मानी, लेकिन जिसका
इरादा ही मारने का हो तो उसके आगे समर्पण नहीं संघर्ष करने से ही
जान बचाई जा सकती है, जो मैं नहीं कर सका..."

अपने अस्तित्व, अपनी अस्मिता की रक्षा के लिए संघर्ष करना पड़े तो
पीछे नहीं हटना चाहिए...!!
मैं यहां मुर्गे की बात नहीं कर रहा हूँ...!!
विचार अवश्य करियेगा....!!



आध्यात्मिक और प्रेरणादायक कहानियां



Sunil Seth Bawa · 5 Dec · 🌐

एक आदमी एक मुर्गा खरीद कर लाया। एक दिन वह मुर्गे को मारना चाहता था, इसलिए उस ने मुर्गे को मारने का बहाना सोचा और मुर्गे से कहा, "तुम कल से बाँग नहीं दोगे, नहीं तो मैं तुम्हें मार डालूँगा।"

मुर्गे ने कहा, "ठीक है, सर, जो भी आप चाहते हैं, वैसा ही होगा!" सुबह, जैसे ही मुर्गे के बाँग का समय हुआ, मालिक ने देखा कि मुर्गा बाँग नहीं दे रहा है, लेकिन हमेशा की तरह, अपने पंख फड़फड़ा रहा है।

मालिक ने अगला आदेश जारी किया कि कल से तुम अपने पंख भी नहीं फड़फड़ाओगे, नहीं तो मैं वध कर दूँगा।

अगली सुबह, बाँग के समय, मुर्गे ने आज्ञा का पालन करते हुए अपने पंख नहीं फड़फड़ाए, लेकिन आदत से, मजबूर था, अपनी गर्दन को लंबा किया और उसे उठाया।

मालिक ने परेशान होकर अगला आदेश जारी कर दिया कि कल से गर्दन भी नहीं हिलनी चाहिए। अगले दिन मुर्गा चुपचाप मुर्गी बनकर सहमा रहा और कुछ नहीं किया।

मालिक ने सोचा ये तो बात नहीं बनी, इस बार मालिक ने भी कुछ ऐसा सोचा जो वास्तव में मुर्गे के लिए नामुमकिन था।

मालिक ने कहा कि कल से तुम्हें अंडे देने होंगे नहीं तो मैं तेरा वध कर दूँगा।

अब मुर्गे को अपनी मौत साफ दिखाई देने लगी और वह बहुत रोया। मालिक ने पूछा, "क्या बात है?" मौत के डर से रो रहे हो? मुर्गे का जवाब बहुत सुंदर और सार्थक था।

मुर्गा कहने लगा:

.....

"सत्य क्या है, से
अधिक महत्वपूर्ण
यह है, कि
तुम किसे
सत्य मानते हो !"



असली सुन्दरता

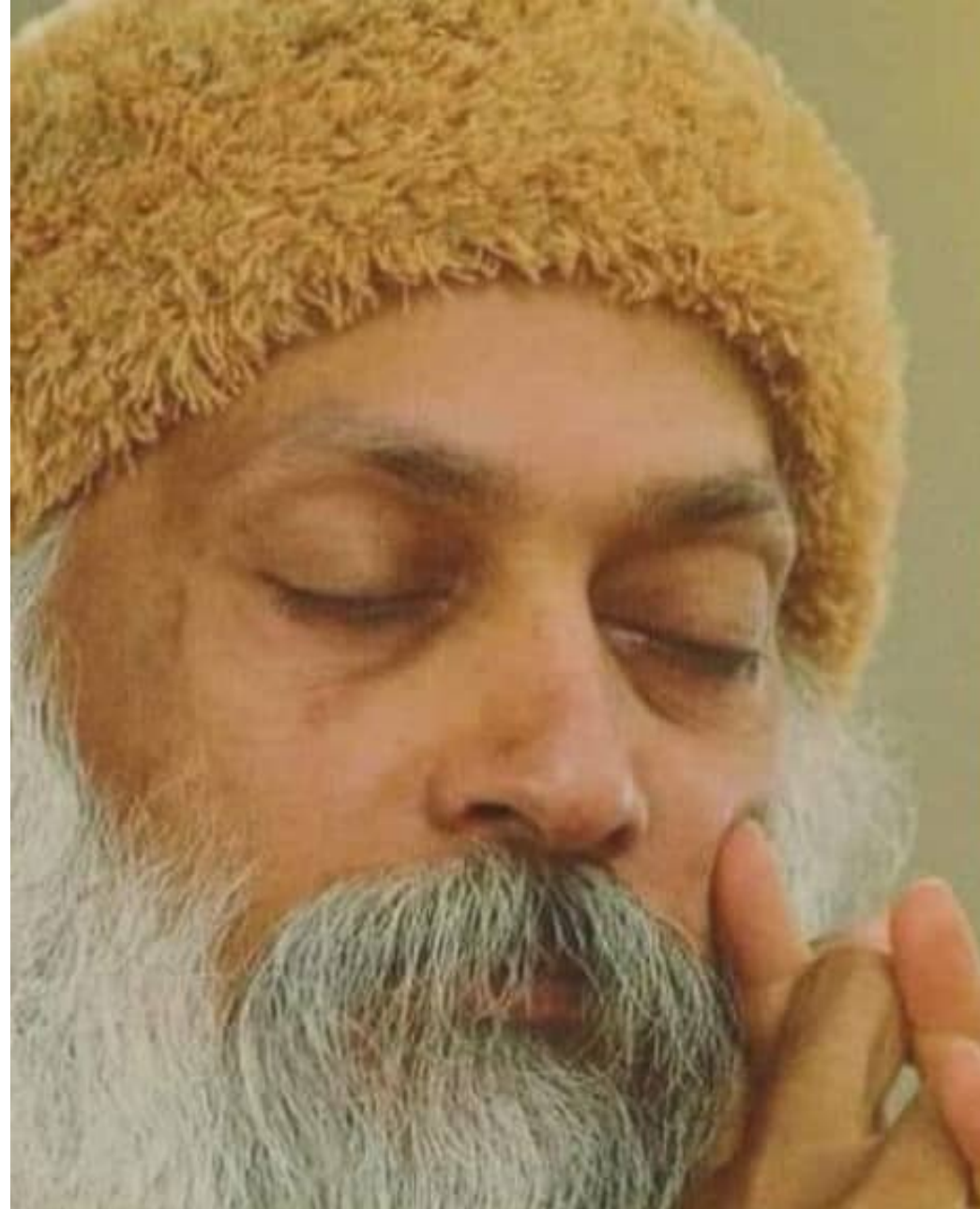
जिस शरीर को लोग सुन्दर समझते हैं, मौत के बाद वही शरीर सुन्दर क्यों नहीं लगता ? उसे घर में न रखकर जला क्यों दिया जाता है ? जिस शरीर को सुन्दर मानते हैं जरा उसकी चमड़ी तो उतार कर देखो तब हकीकत दिखेगी कि भीतर क्या है ? भीतर तो बस रक्त, रोग, मल और कचरा भरा पड़ा है। फिर यह शरीर सुन्दर कैसे हुआ ?



शरीर में कोई सुन्दरता नहीं है। सुन्दर होते हैं व्यक्ति के कर्म, उसके विचार, उसकी वाणी, उसका व्यवहार, उसके संस्कार, और उसका चरित्र। जिसके जीवन में यह सब है वही मनुष्य दुनिया का सबसे सुन्दर इन्सान है और जमाना भी उसी का दीवाना है।

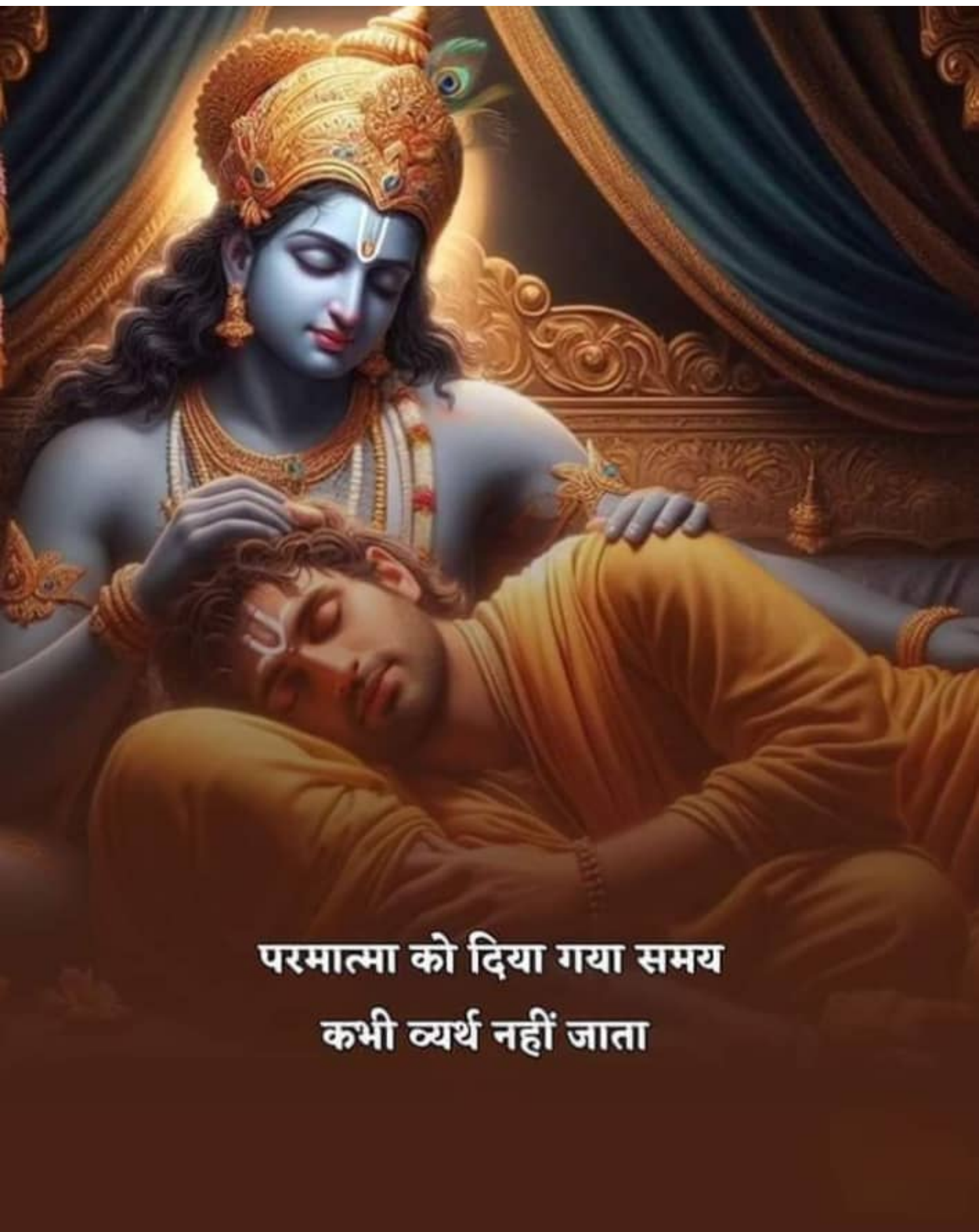
जय जय श्री राधे

श्रीजी की चरण सेवा

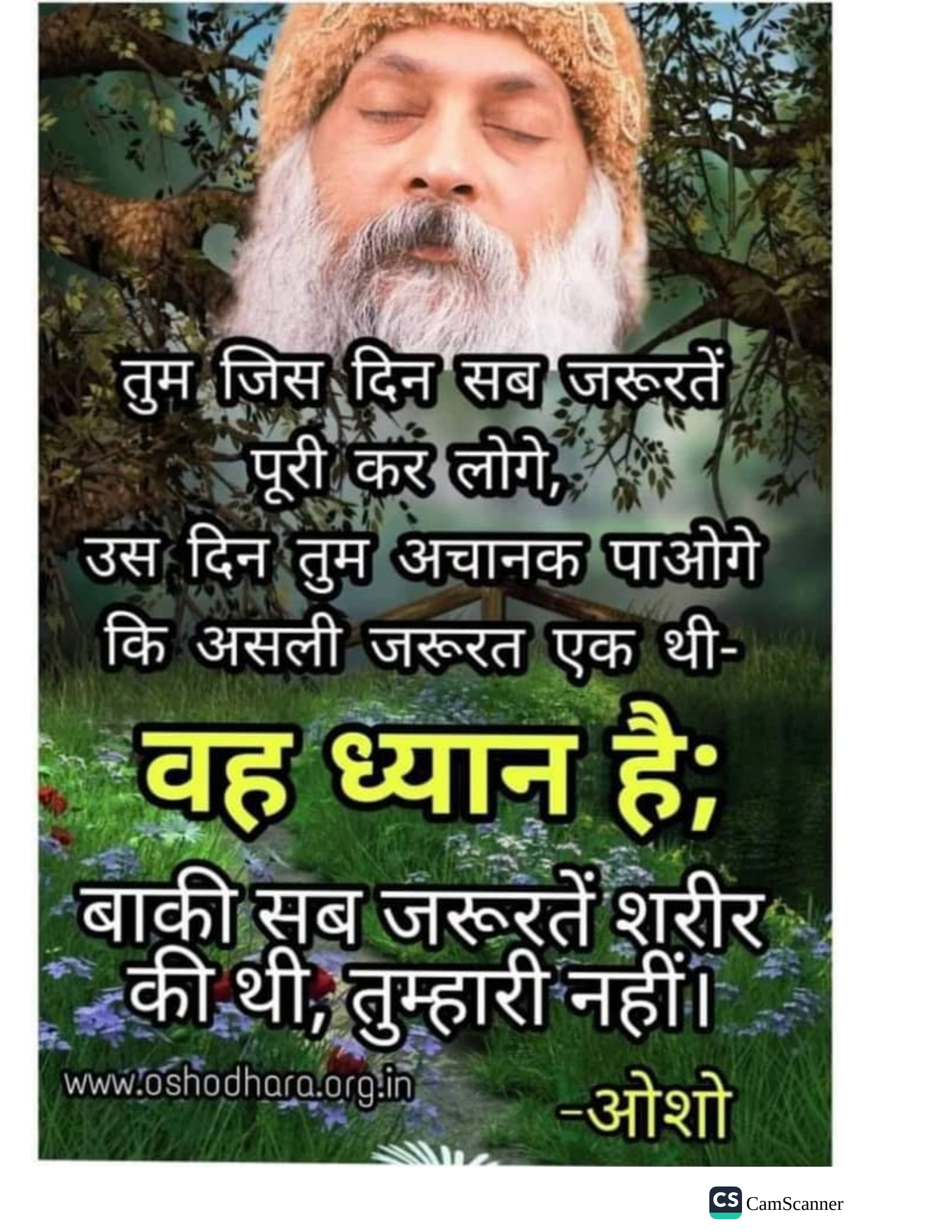


संसार को दौड़ - दौड़कर भी पाना मुश्किल है ।
परमात्मा को पाने का एक ही उपाय है : रुक
जाना । । जो दौड़ - दौड़कर भी नहीं मिलता ,
वही संसार है , जो बिना दौड़े मिल जाता है ,
वही परमात्मा है ।

ओशो



परमात्मा को दिया गया समय
कभी व्यर्थ नहीं जाता



तुम जिस दिन सब जरूरतें
पूरी कर लोगे,
उस दिन तुम अचानक पाओगे
कि असली जरूरत एक थी-

वह ध्यान है;

बाकी सब जरूरतें शरीर
की थी, तुम्हारी नहीं।

www.oshodhara.org.in

-ओशो

कर्मों का फल

एक बार की कथा है, देवऋषि नारद और ऋषि अंगारा कहीं जा रहे थे। रास्ते में उनकी नजर एक मिठाई की दुकान पर पड़ी। दुकान के नजदीक ही झूठी पतलों का ढेर लगा हुआ था। उस झूठन को खाने के लिए जैसे ही एक कुत्ता आता है, बैसे ही उस दुकान का मालिक उसको जोर से डन्डा मारता है। डन्डे की मार खा कर कुत्ता चीखता हुआ वहाँ से चला जाता है।



ये दृश्य देख कर, देवऋषि को हंसी आ गयी। ऋषि अंगारा ने उन से हंसी का कारण पूछा, नारद बोले: हे ऋषिवर ! यह दुकान पहले एक कन्जूस व्यक्ति की थी। अपनी जिंदगी में उसने बहुत सारा पैसा इकट्ठा किया। और इस जन्म में वो कुत्ता बन कर पैदा हुआ और यह दुकान मालिक उसी का पुत्र है, देखें ! जिस के लिए उस ने बेशुमार धन इकट्ठा किया। आज उसी के हाथों से, उसे जूठा भोजन भी नहीं मिल सका। कर्मफल के इस खेल को देखकर मुझे हंसी आ गई।

मनुष्य को अपने शुभ और अशुभ कर्मों का फल जरूर मिलता है। बेशक इस लिए उसे जन्मों-जन्मों की यात्रा क्यों न करनी पड़े।

जय जय श्री राधे



ओशो अहोभाव

तुम जरा-रूप को पार करना सीखो
अरूप को खोजो। चेहरे को कम देखो;
चेहरे के भीतर जो छिपा हुआ है उसे जरा
ज्यादा देखो। तन को जरा कम देखो, तन के
भीतर जो छिपा है, उस पर जरा ज्यादा ध्यान दो।

बुद्ध ने कहा कि मरे हुए जानवर का मांस खाने में कोई पाप नहीं है, क्योंकि तुम हत्या तो कर नहीं रहे. बस, तरीका मिल गयी, सारे दुनिया के बौद्ध मांसाहारी हैं. हर बौद्ध देश में होटलों पर लिखा होता है कि यहां सिर्फ अपने-आप मर गये जानवरों का मांस मिलता है. इतने जानवर एकदम से अपने-आप बौद्ध मुल्कों में ही मरते हैं!

हिंदुस्तान में दूध को पवित्र आहार समझा जाता है-शुद्धतम, सात्विक. और ईसाइयों में क्वेकर संप्रदाय है, वह दूध को छूता नहीं क्योंकि दूध बनता तो शरीर के भीतर है उसी तरह जैसे खून बनता है; गाय के, या भैंस के शरीर में बनता है, लेकिन है तो यह "एनीमल प्रॉडक्ट" जैसे खून. इसमें और खून में कोई भेद नहीं है. इसलिए क्वेकर दूध नहीं पीते. और दुग्धारी को महापापी मानते हैं. किसे सही मानोगे?

जीसस शराब पीते हैं? शराब पीना पाप है या पुण्य? अगर जीसस शराब पी सकते हैं, तो फिर शराब पीने में कैसे पाप होगा? रामकृष्ण मछली खाते हैं. मछली खाना पाप है या पुण्य? अगर रामकृष्ण मछली खा सकते हैं, तो कैसे पाप होगा? महावीर नग्न रहते हैं. नग्न रहना पाप है या पुण्य? लेकिन महावीर नहीं पाप कर सकते हैं!

किसको मानोगे?

पर्यूषण आते हैं तो जैन हरी सब्जियां नहीं खाते. मगर पर्यूषण के पहले सुखा कर रख लेते हैं सूख गयीं फिर हरी न रही. इसलिए मैं तुम्हें आचरण नहीं देता. मैं तुम्हें सिर्फ ध्यान देना चाहता हूं. और ध्यान से जो आचरण पैदा होता है, तुम्हारे अंतस के रूपांतरण से जो आचरण पैदा होता है, उसकी आभा, सौंदर्य, उसका रस अलग.

वही यह सूत्र कह रहा है-"तरति शोकं, तरति पाप्मानम्" साधारणतः तुम्हारे साधु-संत तुमसे कहते हैं, पाप से मुक्त हो जाओ तो ब्रह्म को जान लोगे. यह सूत्र कह रहा है ब्रह्म को जान लो तो पाप से मुक्त हो जाओगे-ओशो, दीपक बारा नाम का-6

तुम्हारा एकांत ही तुम्हें
मनुष्य बना सकता है,
भीड़ तुम्हें भेड़ बना देगी.!

— बुद्ध ज्ञान —



जो हो रहा है,
हो रहा है।
न तुमसे
पूछ कर शुरू हुआ है,
न तुम से पूछ कर
बंद होने का कोई कारण है।
जो हो रहा है, होता रहा है,
होता रहेगा-तुम देखते रहो।
बस इसमें ही
क्रांति घट जाती है।



anamcara, Rames

अष्टावक्र: महागीता--प्रवचन--13

जब जागो तभी सवेरा

आचार्य श्री रजनीश

ओशो

ack

OSHO



आत्मा
आती-जाती नहीं,
सूक्ष्म शरीर आता है, जाता है।
स्थूल शरीर आता है, जाता है।
स्थूल शरीर मिलता है
माता-पिता से,
सूक्ष्म शरीर मिलता है
पिछले जन्म से।
और
आत्मा सदा से है।

आचार्य श्री रजनीश
गीता दर्शन-(प्र-8)3g1



मरने के बाद की गई तारीफ़ और
दिल दुखाने के बाद मांगी गई माफी..
दोनों का कोई महत्व नहीं होता..🙄



जिस दिन अंतिम निर्णय होगा तुम्हारे जीवन का, आखिरी परीक्षा होगी, उस दिन तुम्हारे भाव का हिसाब होगा; तुम्हारे कृत्यों का नहीं।

संसार में तौले जाते हैं कर्म, परमात्मा में तौला जाता है भाव। संसार हिसाब रखता है, क्या तुमने किया; परमात्मा हिसाब रखता है, क्या तुम हो।

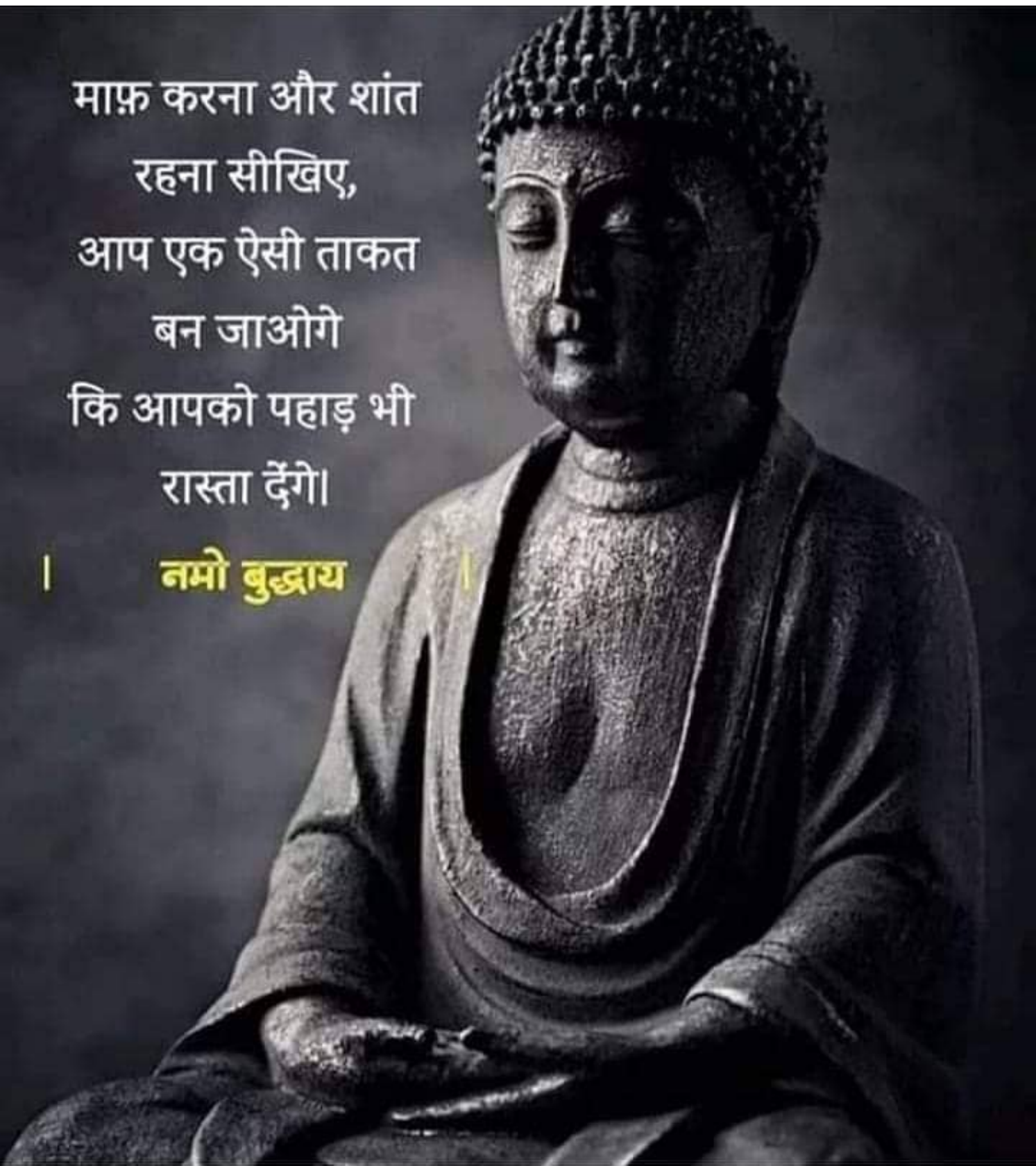
तो यह भी हो सकता है, तुम मोक्ष में उन लोगों को पाओ, जिनको तुमने मस्जिद-मंदिर में कभी नहीं देखा। और तुम नर्क में उन लोगों को पाओ जो सदा मस्जिद-मंदिर में ही जिंदगी गुजारे।

संसार तो कृत्य देख सकता है। क्योंकि उतनी गहरी आंख नहीं है, जो भाव को देख ले।

ओशो - दीया तले अंधेरा

माफ़ करना और शांत
रहना सीखिए,
आप एक ऐसी ताकत
बन जाओगे
कि आपको पहाड़ भी
रास्ता देंगे।

| नमो बुद्धाय |





को है। कहना सुनना दोनों छोड़कर, मार्ग पकड़ना है “होने” का। बहुत कहा गया, बहुत सुना गया है कुछ भी हुआ नहीं। “होने” का एकमात्र मार्ग है।

“नहीं कछु करन है” करने को भी कुछ नहीं है।

इसलिए मैं कहता हूँ, ये बड़े क्रांतिकारी वचन हैं। कोई करने की बात नहीं है। क्या करोगे उसे पाने के लिए? जिसे पाया ही हुआ है, उसे पाने के लिए क्या करोगे? जो भीतर छिपा ही है, मौजूद है, जो तुम्हारे साथ ही चला आया है, जो तुम्हारी अंतरसंपदा है उसे पाने के लिए क्या करोगे? उसे जितना तुम पाने की कोशिश करोगे, उतनी ही अड़चन खड़ी होगी। जैसे कोई अपनी ही खोज में निकल जाए भटकेगा। दूसरे की खोज, समझ में आती है; अपनी ही खोज कहां खोजोगे? हिमालय जाओगे? काशी, गिरनार कहां जाओगे?

ओशो; सुनो भई साधो

कबीर कहते हैं, गूंगे केरी सरकरा, खाए और मुसकाए।
गूंगा खा लेता है शक्कर, और मुसकाता है।

ओशो; सुनो भई साधो
अहोभाव





कहो कबीर गूंगे गुड़ खाया पूछे तो क्या कहिये।
(गूंगे केरी सरकरा, खाए और मुसकाए!)

सारी भाषा बाहर की है। भीतर की कोई भाषा नहीं है, हो ही नहीं सकती। पूछा जा सकता है कि हजारों हजारों साल से ज्ञानी भीतर जा रहे हैं, अब तक भीतर की भाषा विकसित क्यों नहीं हुई? कोई नई घटना तो नहीं है। उस भीतर के देश में न मालूम कितने लोग गए हैं! न मालूम कितने लोग वहां से डूबकर और सिक्त होकर आए हैं! न मालूम कितनों ने भीतर के उस अंतरध्यान में लीनता पाई है! अब तक भीतर की भाषा विकसित क्यों नहीं हो सकी? कारण है। भाषा की जरूरत होती है, जहां दो हों। भीतर तो तुम अकेले ही होते हो। अकेले में तो भाषा की कोई जरूरत नहीं होती। भाषा की जरूरत होती है जहां दो हों, जहां द्वैत हो; अद्वैत में तो भाषा का कोई सवाल ही नहीं उठता। जहां अकेले ही हैं, वहां किससे बोलना है, किसको बोलना है? तो भीतर तो आदमी जाकर बिलकुल गूंगा हो जाता है। कबीर कहते हैं, “गूंगे केरी सरकरा, खाए और मुसकाए।” गूंगा खा लेता है शक्कर, और मुसकाता है।

वैसे ही भीतर का अनुभव है कि वहां एक ही बचता है, और वह भी इतने अपरिसीम आनंदउत्सव में लीन हो जाता है कि कौन खोजे भाषा और किसके लिए खोजे? जब बाहर आता है भीतर से, तब अड़चन शुरू होती है बाहर खड़े हैं लोग, इनको बताना मुश्किल हो जाता है। तो कबीर कहते हैं, “कहन सुनन कछु नाहिं” न तो कुछ कहने को है, न कुछ सुनने को है। कहना सुनना दोनों छोड़कर, मार्ग पकड़ना है “होने” का। बहुत कहा गया, बहुत सुना गया है कुछ भी हुआ नहीं। “होने” का एकमात्र मार्ग है।

“नहीं कछु करन है” करने को भी कुछ नहीं है।

इसलिए मैं कहता हूं, ये बड़े क्रांतिकारी वचन हैं। कोई करने की बात नहीं है। क्या करोगे उसे पाने के लिए? जिसे पाया ही हुआ है, उसे पाने के लिए क्या करोगे? जो भीतर छिपा ही है, मौजूद है, जो तुम्हारे साथ ही चला आया है, जो तुम्हारी अंतरसंपदा है उसे पाने के लिए क्या करोगे? उसे जितना तुम पाने की कोशिश करोगे, उतनी ही अड़चन खड़ी होगी। जैसे ब्लैक थान्की की गलत में चित्तल जगमगा धरनेगा। उसके की

कबीर कहते हैं, गूंगे केरी सरकरा, खाए और मुसकाए।
गूंगा खा लेता है शक्कर, और मुसकाता है।

ओशो; सुनो भई साधो
अहोभाव



He who suffers makes an effort to escape from actuality, and that escape only increases sorrow. But if through silent observation and patience, he discerns the true cause of suffering, that perception itself dissolves the very cause of suffering.

CP

JIDDU KRISHNAMURTI

The Mirror of Relationship



बुद्ध का जन्म हुआ। पांचवें दिन रिवाज के अनुसार श्रेष्ठतम पंडित इकट्ठे हुए। उन्होंने बुद्ध को नाम दिया--सिद्धार्थ। सिद्धार्थ का अर्थ होता है: कामना की पूर्ति; आशा की पूर्ति; अर्थ की उपलब्धि; मंजिल का मिल जाना। बूढ़े शुद्धोधन के घर में बेटा पैदा हुआ था। जीवन भर प्रतीक्षा की थी, आशा की थी, सपने देखे थे; बहुत बार निराश हुआ था; और अब बुढ़ापे में बेटा पैदा हुआ था; निश्चित ही सिद्धार्थ था। पंडितों ने नाम ठीक ही दिया था। आठ बड़े पंडित थे। सम्राट पूछने लगा, इस नवजात शिशु का भविष्य भी कहोगे? सात पंडितों ने अपने हाथ उठाए और दो अंगुलियों का इशारा किया। सम्राट कुछ समझा नहीं। उसने कहा, मैं कुछ समझा नहीं। इशारे में नहीं, स्पष्ट कहो। तो उन सात पंडितों ने कहा कि दो विकल्प हैं--या तो यह चक्रवर्ती सम्राट होगा और या सब छोड़ कर सर्वत्यागी, वीतरागी, संन्यस्त हो जाएगा; या तो यह चक्रवर्ती सम्राट होगा और या सर्व वीतरागी संन्यासी होगा।

सिर्फ एक पंडित चुप रहा। वह सबसे युवा था। कोदन्ना उसका नाम था। लेकिन वह सबसे ज्यादा प्रतिभाशाली भी था। सम्राट ने पूछा, तुम चुप हो, तुमने दो अंगुलियां न उठाईं!

कोदन्ना ने कहा, दो अंगुलियां तो सभी के जन्म के साथ उठाई जा सकती हैं, क्योंकि दोनों विकल्प सभी के सामने होते हैं--या तो संसार की दौड़ का, या संन्यास का। संन्यास या संसार--ये तो दो विकल्प सभी के सामने होते हैं। इन पंडितों ने कुछ विशेष नहीं किया अगर बुद्ध के लिए दो अंगुलियां उठाईं; मैं एक अंगुली उठाता हूं: यह संन्यासी होगा।

लेकिन आदमी का अभाग्य मन, शुद्धोधन रौने लगा। यह कोदन्ना सर्वज्ञात ज्योतिषी है; युवा है, पर महातेजस्वी है; और उसके वचन कभी खाली नहीं गए। दूसरे पंडितों के साथ तो सुविधा थी थोड़ी कि चक्रवर्ती भी बन सकता है, कोदन्ना ने तो विकल्प ही तोड़ दिया। उसने तो कहा, यह निश्चित बुद्ध बनेगा। उन पंडितों के साथ तो सम्राट रोया न था, प्रसन्न हुआ था--चक्रवर्ती सम्राट होगा बेटा। और दूसरे विकल्प को उसने कोई मूल्य न दिया था, क्योंकि जब चक्रवर्ती



कोदन्ना ने कहा, दो अंगुलियां तो सभी के जन्म के साथ उठाई जा सकती हैं, क्योंकि दोनों विकल्प सभी के सामने होते हैं--या तो संसार की दौड़ का, या संन्यास का। संन्यास या संसार--ये तो दो विकल्प सभी के सामने होते हैं। इन पंडितों ने कुछ विशेष नहीं किया अगर बुद्ध के लिए दो अंगुलियां उठाईं; मैं एक अंगुली उठाता हूं: यह संन्यासी होगा।

लेकिन आदमी का अभाग मन, शुद्धोधन रोने लगा। यह कोदन्ना सर्वज्ञात ज्योतिषी है; युवा है, पर महातेजस्वी है; और उसके वचन कभी खाली नहीं गए। दूसरे पंडितों के साथ तो सुविधा थी थोड़ी कि चक्रवर्ती भी बन सकता है, कोदन्ना ने तो विकल्प ही तोड़ दिया। उसने तो कहा, यह निश्चित बुद्ध बनेगा। उन पंडितों के साथ तो सम्राट रोया न था, प्रसन्न हुआ था--चक्रवर्ती सम्राट होगा बेटा। और दूसरे विकल्प को उसने कोई मूल्य न दिया था, क्योंकि जब चक्रवर्ती सम्राट होने का विकल्प हो तो कौन संन्यासी होना चाहता है! लेकिन कोदन्ना ने तो मार्ग तोड़ दिया, उसने तो एक ही अंगुली उठाई है। लेकिन सम्राट ने अपने मन को समझाया, कोदन्ना अकेला है, विपरीत सात ज्योतिषी हैं। ऐसे ही तो आदमी अपने मन को सांत्वना देता है। सात ही ठीक होंगे, एक ठीक न होगा। लेकिन वह एक ही ठीक सिद्ध हुआ। और अच्छा हुआ कि वह एक ही ठीक सिद्ध हुआ।

तुम्हारे जन्म के समय भी, जन्म के बाद भी--चाहे पंडित बुलाए गए हों, न बुलाए गए हों--प्रकृति दो अंगुलियां उठाती है। सारी प्रकृति दो विकल्प सामने रखती है--या तो खो जाना मूर्च्छा में, या जाग जाना होश में; या तो बाहर की संपदा को जुटाना, चक्रवर्ती होने की दौड़ में लगना; या भीतर की संपदा को जुटाना, आत्मवान होने में थिर होना। कोदन्ना की एक अंगुली याद रखना! कोई कोदन्ना तुम्हें न मिलेगा अंगुली उठाने को, तुम्हें ही अपनी अंगुली उठानी पड़ेगी।

🌸 आचार्य रजनीश "ओशो" 🌸

भज गोविंदम् मूढमते

पांचवां प्रवचन



Satish Purohit · 10h · 🌐

मैंने सुना है, एक सम्राट ने एक बहुत बड़े चोर को फांसी की सजा दी। उस राज्य का नियम था कि जिसे फांसी की सजा हो उससे अंतिम समय सम्राट पूछता था, तेरी कोई आखिरी इच्छा तो नहीं? तो सम्राट ने पूछा उस महाचोर को, तेरी कोई आखिरी इच्छा तो नहीं? उसने कहा मेरी आखिरी इच्छा है, छोटी-सी इच्छा है, वह पूरी हो जाये तो मैं तृप्त मरूँ। मेरे पास कुछ मोती हैं। और मेरे गुरु ने कहा था कि इन्हें बो देना तो एक-एक मोती से लाखों मोती पैदा होंगे। तो मैं इन्हें बो देना चाहता हूँ। मैं तो मर जाऊंगा लेकिन कोई यह फसल काटेगा। किसी को तो यह लाभ होगा, नहीं तो ये मोती मेरे साथ ही चले जायेंगे। सम्राट भी लोभ से भरा। और उसने कहा, ठीक है तुम राजमहल के बगीचे में ही बो दो। उस आदमी ने जमीन साफ की। उस आदमी ने जमीन पर हल-बखर चलाये। और फिर वह आदमी अचानक खड़ा हो गया। उसने सम्राट से कहा, आप कृपा करके यहां आ जायें क्योंकि मेरे गुरु ने कहा था, जो चोर न हो वही इन मोतियों को बोये। मैं तो चोर हूँ, मैं इनको नहीं बो सकूँगा। और बोऊंगा तो ये व्यर्थ चले जायेंगे। इन मोतियों की यह खूबी है, ये उगेंगे तभी जब कोई ऐसा आदमी बोये जो अचोर है। सम्राट अपने वजीरों की तरफ देखने लगा, वजीर पुरोहित की तरफ देखने लगे, पुरोहित सेनापति की तरफ देखने लगा और सेनापति सम्राट की तरफ देखने लगा और तब सम्राट ने कहा, क्षमा करो। ये बीज न बोये जा सकेंगे। हम सब चोर हैं। ऐसा तो कोई आदमी नहीं है, जो चोर न हो। और सम्राट ने कहा, मैं समझ गया तुम्हारी बात। तुम्हारी फांसी की सजा रद्द की जाती है। तुम भी चोर हो, हम भी चोर हैं। तुम छोटे चोर हो, हम बड़े चोर हैं; लेकिन चोर हम सब हैं। और वह सम्राट बड़ा दानी था। और वह चोर कहने लगा, महाराज, आप और चोर कैसे हो सकते हैं? आप तो महादानी! वह सम्राट कहने लगा, महादानी कैसे हो सकता हूँ बिना चोर हुए? पहले तो चोरी करनी पड़े, फिर दान करना पड़ता है। लाख आदमी चुरा लेता है, दो-चार हजार दान कर देता है। ऐसे चोरी के ऊपर साधु हो जाता है। चोरी करके यहां धन इकट्ठा कर लेता है, साधु होकर पुण्य करके वहां स्वर्ग में भी सिक्के इकट्ठे कर लेता है।-

अष्टावक्र महागीता, Osho

संकलन-रामजी 🙏🌹🌹



17

1 comment • 2 sends

ओशो



तुम भी सोचना, तुम भी संन्यस्त हो,
तुम बैठकर अगर व्यर्थ की बातें करते हो,
तो विचार करना, इन बातों से क्या
होगा? और अगर ये बातें वैसी ही हैं जैसी
होटलों में लोग कर रहे हैं बैठकर, अगर
ये बातें वैसी ही हैं जैसी क्लबघरों में चल
रही हैं, दुकानों पर चल रही हैं, बाजार में
चल रही हैं, तो फिर तुममें और उन
लोगों में फर्क क्या होगा? तुम्हारी बात से
तुम्हारा पता चलता है। बात ऐसे ही थोड़े
आ जाती है! बात तो फल है।

ओशो के सच्चे खोजियों, प्रेमियों और साधकों के संघ के
व्हाट्सएप ग्रुप से जुड़ने के लिए मैसेज करें : 82-82-82-34-60

यह पृथ्वी बड़ा पागलखाना है। इसमें से जागो।
इसमें से जागो, इसमें से न जागे तो बार—
बार मौत आएगी और बार—बार तुम वापस
इसी पागलखाने में फेंक दिए जाओगे। फिर—
फिर जन्म! इसीलिए तो पूरब के मनीषी एक ही
चितना करते रहे हैं सदियों से— आवागमन से
कैसे छुटकारा हो ? कैसे मिटे जन्म? कैसे मिटे
मौत? मिटने का एक ही उपाय है। तुम्हारे भीतर
कुछ ऐसा है जिसका न कभी जन्म हुआ और न
कभी मृत्यु होती है। तुम्हारे भीतर अजन्मा और
अमृतस्वरूप कुछ पड़ा है। वही तुम्हारा हीरा है,
उसे खोज लो। वही तुम्हारा धन।

अष्टावक्र : महागीता, भाग- ५ , प्रवचन# १५,

सच्चे खोजियों, प्रेमियों और साधकों के "ओशो-संघ" से जुड़े।
आओ मिलकर ओशो की क्रांतिकारी देशना को फैलाए।

Osho Life Education Program.

(The program for making healthy mind, soul & relationships

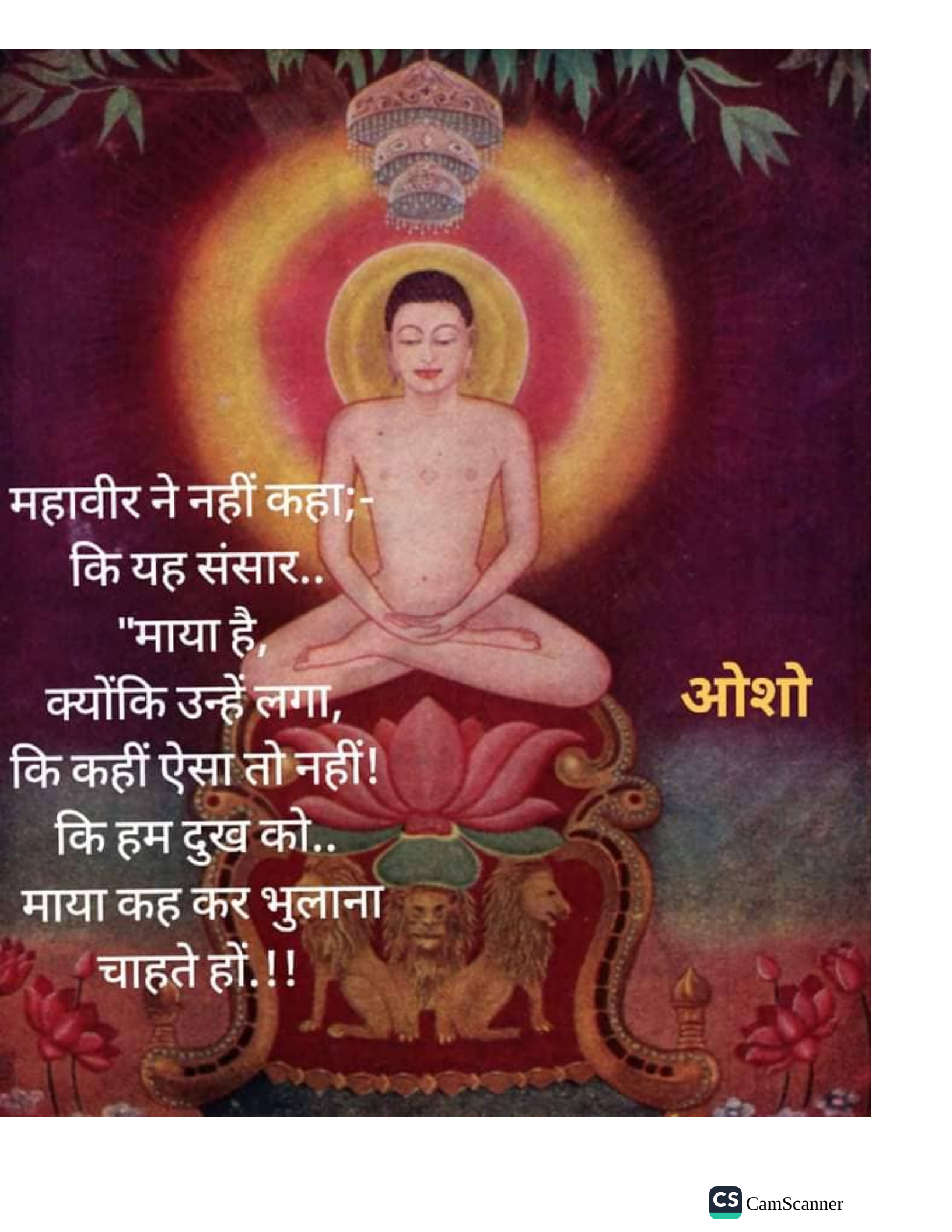
To join our whatsapp group : (+91) 82-82-82-34-60

[Swami Yogesh Nishabad]



एक स्त्री का सम्मान मात्र इतना सा है की कोई भी
पुरुष बिना उसकी इजाजत के उस स्त्री के मानसिक,
शारीरिक दायरे में ना जाये ।

- Osho



महावीर ने नहीं कहा;-
कि यह संसार..
"माया है,
क्योंकि उन्हें लगा,
कि कहीं ऐसा तो नहीं!
कि हम दुख को..
माया कह कर भुलाना
चाहते हों.!!

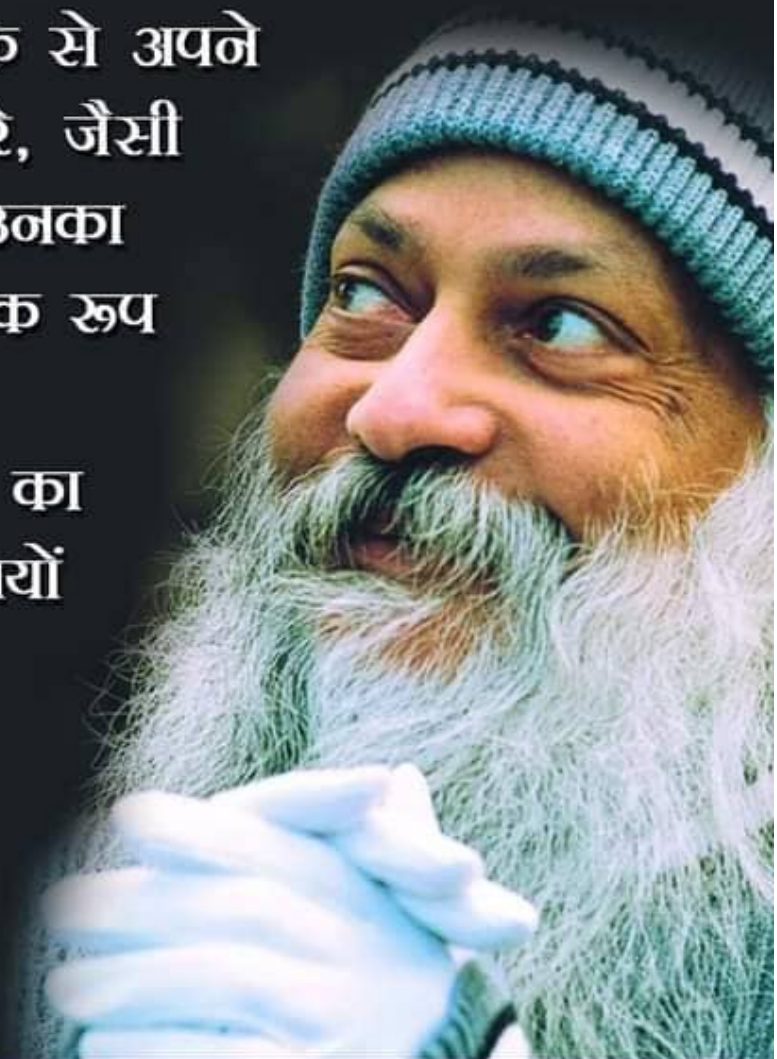
ओशो

संसार की शुद्धि संन्यास है

संसार का विरोध संन्यास नहीं है, संसार की शुद्धि संन्यास है। अगर संसार में आप शुद्ध होते चले जाएं, एक दिन आप पाएंगे कि आप संन्यासी हो गए हैं। संन्यासी होना कोई वेश-परिवर्तन नहीं है कि हमने कपड़े बदल लिए और हम संन्यासी हो गए। संन्यास तो पूरे अंतः का परिवर्तन है, एक विकास है। संन्यास एक ग्रोथ है। बड़े आहिस्ता, बहुत आहिस्ता एक विकास है।

अगर कोई व्यक्ति ठीक से अपने जीवन का उपयोग करे, जैसी भी परिस्थितियां हों, उनका उपयोग करे, तो क्रमिक रूप से धीरे-धीरे पाएगा, उसके भीतर संन्यासी का जन्म हो रहा है। वृत्तियों पर विचार करने की और वृत्तियों को शुद्ध और शून्य करने की बात है।

—ओशो



www.oshofragrance.org



दूसरी ढेरी, मेरे सगे-सम्बन्धियों की थी, परंतु उन्होंने भी मेरे माता-पिता को नहीं समझाया। अतः मैंने दूसरी ढेरी को भी तोड़ दिया।

और तीसरी ढेरी, हे राजन आपकी थी क्योंकि राज्य की प्रजा की रक्षा करना, राजा का ही धर्म होता है, परन्तु जब राजा ही, मेरी बलि देना चाह रहा है तो, ये ढेरी भी मैंने तोड़ दी।

और चौथी ढेरी, हे राजन, मेरे ईश्वर की है। अब सिर्फ और सिर्फ, अपने ईश्वर पर ही मुझे भरोसा है। इसलिए यह एक ढेरी मैंने छोड़ दी है।

बच्चे का उत्तर सुनकर, राजा अंदर तक हिल गया। उसने सोचा, कि पता नहीं बच्चे की बलि देने के पश्चात भी, पुत्र की प्राप्ति होगी भी या नहीं होगी। इसलिये क्यों न इस बच्चे को ही अपना पुत्र बना लिया जाये?

इतना समझदार और ईश्वर-भक्त -बच्चा है। इससे अच्छा बच्चा और कहाँ मिलेगा ?

काफी सोच विचार के बाद, राजा ने उस बच्चे को अपना पुत्र बना लिया और राजकुमार घोषित कर दिया।

जो व्यक्ति ईश्वर पर विश्वास रखते हैं, उनका कोई बाल भी बाँका नहीं कर सकता, यह एक अटल सत्य है।



जो मनुष्य हर मुश्किल में, केवल और केवल, ईश्वर का ही आसरा रखते हैं, उनका कहीं से भी, किसी भी प्रकार का, कोई अहित नहीं हो सकता।

संसार में सभी रिश्ते झूठे हैं। केवल और केवल, एक प्रभु का नाम ही सत्य है।



18

3 shares



Like



Comment



Send



Share



बच्चे ने रेत से चार ढेर बनाए, एक-एक करके बच्चे ने तीन रेत के ढेरों को तोड़ दिया और चौथे के सामने हाथ जोड़कर बैठ गया और उसने राजा से कहा कि अब जो करना है, आप लोग कर लें।

यह सब देखकर तांत्रिक डर गए और उन्होंने बच्चे से पूछा पहले तुम यह बताओ कि ये तुमने क्या किया है?

राजा ने भी यही सवाल बच्चे से पूछा। तो बच्चे ने कहा कि पहली ढेरी मेरे माता-पिता की थी। मेरी रक्षा करना उनका कर्तव्य था। परंतु उन्होंने अपने कर्तव्य का पालन न करके, पैसे के लिए मुझे बेच दिया, इसलिए मैंने ये ढेरी तोड़ दी।

दूसरी ढेरी, मेरे सगे-सम्बन्धियों की थी, परंतु उन्होंने भी मेरे माता-पिता को नहीं समझाया। अतः मैंने दूसरी ढेरी को भी तोड़ दिया।

और तीसरी ढेरी, हे राजन आपकी थी क्योंकि राज्य की प्रजा की रक्षा करना, राजा का ही धर्म होता है, परन्तु जब राजा ही, मेरी बलि देना चाह रहा है तो, ये ढेरी भी मैंने तोड़ दी।

और चौथी ढेरी, हे राजन, मेरे ईश्वर की है। अब सिर्फ और सिर्फ, अपने ईश्वर पर ही मुझे भरोसा है। इसलिए यह एक ढेरी मैंने छोड़ दी है।

बच्चे का उत्तर सुनकर, राजा अंदर तक हिल गया। उसने सोचा, कि पता नहीं बच्चे की बलि देने के पश्चात भी, पुत्र की प्राप्ति होगी भी या नहीं होगी। इसलिये क्यों न इस बच्चे को ही अपना पुत्र बना लिया जाये?

इतना समझदार और ईश्वर-भक्त -बच्चा है। इससे अच्छा बच्चा और कहाँ मिलेगा?

काफी सोच विचार के बाद, राजा ने उस बच्चे को अपना पुत्र बना लिया और राजकुमार घोषित कर दिया।

जो व्यक्ति ईश्वर पर विश्वास रखते हैं, उनका कोई बाल भी बाँका नहीं कर सकता, यह एक अटल सत्य है।





*चार ढेरियां*

~~~~ ~~~~ ~~~~ ~~~~

एक राजा था, उसके कोई पुत्र नहीं था। राजा बहुत दिनों से पुत्र की प्राप्ति के लिए आशा लगाए बैठा था, लेकिन पुत्र की प्राप्ति नहीं हुई, उसके सलाहकारों ने, तांत्रिकों से सहयोग लेने को कहा।

\*तांत्रिकों की तरफ से राजा को सुझाव मिला कि यदि किसी बच्चे की बलि दे दी जाए, तो राजा को पुत्र की प्राप्ति हो सकती है।\*

\*राजा ने राज्य में ढिंढोरा पिटवाया कि जो अपना बच्चा बलि चढ़ाने के लिये राजा को देगा, उसे राजा की तरफ से, बहुत सारा धन दिया जाएगा।\*

\*एक परिवार में कई बच्चे थे, गरीबी भी बहुत थी। एक ऐसा बच्चा भी था, जो ईश्वर पर आस्था रखता था तथा सन्तों के सत्संग में अधिक समय देता था।\*

\*राजा की मुनादी सुनकर परिवार को लगा कि क्यों ना इसे राजा को दे दिया जाए ? क्योंकि ये निकम्मा है, कुछ काम -धाम भी नहीं करता है और हमारे किसी काम का भी नहीं है।\*

\*और इसे देने पर, राजा प्रसन्न होकर, हमें बहुत सारा धन देगा।\*

\*ऐसा ही किया गया, बच्चा राजा को दे दिया गया।\*

\*राजा ने बच्चे के बदले ,उसके परिवार को काफी धन दिया। राजा के तांत्रिकों द्वारा बच्चे की बलि देने की तैयारी हो गई।\*

\*राजा को भी बुला लिया गया, बच्चे से पूछा गया कि तुम्हारी आखिरी इच्छा क्या है ? ये बात राजा ने बच्चे से पूछी और तांत्रिकों ने भी पूछी।\*

\*बच्चे ने कहा कि, मेरे लिए रेत मँगा दी जाए, राजा ने कहा, बच्चे की इच्छा पूरी की जाये । अतः रेत मंगाया गया।\*

\*बच्चे ने रेत से चार ढेर बनाए, एक-एक करके बच्चे ने तीन रेत के ढेरों को जोड़ दिया और चौथे ढेर सामने लूटा जोड़कर चार ढेरों को जोड़ दिया।



**Swami Lokeshanand**

2h · 🌐

मेरे एक समय के परम मित्र श्री अरविंद गुप्ता जी यह कहानी सुनाते थे। एक घुड़सवार एक मंदिर में पहुँचा और अपना घोड़ा बाँधने लगा। उसे विचार आया कि मैंने घोड़े पर नई काठी लगवाई है, कहीं चोरी न हो जाए।

उसने वहाँ खड़े एक लड़के से कहा- बेटा! मैं भगवान का दर्शन करने जा रहा हूँ। तुम जरा देर इस काठी की रखवाली करना।

मंदिर में जाने पर, दर्शन करते हुए भी उसका ध्यान काठी में ही रहा। वह सोच रहा था कि बाहर जाकर, उस लड़के को दस रुपये इनाम में दूंगा। पर जब वह बाहर आया, तब यह देखकर हैरान रह गया कि वहाँ न काठी है, न वह लड़का।

मन ही मन गाली देता हुआ, वह बाजार में उस लड़के को ढूँढने लगा। उसे लड़का तो नहीं मिला, पर एक दुकान पर वही काठी लटकी मिल गई।

उसने दुकानदार से कहा- भाई! यह काठी मेरी है, एक लड़का इसे चुरा ले गया था।

दुकानदार बोला- भैया! बात तो तुम्हारी ठीक लगती है। एक लड़का अभी अभी इसे मुझे दस रुपये में बेच कर गया है। मैं इसे दो सौ रुपये की बेचता। पर मैं तुमसे लाभ नहीं लूंगा, तुम मुझे दस रुपये ही दे दो और यह काठी ले जाओ।

घुड़सवार ने दस रुपये चुकाए और अपनी काठी ले गया।

लोकेशानन्द कहता है कि यही कर्म की गति है।

उस दुकानदार के भाग्य में न लाभ था न हानि। दस दिए थे, बैठे बैठे दस वापिस मिल गए।

घुड़सवार के दस रुपये जाने थे। पर यदि भगवान का दर्शन करते हुए, काठी का विचार न करता तो बहुत संभव था कि उसे इतनी परेशानी न उठानी पड़ती।

जबकि लड़के को दस रुपये मिलने ही थे। यदि चोरी न करता तो भी मिलते, अब भी मिले। पर लोभवश उसने अपने लिए एक नया पाप कर्म उत्पन्न कर लिया, जिसका फल उसे पुनः कभी भोगना पड़ेगा।

हमें इस कहानी पर विचार करके अपने कर्मों की योजना बनानी चाहिए।





### मूल श्लोकः

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया।

मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते॥7.14॥

### Hindi Commentary By Swami Ramsukhadas

॥7.14॥ **व्याख्या--**'दैवी ह्येषा गुणमयी (टिप्पणी प० 411) मम माया दुरत्यया'--सत्त्व, रज और तम--इन तीन गुणोंवाली दैवी (देव अर्थात् परमात्माकी) माया बड़ी ही दुरत्यय है। भोग और संग्रहकी इच्छा रखनेवाले मनुष्य इस मायासे सम्बन्ध-विच्छेद नहीं कर सकते।

'दुरत्यय' कहनेका तात्पर्य है कि ये मनुष्य अपनेको कभी सुखी और कभी दुःखी, कभी समझदार और कभी बेसमझ, कभी निर्बल और कभी बलवान् आदि मानकर इन भावोंमें तल्लीन रहते हैं। इस तरह आने-जानेवाले प्राकृत भावों और पदार्थोंमें ही तादात्म्य, ममता, कामना करके उनसे बँधे रहते हैं और अपनेको इनसे रहित अनुभव नहीं कर सकते। यही इस मायामें दुरत्ययपना है। यह गुणमयी माया तभी दुरत्यय होती है; जब भगवान्के सिवाय गुणोंकी स्वतन्त्र सत्ता और महत्ता मानी जाय। अगर मनुष्य भगवान्के सिवाय गुणोंकी अलग सत्ता और महत्ता नहीं मानेगा, तो वह इस गुणमयी मायासे तर जायगा।

'मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते'--मनुष्योंमेंसे जो केवल मेरी ही शरण होते हैं, वे इस मायाको तर जाते हैं; क्योंकि उनकी दृष्टि केवल मेरी ही तरफ रहती है, तीनों गुणोंकी तरफ नहीं। जैसा कि पहले वर्णन किया है, सत्त्व, रज और तम--ये तीनों गुण न मेरेमें हैं और न मैं उनमें हूँ। मैं तो निर्लिप्त रहकर सभी कार्य करता हूँ। इस प्रकार जो मेरे स्वरूपको जानते हैं, वे गुणोंमें नहीं फँसते, इस मायासे तर जाते हैं। वे गुणोंका कार्य मनबुद्धिका किञ्चिन्मात्र भी सहारा नहीं लेते। क्यों नहीं लेते क्योंकि वे इस बातको जानते हैं कि प्रकृतिका कार्य होनेसे मन-बुद्धि भी तो एकति हैं। प्रकृतिकी क्रियाशीलता

ऐसे ही शरणागत भक्त अपनी कुछ भी मरजो? मनको बात नहीं रखता। वह जितना अधिक निश्चिन्त और निर्भय होता है? भगवत्कृपा उसको अपनेआप उतना ही अधिक अपने अनुकूल बना लेती है और जितनी वह चिन्ता करता है? अपना बल मानता है? उतना ही वह आती हुई भगवत्कृपामें बाधा लगाता है अर्थात् शरणागत होनेपर भगवान्की ओरसे जो विलक्षण? विचित्र? अखण्ड? अटूट कृपा आती है? अपनी चिन्ता करनेसे उस कृपामें बाधा लग जाती है।

जैसे धीवर (मछुआ) मछलियोंको पकड़नेके लिये नदीमें जाल डालता है तो जालके भीतर आनेवाली सब मछलियाँ पकड़ी जाती हैं परन्तु जो मछली जाल डालनेवाले मछुएके चरणोंके पास आ जाती है? वह नहीं पकड़ी जाती। ऐसे ही भगवान्की माया(संसार) में ममता करके जीव फँस जाते हैं और जन्मतेमरते रहते हैं परन्तु जो जीव मायापति भगवान्के चरणोंकी शरण हो जाते हैं? वे मायाको तर जाते हैं -- **मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते** (गीता 7। 14)। इस दृष्टान्तका एक ही अंश ग्रहण करना चाहिये क्योंकि धीवरका तो मछलियोंको जालमें फँसानेका भाव होता है परन्तु भगवान्का जीवोंको मायामें फँसानेका किञ्चिन्मात्र भी भाव नहीं होता। भगवान्का भाव तो जीवोंको मायाजालसे मुक्त करके अपने शरण लेनेका होता है? तभी तो वे कहते हैं -- **मामेकं शरणं ब्रज।** जीव संयोगजन्य सुखकी लोलुपतासे खुद ही मायासे फँस जाते हैं।

जैसे चलती हुई चक्कीके भीतर आनेवाले सभी दाने पिस जाते हैं (**टिप्पणी प० 978**) परन्तु जिसके आधारपर चक्की चलती है? उस कीलके आसपास रहनेवाले दाने ज्योंकेत्यों साबूत रह जाते हैं। ऐसे ही जन्ममरणरूप संसारकी चलती हुई चक्कीमें पड़े हुए सबकेसब जीव पिस जाते हैं अर्थात् दुःख पाते हैं, परन्तु जिसके आधारपर संसारचक्र चलता है? उन भगवान्के चरणोंका सहारा लेनेवाला जीव पिसनेसे बच जाता है -- **कोई हरिजन ऊबरे? कील माकड़ी पास।** परन्तु यह दृष्टान्त भी पूरा नहीं घटता क्योंकि दाने तो स्वाभाविक ही कीलके पास रह जाते हैं। वे बचनेका कोई उपाय नहीं करते। परन्तु भगवान्के भक्त संसारसे विमुख होकर प्रभुके चरणोंका आश्रय लेते हैं। तात्पर्य यह है कि जो भगवान्का अंश होकर भी संसारको अपना मानता है अथवा संसारसे कुछ चाहता है? वही जन्ममरणरूप चक्रमें पड़कर दुःख भोगता है। संसार और भगवान् -- इन दोनोंका सम्बन्ध दो तरहका होता है। संसारका सम्बन्ध केवल माना हुआ है और भगवान्का सम्बन्ध वास्तविक है। संसारका सम्बन्ध तो मनुष्यको पराधीन बनाता है? ग्लाम बनाता है? पर भगवान्का सम्बन्ध



Mgkvp Pk Rai

Yesterday, 11:58 pm



शहर जालिमों का है साहब  
जरा संभल कर चलना,

यहाँ लोग सीने से लगा कर  
दिल निकाल लेते है ।



Reply

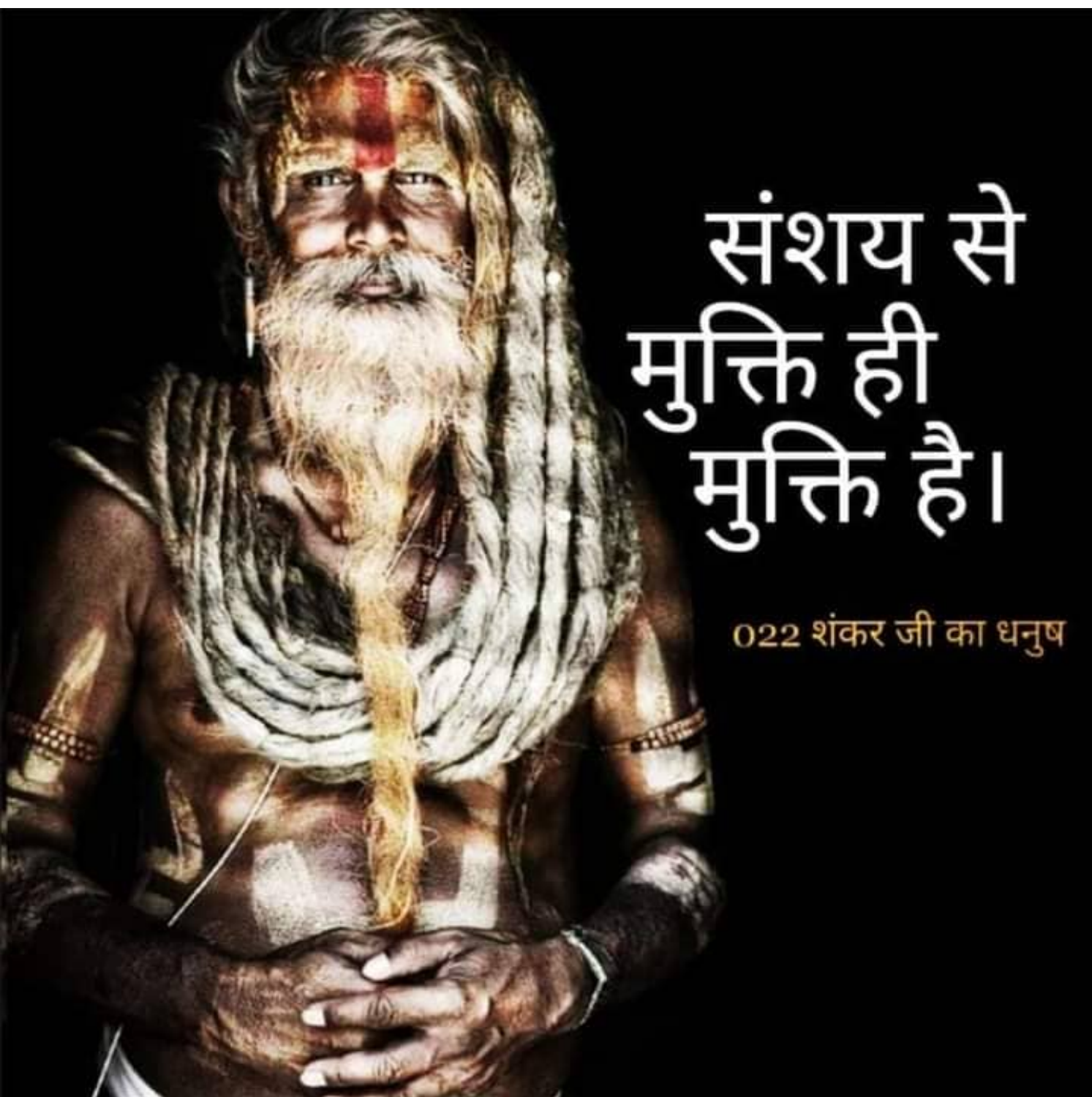




“ एक डरा हुआ शिक्षक  
एक रीढ़विहीन विद्यार्थी  
तैयार करता है, जो बाहर  
जाकर एक मुर्दा नागरिक  
बन जाता है।

- डॉ. लक्ष्मण यादव / साहित्य आलेखन





संशय से  
मुक्ति ही  
मुक्ति है।

022 शंकर जी का धनुष



Mgvk Pk Rai

Today, 9:01 pm



हम भी तो देखें जो हमारे साथ रह कर  
तबाह हो रहे थे....  
वो दूर जा कर कितने आबाद होते हैं

– aarti yadav



YourQuote.in

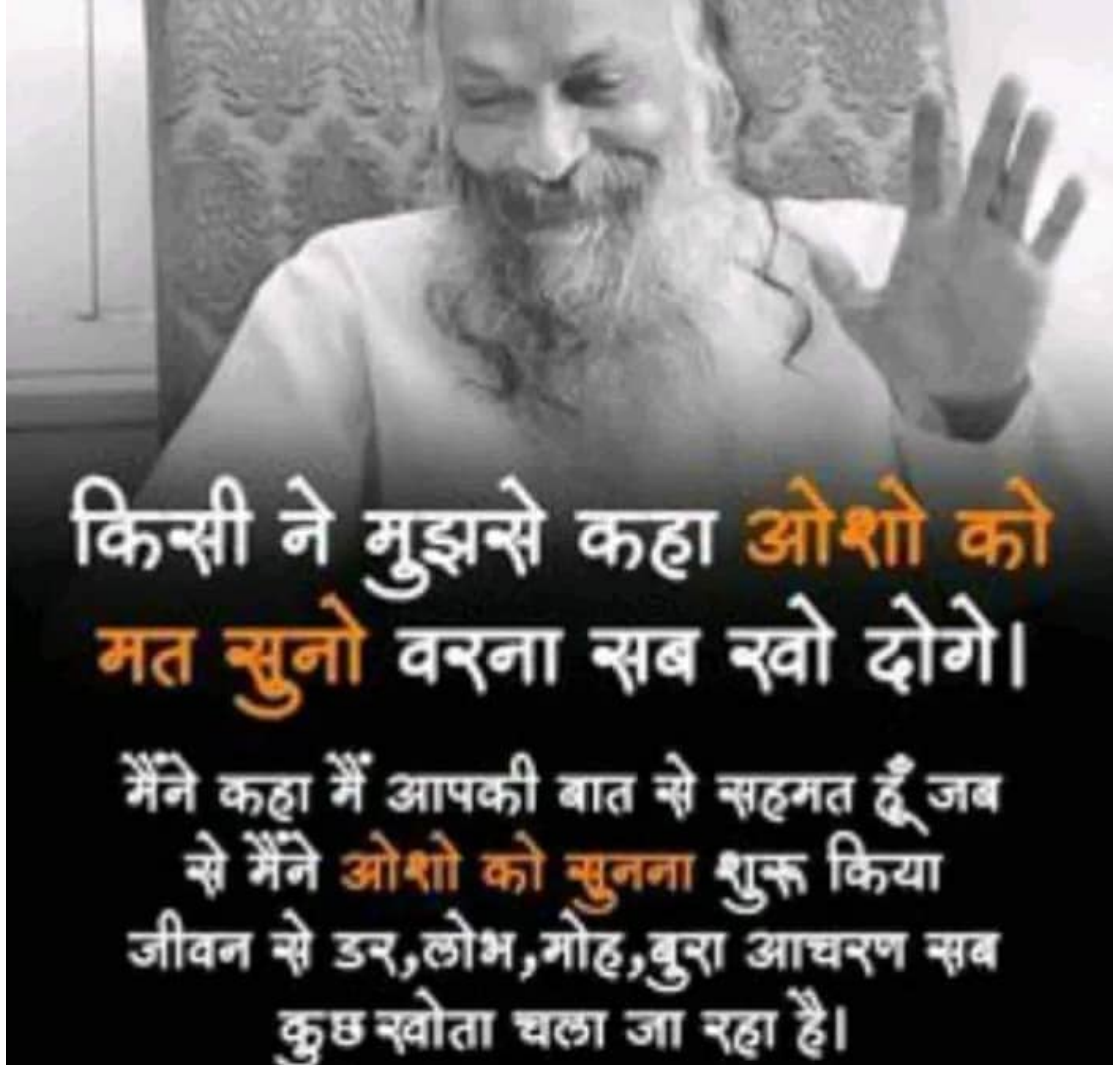


Reply



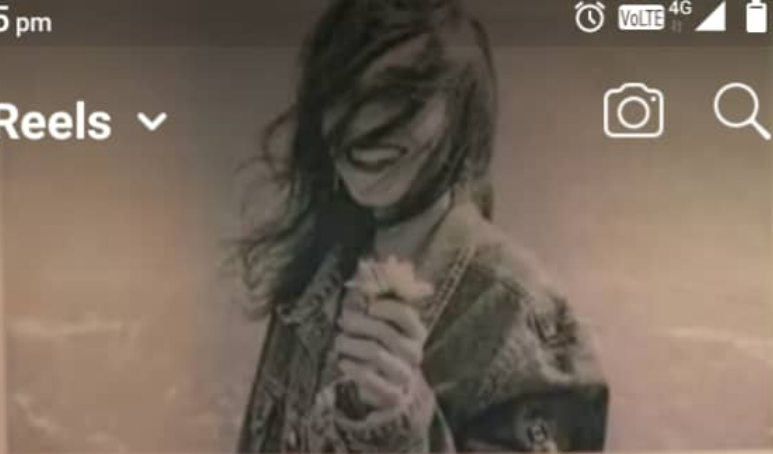
CamScanner





किसी ने मुझसे कहा **ओशो को**  
**मत सुनो** वरना सब खो दोगे।

मैंने कहा मैं आपकी बात से सहमत हूँ जब  
से मैंने **ओशो को सुनना** शुरू किया  
जीवन से डर, लोभ, मोह, बुरा आचरण सब  
कुछ खोता चला जा रहा है।

 Reels ▾

The second is the Ben Franklin effect.

People like you more when they do a  
favor for you, especially if it's just a small  
favor. For instance, it could be as small as,

"Can you hold my drink for me for

second?" The person you say that to will

like you more when they do that small

task for you because their brain will

automatically assume they like you

they are doing you a favor...



16K



143



3.3K



Send

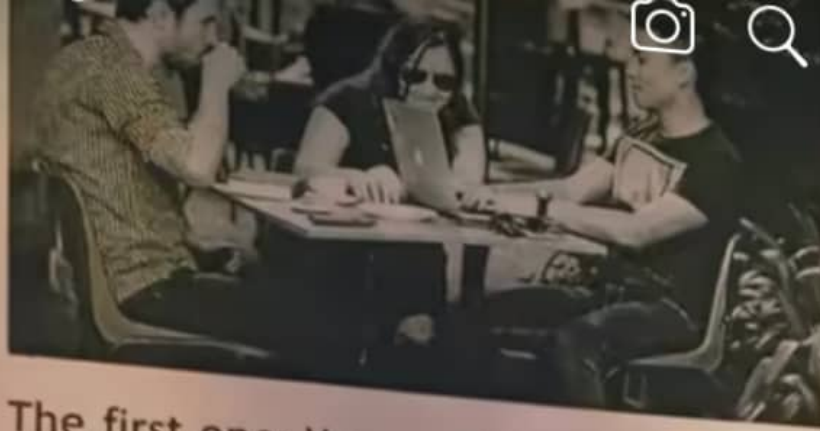


Epic-Endeavors

Follow

#fyp #psychology #socialskills #psychol... more





The first one: You won't believe this, but  
if you are talking to someone one-on-one  
and then you start saying something good  
about a third person who's not there,  
that person will attribute those good  
things to you. For example, if you say,  
"Our friend Mike has such good energy,"  
or "Ashley is so beautiful," the person  
you're talking to will attribute those good  
attributes to you.



16K



143



3.3K



Send



Epic-Endeavors

Follow

#fyp #psychology #socialskills #psychol... more



CamScanner



अहंकार वो है  
जिसे तुम एकत्रित करते हो- अहंकार तुम्हारा  
उपलब्धि है।

वयं का भाव तुम्हें आस्तित्व द्वारा मिली भेंट है  
तुमने उसे अर्जित करने के लिए कुछ नहीं किया  
तुमने उसे हासिल नहीं किया है इसलिए उसे

तुमसे कोई  
भी छीन नहीं सकता। यह  
संभव है क्योंकि यह तुम्हारा स्वभाव है, तुम्हारा  
निज होना।

🎵 Use audio



Rajneesh Gyan

ओशो



Give



7



2



ओशो अहोभाव  
कोंपलें फिर फूट आई  
(शून्य शिखर पर सुख की खोज )

मैंने उस रस को चखा है। और तुम्हारे भीतर भी  
उस रस को चखने की जन्मों-जन्मों से प्यास है।





दख पाजा।

परमात्मा एक दृष्टि है। संसार तो यही है आस्तिक को भी, नास्तिक को भी; ज्ञानी को भी, अज्ञानी को भी। संसार तो यही है, उसको भी जो आनंद से विभोर होकर नाच रहा है, और उसको भी जो दुख में डूबा हुआ सड़ रहा है।

यह संसार तो तुम्हारी व्याख्या है। तुम्हारी व्याख्या भ्रान्त होगी तो यह नर्क जैसा मालूम पड़ेगा। तुम्हारी व्याख्या सम्यक होगी तो यही स्वर्ग हो जायेगा। स्वर्ग और नर्क कोई भौगोलिक घटनायें नहीं हैं। वे कोई स्थान नहीं हैं जहां तुम जा सको। वे तुम्हारे देखने के ढंग हैं।

इसलिए क्षण में सब बदल सकता है। ढंग देखने का बदल जाये तो यहीं परमात्मा चारों तरफ प्रकट हो जाता है। वह मौजूद ही है; तुम्हारे देखने में कहीं भूल है। तुम उसे नहीं देख पाते। जैसे कि कोई आदमी सूरज के बरसते हुए प्रकाश में आंख बंद किए हुए खड़ा हो, ऐसे तुम परमात्मा की बरसती हुई धारा में आंख बंद किए खड़े हो। जैसे कि कोई आदमी प्रियतम की तरफ पीठ किए खड़ा हो। ऐसे तुम परमात्मा की तरफ पीठ किए खड़े हो, और फिर तुम कहते हो कि परमात्मा कहां है? दुख जीवन की गलत व्याख्या है। सुख जीवन की सही व्याख्या है। और आनंद सब व्याख्याओं से मुक्त हो जाना है; वह मोक्ष है...

ओशो

मीमा नले अंधेरा





एक सूफी फकीर हुआ मुहम्मद सैयद। वह बड़े प्रसिद्ध संत फुरकन का शिष्य था। शाहजहां उसे आदर करते थे। और दाराशिकोह उसके भक्तों में एक था। औरंगजेब इस कारण ही उससे नाराज था। और जब औरंगजेब सत्ता में आया तो उसने पहला काम किया कि मुहम्मद सैयद को जेलखाने में डाल दिया, बहुत सताया और फिर आखिर में सूली दे दी।

मुहम्मद सैयद एक गीत गाया करते थे। उस गीत का अर्थ था कि मैं भक्तों का भक्त हूं। भगवान तो मुझसे बहुत दूर, उसे तो मैं कैसे पहचानूं! मैं उसके भक्तों को ही पहचान लूं तो मेरी तृप्ति है। उस गीत में कुछ पंक्तियां और थीं कि मैं यहूदी भी हूं, मुसलमान भी, हिंदू भी; और काबा में जो संगे-अस्बद है वही दैर में बुत है।

ये बातें खतरनाक थीं। मुसलमान मुल्ला नाराज थे। फिर औरंगजेब खुद भी नाराज था; तो सूली दे देनी बड़ी आसान है। जिस दिन सैयद मुहम्मद सूली पर चढ़े, उस दिन सूली की सीढ़ियां चढ़ते उन्होंने एक गीत फिर गाया। वह उनका आखिरी गीत है।

उस गीत का मतलब है, 'मैं तुम्हें भली-भांति पहचानता हूं। तू किसी भी शक्ल में क्यों न आये, तू मुझे धोखा न दे सकेगा।' और आकाश की तरफ आंखें उठा कर उन्होंने कहा कि 'हे मेरे प्रीतम, हे मेरे दोस्त, आज तू सूली की शक्ल में आया है। लेकिन पक्का भरोसा रख, तू मुझे धोखा नहीं दे पा रहा है। मैं सूली के पीछे छिपा तुझे देख रहा हूं। और यह सूली मेरा परम सौभाग्य है। क्योंकि यह देह जो बाधा थी, मेरे और तेरे बीच में; गिर जायेगी। मिलन शाश्वत हो जायेगा। बूंद अब सागर में गिरने के करीब है।'

संतत्व का अर्थ क्या है? संतत्व का अर्थ है जहां भी आंख पड़े वहां परमात्मा दिखाई पड़े। संतत्व का अर्थ नहीं है कि आकाश में कहीं दूर छिपा हुआ परमात्मा हो। संतत्व का अर्थ है: ऐसा कुछ भी न बचे जहां परमात्मा दिखाई न पड़े। परमात्मा तुम्हारी दृष्टि हो जाये। वही हो सब तरफ। हवा के हर झोंके में उसका झोंका हो। सूरज की हर किरण में उसका प्रकाश हो। जीवन किसी भी रूप में छिपा हो, तुम्हारी आंखें इतनी गहरी हो जायें कि तुम वहां परमात्मा को पा सको; तुम्हें धोखा न दिया जा सके। प्रीतम चाहे सूली की शक्ल में ही क्यों न आये, तुम उसे देख पाओ।

परमात्मा एक दृष्टि है। संसार तो यही है आस्तिक को भी, नास्तिक



400 वर्ष पूर्व 21 से 27 दिसंबर के बीच  
गुरु गोविन्द सिंह का पूरा परिवार  
देश-धर्म के लिए बलिदान हो गया था, लेकिन  
हमें तो क्रिस्मस याद है!!



Use audio



Sunil Kevat

Follow



51K



803



6.9K

**Khilesh Sahu** commented: सब साजिश है..सनातन को  
बदनाम करने की



Send



Mitti

Arko · Teri



Add a comment...





आप जिस पर ध्यान देना छोड़ देंगे उसका नष्ट होना  
स्वाभाविक है, फिर चाहे वह स्वास्थ्य हो, धन हो,  
व्यापार हो, संगत हो, या कोई रिश्ता.



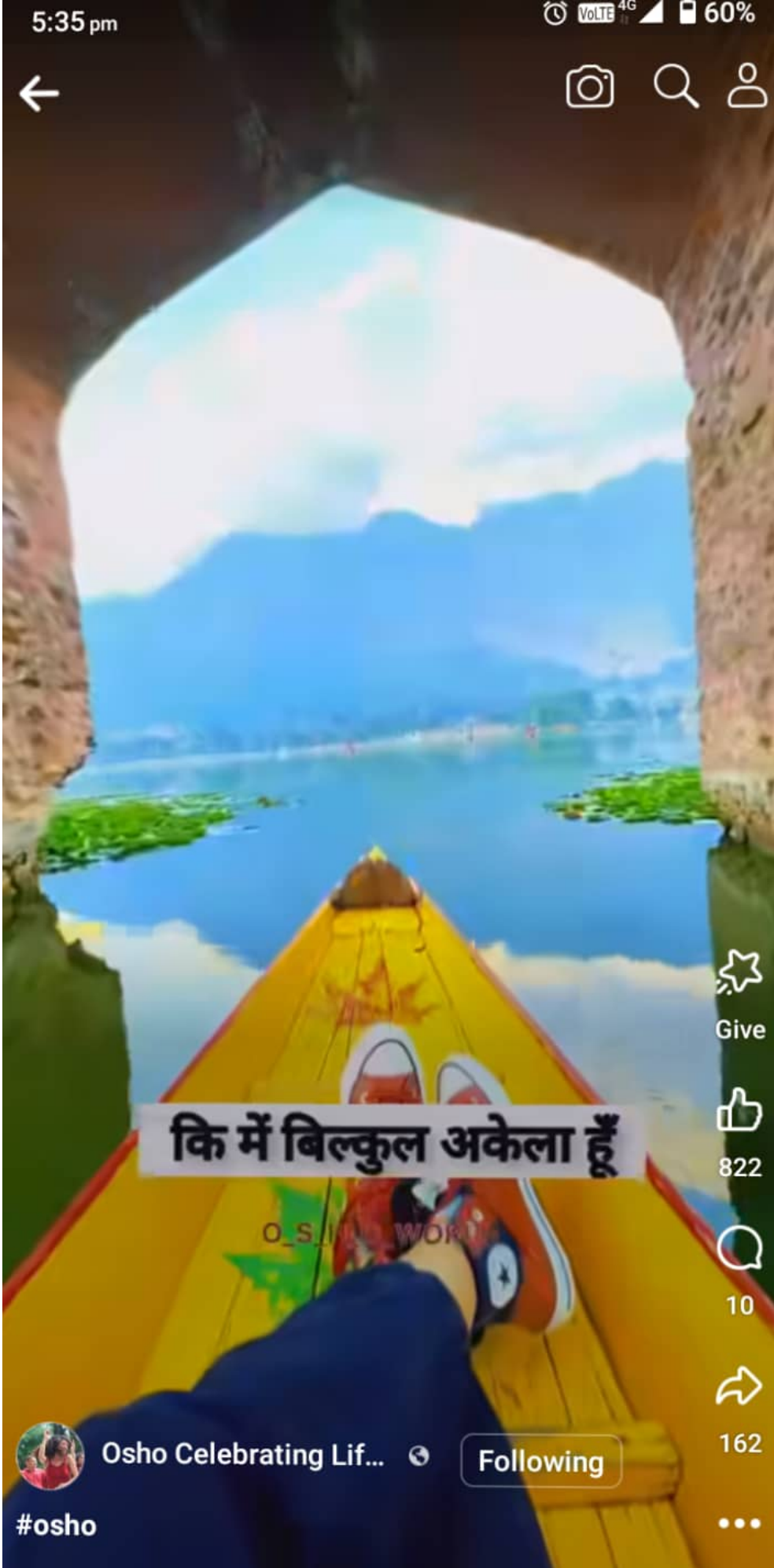
164



11







कि में बिल्कुल अकेला हूँ

O\_S... WORLD



Give



822



10



162

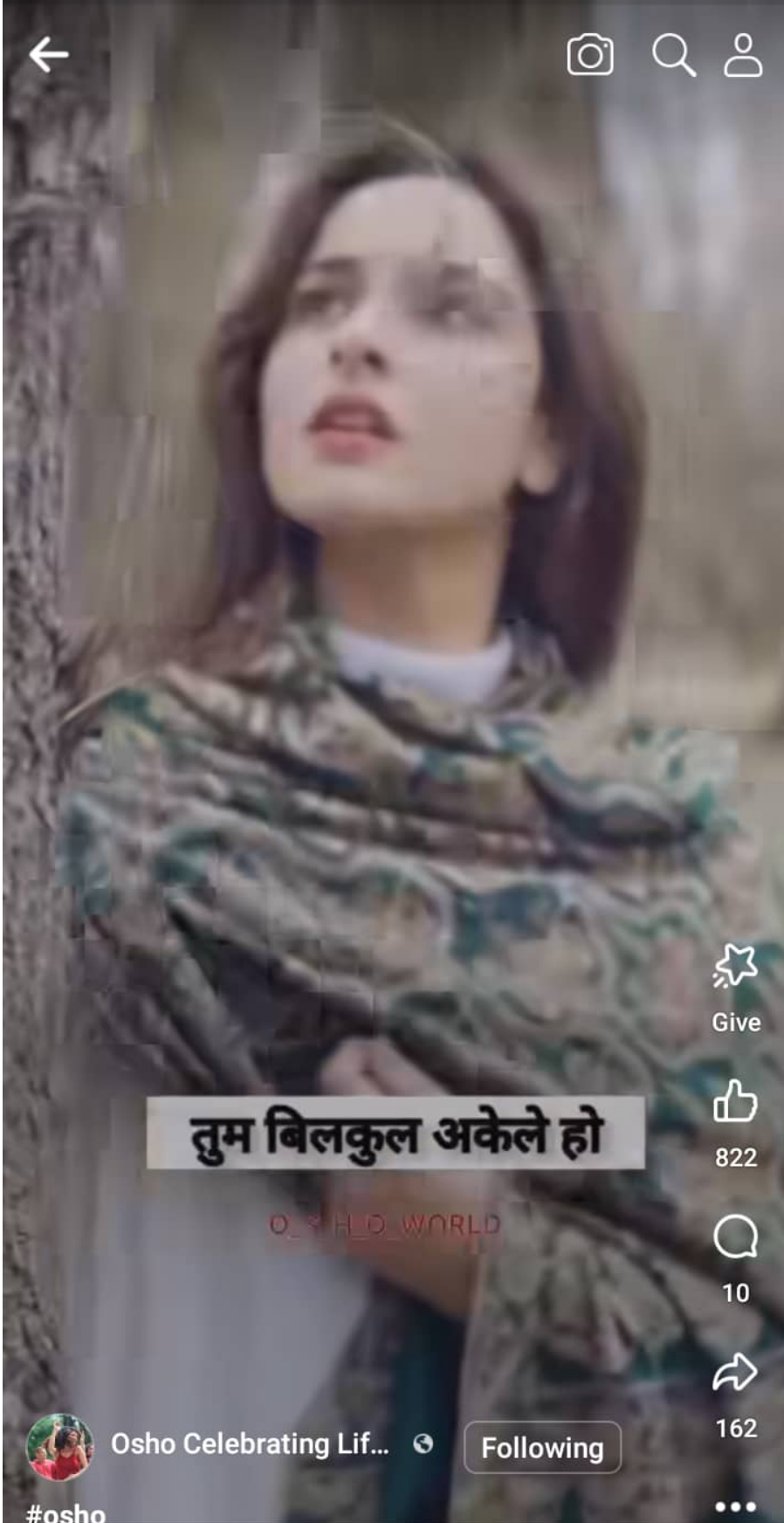


Osho Celebrating Lif...



Following

#osho



Give



822



10



162



Osho Celebrating Lif...

Following

#osho

Add a comment...





हम सब

एक दूसरे का

O.S.H.O. WORLD

उपयोग कर रहे हैं



Give



822



10



162



Osho Celebrating Lif...



Following

#osho



Add a comment...





18.

Treat people exactly the way they deserve.

19.

Accept that they owe you money;  
two call attempts are enough. If they value you,  
they will call you back.

20.

Be good at what you do;  
be the best."



572



2



125



Send



Epic-Endeavors

Follow

14.

Learn to spend money on yourself;  
that's how people will learn to spend on you.

15.

Be scarce sometimes.

16.

Be a giver more than a receiver.

17.

Don't go where you are not invited,  
and when invited,  
don't overstay.



572



2



125



Send

10.

Always look your best;  
dress the way you should be addressed.

11.

Be an achiever;  
get busy with your goals.

12.

Respect your time.

13.

Don't stay in a relationship where you  
don't feel respected and valued;  
walk away.



572



2



125



Send



Epic-Endeavors

Follow



6.

Reduce how often you visit some people,  
especially if they don't reciprocate.

7.

Invest in yourself;  
make yourself happy.

8.

Stop entertaining gossip about other people.

9.

Think before you talk;  
80 percent of how people value you is  
what comes out of your mouth.



572



2



125



Send



Epic-Endeavors

Follow

#respectyourself #mindsetcoach #mind... more



## "20 ways to respect yourself:

1.

top looking for those who are not looking for yo

2.

Stop begging.

3.

Stop saying more than is necessary.

4.

When people disrespect you,  
confront them immediately.

5.

Don't eat other people's food more  
than they eat yours.



572



2



125



Send



Epic-Endeavors

Follow

#respectyourself #mindsetcoach #mind... more



"फ़ासला बढ़ा लिया तुमने मैंने दीवार पक्की कर ली"

ज़रा सी ग़लत फ़हमी ने देखो कितनी  
तरक्की कर ली।

Insta:@sufi\_ke\_kisse



Give



13



1

🎵 Use audio



Sufi Ke Kisse





## बहुत दूर मुझे चले जाना है - Bahut Door Mujhe Chale Jaana Hai (Lata, Kishore)

Movie/Album: हीरा पन्ना (1973)

Music By: आर.डी.बर्मन

Lyrics By: आनंद बक्षी

Performed By: किशोर कुमार, लता मंगेशकर

बहुत दूर मुझे चले जाना है  
बहुत नज़दीक मुझे आना है  
तेरी बाहों में मुझे आज मर जाना है

किसी को इस जगह पे नहीं आना है  
किसी को इस जगह से नहीं जाना है  
तेरी बाहों में...

जाने मिले या ना मिले फिर ऐसी तन्हाई  
दिल की लगी लेने लगी सीने में अंगड़ाई  
हो मुझको छुपा ले, दिल में बसा ले  
देख बुरा ये ज़माना है  
किसी को इस जगह...

क्या ज़िंदगी कट जाएगी बस तेरी यादों में  
ये रात भी ढल जाएगी क्या यूं ही वादों में  
हो अरमान निकले, या जान निकले  
प्यार मेरा दीवाना है  
किसी को इस जगह...

मेरे बदन में ओ सजन जागी इक चिंगारी  
रुक जाएगी जल जाएगी इसमें दुनिया सारी  
इसको बुझा दे, शोला बना दे  
कहता ये परवाना है  
बहुत दूर मुझे...



## असली सुन्दरता

जिस शरीर को लोग सुन्दर समझते हैं, मौत के बाद वही शरीर सुन्दर क्यों नहीं लगता ? उसे घर में न रखकर जला क्यों दिया जाता है ? जिस शरीर को सुन्दर मानते हैं जरा उसकी चमड़ी तो उतार कर देखो तब हकीकत दिखेगी कि भीतर क्या है ? भीतर तो बस रक्त, रोग, मल और कचरा भरा पड़ा है। फिर यह शरीर सुन्दर कैसे हुआ ?



शरीर में कोई सुन्दरता नहीं है। सुन्दर होते हैं व्यक्ति के कर्म, उसके विचार, उसकी वाणी, उसका व्यवहार, उसके संस्कार, और उसका चरित्र। जिसके जीवन में यह सब है वही मनुष्य दुनिया का सबसे सुन्दर इन्सान है और जमाना भी उसी का दीवाना है।

## जय जय श्री राधे

श्रीजी की चरण सेवा



S Kartikay

Today, 1:53 am



चापलूसी भी एक कला है जो स्वाभिमानी  
इंसान कभी नहीं सीख सकता  
और स्वाभिमानी होना भी एक गुण है जो  
चापलूस इंसान कभी नहीं हो सकता।



Reply







UPC Office himanshu Singh 2

Today, 8:16 pm



चालाकी, चतुराई और बेशर्मी के मिश्रण को  
आज कल होशियारी कहते हैं..



Reply





Mgvk Pk Rai

Today, 8:31 pm



ज़िन्दगी कभी भी ले सकती है करवट....  
तू गुमां न कर....

बुलंदियाँ छू हजार मगर....  
उसके लिए कोई गुनाह न कर..



Reply



"फितूर होता है हर उम्र में जुदा जुदा"

खिलौनें, माशूका, रुतबा और फिर..खुदा.!



Give



176



8



Sufi Ke Kisse

Fitoor hota he har umar me juda.... more



Add a comment...







जब गुरु का प्रसाद मिला, जब गुरु की कृपा हुई, जब उसकी अनुकंपा बरसी, तो हृदय का कमल विकसित हुआ।

खुद की चेष्टा से भूमि तैयार होती है। इसलिए जो लोग खुद की चेष्टा को ही सब कुछ समझ लेते हैं, भटक जाते हैं। खुद की चेष्टा ऐसी ही है, जैसे कोई अपने जूतों के बंदों को उठाकर खुद को उठाने की कोशिश करे।

थोड़ा-बहुत उछल कूद मचा सकता है। क्षण दो क्षण को, फीट दो फीट छलांग भी लगा सकता है। लेकिन कितनी देर यह छलांग टिकेगी?

उछल भी नहीं पाएगा, कि पाएगा कि फिर जमीन पर खड़ा है।

आदमी की सामर्थ्य कितनी! बड़ी छोटी सामर्थ्य है। उस छोटी सामर्थ्य से विराट को खोजने हम जाएं, तो हम विराट को भी रंग डालेंगे। वह विराट भी हम जैसा ही छोटा हो जाएगा, इसलिए तो हमारे सब भगवान छोटे हो गए हैं। छोटे आदमी का भगवान बड़ा कैसे हो सकता है?

कितनी ही मूर्ति सुंदर बनाओ, लेकिन होगी आदमी ही मूर्ति। तुम्हारी ही मूर्ति का प्रतिफलन होगा। तुम कृष्ण का जीवन पढ़ोगे, तुम क्या पढ़ोगे? तुम अपने को ही पढ़ लोगे। बुद्ध को तुम, महावीर को, गौर से देखो! या तो तुम्हारे चेहरे उन में प्रकट हुए हैं, या तुम्हारी आकांक्षा-ज्यादा से ज्यादा तुम्हारी आकांक्षाएं, अभीप्साएं, जैसे तुम होना चाहोगे। लेकिन तुमसे बाहर कुछ भी नहीं जा सकता। तुम जो भी करोगे, तुम उसे घेर लोगे। वह तुम्हारी प्रतिध्वनि होगी।

इसलिए कबीर कहते हैं-गुरु कृपाल जब किन्हीं।

गुरु से अर्थ है, जो जाग गया। जो जाग गया, वह तुम्हारे और परमात्मा के बीच कड़ी बन सकता है। इसे थोड़ा समझो।

गुरु एक द्वार है; द्वार से ज्यादा कुछ भी नहीं। उस द्वार के एक तरफ तुम हो और दूसरी तरफ परमात्मा है। तुम परमात्मा को समझने में असमर्थ हो। क्योंकि वह भाषा बिलकुल अपरिचित। वह रूप अनचीन्हा। वह राग अनसुना। तुम्हारे कान उस संगीत के लिए तैयार नहीं है। तुम्हारा हृदय उस स्पर्श के लिए तैयार नहीं। तुम्हारी भूमि घास-पात से भरी है। वे बीज तुममें गिर भी जाएं, तो भी अंकुरित न हो पाएंगे।

फिर तुम द्वार की तरफ पीठ किए खड़े हो। परमात्मा की तरफ तुम उन्मुख नहीं हो, परमात्मा से विमुख हो। संसार की तरफ जितनी उन्मुखता होगी, उतनी परमात्मा की तरफ विमुखता होगी, पीठ होगी। तुम मुंह तो एक ही तरफ कर सकते हो-या तो संसार की तरफ या परमात्मा की तरफ।

संन्यासी का इतना ही अर्थ है, जिसने संसार की तरफ पीठ कर ली और



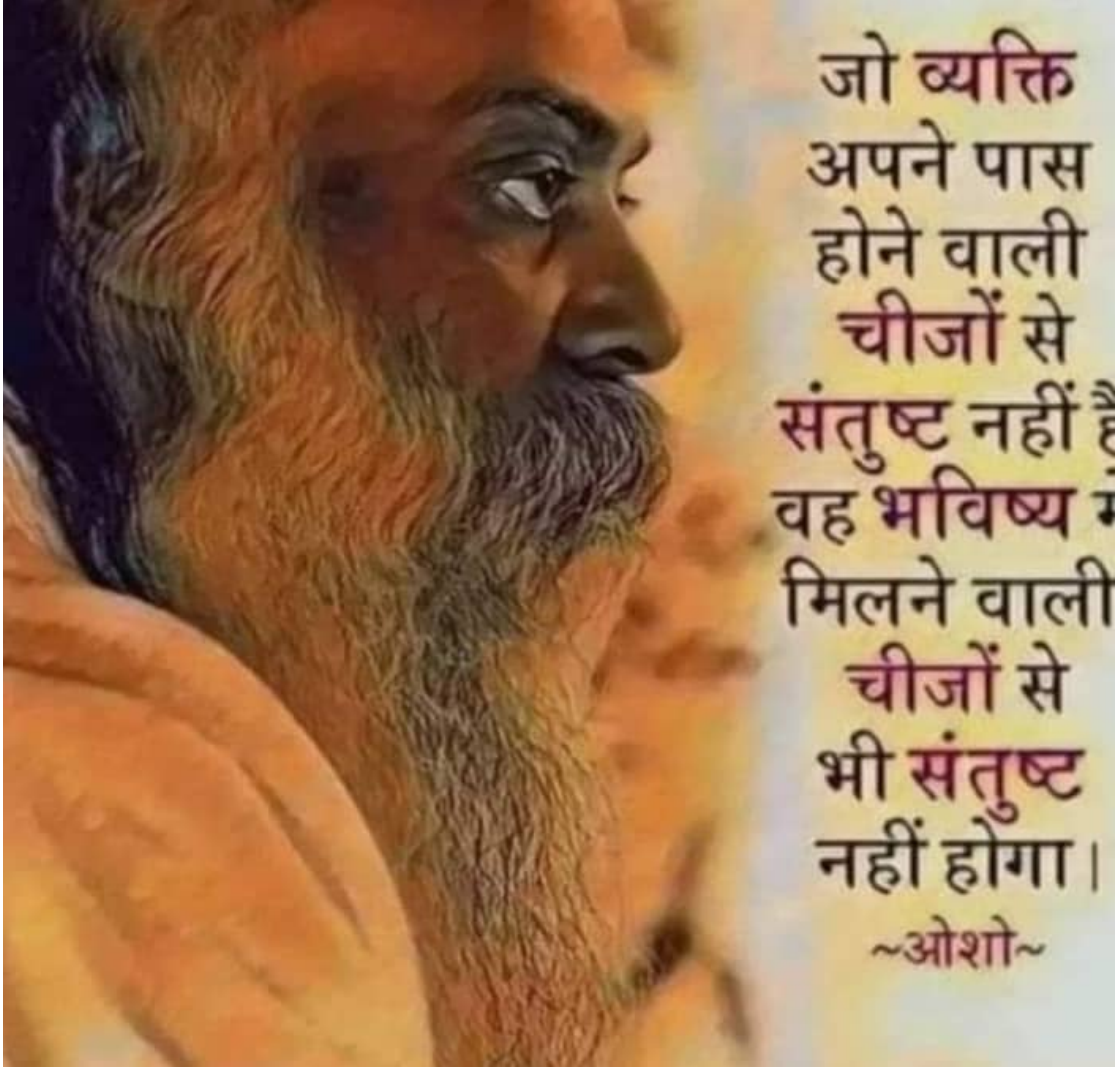
🌹🌹 बोधिधर्म चीन गया: एक बहुत महत्वपूर्ण संन्यासी, बौद्ध भिक्षु। चीन के सम्राट ने उसे पूछा, कि क्रोध आता है, लोभ आता है, अशांति आती है, क्या करूं? तो बोधिधर्म ने कहा, आंख बंद कर। मुझे बता, अभी क्रोध है? सम्राट ने कहा, अभी तो नहीं। तो बोधिधर्म ने कहा, जो चौबीस घंटे और सदा नहीं है, वह तेरा स्वभाव नहीं है। आता है, जो चला जाता है, वह तू कैसे हो सकता है? तू तो सदा है। क्या तू यह भी कह सकता है, कि कभी-कभी तू होता है और कभी-कभी नहीं भी हो जाता है? नहीं, सम्राट ने कहा, मैं तो चौबीस घंटे में चाहे क्रोध हो, चाहे अशांति हो, चाहे शांति हो, चाहे सुख हो, चाहे नींद हो, चाहे जागरण हो, मैं तो सतत हूं। तो बोधिधर्म ने कहा, वह जो सतत है, उसकी फिकर कर। उसको जान। और जो कभी आता है और कभी चला जाता है, वह तो बाहर की तरंग है। किनारे को छूती है, लौट जाती है। उस पर ज्यादा ध्यान मत दे।

न तो सुख मूल्यवान है तुम्हारा, न दुख मूल्यवान है तुम्हारा। तुमने बहुत ध्यान इन पर दिया, इसलिए तुम बुरी तरह उलझ गए हो। वे ध्यान देने योग्य भी नहीं हैं। उपेक्षा के अतिरिक्त उनके प्रति दूसरा भाव नहीं चाहिए। सुख आए तो उपेक्षा रखना, क्योंकि वह जाने ही वाला है। दुख आए तो उपेक्षा रखना, कि जानते हो कि कितनी देर टिकेगा! कभी दुख सदा नहीं टिकता। तो फिर क्या इतनी परेशान होने की जरूरत है? रह लेने दो थोड़ी देर।

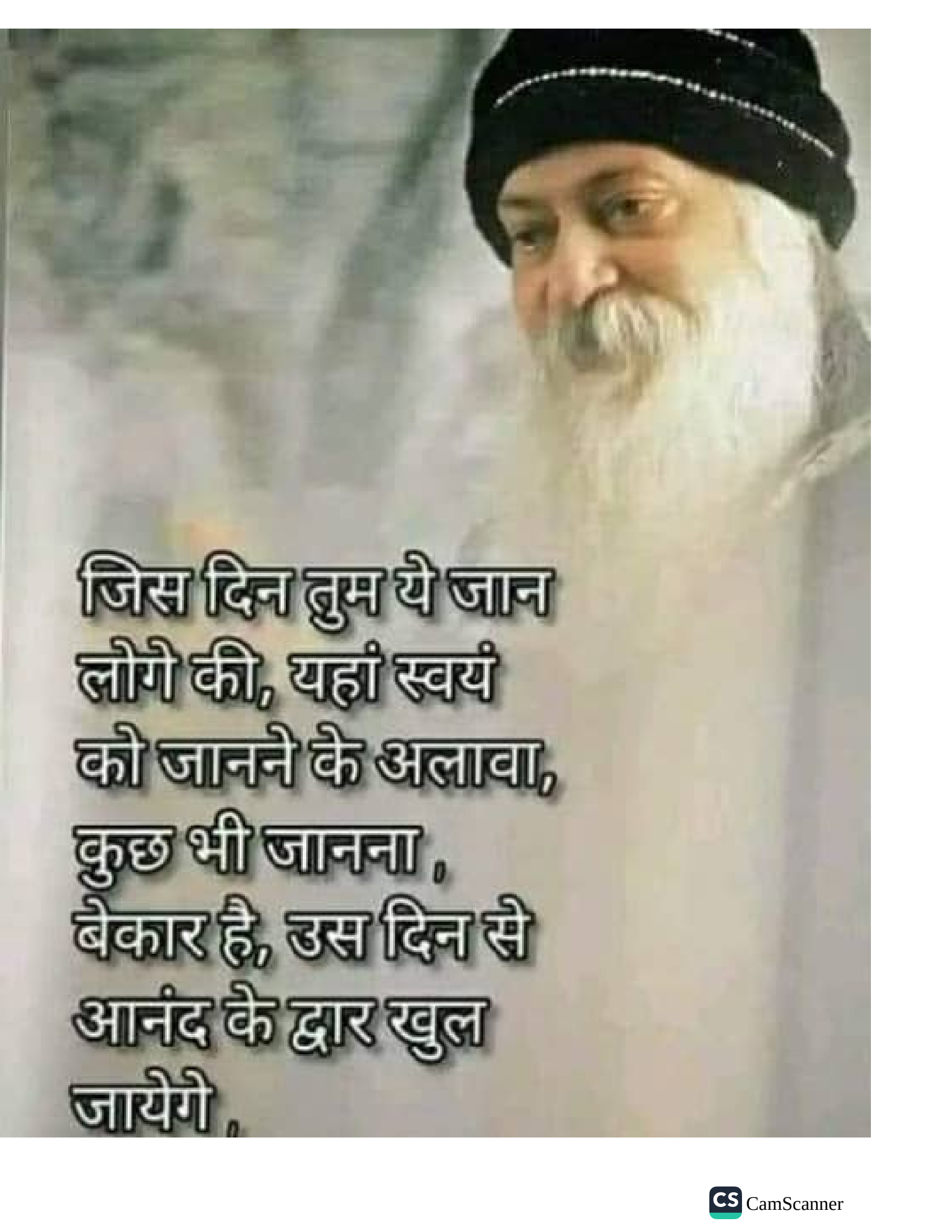
आ गया है पक्षी उड़कर तुम्हारे कमरे में, दुख का हो या सुख का क्षण भर फड़फड़ाएगा, दूसरी खिड़की से निकल जाएगा। कोई सदा रहने को नहीं है। एक खिड़की से प्रवेश कर जाता है पक्षी, क्षण भर फड़फड़ाता है, दूसरी खिड़की से निकल कर, अनंत यात्रा पर निकल जाता है। तुम तो वह भवन हो, जहां पक्षी थोड़ी देर उड़ा-वह रिक्तता, वह खाली जगह; उसी ससे अपना तादात्म्य करो, तो तुम समझ पाओगे कबीर किस सुख की बात कर रहे हैं! जो आता है, और जाता नहीं। आया कि आया, फिर जाने का नाम नहीं लेता। वह कोई मेहमान नहीं है, वह तुम ही हो। वह कोई अतिथि नहीं है, वह स्वयं आतिथेय है। मेहमान नहीं, मेजबान। वह तुम ही हो। वह कोई किनारे पर आनेवाली तरंग नहीं, वह किनारा ही है। सहज समार्थें सुख में रहिबा, कौटि कलप विश्राम।

गुरु कृपाल कृपा जब किन्हीं, हिरदै कंवल विगासा।

जब गुरु का प्रसाद मिला, जब गुरु की कृपा हुई, जब उसकी अनुकंपा







जिस दिन तुम ये जान  
लोगे की, यहां स्वयं  
को जानने के अलावा,  
कुछ भी जानना,  
बेकार है, उस दिन से  
आनंद के द्वार खुल  
जायेंगे,

फैजे-मैखाना अभी आम नहीं है वरना,  
कौन है जिसने मये-नाब न चाही होगी?

ahobhav\_



ऐसा कौन है जो मस्त नहीं हो जाना चाहता?  
ऐसा कौन है जो प्रेम को पीकर नाच नहीं उठना  
चाहता? लेकिन मधुशाला की उदारता लोगों को  
पता नहीं है कि मधुशाला तैयार है, भरो अंजुलि,  
पीओ जितना पीना हो। Osho अहोभाव

Zorba The Buddha







एक आदमी को स्वर्ग सिधारे दस वर्ष बीत गए थे। आज उनके एक पुराने मित्र का उनके घर आना हुआ। उसके पुत्रों ने उन मित्र की बड़ी आवभगत की। चाए नाश्ता हो गया तो पुत्र उन्हें हवेली दिखाने लगे। देखते देखते वे हवेली में बने एक मंदिर में पहुँचे। यह क्या? मंदिर में कोई चित्र था न मूर्ति। वहाँ तो मात्र एक संगमरमरी खम्बा था। उसे देख मित्र ने पूछा- यह कैसा मंदिर है, जिसके बीचों बीच खम्बा है? पुत्र बोले- यह खम्बा महाराज का ही मंदिर है। हम इन्हीं की पूजा करते हैं।

मित्र- पर क्यों?

पुत्र- चाचा जी! आपको मालूम ही है कि हमने कितनी गरीबी में जीवन बिताया है। हमारे पिता जी का एक नियम था। वे प्रतिदिन भोजन पश्चात, हम सब से छिपाकर, हाथी दाँत की एक तिल्ली की कुछ पूजा आदि किया करते थे। उनके गुजर जाने पर, हमें उनकी पेटी से वह तिल्ली मिली। हमने उसे अपने मंदिर में रख दिया। और तभी से हमारा जीवन बदल गया।

तो हमने उस तिल्ली जैसा ही, यह संगमरमरी खम्बा बनवा लिया है। आज हमारे पास जो कुछ भी है, इस खम्बा महाराज की ही कृपा है। मित्र ने अपना माथा पीट लिया। कहने लगे- मूर्खों! वह तिल्ली मेरी ही दी हुई थी। तुम्हारा बाप उससे कोई पूजा नहीं करता था, दाँत करेलता था। और छिपाकर इसीलिए रखता था, कि कहीं वह गुम न हो या टूट न जाए।

यह जो भी तुम्हारे पास है, वह भगवान का ही दिया हुआ है, इस खम्बे का नहीं। तुमने भगवान को तो छोड़ दिया, उस तिल्ली का ताड़ बना दिया?

लोकेशानन्द कहता है कि दुनिया में यही मूर्खता चली आती है। जगत का ऐश्वर्य तो प्रारब्ध का फल है, मिलता है तो मिलता है, नहीं मिलता तो नहीं ही मिलता। पर लोभवश हम उन भगवान को छोड़कर, न मालूम कहाँ कहाँ अपनी श्रद्धा जोड़कर, माथा पटकते घूम रहे हैं। जड़ को सींचना छोड़कर, पत्तों पर पानी छिड़क रहे हैं।

जबकि परमात्मा एक है। वह एक से कभी सवा नहीं हुआ, दो कि कौन कहे? एक ही परमात्मा जगत के कण कण में व्याप्त है, दूसरे परमात्मा को होने के लिए दूसरी सृष्टि चाहिए होगी, वह रहेगा कहाँ?

**एक ही परमात्मा जगत के**

प्रेम  
प्रणाम



सभी सदगुरू रंगरेज हैं ।

अगर कोई रंगने को तैयार हो तो उन सदगुरूओं से भी रंग जाता है जो अब मौजूद नहीं है ।

अगर कोई रंगने को तैयार न हो तो उनसे भी नहीं रंग पाता जो मौजूद हो ।

कृष्ण को गए हजारों साल हो गए ! आखिर मीरा रंगी न ! कृष्ण से रंगी । कृष्ण के रंग में डुब गई ।

और कितने लोग कृष्ण के समय में मौजूद रहे होंगे और बिना रंगे रह गए होंगे ।

दुर्योधन तो नहीं रंगा था ।

अगर प्रेम हो तो रंग जाओगे, कभीभी रंग जाओगे ।

सदगुरू चला भी जाता है देह को छोड़कर ,

तो भी उसकी आत्मा उपलब्ध रहती है ,

सदा उपलब्ध रहती है । जो प्रेम-पगे हैं , जो उसे

प्रीति से पुकारेंगे , उनपर वो फिर भी बरसेगा ।

लेकिन सदगुरू मौजूद भी हो और तुम अपनी

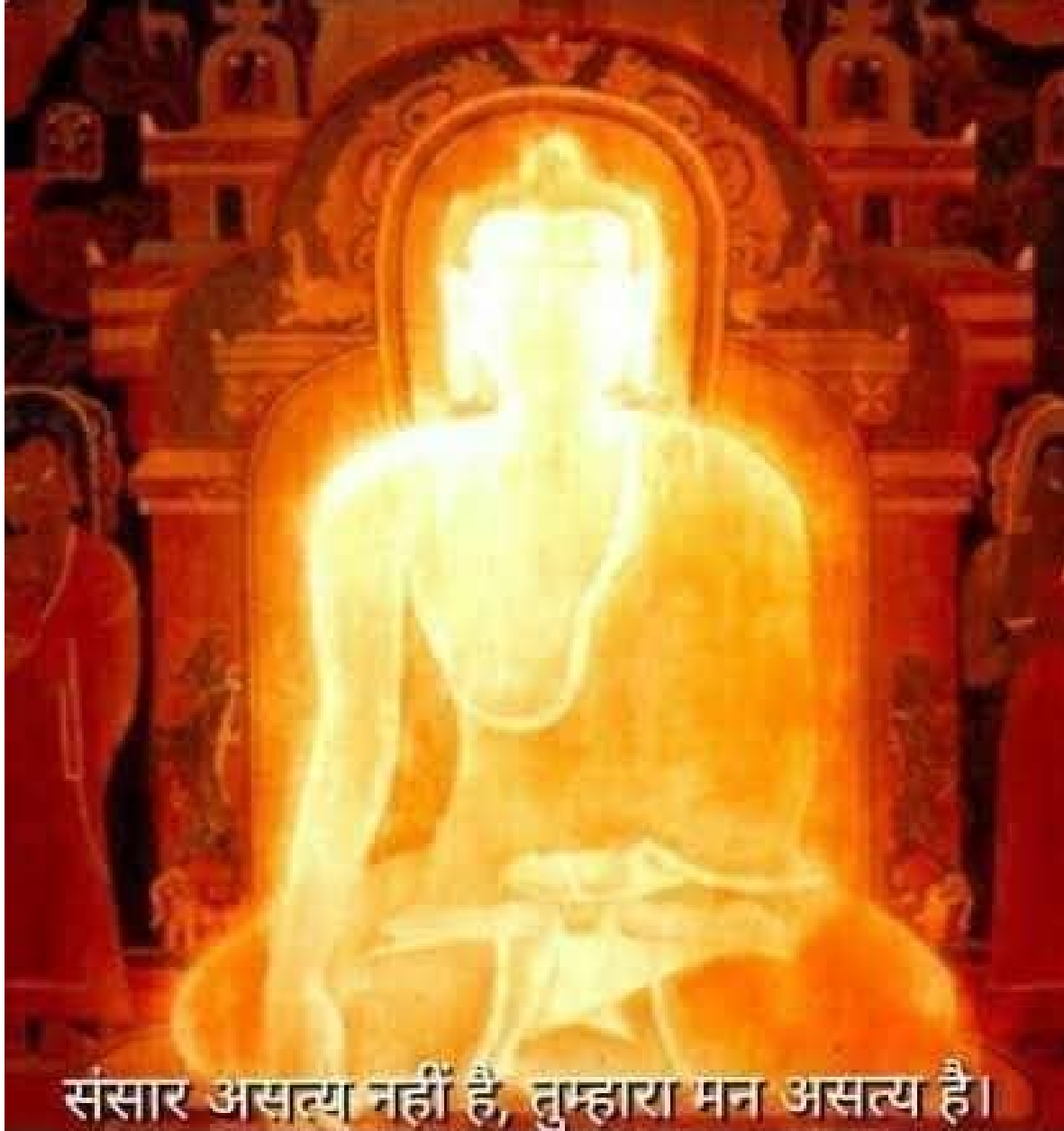
अकड़ में बैठे हो कि तुम अपनी होशियारी और

कुशलता में बैठे हो , तो चुक जाओगे ।



~ ओशो

उत्सव आमार जाति , आनंद आमार गोत्र



संसार असत्य नहीं है, तुम्हारा मन असत्य है।

संसार तो परिपूर्ण रूप से सत्य है।

तुम्हारी आत्मा भी सत्य है,

संसार भी सत्य है।

लेकिन दोनों के बीच में

एक असत्य खड़ा हो गया है,

उस असत्य का नाम मन है।

मन माया है।

और जिसे माया से मुक्त होना है

उसे मन से मुक्त होना होगा।



कहते हैं कि मरते क्षण में सारे जीवन की कहानी आंखों के सामने से दोहरा जाती है । दोहरती है ।

इसलिए दोहरती है कि अब तड़प -तड़प कर याद आती है -

उन सब क्षणों की जो यूं ही गंवा दिए ;

उन सब दिनों की , जो काटे नहीं कटते थे ।

अब तुम मांगो कि एक क्षण और मिल जाए , नहीं मिलेगा ।

और पहले शतरंज बिछाए बैठे थे , ताश के पत्ते खेल रहे थे !

और कोई पूछता क्या कर रहे हो , तो कहते थे कि -

समय काट रहा हूं ।

पागलो , समय तुम्हें काट रहा है कि तुम समय को काट रहे

हो ? मगर तब यह बात ठीक ही थी , क्योंकि पता नहीं था मृत्यु

का , तो जीवन का अनुभव नहीं होता था । Osho

संसार चलाने के लिए अहंकार की ज़रूरत नहीं है ।  
अगला जन्म बाँधने के लिए अहंकार की ज़रूरत है ।

अगला जन्म नहीं बाँधना हो,  
तो बिना अहंकार के भी संसार तो चलेगा, ऐसा है ।  
संसार तो पूरा 'डिस्चार्ज' स्वरूप है,  
इसलिए 'डिस्चार्ज' तो अपने आप ही होता रहेगा ।

—दादा भगवान



[www.dadabhagwan.org](http://www.dadabhagwan.org)



भय और लोभ

एक ही सिक्के के दो पहलू हैं ।

भय मानता है कि कुछ है , जो खो न जाये ;  
लोभ मानता है कि कुछ है नहीं , मिल जाये ।

लेकिन न तुम्हारे पास कुछ खोने को है ,  
और न तुम कुछ पा सकोगे ।

यह हकीकत है ।

तुम शून्य हो और शून्य ही रहोगे ।

शून्यता  
तुम्हारा  
स्वभाव  
है ।



**ओशो**

स  
ह  
ज  
स  
मा  
धि  
भ  
ली





जैसे पौध को उखाड़ कर दूसरी जगह पर सहेज देने से पौधा विस्तारशील होकर अपना इलाही हक्क अदा कर पाने में सक्षम हो जाता है, वैसे ही इन्सानियत से मिलकर इन्सानियत विस्तारशील होती जाती है। स्वामी विवेकानंद के भी यही विचार थे - "मनुष्य की... केवल मनुष्य की आवश्यकता है, और सबकुछ हो जाएगा।"

हम सबके भीतर भी एक सूफी रहता है। यह जरूरी नहीं कि हम दरवेश हो जाएं, मगर सूफियों के संदेश को तो आत्मसात किया ही सकता है।

धार्मिक कट्टरता का चश्मा खोलकर देखें तो, दुनिया हसीन दिखाई देगी। बुल्लेशाह कहते हैं - "मस्तां ने सब रब्ब ते छड्डेया, रही न फिकर ना फाक्का/ नच के यार मनाकर टुर गए, ते लोकी केहण स्यापा।



● सदगुरू बुल्ला शाह और शिष्य गुलाल.....

गुलाल शिष्य थे बुल्ला शाह के। यह तो कोई बात खास नहीं: बुल्ला शाह के बहुत शिष्य थे। और हजारों सदगुरू हुए हैं और उनके हजारों-लाखों शिष्य हुए हैं। इसमें कुछ अभूतपूर्व नहीं। अभूतपूर्व ऐसा है कि गुलाल एक छोटे-मोटे जमिंदार थे। और उनका एक चरवाहा था। उसकी आंखों में खुमार था।

उसके उठने-बैठने में एक मस्ती थीं। कहीं रखता था पैर, कहीं पड़ते थे पैर। और सदा मगन रहता था। कुछ था नहीं उसके पास मगन होने को—चरवाहा था, बस दो जून रोटी मिल जाती थी। उतना ही काफी था। सुबह से निकल जाता खेत में काम करना, जो भी काम हो, रात थका मांदा लौटता; लेकिन कभी किसी ने उसे अपने आनंद को खोते नहीं देखा। एक आनंद की आभा उसे घेरे रहती थी।

उसके बाबत खबरें आती थी—गुलाल के पास, मालिक के पास—कि यह चरवाहा कुछ ज्यादा काम करता नहीं; क्योंकि उसे खेत में नाचते देखा जाता था। मस्त डोलते मगन आसमान में उड़ते पक्षियों की तरह चहकते देखा था। काम ये क्या खाक करेगा। तम भेजते हो गाएं चराने गए एक



बुल्ला देखता जाता है। शाह इनायत लगाता जाता है। दोनों की रूह मिलती है। और प्याज़ की पंजीरी उनकी मुलाकात की गवाह होती है। फिर बुल्ला कुछ हिम्मत करके शाह से पूछ ही लेता है कि - “रब नूं किंवें पावणा?”

सवाल पूछने पर भी कुछ देर के लिए शाह की टेर नहीं टूटती। शाह अपनी इबादत में मशगूल। फिर अचानक शाह बुल्ले को देखकर कहते हैं - “बुल्लेया! रब नूं की किंवें पावणा। इत्थों पटणा, उत्थे लावणा।”

यह संवाद भरजाइयों और बहनों ने सुना नहीं होगा। शायद इसलिए बुल्ले को समझाने चलीं थी कि - “आले अबी औलादे नबी नूं तू क्यूं लीकां लाइयां!”

ईश्वर तो सब जगह है। यही सूफियों का संदेश है। कबीर भी तो यही कहते हैं - “पाहन पूजे हरि मिलें तो मैं पूजूं पहाड़/ तातें ये चाकी भली पीस खाय संसार।”

धार्मिक कट्टरता से परहेज़ करने वाला भला मानुष समाज को मुफीद नहीं जान पड़ता। शायद इसलिए जीते जी ज़माने भर की तोहमतें झेलते हैं संत। मगर फिर भी ईश्वर की सदाशयता और संप्रभुता से पीछा नहीं छोड़ाते सूफी। मगर बुल्लेशाह इन सबसे जुदा हैं।

वे अपनी भाषा में जवाब देते हैं - “जो कोई सान्नू सैयद आखे/ दोज़ख मिलण सज़ाइयां.../ राई-साई सभनी थाई, रब दी बे-परवाईयाँ।”

ईश्वर सब जगह है। और ईश्वर को पाने के लिए दर-दर क्या भटकना। बस इतना काफी है कि ईश्वर की क़ैफ़ियत को यहाँ से उठाया जाए और वहाँ रख दिया जाए।

ईश्वर का संदेश इन्सानियत है। उस इन्सानियत को एक जगह से दूसरी जगह तक पहुंचाते चले जाना ही ईश्वर की इबादत है।

जैसे पौध को उखाड़ कर दूसरी जगह पर सहेज देने से पौधा विस्तारशील होकर अपना इलाही हक्क अदा कर पाने में सक्षम हो जाता



सूफियों का कोई जहान नहीं। खुदाई से ऊपर उनका कोई इश्क नहीं। फिर वो इश्क घर फूँके या फिर शरीर, सूफी को कोई फर्क नहीं पड़ता। पर उनको तो फर्क पड़ता है न जिनका लेन-देन अभी दुनियावी है!

सैयद के घर पैदा हुआ बुल्लेशाह कैसे सूफियाना बातें कर सकता है? जिस घर के तार सीधे खुदा से जुड़े हों; जिनकी खुदाई जी से सीधी बोलचाल हो, उस घर के चिराग को सूफी बनकर खुदा को ढूँढने की क्या जरूरत आन पड़ी! बात भी जायज़ है। लेकिन इश्क तो आतिश है। जो लगा तो घर फूँक कर ही मानेगा। लेकिन भाभियों और बहनों की समस्या अपनी जगह है।

बुल्ले शाह को गुरु चाहिए। और सारी दुनिया में बुल्ले को खोजकर शाह इनायत मिले हैं गुरु बनाने के लिए। यही परिवार के सामने सबसे बड़ी चुनौती है।

बुल्लेशाह नबी है। नबी मतलब पैगंबर। पैगंबरों के परिवार का गुरु शाह इनायत! कैसे संभव है? शाह इनायत आराई है। आराई मतलब खेती-बाड़ी करने वाला, घास खोदने वाला। पैगंबर और आराई का कोई मेल नहीं। यह तो वही कहावत चरितार्थ हो गई कि 'कहाँ राजाभोज और कहाँ गंगू तेली।' मगर सूफी का गुरु सूफी।

बुल्ले की इनायत शाह से पहली मुलाकात का वाकिआ भाभियों को क्या पता। पता भी कैसे हो। रूह से रूह की मुलाकात तो शरीर को भी मालूम नहीं होती। यहाँ तो बुल्ले के परिवार ने कभी इनायत शाह के दौलतखाने की ओर कदम भी नहीं बढ़ाया। अकेला बुल्ला वहाँ भटक रहा था।

पहली बार जो बुल्ले ने शाह को देखा तो इनायत कायनात के ज़मीं ज़र्रे पर प्याज का ऊर लगा रहे थे। इधर से प्याज की पौध उखाड़ते और एक-एक पौधे को प्यार से अलग करके दूसरी ओर सहेज कर लगा देते।

बुल्ला देखता जाता है। शाह इनायत लगाता जाता है। दोनों की रूह मिलती है। और प्याज़ की पंजीरी उनकी मुलाकात की गवाह होती है। फिर बुल्ला कुछ हिम्मत करके शाह से पूछ ही लेता है कि - "रब नं कितें





सत्य क साय जारा

Munabai Makvana · 25m · 🌐

बुल्ले शाह कहते हैं...

उस दे नाल यारी कदी ना रखियो, जिस नू अपने ते गुरूर होवे...

माँ बाप नू बुरा ना अखियो, चाहे लाख उन्हां दा कुसूर होवे...

राह चलदे नू दिल न दैयो, चाहे लख चेहरे ते नूर होवे

ओ बुल्लेया दोस्ती सिर्फ उथे करियो, जिथे दोस्ती निभावन दा दस्तूर होवे..!!



साईं बुल्ले शाह जी --

सख्त जुबाना रक्खन वाले देंदे ना नुकसान।

बुल्लेया डर उहनां दे कोलों, जिहड़े झुक झुक करन सलाम।।



सूफियों की बातें अलग हैं। उन्हें समझ पाना आम-आदमी के बस-से-बाहर की बात है।

बुल्ले शाह की बहनें और भाभियाँ एक दिन बुल्ले को समझाने आती हैं। बुल्लेशाह सैयद हैं। मगर सूफियाना तासीर का मिज़ाज पाया है। सूफियों की बात जुदा है। जिसने दिल पर खुदा की तहरीर कर ली, उसका दुनिया की तकरीरों से क्या राबता! और बुल्ले की भाभियाँ एक सूफी को समझाने चली हैं - "बुल्ले नू समझावण आइयां/ भैणां ते भरजाइयां। मन्न लै बुल्लेया साहडा कैल्ला/ छड दे पल्ला अराइयां।"

फरीद ने लिखा इश्क और आतिश दोनों एक जैसे हैं। इश्क दिल फूंकता है और आतिश दुनिया को जलाता है। शरीर की दुनियावी धुरी दिल है। इश्क अगर दिल फूंक दे तो शरीर के अंदर बचेगा ही क्या? और सूफी... सूफी को दुनिया से क्या लेना-देना। क्या यही कशमकश है बुल्ले की बहनों और भरजाइयों की?

सूफियों का कोई जहान नहीं। खुदाई से ऊपर उनका कोई इश्क नहीं।

फिर तो दशक घर फंके गा फिर शरीर याद तो कोई फर्क नहीं पटना।

facebook



आपका? और क्या बात करना है राज़ उन्हीं लागा स आपका? न ता आप समझदार हो रहे हैं और न ही अपने आसपास वालों को होने से रहे हैं

चालीस के बाद, या हो सके तो पैंतीस के बाद "अनलर्न" करना शुरू कीजिए.. मतलब इस समाज ने आपको जो कुछ भी सिखाया था उसे छोड़ना शुरू कीजिए.. सारे रिश्ते सारे नातों से ब्रेक लेना शुरू कीजिए.. शादी ब्याह, मुंडन, छठी, बरही, जगराता वगैरह से दूर हट जाइए.. शादी ब्याहों में कोई भी एंजॉय नहीं करता है, यहां बस भीड़ होती है और कुछ नहीं.. और इस उम्र तक अगर आपको ये सब न दिखने लगे तो समझिए आप अभी भी "बचपन" में फंस कर रह गए हैं.. अगर बिना मिले जुले आपका काम नहीं चलता है तो अब उन लोगों से मिलिए जो आपके रिश्ते, नाते, और दूर दूर तक आपकी किसी पहचान में नहीं हैं.. ऐसे लोगों से मिलिए जिनके भीतर आपको लेकर कोई पूर्वाग्रह न हो.. जो आपको बिल्कुल न जानते हों.. या अगर बिना मिले जुले आप रह सकते हैं और स्वयं के साथ अकेले रह सकते हैं तो इस से अच्छी तो कोई बात ही नहीं.. कोई भी पुराना रिश्तेदार या भाई बहन आपके बिना मर नहीं जाएगा.. उनको और आपको बस "आदत" है एक दूसरे से मिलने की.. इसे प्रेम न समझिये.. अगर इस रूटीन से आप चालीस की उम्र तक न निकल पाय तो अंत समय आपका ग्लानि और कुंठा में बीतेगा

जिन जिन बेवकूफियों से आप जुड़े हैं उसे छोड़िये.. लोग दिल्ली और मुंबई में रहने को ही अपना अहंकार बना लेते हैं.. जहाँ जहाँ जिस जिस चीज़ से आपका अहंकार जुड़ रहा है उसे "अनलर्न" कीजिये.. लोग इसी अहंकार की वजह से छोटे कस्बों और गावों में नहीं शिफ्ट होते हैं और अपने व्यवसाय और पढ़ाई का झूठा वास्ता सारी उम्र दिया करते हैं.. ये सब वैसे ही छूटेगा.. तो पहले ही छोड़ना सीख लीजिये.. सीख लेंगे तो फिर आपकी आगे की यात्रा अपने आप शुरू हो जायेगी

~सिद्धार्थ ताबिश 🍌



1 share



56m · 🌐

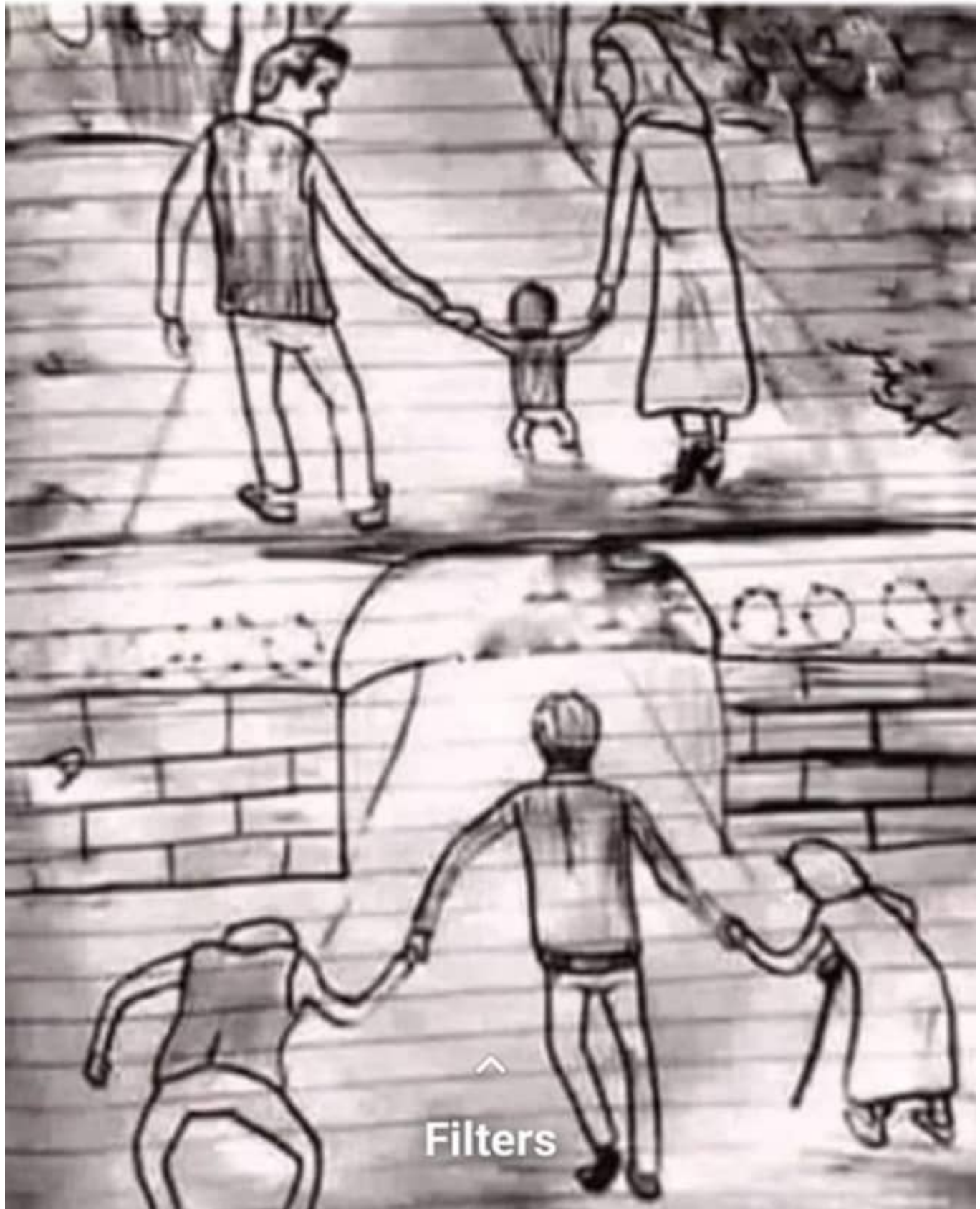
जीवन की तमाम झंझटों से अगर आज़ाद होना है तो आपको "छोड़ना" सीखना होगा.. और "छोड़ना" आप तब सीख पाते हैं जब आप "समझना" शुरू करते हैं.. जीवन में अगर एक ही काम "अनंत समय" के लिए आप करते जायेंगे तो न तो आप सीख पाएंगे और न ही कभी कुछ छोड़ पाएंगे

उदाहरण के लिए अगर चालीस साल की उम्र तक भी आपको हर रोज़ अपने से दूर रह रहे बच्चों, भाई, बहन, अम्मा, अब्बा और दोस्तों से बात करके ही मज़ा आता है तब आप कभी भी जीवन में आज़ाद नहीं हो पाएंगे.. अगर इस उम्र तक भी आपको इन्हीं सब रिश्तेदारों और नातेदारों की भीड़ के साथ होना अच्छा लगता है तो इसका मतलब ये है कि आप में समझ विकसित ही नहीं हो रही है.. क्योंकि उम्र के इस पड़ाव तक तो आपको समझ जाना चाहिए कि रोज़ रोज़ वही एक रूटीन और वही मिलना जुलना किस नतीजे पर ले कर जा रहा है आपको? आप की क्या लर्निंग हो रही है और कब तक ये करते रहना है आपको? और क्यों बात करनी है रोज़ उन्हीं लोगों से आपको? न तो आप समझदार हो रहे हैं और न ही अपने आसपास वालों को होने से रहे हैं

चालीस के बाद, या हो सके तो पैंतीस के बाद "अनलर्न" करना शुरू कीजिए.. मतलब इस समाज ने आपको जो कुछ भी सिखाया था उसे छोड़ना शुरू कीजिए.. सारे रिश्ते सारे नातों से ब्रेक लेना शुरू कीजिए.. शादी ब्याह, मुंडन, छठी, बरही, जगराता वगैरह से दूर हट जाइए.. शादी ब्याहों में कोई भी एंजॉय नहीं करता है, यहां बस भीड़ होती है और कुछ नहीं.. और इस उम्र तक अगर आपको ये सब न दिखने लगे तो समझिए आप अभी भी "बचपन" में फंस कर रह गए हैं.. अगर बिना मिले जुले आपका काम नहीं चलता है तो अब उन लोगों से मिलिए जो आपके रिश्ते, नाते, और दूर दूर तक आपकी किसी पहचान में नहीं हैं.. ऐसे लोगों से मिलिए जिनके भीतर आपको लेकर कोई पूर्वाग्रह न हो.. जो आपको बिल्कुल न जानते हों.. या अगर बिना मिले जुले आप रह सकते हैं और स्वयं के साथ अकेले रह सकते हैं तो इस से अच्छी तो कोई बात ही नहीं.. कोई भी पुराना रिश्तेदार या भाई बहन आपके बिना मर नहीं जाएगा.. उनको और आपको बस "आदत" है एक दूसरे से मिलने की..



**This picture is so deep  
If you Understand.**





राजा ने फिर से दर्जी को कहा कि नहीं नहीं  
बोलो कितने दूँ,

दर्जी ने सोचा की 2 रुपये मांग लेता हूँ....

फिर मन ने यही सोच आ गयी कि कहीं राजा यह न  
सोचे की बटन टांकने के मेरे से 2 रुपये ले रहा है तो  
गाँव वालों से कितना लेता होगा क्योंकि उस जमाने  
में 2 रुपये की कीमत बहुत होती थी॥

दर्जी ने राजा से कहा कि महाराज जो भी आप  
का ध्यान हो, वह दे दो

अब राजा तो राजा था उसको अपने हिसाब से  
देना था कहीं देने में उसकी पोजीशन खराब न हो  
जाये,

उसने अपने मंत्री को कहा कि इस दर्जी को 2 गांव दे  
दो, यह हमारा हुकम है।

कहां पर तो दर्जी सिर्फ 2 रुपये की मांग कर रहा  
था और कहां पर राजा ने उसको 2 गांव दे दिए ॥

इसी तरह जब हम प्रभु पर सब कुछ छोड़ते हैं तो वह अपने  
हिसाब से देता है, सिर्फ हम मांगने में कमी कर जाते  
हैं,

देने वाला तो पता नहीं क्या देना चाहता है॥  
और हम बड़ी तुच्छ वस्तु मांग लेते हैं।

इसलिए संत-महात्मा कहते हैं, प्रभु के चरणों पर अपना  
समर्पण कर दो, उनसे कभी कुछ न मांगों, जो वो अपने  
आप दें बस उसी से संतुष्ट रहो, फिर देखो इसकी  
लीला।



\*समर्पण\*

एक बार किसी देश का राजा अपनी प्रजा का हाल-चाल पूछने के लिए गाँवों में घूम रहा था

घूमते-घूमते उसके कुर्ते का बटन टूट गया उसने अपने मंत्री को कहा कि पता करो की इस गांव में कौन सा दर्जी है जो मेरे बटन को सिल सके

मंत्री ने पता किया उस गांव में सिर्फ एक ही दर्जी था जो कपडे सिलने का काम करता था

उसको राजा के सामने ले जाया गया राजा ने कहा कि तुम मेरे कुर्ते का बटन सी सकते हो

दर्जी ने कहा यह कोई मुश्किल काम थोड़े ही है

उसने मन्त्री से बटन ले लिया, धागे से उसने राजा के कुर्ते का बटन फौरन सी दिया

क्योंकि बटन भी राजा के पास था सिर्फ उसको अपना धागा प्रयोग करना था

राजा ने दर्जी से पूछा कि कितने पैसे दूं, उसने कहा महाराज रहने दो छोटा सा काम था,

उसने मन में सोचा कि बटन राजा के पास था उसने तो सिर्फ धागा ही लगाया है ,

राजा ने फिर से दर्जी को कहा कि नहीं नहीं बोलो कितने दूं,

दर्जी ने सोचा की 2 रूपये मांग लेता हूँ....

किताब ने पूरी करने का तरीका बताया है